राजस्थानी हिन्दी कहावत कोश

विजयदान देथा

३

राजस्थानी-हिंदी कहावत-कोश
धाम : तीन

पंद्रह हजार कहावतें और तीन सौ तैंतीस संदर्भ-कथाएँ
मूल राजस्थानी कहावतों के हिंदी अर्थ और साँगोपाँग व्याख्या सहित

काळ खपै पण ओखांणा अखै
काल नश्वर, कहावतें अमर

राजस्थानी-हिंदी कहावत-कोश
धाम-तीन

जां से ना तक कहावतें

संयोजक व संपादक
विजयदान देथा

राजस्थानी ग्रन्थागार
प्रकाशक एवं वितरक
सोजती गेट, जोधपुर-342 001 (राज.)
फोन : 2623933 (का.), 2432567 (नि.)
E-mail : rgranthagar@satyam.net.in

RAJASTHANI - HINDI KAHAWAT - KOSH
A DICTIONARY OF RAJASTHANI PROVERBS

राजस्थानी-हिंदी कहावत - कोश
आठ धाम में संपूर्ण

प्रकाशक :
राजस्थानी ग्रन्थागार
प्रकाशक एवं वितरक
सोजती गेट, जोधपुर-342001
फोन : 2623933 (कार्यालय)
2432567 (निवास)

कंपोज :
सूर्या कम्प्यूटर, जोधपुर

मुद्रक :
भारत प्रिण्टर्स (प्रेस), जोधपुर

संकेत-तालिका

पाठा. = पाठांतर

क. सं. = कहावत संख्या

व. = राजस्थानी साहित्य समिति बिसाऊ, राजस्थान से प्रकाशित 'वरदा' जुलाई-सितंबर १९७२। आगे अंकित संख्या का मतलब उक्त अंक में प्रकाशित कहावत की संख्या से है।

भी. = साहित्य-संस्थान, राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर से प्रकाशित राजस्थानी भीलों की कहावतें, विजयादशमी, ७ अक्टूबर, १९५४। आगे अंकित संख्या का मतलब उक्त संग्रह में प्रकाशित कहावत की संख्या से है।

मि. क. सं. = मिलाइए कहावत संख्या।

दे. क. सं. = देखिए कहावत संख्या।

आ. दे. क. सं. = आगे देखिए कहावत संख्या।

सं. = संस्कृत

अनुक्रम :

काळ बहै पण बात रहै ।

काल बहे पर बात रहे ।

जां - जि

जांण जठै मांण । ४९५६

जहाँ पहिचान वहीं मान ।

—अपरिचित व्यक्ति के लिए तो बुरे-भले छोटे-बड़े सभी समान होते हैं । परिजनों के बीच ही व्यक्ति को अपने गुणों के अनुसार मान-सम्मान मिलता है ।

जांण नीं पिछांण नीं , हूं लाडै री भूवा । ४९५७

जान नहीं पहिचान नहीं, मैं दूल्हे की बूआ ।

दे. क. सं. ५७१

पाठा : जांणू नीं मानूं नीं , हूं लाडै री भूवा ।

जांण नीं पिछांण , बाबा रांम रांम । ४९५८

जान न पहिचान, बाबा राम-राम ।

—बिना पूर्व परिचय के संबंध स्थापित करने की खातिर कोई वैसी चेष्टा करे तब ।

—कोई व्यक्ति खामखाह अपनापन जताने के लिए वैसा अभिनय करे, तब ... ।

जांण म जांण , पिण नवी आंण ।–व. ३७ ४९५९

जाने न जाने, पर नई लाये तो मानें ।

—बिना जान-पहिचान के जब कोई व्यक्ति अपनत्व का अधिकार जताए, तब... !

—बिना पूर्व परिचय के जो व्यक्ति नई-नई चीजों की माँग प्रस्तुत करे, तब...!

—सामान्यतया औरतें इस तरह का कृत्रिम व्यवहार करने में माहिर होती हैं !

जांण मारै बांणियौ अजांण मारै चोर। ४९६०

जानकर मारे बनिया, अजाने मारे चोर ।

—इस उक्ति में बनिये को चोर से भी अधिक निकृष्ट बताया गया है कि बनिया तो जान-बूझ कर अपनत्व का दिखावा करके व्यावसायिक घात करता है और चोर लुक-छिपकर अजाने माल उड़ाता है । चोरी के बाद तो आदमी फिर पनप सकता है पर बनिये के घात से उसका उबरना मुश्किल है ।

जांणमूळ आवै जद भैंस्यां चांनणा पाडा लावै। ४९६१

नाश होना होता है तब भैंसियाँ चानणे पाड़े लाती हैं ।

चानणा पाडा = जिन पाड़ों के चारों पाँव तथा पूरे ललाट पर सफेद धब्बे होते हों । ये इतने अशुभ होते हैं कि समूचे घर का विनाश हो जाता है ।

—जिस घर का विनाश होना होता है, तब वैसा ही अशुभ संयोग स्वतः जुड़ जाता है।

—किसी-न-किसी रूप में अनिष्ट की पूर्व सूचना मिल ही जाती है ।

जांणे-वीणे तो कई नी, ने आव रांड जुवा रेयां।–भी.३७२ ४९६२

समझते-बूझते तो कुछ हैं नहीं और कहते हैं आ राँड अलग रहें ।

—बिना व्यावहारिक ज्ञान और अच्छी तरह सोचे-समझे बिना संयुक्त परिवार से अलग रहना मूर्खता-पूर्ण कदम है । अकेले में सब-कुछ नये सिरे से करना पड़ता है, अथक परिश्रम और संघर्ष करना पड़ता है, नतीजा चाहे बुरा ही हो ।

—जब संयुक्त परिवार से अनुभव-हीन नये दंपती अलग रहने का बहाना ढूँढ़ते हैं, तब...!

जांणै कुण भाया, निसाचरां री माया। ४९६३

जाने कौन भाया, निशाचरों की माया ।

भाया = भैय्या के लिए संबोधन ।

—तुलसी बाबा की चौपाई—'जानि न जाय निसाचर माया' का राजस्थानी रूपांतर है । बाबा के अनुसार निशाचरों की माया समझना असंभव है । उसी प्रकार धूर्त दुष्ट व्यक्ति के कुचक्र

को समझ सकना, आम आदमी के लिए मुश्किल है, अतएव उनसे बचकर रहना ही लाभप्रद है।

पाठा : जांणै कुण भूतां रा चाळा । जाने कौन भूतों के छल।

जांणै ज्यांनै तांणै, नीं जिका माया मांणै। ४९६४

जाने उनको ताने, न जाने सो मौज मनाये।

—परिचित व्यक्ति को ही किसी काम के लिए परेशान किया जाता है, अपरिचित मज़े से अपना काम करते हैं।

—जरूरत पड़ने पर अपनों को ही कष्ट दिया जाता है।

—देवी-देवता या भूत-प्रेतों में जिनका विश्वास है, वे उन्हीं पर कोप करते हैं, जिन्हें विश्वास नहीं उनकी छाया से ही दूर रहते हैं।

—जिन चोर या अपराधियों की पुलिस को जानकारी है, उन्हें वे परेशान करते हैं, अपरिचितों को छेड़ते तक नहीं।

जांणै तौ कक्का रौ पूण ई कोनीं। ४९६५

जाने तो 'कक्का' का पौन ही नहीं।

—निरक्षर-भट्टाचार्य के लिए।

—जो गँवार व्यर्थ के ज्ञान की डींग हाँके तब...।

जांणै तौ बोर रा पूंन ई कोनीं। ४९६६

जाने तो बेर का आगा-पीछा ही नहीं।

—निरक्षर-भट्टाचार्य के लिए। नितांत अनभिज्ञ व्यक्ति पर कटाक्ष।

जांणै बोदौ खेत बीज लेयनै बैठौ व्है ज्यूं। ४९६७

जैसे पुराना खेत बीज लेकर बैठा हो।

—पुराने खेत की उर्वरता नष्ट हो जाती है। बीज उगाने की क्षमता खो देता है।

—उस व्यक्ति के लिए जो कुछ भी सृजनात्मक कार्य नहीं कर सकता हो।

—उस वृद्धा-महिला के लिए जो प्रजनन की क्षमता खो चुकी हो।

जांणै भागोड़ो ऊंट खारी सांम्ही जोवै। ४९६८

जैसे टूटा हुआ ऊँट खारी की ओर देख रहा हो।

खारी = सरकंडों के डंठल से बना एक उपकरण, जिस में पशुओं को चारा डाला जाता है।

—उस अकर्मण्य व्यक्ति के लिए जो इच्छा होते हुए भी काम करने में असमर्थ हो।

—जो गरीब व्यक्ति साधन-संपन्न श्रीमंतों की ओर ललचायी नजर से देखे।

जांणै मिनका कूदिया गिंडकां रै उकरायां। ४९६९

जैसे बिल्ले कूदे कुत्तों के डर से।

—जैसे किसी भीड़ में फसाद या आतंक के डर से भगदड़ मची हो।

—घबराये हुए डरपोक व्यक्तियों के लिए।

जांणै सो बखांणै, बावै सो निनांणै। ४९७०

जाने सो बखाने, बोये सो निदाने।

निनांणै = मूल फसल के साथ व्यर्थ उगने वाली खरपतवार की निराई करना।

—जो जानता है, वह कह सकता है! जो बोता है, निराई उसी को करनी पड़ती है।

—इस उक्ति में दो वर्ग की मानसिक स्थिति का चित्रण है। एक वर्ग जो जीवन-निर्वाह के अलावा भी साहित्य, कला और अध्यात्म में रुचि रखता हो, वही इनके मर्म का आनंद ले सकता है और उसका बखान कर सकता है। और दूसरा सामान्य वर्ग जो केवल जीने भर के लिए जिंदा है—तब तक मौत न आये—उसे इन सब से कोई सरोकार नहीं—वह जीने के लिए प्रपंच करेगा, चाहे खेती हो, चाहे अन्य कोई रोजगार। उसे तो केवल बोते रहना और निराई करना है।

जांणै सौ घड़ा पांणी ढोळ्यौ। ४९७१

जैसे सौ घड़े पानी उड़ेला हो।

—उस प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिए, जिसका कोई अपराध सामने आ गया हो और वह भीषण लज्जा का अनुभव कर रहा हो।

—पोल खुल जाने पर शर्म महसूस करने वाले व्यक्ति के लिए।

जांणै हाथी कादै में कळियौ व्है ज्यूं ! ४९७२

जैसे हाथी कीचड़ में धँस गया हो !

—'कादा में कळणौ' यानी 'कीचड़ में धँसना' यों तो एक मुहावरा है, पर इस उक्ति में उसका ऐसा विशिष्ट प्रयोग हुआ है कि यह कहावत का स्वरूप ग्रहण कर लेता है।

—हाथी के उनमान उस बड़े व्यक्ति के लिए जो अचीती आफत में फँस गया हो और उससे उबरने का कोई उपाय न सूझ रहा हो।

जांन अर धाड़ नै जातां के वार लागै, बीस जणा अर बीस ई कोस ! ४९७३

बरात और डकैतों को जाते क्या देर लगे, बीस जने और बीस ही कोस !

—दो व्यक्तियों का साथ हो, तब भी यात्रा की दूरी जितनी है, उससे कम महसूस होती है, फिर बीस बराती और बीस डाकू—आपस में बात-चीत करते हुए हँसी-ठिठोली की रौ में देखते-देखते बीस कोस की दूरी इस तरह फलांग जाते हैं, जैसे कोस भर ही चले हों।

— यों मजाक करने की मंशा से भी कहा जा सकता है कि प्रति व्यक्ति एक कोस ही तो हिस्से में आता है।

—पारस्परिक सहयोग से किसी भी काम की मार कम महसूस होती है।

जांन घणी आवै तौ मांडौ थाकै। ४९७४

बराती ज्यादा आएँ तो जनवासियों को जोर पड़ता है।

—कुछ व्यक्तियों की मौज-मस्ती दूसरों के लिए तकलीफ-देह हो, तब... !

—एक आदमी के आराम से दूसरे को खलल पड़े, तब...!

जांन चढ्यां किसौ ब्याव व्हैगौ। ४९७५

बरात चढ़ने से ब्याह थोड़े ही हो जाता है।

—काम की शुरुआत और सफलता के बीच कई अचीते अवरोध उपस्थित हो जाते हैं।

—कहते भी हैं कि हाथ के कौर व होंठों के बीच काफी दूरी है।

जांन छोटी नै धमाल मोटी। ४९७६

जान छोटी और हुड़दंग बड़ा।

—थोड़ी बात का ज्यादा दिखावा करना।

—बड़ा दिखने के लिए मिथ्या प्रदर्शन करना।

जांन नै कैवै सावचेत अर धाड़ नै कैवै वार चढ़ौ। ४९७७

बरात को कहे सावधान रहो और डाकुओं को कहे हमला करो।

—वैसी ही कहावत है—चोर को कहे घुस और कुत्ते को कहे भुस। मतलब कि भौंक।

—दोगले व्यक्ति का चरित्र जो दोनों ओर के विरोधियों से कृत्रिम हमदर्दी का दिखावा करता हो।

जांन में ऊदा नै मरण नै दूदा। ४९७८

बरात में ऊदा और मरने को दूदा।

—राठौड़ राजपूतों की विभिन्न उपजातियों में 'ऊदा' और 'दूदा' भी प्रमुख हैं। जो राव ऊदा और राव दूदा के वंशज हैं। 'दूदा' जाति के राठौड़ बड़े बहादुर और साहसी माने जाते हैं। और 'ऊदा' जाति वाले ऐश करने वाले और बड़े शौकीन माने जाते हैं। इसी संदर्भ में दोनों शाखाओं के लक्षण बताये गये हैं कि—जांन में ऊदा नै मरण में दूदा।

—जब कोई व्यक्ति अवांछित पात्र को तो लाभ पहुँचाये और परिजनों को दूर रखे तब व्यंग्य में इस उक्ति का प्रयोग होता है।

जांन में कुण-कुण आया ? के वींद अर वींद रौ भाई, खोड़ियौ ऊंट अर कांणियौ नाई। ४९७९

बरात में कौन-कौन आये कि दूल्हा और दूल्हे का भाई, लँगड़ा ऊँट और काना नाई।

—जिस व्यक्ति के स्वार्थ का दायरा केवल अपनों तक सीमित हो और लोक-लिहाज-वश भी दूसरों की कुछ परवाह न करता हो।

—किसी प्रतिष्ठित आयोजन के उपयुक्त प्रतिनिधियों का जुड़ाव न हो, तब परिहास में ... !

जांन में मांझी कुण ? ४९८०

बरात का मुखिया कौन ?

—यों तो हर बराती अपने-आपको सबके बराबर मन-ही-मन महसूस करता है फिर भी किसी जिम्मेवार व्यक्ति को प्रमुख माना जाता है, या तो वह दूल्हे का चाचा या बड़ा भाई होता है—उसे बड़ जांनी अर्थात् बड़ा-बराती कहते हैं।

—जब बराती किसी का कहा न मानें या अनुशासन में न रहें तब यह प्रश्न किया जाता है कि बरात का मुखिया कौन है ? या सबके सब प्रमुख हैं।

जांनिया सांनिया व्है। ४९८१

बराती बावरे होते हैं।

—बरात में शामिल होना एक बड़ा सुखद अवसर है। घर के प्रपंच से पूर्णतया मुक्त व्यक्तियों का जमघट जिसकी बरात के दौरान रंच भर भी जिम्मेवारी नहीं होती। वधू-पक्ष वाले हरदम हाजरी में तैनात रहते हैं। बराती जो भी ऊल-जलूल हुक्म देते हैं, उसकी अनुपालना होती है। वधू-पक्ष वालों को परेशान करने में आनंद का अनुभव करते हैं। दूल्हा—वींद-राजा कहलाता है। तब बराती अपने आपको दरबारी क्यों न समझें ? ऐसे माहौल में बरातियों का बौराना स्वाभाविक है।

—स्वच्छंदता का अवसर मिलने पर हर व्यक्ति उसके अनुरूप व्यवहार करता है।

जांनी जीमण सूं राजी, बाप लेवण सूं राजी अर वींद वींदणी सूं राजी। ४९८२

बराती खाने से राजी, बाप लेने से राजी और दूल्हा दुलहन से राजी।

—एक ही काम या एक ही उत्सव-आयोजन में विभिन्न व्यक्तियों की विभिन्न रुचियाँ और विभिन्न स्वार्थ होते हैं।

—जब एक ही काम से अलग-अलग व्यक्तियों की अलग-अलग स्वार्थ सिद्धि होती हो।

जांनी तौ सेवट आप-आपरै ठाये जावै। ४९८३

बराती तो आखिर अपने-अपने ठिकाने जाते हैं।

—एक निश्चित अवधि में ही संबंधित व्यक्तियों की पूछ या आदर-सत्कार होता है, उसके बाद नहीं।

—जरूरत मिट जाने के बाद भी कोई व्यक्ति अवांछित आशा रखे, तब...!

—थोड़ी बात का ज्यादा दिखावा करना।

—बड़ा दिखने के लिए मिथ्या प्रदर्शन करना।

जांन नै कैवै सावचेत अर धाड़ नै कैवै वार चढ़ौ। ४९७७

बरात को कहे सावधान रहो और डाकुओं को कहे हमला करो।

—वैसी ही कहावत है—चोर को कहे घुस और कुत्ते को कहे भुस। मतलब कि भौंक।

—दोगले व्यक्ति का चरित्र जो दोनों ओर के विरोधियों से कृत्रिम हमदर्दी का दिखावा करता हो।

जांन में ऊदा नै मरण नै दूदा। ४९७८

बरात में ऊदा और मरने को दूदा।

—राठौड़ राजपूतों की विभिन्न उपजातियों में 'ऊदा' और 'दूदा' भी प्रमुख हैं। जो राव ऊदा और राव दूदा के वंशज हैं। 'दूदा' जाति के राठौड़ बड़े बहादुर और साहसी माने जाते हैं। और 'ऊदा' जाति वाले ऐश करने वाले और बड़े शौकीन माने जाते हैं। इसी संदर्भ में दोनों शाखाओं के लक्षण बताये गये हैं कि—जांन में ऊदा नै मरण में दूदा।

—जब कोई व्यक्ति अवांछित पात्र को तो लाभ पहुँचाये और परिजनों को दूर रखे तब व्यंग्य में इस उक्ति का प्रयोग होता है।

जांन में कुण-कुण आया? के वींद अर वींद रौ भाई, खोड़ियौ ऊंट अर कांणियौ नाई। ४९७९

बरात में कौन-कौन आये कि दूल्हा और दूल्हे का भाई, लँगड़ा ऊँट और काना नाई।

—जिस व्यक्ति के स्वार्थ का दायरा केवल अपनों तक सीमित हो और लोक-लिहाज-वश भी दूसरों की कुछ परवाह न करता हो।

—किसी प्रतिष्ठित आयोजन के उपयुक्त प्रतिनिधियों का जुड़ाव न हो, तब परिहास में ... !

जांन में मांझी कुण? ४९८०

बरात का मुखिया कौन?

—यों तो हर बराती अपने-आपको सबके बराबर मन-ही-मन महसूस करता है फिर भी किसी जिम्मेवार व्यक्ति को प्रमुख माना जाता है, या तो वह दूल्हे का चाचा या बड़ा भाई होता है—उसे बड-जांनी अर्थात् बड़ा-बराती कहते हैं।

—जब बराती किसी का कहा न मानें या अनुशासन में न रहें तब यह प्रश्न किया जाता है कि बरात का मुखिया कौन है ? या सबके सब प्रमुख हैं।

जांनिया सांनिया व्है। ४९८१

बराती बावरे होते हैं।

—बरात में शामिल होना एक बड़ा सुखद अवसर है। घर के प्रपंच से पूर्णतया मुक्त व्यक्तियों का जमघट जिसकी बरात के दौरान रंच भर भी जिम्मेवारी नहीं होती। वधू-पक्ष वाले हरदम हाजरी में तैनात रहते हैं। बराती जो भी ऊल-जलूल हुक्म देते हैं, उसकी अनुपालना होती है। वधू-पक्ष वालों को परेशान करने में आनंद का अनुभव करते हैं। दूल्हा—वींद-राजा कहलाता है। तब बराती अपने आपको दरबारी क्यों न समझें ? ऐसे माहौल में बरातियों का बौराना स्वाभाविक है।

—स्वच्छंदता का अवसर मिलने पर हर व्यक्ति उसके अनुरूप व्यवहार करता है।

जांनी जीमण सूं राजी, बाप लेवण सूं राजी अर वींद वींदणी सूं राजी। ४९८२

बराती खाने से राजी, बाप लेने से राजी और दूल्हा दुलहन से राजी।

—एक ही काम या एक ही उत्सव-आयोजन में विभिन्न व्यक्तियों की विभिन्न रुचियाँ और विभिन्न स्वार्थ होते हैं।

—जब एक ही काम से अलग-अलग व्यक्तियों को अलग-अलग स्वार्थ सिद्धि होती हो।

जांनी तौ सेवट आप-आपरै ठाये जावै। ४९८३

बराती तो आखिर अपने-अपने ठिकाने जाते हैं।

—एक निश्चित अवधि में ही संबंधित व्यक्तियों की पूछ या आदर-सत्कार होता है, उसके बाद नहीं।

—जरूरत मिट जाने के बाद भी कोई व्यक्ति अवांछित आशा रखे, तब...!

जांनी तौ जीमण रा इज कोडावू व्है। ४९८४

बराती तो खाने के ही इच्छुक होते हैं।

—प्रत्येक व्यक्ति की स्वार्थ-सिद्धि का अपना अलग ही दायरा होता है।

—कोई व्यक्ति अपने अधिकार क्षेत्र के बाहर कुछ आशा या अपेक्षा रखे, तब...!

—अपना स्वार्थ सिद्ध हो जाये तो बाकी शिकवा-शिकायत व्यर्थ है।

जाई कसब कमावै पण आई बैठी खावै। ४९८५

जायी कसब कमाती है, पर आई बैठे खाती है।

—जायी यानी घर में जन्मी बेटी धंधा करती है, पर आई यानी घर में बाहर से आई बहू बैठे खाती है।

—कुछेक अर्ध-वेश्वावृत्ति पर निर्वाह करने वाली जातियों में यह प्रथा है कि बेटियाँ वेश्यावृत्ति से धन अर्जित करती हैं, पर बहुओं के लिए यह धंधा वर्जित है।

—परंपरागत मर्यादा की पालना में कोई दोष नहीं, वह न्याय-संगत है।

जाई ने अणा मोरे जक मारवो है।– भी.३६७ ४९८६

इनके सामने जाकर झख मारना है।

—जिस व्यक्ति के आगे गिड़गिड़ाना बेकार हो।

—काम पड़ने पर जो व्यक्ति सपने में भी सहयोग न करें, उनकी खातिर... !

जाई ने जोगी थावू तो जावू हाये।– भी.२७४ ४९८७

जाकर जोगी ही बनना है तो जाना किसलिए।

—जीवन से संबद्ध रहकर जूझना ही पुरुषार्थ है, पलायन करके साधु या संत बनने में कोई सार नहीं।

—संन्यासी या महात्माओं के लिए तिरस्कार की भावना और मानवीय श्रम का माहात्म्य।

जाई ने ते फायले फरी ने नी जोय्यू अेवा पड़ी-पड़ी ने वात करे।– भी.३६८ ४९८८

पीछे मुड़कर देखा तक नहीं और पड़े-पड़े बातें बनाता है।

—समय पर जब आवश्यकता थी, तब काम की कोई सार-सँभाल की नहीं और तत्पश्चात् काम बिगड़ने पर आलोचना करने में क्या तथ्य है ।
—उस आराम-तलबी व्यक्ति के लिए जो काम की वेला जी चुराये और बाद में दूसरों की गलतियाँ निकाले ।

जाई बेटी , नाड़ हेटी । ४९८९

जायी बेटी, गर्दन हेटी ।

—यह कोई भावनात्मक मसला नहीं है कि कन्या के जन्म पर अफसोस जाहिर किया जाय, सामाजिक प्रथाओं से उत्पन्न संकट के प्रति सहज आत्म-स्वीकृति है कि बेटी के घरवालों को मन मारकर कई समझौते करने पड़ते हैं, विवाह पर आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है । सब-कुछ करने के बावजूद बेटी के किसी अवांछनीय कदम से घरवालों को कब लज्जित होना पड़े, कुछ पता नहीं !
—कन्या के जन्म के साथ ही घरवालों की चिंताएँ शुरू हो जाती हैं ।

जाओ-जाओ पाटणौ'र विवहारीयौ थाओ ।–व.९९ ४९९०

जब-जब पाटन जाओ, वैसा ही व्यवहार करो ।

पाटण = पत्तन = पट्टण-पाटन । गुजरात का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर ।

—अंग्रेजी की कहावत है—वाइल लिव इन रोम, डू एज रोमंस डू । ऐसा ही इस उक्ति का अर्थ है कि पाटन जाने पर वहाँ के निवासियों जैसा ही व्यवहार करो ।
—दिसावर जाने पर वहाँ की संस्कृति के अनुसार व्यवहार करने में सहूलियत रहती है ।

जा अे भैंस पांणी में । ४९९१

जा री भैंस पानी में ।

—किसी काम के प्रति प्रबल आशा की गई हो और वह अचानक असफल हो जाए, तब ।
—यह कहावत उस वक्त काम में ली जाती है, जब बना-बनाया काम बिगड़ जाए ।

जागत् मूते वीनों हूं उपा लागे ।– भी.३६९ ४९९२

जागते हुए पेशाब करे, उसका क्या उपाय

—निद्रावस्था में तो बच्चे या रोगी बिस्तर पर पेशाब कर दें तो वे क्षम्य हैं, पर जो व्यक्ति जागते हुए भी बिस्तर भिगो दे, उसका तो कोई उपाय ही नहीं।

—जो व्यक्ति जान-बूझकर बुरा काम करे, उसके बचाव का कोई रास्ता नहीं।

पाठा : जागतौ मूतै जिणरी कुण सहाय करै।

जागता नै जगावणौ दोरौ। ४९९३

जागते हुए को जगाना कठिन है।

—सोते हुए व्यक्ति को जोर से आवाज देकर, झिंझोड़कर या ज्यादा ही हुआ तो मुँह पर पानी के छीटें मारकर जगाया जा सकता है, पर जो व्यक्ति जागते हुए सोने का बहाना कर रहा हो, भला उसे क्योंकर जगाया जाय, बड़ी विकट समस्या है।

—जो व्यक्ति सब कुछ जानते हुए अनजान बनने की चेष्टा करे, तब...!

—किसी भी तरह की संगत या असंगत बहानेबाजी का हल निकालना दुश्वार है।

—जो व्यक्ति जान-बूझकर गलती करे, उसे समझाना मुश्किल है।

पाठा : जागता नै कांई जगावणौ !

जागता पुरख री माया है। ४९९४

जाग्रत पुरुष की माया है।

—प्राण या आत्मा है तभी तक देह का संचालन है, जीवन है। जीवन है तो जीवन का आनंद भी है। प्राण निकलने पर शरीर मृत है, मिट्टी के समान है ! सभी तरह की अनुभूतियों से शून्य।

—जीवित मनुष्य की बजाय जागरूक, प्रबुद्ध या सतर्क मनुष्य की अहमियत ज्यादा है।

जागता बिचै ताकतौ वत्तौ व्है। ४९९५

जागते से तकता बेहतर।

—जागते हुए व्यक्ति की निस्बत तकता हुआ, यानी कि सतर्क व्यक्ति ज्यादा महत्त्वपूर्ण है।

—चौकस व्यक्ति से गलतियाँ कम होने की संभावना रहती है।

—सामान्य व्यक्ति की बजाय प्रबुद्ध या चेतनाशील व्यक्ति को तरजीह दी गई है, इस उक्ति में।

जागतौ घोरावै। ४९९६

जागते हुए खर्राटे ले रहा है।

—सब कुछ जानते हुए भी जो व्यक्ति अनजान बनने की चेष्टा करे।

—भेद छिपाने की बहाने-बाजी करे तब...!

—जान-बूझकर गलती करे उसका अहित अवश्यंभावी है।

जाग मछंदर गोरख आयौ। ४९९७

जाग मछंदर गोरख आया।

मछंदर = मछंदरनाथ। नाथ संप्रदाय के प्रसिद्ध नवनाथों में एक।

गोरख = गोरखनाथ, पंद्रहवीं शताब्दी के प्रसिद्ध अवधूत और सिद्ध पुरुष, जिसका निवास-स्थान संभवतया गोरखपुर माना जाता है। इनका चलाया हुआ गोरखपंथ अब तक प्रचलित है। मछंदरनाथ गोरखनाथ के गुरु माने जाते हैं। किंतु प्रसिद्ध गोरखनाथ ही हुए। किंवदंती है कि मछंदरनाथ को कँगारू देश की जादूगरनियों ने अपने चंगुल में फँसा लिया था। दिन को तो उन्हें बैल बनाकर कोल्हू चलवातीं और रात को वापस पुरुष बनाकर उनके साथ केलि-क्रीड़ाएँ करतीं। गोरखनाथ को पता चलने पर वे वहाँ गये और किसी तरह उन्हें जादूगरनियों के चक्कर से उबारकर लाये।

—आफत में फँसे किसी व्यक्ति को बुद्धिबल या अन्य उपाय से बचाने वाला गर्व के साथ यह उक्ति कहता है कि अब वह सर्वथा चिंता-मुक्त हो जाय।

जागै जणा ई जांझरकौ। ४९९८

जागे तभी सवेरा।

—जो आलसी व्यक्ति मौज आने पर सोये और मौज आने पर ही जागे। चाहे भरी दुपहरिया जागे या शाम को, वह जागे तभी सवेरा मान लेता है! ऐसे मनमौजी दीवानों के लिए यह उक्ति बड़ी मुफीद है। पर इसका दूसरा परोक्ष अर्थ यह भी है कि जभी जाग्रति का बोध हो तभी वह ज्ञान का वास्तविक सवेरा है!

—जब भी सुमति आई तभी बेहतर।

जागै जिणरै पाडी अर ऊंघै जिणरौ पाडौ। ४९९९

जागे उसके पाड़ी और सोये उसके पाड़ा।

संदर्भ-कथा : दो मित्र किसी मेले या गाँव से दो बढ़िया भैंसियाँ खरीदकर लाये। एक ही मालिक से खरीदी थीं। साथ ही गर्भ पड़ा था। मालिक ने सावधान कर दिया था कि गाँव पहुँचने के पहिले ही वे ब्या जाएँगी। एक मित्र कुछ आलसी व आराम-तलबी था। दूसरा बड़ा मुस्तैद और कर्मठ! आराम तलबी मित्र रात को सो जाता, पूरा निश्‍चिंत होकर! उसने जैसा कहा, वही हुआ! ढलती रात दोनों भैंसियाँ साथ ब्यायीं! जागे रहे मित्र की भैंस पाड़ा लाई और दूसरी पाड़ी! आलसी मित्र तो खर्राटे भर रहा था। उसने अदेर अदला-बदली कर ली। भैंसियों के सामने जो छौना आया, उसी को चाटती रहीं! आलसी मित्र काफी देर से उठा! तब जो कुछ भी आँखों के सामने था कबूल करना पड़ा।

—जो चौकस है, वह सदा जीत में रहता है और जो आलसी व अकर्मण्य है, उसे हमेशा घाटे में रहना पड़ता है, इस में अपवाद की कोई गुंजाइश नहीं।

जागै जोगी के जागै भोगी। ५०००

जागे जोगी या जागे भोगी।

—योगी या महात्मा नींद पर विजय प्राप्त कर लेता है। रात को सोये-न-सोये, उसके लिए फर्क नहीं पड़ता। वह रात-दिन भगवान की साधना में खोया रहता है। और भोगी औरत की साधना में विलीन रहता है—जिसके कारण वह रात को सो नहीं पाता। नारी के मिलन व वियोग में वह हरदम बेचैन रहता है। किंतु दोनों के जागने में मूलभूत अंतर है। योगी भगवान की उपासना में तन्मय रहता है और भोगी नारी की वासना के वशीभूत दिन-रात उसी में ध्यान-मग्न रहता है!

—हर व्यक्ति की बेचैनी अलग-अलग होती है और अलग-अलग ही उसके निवारण की तरकीबें होती हैं।

जागै सो पावै, सोवै सो खोवै। ५००१

जागे सो पाये, सोये सो खोये।

दे.क.सं.४९९९

जाजै चांद रै डावै-बळ। ५००२

जा रे चाँद की बाईं ओर।

—लोकोपवाद के अनुसार कार्तिक मास पूर्णिमा के दिन साँझ की वेला कृत्तिका नक्षत्र चंद्रमा के पीछे रहता है । ढलती रात जब चंद्रमा अस्त होने लगता है तब कृत्तिका नक्षत्र चंद्रमा के आगे होकर दाहिनी ओर हो जाय तो वर्ष शुभ माना जाता है । अच्छी वर्षा और अच्छी फसलें होती हैं । और यदि वह बाईं ओर हो जाय तो आने वाला वर्ष बुरा सिद्ध होता है ।

—जो व्यक्ति निकम्मा और अयोग्य हो, उसे लक्ष्य करके यह कहावत कही जाती है—जा रे चाँद की बाईं ओर ।

दे.क.सं.४२७७

जाजौ लाख , रैजौ साख । ५००३

जाये लाख, रहे साख ।

—यदि समाज में प्रतिष्ठा या साख रहती है तो लाखों के वारे-न्यारे हो जाते हैं । रुपया तो हाथ का मैल है, पर प्रतिष्ठा आत्मा पर लगा दाग है जो बड़ी मुश्किल से मिटता है ।

—प्रतिष्ठा का मूल्य माया के मूल्य से कहीं ज्यादा है, बहुत ज्यादा ।

जाट आळी गिलगिली । ५००४

जाट वाली गुदगुदी ।

संदर्भ-कथा : जुताई के समय अच्छी बारिश हुई तो एक जाट को बड़ी खुशी हुई, जो स्वाभाविक थी । खुशी-खुशी में वह अपने शिशु के पेट पर गुदगुदी करने लगा । बच्चे के होंठों पर मुस्कान खिल उठी ! जाट और अधिक खुश हुआ । बच्चे के गुदगुदी जोर-जोर से करने लगा । बच्चा ज्यों-ज्यों अधिक हँसता । इधर जाट की गुदगुदी और उधर बच्चे का हँसना । आखिर जोर-जोर से हँसने के साथ, बच्चा एक दम खामोश हो गया ! जाट की गुदगुदी फिर भी जारी थी । बच्चा किसी तरह नहीं हँसा तो उसका माथा ठनका ।...अरे ! गुदगुदी में बच्चा चल बसा और ध्यान ही नहीं रहा ।

—कभी-कभार हँसी ठिठोली में भी अनर्थ हो जाता है ।

पाठा : जाट आळी मलार ।

जाट आवै के जट्टण , दो रोटी चट्टण । ५००५

जाट आये कि जटनी, दो रोटी चटनी ।

—छोटा बड़ा कोई भी आये—घर में जो चटनी-रोटी है,वह हाजिर है,इस में कोई दुराव नहीं। घर के अनुसार ही अतिथि का सत्कार उचित है।

—घर की स्थिति के मुताबिक ही खातिरदारी होनी चाहिए, न कि अतिथि की स्थिति के अनुसार।

जाट कहीयौ घर कौ ही संज-सूत भलौ।–व.२९५ ५००६

जाट ने कहा कि घर का ही साज-सामान अच्छा।

—घर में जो साधन-सामग्री हो, उसी के बूते पर काम करना चाहिए, दूसरों के सहयोग की आशा रखना उचित नहीं!

—ज्यादा प्रपंच न करके अपने सीमित-साधनों पर भरोसा रखकर काम करना अधिक लाभकारी है। अपनी पत्नी के अलावा मुँह मारना उचित नहीं।

जाट कहै सुण जाटणी, जिण गांव में रैणौ। ५००७
ऊंट बिलाई ले गई, हांजी-हांजी कैणौ॥

जाट कहे सुन जाटनी, जिस गाँव में रहना।
ऊँट बिलाई ले गई, हाँजी-हाँजी कहना॥

—'बिल्ली ऊँट ले गई कि हाँ ले गई' जीवन बिताने का यही एक मात्र सरल नुस्खा है! बिना प्रतिवाद किये,बिना प्रतिरोध किये, हर बात में हामी भर लेनी चाहिए,वह मानने योग्य हो, चाहे न हो! कुछ भी शंका की और आफत में फँसे! बिना प्रश्न किये अपनी राह चलते चलो,जिंदगी का सही उत्तर मिल जाएगा।

—आसानी से जीने का मूल-मंत्र है, कदम-कदम पर विनम्रता-पूर्वक झुकते चले जाओ, निश्चित रूप से मसान तक निर्विघ्न पहुँच जाओगे।

जाट री छोरी नै वाभौसा री आंण। ५००८

जाट की छोकरी और 'पिताश्री' की कसम।

—सामंती व्यवस्था में ऊँच-नीच जातियों के पारिवारिक संबोधन उसी हिसाब से होते थे! आज-कल की नाईं शिक्षित वर्ग में 'मम्मी-पापा' का तब प्रचलन नहीं था। पिता के लिए 'वाभौसा' का संबोधन राजपूतों के अलावा राजपुरोहित व चारणों तक ही सीमित था!

खेतिहर व अनुसूचित जातियों में,काका,भाईजी और भाई का संबोधन था ! ऊँच-नीच का भेद हर स्तर पर दिखलाई पड़ता था ! समय के लिए भले ही ऐसी कहावतें अप्रासंगिक हो गई हों,पर इतिहास की खातिर वे उतनी ही उपयोगी हैं—इनकी सुरक्षा होनी चाहिए,वरना सामंतवादी संस्कृति के वैविध्य का आज पता क्योंकर चल पाएगा कि लोग कितनी तरह के खानों में बँटे रहते थे ।

—कौवा चले हँस की चाल से मिलती-जुलती कहावत है—अपनी औकात से बढ़कर प्रदर्शन करना ।

—छोटा व्यक्ति ज्यादा नजाकत दिखाये तब !

जाट री बेटी नै जळेबी रौ सिरावण। ५००९

जाट की बेटी और जलेबी का नाश्ता ।

--आज राजनैतिक स्थितियाँ काफी-कुछ उलट-पुलट हो गई हैं। किसान व अनुसूचित जातियों के प्रतिनिधि सत्ता पर आसीन हो चुके हैं,जमीन का निजी हक मिलने से सत्ताधारी नीचे लुढ़क गये हैं और नीचे दबे हुए ऊपर चढ़ने लगे हैं,फिर भी आमूल-चूल परिवर्तन में अभी समय लगेगा,सवर्णों के अत्याचारों का संपूर्ण भुगतान अभी शेष है । फिर भी इस किस्म की उक्तियाँ सामंती संस्कृति को समझने की उपादेय सामग्री है ।

—छोटा व्यक्ति अपनी हैसियत भूलकर बड़ा दिखने की चाह करे तब !

जाट रे जाट, थारै माथै खाट। तेली रे तेली थारै माथै घांणी। ५०१०
जुड़ियौ कोनीं के बोझ्यां ई मस्यौ।

जाट रे जाट, तेरे सिर पर खाट । तेली रे तेली, तेरे सिर पर कोल्हू । तुक जुड़ी नहीं कि बोझ तो लदा ।

संदर्भ-कथा : एक तेली और एक जाट दोनों कहीं साथ जा रहे थे । राह सुगमता से कटे इसलिए चुहल-बाजी की जँची । जिसके लिए छोटी-छोटी तुकबंदी करना आसान था । तेली ने झटपट जाट और खाट की तुक मिला दी । जाट गर्दन खुजलाता रहा,पर बात बनती नजर नहीं आई तो तेली के धंधे का ही सहारा लिया । उसके सिर पर खाट से कहीं भारी कोल्हू रख दिया । तेली ने प्रतिवाद क्रिया कि तुक नहीं बैठी । जाट ने अदेर मुस्कराते कहा—कोई बात नहीं,बोझ की तकलीफ तो हुई । जाट जाति अपनी प्रकृति-दत्त हाजिर-जवाबी के लिए मशहूर है ।

—जो व्यक्ति हवाई चोंचलों की बजाय व्यावहारिक बातों को ज्यादा तरजीह देता हो।

जाट वाळी कांबळ।– व.२९४ ५०११

जाट वाली कंबल।

संदर्भ-कथा : रेगिस्तान का एक जाट पानी पीने के लिए रहँट के कुएँ पर आया। प्यास बुझते ही उसके दिमाग में एक चिनगारी कौंधी कि रहँट की माल से बँधी घड़लियों में पानी कौन भर रहा है? कुएँ के भीतर कोई आदमी तो दनादन यह काम नहीं कर रहा है? पूस की सर्दी हड्डियों तक को कँपा रही थी। जाट के शरीर पर दो कंबल लिपटे हुए थे। दस-बारह व्यक्ति भी शौच के बाद हाथ धोने व लोटे माँजने आये थे। जाट ने काफी सोचा पर उसकी कुछ समझ में नहीं आया। उसने रहँट चलाने वाले से पूछा, 'क्यों भैया कुएँ के भीतर बैठा, इन घड़लियों में कौन पानी भर रहा है?' किसान को मजाक करने की सूझी, तुरत जवाब दिया, 'तुझे पता नहीं कि इन घड़लियों को तेरा बाप भर रहा है।' जाट ने जवाब सुनकर कुछ भी आश्चर्य प्रकट नहीं किया। दुख प्रकट करते हुए बोला—तब तो वह भीतर ठिठुर रहा होगा। किसान ने हामी भरते कहा—जरूर ठिठुर रहा होगा। बाप पर ऐसी दया आती हो तो तेरा कंबल दे दे। पास खड़े आदमियों को भी बातचीत सुनकर बड़ा मजा आया। पर जाट ने तो भला सोचा न बुरा, किसान को कंबल सौंपते हुए बोला—बाप से बढ़कर कंबल थोड़ा ही है। कहो तो एक और खरीदकर दे दूँ। किसान ने हँसी दबाते हुए कहा, 'नहीं, एक काफी है। भीतर कुछ गर्मी है।' पास खड़े व्यक्ति जाट की बेवकूफी पर ठहाका मारकर हँसे। पर जाट को उनकी हँसी कतई बुरी नहीं लगी!

जाट के जाने पर लोगों ने कहा यदि ऐसे सौ-पचास मूर्ख और आ जाएँ तो कंबलों का व्यापार शुरू हो सकता है। तत्पश्चात् लोग कुएँ पर नियमित रूप से आते रहे। जाट की मूर्खता को याद करके हँसते रहे! किसान भी मजे लेता। लेकिन आखातीज पर खलिहान में गेहूँ का बड़ा ढेर लगा तो वह किसान अपनी बहू और दो जवान बेटों के साथ रहँट पर वापस आया। और हेकड़ी के साथ आधे गेहूँ ले जाने का अधिकार जताया तो किसान उसकी बेवकूफी पर जोर से हँसा। कहा, 'वाह रे भोंदू! जाट होकर इतना भी नहीं समझता कि भला कौन आदमी रहँट की घड़लियों को भर सकता है?' उस दिन वाले लोगों को तकरार का और अधिक मजा आया। देखें अब क्या गुल खिलता है? जाट ने सहज भाव से कहा, 'मुझे नहीं पता। हमारे इलाके में तो पानी पीने तक का कुआँ नहीं है। फिर तुमने मेरे बाप की खातिर कंबल क्यों

लिया !' उसके रुकते ही कुछ लोगों ने कहा, 'तुम्हारे जाने पर हमने इसे खूब समझाया कि कंबल वापस कर दे, पर यह माना नहीं।'

जाट ने बीच ही में टोककर कहा, 'तब यह नहीं माना तो आज मैं नहीं मानूँगा। दो बैलगाड़ियाँ लेकर आया हूँ। आप सब गवाह हो कि मैंने कुएँ के भीतर पानी भरते बाप के लिए नई कंबल दी थी। उसकी वजह से यह फसल पकी है। सही न्याय हुए बिना मैं यहाँ से हटने वाला नहीं ! मरने-मारने को तैयार होकर घरवालों के साथ आया हूँ।' दोनों बेटे सिर तक लंबी, तारों से गुँथी लाठियाँ भाँजने लगे। चौधराइन ने कमर में खुसा हँसिया हाथ में कसकर पकड़ा। हँसिये की चमचमाती तीखी धार लोगों की आँखों में चुभी तो लोग खिसकने को तैयार हुए। जाट ने सामने आकर उन्हें रोकते कहा, 'मेरा सच्चा न्याय करने के बाद ही आप जा सकेंगे ! उस दिन बाप के लिए कंबल देते समय आप ठट्टा मारकर हँसे थे। मैं आज भी उसे भूला नहीं हूँ। भोले आदमी को ठगने का आपने कुछ विरोध नहीं किया ? बताइये इसने कुएँ के भीतर ठिठुरते बाप की खातिर कंबल लिया था कि नहीं ?'

सबने एक साथ हामी भरी ! आखिर सबकी मौजूदगी में खलिहान का आधा गेहूँ किसान को मजबूरन देना पड़ा। सबने जाट की पीठ थपथपाई कि भीषण अकाल से निपटने की बढ़िया तरकीब सोची। तब जाट ने सहज भाव से कहा, 'मैंने कुछ भी तरकीब नहीं सोची ! भोले-भाले आदमी को ठगने का बदला न लेऊँ तो माँ का दूध बेकार ही चूँघा।'

पंचों ने झेंपते हुए कहा, 'दूध तो हमने भी अपनी माँ का ही चूँघा है, पर जो आँखों से देखा-सुना, वह तो कहना ही पड़ेगा।' रहँट वाला वह किसान भी जाट था ! कंबल वाले 'गँवार' के छोटे बेटे का सलौना चेहरा और बलिष्ठ हुलिया देखा तो अपनी बड़ी बेटी की पंचों की मौजूदगी में ही सगाई कर दी। सबको मांगलिक गुड़ बाँटा और शाम को गुड़ लापसी का न्योता दिया। दोनों समधी गले में बाँहे डालकर मिले।

—मामूली ठगाई पर भारी खमियाजा भुगतना पड़े, तब...!

जाडा जिकै ई जूंझार। ५०१२

अधिक सो ही बलवान।

—जो संख्या में अधिक हैं, वे ही शक्तिशाली हैं। वे जूझ सकते हैं। संघर्ष कर सकते हैं और अंततः विजयी भी हो सकते हैं। यदि संगठित हों तो कहना ही क्या।

पाठा : जाडा जिका ई सदावंत जबरा।

जाडी रोटी मांयनै खोबा, घी घाल्यां टाळ ई घर री सोभा। ५०१३

मोटी रोटी भीतर खोबा, घी बिना ही घर की शोभा।

खोबा = ज्वार या गेहूँ की मोटी रोटी में बेलन या अँगुलियों से ऊपर-ऊपर छेद करने को खोबा कहते हैं। यों घी डालने के लिए ही ये छेद किये जाते हैं, पर अच्छी सिकने के लिए, स्वादिष्ट लगने के लिए भी ये छेद मुफीद होते हैं। गरीबी की वजह से घी न भी डाला जाय तो दिखने में यह मोटी-रोटी अच्छी लगती है।

—गरीबी की हालत में भी कोई व्यक्ति बड़ा दिखने की चेष्टा करे, तब...।

जाडौ देख'र डरणौ नीं, पतळौ जोय अड़णौ नीं। ५०१४

मोटा देखकर डरना नहीं, पतला देखकर अड़ना नहीं।

—कायरता या बहादुरी तो भीतर की शक्ति है, बाहरी हुलिये से सही अनुमान नहीं लगता!

—बाहर की आकृति अमूमन भ्रांति पैदा करती है। सच्चाई इसके परे होती है।

जाणी ने जोगी थाये, जणानो हूं करवो ?– भी. ३७० ५०१५

जानकर जोगी बने, उसका क्या किया जाय?

—जो व्यक्ति जान-बूझकर ही गरीब रहना चाहे, उसे कोई क्या सहारा दे सकता है।

—अपने ही पाँवों पर जो आदमी अपने ही हाथों कुल्हाड़ी मारे, भला उसे कौन बचा सकता है?

जाणी ने धामड़ो ने करवो।– भी. ३७१ ५०१६

जानकर झगड़ा नहीं करना चाहिए।

—झगड़े में किसी भी पक्ष को लाभ नहीं होता, इसलिए जहाँ तक बन पड़े हर व्यक्ति को झगड़ा रोकने की ही चेष्टा करनी चाहिए।

—लड़ाई न करने में ही बुद्धिमानी है।

जात कांईं के चोपड़ा, खावौ कांईं के खोपरा के डील री पसम ई कैवै। ५०१७

जात क्या है कि चोपड़ा, खाते क्या हो कि खोपरा कि देह की कांति ही दिख रही है।

—जो व्यक्ति मिथ्या बड़ाई के सहारे बड़ा दिखने का प्रयास करे, तब...।

—बड़ाई के विपरीत गुण हों, तब...!

जात चंडाळ नीं व्है करम चंडाळ व्है। ५०१८

जाति चंडाल नहीं होती, कर्म चंडाल होते हैं।

—आज के घनघोर सांप्रदायिक माहौल में यह लोकोक्ति कितनी प्रासंगिक और ज्वलंत है कि कोई भी व्यक्ति जाति से चंडाल नहीं होता अपने काली करतूतों से चंडाल होता है।

—आदमी भले किसी जाति का क्यों न हो, उसके आचरण शुद्‌ध होने चाहिएँ।

जात-जात रै मिनखां में घणौ फरक हुवै। ५०१९

एक ही जाति के मनुष्यों में बड़ा फर्क होता है।

—जाति से मनुष्य परस्पर समान नहीं होते, उन में बहुत विभिन्नता होती है। और यह विभिन्नता—गुण, शिक्षा, वातावरण और संगति से उत्पन्न होती है।

जात-जात रौ बैरी। ५०२०

जाति-जाति का बैरी।

—जाति की बजाय स्वार्थ ही मनुष्य का प्राकृतिक स्वभाव है। स्वार्थ की टकराहट से ही ईर्ष्या, होड़ व द्‌वेष पैदा होता है।

—स्वार्थ की अपनी जाति, अपना संप्रदाय और अपना धर्म होता है, वह किसी का नियंत्रण नहीं मानता, उपदेश नहीं सुनता।

जात जावण री नीं उतरी मात खावण री साल्है। ५०२१

जाति जाने का सोच नहीं, मात खाने की चिंता है।

—किसी भी काम में असफल या हारने का सदमा और उसकी क्षति, जाति से भ्रष्ट होने की अपेक्षा बहुत ज्यादा होता है।

जात ने जाज जांणे जो करे ।– भी.२७५ ५०२२

जाति और जहाज अपनी मनमानी करते हैं ।

—बिरादरी एक बार विरुद्ध हो जाती है तो उसे मनाना कठिन होता है । उसी प्रकार डूबते या क्षति-ग्रस्त जहाज को नियंत्रण में लाना अत्यंत मुश्किल है ।

—जाति या जहाज अनुरूप हों तो संबल है, वरना घातक है ।

जात नै तौ घोड़ा ई नीं पूगै, पण पाडा जात बिगाड़ दी । ५०२३

जाति को तो घोड़े भी नहीं पहुँच सकते, पर पाड़ों ने जाति बिगाड़ दी ।

संदर्भ-कथा : एक सवर्ण जाति के राजपूत की दिन-ब-दिन आर्थिक हालत बिगड़ती गई । फलस्वरूप आषाढ़ की पहली वर्षा में भी वह खेती के लिए बैलों की जोड़ी नहीं खरीद सका ! बहू से मशविरा करके उसने दो मरियल पाड़े खरीद लिए । बाजरी के बगैर तो जीना तक मुश्किल है । ऊँची जाति के मुगालते में तो परिवार जिंदा तक नहीं बचेगा । उसने हारकर हल जोता । फटी जूतियाँ, फटे कपड़े और फटा हुआ साफा । उन दिनों हल में पाड़े निम्न जाति के लोग ही जोता करते थे, मसलन नट, ढोली, बावरी व सरगरे इत्यादि । वह हल जोत रहा था कि एक राहगीर उधर से गुजरा । उसे प्यास लगी थी । खेजड़ी के नीचे पानी का घड़ा देखा तो वह उधर ही बढ़ा । पानी पीने का मन हुआ तो उसने घड़े से मिट्टी का करवा भरा । पर ज्यों ही उधर आते किसान का हुलिया देखा तो उसने करवा वापस घड़े में औंधा दिया । राजपूत उसके मन की बात समझ गया कि नीच जाति का समझकर ही उसने ऐसा किया है ! उसके मन में शूल-सी चुभी । पास आकर अपनी मरजी से बोला, 'मजे से पानी पिओ ! राजपूत हूँ । जाति को तो घोड़े भी नहीं पहुँच सकते, पर पाड़ों ने जाति बिगाड़ दी । बच्चे भूखे मरें उससे तो अच्छा है कि पाड़ों के सहारे ही, बाजरी पैदा कर लूँ । जाति को रोता रहूँ तो फिर उम्र भर रोना नहीं मिटेगा ! काम की कैसी शर्म, मेहनत करके पेट भरना, सबसे बड़ी बात है ।'

राहगीर को विश्वास हो गया । उसने अच्छी तरह पानी पिया । दोनों ने साथ बैठकर चिलम फूँकी । थोड़ी देर गप-शप की । राहगीर ने भी जाते-जाते उसकी बात का समर्थन किया । बोला, 'झूठी हेकड़ी में अब तक मैं बैलों के भरोसे बैठा रहा । घर पहुँचते ही तुम्हारी तरह हिम्मत करके पाड़े खरीदूँगा और परिवार का पोषण करूँगा । मैं भी राजपूत हूँ ! तुमने मेरी आँखें खोल दीं । पानी के साथ साल भर की बाजरी का तुमने जुगाड़ कर दिया । आभारी हूँ । जै

चारभुजा की। खेत के मालिक ने भी मुस्कराकर कहा—जै चारभुजा की। उसके मन में रहा-सहा संशय था, वह भी मिट गया।

—जस-तस मेहनत करके जिंदा रहना, जाति के मिथ्या अभिमान से बहुत बड़ी बात है।

—बाहरी तामझाम की कुछ भी परवाह न करके मनुष्य को अपना कर्तव्य अच्छी तरह से निभाना चाहिए।

जात-पांत बूझै नहिं कोय, हर नै भजै सो हर नूं होय। ५०२४

जाति-पाँति बूझे नहीं कोय, हरि को भजे सो हरि का होय।

—प्रभु की दृष्टि में ऊँच-नीच, जाति-पाँति, गरीब-अमीर का रंचमात्र भी भेद नहीं होता, जो उन्हें भजता है, केवल वही उनका आत्मीय है।

—भक्त कवियों ने जाति को कभी महत्त्व नहीं दिया। कार्य की कसौटी पर ही आदमी को खरा उतरना है।

जात बड़ी नीं रात बड़ी है। ५०२५

जाति बड़ी नहीं, रात बड़ी है।

—गर्भाधान की वेला जाति का उतना महत्त्व नहीं जितना नक्षत्र का है। नक्षत्र अनुरूप है तो रत्न पैदा हो सकता है। नक्षत्र प्रतिकूल है तो कंकर पैदा हो सकता है।

पाठा : जात रौ कारण नीं रात रौ कारण है।

जात-बिगाड़ू बिचै बात-बिगाड़ू खोटौ व्है। ५०२६

जाति बिगाड़ने वाले की बजाय, बात बिगाड़ने वाला बुरा होता है।

—बनी-बनाई बात को बिगाड़ने वाला, जाति बिगाड़ने वालों की अपेक्षा अधिक घातक होता है!

—सुरुचि-पूर्ण बात के बीच में टाँग अड़ाने वाला जाति के बीच टाँग अड़ाने वाले से बुरा होता है।

जात मनायां पगां पड़ै कुजात मनायां माथै चढ़ै। ५०२७

ऊँची जाति वाला मनाने से झुकता है, ओछी जाति वाला मनाने से सिर पर चढ़ता है।

—सुसंस्कृत व्यक्ति गँवार की अपेक्षा सदैव बेहतर होता है।

जात मां जावू तो जात हाई रे वू नी ते रोवू।– भी.३७३ ५०२८

जाति में रहते हुए तो जाति का होकर न रहने से रोना पड़ता है।

—जाति में रहकर सुखी रहना हो तो उसकी मर्यादाओं का पालन अनिवार्य है।

—किसी भी समाज के नियम-कायदे व्यक्ति की स्वच्छदंता से बढ़कर हैं, वरना समाज नहीं चलता।

जात रा जागीरदार अर इज्जत रौ सवाल? ५०२९

जाति के जागीरदार और इज्जत का सवाल?

—उत्तराधिकार में जागीरी तो प्राप्त हो सकती है, किंतु इज्जत तो अर्जित करनी पड़ती है।

—इस उक्ति की एक ध्वनि यह भी है कि जागीरदार और प्रतिष्ठा में परस्पर विरोध है कि जागीरदार का इज्जत से क्या वास्ता और इज्जत का जागीरदार से क्या सरोकार।

जात री जोगण अर नांव गवरां बाई। ५०३०

जाति की जोगिन और नाम गवरी बाई।

—नाम के विपरीत गुण।

जात री धांणकी अर कैवै भींट्योड़ौ नीं खावूं। ५०३१

जाति की धानुकी और कहे छूआ नहीं खाती।

धांणकी = धांणका की स्त्री। राजस्थान की एक पिछड़ी जाति जिसके पूर्वज धनुष रखते थे।

—ओछे व्यक्ति के नखरों पर कटाक्ष।

—अपनी औकात के परे व्यवहार करना उचित नहीं।

जात री सांसण नै गजरां बाई नांव। ५०३२

जाति की साँसिन और गजराँ बाई नाम।

—नाम के विपरीत गुण।

जात रौ असर सोरै-सास नीं जावै। ५०३३

जाति का असर आसानी से नहीं मिटता।

—जाति का अपना ठोस आधार होता है—परंपरागत संस्कार, रूढ़िगत मान्यताएँ, पारिवारिक वातावरण, बिरादरी का बंधन और शिक्षा आदि का प्रभाव निश्चित रूप से प्रभाव दिखाते हैं। इसलिए जाति के प्रभाव को सहज ही चुनौती नहीं दी जा सकती, उसके लिए बड़ा संघर्ष करना पड़ता है। परिस्थितियों से जूझना पड़ता है।

पाठा : जात रौ असर कठै ई नीं जावै।

जात रौ तौ बांणियौ अर नांव सेरसिंघ। ५०३४

जाति का तो बनिया और शेरसिंह नाम।

—गुण के विपरीत नाम।

जात-सभाव नीं छूटै, टांग उठाय मूतै। ५०३५

जाति-स्वभाव नहीं छूटे, टाँग उठाकर मूते।

—कुत्ते का यह जातिगत स्वभाव है कि वह हमेशा टाँग उठाकर पेशाब करता है—इस क्रिया से वह सपने में भी मुक्त नहीं हो सकता। पर मनुष्य के जाति-चरित्र को प्रभाव-रहित करने के लिए शिक्षा, पारिवारिक परिवेश और सामाजिक वातावरण का अप्रत्याशित असर पड़ता है!

जात सारू जोग सजै। ५०३६

जाति का योग सधता है।

—निःसंदेह जातिगत अनुवांशिकता का प्रभाव व्यक्ति पर पड़ता ही है। आधुनिक विज्ञान ने भी इस तथ्य की प्रामाणिकता को स्वीकार किया है। इसलिए यह कहना सर्वथा उचित है कि जाति का अपना प्रभाव व्यक्ति पर पड़ता ही है।

जातां रौ नांम सहिजां, आवतां रौ नांम मुगतां।—व.२४५ ५०३७

जाती हुई का नाम सहजाँ, आती हुई का नाम मुक्ताँ।

—बेटी मायके से विदा होकर ससुराल जाती है और बहू मायके से विदा होकर ससुराल आती है। बेटी कुछ-न-कुछ लेकर जाती है और बहू कुछ-न-कुछ लेकर आती है। इसलिए जाने वाली का नाम सहिजाँ और आने वाली बहू का नाम मुक्ताँ।

जाती भूख नै हेला मारै । ५०३८

जाती हुई भूख का आह्वान करता है ।

—जो व्यक्ति हर प्रकार से अयोग्य हो ।

—जो व्यक्ति दिखने में भी बड़ा बदसूरत हो ।

—जिस अकर्मण्य व्यक्ति से कुछ आशा रखना ही निष्प्रयोजन हो ।

जाती रा पग दीसै । ५०३९

जाती हुई के पाँव दिख रहे हैं ।

दे.क.सं.३८७७

जाते जात खामेज है ।– भी.३७४ ५०४०

जाति वाला ही जाति को खाता है ।

—एक ही जाति के लोगों में परस्पर वैमनस्य, ईर्ष्या, होड़ लगी रहती है । और वह जाति के अस्तित्व को घातक क्षति की ओर ढकेलता है ।

—जाति का अंतर्विरोध ही अंतत: जाति के वजूद को मिटाने में सहायक होता है ।

—पर आज तो स्थिति सर्वथा भिन्न है, जातिवाद भयंकर रूप से फैलता जा रहा है—महामारी के उनमान । विभिन्न जातियों के बीच परस्पर घृणा और वैमनस्य बढ़ रहा है ।

जापा री ऊठ्योड़ी अर बिरखा री कूट्योड़ी । ५०४१

प्रसव से उठी हुई और वर्षा से पिटी हुई ।

—प्रसव के पश्चात गोंद, सोंठ, लोद, अजवाइन, बदाम के व्यंजन शुद्ध घी में खाई हुई जच्चा के साथ या वर्षा के पानी में बहुत देर भीगी हुई औरत के साथ सहवास का अपूर्व ही आनंद है । काम-सिद्ध अनुभवी व्यक्तियों की ऐसी मान्यता है ! स्त्री-पुरुष दोनों को समान आनंद की अनुभूति होती है ।

जामफल कैवै जे म्हामें बीज नीं व्हैता तौ मिनख नै मार देवतौ । ५०४२

अमरूद कहता है यदि मुझ में बीज नहीं होते तो मैं मनुष्य को मार देता ।

—कई आयुर्वेद के जानकार और सामान्य व्यक्तियों से यह उक्ति सुनने को मिलती है । पर वैज्ञानिक प्रमाण कहीं उपलब्ध नहीं है । हाँ, अलबत्ता यह सही है कि अंगूर, नींबू, पपीता

इत्यादि कुछेक फल बीज-रहित पैदा होने लगे है। अब भी इस तरह के विभिन्न प्रयोग जारी हैं। पर अमरूद, सीताफल पर संभवतया ऐसे प्रयोग संभव नहीं हुए या सोच-समझकर नहीं किये गये—बात एक ही है।

जा मिनड़ी कुत्ता नै मार। ५०४३

जा री बिल्ली कुत्ते को मार।

—असंभव कार्य के लिए किसी व्यक्ति को उकसाना।

—किसी भले व सज्जन व्यक्ति को सबक सिखाने की खातिर महा-दुष्ट का सामना करने के लिए कहना।

—किसी मामूली समाज-कंटक को बड़े भारी आतंकवादी से भिड़ाने की चेष्टा करना।

जायां गोरा नीं व्हिया तौ न्हायां गोरा कांई व्है! ५०४४

जन्म से ही गोरे पैदा नहीं हुए तो अब नहाने से क्या होंगे!

—अनुवांशिक शारीरिक लक्षणों को नहाने व प्रसाधनों से दूर नहीं किया जा सकता। फिर भी कुछ असर तो रहन-सहन और मौसम का पड़ता ही है। और शारीरिक रंग-रूप का मुख्य आधार भी वही है, नस्ली तौर पर। किंतु आसन्न प्रयोगों का स्थायी प्रभाव नहीं पड़ता, यही सही है।

जायां पैली न्हांण किसौ? ५०४५

जन्म से पहिले स्नान कैसा?

—जिस आदमी के उतावलेपन का कोई जवाब न हो।

—निराधार सुझाव के प्रति कटाक्ष।

जाया-जाया सैंग ई न्यारा-न्यारा ई व्है। ५०४६

जन्मे-जन्मे सभी मनुष्य विभिन्न होते हैं।

—यहाँ तक कि एक-साथ जन्मे भाई-बहिनों की सूरत व स्वभाव में कुछ तो अंतर होता ही है, जो संबंधित इंद्रियों से प्रत्यक्ष साबका होने पर पकड़ में न भी आएँ। समान साधन, समान परिवेश और समान ही वातावरण उपलब्ध कराने के बावजूद मनुष्य के इस वैविध्य को बचाना ही विकास की चरम सार्थकता है।

जाया जैड़ा ई परणाय दौ । ५०४७

जन्में जैसे ही ब्याह दो ।

—मूर्ख व्यक्ति का परिहास करने की मंशा से इस उक्ति का प्रयोग होता है ।

—जिनका जन्म ही मानव-जीवन के लिए लज्जा का विषय हो, उनके लिए... ।

जाया ज्यांरा पूत अर कात्या ज्यांरा सूत । ५०४८

जिसने जन्म दिया उसीका पूत और जिसने काता उसका सूत ।

—पुत्र पर अधिकार जन्म देने वालों का ही होता है, उसी प्रकार सूत पर अधिकार कातने वाले का ही होता है ! इसलिए दूसरों के जाये पुत्र गोद आने पर कुछ भी निहाल नहीं करते । वे तो महज अपने स्वार्थ की खातिर गोद आते हैं । इसी प्रकार दूसरों के काते सूत का अपने सूत से मेल नहीं बैठता ।

—परीक्षा की घड़ी आने पर आखिर अपना लड़का ही काम आता है । अपने हाथों से कता हुआ सूत ही मुफीद रहता है ।

जाया नै वाया बधतां कांई जेज ! ५०४९

जायें और बोये शीघ्र बढ़ते हैं ।

—पैदा हुई संतान और अंकुरित फसल को बढ़ते क्या देर लगती है ! समय तो अपनी गति से ही व्यतीत होता है, किंतु सुखद आशा की वजह से वह चुटकियों में बीतता महसूस होता है ।

—आशा का संबल ही सब-कुछ है, उसके सहारे न कष्ट महसूस होता है और न समय की चाल बोझिल लगती है ।

जाया पूत मरेवा । ५०५०

जन्मी संतान आखिर मरेगी ।

—संतान चाहे कितनी ही प्यारी लगे, अंततः मृत्यु की गोद में उसे जाना ही पड़ता है । इसलिए पालन-पोषण व शिक्षा की पूरी जिम्मेवारी निबाहते हुए संतान के मोह-जाल में फँसना उचित नहीं ।

जाया विलोईजै के विगर जाया। ५०५१

जाये बिलोइजते हैं कि बगैर जाये ।

विलोईजै = दही बिलौने की क्रिया ! मंथित होना, संघर्ष-रत होना या संकट झेलना ।

—संकट की वेला अपनी संतान साथ जुड़कर संघर्ष के लिए तैयार रहती है या दूसरों की संतान । अर्थात् स्वार्थ-वश गोद आई संतान ।

—दुख की असह्य घड़ियों में जो अपने होते हैं, वे ही साथ देते हैं, पराये नहीं ।

—अपरिपक्व अवस्था वाले बालक से कौशल-साध्य काम नहीं लिया जाना चाहिए ।

जायौ नांव जलम सूं, रैणूं किण विध होय ? ५०५२

जाया नाम जन्म से, रहना क्योंकर होय ?

—जब जाया नाम ही जाने से संबंधित है तो रहने की आशा करना व्यर्थ है ।

—जो प्राणी इस संसार में जन्म लेकर आया है, उसे निःसंदेह एक दिन जाना ही है ।

जारां आगै सासरै न जाय सकै ।–व.१६० ५०५३

जारों के मारे ससुराल नहीं जा सके ।

—यारों के चंगुल में फँसी जो विवाहिता ससुराल की ओर मुँह भी नहीं कर सके ।

—दुष्टों के जाल में फँसने के बाद आसानी से छुटकारा नहीं हो सकता ।

जालम गुजर जाय, जुलम पोतै रह जाय । ५०५४

जालिम गुजर जाये, जुल्म बाकी रह जाये ।

—अत्याचारी मर भले ही जाय, पर उसके अत्याचारों की कथाएँ कई बरसों तक जिंदा रहती हैं ।

—दुष्ट का नाम मिट जाय पर उसकी बदनामी नहीं मिटती ।

जालम जाटणी होवै ज्यूं । ५०५५

जालिम जाटनी हो जैसे ।

—जालम, जालिम का पर्याय होते हुए भी अत्याचार, शैतानी व दुष्टता का परिचायक नहीं, अलमस्ती व मनमौजीपन का सूचक है ।

—अलमस्त जाटनी की नाईं ।

—जो औरत अल्हड़ और मस्त हो उसके लिए।

जावण नै छाळी, आवण नै ऊंट। ५०५६

जाने को बकरी और आने को ऊँट।

—ऐसा पुख्ता व्यापार जिसमें हानि की संभावना न हो। यदि घाटा भी लगा तो बकरी जितना, पर नफा ऊँट जितना।

—किसी काम को निर्विघ्न शुरू करने के लिए उद्बोधन।

जावण लाग्यां दूध जमै। ५०५७

जामन लगने से दूध जमता है।

—दही, छाछ या अरहठे की खटाई के बिना दूध नहीं जमता।

—गुरु या ज्ञान के बिना कायाकल्प संभव नहीं।

—आत्म-बोध होने पर ही जीवन में आकस्मिक परिवर्तन होता है।

जावणौ अळगौ नै अठै ई गो[illegible]ळीये हुऔ।—व.३७९ ५०५८

जाना तो दूर और यहीं घुटनों के बल चलना शुरू किया।

—किसी बड़े काम की सफलता के लिए वैसे ही पर्याप्त साधन, एकाग्रता और वांछित सक्रियता अनिवार्य है, वरना उसकी कामयाबी संदिग्ध है।

—जैसा भी छोटा-बड़ा आयोजन हो उसीके मुताबिक समुचित तैयारी होनी चाहिए।

पाठा : जावणौ आंतरै अठा सूं ई गुडाळियां व्हिया।

जावतां-जावतां रहसी जिका अपांरा। ५०५९

जाते-जाते बच जाय वही अपना।

—भेड़-बकरियों का रेवड़ या मवेशियों का झुंड किसी महामारी में पीछे बच जाय वही अपने भाग्य में बधा है।

—खेती की फसल अकाल में नष्ट होने से पीछे रह जाय वह अपनी है, उसी से संतोष करना चाहिए।

—इसी तरह संपत्ति भी जो खत्म होने के बाद शेष रह जाय वही अपने काम में आती है।

जावता चोर रा झींटा ई चोखा। ५०६०

भागते चोर के बाल ही हाथ में आ गये, वही अच्छा।

—जहाँ कुछ भी मिलने की उम्मीद न हो वहाँ थोड़ा-बहुत हाथ लग जाय, वही उत्तम है।

—किसी आकस्मिक दुर्घटना में जो कुछ भी बच जाय वही बेहतर है।

पाठा : न्हावता जोगी री जटा हाथै लागी सो ई आछी।

भागता चोर री लंगोट ई भली। जावतै चोर वाळा चट्टा है।

जावतौ वींद छांणा चुगै। ५०६१

जाता हुआ दूल्हा उपले बीनता है।

—विवाह तक तो दूल्हे का खूब आदर-सत्कार होता है। वह 'वींद-राजा' (दूल्हा-राव) कहलाता है। किंतु वापस अपने गाँव जाने पर उसी ढर्रे लग जाता है। वही मेहनत-मजदूरी।

—सेवा-निवृत्त अधिकारी की भी यही दुर्दशा होती है। न कहीं पूछ और न कहीं सत्कार।

—सभी दिन मौज-मस्ती के नहीं रहते।

जावानूं जण पूठे अजार कलां करो, वो रेवानूं नी।– भी. ३७५ ५०६२

जो जाने वाला है, हजार उपाय करो, वह रहने वाला नहीं।

—बीमारी का उपचार हो सकता है, किंतु मौत की कोई औषधि नहीं। आखिर उसे जाना ही पड़ता है। किसी भी उपाय से बचाया नहीं जा सकता।

—मनुष्य जीवन नश्वर है, उसे बनाये रखने की चेष्टा व्यर्थ है।

पाठा : जावणहार तौ जायां सरसी, लाख करौ उपाय।

जावा नूं जोग नी, रेवाना दन नी।– भी. ३७६ ५०६३

जाने का योग नहीं, रहने की स्थिति नहीं।

—जब ऐसी स्थिति पैदा हो जाय जिस में न रहने के आसार नजर आते हैं और न मरने का निकट-भविष्य में योग दिखता है। असाध्य बीमारी के लिए।

—जब जीवन में ऐसी विकट स्थिति उत्पन्न हो जाय, तब...!

पाठा : जावण रौ जोग नीं, रैवण री जुगत नीं।

जावाना नूं त्यू राखत्यू क्यें रेवानूं ।– भी. ३७७ ५०६४

जो जाने का है वह रखने पर कैसे रह सकता है ।

—अवश्यंभावी बात को रोकने का प्रयास करना व्यर्थ है ।

—जो बात टलने की नहीं, उसे टालने की चेष्टा करना बेकार है ।

जावा नों ते झगड़ो , आवण नो रगड़ो ।– भी. ३७८ ५०६५

जाने पर झगड़ा और आने पर रगड़ा ।

—जहाँ पर जाने और आने में झंझट हो, वहाँ न जाना ही उचित है ।

—जहाँ जाने और लौटने में परेशानी हो, वहाँ जाना ही नहीं चाहिए ।

जावू जणा पूटे पाहले मोरें नी जाके वगड़ो के हदरो । – भी. ३७९ ५०६६

जहाँ जाना है वहाँ जाना ही है, बिगड़े चाहे सुधरे ।

—जब कोई काम करना तय कर लिया है, उसे हर हालत में संपन्न करना ही है, चाहे सुधरे, चाहे बिगड़े ।

—मनुष्य को अपने संकल्प पर दृढ़ रहना चाहिए, परिणाम जो भी हो ।

जावै कठै के पगां धूड़ री बेड़ी है । ५०६७

जाये कहाँ कि पाँवों में धूल की बेड़ी है ।

—जन्म-भूमि का मोह आसानी से नहीं छूटता, चाहे विदेश में कुछ भी सफलता क्यों न मिले ।

—जमीन-जायदाद और अपनी पुश्तैनी संपत्ति को छोड़कर जाना कठिन है ।

जावै किसै गांव अर बतावै किसौ गांव । ५०६८

जाये कौन-से गाँव और बताये कौन-सा गाँव ।

—झूठे की बात का एतबार नहीं होता, उसका सच कहना भी झूठ जैसा ही लगता है ।

—झाँसे-बाज व्यक्ति का भरोसा करने वाला धोखा ही खाता है ।

जावै जांन रैवै ईमांन । ५०६९

जाये प्राण पर रहे ईमान

—ईमान या प्रतिष्ठा का मूल्य जीवन से भी बढ़कर है ।

—मनुष्य की सार्थक जिंदगी, कुछ आदर्शों के निमित्त ही होती है, सो जान हथेली पर रखकर उन्हें निबाहना चाहिए ।

जावै थारा बैरी-दुसमीं । ५०७०

जाएँ तेरे बैरी-दुश्मन ।

—दो स्थितियों पर यह उक्ति लागू होती है । जब कोई मित्र बिछुड़ते समय कहे कि वह जा रहा है । तब दोस्त मजाक में कहते हैं—तुम तो रुको, जा कहाँ रहे हो, जाएँ तुम्हारे बैरी-दुश्मन ।

—जब कोई मरणासन्न मित्र यह संसार छोड़कर आगे जाने की बात करता है तो मित्र लोग आश्वस्त करते हैं—आगे जाने वाले तुम्हारे दुश्मन ही बहुत हैं, तुम्हें जाने की बारी कहाँ आएगी ?

जावै लाख, रैवै साख । ५०७१

जाये लाख, रहे साख ।

—साख या सामाजिक प्रतिष्ठा का मूल्य भौतिक संपत्ति से बहुत बढ़कर है । उसे खोकर ही साख बनी रहे तो बहुत बढ़िया है ।

—साख का दूसरा अर्थ रिश्ते से भी है । यदि कोई परिजन या घनिष्ठ मित्र भारी नुक्सान भी पहुँचा दे तो कोई हर्ज नहीं । आत्मीयता का संबंध धन की अपेक्षा ज्यादा श्रेष्ठ है ।

जावै सो दिन आवै नीं । ५०७२

गया दिन वापस नहीं लौटता ।

—जो समय बीत गया सो बीत गया, उसका माहौल, उसकी अनुभूति, उसका साहचर्य वापस सपने में भी नहीं दुहराया जा सकता ।

—हर चीज का मूल्य है, पर समय अमूल्य है, उसके हर क्षण का सर्वोत्तम उपयोग करना चाहिए ।

जावो वे जठे पगां घूघरा बंदाई जाय ।– भी.३८० ५०७३

कहीं भी जाओ, पाँवों में घुँघरू बाँधकर ही जाओ ।

—जहाँ जाना है पूरी अलमस्ती से उन्मुक्त होकर जाओ, मन में किसी भी प्रकार का संशय मत रखो।

—जो भी कार्य हाथ में लो पूरी उमंग व उत्साह के साथ उसे संपन्न करो।

जावौ कळकंता सूं आगै, करम छांवळी सागै। ५०७४

जाओ कलकत्ते से आगे, भाग्य की छाया साथ भागे।

—घर छोड़कर कहीं भी दूर-दिसावर क्यों न चले जाओ, शरीर की छाया के उनमान दुर्भाग्य भी सर्वत्र साथ चलेगा। किसी भी शर्त पर वह पीछा छोड़ने वाला नहीं।

—जो भाग्य में लिखा है, वही घटित होकर रहता है।

जावौ भावै जमीं रै ओड़, औ ई माथौ आ ई खोड़। ५०७५

जाओ चाहे धरती के किसी किनारे, वही सिर, वही ऐब मारे।

—आदमी कहीं भी चला जाये, उसका स्वभाव और उसकी कमजोरियाँ अथवा दुर्व्यसन नहीं छूटते।

—किसी भी नये परिवेश और नये वातावरण में मनुष्य क्यों न चला जाये, उसकी आंतरिक प्रकृति और उसका मानस नहीं बदलता।

जिंद गिणै नीं गांव नै अर गांव गिणै नीं जिंद नै। ५०७६

जिन माने नहीं गाँव को और गाँव माने नहीं जिन को।

दे.क.सं.३३८७

जिका कीं लखिया, मन मांहै रखिया। ५०७७

जो कुछ भी लखो, उसे मन में रखो।

—जो कुछ भी देखो, सुनो और अनुभव करो, उसे मन के भीतर ही सँजोकर रखना चाहिए, जब-तब प्रकट करना उचित नहीं।

—अपने मन का भेद किसे भी नहीं देना चाहिए, चाहे वह कितना ही आत्मीय क्यों न हो!

जिकी हांडी में खावै, उणीज हांडी में छेद करै। ५०७८

जिस हँडिया में खाये, उसी हँडिया में छेद करे।

दे.क.सं.२९७२,२९७३

पाठा : जिण थाळी में खाय, उणी में छेकलौ करै ।

जिकी हांडी में सीर कोनीं, बा चढ़ती ई फूटै । ५०७९

जिस हँडिया में हिस्सा नहीं, वह चढ़ते ही फूटे ।

—इस उक्ति के दो विरोधी अर्थ हैं । पहिला : जिस हँडिया में किसी दूसरे का साझा नहीं, मतलब, किसी के इकलौते अधिकार में है, वह चढ़ते ही फूट जाती है । बिना साझे का काम अमांगलिक होता है । जो सबका है, वही शुभ है । जो अकेले का है, वह अकल्याणकारी है ।

—दूसरा अर्थ : जिस हँडिया में अपनी हिस्सेदारी नहीं, वह भले चढ़ते ही क्यों न फूटे ! जिस काम से अपना मतलब नहीं बनता, वह भले ही बिगड़े या नष्ट हो, अपनी बला से ।

जिकै गांव नीं जांणौ, उणरौ गेलौ ई क्यूं बूझणौ ? ५०८०

जिस गाँव जाना नहीं, उसका रास्ता ही क्यों पूछना ?

—जिस बात से कुछ लेना-देना ही नहीं हो, उसकी चर्चा व्यर्थ है ।

—जिस काम से कोई दूर का भी वास्ता न हो, उस में दिलचस्पी रखना निरी मूर्खता है ।

पाठा : जिण गांव नीं जांणौ, उणरौ नांव क्यूं बूझणौ ।

जिकै जिकांरा, तिकै तिकांरा । ५०८१

जो जिसका है, वह उसीका है ।

—हर व्यक्ति के संपर्क का अपना-अपना दायरा और अपनी-अपनी रुचि होती है, जो जिसके साथ रहना पसंद करता है, यह उसकी इच्छा पर ही निर्भर रहना चाहिए । किसी दूसरे की रुचि उस पर थोपी नहीं जा सकती ।

—जो जिसका होना चाहता है, उसकी मरजी । वह अपने निर्णय में पूर्ण स्वतंत्र है ।

जिकौ ऊगतौ ई नीं तप्यौ, वौ आथमतौ कांईं तपसी ? ५०८२

जो उगते ही नहीं तपा वह अस्त होते क्या तपेगा ?

—जो सूरज उगता हुआ तेजस्वी नहीं, वह अस्त होने के समय क्या तेजस्वी होगा ।

दे.क.सं.१३७०

जिकौ ऊभौ ई नीं दीसै, वौ बैठ्यौ कांई दीसैला! ५०८३

जो खड़ा भी नहीं दिखता, वह बैठा हुआ क्या दिखेगा!

—जो अपने उत्कर्ष में प्रसिद्ध नहीं हुआ, अपने अपकर्ष में भला उसे कौन पहिचानेगा?

—जो व्यक्ति अपने पद पर बने रहकर भी किसी की सहायता नहीं कर सकता, वह घर बैठने पर क्या खाक मदद करेगा।

जिकौ खोदै वौ ई पड़ै। ५०८४

जो खोदेगा, वही गिरेगा।

दे.क.सं. २९९८

जिकौ पैली मारै वौ ई मीर हुवै। ५०८५

जो पहले मारे वही मीर होता है।

—पहिला वार करने से उसका आतंक जम जाता है। आधी विजय तो पहिले वार में ही हो जाती है।

—जो किसी भी नये काम की शुरुआत करता है, वह बहुत ज्यादा फायदे में रहता है।

जिकौ बोलै, वौ ई तेल लावै। ५०८६

जो बोले, वही तेल लाये।

—सुझाव देने वाले ही के गले जिम्मेवारी आ पड़े, तब...!

—पंचायती करने वाले ही को भुगतान करना पड़े, तब... !

—बढ़-बढ़कर बातें बनाने वाले को ही काम सुपुर्द कर दिया जाये, तब...!

पाठा: **जिकौ बोलै वौ इज लेवण नै जावै।**

जिकौ मीठौ खासी, वौ खारा ई खासी। ५०८७

जो मीठा खाएगा, वह कड़वा भी खाएगा।

—व्यापार में लाभ उठाने वाले को ही घाटा सहन करना पड़ता है।

—जो व्यक्ति सुख-आनंद लेगा, वही दुख का दरद भी सहेगा।

—जो स्त्री पहिले सहवास का आनंद लेगी, उसे ही प्रसव की पीड़ा सहनी होगी।

जिकौ रोज मरै उणरी कांण कुण आवै ? ५०८८

जो रोज मरे, उसका शोक कौन मनाये ?

—जिसका दुख कभी मिटे ही नहीं, उसकी सहायता कौन करे ?

—जो व्यक्ति हर बार कुछ-न-कुछ बहाना बनाये, उसका कौन विश्वास करे।

—जो व्यक्ति हर बार नई आफत मोल ले, उसका हिमायती कौन बने ?

जिकौ समझै पीड़, उणरै सागै सीर। ५०८९

जो समझे पीड़ा, उसीके साथ क्रीड़ा।

—जो व्यक्ति दूसरों के दर्द को समझे, उसे ही मन की बात बताई जा सकती है।

—जो अपनी पीड़ा समझे, वही अपना।

जिण आंगळी रै लागै, उणरै ई पीड़ हुवै। ५०९०

जिस अँगुली के चोट लगे, उसे ही पीड़ा होती है।

—यों पाँचों अँगुलियाँ पास-पास ही रहती हैं, पर जिस अँगुली पर घाव हो, पीड़ा उसे ही भुगतनी पड़ती है, साथ-साथ रहना कुछ माने नहीं रखता !

—जिस व्यक्ति को दुख हो, उसकी वेदना वही समझता है।

जिण खातर तेवड़ बणायौ, उणरै कीं हाथ नीं आयौ। ५०९१

जिसके लिए पकवान बनाया, उसके हाथ कुछ न आया।

—विवाह के उपलक्ष्य में दूल्हे के निमित्त ही सारा आयोजन होता है, ठाट से भोजन बनता है, पर दूल्हे को खाने का कम ही अवसर मिलता है, उसे कई अनुष्ठान पूरे करने होते हैं ! नया साथी पाने की खुशी में खाने की खास इच्छा भी नहीं होती।

—जिस व्यक्ति के निमित्त जो खुशी मनाई जाय और संयोग से वही उस में शामिल न हो सके, तब...।

जिण खातर नाक कटायौ, वौ ई कैवै नगटौ। ५०९२

जिसके लिए नाक कटाया, वही कहे नकटा।

—जिस व्यक्ति के भले की खातिर कोई जोखिम ले और वही उसकी भर्त्सना करे या दोषी बताये, तब...।

—प्रेमी अक्सर अपनी प्रेमिकाओं की खातिर कई प्रकार के खतरे झेलते हैं और प्रेमिकाएँ उन्हें कसूरवार मानती हैं।

—बाकी दुनिया तो अवैध संबंधों को बुरा कहे तो कोई बात नहीं, पर जिसकी वजह से यह बदनामी मोल ली, जब वही उसे छिनाल कहे, तब उसकी तकलीफ़ का कोई पार है भला।

जिण गत आवै, उण गत जावै। ५०९३

जिस तरह आये, उसी तरह जाये।

—काला धन जिस अँधेरी राह से आता है, उसी अँधेरी राह से वापस चला जाता है।

—अकर्म या धोखे से कमाया पैसा अकर्म या धोखे से ही जाता है।

जिण गांव में लालची बसै, उठै निरधन भूखा क्यूं? ५०९४

जिस गाँव में लालची बसें, वहाँ गरीब भूखा क्यों?

—लालची बोहरे को झूठा-सच्चा झाँसा या अधिक ब्याज देने का लोभ देकर ठगा जा सकता है। इसलिए जस-तस लालची व्यक्तियों के बीच गरीब अपना काम चला लेता है।

—लोभी आदमी आसानी से जाल में फँसता है।

जिण घर दूझै काळी, उणरै नित ई दीआळी। ५०९५

जिस घर बँधी काली, उसके नित्य दीवाली।

—जिस घर में काली भैंस दूध देती हो, उसके यहाँ दीवाली के त्योहार जैसा ही ठाट रहता है—दूध-दही खूब, मक्खन-घी खूब और जब चाहो, खीर बनाओ।

—भैंस की महिमा बखानी गई है।

जिण घर में नीं बूढ़ौ उणरौ घर बूड़ौ। ५०९६

जिस घर में नहीं बूढ़ा, उसका घर बूड़ा।

—जिस घर में अनुभवी बुजुर्ग नहीं, उस घर का अनर्थ अवश्यंभावी है।

—बड़े-बूढ़ों के महत्त्व को दरसाया गया है।

पाठा : जिणरै घर में नीं बूढ़ौ, उणरौ घर हांकरतां डूबौ।

जिण घर रा काळा तिल खाया, उठै ई जावैला। ५०९७

जिस घर के काले तिल खाये, वहीं जाना होगा।

—काले तिल खाना एक मुहावरा है—जिसका अर्थ है, पिछले जन्म के ऋण से उऋण होना।

—अपनी इच्छा के विरुद्ध जब कोई काम जबरदस्ती करना पड़े, तब...।

—परिवार का ही व्यक्ति बहुत तंग करे तब परेशान होकर यह उक्ति कही जाती है।

जिण घर लाग्यौ बांणियौ, वौ घर जातौ जांणियौ। ५०९८

जिस घर पड़ी बनिक की छाया, वह घर बचे नहीं भाया।

—बोहरा प्रथा को याद दिलाने वाली उक्ति है कि तब जिस घर पर उसकी मेहर हुई, उसकी कलम के नीचे कोई आ गया तो उसकी बर्बादी निश्चित थी। आज भी जहाँ सुदूर गाँव में यह प्रथा है, वहाँ यही हाल है।

जिण घर साळौ सारथी अर तिरिया री सीख। ५०९९
सांवण में हळ-बळद नथी, तीनूं मांगै भीख॥

जिस घर में साला अगुआ, औरत की चले सीख।
सावन में हल-बैल नहीं, तीनों माँगें भीख॥

—नसीहत देने वाली उक्ति है कि जिस घर में साला कर्ता-धर्ता हो, औरत की राय प्रमुख हो और सावन के महीने में खेती के लिए न बैल हों, न हल, ये तीनों निश्चित रूप से कमाकर नहीं खा सकते। भीख माँगने के काबिल हो जाते हैं।

जिण घर सासू नखराळी, उण घर बहुवां कैड़ौ सिणगार! ५१००

जिस घर सास नखराली, उस घर में बहुओं का कैसा सिंगार!

—जिस घर के प्रमुख औला-दौला हों, वहाँ अन्य छोटे सदस्य हमेशां खस्ता हालत में रहते हैं, क्योंकि आमदनी पर अधिकार बड़े व्यक्तियों का ही रहता है। यदि प्रतीक रूप में सास को पहिनने खाने और सजने का शौक है तो बेचारी बहुएँ मन मारकर सादे वेश में रहने को मजबूर हैं।

जिण जोड़ी, उण नै कुण तोड़ी? ५१०१

जिसने जोड़ा, उसे किसने तोड़ा?

—जो जोड़ता है, वही तोड़ता है। ईश्वर ही सृष्टि का रचयिता है और वही उसका नाश करने वाला है, कोई दूसरा उसे विनष्ट नहीं कर सकता। निमित्त बनने जितनी क्षमता तो किसी की हो सकती है।

जिणज्यौ अे रांडां डीकरा, हाथां में लीजौ ठीकरा। ५१०२

जनना ए राँडों पुत्तर, हाथों में लेना खप्पर।

—जिस घर में अव्यवस्था हो और प्रतिवर्ष संतान पैदा होती हो, खाने का कोई जुगाड़ न हो, उस परिवार वालों को भीख माँगने के लिए हाथों में खप्पर लेने ही पड़ते हैं, दूसरा कोई उपाय नहीं।

जिण ठांव में खावै, उणनै ई फोड़ै। ५१०३

जिस बासन में खाना, उसे ही फोड़ना।

दे.क.सं.५०७८

जिण डाळै बैठै उणनै ई वाढ़ै। ५१०४

जिस डाल पर बैठे, उसे ही काटे।

—महामूर्ख व्यक्ति के लिए जिसे अपने अहित का भी खयाल न हो। जो डाल बैठने के लिए सहारे का काम कर रही है, उसे ही काटना। स्वयं नीचे पड़ना।

—कृतघ्न व्यक्ति के लिए जो सहारा देने वाला हो, उसीको हानि पहुँचाये।

जिणतां मरै तौ जंवाई माथै नीं पड़ै। ५१०५

जनते समय मरे तो जमाई के सिर न पड़े।

—यों तो दामाद के सहवास से ही बेटी गर्भवती होती है। किंतु प्रसव की वेला उसकी अकाल मृत्यु हो जाती है तो दामाद को अपराधी नहीं माना जा सकता।

—जो अपनी प्राकृतिक मौत मरे, उसके लिए किसी को दोष नहीं दिया जा सकता। मसलन व्यवसाय और खेती में घाटा हो तो चोर को दोषी नहीं बनाया जा सकता।

जिणती-जिणाती भूलांणी। ५१०६

जनते-जनाते भूल गई।

—जो औरत प्रति-वर्ष संतान पैदा करती-करती प्रसव की असह्य पीड़ा भूल जाती है, उसके लिए।

—जो औरत केवल जनने का काम ही जाने, बच्चे का ठीक तरह पालन-पोषण नहीं कर सके, उचित शिक्षा नहीं दे सके, उसके लिए!

—जो व्यक्ति दुख सहते-सहते उनका अभ्यस्त हो जाय, तब...।

जिणनै कोई नीं परणै, उणनै खेतरपाळ परणै। ५१०७

जिसे कोई नहीं ब्याहे, उसे क्षेत्रपाल ब्याहे।

खेतरपाळ = क्षेत्रपाल। खेत की रक्षा करने वाला देव। जिसके ४९ भेद माने जाते हैं।

—विवाह होने के बाद पति ही पत्नी का संरक्षक है। उसके सुख-दुख एवं उसके निर्वाह का जिम्मेवार है। किंतु जिस लड़की का विवाह ही न हो तो, उसके भरण-पोषण का जिम्मा तो माँ-बाप व भाई ले सकते हैं, पर उसके शील की रक्षा कौन करे! वह जिम्मा क्षेत्रपाल का है।

—जिसका प्रत्यक्ष कोई सहारा न हो तो अप्रत्यक्ष को उसके सहारे का जिम्मा सौंप देना पड़ता है।

जिण नै देख्यां झाळ ऊठै, वौ ई निगोड़्यौ ब्यावण आवै। ५१०८

जिसे देखने पर आग लगे, वही निगोड़ा ब्याहने आये।

संदर्भ: किसी एक दुष्ट ने एक लड़की का शील-भंग किया। जिसकी सूरत याद आते ही उसके दिल में आग-आग लग जाती थी। भाग्य की विडंबना कि अंततः किसी भी युक्ति के योग से उसीके साथ लड़की का ब्याह निश्चित हुआ। उसके मन की गहन व्यथा को व्यक्त करने के लिए ही यह उक्ति है।

—जिस व्यक्ति के द्वारा किसी का भयंकर अहित हुआ हो और वही उसे दिलासा देने आये, तब...।

जिणनै मांग्या मिळै, उणरै कांई कमी। ५१०९

जिसे माँगने पर मिले, उसे क्या कमी।

—माँगकर खाने वाले भिखारी के लिए क्या कमी? सैकड़ों घर उसकी आशा पूरी करते हैं।

—जब मर्यादा को तिलांजली देकर माँगने को ही जीवन-निर्वाह का आधार बना लिया तो फिर कैसा संकोच और क्या सीमा?

जिणनै रांम राखै, उणनै कुण चाखै? ५११०

जिसे राम रखे, उसे कौन चखे?

—ईश्वर जिसका रक्षक है, उसका बाल बाँका करने का साहस भला कौन कर सकता है?

—ईश्वर की जिस पर अनुकंपा है, उसकी ओर कोई टेढ़ी नजर से भी नहीं देख सकता।

पाठा: जिणनै राखै सांई, उणरो कुण बिगाड़ै कांई?

जिणनै राखै रांम, मार सकै नीं कोय।

जिण पखै लाडू, उण पखै पंच। ५१११

जिसके पास लड्डू, उसके साथ पंच।

—आधुनिक पंचों पर कटाक्ष। जो उनकी अँगुलियाँ चिकनी रख सकता हो, उसीके पक्ष में उनका न्याय होगा।

—भ्रष्ट न्यायाधीशों पर करारा व्यंग्य।

जिण मुख रांम न संचरै, ता मुख लोह जड़ाय। ५११२

जिस मुख राम न उच्चरे, वह मुख लोह जड़ाय।

—उस मुँह की क्या सार्थकता है, जो राम-नाम की रट से पवित्र न हुआ हो। उस अपवित्र मुँह में सीसा उड़ेल देना चाहिए।

—राम के नाम की महिमा सर्वोच्च है।

जिण मूंडै पांच चाब्या उण मूंडै कोयला नीं चाबीजै। ५११३

जिस मुँह से पंचामृत पिया, उस मुँह से क़ोयला नहीं चबाया जा सकता।

—जिस मुँह ने भगवान के प्रसाद का स्वाद लिया हो, उससे अखाद्य नहीं खाया जा सकता।
अर्थात् उस मुँह से झूठ, खुशामद या निंदा जैसी गंदी बातें नहीं निकल सकतीं।
—मानसरोवर का पानी पीने वाला, गंदे नाले का कलुषित जल नहीं पी सकता।

जिणरा खावै कोळिया, उणरा चरावै धोळिया। ५११४
जिसने दिये कौर, उसके चराएँ ढोर।
—जो रोटी देने वाला है, उसकी कोई भी बेगार शिरोधार्य है।
—सहयोग देने वाले के प्रति कृतज्ञ होना ही संगत है।
मि.क.सं.२९७४

जिण राज में रैणौ, हांजी-हांजी कैणौ। ५११५
जिस राज में रहना, हाँजी-हाँजी कहना।
दे.क.सं.५००७

जिणरा पेट माथै सांप पड़्यौ, वौ उछाळै। ५११६
जिसके पेट पर साँप पड़ा, वही उछाले।
—जिस पर आफत आई, वही उसका सामना करे, सफल हो, चाहे न हो।
—जहाँ पारस्परिक सहयोग व सद्भाव का सर्वथा अभाव हो।

जिणरा मरग्या पातसा, रूळता भमै वजीर। ५११७
जिसका मर गया बादशाह, ठौर-ठौर भटकें वजीर।
—आश्रय-दाता के मरने पर या उसका वर्चस्व समाप्त होने पर आश्रितों की बहुत बुरी हालत होती है।
—अभिभावक के टूटने पर घर बिखर जाता है।

जिणरी अकल हुयगी नास, उणनै सास्तर री कैड़ी आस! ५११८
जिसकी अक्ल हो गई नाश, उसे शास्त्र से कैसी आस!

—जिसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई हो उसे शास्त्रों से क्या सरोकार, उसके लिए वे तो पत्थरों के समान ही हैं।

—नास्तिक व्यक्ति की न धार्मिक ग्रंथों में दिलचस्पी है, न नीति-शास्त्रों में और न परंपरागत मान्यताओं में। अपने स्वार्थ के अलावा, उसकी किसी में आस्था नहीं।

जिणरी खावां बाजरी, उणरी बजावां हाजरी। ५११९

जिसकी खाएँ बाजरी, उसकी बजाएँ हाजरी।

दे.क.सं.२९७४

जिणरी गवाड़ी दूझै गाय, वौ क्यूं छाछ पराई जाय? ५१२०

जिसके घर खड़ी गाय, वह क्यों छाछ परायी जाय?

—गाय से घर वालों को कई सुविधाएँ मिलती है—दूध, छाछ, बछड़े, खाद इत्यादि। जिस घर में गाय का शुभ-निवास हो, वह किसी का मोहताज नहीं रहता।

—गाय की महिमा का बखान। एक छिपा संकेत यह भी है कि विवाहित पुरुष को इधर-उधर मुँह मारने की जरूरत क्या है।

जिणरी चाबां घूघरी, वांरा गावां गीत। ५१२१

जिसकी चबाएँ घूघरी, उसके गाएँ गीत।

घूघरी = उबले हुए गेहूँ का बना व्यंजन। घी-शक्कर डालकर खाया जाता है। परिजनों को बाँटने के लिए इसका प्रचलन है।

दे.क.सं.२९७४,५११४

जिणरी छाती नीं दीसै बाळ, उण सूं डरपै जम रौ काळ। ५१२२

जिसके सीने पर न दिखें बाल, उससे डरे यम का काल।

—जिस पुरुष के सीने पर बाल न हों, वह बड़ा घातक व खतरनाक होता है, उससे सदा दूर ही रहना लाभप्रद है।

—शारीरिक लक्षण को व्यक्त करने वाली उक्ति।

जिणरी डांग उणरी भैंस। ५१२३

जिसकी लाठी उसकी भैंस।

संदर्भ-कथा : एक हट्टा-कट्टा प्रौढ़ गूजर उम्दा भैंस खरीदकर निश्‍चित अपने डेरे पर सोया था। सुबह जागा तो आसपास कहीं तारों से गुँथी मजबूत लाठी नहीं मिली। लाठी बिना तो हाथ बदरंग लगते हैं। अपनी सुंदर लाठी के अलावा कोई दूसरी लकड़ी उसे पसंद ही नहीं आती थी। मेले में खूब तलाश की, पर उसे कोई लाठी अच्छी नहीं लगी। मन को समझाया कि परिचित इलाका है, फिर कैसा डर? वह तो निर्भय-निशंक भैंस लेकर अपने गाँव की राह लगा। बस, एक पखवाड़े से पहिले भैंस ब्या जाएगी! एक जून का आठ सेर से कम दूध नहीं होगा। बच्चे ठाट से दूध-दही, मक्खन-घी और छाछ का आनंद लेंगे। अपने हाथों इसकी सार-सँभाल करेगा! आधा मार्ग तय किया ही था कि हठात् एक जवाँ-डील बावरी लाठी लेकर यम-दूत की तरह सामने आ खड़ा हुआ। गूजर सँभले तब तक उसके फींचों पर कसकर दो प्रहार किये। गूजर धड़ाम से धरती पर आ गिरा। लाल-टूल का गोल साफा दूर जा पड़ा। बावरी उसके सिर पर करारा वार करने वाला ही था कि गूजर ने रिरियाते कहा, 'मुझे मारने से तुझे क्या हाथ लगेगा। मैं भैंस की कहीं भी चर्चा नहीं करूँगा, तू भी मत करना। यह अपशकुनी भैंस तू ही रख।' न जाने बावरी का क्योंकर दिल पसीजा कि वार को बीच में ही थामकर वह चुपचाप खड़ा हो गया। गूजर ने उठने की कोशिश की पर उठ नहीं सका। बावरी भैंस लेकर चलने लगा तो उसने फिर हाथ जोड़ते कहा, 'तेरे दो प्रहार से ही मैं तो अधमरा हो गया। मुझे भी अपनी ताकत का घमंड था सो तेरे सामने चकनाचूर हो गया। मुझे हराने वाला तू ही पहिला पट्ठा मिला है। यह भैंस तेरी ताकत का इनाम ही सही।' इतना कहकर उसने चलने की फिर कोशिश की, पर जमीन पर गिर पड़ा। बावरी को अपनी ताकत का गुमान हुआ। मुस्कराते बोला, 'यदि तीसरी लाठी और जम जाती तो तू यहीं पड़ा रहता।'

'सो तो रहता ही। फिर भी पूरा लाचार हो गया हूँ। लाठी के सहारे भी गाँव तक जाना मुश्किल है। तेरी बड़ी दया होगी जो यह लाठी मुझे देदे, वरना यहीं भूखा-प्यासा तड़पता रहूँगा।' गूजर आधा उठकर फिर गिर पड़ा। बावरी को अपनी ताकत का पूरा गुमान था। सो उसने घमंड के वशीभूत लाठी उसे सौंप दी। परिचित लाठी हाथ में आते ही गूजर समझ गया कि रात को सोते हुए, इसी हरामी ने लाठी चुराई है। पर अब तो लाठी गूजर के हाथ में है, उसके सहारे बड़ी मुश्किल से खड़ा हुआ और मन-ही-मन सारी जुगत विचारली। जब बावरी

व्यंग्य से मुस्कराते गर्वीली चाल में इठलाते दो-तीन कदम आगे बढ़ा तो पीठ पर करारे वार से आँखों के सामने हठात् बिजली कौंध गई। ऐसा करारा वार उसने कभी नहीं झेला था। हाथ में तारों से गुँथी लाठी हो तो गूजर यमराज को भी चुनौती दे दे। बावरी सँभले तब तक दो लाठियाँ पसलियों पर लगीं। वह कटे वृक्ष की तरह नीचे गिर पड़ा। गूजर ने दोनों नलियों पर कसकर दो प्रहार किये। जैसे लोहे से लोहा टकराया हो। मुस्कराते बोला, 'तूने मेरा कहा माना तो मैं भी तुझे जान से नहीं मारूँगा। अब लाठी के जोर पर तू और भैंस दोनों मेरे वश में हो। आज पहली बार बगैर लाठी रवाना हुआ तो उसका फल भुगत लिया! आइंदा किसी गूजर के साथ धोखा किया तो बिना मारे छोड़ूँगा नहीं। तेरी जात और तेरे गाँव का मुझे पता लग गया है। सो याद रखना।' बावरी असह्य दर्द के मारे कराहता रहा! और बिना किसी अड़चन के गूजर को तेजी से कदम बढ़ाते, टुकुर-टुकुर देखता रहा। मन-ही-मन बड़बड़ाया, 'सब लाठी का चमत्कार है। जिसके हाथ में लाठी होगी, भैंस उसीके घर बँधेगी।'

—जिसके हाथ में लाठी का जोर है, संपत्ति उसीके अधीन होती है।

—जिसके हाथ तलवार, उसी का सारा संसार।

पाठा : जिणरी लाठी, उणरी भैंस।

जिणरी तेग, उणरौ धेग। ५१२४

जिसकी तेग, उसीका देग।

दे.क.सं.५१२३

जिणरी नीत खोटी, उणरै चौकै रोटी। ५१२५

जिसकी नीयत खोटी, उसके आँगन रोटी।

—नैतिक मान्यता की दुहाई देने वाले भूखों मरते हैं और उसका उल्लंघन करने वाले मौज मनाते हैं।

—जिसकी नीयत खोटी है, वही मन-वांछित रोटी पाता है।

जिणरी नीत पाक, उणरै घर में राख। ५१२६

जिसकी नीयत पाक, उसके घर में राख।

—जो नैतिक मान्यताओं और सिद्धांतों की लीक नहीं छोड़ना चाहते वे हमेशा दरिद्र रहते हैं।

—आदर्श की खामखयाली पर कटाक्ष।

जिणरी नीत फिरै, उणरा दिन पैली फिरै। ५१२७

जिसकी नीयत बदलती है, उसके दिन पहिले बदलते हैं।

—मति बिगड़ने पर दिनमान पहिले बिगड़ते हैं।

—जिस व्यक्ति की मंशा पथ-भ्रष्ट होने की है, उसका सारा जीवन ही डगमगाने लगता है। वह सुगमता से आगे नहीं बढ़ पाता! कदम-कदम पर दुख उठाता है।

—नैतिक मान्यताओं का अतिक्रमण करने वाले हमेशा कष्ट पाते हैं।

जिणरी मोगरी, उणरौ ई माथौ। ५१२८

जिसका मुगदर, उसीका सर।

—जिसकी वस्तु हो, उसीसे उसको सजा देने पर या उसका नुक्सान पहुँचाने पर...। और अपने पास से कुछ भी उपयोग न लाने पर या एक धेला भी खर्च न करने पर।

—जिसकी रस्सी हो, उसीसे उसको बाँधने पर यह उक्ति सार्थक होती है।

जिणरी मोचड़ी उणरौ ई माथौ। ५१२९

जिसकी जूती उसी का सिर।

दे.क.सं.५१२८

जिणरै आंधलौ आगीवांण, तिणरौ बेली रांम। ५१३०

अंधा जिसका आगीवान, उसका मालिक भगवान।

—व्यक्ति, समूह, समाज व देश का जो पथ-निर्देशक अंधा हो, उसका भगवान ही मालिक है। पतन के किस गर्त में गिराएगा, उसका किसे भी पना नहीं! गिरने के बाद भी पता चले, न चले!

—आज हमारा समाज और हमारा देश, इसी अंधे दौर से गुजर रहा है।

जिणरै खोळै बैसीजै, तिणरी दाढ़ी पंपोळीजै।–व.१९० ५१३१

जिसकी गोद में पसरा जाये, उसीकी दाढ़ी सहलाये।

—छोटा बच्चा भी अपने स्वार्थ को अच्छी तरह समझता है कि वह जिसकी गोदी में खेल रहा है, उसीकी दाढ़ी खुशी के साथ सहलाता है।

—जिस व्यक्ति से स्वार्थ की सिद्धि हो, अजाने ही उसकी खुशामद करने के हाव-भाव प्रकट हो जाते हैं।

जिणरै गाडै जावै, उणरा ई गीत गावै। ५१३२

जिसकी गाड़ी पर जाये, उसीके गीत गाये।

—जहाँ अपना मतलब सरता हो, उसकी चिरौरी के लिए कुछ भी सोचना नहीं पड़ता, जाने या अजाने समूची चेतना अपने-आप उधर ही मुड़ जाती है।

—मनुष्य के स्वभाव की कैसी गहरी पड़ताल इस उक्ति में ध्वनित हुई है कि स्वार्थ ही मनुष्य का सर्वोपरि दर्शन है।

जिणरै घूमै माळ, उणरै कैड़ौ काळ! ५१३३

जिसके कुएँ पर घूमे माल, उसके घर कैसा अकाल!

—जिसके खेत में रहँट की माल से सिंचाई हो रही हो, वह पूर्णतया वारिश के भरोसे नहीं रहता, हो जाय तो बहुत शुभ, न हो तो तब भी खैरियत।

—जिसके पास काम करने के उपयुक्त साधन हैं, वह अपने लक्ष्य में सफल होता है।

जिणरै चूल्है सीझै, वौ ई खाय रीझै। ५१३४

जिसके चूल्हे पर सीझे, वही खाकर रीझे।

—जिसके चूल्हे पर पकता है, वही खाता है। कोई किसी को नहीं देता। सब अपने-अपने दायरे में अपना-अपना खाते हैं और उसी में मगन रहते हैं।

—जो व्यक्ति किसी पर खामखाह एहसान लादना चाहे, तब...।

जिणरै दूखै, उणरै पीड़। ५१३५

जिसके घाव, उसीको पीड़ा।

—कोई किसी के दुख-दर्द को नहीं बँटाता, जिसके तकलीफ हो, फकत उसे ही पूर्णतया बर्दाश्त करना पड़ता है।

—जिसे परेशानी हो,वही उसे भुगते और उसका निदान सोचे,दूसरों को उससे कोई सरोकार नहीं।

जिणरै पांव न फटी बवाई , वौ कांई जांणै पीर पराई ! ५१३६

जिसके पाँव न फटी बिवाई, वह क्या जाने पीर पराई !

—ऐश-आनंद के झूले पर झूलते जिस मनुष्य के पाँवों में कभी बिवाई तक नहीं फटी,वह भला दूसरों की पीड़ा का क्योंकर अनुमान लगा सकता है ?

—कुछ भी सही निर्णय तक पहुँचने के लिए मनुष्य का अनुभव ही पुख्ता आधार है। यदि किसी सुखी मनुष्य को सपने में भी दुख की अनुभूति नहीं हुई हो,वह दूसरों का दुख समझने में नितांत असमर्थ है।

जिणरै बेटौ होसी , उणरै वींदणी आसी। ५१३७

जिसके बेटा होगा, उसके बहू आएगी।

—जिसके पास अतिरिक्त पूँजी होगी, वह उसका ब्याज बटोरेगा और जीवन का आनंद उठायेगा।

—कारण के अनुरूप ही कार्य संपन्न होता है,इसमें संदेह की कोई गुंजाइश नहीं।

—किसी व्यक्ति विशेष के सफल कार्य को देखकर लोग ईर्ष्या-वश आलोचना करने लगते हैं,तब उन्हें निरुत्तर करने के लिए यह उक्ति बहुत ही सार्थक है।

जिणरै हाथां झोळी , डूम गिणै नीं कोळी। ५१३८

जिसके हाथ में झोली, डोम गिने नहीं कोली।

दे.क.सं.२००४

जिणरै हाथै हांडी-डोई , उणरै साथै सब कोई। ५१३९

जिसके हाथ में हँडिया डोई, उसके साथ हर कोई।

डोई = लकड़ी का बना बड़ा-सा चम्मच।

—जिसके हाथ में रसोई का जिम्मा हो,उसकी खुशामद सब करते हैं। उसका कहा मानते हैं। वक्त पर अच्छा खाना वही दे सकती है। सास के हाथ में रसोई का राज हो तो उसकी चलती है,बहू के जिम्मे हो तो उसकी चलती है।

—यहाँ तक कि हाथ में थैला देखकर प्रतिदिन के अभ्यस्त कुत्ते भी काफी दूर तक रोटी की आशा में पूँछ हिलाते हुए चलते हैं। आखिर निराश होकर ही लौटते हैं। समझ जाते हैं कि उसके थैले में रोटियाँ नहीं हैं।

—जिसके हाथ में सत्ता की बागडोर हो, किसी का भला करने की क्षमता हो तो उसकी खुशामद सब करते हैं।

जिणरौ कांम तिण नै छाजै। ५१४०

जिसका काम, उसीको सोहे।

दे.क.सं.१८८५,२०५९

जिणरौ कुण ई बेली नीं, उणरौ रांम बेली। ५१४१

जिसका कोई बेली नहीं, उसका राम बेली।

—चारों तरफ से हताश व्यक्ति को भगवान के अलावा कहीं कोई सहारा दूर-दूर तक नजर नहीं आता, तब इसी तरह की उक्तियों से वह अपना संबल या आत्म-विश्वास बढ़ाता है।

—बाकी सब सहारे छूट जाते हैं तो अंतिम और विश्वस्त सहारा भगवान का ही होता है।

जिणरौ खावै, उणरौ गावै। ५१४२

जिसका खाये, उसका गाये।

दे.क.सं.२९७४

जिणरौ खीच उणनै ई डोढ़ चाटू? ५१४३

जिसका खीच, उसीको डेढ़ चाटू?

चाटू = काठ का चमचा, जो डोई से कुछ बड़ा होता है।

—उदाहरण के तौर पर जब गोद आया लड़का पिता के लिए खाने-पीने में कंजूसी करे तब यह उक्ति बेटे के कलेजे में तीर की नाई चुभती है।

—जिसका पूर्ण अधिकार हो, जब उसे ही वंचित करने की कोई कुचेष्टा करे, तब...!

पाठा : जींकी खीचड़ी, वींनै ई अेक डोई।

जिणरौ चून उणरौ पुन्न। ५१४४

जिसका चून उसीका पुण्य।

दे.क.सं.२५७

जिणरौ बाप बीजळी सूं मरै, वौ किड़क सूं डरै। ५१४५

जिसका बाप बिजली से मरे, वह कड़क से डरे।

—एक बार बड़ा हादसा या बड़ी दुर्घटना होने पर जो व्यक्ति अतिरेक सावचेती बरते या बात-बात में सतर्क रहे,उसके लिए।

—धूर्त के द्वारा एक बार धोखा खाने पर जो व्यक्ति सज्जन या साधु-प्रकृति के मनुष्यों पर भी भरोसा न करे,तब...।

जिणरौ ब्याव उणरा गीत। ५१४६

जिसका ब्याह, उसीके गीत।

—अधिकृत व्यक्ति को ही उसका हक मिलना चाहिए।

—जिसका गाजा-बाजा उसीका बखान।

—जिसका राज्य,उसीकी विरुदावली।

जिणरौ भीड़ू दीनानाथ, तिणनै कुण घालै हाथ! ५१४७

जिसका बेली दीनानाथ, उस पर कौन उठाये हाथ!

—ईश्वर की अनुकंपा से जो व्यक्ति संपन्नता के शिखर पर है या सत्ता के सिंहासन पर है, उसे कोई बेदखल नहीं कर सकता। जब तक दीनानाथ की उस पर मेहर है,उसका कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता।उसकी कोप दृष्टि होने पर ही कुछ बिगड़ सकता है,अन्यथा नहीं।

जिणरौ मरै वौ रोवै। ५१४८

जिसका मरे वही रोये।

—मानवीय संवेदना का अभाव होने पर ऐसा ही होता है कि जिस पर गुजरे वही भुगते! मनुष्य की मूल-प्रकृति यही है। बाकी सब पाखंड और शिष्टाचार।

—जब अकेला व्यक्ति अपना दुख झेलने को मजबूर हो,तब...।

जिण विध व्है गांव री रीत, उण विध उठावै भींत। ५१४९

जैसी हो गाँव की रीत, वैसी ही उठाये भीत।

—जिस समुदाय, बिरादरी या समाज की जो प्रचलित व्यवस्था हो, प्रत्येक नागरिक को उसी के अनुसार ही चलना चाहिए। उसका उल्लंघन करने से समाज चल नहीं सकता। सामाजिक मर्यादा का पालन करना हर व्यक्ति का नैतिक कर्तव्य है।

—यदि बाहर का कोई व्यक्ति किसी अन्य समाज में शामिल हो तो उसे भी व्यवस्था का सम्मान करना चाहिए।

जिणियां ज्यांरा करम। ५१५०

जने उनके भाग्य।

—परिवार नियोजन के लिए समझाने पर न मानने वाली औरत इस उक्ति का सहारा लेती है कि संतान का अपना-अपना भाग्य होता है, जिस पर किसी का वश नहीं चलता। ईश्वर की इच्छा और भाग्य का विरोध करना किसे भी शोभा नहीं देता।

—हर व्यक्ति अपने भाग्य की ही कमाई खाता है।

जि़णी नीं ब्याई, सूवा रोग कठा सूं लाई? ५१५१

जनी न ब्याही, सूवा-रोग कहाँ से लाई?

सूवा-रोग = प्रसव के बाद होने वाला सूतिका रोग।

—खाने-पीने का नियमित रूप से पूरा परहेज रखने के बावजूद कोई रोग-ग्रस्त हो जाये, तब...!

—स्वास्थ्य के नियमों की सुचारु रूप से अनुपालना करने वाला व्यक्ति जब किसी अचीते रोग से पीड़ित हो जाये तब कटाक्ष के रूप में यह उक्ति कही जाती है।

—अकस्मात् कोई अनहोनी बात घटित हो जाय, तब. ..।

—सर्वथा तथ्यहीन या निराधार बात की खातिर किसी व्यक्ति पर व्यर्थ लांछन लग जाए, तब।

जितरा पूळा, उतरी झाळ। ५१५२

जितने पूले, उतनी ज्वाल।

—क्रोधी व्यक्ति को जितना उकसाया जाएगा, उतनी ही उसकी क्रोधाग्नि बढ़ती रहेगी।

—सांप्रदायिक फसाद को भड़काने पर अधिक फैलता है।

—अग्नि को पानी से शांत करने की बजाय उस में ज्यों-ज्यों घास डाला जाएगा, वह और अधिक धधकेगी।

—किसी भी कार्य के लिए जितना साधन या सामग्री होगी, उसीके अनुरूप उसका परिणाम होता है।

जितरा मियां मस्या, उतरा ई रोजा कम व्हिया। ५१५३

जितने मियाँ मरे, उतने ही रोजे कम हुए।

—अधिकारी-वर्ग की जितनी संख्या कम होगी, प्रजा को कष्ट उसीके अनुरूप कम होगा।

—उत्सव-आयोजन में निमंत्रित व्यक्ति जितने ही कम होंगे, व्यवस्थापकों का भार उतना ही हलका होगा।

जितरा मूंडा उतरी बातां, किण-किण रै मूंडै बावां लातां! ५१५४

जितने मुँह उतनी ही बातें, किस-किसके मुँह पर चलाएँ लातें!

—अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का इससे बड़ा दावा और क्या हो सकता है कि प्रत्येक जबान को अपनी बात कहने की छूट है, उस पर पाबंदी नहीं लगाई जा सकती।

—बुरे काम की बदनामी को रोका नहीं जा सकता।

—कैसा भी तानाशाह हमेशा के लिए लोगों की जबान पर अंकुश नहीं लगा सकता।

जितरी जातां, उतरा ई रांमा-सांमा। ५१५५

जितनी जातें, उतने ही जुहार।

—हर जाति, समुदाय, समाज या राष्ट्र की अपनी-अपनी भिन्न संस्कृति और रीति-रिवाज हैं। हर व्यक्ति को अपने से भिन्न संस्कृति का आदर करना चाहिए।

जितरी सोभा, उतरी तोबा। ५१५६

जितनी शोभा, उतनी ही तोबा।

—किसी भी मनुष्य की जितनी अधिक कीर्ति फैलती है, साथ-ही-साथ हवा में अपकीर्ति के भी कीटाणु फैलते रहते हैं! निंदा का दायरा भी धीरे-धीरे बढ़ने लगता है। ईर्ष्या व डाह मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है जो अजाने ही निंदा का आधार जुटा लेती है।

जितरै न कमावै बेटौ, उतरौ कमावै फेटौ।–व.३९७ ५१५७

जितना न कमाये बेटा, उतना कमाये फेटा।

फेटौ = आना-जाना। मेल-मिलाप।

—नन्हें-मुन्ने बच्चों का इसी आशा से लालन-पालन किया जाता है कि वे बड़े होकर परिवार के हित में अच्छी कमाई करेंगे। सच है कि अधिकांश पुत्र कमाई करते भी हैं। पर बड़े व्यक्तियों का परिचय, नई-नई जान-पहिचान कभी-कभार वक्त पर ऐसा काम निकाल देती है, जिसका मुकाबला कोई पुत्र नहीं कर सकता। ऐसे भी उदाहरण मौजूद हैं कि परिचितों के सहयोग से पीढ़ियाँ निहाल हो गईं।

जितरौ छोटौ, उतरौ ई खोटौ। ५१५८

जितना छोटा, उतना ही खोटा।

दे.क.सं.४७८३

जितरौ बारै, उतरौ जमीं में। ५१५९

जितना बाहर, उतना ही जमीन में।

—अत्यधिक धूर्त या चंट-चालाक या बदमाश व्यक्ति के लिए जो दिखने में भला लगे पर वास्तव में उससे उलटा हो।

—उस अधम व्यक्ति के लिए जो अपना बनकर न जाने कब कुछ घात कर बैठे।

पाठा : जित्तौ बारै, उत्तौ ई मांय।

जित्ता घणा जोता, उत्ता घणा गोता। ५१६०

जितने ज्यादा जोते, उतने ज्यादा गोते।

जोता = खेत जोतने के पश्चात् हल से पड़ी हुई सीधी रेखाओं के विपरीत हल द्वारा दोनों ओर खींची हुई कुछ आड़ी रेखाएँ।

गोतौ = गोता = फालतू चक्कर, बेकार आना-जाना।

—कोई भी काम अच्छा और सलीके से संपन्न करना चाहें तो उसकी आवश्यकतानुसार उतनी ही मेहनत करनी पड़ती है।

—जैसा काम वैसी मेहनत। यानी काम की आवश्यकता के अनुरूप ही मेहनत निर्भर करती है।

जित्ता ठाकर मरै, उत्ता ई जुहार ओछा हुवै। ५१६१

जितने ठाकुर मरें, उतने ही जुहार कम हों।

—आज तो सामंती राज-तंत्र समाप्त हो चुका है, तब के 'ठाकुर' क्या बला होती थी, उसकी कल्पना तक संभव नहीं है। गाँव की प्रजा पर उनका क्या दबदबा और क्या आतंक था, इस उक्ति से पता चल जाता है कि जितने ठाकुर मरें, उतने ही जुहार कम हों! जिसके प्रति घृणा और रोष का पार नहीं था उससे भेंट होने पर धरती तक झुकते हुए जुहार करना पड़ता था। जुहार की अकिंचन तकलीफ के लिए ठाकुर की मौत का कुछ मूल्य ही नहीं था।

—जितने बड़े व्यक्ति मरें, उतनी ही खुशामद कम हो।

—मनुष्य समाज में तो विषमता मिटती नहीं है, वह फकत रूप या बाना बदलती है। राजा-महाराजा और ठाकुरों की जगह अब मंत्री, राजनेता व नौकरशाहों ने ले ली है! ठाकुरों से विमुख होकर ऐसी उक्तियाँ अब इन लोगों पर लागू होने लगी हैं—जिनके लक्षण एक जैसे हों।

जित्ता देव उत्ता पुजारी। ५१६२

जितने देव, उतने ही पुजारी।

—जितने सिद्ध, उतने ही साधक।

—जितने बड़े लोग, उतना ही ज्यादा आडंबर।

जित्ती ताल नीं सझी, उत्ता मजीरा फूटग्या। ५१६३

जितनी ताल नहीं सधी, उतने मजीरे फूट गये।

—राजस्थान के तेरह-ताली नामक नृत्य में हाथ-पाँवों पर बँधे मजीरों पर छोटे मजीरों से ताल साधनी पड़ती है। पर जितना नाच नहीं जमे उतने मजीरे फूट जाएँ, तब...!

—किसी व्यवसाय में इतना घाटा हो कि मूलधन भी वापस न मिले, तब...!

—किसी की खुशामद के चक्कर में जितने जूते घिसने पड़ें जितना वक्त जाया करना पड़े और काम न हो, तब...!

जित्तौ गुळ घालसी, उत्तौ ई मीठौ होसी। ५१६४

जितना गुड़ पड़ेगा, उतना ही मीठा होगा।

दे.क.सं.३६२५

जिद आगै हांण री कुण गिनरत करै। ५१६५

जिद के सामने हानि की कौन परवाह करता है।

—हानि का मसला तो 'अर्थ' से ही जुड़ा है, पर जिद या हठ का मामला तो अहंकार और व्यक्तित्व से बँधा है, जिसकी तुलना में बेचारी हानि का क्या मूल्य! अपना हठ रखने के लिए तो लोगों ने राज्य तक फूँक डाले।

—जब अहंकार का प्रश्न खड़ा होता है, तब भौतिक नुक्सान की मनुष्य परवाह नहीं करता।

जिद चढ़्योड़ौ आडू तूंबौ ई खा जावै। ५१६६

जिद चढ़ा उज्जड़, तूँबा भी खा जाय।

तूंबौ = तसतूंबौ = तूहड़ौ = एक जंगली बेल का फल जो मोसम्मी जितना बड़ा होता है पर इतना कड़वा कि जिसके परस से हथेली तक कड़वी हो जाती है। फिर भी बकरी की मन-पसंद खुराक है। अफीम से भी अधिक कड़वा। पर जिद में बौराये व्यक्ति के लिए क्या मीठा और क्या कड़वा! उसे तो किसी भी कीमत पर अपनी जिद निभानी है।

मि.क.सं.५१६५

•

जिनावर नै कांई जाच के खेत खलकां रौ है। ५१६७

जानवर को क्या पता कि खेत दूसरों का है।

—जानवर को तो केवल अपना पेट भरने की चिंता है, चाहे घरवालों का खेत हो, चाहे पराया! मार भी खा लेगा, पर जो घास सामने दिखी उसी में मुँह मारेगा। इसी प्रकार पशुवत मनुष्यों को भी अपने स्वार्थ, अपनी तलब और अपनी हवस के अलावा कहीं कुछ भी नहीं दिखता कि उनके द्वारा किसको क्या क्षति हो रही है? वे दूसरों की इज्जत पर भी खेल जाते हैं।

जिळोक किण सूं साख पाळै? ५१६८

जोंक किसका रिश्ता माने?

—जोंक तो केवल खून चूसना जानती है, उसका कोई अपना-पराया नहीं होता। न जानवर को छोड़ती है न मनुष्य को। इसी तरह जोंक-वृत्ति वाले मनुष्य ठाकुर, बोहरा या राज्य का कारिंदा ये भी आदमी का खून चूसते हैं, उन्हीं के ही रक्त-पसीने पर इन श्रीमंतों का निर्वाह होता है।

जिसड़ा कंथा घर भला, उसड़ा ई परदेस। ५१६९

जैसे प्रियतम घर भले, वैसे ही परदेश।

—निकम्मा पति चाहे घर पर रहे, चाहे परदेश—वह एक जैसा ही है। न यहाँ कमाई और न वहाँ कमाई।

—नामर्द बरसों तक बाहर रहे या हमेशा घर में रहे—पत्नी के लिए उसकी अनुपस्थिति और उपस्थिति दोनों ही समान हैं।

जिसड़ा नै तिसड़ौ मिळ्यौ ज्यूं डूंम नै नाई। ५१७०
उण बजाई तुणतुणी, वौ आरसी बताई॥

जैसे को तैसा मिला, ज्यों डोम को नाई।
इसने बजाई तुनतुनी, उसने आरसी बताई॥

—जब दो चालाक या ठगों के मिलने पर किसी भी पक्ष को जाने अजाने कोई फायदा न हो, चाहे जितनी मगजमारी क्यों न कर लें।

पाठा: **जिसड़ा नै तिसड़ौ मिळ्यौ, ज्यूं बांमण नै नाई।**
उण दीवी आसीस अर वौ आरसी बताई॥

जिसड़ी माई, उसड़ी जाई। ५१७१

जैसी माँ, वैसी बेटी।

मि.क.सं. ३७७६

पाठा: **जैड़ी माई, वैड़ी जाई।**

जिसा करै उसा ई भोगै। ५१७२

जैसा करे, वैसा ही भोगे।

मि.क.सं. १८७३, १८८४, १८९२, १८९७

जिसा देव विसी पूजा। ५१७३

जैसे देव, वैसी पूजा।

—जिसका जैसा व्यक्तित्व हो उसीके अनुसार उसका सत्कार होना चाहिए। भ्रष्ट देव की भ्रष्ट पूजा। श्रेष्ठ देव की श्रेष्ठ पूजा।

—जो व्यक्ति तिरस्कार के योग्य हो उसकी भर्त्सना और जो आदर के योग्य हो उसका वैसा ही अभिनंदन।

पाठा : जैड़ा देव, वैड़ी पूजा।

जिसा नागनाथ, विसा ई सांपनाथ। ५१७४

जैसे नागनाथ, वैसे ही साँपनाथ।

—दुष्ट व्यक्तियों का हुलिया भिन्न हो सकता है, पर दूसरों को कष्ट देने की, उन्हें लूटने-खसोटने की दुष्प्रवृत्ति समान ही होती है। जो भी उनके संपर्क में आएगा, वे उसे डसेंगे, चोट पहुँचाएँगे।

पाठा : नागनाथ रौ भाई सांपनाथ।

जिसी करणी, उसी भरणी। ५१७५

जैसी करनी, वैसी भरनी।

दे.क.सं. १८२४

पाठा : जैड़ी करणी, वैड़ी भरणी।

जिसी भाई री प्रीत, विसा बैन रा गीत। ५१७६

जैसी भाई की प्रीत, वैसे बहिन के गीत।

—एक ही निर्मोही माँ की संतानें क्योंकर एक-दूसरे को निस्वार्थ प्रेम कर सकती हैं! जैसी भाई की कृत्रिम प्रीत, वैसे ही बहिन के कृत्रिम गीत—दोनों ही भावना से शून्य।

—दो व्यक्तियों के पारस्परिक संपर्क की गहनता, एक दूसरे के व्यवहार पर निर्भर करती है।

जिसौ पीवै पांणी विसी बोलै वांणी। ५१७७

जैसा पीये पानी, वैसी बोले बानी।

संदर्भ-कथा : बचपन से दीक्षा मिले एक जैन साधु के अंतस् में किसी तरह का विकार उत्पन्न नहीं हुआ। निस्पृह भाव से गुरु की सेवा करते-करते उसे सोलह वर्ष हो गये। वृद्ध गुरु को पुख्ता विश्वास था कि वह अपरिग्रह के पथ पर निर्विघ्न चल सकेगा! दोनों का साधना-स्थल अलग-अलग था। गुरु सूखी नदी के उस पार गुफा में रहता था। और शिष्य नदी के इस पार। पास ही के गाँव से चेला अल्ल सवेरे लकड़ी के पात्रों में भोजन और शुद्ध पानी ले आता,

विधवा सास-बहू की झोंपड़ी से। गुरु को खिलाकर स्वयं खाता! फिर एक गहर-घुमेर नीम के तले कुछ पढ़ता, लिखता। नीम की खोह में पोथियाँ जमी रहती थीं। तीसरे पहर नदी के बीच सूखी रेत पर समाधिस्थ होकर ध्यान करता! पहाड़ी नदी फकत वर्षा ऋतु में ही गरजती हुई बहती थी।

एक दिन ऐसा संयोग हुआ कि एक राजा ने सूअर के पीछे तीन घड़ी घोड़ा दौड़ाते हुए उसका पीछा किया, पर वह उसके तीर की सीमा में न आया सो न आया। दूरी बढ़ती ही रही। प्यास के मारे राजा का बुरा हाल। गला जलने लगा। आँखें जलने लगीं। किंतु पानी का दूर-दूर तक कोई नामोनिशान नहीं। छागल वाले सैनिक व दीवान काफी पीछे रह गये थे। सहसा राजा की नजर नीम की हरियाली पर पड़ी। न हो तो कुछ हरे पत्ते ही चबा लेगा। एक बार नीम के पत्तों से ही उसके प्राण बचे थे। उस दिन की तरह आज भी सैनिक और दीवान कहीं नजदीक ही होंगे। राजा नीम के नीचे आया तो उसे मलमल के कपड़ों से ढँके कुछ रंगीन पात्र नजर आये। भगवान ने आखिर राजा का खयाल रखा तो सही। उसने मलमल हटाकर सलीके से पानी पिया। जान में जान आई। ऐसी जलती हुई प्यास तो कभी नहीं लगी। पानी के अभाव में उसकी मृत्यु निश्चित थी। बाल-बाल बच गया! निरीह प्राणियों की हाय से बचना तो नहीं चाहिए था! उसके दिमाग में विचारों का उलटा ही बवंडर साँय-साँय करने लगा कि बिछुड़े हुए सैनिक आ पहुँचे। दीवान भी। राजा के विचारों का ताँता टूटा। उसने पात्र का बचा हुआ सारा पानी पी लिया। इस पानी का तो स्वाद ही अलग था। शरीर की नस-नस में शायद प्रभाव भी दूसरी तरह का झनझना रहा था! उसने हुक्म दिया तो राजा की खास छागल से खाली पात्र फिर भर दिया! अपने हाथ से वापस सभी पात्रों पर मलमल डाली। झीनी मलमल से पात्रों का लाल वर्ण मानो उसे कोई सीख दे रहा हो। उफ्फ! उसके तीरों से आहत प्राणी किस तरह चीत्कार करते थे! छटपटाते थे! शरीर में प्राणों का संचार करने वाला लहू घाव की राह धरती पर फैलने लगता था! एक हिंसक आनंद की परितृप्ति में खोया राजा धीरे-धीरे तड़पते प्राणी को निर्जीव होते देखता रहता था। क्या मनुष्य होकर उसे शिकार जैसा घृणित काम करना चाहिए था? अब तक यह सवाल उसके मन में क्यों नहीं कौंधा? इतने में दीवान ने राज-महल लौटने की अरदास की। राजा ने चौंककर पूछा, 'राजमहल?' दीवान ने हामी भरी। तब राजा कहने लगा, 'कैसा राज महल! यदि संयोग से जैन-महात्मा के पात्र में पानी नहीं मिलता तो सीधे मसान ही पहुँचता। राज-महल के सारे ठाट

धरे रह जाते ! मुनिवर को शीघ्र ढूँढ़कर लाओ, वे चाहें तो आधा ही क्या, पूरा राज्य उन्हें सौंप सकता हूँ। मेरी अपेक्षा तो वे प्रजा और वन-प्राणियों को पिता के समान प्यार करेंगे। निरीह जानवरों के शिकार में भटकने वाले हिंस्र-दानव को राज्य करने का क्या अधिकार है ? क्या मुझे वैसी ही असह्य पीड़ा नहीं होगी ?'

'जरूर होगी ? क्या इतनी मामूली बात का तुम्हें आज ही खयाल आया ?' राजा ने मुड़कर देखा—मुनिवर तो एकदम पास आ गये हैं। चरणों में दंडवत् करके प्रणाम किया। दाहिने पैर की अँगुलियों पर सिर रगड़ा। पहली बार राजा की आँखों में आँसू छलके ! विगलित स्वर में बोला, 'मेरे अक्षम्य पापों के बदले आपको राज्य सौंपकर मैं प्रायश्चित करना चाहता हूँ।'

मुनिवर ने मुस्कराते कहा, 'तुम प्रायश्चित करो-न-करो, तुम्हारी इच्छा। पर मुझे किस पाप का दंड देना चाहते हो ? मैंने तो सपने में भी ऐसा अपराध नहीं किया। राज्य की चाहना होती तो मैंने अपरिग्रह का यह पंथ क्यों चुना ? इसलिए कि राज्य के लोभ से मैं पथ-भ्रष्ट हो जाऊँ ?'

मुनिवर के चरण-स्पर्श करते हुए राजा उठा। विदग्ध स्वर में याचक की नाईं कहने लगा, 'तो फिर मेरे प्रायश्चित के लिए आपकी दिव्य-दृष्टि में एक सँकड़ी पगडंडी तक नहीं ? आपके दुर्गम पथ पर चलने की न तो मुझ में शक्ति है और न वैसा साहस ही। आपसे दीक्षा लेकर समर्थ बनना चाहता हूँ।' मुनिवर खिलखिलाकर हँस पड़े, मानो नीम का पेड़ हँसा हो। जादुई वाणी में कहने लगे, 'भला, राजा जैसा समर्थ और कौन हो सकता है ?'

राजा अदेर बोला, 'मुझे तो आज ही अपनी ताकत का असली बोध हुआ है कि मुझ-सा अनाथ प्राणी सारे राज्य में कोई नहीं है ! यदि आपके द्वारा मेरा उद्धार नहीं हुआ तो मैं पागल हो जाऊँगा। सच मुनिवर, मुझे सिंहासन और मुकट से ऐसी वितृष्णा हो जाएगी, मैंने सपने में भी नहीं सोचा था।'

मुनिवर ने तनिक गंभीर मुद्रा बनाकर कहा, 'तीन दिन बाद, इसी वेला फिर आना। गुरु से मशविरा करके तुम्हें राय दूँगा। रानी और राजकुँअरों से भी सलाह कर लो। तुम्हारे किसी भी निर्णय से उन्हें कष्ट नहीं पहुँचना चाहिए।'

मुनिवर के कहने का ऐसा प्रभाव हुआ कि राजा उन्हें साष्टांग दंडवत् करके राजमहल की ओर रवाना तो हो गया। पर ऐसे खिन्न मन से कि मानो उसके पाँवों में बोझिल बेड़ियाँ

पड़ी हों। राजा के ओझल होते ही मुनिवर को प्यास लगी। राजा के आकस्मिक परिवर्तन की दिशा में गंभीरता-पूर्वक सोचते हुए उन्होंने पात्र से पानी पिया! प्यास बड़े जोर की लगी थी। आधे से अधिक पात्र खाली हो गया! गुरु-शिष्य दोनों एक वक्त ही गोचरी का भोजन करते थे। विधवा सास-बहू के भोजन की कुछ रंगत ही ऐसी थी कि जिसे देखने मात्र से भूख बुझ जाती थी। और पानी ऐसा स्वादिष्ट मानो अमृत ही पी रहे हों। तभी तो गुरु ने कुछ सोच-विचार कर ही उसी एक घर से गोचरी लाने का निर्णय लिया था।

थोड़ी देर बाद उन्हें फिर प्यास महसूस हुई तो उन्होंने सारा पात्र खाली कर दिया। रात को पानी की बात तो दूर, जहाँ तक बन पड़े थूक भी नहीं निगलते थे। राजा के द्वारा राज सौंपने की बात गुरु से करना चाहते थे। दो घड़ी दिन शेष था। नदी की बालू पर नंगे पाँव चलते हुए आज पहली बार उन्हें जलन महसूस हुई। पगतलियों की चमड़ी मोटी हो गई थी और संवेदन शून्य भी। धँसाई की वजह से पहली बार चलने में कुछ ताकत लगानी पड़ी। ऐसा अनुभव तो पहिले कभी नहीं हुआ। मन में थोड़ी घुटन-सी महसूस हुई। नये खदबदाते विचारों को उन्होंने जबरन दबा दिया। क्या तीन दिन बाद राजा का यही विचार रहेगा? ना— ऐसा कहीं संभव है? रानी से मशविरा करने पर उसके मन से मसानिया वैराग तत्काल मिट जाएगा! फिर भी राजा के मन में यह परिवर्तन आया क्योंकर? पात्र के पानी से प्यास बुझने की वजह से। राजा ने कोई पहली बार तो पानी पिया नहीं। शायद प्यास के मारे राजा के प्राण निकल रहे थे। क्या रानी के अधरों का अमृत पीने के बाद भी राजा के यही विचार रह पाएँगे? क्या राज्य के साथ राजा रानी का भी परित्याग कर देगा? छिः छिः! बरसों की साधना के बाद भी एक जैन मुनि के मन में ऐसी गंदी भावना दबी रह सकती है? गुरु का स्मरण करते ही मुनिवर का चित्त कुछ शांत हुआ। नदी से बाहर निकलते ही उनके पाँव तेजी से उठने लगे! गुरु से अविलंब मिलने की ऐसी चाह तो अब तक नहीं जागी।

गुरु की सौम्य व दिव्य आभा की झाँकी मिलते ही मुनिवर का उद्वेलित मन ऐसा शांत हुआ जैसे सूरज के आलोक को ढकने वाली काली बदरिया एकदम हट गई हो। फिर उन्होंने राजा के बावरेपन की पूरी बात विस्तार से सुनाई। गुरु सुनते-सुनते दूसरे ही विचारों में खो गये। धीमे पर दृढ़ सुनिश्चित वाणी में कहा, 'मैं किसी पर भी जाने-अजाने कोई दबाव नहीं डालना चाहता। यदि तुम्हारी इच्छा प्रजा का कल्याण करने हेतु छटपटा रही है तो खुशी-खुशी उसकी बात मानो। असली बात तो मन है, बाकी सब पाखंड। कभी-कभार मन भी हमारे साथ आँखमिचौनी खेलता है। प्रजा के कल्याण का लक्ष्य भी कोई बुरा नहीं है?'

शिष्य ने अदेर शंका की, 'फिर मेरा कल्याण कैसे होगा ?' गुरु ने प्रश्न के जवाब में प्रश्न पूछना ही उचित समझा। कहा, 'इतने बड़े राज्य की अनगिनत प्रजा के कल्याण से क्या तुम्हारे कल्याण का ज्यादा महत्त्व है ?'

शिष्य की शंका का निवारण नहीं हुआ। पूछा, 'एक दिन तो आपने मुझे यही समझाया था ?' गुरु ने मुस्कराते कहा, 'उस दिन की बात अलग थी, आज की बात बिल्कुल दूसरी है। कल तक और सोच लो ! फिर तुम्हारी इच्छा जो कहे, वही करो। मेरे खयाल से राजा के विचार बदलेंगे नहीं !' शिष्य को गुरु की बात ज्यादा विश्वस्त नहीं लगी। प्रतिवाद करते कहा, 'मेरा मन तो कहता है कि रानी की मुलाकात के बाद जरूर राजा का मन बदल जाएगा। फिर भी आपकी बात पर अविश्वास भी कैसे करूँ ! अब तो लगता है कि आपकी बात ही सच होगी। लेकिन मुझे तो राज्य करने का कोई अनुभव ही नहीं है। आप तो सात बरस तक राज्य कर चुके हैं। यदि छोटे भाई ने धोखा करके राज्य नहीं छीना होता तो आप अब तक राजा ही होते ! छोटे भाई ने रानी तक को फुसला लिया। आप एक बार फिर नये राज्य की बागडोर सँभालें तो मैं दीवान बनकर आपकी सेवा करना चाहूँगा।'

न चाहते हुए भी गुरु ने व्यर्थ शंका करके शिष्य को परेशानी में डालते कहा, 'जब भाई भी धोखा करने से नहीं चूका तो कैसे विश्वास करूँ कि तुम धोखा नहीं करोगे...?' शिष्य ने अधीर होते हुए गुरु को बीच में ही टोका, 'यह क्या कह रहे हैं, आप ! ऐसी बात सुनने से पहिले तो मैं मर जाना उचित समझता हूँ !' गुरु ने सहज भाव से कहा, 'मरना इतना आसान नहीं है। जब राज्य का मौका मिल रहा है तो इसे भी आजमालो। राज्य करना भी एक बड़ी भारी तपस्या है। कामना करता हूँ कि तुम उस में खरे उतरो। छोटे भाई को तो मैंने दीक्षा लेते ही क्षमा कर दिया। उसने अजाने ही किया हो, मेरा भला ही किया है। मेरे गुरु के ज्ञान की तुलना में सारी दुनिया का राज्य भी तुच्छ है। अरे ! वह देखो, राजा धीरज नहीं रख सका तो पहिले ही आ गया। उसकी सूरत से लगता है, वह अब भी अपने विचारों पर दृढ़ है, वरना अकेला, इस सामान्य वेश में नहीं आता। सूरज, बस डूबने को ही है।' शिष्य ने जाने किस आशा से उस ओर देखा तो उसे ऐसा महसूस हुआ कि आज भूल से सूरज पश्चिम दिशा में उग रहा है !

राजा ने तो पास आते ही पहिले गुरु को साष्टांग दंडवत् किया, फिर शिष्य को। उल्लसित स्वर में बोला, 'रानी को समझाने में देर लगी, वरना मैं तो घड़ीभर पहिले ही आपसे दीक्षा लेने के लिए आ जाता। इस देरी का भी मुझे कम पछतावा नहीं है ! गुरुवर, पहिले मुझे

दीक्षा देकर बाद में अपने कर कमलों से मुनिवर का राज्य-तिलक कीजिए। कुछ विशिष्ट दरबारी सोने की पालकी लेकर, बस...आ ही रहे हैं।' फिर नीम वाले महात्मा की ओर मुखातिब होकर बोला, 'रानी कुछ दिन तक उदास रहे तो आप कतई परवाह मत कीजिएगा। आखिर पाँच बरस तक दोनों साथ रहे हैं, तब कुछ दिन तो उदास रहना स्वाभाविक है! धीरे-धीरे आपको मेरे समान ही प्यार करने लगेगी। ऐसी रानी बड़ी तपस्या से मिलती है और आपकी तपस्या भी तो कुछ कम नहीं। फिर भी आपका मन न माने तो आप जितनी चाहे रानियाँ रख सकते हैं। राजा को तो हर बात की छूट है। वो देखिये! खरे सोने की पालकी डूबते सूरज की किरणों का परस पाकर, कैसी जगमगा रही है?'

मुनिवर तो मानो बोलना ही बिसर गये हों। फिर भी उन्हें ऐसा विभ्रम तो अवश्य हुआ कि मानो आकाश का ठिकाना छोड़कर स्वयं सूरज ही उनकी ओर बढ़ता चला आ रहा है। नये शिष्य की दीक्षा के मंत्र भी उन्हें आधे-अधूरे ही सुनाई पड़ रहे थे।

—संस्कृति व संस्कारों के अनुरूप ही विचारों का तारतम्य रहता है।

—यहाँ पानी इन दोनों का ही अंतर्निहित प्रतीक है।

जिसौ वायरौ वाजै, तिसौ ओलौ लीजै।–व.५८ ५१७८

जैसी हवा बहे, वैसी ही ओट गहे।

—जमाने की जैसी हवा हो, मनुष्य को उसीका सहारा लेना चाहिए, अर्थात् उसीके रुख की दिशा में चलना चाहिए, विपरीत दिशा में चलना कष्टप्रद है और चाल भी धीमी रहती है।

—पुराने जमाने की दुहाई से नये जमाने की राह पर चलने में कई कठिनाइयाँ आती हैं।

—जब जैसी जरूरत हो, उसीकी ओट लेकर चलने में मनुष्य का लाभ है।

पाठा: **जैड़ौ बाजै बायरौ, वैड़ी लीजै ओट।**

जिसौ सिलांम, विसौ इनांम। ५१७९

जैसा सलाम, वैसा इनाम।

—जितनी सेवा, उतना ही मेवा या जैसी हाजरी वैसी बाजरी!

—जितनी खुशामद, उतनी ही आमद।

जी

जीकारौ देयनै जीकारौ लेवणौ। ५१८०

जीकारा देकर जीकारा लेना।

जीकारौ = किसी के नाम या गोत्र के बाद सम्मान सूचक 'जी' लगाकर संबोधित करना। आदर-सूचक संबोधन।

—पहिले दूसरों को सम्मान देने से स्वयं को सम्मान मिलता है। अपमान करने पर अपमान ही मिलेगा।

—सद्व्यवहार करने से ही सद्व्यवहार मिलता है।

जीजी नाचै, हूं ई नाचूं के जीजी रै तौ साढ़ी तीन सौ कळी रौ घाघरौ अर थारै भूवाजी भुरराट करै। ५१८१

जीजी नाचे, मैं भी नाचूँगी कि जीजी के तो साढ़ी तीन सौ कली का घाघरा है और तेरे यहाँ बूआ हाय-तोबा मचा रही है।

—अपनी अवस्था भूलकर सामर्थ्य से परे बड़े लोगों की नकल करने का प्रयास करने पर।

—मनुष्य को चाहिए कि अपनी औकात के दायरे में ही निष्ठापूर्वक अपना काम करे।

जीतै सो जबरौ। ५१८२

जीते वही जबरदस्त।

—जीत ही सामर्थ्य और शक्ति का एक मात्र प्रमाण है।

—जीत के पलड़े में ही सारी नैतिक मान्यताएँ तुल जाती हैं और हारे हुए में दोष-ही-दोष नजर आते हैं। सामंती व्यवस्था के दौरान जीता हुआ डकैत राजा बन जाता था और हारे हुए राजा को प्राण तक गँवाने पड़ते थे।

जीत्योड़ौ हास्या बराबर नै हास्योड़ौ मस्या बराबर। ५१८३

जीता हुआ भी हारे के समान और हारा हुआ मरे के समान।

—परिजनों के बीच आपसी झगड़े की ओर लक्ष्य है। किससे जीतना, अपनों से? किससे हारना, अपनों से? जहाँ मानवीय संबंधों और आत्मीयता की कीमत पर हार-जीत हो, वह एकदम व्यर्थ है।

—परिजनों से न झगड़ने की नसीहत।

जीभ ई प्रीत बधावै, जीभ ई बैर करावै। ५१८४

जबान ही प्रीत बधाये, जबान ही बैर बसाये।

—मनुष्य समाज में अच्छे-बुरे संबंधों का एक मुख्य कारण जबान है। बद-जबान से संबंध बिगड़ते हैं, मीठी जबान से संबंध सुधरते हैं। इसलिए उस पर नियंत्रण अनिवार्य है। बाहर से थोपा हुआ नियंत्रण नहीं, अपने मन से उपजा सहज नियंत्रण।

पाठा : जीभ ई खार उपजावै। जीभ ही कटुता उपजाये।

जीभ ई बळी अर स्वाद ई नीं आयौ। ५१८५

जीभ भी जली और स्वाद ही नहीं आया।

—जल्दबाजी में काम बिगड़ जाय तब। मनचीती सफलता न मिलने पर।

—उतावलेपन से काम बिगड़ता है।

—कोई व्यक्ति किसी को अपशब्द कहे और उसका बुरा नतीजा खुद को ही भुगतना पड़े, तब...।

—धीरज रखने की अप्रत्यक्ष नसीहत।

जीभ ई हाथी चढ़ावै, जीभ ई गधै चढ़ावै। ५१८६

जीभ ही हाथी पर चढ़ाये और जीभ ही गधे पर चढ़ाये।

—आदमी की काफी-कुछ प्रतिष्ठा और बदनामी वाणी पर निर्भर करती है ।

—जीभ से ही मंत्रोच्चार और जीभ से गाली-गलौज । अच्छे वक्ता की विश्व भर में ख्याति और गालियाँ निकालने पर अपने मोहल्ले में ही पिटाई ।

जीभ जावै पण जीभ नीं जावै । ५१८७

जीभ जाय पर जीभ न जाय ।

—जीभ तो बोलकर चुप हो जाती है, पर उससे निकले हुए अच्छे-बुरे शब्दों का प्रभाव कायम रहता है ।

—मसलन स्वामी विवेकानंद के दिवंगत होने पर जीभ तो विलीन हुई, पर उनके भाषण तो आज भी अपना प्रभाव पैदा कर रहे हैं ।

—कवि परलोक चले जाते हैं पर उनकी काव्य-वाणी आज भी मर्मज्ञों के कंठ में मौजूद है ।

जीभड़ली दांतां सूं बोली—सुणजौ ध्यांन लगाय के थें बत्तीस ५१८८
हूं अेकली जाजौ मत ना खाय । के सचळी रैजै रांड थूं देवैला कठै ई तुड़ाय ।

जीभ दाँतों से बोली—सुनना ध्यान लगाकर कि तुम बत्तीस, मैं अकेली, मुझे खा मत जाना । कि तुम चुप रहकर हमें बचाना । वरना सभी बाहर आ पड़ेंगे ।

—जीभ शरीर की हिफाजत भी कर सकती है और हाथ-पाँव तथा दाँत भी तुड़वा सकती है ।

—मानव जीवन में वाणी का सर्वोपरि महत्त्व है ।

जीभड़ली म्हारी आळपताळ, किड़कोला खावै सूदौ कपाळ । ५१८९

जीभ मेरी आल-पाताल, जूते-डंडे खाये सीधा कपाल ।

—जीभ तो अंट-शंट कुछ भी बक देती है, पर पिटने की पीड़ा सारे शरीर को झेलनी पड़ती है । अधिकांशतया खोपड़ी को ।

—इस प्रसंग में रहीम का दोहा दृष्टव्य है :

रहिमन जिव्हा, कह गई, सरग-पताल ।

आप तु कहि भीतर गई, जूती खात कपाल ।।

जीभड़ल्यां घर ऊजड़ै, जीभड़ल्यां घर होय । ५१९०

जिह्वा से ही घर उजड़े, जिह्वा से ही घर उमड़े ।

मि.क.सं.५१८६

जीभ ताळवै सौ कोस री छेती। ५१९१

जीभ और तालू के बीच सौ कोस की दूरी।

—कभी-कभार आश्चर्य अथवा भय के कारण ऐसी विकट स्थिति उत्पन्न हो जाती है कि चाहने पर भी मुँह से एक अक्षर तक नहीं निकल पाता मानो जीभ और तालू के बीच बहुत दूरी हो। जिह्वा तालू से चिपकी हो तो बोला नहीं जाता।

पाठा : **जीभ ताळवै रै छेती पड़ जासी।**

जीभ नीं व्है तौ कुत्ता ई खीर नीं खावै। ५१९२

जीभ न हो तो कुत्ते भी खीर नहीं खायें।

—वाचाल व्यक्ति पर कटाक्ष कि जीभ न हो तो उसे कोई पूछने वाला नहीं, यहाँ तक कि कुत्ता भी न पूछे।

जीभ नै कैर रौ कांटौ। ५१९३

जीभ को कैर का काँटा।

कैर = करील की झाड़ी। जिसका काँटा चुभने पर बहुत पीड़ा होती है—बिच्छू के डंक की नाईं।

—अपशब्द कहने वाले की प्रताड़ना इन शब्दों में की जाती है कि उसकी बद-जबान को कैर का काँटा लगे।

जीभ नै गुळ। ५१९४

जीभ को गुड़।

—शुभ और मीठा बोलने वाले व्यक्ति को शाबाशी के रूप में।

—किसी के प्रति शुभकामना व्यक्त करने पर या कोई खुश-खबरी सुनाने पर।

जीभ में ई इमरत हुवै अर जीभ में ई जैर। ५१९५

जीभ में ही अमृत बसे और जीभ में ही जहर।

दे.क.सं.५१९०

जीभ रा धणी रै दोय हलक व्है। ५१९६

जीभ का मालिक दो कंठ रखता है।

—पशुओं की तुलना में मनुष्य की जिह्वा का यह अतिरिक्त गुण है कि वह एक ही कंठ से दो विरोधी बातें फर्राट कह सकता है, कोई अवरोध नहीं। वह चाहे तो झूठ को सच और सच को झूठ एक ही हलक से सिद्ध कर सकता है।

जीभ रै हाड कोनीं व्है। ५१९७

जीभ के हड्डी नहीं होती।

—हड्डी-विहीन जिह्वा चारों ओर मुड़ सकती है, इसलिए उसे कुछ भी कहने की बंदिश नहीं।

—जो व्यक्ति मौका मिलते ही अपनी बात से मुकर जाय, उसके लिए!

जीभ रौ सुवाद, घर बरबाद। ५१९८

जीभ का स्वाद, घर बरबाद।

—चटोरेपन से घर नष्ट हो जाता है। इसलिए पेट की खातिर ही भोजन का महत्त्व है, जीभ की खातिर नहीं।

—चटोरे व्यक्ति पर कटाक्ष।

जीभ सूं सवाद छांनौ नीं। ५१९९

जीभ से कोई स्वाद छिपा नहीं रहता।

—हर चीज का रस ग्रहण करने वाली रसना से किसी भी वस्तु का स्वाद छिपा नहीं रहता।

—अतिकुशल व अनुभवी व्यक्ति के लिए...।

जीभ हारी तौ जमारौ हार्‌यौ। ५२००

जबान हारी तो जीवन हारा।

—जो व्यक्ति अपने वचनों पर दृढ़ न रहे उसके लिए।

—जिस व्यक्ति की जबान का एतबार नहीं, उसकी समाज में रंचमात्र भी प्रतिष्ठा नहीं रहती। वह जिंदा रहते भी मरे के समान है।

जीम-जूठ सो जावणौ, मार कूटनै न्हाट जावणौ। ५२०१

खा-पीकर सो जाना, मार-पीटकर भाग जाना।

—पहली सीख स्वास्थ्य के लिए हितकारी है और दूसरी सीख शरीर की सुरक्षा के लिए।

जीमण अर झगड़ौ तौ पराये घरां आछौ लागै। ५२०२

भोजन और झगड़ा तो दूसरों के घर ही अच्छे लगते हैं।

—खुद के जिम्मे हो तो पैसा खर्च होता है—खिलाने में भी और झगड़े में भी। पैसे के साथ शक्ति व समय का भी क्षय होता है। दूसरों के घर हो तो आनंद आता है।

पाठा : जीमण अर झगड़ौ तौ पराये घर सुहावै।

जीमण-तेवड़ बांणियां रा, गीत-गाळ गिंवारां रा। ५२०३

भोजन-पकवान बनियों के और गीत-गालियाँ गँवारों की।

—अच्छा भोजन बनाने-खिलाने में बनियों की ख्याति है और लोकगीत, कथाएँ, कहावतें और गालियों के लिए गँवारों की प्रसिद्धि है।

जीमण नै तौ बाजरी रा ई जांदा अर नांव घेवरचंद। ५२०४

खाने के लिए तो बाजरी का ही घाटा और नाम घेवरचंद।

—नाम के विपरीत स्थिति।

—जो व्यक्ति गरीब होते हुए भी हेकड़ी दिखाये, तब...।

जीमण बैठ्यां पूठै लाज कैड़ी! ५२०५

खाने पर बैठने के बाद लज्जा कैसी!

—भोजन और व्यवहार में लज्जा रखना संगत नहीं।

—किसी काम की शुरुआत करने पर उसे निःसंकोच संपन्न करना चाहिए।

जीमण में अगाड़ी, फौज में पिछाड़ी। ५२०६

भोजन में आगे और फौज में पीछे।

—चालाक व्यक्ति भोजन में तो सबसे पहिले उपस्थित रहते हैं इसलिए कि देर करने से ताजगी नहीं रहती, तिस पर खाना खत्म हो जाये तो भूखा भी लौट जाना पड़े। किंतु लड़ाई या फ़ौज में आगे रहने से जान को खतरा बना रहता है, इसलिए सफाई के साथ सबसे पीछे रहने में ही खैरियत है।

—स्वार्थी व चतुर व्यक्ति के लिए ऐसी उक्तियाँ यथा समय मार्ग-दर्शन करती हैं।

जीमण में आखतौ, कांम में पाछतौ। ५२०७

खाने में उतावला और काम में निखट्टू।

दे.क.सं.२९५९

जीमण में लाडू अर गना में साडू। ५२०८

भोजन में लाडू और रिश्ते में साढू।

दे.क.सं.३२६६

जीमण री ठौड़ तौ बिखेरौ इज होवै। ५२०९

भोजन की ठौर तो कुछ-न-कुछ बिखरता ही है।

—बड़े आयोजन में कुछ-न-कुछ हानि तो होती है,उससे बचा नहीं जा सकता।

जीमण सूं कांम है के थाळी बजावण सूं। ५२१०

भोजन से मतलब है कि थाली बजाने से।

—मनुष्य को चाहिए कि वह सीधा काम-से-काम रखे और दीगर बातों में किसी तरह की दिलचस्पी न ले।

—व्यर्थ की टीका-टिप्पणी करने वाले व्यक्तियों को निर्देश...।

—अपना काम सिद्ध हो तो हल्ले-गुल्ले में कोई सार नहीं।

जीमण सूं मतलब राखणौ, थाळी सूं नीं। ५२११

खाने से मतलब रखना चाहिए, थाली से नहीं।

—सीधे अपने मतलब से वास्ता रखना चाहिए,इधर-उधर ललचाना उचित नहीं।

जीमण थाळी रौ, परोसणौ साळी रौ। ५२१२

खाना थाली का, परोसना साली का।

—थाली में खाने से काफी सुविधा रहती है। विभिन्न व्यंजन रखने के लिए पर्याप्त जगह रहती है। तिस पर साली के हाथ की परोसगारी,हँसी-दिल्लगी और मनुहार करके अच्छी चीजें खिलाती है।

जीमणौ मां रै हाथ रौ व्हौ भलांईं जैर ई। ५२१३

भोजन तो माँ के हाथ का, हो भले जहर ही।

—माँ जिस ममता, स्नेह व दुलार से खिलाती है, जिसके सामने पाँचों पकवान फीके लगते हैं। वह अपनी आत्मा से खाना बनाती है और आत्मा से ही खिलाती है!

पूरी उक्ति:

बैठणौ, भायां रै भेळौ, व्हौ भलांईं बैर ई।

छींया तौ मौका री भली, व्हौ भलांईं कैर ई।

धीणौ तौ भैंस रौ भलौ, व्हौ भलांईं सेर ई।

जीमणौ मां रै हाथ रौ, व्हौ भलांईं जैर ई।

जीमणौ सोरौ, सीधौ दोरौ। ५२१४

खाना आसान, बनाना हराम।

सीधौ = ब्राह्मण अथवा पुरोहितों को भोजन के निमित्त दी जाने वाली कच्ची खाद्य-सामग्री, जिसमें प्रायः घी, आटा, मिर्च, नमक दाल आदि अनिवार्य होते हैं।

—सुविधाओं का उपयोग करना तो आसान है, साधन जुटाना मुश्किल है और स्वयं परिश्रम करना तो बहुत कठिन है!

जीमता व्हौ तौ चळू अठै आयनै कीजौ। ५२१५

खाना खा रहे हो तो कुल्ला यहाँ आकर करना।

—पुराने जमाने में पत्र लिखते समय पति के वियोग में आहें भरतीं पत्नियाँ दूर-दिसावर में बसे पति को बार-बार यह उक्ति दोहराती थीं कि यदि भोजन वहाँ कर रहे हो तो हाथ यहाँ आकर धोना, कुल्ला यहाँ आकर करना। अब एक घड़ी का वियोग भी असह्य है।

—आवश्यक कार्य के लिए शीघ्र पहुँचने का पुरजोर आग्रह।

जीम रे वीरा किणरै ई नांही के साची कैलाई। ५२१६

जीम रे भाई किसी के भी नहीं कि सच्ची कही।

—न्योता देकर भी जो व्यक्ति भूखा रखे, उसके लिए...।

—कृत्रिम मनुहार करने वाले पर कटाक्ष।

जिमावै जिकौ ई दिखणा देवै । ५२१७

जो खिलाये वही दक्षिणा दे ।

—जरूरतमंद को दूसरे की इच्छा माननी ही पड़ती है । चाहे राजी-खुशी माने चाहे दुखी होकर । बामन को न्योता दिया है तो अच्छे भोजन के साथ दक्षिणा भी देनी होगी ।

—रीति-रिवाजों की अनुपालना में दुहरी हानि हो, तब भी स्वीकार करनी पड़ती है । तभी सामाजिक मर्यादा का निबाह होता है ।

—सहयोग करना है तो पूरा ही करना चाहिए ।

जीमियां छोडै पांवणौ, मरयां छोडै ब्याज । ५२१८

खाकर ही छोड़े पाहुन, मरने पर छोड़े ब्याज ।

—मेहमान खाने से पहिले पीछा नहीं छोड़ता और ब्याज मरने से पहिले पीछा नहीं छोड़ता ।

—जो व्यक्ति अपना काम संपूर्ण होने के पहिले किसी का पीछा नहीं छोड़े, तब...!

जीमियां पूठै चळू । ५२१९

जीमने के बाद तो कुल्ला ही होता है ।

—अवसर चूकने के बाद जब कुछ भी उपाय न हो तो मगजमारी करना बेकार है

—काम निकल जाने के पश्चात् जो व्यक्ति कुछ भी सरोकार न रखे तब...।

जीमियां पूठै तौ कागला इज पड़ै । ५२२०

जीमने के बाद तो कौवे ही मँडराते हैं ।

—किसी भी आयोजन की शुरुआत में जो उत्साह, उल्लास रहता है, वह सब उसके समापन पर क्षीण हो जाता है । बड़े-बड़े व्यक्तियों के लौटने पर बाद में कौवों की बन आती है और वे चारों तरफ मँडराने लगते हैं ।

—किसी बूढ़ी-वेश्या का ठाट-बाट उजड़ने पर...।

—किसी सेवा-निवृत्त बड़े अधिकारी के लिए भी...।

जीमिया अर पातळ वगाई ५२२१

जीमे और पत्तल फेंकी ।

—मतलब सधा और मन उचटा।

—स्वार्थ और मनोरंजन के रिश्तों की यही परिणति होती है।

—वेश्या के संबंधों को लेकर भी यह उक्ति कही जाती है।

पाठा : जीमिया नै पातळ फाड़ी। जीमियां पछै पातळ कांईं कांम री ?

जीमिया जद ई जांणिये, टुकयक वासौ तांणिये। ५२२२

जीमा तब ही जानिये, जब मिले तनिक विश्राम।

—खाने के पश्चात् जब कुछ देर सोने की सुविधा मिले तब भोजन की यथोचित परितृप्ति होती है!

—कोई भी कार्य अपनी समग्रता के बीच ही शोभा देता है, टुकड़ों-टुकड़ों में वह ठीक नहीं लगता।

जीमियोड़ा नै जीमावणौ सोरौ। ५२२३

खाये हुए को खिलाना आसान।

—इसलिए कि कम खिलाना पड़ता है और तीमारदारी में भी समय कम लगता है।

—दूसरा छिपा अर्थ यह है कि जो रिश्वत खाने का आदी है, उसे रिश्वत देना आसान है।

जीमिया आवै प्रांमणौ, हिलियौ आवै ढोर। ५२२४

खाया आये पाहुन, चरा आये ढोर।

—किसी बात का चस्का लगने पर उसका छूटना दूभर है।

—जहाँ मामूली ही स्वार्थ-सिद्धि हो, मनुष्य के पाँव स्वतः उस ओर बढ़ जाते हैं, पशु भी इसके लिए अपवाद नहीं।

जीमियौ-जूठ्यौ अेक नांव, मार्‌यौ-कूट्यौ अेक नांव। ५२२५

जीमा-जूठा एक नाम, मारा-पीटा एक नाम।

—थोड़ा खाया तो वही बात, ज्यादा खाया तो वही बात, खाने का नाम तो हो ही गया। उसी तरह चाहे एक ही थप्पड़ मारी हो, चाहे जमकर पिटाई की हो, पीटने का नाम तो हो ही जाता है।

—जहाँ मात्र औपचारिकता दिखाने से ही काम चल जाता हो, तब...।

जीमीजै जरतौ, बोलीजै निरतौ।–व.३३३ ५२२६

जीमिये जरता, बोलिये निरता।

जरतौ = आसानी से हजम हो, उतना ही। निरतौ = कम, थोड़ा।

—मनुष्य को उतना ही खाना चाहिए, जो सहज ही पच सके और बोलना उतना ही चाहिए जिससे अधिक एक शब्द की भी जरूरत न हो।

—नसीहत की बात कि हिसाब से खाये, हिसाब से बोलिये—कम-से-कम।

जीमीस प्राहूणां रै साथ, पिण परूसणौ म्हारै हाथ।–व.१४१ ५२२७

जीमो मेहमान के साथ, पर परोसना मेरे हाथ।

—मुख्य अतिथि के साथ बैठने से मेजबान को अच्छी खातिरदारी करनी पड़ती है, यह सामान्य शिष्टाचार का तकाजा है! किंतु मेजबान का अनचाहा कोई व्यक्ति मेहमान के साथ बैठ जाये तो परोसना तो मेजबान के ही हाथ है—जैसा चाहेगा, वैसा परोसेगा।

—चाहे कितने ही बड़े व्यक्तियों का सहयोग ले लो, पर जो सारे संसार का मेजबान है, परोसगारी तो वही करेगा, जैसा चाहेगा, जितना चाहेगा!

—जो भाग्य में लिखा है, वही मिलता है।

जीमै गोत तौ आवै ओत। ५२२८

जीमे गोत तो आये ओत।

गोत = गोत्र। ओत = चैन, आनंद।

—परिजनों को खिलाने से आनंद मिलता है।

—कहीं भी दूर किसी भी परिजन या गोत्र वाले का लाभ हो तो खुशी होती है।

जीमौ बेटाजी घी अर खांड, रोवसी बोहरौ अर बोहरा री रांड। ५२२९

जीमो बबुआ घी और खाँड, रोयेगा बोहरा और उसकी राँड।

दे.क.सं. २९८७

जीम्या जिणनै जीमांणा ई पड़सी। ५२३०

खाया, उन्हें खिलाना ही पड़ेगा।

—जिनके यहाँ अतिथि बनकर भोजन किया है, उन्हें वापस खिलाना तो पड़ता ही है।

—जिससे सहयोग लिया है, उसे समय पर सहयोग देना पड़ता है।
—पिछले जन्म में किसी का कुछ भी खाया है तो इस जन्म में वापस खिलाकर ही उऋण हुआ जा सकता है।

जीयां लाभ नीं मूवां हांण। ५२३१

न जीने में लाभ, न मरने पर पश्चाताप।

—किसी वृद्ध या अकर्मण्य व्यक्ति के लिए जो मरे तो क्या और जीये तो क्या ? उसके जीवित रहने की न किसे खुशी है और न किसी को उसके मरने का दुख।
—किसी असाध्य बीमारी से ग्रसित व्यक्ति के लिए यह कहावत अमूमन प्रयुक्त होती है।
—नामर्द पति के लिए भी यह उक्ति सार्थक है।

पाठा : जीवियां लाभ नीं, मूवां पिछतावौ नीं।

जीव जम रौ वित्त बोहरा रौ। ५२३२

जीव यम का वित्त बोहरे का।

—जीव जम के यहाँ गिरवी रखा है और वित्त बोहरे के पास। जब यम की इच्छा होगी, जीव को उठा ले जाएगा। और जब बोहरे की इच्छा होगी मवेशी या संपत्ति कुछ भी उठा ले जाएगा।
—सामंती प्रथा के दौरान भारतीय किसान तीन शैतानों के चंगुल में फँसा रहता था—यम, ठाकुर और बोहरा। इस उक्ति में दो का ही जिक्र है।

जीव जाज्यो भण जीवाई हके जाज्यो।– भी.३८१ ५२३३

जीव भले ही जाये पर जीविका न जाये।

—जीविका जाने पर या जीविका देने वाले की मृत्यु से जीव की जो दुर्गति होती है वह मौत से भी बढ़कर है। इसलिए हर मनुष्य की कामना है कि प्राण भले ही चले जाएँ पर प्राण रखने के साधन न जाएँ।
—मनुष्य के प्राणों का आधार है—जीविका देने वाले साधन। वे बने रहें तो मनुष्य का जीवन भी बना रहता है।

पाठा : जीव भलांई जावौ पण जीवका मत ना जावौ।

जीव जीव रौ लागू। ५२३४

जीव का भक्षक जीव।

—प्रकृति का कुछ नियम ही ऐसा है कि प्रत्येक प्राणी दूसरे के प्राण लेने को आतुर है।

—जीवोजीवस्य भोजनम्।

जीवण-जेवड़ी व्है जित्तै किणी सूं कीं खांगा व्है नीं। ५२३५

साँस का ताँता है तब तक किसी से बाल बाँका नहीं हो सकता।

संदर्भ-कथा : किसी गाँव में एक सेठ की भरी-तरी तिमंजली हवेली थी। अखूट माया और अखूट भंडार। सेठ के चानण-चौक सातों ही सुख थे। तीन आज्ञाकारी बेटे और तीन सुलच्छनी बहुएँ। तीन सलौने पोते जिन में एक ननिहाल। बारह बरस का कन्हैया। सुंदर, सुगठित साहसीऔर बुद्धिमान। लेकिन भाग्य की ध्वजा कब उलटी फहराने लगती है, कुछ पता नहीं चलता। सेठ की हवेली का बड़ा नाम सुना तो उस में रहने की खातिर एक भूत का मन ललचाया। फिर कैसी ढील! दूर गाँव का अतिथि बनकर सेठ की हवेली आया। जिस अतिथि का कोई ठिकाना न हो, उसका एक मात्र पुख्ता ठिकाना—सेठ की हवेली। सेठ-सेठानी ने अपने हाथों से अतिथि को चकाचक भोजन कराया। पर अतिथि ने किसी तरह की कोई खुशी प्रकट नहीं की। न बातचीत में ही कोई एहसान जताया। पर दूसरे दिन आँगन में सभी एक साथ नाश्ता कर रहे थे कि भूत बीच से उठा। चौक में खड़े होकर उसने अपना विराट रूप प्रकट किया। इक्कीस हाथ ऊँचा और तीन हाथ चौड़ा। लंबे दाँत। घुटनों तक लटकती जटा। एक बालिश्त भर लंबा नाक। डग-डग हँसते बोला, 'सेठ, मैं अतिथि नहीं भूत हूँ, भूत। तुम सबने मेरा सत्कार किया, इसलिए छोड़ रहा हूँ। वरना सबको मार डालता। भला चाहते हो तो यहाँ से निकल जाओ। व्यापार के लिए एक हजार मोहरें ले सकते हो। बाकी सारी दौलत मेरी। मुझे यह हवेली बहुत पसंद आई। यहीं रहूँगा और मजे करूँगा। हजार मोहरें मैंने भातड़े में भर दी हैं। इस गाँव में बसे तब तो तुम्हारे पास पाँच रुपये थे। अब करोड़ों की जमाबंदी है। जिसे मैं काम में लूँगा।' सेठ बुद्धिमान तो जरूर था पर भूत की ताकत का सामना वह भला कैसे करता! चुपचाप सपरिवार हवेली से निकल गया। चलते-चलते जिस गाँव में पानी की दीवड़ी फटी और जहाँ पानी गिरा, वहीं घर बनवाने की सोची। वहाँ पड़ाव डाल दिया। दूसरे दिन सेठ अपने हाथ से कुदाल लेकर नींव खोदने लगा तो सोने के कलश में हीरे-मोती

मिल गये। फिर क्या कमी ! वही पुराने ठाट लौट आये। लेकिन एक भारी गड़बड़ हो गई। जब सेठ ने कासिद भेजकर पोते के नाम एक पत्र भेजा कि वह जब भी ननिहाल से जाना चाहे तो पुरानी तिमंज़ली हवेली की ओर मुँह भी न करे। पत्र बाँचते ही पोता कासिद के साथ रवाना हो गया। दादा के चरण छूकर उसने अपने पुराने गाँव जाने की अनुमति माँगी तो घरवाले सभी घबरा गये,पर पोते का अतिरिक्त साहस देखा तो उसे आशीर्वाद देकर विदा कर दिया।

दरवाजे पर कुंडी की उतावली खड़खड़ाहट सुनकर भूत ने जोर से पूछा,'कौन है ?' उतने ही जोर से जवाब मिला,'मैं हूँ , इस घर का मालिक।' भूत तनिक चौंका। फिर भी उसे जवाब तो देना था। हिम्मत जुटाकर बोला,'इस घर का मालिक तो मैं हूँ ?' पोते ने दरवाजा थपथपाते कहा,'उसीसे तो मिलने आया हूँ।'

दरवाजा खुला तो भूत का वही विराट रूप ! लेकिन पोता तनिक भी नहीं घबराया। चरणों में दंडवत करके बोला,'आपने मेरे घरवालों को यहाँ से निकालकर अच्छा ही किया। मेरी उनसे कभी नहीं पटी। तभी तो मैं ननिहाल चला गया। अब आपकी सेवा करना चाहता हूँ।' किशोर की आँखों में पानी देखकर भूत ने उसका विश्वास कर लिया।

भूत को अच्छे भोजन का बड़ा शौक था। कन्हैया के हाथ की रसोई खाकर बेहद खुश हुआ। मजे से दिन खिसक रहे थे। भूत पूनम की रात बाहर रहता था। एक दिन कन्हैया ने पूछा,'आपके बाहर रहने से मैं रात भर सो नहीं पाता। मेहरबानी करके आप बाहर न जाएँ।' भूत ने बड़े लाड़ से समझाया कि सिर्फ पूनम की रात मुझे बाहर रहना ही पड़ेगा। एक हजार देव-दानव, भूत-प्रेत और सुर-असुरों की सभा होती है। मैं महामंत्री हूँ। मेरे नहीं जाने से सभी बुरा मानेंगे।' सेठ का पोता बड़ा समझदार था। भूत के समझाते ही समझ गया। पूनम की अगली रात समय पर ही आई। जब भूत रवाना होने लगा तो पोते ने भोले स्वर में कहा,'इस बार मेरे लिए आपको एक तकलीफ करनी होगी। विधाता से मेरी उम्र पूछियेगा। मैं अब ज्यादा जीने वाला नहीं हूँ। इस बीच गाँव के लड़के को रसोई करना बता दूँगा...।' भूत ने बीच में ही टोकते कहा,'नहीं, भूखे रहना कबूल पर मैं और किसी के हाथ का खाना नहीं खाऊँगा। रही बात उम्र की,तू निश्चिंत हो जा। तू जितनी चाहेगा,तेरी उम्र बढ़वा लूँगा...।

'फिर भी पता तो करना !' भूत ने उत्साह से जवाब दिया,'जरूर करूँगा।'

और भूत ने सचमुच अपना वादा निभाया। सभा से लौटते ही उसने थूक उछालते हुए खुश खबरी सुनाई कि उसकी उम्र सौ बरस की है फिर डरने की क्या जरूरत ? पर कन्हैया को

उसकी जरूरत थी। रूठते हुए बोला, 'नहीं, यह बिंदी वाला काम बड़ा अशुभ है। मेरी उम्र निन्यानवे बरस की करके लाएँ या एक सौ एक बरस की। बिंदी नहीं हटी तो मैं खाना नहीं खाऊँगा।' भूत ने जोश दिखाते कहा, 'यह तो मेरे बाएँ हाथ का काम है। कहे तो एक सौ इक्कीस बरस की उम्र कर लाऊँ।' कन्हैया ने खुशी प्रकट करते कहा, 'फिर तो चाहिए ही क्या! आपको दोनों वक्त खीर मालपूवे खिलाऊँ तब भी कम है।' भूत के मुँह से लार टपक पड़ी। अगली पूनम को उसने केसर, पिस्ते, इलायची और बादाम डालकर खीर बनाई कि भूत खुशी के मारे गद्‌गद् हो गया। लेकिन सभा से लौटने पर उसका मुँह लटका हुआ था। आह भरते बोला, 'मेरी एक भी नहीं चली रे कन्हैया! एक बरस की बात तो दर-किनार तेरी उम्र में एक घड़ी भी इधर-उधर नहीं हो सकती। लेकिन तू बिंदी की वजह से रोटी खाना मत छोड़ना...।

कन्हैया ने म्यान से तलवार निकालते कहा, 'अब तो दूनी रोटियाँ खाऊँगा। इतने दिन तो रोटी खाने का नाम करता रहा। आपकी तो नहीं चली, अब मेरी चलेगी। संभल जाइये।'

भूत भौचक्का रह गया। अंगारे उगलता बोला, 'तेरी इतनी हिम्मत! चुटकी में मसल डालूँगा तुझे। मेरी ताकत का पता नहीं है...।'

'पर मेरी उम्र का पता है। सारे भूत-प्रेत मिलकर भी मेरा बाल बाँका नहीं कर सकते। जीना चाहता है तो इस हवेली की दिशा में भी मुँह मत करना, टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा।'

सारी बात समझ में आते ही भूत थर-थर काँपने लगा। हाथ जोड़कर बोला, 'मुझे मरने का बहुत डर लगता है रे कन्हैया। तलवार म्यान में डाल दे। मैं तुझे हीरे-मोतियों से भरे सात सोने के कलश दूँगा। बस, आखिरी बार तेरे हाथ की खीर खिला दे।'

'सिर्फ एक शर्त पर। अपने घरवालों को लेकर आऊँ, तब तक यहीं रहना। सब साथ मिलकर गोठ करेंगे।'

—उम्र का एक साँस भी कोई घटा-बढ़ा नहीं सकता।

जीवण री गत तौ जिनावर ई जांणै। ५२३६

जीने की विधि तो जानवर भी जानता है।

—मनुष्य के जिंदा रहने में ऐसी क्या खासियत है, जब कि कीड़ी, कुंजर, गिलहरी, चूहा-बिल्ली, शेर-हिरण इत्यादि सभी प्राणी अपने-अपने हिसाब से जीवित रहते हैं। जीने की कला वे सब अच्छी तरह जानते हैं।

जीवणू ने खावूं हारे चावे ।– भी.३८२ ५२३७

जीना और खाना सभी चाहते हैं ।

—अन्य सभी प्राणियों की तुलना में स्वयं के जीवन को श्रेष्ठ समझने का दावा कितना निरर्थक है, जबकि मनुष्य के उनमान ही सभी प्राणी जीने के लिए संघर्ष करते हैं और जस-तस खाना जुटाते हैं ।

पाठा : जीवणौ अर खावणौ कुण नीं चावै ।

जीवणौ जित्तै सीवणौ । ५२३८

जीना तब तक सीना ।

—जब तक जीना है, तब तक जीने के साधन जुटाते रहना जरूरी है—मायापति सेठ हो चाहे भिखारी !

—पर यह उक्ति उस व्यक्ति पर सटीक बैठती है जो अथक मेहनत करने के बावजूद अपनी आवश्यकताओं को पूरा न कर सके और अपने जीवन के प्रति उदासीन रहने लगा हो ।

पाठा : ज्यां लग जीणौ, त्यां लग सीणौ । जीवणा जैड़ै सीवणा ।

जीवणौ तौ दोरौ है ई, पण मरणौ उण सूं ई दोरौ । ५२३९

जीना तो मुश्किल है ही, पर मरना उससे भी ज्यादा कठिन है ।

—छछूंदर भी मरना नहीं चाहता, शेर भी मरना नहीं चाहता, राजा भी मरना नहीं चाहता, न साहूकार भी मरना चाहता है और न दर-दर का भिखारी भी मरना चाहता है—तभी तो वे सब जीवित हैं ! चाहे जीने की खातिर कितना ही प्रपंच क्यों न करना पड़े ।

जीवणौ थोड़ौ और मंडांण मांड्यौ मुलक रौ । ५२४०

जीना थोड़ा और दुनिया भर का वैभव जोड़ा ।

—मनुष्य का जीवन तो निश्चित रूप से सीमित है, पर असीम है उसका प्रपंच मानो हजार वर्ष तक उसका बाल भी बाँका नहीं होगा । आखिर यह खटपट किसलिए, जबकि उसे यह सब छोड़कर यहाँ से कूच करना है ! क्या यह समझने का विवेक भी मनुष्य में नहीं है, तभी तो...!

जीवतड़ां नीं कर्‌यौ दांन अर मर्‌यां नै पकवांन। ५२४१

जीते हुए न किया दान और मरने पर पकवान।

—पिता के जिंदा रहने तक वे छटपटाते रहे, पर उनकी इच्छा से बेटों ने कुछ भी दान-पुण्य नहीं किया और अब उनके मरने पर पाँच पकवान बनाकर लोगों को खिलाये जा रहे हैं।

—जो व्यक्ति सही जगह पर कुछ खर्च न करे और पाखंड या दिखावे की खातिर हजारों रुपयों को आग लगा दे। मृत्यु-भोज का व्यय आग में ही तो फूँका जाता है—खाना बनाने के लिए।

पाठा : जीवतड़ां जंगमजंगा, मर्‌यां केड़ै पुगावै गंगा।

जीवतड़ां पूछी नंह बात, मर्‌यां पूठै चावळ भात।

जीवतड़ां नंह कीधी सेवा, मर्‌यां पूठै लाडू मेवा।

जीवतां नै पांणी नीं अर मर्‌यां पछै लाडू।

जीवतां रोटी नीं दीवी, मर्‌यां मौसर करै।

जीवतां छाछ रा ई फोड़ा अर मूवां बांमण नै गाय। ५२४२

जीते रहे तब तक छाछ की तंगी, मरती वेला बामन को गाय सुरंगी।

—जब तक वृद्ध पिता जीते रहे, तब घर में छाछ की परेशानी और अब बामन को गोदान में सुरंगी गाय दी जा रही है!

दे.क.सं.५२४१

जीवतां नीं होया, मर्‌यां केड़ै रोया। ५२४३

जीते हुए नहीं बनी, मरने पर रोये सभी।

—जब तक पिताजी जिंदा रहे, उनके प्रति किसी ने अपनापन नहीं दरसाया और अब धाड़ मारकर रो रहे हैं।

—पशुओं में पाखंड का ऐसा एक भी उदाहरण नहीं मिलेगा। किंतु मनुष्य के जीवन की विडंबना ही ऐसी है, जो ऐसी मिसालों से भरी पड़ी है।

मि.क.सं.५२४१

जीवतां नै डांगां, मूवां नै बांगां। ५२४४

जीवित रहते मार, मरने पर चीख-पुकार।

—पिताश्री जब तक जिंदा रहे तब तक बेटों की लाठियाँ बर्दाश्त करते रहे और मरने पर हाय-तोबा मचा रहे हैं।

दे.क.सं.५२४३

पाठा : जीवतां मारै डांगां, मरियां मारै बांगां।

जीवै जितरै कूटै डांगां, मूवां पूठै मैलै बांगां।

जीवतां नै बाटी अर मूवां माटी देवणियौ चाहीजै। ५२४५

जीवित रहने वालों को बाटी और मरने पर माटी देने वाला चाहिए।

—जब तक माँ-बाप जिंदा रहें, तब तक उनके खाने की और मरने पर दाहक्रिया की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।

जीवतां री खाल थोड़ी काढ़ीजै। ५२४६

जीवित रहते खाल थोड़े ही निकाली जाती है।

—किसी भी छोटे-बड़े प्राणी की उसके जिंदा रहते खाल नहीं निकाली जा सकती, मरने पर ही निकाली जाती है, पर इस प्राकृतिक नियम के विरुद्ध जब जिंदा जानवरों की खाल निकाली जाय तो मनुष्य की क्रूरता का कोई पार नहीं है।

—जो मनुष्य किसी व्यक्ति को उसके जिंदा रहते बेइंतहा कष्ट पहुँचाये, तब...।

जीवतां री माया। ५२४७

जिंदा रहने वालों की माया है।

—मनुष्य जब तक जिंदा है तभी तक उसका प्रपंच है, दौड़-भाग है, मोह प्रीत है। मकान है, जायदाद है और न जाने कितना क्या है, पर मरने के बाद न नमक की आवश्यकता है और न खाँड की। न पत्नी और न बच्चों की। न कोई समस्या, न कोई समाधान। जीवन समाप्त होते ही, सब समाप्त हो जाता है।

पाठा : जीवता नै सै कीं करणौ पड़ै।

जीवतां लाख रौ, मर्‌यां सवा लाख रौ। ५२४८

जिंदा रहते लाख का, मरने पर सवा लाख का।

—जिंदा हाथी लाख रुपयों का और मरने पर सवा लाख का। क्योंकि उसके बाहर वाले दाँत और हड्डियों का भारी मूल्य होता है।

—संसार की महान विभूतियों के लिए भी सही है कि वे जिंदा रहे तब तक उनकी ख्याति हवा की नाईं संसार में फैली रहती है और मरने के बाद तो घर-घर में उनकी पूजा होने लगती है।

जीवता नै भूत कर दियौ। ५२४९

जीवित को भूत बना डाला।

संदर्भ-कथा : एक था जाट। घर-गवाड़ी में सब तरह के ठाट थे। जोतने को पर्याप्त जमीन, गाड़ी, बैल, गाएँ, दो बेटे और गुणवती बहुएँ और जाटणी लक्ष्मी स्वरूपा, घर में छोटे-बड़े सबकी आज्ञा मानने वाली। विवाह के पश्चात् ही चौधरी के घर में खुशहाली का श्रीगणेश हुआ था, पहिले बड़ी गरीबी थी। दो जून का खाना भी मुश्किल से हो पाता था। घरवाले सभी चौधराइन के मेहँदी लगे पाँवों का ही सुफल मानते थे। पति-पत्नी में बेहद प्यार था। गाँव के लोग राम-सीता व सत्यवान सावित्री की मिसालें मजाक-मजाक में देते थे। सुनते-सुनते दोनों भी कुछ हद तक विश्वास करने लगे थे। चौधराइन के यह कहने पर कि सुहाग रहते चली जाये तो उससे सुखी दुनिया में कोई न हो। तब चौधरी कहता, 'थूक अपने मुँह से! फकत अपने ही मतलब की बात सोचती है! तेरे बिना एक दिन भी जिंदा रहना मेरे लिए मुश्किल है। तेरे हाथों में चला जाऊँ तो मेरा इहलोक-परलोक दोनों सुधर जाएँ। तेरे न रहने पर या तो मुँह लेकर कहीं निकल जाऊँगा या 'सता' होऊँगा।' चौधराइन मुस्कराते हुए पति के पागलपन की बातें सुनती रहती। पर मन की किसी गहरी आँत में मामूली खुशी व गुमान की लहर दौड़ती कि उसके गुणों की वजह से पति कितना प्यार करता है। आज तक दुनिया की किसी औरत ने पति के मुँह से ऐसी बात नहीं सुनी होगी। महीने में एकाध बार इस आपसी होड़ की चर्चा चल जाती थी।

संयोग की बात और अचीती रात कि दो घड़ी रात रहते चौधराइन की छाती में जोर से टीस उठी। चिल्लाहट के साथ ही चौधरी हड़बड़ाकर उठ बैठा। बोलना चाहने पर भी

चौधराइन बोल नहीं सकी। शब्दों की बजाय जोर से उलटी हुई और बेहोश ! आज्ञाकारी बेटे पास के गाँवों से चार-पाँच वैद्य लाये। महँगी से महँगी सोने की भस्म दी। कस्तूरी का मामूली अंश गले उतरते ही उसने आँखें खोलीं। पुतलियाँ घुमाकर चारों ओर देखा। घरवाले सभी उसकी हाजरी में खड़े थे ! पति के सामने देखकर कुछ कहना चाहा। फुसफुसाते बोली,'मेरी जबान फली, तुम्हारे हाथों में सुहाग रहते चली जा रही हूँ। बचना चाहती भी नहीं, मुझे क्या सुख नहीं मिला ! पर कुछ भी ऐसा-वैसा पागलपन किया तो मेरी गति नहीं होगी।'

चौधरी की आँखें भर आईं। सबकी मौजूदगी में ही बोला,'सता बनूँ-न-बनूँ ,पर तेरे न रहने पर मैं जिंदा न बचूँगा। यह मैं खूब अच्छी तरह जानता हूँ कि तेरे बाद जीवित रहना मेरे वश की बात नहीं है। तू...!' चौधरी आगे कुछ कहने वाला ही था कि चौधराइन की गर्दन एक ओर लुढ़क गई। आँखें पथरा गईं। दूसरे ही क्षण चौधरी कटे वृक्ष की नाईं जमीन पर गिर पड़ा। सबने मिलकर उसे खाट पर लिटाया। नाड़ी चल रही थी। साँस चल रही थी। पर. आँखें और जबान दोनों ही बंद।

तीसरे दिन चौधरी को होश आया। आँखें खोलकर इधर-उधर देखा। दोनों बेटे पास ही खड़े थे। चौधरी ने बड़े बेटे की ओर देखकर पूछा,'तेरी काकी (माँ) कहाँ है ?' जवाब में दोनों बेटे धाड़ मारकर रो उठे। आँगन में औरतों का रोना भी साफ सुनाई दे रहा था। चौधरी पल भर में सारी बात समझ गया। किसी गंभीर विचार के वशीभूत दृढ़ता के साथ उठा। बिना बोले चुपचाप बाड़े की ओर रवाना हो गया। दोनों बेटे साथ-साथ चले। जब चौधरी गाड़ी में बड़ी-बड़ी लकड़ियाँ भरने लगा तो छोटे बेटे ने कहा, 'आपने तीन दिन से आँखें खोली हैं। माँ को दाग दिए आज तीसरा दिन है। विधि-पूर्वक संपन्न हो गया।' चौधरी ने एक भारी लट्ठ गाड़ी में रखते हुए कहा,'सब पता है। अब दोनों का मौसर साथ ही करना ! मैं बच कैसे गया ? अब भी भरोसा नहीं होता ! जरूर मेरे मन में खोट है या भगवान मुझ पर रूठा हुआ है। तुम लोगों से जैसा भी बन पड़े दोनों का मौसर जरूर करना ! चौधराइन के साथ ही जला देते तो अच्छा था। खैर, कोई बात नहीं। मैंने वादा किया था उसके न रहने पर मैं 'सता' होऊँगा। इसीलिए बैलगाड़ी में लकड़ियाँ भरी हैं।'

इससे अधिक कुछ भी कहना चौधरी ने ठीक नहीं समझा। बेटों ने सोचा की काकी के सदमे से शायद दिमाग चल गया है। दौड़कर बड़े-बुजुर्गों को लाये। साले, ससुर और समधी घबराते हुए आये। पाँवों पड़कर, हाथ जोड़कर खूब समझाया, चिरौरी की, पर चौधरी नहीं माना

सो नहीं माना ! उसका तो बस एक ही जवाब था कि चौधराइन के मरने पर मैं जिंदा कैसे रह गया ? उससे वादा किया था सो धोखा नहीं कर सकता। लाख कोशिश करें वह मानने वाला नहीं है। सभी हार थके, तब गाँव के ठाकुर को बुलाया। उसने भी खूब कहा-सुनी की पर बेकार। अंत में ठाकुर को खुंदक चढ़ गई तो चिढ़ते हुए कहा, 'न मानता हो तो जाने दो ! अब तक तो औरतें सती होती रही हैं, आज से एक आदमी ही सही। अपने गाँव का नाम हो जाएगा। अब किसी ने समझाया तो गाँव से बाहर निकाल दूँगा। मैं भी साथ चलूँगा। कहीं तुम इसे ससुराल और ननिहाल न भेज दो।'

तब गाड़ी पर बैठे चौधरी ने हाथ जोड़कर कहा, 'आप सबकी मेहरबानी हो तो अब बड़े घर चौधराइन के पास ही जाऊँगा।'

'शौक से जा, हम सबकी ओर से राम-राम कहना।' यह कहकर ठाकुर ने इशारा किया तो कामदार गाड़ी पर बैठ गया ! दोनों बेटे रोते हुए मसान तक पहुँचे ! ठाकुर ने अंतिम बार चेतावनी दी, 'देख अब भी मान जा, हम समझेंगे कि तू वाकई 'सता' हो गया। तुझे कोई ताना नहीं देगा।'

'मैं ताने जैसा काम करूँ तो ? देखिये, इंद्र भगवान भी यह मेला देखने आये हैं। देरी न हो तो अच्छा है।'

ठाकुर के कारिंदों ने झटपट चिता सजाई। बनिये खोपरों की आधी बोरी भरकर लाये थे। ठाकुर के हुक्म से चौधरी के बड़े बेटे ने रोते हुए लाँपा दिया ही था कि जोर से बिजली कड़की। सारा आकाश काले बादलों से छा गया ! चिता से ढका चौधरी जोर-जोर से राम-राम करने लगा ! फिर बिजली और भी जोर से कड़की ! चिता के चारों ओर लपलपाती लपटें फैलने लगीं ! उधर वर्षा शुरू होते ही ठाकुर ने कड़ककर कहा, 'सब एक साथ वापस लौट चलो। गोरे बंदर आ गये तो सबको जेल में ठूँस देंगे।'

ठाकुर की धमकी ऐसी काम आई, मानो चिड़ियों के झुंड में पत्थर गिरा हो। इस कदर तेजी से भागे कि किसी ने पीछे मुड़कर भी नहीं देखा।

उधर चौधरी को आँच लगी नहीं कि दोनों हाथों से लकड़ियाँ हटाकर जोर से कूद पड़ा। बस, कपड़े मामूली जलने ही लगे थे। झटपट बुझा दिये। साफा भीतर ही रह गया। बिजली की कड़क सुनी तो उसने ऊपर देखा। घटा उत्तर की दिशा में खिसक रही थी। मामूली बूँदाबूँदी होकर बारिश भी थम गई थी। चौधरी मन-ही-मन सतियों के साहस की दाद देने

लगा ! कितना मुश्किल है इस तरह जलना । फिर न जाने क्या सोचकर चिता के पास पड़े लंबे बाँस से नीचे गिरी लकड़ियों को ऊपर डाला । दूर से अपनी चिता को धू-धू जलते देखता रहा ।

चिता में लपटों की बजाय अँगारे दहकने लगे तो उसे कड़ाके की भूख महसूस हुई ! और कुछ नहीं मिला तो खोपरों की बोरी उठाकर चलने लगा ! खोपरे खाता जा रहा था और चिता के अंगारों की ओर मुड़-मुड़कर देख रहा था । अब क्या मुँह लेकर गाँव जाये ? उसे भी क्या औंधी सूझी कि चौधराइन के पीछे 'सता' होने चला था ! तीन-चार खोपरे खाते ही मुँह को आ गये । पर भूख फिर भी नहीं मिटी । राह चलते भेड़ों का रेवड़ दिखाई दिया । हो-न-हो गड़रिये के पास जरूर रोटियाँ होंगी ! खेजड़ी के नीचे गड़रिये को खड़ा देखा तो उधर ही तेजी से चलने लगा । अकस्मात् गडरिये की नजर चौधरी पर पड़ी तो उसने अदेर पहिचान लिया कि उसका भूत सदेह बढ़ा चला आ रहा है । बेमौत मारेगा । तीन वर्ष पहिले चौधरी से झगड़ा भी हुआ था । अब बदला लिए बिना नहीं मानने का । 'भूत-भूत' चिल्लाकर उलटी दिशा में भागा सो ठाकुर के गढ़ पर जाकर ही रुका । कुछ कारिंदों से घिरे हुए ठाकुर चौधरी की ही बातें कर रहे थे । गड़िरये को इस कदर दौड़ते-हाँफते देखा तो ठाकुर का माथा ठनका—कहीं गोरे बंदरों की फौज तो नहीं आ धमकी ? हकलाते हुए पूछा—क्या बात है, क्या बात है ?' तब गड़रिये ने चौधरी के भूत का सच्चा किस्सा बताकर अंत में कहा, 'हजूर जल्दी चलिए, नहीं तो वह दुष्ट मेरा रेवड़ लेकर चल देगा । हजूर माई बाप की शरण के अलावा कहाँ जाता !' भूत के नाम से कौन नहीं डरता । फिर भी ठाकुर चार विश्वस्त घुड़सवारों को लेकर गड़िरये ने जहाँ बताया, उधर ही चल दिया ।

ठाकुर ने चौधरी के भूत को देखते ही पहिचान लिया । भूतों के करतबों का क्या कहना । हूबहू वही हुलिया । दूर से ही चिल्लाकर बोला, 'मेरे गाँव में पाँव भी रखा तो गोली मार दूँगा ।' ठाकुर ने काँपते हाथों से बंदूक चलाई । धाँय की तेज आवाज के साथ गोली खेजड़े के तने में घुस गई । चौधरी मरने के भय से थर-थर काँपने लगा । ठाकुर की ओर बढ़ते हुए जोर से बोला, 'सुनिये हजूर मैं भूत नहीं हूँ ।'

'तो फिर कौन है ?'

'मैं गाँव-चौधरी हूँ । मेरी बात तो सुनिये ।'

'क्या खाक सुनूँ ,सभी भूत ऐसा ही कहते हैं। चौधरी को तो हम अपने हाथों से जला कर आये हैं। वह चौधराइन के पीछे अपनी मरजी से 'सता' हुआ था। आगे बढ़ा तो गोली मार दूँगा।'

यह कहकर ठाकुर ने फिर उधर गोली दाग दी। पर चौधरी फिर बच गया। ठाकुर की ओर तेजी से भागते बेला,'हजूर,मेरी बात तो सुनिये।'

भूत की बात सुने जितनी ठाकुर की हिम्मत नहीं थी ! उनका अचूक निशाना भी खाली गया तो यह जरूर भूत है। चौधरी होता तो मर जाता। गाँव की ओर मुड़ते चेतावनी दी,'तेरी मरजी आये वहीं जा,मेरे गाँव में घुसा तो फिर चिता में जला दूँगा।'

गाँव की ओर दौड़ते घोड़ों की टापों से उड़ती खेह कुछ देर देखने के पश्चात् चौधरी उलटे पाँवों दूसरी दिशा में लौट पड़ा। अब गाँव में क्या मुँह लेकर जाये ! कोई उसकी बात सुने तो समझ में आये। दूर से ही पत्थर मार-मार कर ढेर कर देंगे। ठाकुर की बात मानते उसकी बात भला कौन मानेगा ?

—कभी-कभार आँखों से प्रत्यक्ष देखी बात भी सरासर झूठ लगती है।

जीवता रैवैला नर तौ केई करैला घर। ५२५०

जीवित रहेंगे नर तो कई करेंगे घर।

—बुलंद हौसले वाले व्यक्ति के लिए जो हर विपत्ति पर यही दृढ़ निश्चय करता है कि जिंदगी सलामत रही तो खुद भी खूब कमाएँगे और दूसरों का भी भला करेंगे।

पाठा : नर व्है तौ घर करै।

जीवता रैवौ जूंवां रै भाग रा। ५२५१

जिंदा रहो जूँओं के भाग्य से।

—जिन गंदे-गलीज मनुष्यों के फटे-पुराने कपड़ों और बालों में जूँएँ किलबिलाती रहें,उनका जीवन पशुओं से भी गया गुजरा है। केवल जूँओं का पोषण करना ही उनके जीवन की सार्थकता है।

—खासकर अफीमचियों पर कटाक्ष जो स्नान से बड़ा परहेज करते हैं। जूँओं को उनसे कुछ विशेष ही मोह होता है।

जीवता रैस्यां तौ केई थोक करस्यां। ५२५२

जिंदा रहे तो कई ठाट करेंगे।

संदर्भ-कथा : दिसावर से खूब कमाई करके एक बनिया अपने गाँव लौट रहा था कि रास्ते में डकैतों से मुठभेड़ हो गई। अकेला—तिस पर बनिया, क्या जोर करता? डकैतों की एक धमकी में सारा धन उनके हवाले कर दिया। मन-ही-मन यह सोचकर आश्वस्त हुआ कि धन का क्या? वह तो कमाने से ही जुड़ता है। धन के बदले जान गँवाने वाले नासमझ हैं। जिंदा रहे तो ठाट से कमाई करेंगे और मौज मनाएँगे।

—भयंकर आफत या किसी असाध्य रोग से बचने पर कोई जीवट वाला व्यक्ति ऐसी आकांक्षा रखता है।

जीवता साटै मर्योड़ौ ई नीं देवै। ५२५३

जीवित के बदले मरा हुआ भी न दे।

—जो व्यक्ति जिंदा रहते, मरे से भी गया गुजरा हो, उसके जीवन का यही आकलन होता है कि उसके सौदे में कोई मुर्दा भी न दे, वह इतना अकर्मण्य और निष्प्रयोजन है।

—दूसरी ओर यह भी संकेत है कि कोई निकृष्ट व्यक्ति अपने बहुत बड़े लाभ की वजह से दूसरे को मामूली लाभ हो और वह न माने, तब...! उसका तो स्वभाव ही ऐसा गलीज है कि जिंदा मनुष्य के बदले मुर्दा भी देने को तैयार नहीं, इसलिए कि कहीं मुर्दे से भी उसे लाभ न पहुँच जाय।

जीवती चांमड़ी रा सै लगवाड़। ५२५४

जीते-जी सब पीछे लगे रहते हैं।

—परिवार के प्रमुख व्यक्ति की अंतर्वेदना कि सभी परिजन अपने-अपने स्वार्थ की खातिर उसे नोचते रहते हैं और उसकी खातिर कुछ भी करने को तैयार नहीं।

—जिस व्यक्ति के प्राणों को सैकड़ों दुख हमेशा घेरे रहें, तब...!

जीवती माखी कीकर गिटीजै? ५२५५

जिंदा मक्खी क्योंकर निगली जाय?

—सरासर गलत बात को सहना जब बर्दाश्त के बाहर हो, तब...!

—किसी दुष्ट का अत्याचार सीमा लाँघ जाय तब उसे लक्ष्य करके...!

—न मानने योग्य बात जब इच्छा के विरुद्ध माननी पड़े, तब...!

जीवतौ ई मरया समांन। ५२५६

जिंदा ही मरे के समान।

—अकर्मण्य और महामूर्ख व्यक्ति के लिए।

—उस बेहया व्यक्ति के लिए जिसे अपनी बदनामी की कोई परवाह न हो।

जीव दोरौ तौ सोरौ कांई? ५२५७

यदि मन ही व्याकुल है तो सुख कहाँ है?

—सुख के समस्त साधन उपलब्ध होते हुए भी आत्मा दुखी है तो इस संसार में आखिर सुख का निवास कहाँ है? उसे कहाँ खोजा जाय?

—भौतिक बहबूदी के प्रति आशंका।

जीव बिचै जीवारी वत्ती व्है। ५२५८

जीव की अपेक्षा जीविका बड़ी है।

दे.क.सं.५२३३

जीव रक्खा गुड़िया नै गढ़ धुड़िया। ५२५९

जीव रक्खा गिरा और गढ़ पराधीन।

जीव-रक्खा = किले के बाहर सैनिकों की चौकियाँ होती हैं, उन्हें जीव-रक्खा कहा जाता है, उनके मरने पर दुश्मन किले में घुस पड़ते हैं।

—जीवन का संरक्षक ही मारा जाय तो शेष असहाय व्यक्तियों को कौन बचा सकता है?

—परिवार, समाज और देश की बागडोर जिन शीर्षस्थ हस्तियों के जिम्मे ही है, यदि उनका पराभव हो जाय तो फिर कौन रखवाला है?

जीविया रे जीविया के धूड़ खाय नै जीविया। ५२६०

जिंदा रहे, खूब जिंदा रहे कि धूल खाकर जिंदा रहे।

—जिस मनुष्य के जीने का कोई आदर्श न हो, कोई सिद्धांत न हो, जीने का कोई औचित्य न हो, केवल पशुवत् खाने-पीने और भोग-निद्रा में ही सारा जीवन व्यतीत करे, उसके जीने में क्या तुक है ! मिट्टी से उत्पन्न पदार्थों में ही उलझा रहा ।

जीवै जद बूझै नहीं, मरयां करै सराध । ५२६१

जिंदा रहे तब पूछा नहीं, मरने पर करे श्राद्ध ।

दे.क.सं.५२४१

जीवै जित्तै कुत्ता भुसावै । ५२६२

जिंदा रहते कुत्ते भोंकाये ।

—रात के अँधेरे में अजाने चोर को देखकर तो कुत्ते ही भोंकते हैं और ऐसा ही सत्कार लंपट व्यक्तियों का भी होता है, जो अँधेरी गलियों में कामासक्त होकर भटकते हैं । या देर से घर लौटते हुए शराबी का भी ठीक ऐसा ही अभिनंदन होता है । इस छोटी-सी उक्ति में तीनों हस्तियाँ समा गई हैं ।

जीवै जित्तै नातौ । ५२६३

जिंदा रहें तब तक नाता-रिश्ता ।

—जिस प्रिय व्यक्ति की खातिर एक घड़ी की प्रतीक्षा भी असह्य होती है, मरने पर उसका शव एक घड़ी भी घर में नहीं रखा जाता । जितनी जल्दी हो, उसकी दाहक्रिया में ही सब जुट जाते हैं । लोक दिखावे के लिए रोना तो मात्र एक रस्म-अदायगी है ।

जीवै जित्तै सै पंपाळ । ५२६४

जिंदा रहें तब तक ही सब प्रपंच है ।

दे.क.सं.५२३८

जीवै सो रमै फाग, मरयां उडावै काग । ५२६५

जीये सो खेले फाग, मरे उड़ाये काग ।

—जिंदा आदमी के लिए सारी दुनिया ही क्रीड़ा-स्थल है, जी चाहे जितना खेलो, जहाँ खेलो ! *पर मृत आत्मा का केवल एक ही काम—श्रादध पक्ष में काँव-काँव करते कौवों को बुलाना और उड़ाये रखना।*

जीवौ बात रौ कैवणहार, जीवौ हूंकारौ देवणहार। ५२६६

जीये बात का कहने वाला, जीये हुंकारा देने वाला।

—जब तक दुनिया में बातपोश और उसे प्रोत्साहित करने वाले अर्थात् हुंकारा देने वाले और बात सुनने वाले हैं, तब तक दुनिया जीने के काबिल है। उसका छलकता रस कभी नहीं खूटेगा। फौज में नगारे का जो महत्त्व है, वही बात में 'हुंकारे' का महत्त्व है।

—संसार में जब तक कलाकार, मर्मज्ञ और विद्वान हैं वह रसहीन नहीं हो सकता।

जी-हजूरी नै कदै ई जोखौ नीं। ५२६७

जी-हजूरी को कभी जोखिम नहीं।

—खुशामद करने वालों के सर्वत्र पौ-बारह हैं, कहीं भी जाएँ, वे अपना उल्लू सीधा कर लेते हैं। न मेहनत करना, न व्यवसाथ के दाँव खेलना और न गाँठ से कुछ खर्च करना ! जीभ से खुशामद का मक्खन चुपड़ते रहो और मौज मनाते रहो।

पाठा : जो-हुकम नै जोखम नीं।

जु - जै

जुग कोनीं मरै । ५२६८

युग नहीं मरता ।

—चौपड़ या चौसर के लिए घर के स्थान पर दो गोटियाँ इकट्ठी हो जाएँ तो वह 'युग्म' अर्थात् जुग का दाँव कहलाता है । उस में गोटियाँ मरती नहीं, अन्यथा मरती हैं । एक-से-एक जुड़ने पर ताकत बढ़ती है । बढ़ी ताकत को हराना मुश्किल है ।

—व्यक्ति मरता है युग नहीं मरता ।

—मनुष्य मरता है, परिवार मरता है, बुजुर्ग मरते हैं, पीढ़ियाँ मरती हैं पर समाज नित्य है, संसार नित्य है ।

जुग जीत्यौ म्हारी कांणी , बनड़ौ ऊभौ होवै जद जांणी । ५२६९

युग जीता मेरी कानी, दूल्हा खड़ा हो तब जानी ।

—जब दोनों पक्ष एक-दूसरे को धोखा दे चुके हों और अंत में भेद खुल जाने पर ।

दे.क.सं.४८१३

जुग जोवै पग सांम्ही , मां जोवै मूंडा सांम्ही । ५२७०

दुनिया निहारे पाँवों की ओर माँ निहारे मुँह की ओर ।

—दुनिया पाँवों की ओर देखकर जानना चाहती है कि उसके पाँव जमे हुए हैं या नहीं । प्रतिष्ठा है कि नहीं । आर्थिक स्थिति ठीक है कि नहीं । और माँ मुँह की ओर निहारकर समझना

चाहती है कि उसके बेटे का मुँह उदास तो नहीं, वह थका हुआ तो नहीं है और उसे कुछ *कष्ट तो नहीं है।*

जुगत जांणणौ हांसी-खेल कोनीं। ५२७१

युक्ति जानना हँसी-खेल नहीं है।

—यत्न-पूर्वक किसी काम को सीखना काफी कठिन है।

—किसी काम में प्रवीण या कुशल होना आसान नहीं है।

जुग ते तेड़्यो पण बेहवा नी जगा नी है।— भी. २७६ ५२७२

दुनिया भर को बुला लिया पर बैठने की जगह नहीं है।

—अपनी शक्ति और अपने साधनों की सीमा में ही हर व्यक्ति को सोच-समझकर अपना काम करना चाहिए।

—अपनी हैसियत से परे काम करना विपदा को न्योता देना है।

जुग देख जीवणौ। ५२७३•

युग देखकर जीना चाहिए।

—जमाने का रंग-ढंग समझकर उसके साथ तालमेल बिठाते हुए चलना उचित है, वरना पिछड़ जाने की आशंका है।

—युग-धर्म का अनुकरण करने से गति रुकती नहीं।

जुत-जुत मरै बळद, बैठा खाय तुरंग। ५२७४

जुत-जुतकर मरें बैल, बैठे खाएँ तुरंग।

—बैल तो गाड़ी या हल में जुत-जुतकर, कड़ी मेहनत करके आखिर मर जाते हैं, पर घोड़े आराम से अस्तबल में दाना खाते हुए हिनहिनाते हैं!

—किसी भी मनुष्य के लिए सुखी होना या दुखी होना सब भाग्य का खेल है।

जुलम री जड़ सेवट सूखै। ५२७५

जुल्म की जड़ आखिर सूखती है।

—कुछ समय के लिए किसी पर अत्याचार किया जा सकता है, पर आखिर उसका पराभव निश्चित है ।

—जुल्म की अधिक उम्र नहीं होती ।

पाठा : जुलम री जड़ कोतै । कोतै = अल्पायु ।

जुलम री रांमत, गरीब री मौत । ५२७६

अत्याचारी की मौज, गरीब की मौत ।

—शक्तिशाली का मनोरंजन, गरीब का भंजन ।

—गरीब के शोषण से ही शक्तिशालियों का ऐश्वर्य संभव है ।

—गरीबों की मौत पर ही अत्याचारियों का जीवन निर्भर है ।

जूंआं रै पगां पैहरणौ कोई नांखै नहीं ।–व.३४५ ५२७७

जूँओं के मारे पहिनावा कोई फेंकता नहीं ।

—अकिंचन आदमियों के भय से मूल्यवान वस्तु नहीं छोड़ी जा सकती । जैसे इसी उक्ति के उदाहरण स्वरूप पहिनने के वेश में जूँएँ पड़ गई हों तो वेश को फेंकने की बजाय जूँओं से छुटकारा पाना ही समझदारी है ।

—जीवन में छोटी-मोटी कठिनाइयाँ आती ही रहती हैं, उनका सामना करके निवारण हेतु प्रयास करना जरूरी है, न कि हताश होकर बैठ जाना । शरीर में व्याधि उत्पन्न होने पर उसका उपचार करना विवेक-सम्मत है न कि शरीर की अवहेलना करना ।

पाठा : जूंवा रै डर सूं धाबळियौ नीं फेंकीजै ।

जूंवां री जोखम धाबळौ नीं वगाईजै ।

जूंवां रै मिस घाघरौ राळै, जिणरौ कोई कांई करै ।

जूंझारां री जात दिरीजै । ५२७८

जूझारों की मन्नत मानी जाती है ।

जूंझार = परोपकार के लिए युद्ध करके वीरगति पाने वाला जो बाद में पूजा जाता है । हिंदी के जूझार से राजस्थानी के जूंझार की मान्यता अधिक है ।

—समाज के लिए जो बलिदान करते हैं, वे इतिहास में प्रतिष्ठित होते हैं। यों अपना जीवन तो जस-तस पशु भी जीता है।

जूं टाळ खाज नीं, मां टाळ दाझ नीं। ५२७९

जूँ बिना खाज नहीं, माँ बिना दाझ नहीं।

—दुष्ट व्यक्ति परेशान करते हैं, माँ परेशान होती है।

—म्लेच्छ तकलीफ देते हैं, भले आदमी दूसरों के लिए तकलीफ पाते हैं।

जूंनी देगची नै कळी री भळक। ५२८०

पुरानी पतीली पर कलई की चमक।

—प्रौढ़ वेश्या अथवा प्रौढ़ महिला काफी शृंगार करे, तब...।

—कोई रईस आर्थिक स्थिति बिगड़ जाने पर ऊपरी दिखावा करे, तब...।

जूं बिना खाज नीं, कुळ बिना लाज नीं। ५२८१

जूँ बगैर खाज नहीं, कुल बगैर लाज नहीं।

—ओछी औरतें छिछोरी हरकतें करती हैं और कुलीन महिलाएँ लजीली व शालीन होती हैं।

जूंवां री घाल्यां माथौ नीं वढ़ाईजै। ५२८२

जूँओं के मारे सिर नहीं कटाया जा सकता।

दे.क.सं.५२७७

पाठा : जूंवां रै मिस मोडौ नीं हुईजै।

जूआ मूआ सारीखा।—व.२८० ५२८३

जुआरी मरे समान।

—जुए की लाभ-हानि का पहिले कुछ भी अनुमान नहीं लगाया जा सकता। हजारों लाखों रुपयों का वारा-न्यारा होता है। हरदम तनाव बना रहता है। चित्त उद्विग्न रहता है। इसलिए जुआरी जीवित रहते भी मरे के समान है।

जूट नूं नाम नी लेवू, अठे जूट बोलवानूं काम नहीं।—भी.३८३ ५२८४

झूठ का नाम मत लो, यहाँ झूठ बोलने का काम नहीं।

—झूठ बोलना वहाँ संगत भी माना जा सकता है, जहाँ उससे कुछ लाभ होता हो, पर लाभ होने की जहाँ तनिक भी संभावना न दिखे वहाँ झूठ बोलना व्यर्थ है।

—जो व्यक्ति बिना बात झूठ बोले उसके प्रति लांछना ।

जूटूं बोलवानूं कई न कई समजावणो पड़े।– भी. ३८४ ५२८५

झूठ बोलने पर कुछ-न-कुछ सफाई देनी पड़ती है ।

—एक झूठ बोलने पर उसकी सफाई में दस और झूठ बोलने पड़ते हैं।

—इसलिए मनुष्य को किसी भी सूरत में झूठ नहीं बोलना चाहिए।

जूड़ा नो भार धोरी ई झेले।– भी. ३८५ ५२८६

जूए का भार बैल ही झेलते हैं ।

—समर्थ व्यक्ति ही दूसरों का बोझ वहन करने के लिए सक्षम होता है।

—गरीब व्यक्ति पर किसी को सहयोग देने की जिम्मेवारी डाली जाय तब वह अपनी सफाई में इस उक्ति का सहारा लेता है कि वह तो स्वयं अपना ही बोझ ढोने में असमर्थ है, तब दूसरों का भार कैसे उठा सकता है !

जूतां वाळा किसा जांन गिया ? ५२८७

जूतों वाले कौन-से बरात में गये हैं ?

—कोई छोटी-मोटी छेड़खानी या ओछी हरकत करने वाला निर्भीक होकर अपने अकर्म की डींग मारे तब उसे चुनौती के रूप में कहा जाता है, सजा देने वालों का अभाव नहीं है या वे किसी बरात में नहीं गये हैं, अभी यहीं हाथोंहाथ सजा मिल जाएगी।

जूता फाट चाल गमाई , गाभा फाट गरीबी आई। ५२८८

जूते फटे चाल गँवाई, कपड़े फटे तब गरीबी आई ।

—जूते फटने पर चाल बिगड़ जाती है और वस्त्र फटने पर गरीबी उजागर होती है ।

—जूतों और कपड़ों से मनुष्य की आर्थिक स्थिति का अविलंब पता चल जाता है ।

जूती चालै कितीक के मांदगी परवांण। ५२८९

जूती कब तक चलेगी कि बीमारी के अनुसार ।

—लंबी बीमारी के दौरान कहीं आने-जाने की जरूरत ही नहीं पड़ती। तब पड़ी-पड़ी जूतियाँ तो घिसने से रहीं! और स्वस्थ रहने से जूतियाँ कम चलेंगी, क्योंकि हरदम आना-जाना पड़ता है।

—कोई भी होशियार व्यक्ति अपनी वस्तु बेचने पर सही जानकारी की बजाय घुमाकर बात बनाये, तब...!

जूती जिणरौ ई माथौ। ५२९०

जिसकी जूती, उसी का ही सिर।

दे.क.सं.५१२९

जूती तौ पगां तळै इज रैसी। ५२९१

जूती तो हमेशा पाँवों के नीचे ही रहेगी।

—दंभी पुरुष-वर्ग औरत को जूती के समान ही समझता है। जूती के उनमान ही औरत आसानी से बदली जा सकती है। इधर जूती फटी नहीं कि नई ले आये।

—जूती की नाई औरत को भी पाँव तले दबाना असंगत नहीं है, सामंती मान्यता के अनुसार।

पाठा : जूती तौ सदावंत पग में इज पैरीजै।

जूती फाट्यां तौ चाल बिगड़ै ई। ५२९२

जूती फटने पर चाल बिगड़ती है।

—फटी जूती वाला रुआब से नहीं चल सकता। उसी प्रकार कुलटा स्त्री का पति गर्दन उठाकर गुमान के साथ नहीं चल सकता। आँखें नीची करनी पड़ती हैं।

जेई तौ कांटां रौ ई राच। ५२९३

जेई तो काँटों का ही औजार।

जेई = कृषि का एक उपकरण जो काँटों को उठाने, गाड़ी भरने तथा बाड़ पर जमाने के काम आता है। इसे 'बेई' भी कहते हैं।

—जो व्यक्ति दुख के समय हरदम काम आता हो।

—जो व्यक्ति अपने से बड़े-बुजुर्गों की कैसी भी आज्ञा की अनुपालना में मुस्तैद रहे।

पाठा : बेई तौ ढीरां (कांटों) रौ ई राच।

जेई तौ ढीरां में ईं घालण सारू व्है। ५२९४

जेई तो काँटों में ही डालने के लिए होती है।

—उज्जड़ या गँवार आदमी से उसीके योग्य निम्न काम ही करवाया जाता है, जो बुद्धिमान या बड़े व्यक्तियों को नहीं बताया जा सकता।

—हर छोटे-बड़े आदमी को उसीके स्तर का काम सौंपा जाता है।

जेई री ठोकै अेक अर मंडै दोय। ५२९५

जई की ठोके एक और उघड़े दो।

—एक ही सजा का दुहरा परिणाम भुगतना पड़े, तब...।

—एक ही काम से दुहरी हानि हो, तब...।

जे जावौ गुजरात, तौ करम-छांवळी साथ। ५२९६

गर जाओ गुजरात, तो भाग्य की छाँह हरदम साथ।

—स्थान बदलने से भाग्य में रंचमात्र भी परिवर्तन नहीं हो सकता।

—भाग्य स्वयंभू है, वह अपनी चाल से चलता है, उस पर किसी का नियंत्रण नहीं चलता।

जे जिण में निस दिन खपै, सो उण में परवीण। ५२९७

जो जिस में निशि-दिन खटे, वह उस में पारंगत।

—काम स्वयं अपना गुरु होता है, उसी में रात-दिन डटे रहने से स्वतः कौशल आ जाता है।

—काम तो करने से ही सीखा जाता है।

जेट री जेट ई काची रैगी। ५२९८

पुश्त-दर-पुश्त ही कच्ची रह गई।

जेट = सिकने पर एक ही रोटी पर हर बार रोटी रखने से जो ढेरी बने।

—जिस परिवार के सारे सदस्य अयोग्य और अकर्मण्य हों, तब...।

—अयोग्य कुटुंब पर कटाक्ष।

जेठ जगत नै जीतै। ५२९९

जेठ जगत को जीतता है।

—इस उक्ति का विस्तार पश्चिमी राजस्थान तक ही सीमित है। जेठ के महीने में तप्त लूओं की वजह से घास,पानी,अन्न की पूरी कमी आ जाती है। लोग हताश हो जाते हैं। मवेशियों की बात तो दूर आक का दूध भी सूख जाता है। लोग-बाग जेठ के सामने हार मान लेते हैं।

—अभावों के आगे सभी को घुटने टेकने पड़ते हैं।

जेठ जी री पोळ में जेठ जी ई पोढ़ै। ५३००

जेठ जी की पोल में जेठजी ही सोते हैं।

—जो वस्तु जिसके पास है,वही उसके उपयोग का अधिकारी है,दूसरे का उस पर कोई दावा नहीं।

—अपनी वस्तु ही अपने काम आती है,दूसरों की वस्तु पर निर्भर नहीं रहा जा सकता।

—अपने और पराये का चिरंतन भेद मानवीय-संसार से मिट नहीं सकता।

जेठजी री भैंस, अपांरै पाड्यौ ई सही, ढें ढें तौ करैला। ५३०१

जेठजी के पास भैंस हमारे पास पाड़ा, ढें ढें तो करेगा।

ढें ढें = रंभाने की आवाज।

—देखा-देखी काम करने की हीन प्रवृत्ति।

—नकलचियों के परिहास-पूर्ण कार्यों पर कटाक्ष।

जेठ जी रै मूंग दळै तौ अपांरै कांकरा ई सही। ५३०२

जेठ जी के घर मूँग दलें तो हमारे कंकर ही सही।

दे.क.सं.५३०१

पाठा : जेठ जी रै चिणा दळै तौ अपांरै कांकरा ई दळौ।

जेठ मूंगा, सदा सूंगा। ५३०३

जेठ खस्ता, सदा सस्ता।

—ऐसी मान्यता है कि यदि जेठ मास में कृषि से उत्पन्न चीजें महँगी हों तो शेष ग्यारह महीनों तक वे चीजे सस्ती रहेंगी। इसलिए कि जेठ महीने में अनाज,दालें व मसाले इत्यादि उत्पन्न ही नहीं होते इसलिए महँगे भावों से बिकते हैं। फिर अषाढ़-सावन में तो वर्षा के रुख का

पता चल जाता है, इसलिए चीजें सस्ती मिलनी शुरू हो जाती हैं, तो साल भर सस्ती रहती हैं।

जेठ रा सो पेट रा। ५३०४

जेठ के सो पेट के।

—जेठ के पुत्र भी पुत्र हैं।

—अपना कोई पुत्र न होने के अभाव में, जब कोई स्त्री दुखी हो तब दूसरी स्त्रियाँ उसे समझाती हैं कि इतनी चिंता करने की क्या आवश्यकता है, जेठ के पुत्र भी तो उसी के हैं, उन्हीं को अपने पेट के जायों जैसा ही समझो, वे कौन-से पराये हैं। या इसके विपरीत भी जब दूसरी महिलाएँ सहानुभूति प्रकट करती हैं, तब वह निःसंतान औरत कहती है कि इस में चिंता की क्या बात जेठ के पुत्र भी तो मेरे अपने हैं।

जेठ री बाजरी नै मोबी बेटौ भाग सूं मिळै। ५३०५

जेठ की बाजरी और मोबी पुत्र भाग्य से ही मिलता है।

मोबी = सबसे बड़ा पुत्र।

—राजस्थान में कभी-कभार जेठ महीने में भी अच्छी वारिश हो जाती है। किसान बाजरी बो देते हैं। पर बाद में वारिश लंबी खिंच जाये तो फसल जल जाती है। और यदि समय पर दूसरी वारिश हो जाय तो फसल हाथ लग जाती है। उसी प्रकार एक ऐसी धारणा प्रचलित है कि बड़ा बेटा किसी-न-किसी आकस्मिक व्याधि से मर जाता है, भाग्य प्रबल हो तो बच रहता है। इसी संदर्भ में अक्सर यह कहावत कही जाती है।

पाठा : जेठा बेटा नै जेठी बाजरी रांम देवै तौ पावै।

जेठौ बाजरौ अर मोबी बेटौ बधता ई दीसै।

जेठ रै भरोसै बेटी नीं जाई। ५३०६

जेठ के भरोसे बेटी नहीं जायी।

दे.क.सं. २३४६

पाठा : जेठ सारू बेटी थोड़ी ई जिणी है।

जेठ रै हाथ में पावड़ौ फलका ज्यूं लखावै। ५३०७

जेठ के हाथ में फावड़ा फुलके की तरह दिखता है।

—फावड़े से रेत उठाकर अन्यत्र डालना काफी मुश्किल काम है। लगातार झुकी हुई कमर टीसने लगती है। फावड़े के डंडे से हाथ में छाले पड़ जाते हैं। पर जेठ को फावड़ा चलाते कुछ भी जोर नहीं पड़ता, वह फुलके जैसा ही हलका है।

—मनुष्य का स्वभाव है कि दूसरों की तकलीफ उसे तकलीफ महसूस नहीं होती। और अपनी तकलीफ को वह बहुत बढ़ा-चढ़ाकर मानता है।

जेठ-वैसाखां रा तावड़ा लागण दौ। ५३०८

जेठ-बैसाख की धूप लगने दो।

—मरुभूमि में जेठ एवं बैसाख की तेज धूप लगने दो—वह शरीर को सशक्त और जमीन को उर्वर बनाती है।

—जैसी मौसम हो, मनुष्य को उसीके अनुरूप ढलना चाहिए, उससे बचाव करने की चेष्टा स्वास्थ्य के लिए उचित नहीं।

—दुख या कष्ट से घबराने की बजाय उसका सामना करना चाहिए।

जेठा बेटा भाई बिरौबर। ५३०९

ज्येष्ठ पुत्र भाई के समान।

—सबसे बड़ा लड़का पिता के लिए भाई जैसा ही होता है।

—जब कभी जेठ के पुत्रों से चचेरे भाइयों की अनबन होती है तो माँ अपने पुत्रों को समझाती है कि परस्पर लड़ाई मत करो, जेठ के पुत्र भी सगे भाइयों जैसे ही हैं।

जेता पांव पसारणा, तेती लांबी सोड़। ५३१०

उतने पाँव पसारिये, जितनी लंबी सोड़।

सोड़ = सोते समय ओढ़ने का वस्त्र।

—जैसी परिस्थिति हो, मनुष्य को उसीके अनुसार चलना चाहिए।

—मनुष्य के लिए यही मर्यादा-जनक है कि वह अपने साधनों को ध्यान में रखकर अपना कार्य करे, व्यर्थ की लालसाएँ बढ़ाना अनुचित है।

जेतियौ जांगळू गियां ईं पतीजै । ५३११

जेतिया जाँगलू जाने पर ही समझता है ।

जेतिया = एक सामान्य नाम जो जिद व मूर्खता का द्योतक है ।

जांगळू = जाँगलू = बीकानेर के भाग विशेष का नाम है, जहाँ खूब रेतीले टीले हैं, बेहद गर्मी पड़ती है और पानी का नितांत अभाव है । सर्दियों में बेइंतहा सर्दी पड़ती है और गर्मियों में उत्तप्त लूएँ चलती हैं, आँधियाँ चलती है । वहाँ बसना बड़ी कठिन तपस्या है । जेतिया जैसे मूर्ख गँवार समझाने पर नहीं समझते, वहाँ जाने पर अपने-आप समझ जाते हैं कि उन्होंने कहा नहीं मानकर बहुत भारी गलती की ।

—जो व्यक्ति बार-बार मना करने के बावजूद गलत काम करते न माने तो आखिर उसीका अहित होता है ।

पाठा : जेतियौ जांगळू जासी ।

जे तौ ल्याऊं पीहरां, ते तौ जाय घरां ।–व.१४० ५३१२

जितना भी पीहर से लाती हूँ, घर में चला जाता है ।

—अपने मायके से कोई औरत कुछ भी धन लाये और वह ससुराल में खर्च हो जाय, तब ।

—ससुराल की दयनीय स्थिति की ओर संकेत ।

—इधर-उधर की आमदनी या रिश्वत का पैसा फजूल खर्च हो जाये, तब... ।

जेथ जाय भूखौ, ओथ पड़ै सूखौ । ५३१३

जहाँ जाय भूखा, वहाँ पड़े सूखा ।

—भाग्य प्रबल है, उसका सामना कोई नहीं कर सकता ।

दे.क.सं.४८३९

जे थूं राळैगौ तोड़-मरोड़, म्हैं निसरूंगी कोठी फोड़ । ५३१४

गर तू मुझे डालेगा तोड़-मरोड़ कर तो मैं निकलूँगी कोठी फोड़ ।

—बाजरी बोते समय या निराई करते समय वह किसान को आश्वस्त करती है कि यदि वह बार-बार हल से खेत की जुताई करेगा, तत्पश्चात् समय-समय पर हल से निराई करेगा तो वह इतनी बढ़ेगी कि अन्न के भंडार में समा नहीं सकेगी, अर्थात् इतनी ज़्यादा उत्पन्न होगी ।

—मेहनत के अनुसार ही फल मिलता है।

जे धन दीसै जावतौ, आधौ लीजै बांट। ५३१५

यदि धन जाता हुआ दिखे, तो आधा बाँट लेना चाहिए।

—यह एक नसीहत की बात है कि झंझट या किसी सौदे में या किसी पंचायती में पूरे धन की क्षति नजर आये तो समझदारी इसी में है कि आधा-आधा बाँटकर तत्काल समझौता कर लेना चाहिए।

—परिस्थितियों का अच्छी तरह आकलन करने के बाद ही उसीके अनुरूप काम करना चाहिए।

जे धांमै पूण तौ माथौ मत धूंण। जे धांमै आधौ तौ पड़्यौ इज लाधौ। ५३१६
जे धांमै पाव तौ दै मूंछां रै ताव।

गर दें पौन तो माथा मत धुन। गर दें आधा तो समझ पड़ा मिला।
गर दें पाव तो दे मूँछों के ताव।

—यदि जाते हुए धन में से पौन मिले तो मना मत कर। यदि आधा मिले तो यह समझकर मंजूर करले कि मुफ्त का माल हाथ लगा। किंतु पाव हिस्सा देकर ही जो टरकाना चाहे तो मूँछें तान कर सामना कर—यही कूट नीति है।

मि.क.सं.५३१५

जे धुरावू सिरांतियौ करै, मरै नींतर मांदौ पड़ै। ५३१७

गर उत्तर की तरफ सिरहाना करे, मरे नहीं तो बीमार पड़े।

—किस दिशा में मुँह करके खाना खाएँ, किधर सिरहाना रखें, किस दिशा में घर का दरवाजा रखें, हवन की वेला मुँह किधर रखें—इस तरह की लोक-धारणाएँ अनेक हैं। इन में सदियों के अनुभव का निचोड़ है। अब तो वैज्ञानिक विधि से प्रयोग करके सही जानकारी हो सकती है। अभी कुछ ही वर्षों से वास्तु-कला को लेकर खूब सामग्री प्रकाशित हो रही है। परीक्षण चल रहे हैं। यह भी इसी प्रकार की उक्ति है। इसका भी परीक्षण होना चाहिए।

जे नीं पीधौ भांग रौ पांणी, उणरौ जमारौ धूड़-धांणी। ५३१८

गर नहीं पिया भंग का पानी, उसकी जिंदगी निपट बिरानी।

—हर नशेबाज अपने-अपने नशे की प्रशंसा और दूसरे नशों की निंदा करता है। इस उक्ति में भंगेड़ी भाँग की प्रशंसा करते हैं।

जेब तौ खाली अर नांव किरो़ीमल। ५३१९

जेब तो ख़ाली और नाम करोड़ीमल।

—नाम के विपरीत परिस्थिति।

जे भीज्यौ नीं काकड़ौ तौ क्यूं फेरै हाळी लाकड़ौ ? ५३२०

गर नहीं भीगा काकड़ा तो क्यों चलाये हाली लाकड़ा ?

काकड़ौ = कर्क राशि। लाकड़ौ = लकड़ी अर्थात् हल का फाल।

—इस कृषि कहावत के अनुसार यदि कर्क राशि की संक्रांति के दिन वारिश न हो तो आगे हल चलाना व्यर्थ है, क्योंकि अकाल पड़ेगा और सारी मेहनत बेकार जाएगी।

—कृषि के अलावा भी इस उक्ति में एक छिपा संकेत यह भी है कि मनुष्य को काम की शुरुआत में ही सब आगा-पीछा सोचकर आगे कदम बढ़ाना चाहिए।

जे भैंस जांणै के हूं काळी तौ जीवै कित्ता वेम ? ५३२१

गर भैंस जाने कि मैं काली तो जिये कितनी उम्र ?

वेम = गाय-भैंस के ब्याने की गणना से उम्र का अनुमान।

—यदि कोई मनुष्य हरदम अपनी कमजोरी के बारे में ही सोचता रहे तो वह तनाव-ग्रस्त रहता है। इसलिए यह स्वाभाविक है कि कमजोरी को भूलकर वह ग्रंथि-हीन जीवन बिताये! इस तरह के मुगालते बिना जीवन संभव नहीं।

जे म्हैं कातूं पूनूं तौ अपां मरा दोनूं। ५३२२

गर मैं कातूँ पूनम तो दोनों का निकले दम।

संदर्भ-कथा: पुराने जमाने में चरखा कातना भी जीवन-निर्वाह का एक साधन था। सामान्यतया सभी घरों में चरखे का चलन था। अक्सर बूढ़ी सास अपने ज़िम्मे ही यह काम रखती थी। गुनगुनाती जाती और चरखा कातती रहती। किसी एक घर में बहू आई तो सास ने चरखा कातना उसे सौंप दिया। पर वह चरखे को हाथ न लगाये। प्रत्येक तिथि पर कुछ-न-कुछ ऐसा बहाना कर ले, जिससे सास भी पुरजोर आग्रह न कर सके! महीने की पहली तिथि से लेकर

पूनम तक उसके पास बहानों का पूरा ठाट था—'अेकम पैल पिड़वा, बीज—चंद्रावल बीज, तीज—आखातीज, चौथ—गणेश चौथ, पांचम—नाग पांचम, छठ—ऊभ छठ, सातम—सीळ सातम, आठम—जनम आठम, नम—गोगा नम, दशम—दसरावा, इग्यारस—निरजळा इग्यारस, बारस—वछ बारस, तेरस—धन तेरस, चवदस—अणत चवदस, 'अर जे कातूं पूनूं तौ अपां मरा दोनूं' अब बताइये सासूजी मैं चरखा कातूँ तो किस दिन कातूँ। सारे दिन तो अड़ते हैं। बेचारी सास को चालाक बहू के सामने हार माननी पड़ती।

—यदि किसी व्यक्ति का मन ही नहीं हो तो वह काम न करने के बीसियों बहाने बना सकता है।

जेर खाये जो नी मरे ने नी खाये जो मरे।–भी.३८६ ५३२३

जहर खाये जो न मरे और न खाये जो मरे।

—होनहार प्रबल है, उसे कोई नहीं टाल सकता। जिसे मरना है, वह बिना जहर खाये भी मर सकता है और जिसे नहीं मरना है, वह जहर खा भी ले तो बच जाएगा।

—जो बात होनी है, वह होकर रहती है और जो बात नहीं होनी है, वह नहीं हो सकती।

जे रिण उतारै बाप रौ तौ साढ़ा मूंग बवाय। ५३२४

गर ऋण उतारो बाप का तो बोवो मूँग असाढ़।

—पीढ़ियों का अनुभव इस उक्ति में चरितार्थ हुआ है कि बाप के ऋण से मुक्त होना चाहते हो तो आषाढ़ की पहली वारिश में ही मूँग बोदो, बेहद फलेंगे।

—कोई भी काम गहन सोच-विचार करने के पश्चात् शुरू करना चाहिए, जिससे काम पूर्णतया सफल हो।

जेळू जलमी है जे मोय ऊंदू जोवा. व्यू।–भी.३८७ ५३२५

छिनाल पैदा हुई है जिसने मुझे नीचा दिखाया।

आ.दे.क.सं.५३२६

जेळू जिहां ईं हार। ५३२६

जहाँ कुलटा वहीं हार।

—जिस घर में दुर्भाग्य से कुलटा स्त्री आ जाय, उसका सर्वनाश निश्चित है।

—कुलटा स्त्री की वजह से घर में हरदम तनाव-पूर्ण स्थिति रहती है, इसलिए मन लगाकर कोई काम नहीं कर सकता। फलस्वरूप आर्थिक स्थिति बिगड़ जाती है।

जेवड़ी बळगी पण बट नीं गियौ। ५३२७

रस्सी जल गई पर ऐंठ नहीं मिटी।

—सर्वस्व नष्ट होने पर भी जो व्यक्ति अपनी हेकड़ी नहीं छोड़े, उसके लिए...।

—सर्वथा अक्षम होने पर भी जो वृद्ध पहले की तरह अपना दंभ प्रदर्शित करे तब।

जे विधवा करै सिणगार, उण सूं रहौ सदा हुंसियार। ५३२८

गर विधवा करे सिंगार, उससे रहो सदा होशियार।

—सवर्ण जातियों में विधवा के अभिशप्त जीवन पर इतने नियंत्रण व पाबंदियाँ हैं कि उनसे पीड़ित स्त्री उन वर्जनाओं का उल्लंघन नहीं कर सकती। न गहना पहिन सकती है, न अच्छे कपड़े पहिन सकती है, न अच्छा खा-पी सकती है! तिस पर भी कोई विधवा वर्जनाओं का अतिक्रमण करके सिंगार करे तो वह निश्चित रूप से साहसी है, समाज-विरोधी है, इसलिए उससे सतर्क रहना चाहिए। वह कुछ भी जोखिम उठा सकती है।

जे सांई संवळौ हुवै तौ अंवळा हुवौ अनेक। ५३२९

गर साईं की महर तो कुपित हों अनेक।

—यदि ईश्वर पक्षधर है तो सैकड़ों विपक्षी या दुश्मन भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

—मनुष्य की औकात ही क्या है, जो मनुष्य के प्रति कृपालु हो। कृपालु तो केवल ईश्वर ही हो सकता है।

जे सुख चावै जीव तौ चोदू होय नै जीव। ५३३०

गर तू सुख चाहे जीव तो निरीह होकर जी।

—हेकड़ी को तिलांजली देकर दबकर जीना ही सफल जीवन का अचूक मंत्र है। उससे किसी को ईर्ष्या नहीं होती। ईर्ष्या न हो तो उसे कोई क्षति नहीं पहुँचाता। आराम से जिंदगी बसर हो जाती है।

जेह जियांरा, तेह तियांरा।–व.१९२ ५३३१

जो जिनके हैं, वे उन्हीं के हैं।

—संपर्क, पहिचान व रिश्तों का गहरा प्रभाव मनुष्य के व्यक्तित्व पर पड़ता है। जिनसे संबंध स्थापित हो गया, वह उन्हीं की मंडली में आ जाता है और उसीका होकर रह जाता है।

ज्रे हीयौ हुवै हाथ, तौ जावौ ठींगां रै साथ। ५३३२

गर हिया हो हाथ, तो जाओ बाँकों के साथ।

—यदि औरत का मन अपने वश में हो तो बाँकों के साथ रहकर भी उसका चरित्र निर्दोष रह सकता है। यदि मन वश में नहीं है तो कोई भी उसे फुसला सकता है।

पाठा : **जे हीयौ हुवै हाथ तौ कुसंगी केता ई मिळौ।**

जैड़ा आखड़्या वैड़ा पड़्या कोनीं। ५३३३

जैसे लड़खड़ाये वैसे गिरे नहीं।

दे.क.सं.६३४

जैड़ा कंथा घर भला, वैड़ा ई परदेस। ५३३४

जैसे कांत घर भले वैसे ही परदेश।

दे.क.सं.५१६९

पूरा दोहा :

नंह हंसतां हाथ गह्यौ, नंह खींच्या-खांच्या केस।
जैड़ा कंथा घर भला, वैड़ा ई परदेस॥

जैड़ा कांम वैड़ा करम। ५३३५

जैसा काम वैसा कर्म।

—जैसा काम वैसा फल।

—जैसा कार्य वैसा परिणाम।

जैड़ा गरु वैड़ा चेला। ५३३६

जैसा गुरु वैसा चेला।

—किसी बुरे व्यक्ति को देखकर लगता है कि उसका गुरु भी शायद इसी लच्छन का होगा। या इसके अभिभावक ही बुरे होंगे।

—बुरी शिक्षा ग्रहण करने वाले अच्छे क्योंकर हो सकते हैं।

जैड़ा ठारौला वैड़ा ठरौला। ५३३७

जैसा आराम दोगे, वैसा आराम पाओगे।

—अभिधार्थ के अतिरिक्त उक्ति का लाक्षणिक अर्थ दूसरा ही है। जो लड़के माँ-बाप को दुख देते हैं या रात-दिन जलाते हैं, तब माँ-बाप कहते हैं कि हमें जैसा आराम पहुँचाया वैसा आराम तुम्हें भी पहुँचे। अर्थात् तुमने हमको जो दुख पहुँचाया है, वैसा ही दुख तुम अपनी संतान से पाओगे। जिस तरह हमें जलाया है, उसी तरह तुम जलोगे।

जैड़ा थारा रींगणा, वैड़ा म्हारा पूंख। ५३३८

जैसे तेरे बैंगन वैसे मेरे पूँख।

पूंख = बाजरी के सिट्टे।

संदर्भ-कथा : एक ही गली में दो मालिनें रहती थीं। एक खेती का काम करती थी। दूसरी, अपनी बाड़ी में साग-सब्जियाँ उगाती थी। संपर्क तो अच्छा-खासा था पर गाढ़ी मित्रता नहीं थी! चालाक भी एक-दूसरी से कम नहीं थी। मिलने पर उजली हँसी भी हँसती रहतीं! एक दिन खेतिहर मालिन के घर मेहमान आये। घर में सब्जी नहीं थी। उसने सहेली से सब्जी माँगी तो उसने पके हुए बैंगन दे दिये! मन में बुरा तो लगा, पर कुछ कहा नहीं। एक दिन दूसरी सहेली के घर नाती आये। उन्हें पूँख खाने का शौक था। दौड़ी-दौड़ी सहेली के खेत पर गई। पूँख माँगे तो सहेली ने झटपट एक कोने से पूँख तोड़कर ला दिये। सहेली को वजन कुछ हलका लगा तो उसने गौर से देखा—दानों की जगह खाली घर थे। चिड़ियाँ सारे दाने खा गई थीं। उसी कोने से पूँख तोड़कर लाई थी! सहेली ने तनिक गुस्से में कहा, 'यह क्या, इन में दाने तो हैं नहीं।'

खेतिहर सहेली ने मुस्कारकर कहा, 'तभी तो तोड़कर लाई हूँ, तूने मुझे जैसे बैंगन दिये, मैंने भी वैसे पूँख ला दिये! इस में बुरा माने जैसी क्या बात!'

—जैसे को तैसा।

जैड़ा दांम, वैड़ौ कांम। ५३३९

जैसे दाम, वैसा काम।

—मजदूर या कारीगर को जितनी मजदूरी दोगे, वह उतना ही काम करेगा। कम मजदूरी तो कम काम, ज्यादा मजदूरी तो ज्यादा काम, अच्छा काम।

—यह उक्ति उलटकर भी कही जाती है—**जैड़ौ कांम, वैड़ा दांम।**

जैड़ा देव, वैड़ा ई पुजारी। ५३४०

जैसे देव, वैसे ही पुजारी।

दे.क.सं.५१७३

जैड़ा देव वैड़ी पूजा। ५३४१

जैसे देव, वैसी पूजा।

दे.क.सं.५१७३

जैड़ा नागनाथ, वैड़ा सांपनाथ। ५३४२

जैसे नागनाथ, वैसे साँपनाथ।

दे.क.सं.५१७४

जैड़ा निन्नांणूं वैड़ा सौ। ५३४३

जैसे निन्यानबे वैसे सौ।

—ब्याह-शादी या किसी उत्सव-आयोजन में निश्चित राशि के अनुसार तो खर्च होता नहीं है, जब जैसा मौका आया, उतना खर्च कर दिया! तब मन को यह कर सांत्वना दी जाती है कि खर्च होता हो तो होने दो—जहाँ निन्यानबे वहाँ सौ।

—मौके पर बेशी खर्च करना ही समझदारी है।

जैड़ा नै जैड़ौ सोध ई लेवै। ५३४४

जैसे को तैसा खोज ही लेता है।

—अमूमन नशेबाजों के लिए यह कहावत कही जाती है, जब कोई अफीमची अपने साथियों का पता कर लेता है या कोई शराबी शराबियों की मंडली में जा बैठता है, या कोई भंगेड़ी, भंगेड़ियों के बीच भंग छानने लगता है! यों एक स्वभाव वाले या एक धंधे वाले अपनों को खोज लेते हैं, तब भी...।

जैड़ा बावौ वैड़ा लूणौ। ५३४५

जैसा बोवो वैसा काटो।

—जैसे बीज बोओगे वैसा ही फल हाथ लगेगा।

—जैसा काम, वैसा ही उसका परिणाम।

जैड़ा बोलै डोकरा, वैड़ा बोलै छोकरा। ५३४६

जैसे बोलें डोकरे, वैसे बोलें छोकरे।

—घर में बुजुर्गों की बातें सुन-सुनकर ही बच्चे शिक्षा ग्रहण करते हैं और बाहर जाकर वैसी ही बातें सुनाते हैं।

—परिवेश और वातावरण का प्रभाव मनुष्य पर पड़ता ही है।

जैड़ा मां रै पेट सूं आया, वैड़ा ई धरती रा पेट में समाया। ५३४७

जैसे माँ के पेट से आये, वैसे ही धरती के पेट में समाये।

—जिस तरह माँ के पेट से नंगे और खाली हाथ आये, सारी उम्र खट-पट और झूठ-सच करके धरती के पेट में समा गये। बरसों तक जीने के बाद ऐसा कुछ भी नहीं किया, जिससे लोग बाद में याद करें!

—मानवीय जीवन का सारा प्रपंच व्यर्थ है।

जैड़ा रूंख वैड़ा छोडा। ५३४८

जैसे पेड़ वैसी छाल।

—बुरी या बिगड़ी हुई संतान को लक्ष्य करके कहा जाता है कि जैसे पेड़ होते हैं, वैसी ही उनकी छाल होती है और जैसा बाप होता है, वैसे ही उसके बेटे होते हैं।

—अनुवांशिकता का असर पड़े बिना नहीं रहता।

जैड़ा साजन, वैड़ा भोजन। ५३४९

जैसे साजन, वैसा भोजन।

—घर का मुखिया जैसी कमाई करके लाता है वैसा ही भोजन घर में बनता है।

—पति की योग्यता के अनुसार ही पत्नी उसका सत्कार करती है।

जैड़ा होवै दीहड़ा, तैड़ा सहै सरीर। ५३५०

जैसा हो तापमान, वैसा सहे शरीर।

—जैसा मौसम हो, मनुष्य का शरीर उसीके अनुरूप ढल जाता है।

—दिनमान का जैसा भी चक्कर हो मनुष्य का मन उसे सहने के लिए धीरे-धीरे अभ्यस्त हो जाता है।

जैड़ी करणी, वैड़ी भरणी। ५३५१

जैसी करनी वैसी भरनी।

दे.क.सं.१८२४

जैड़ी कीजै करणी, वैड़ी पार उतरणी। ५३५२

जैसी कीजे करनी, वैसी पार उतरनी।

दे.क.सं.१८२५

जैड़ी थारी घूघरी, वैड़ा म्हारा गीत। ५३५३

जैसी तेरी घूघरी, वैसे मेरे गीत।

घूघरी = उबले हुए गेहूँ का व्यंजन जो विशेष अनुष्ठानों पर बनता है, बाँटा जाता है और अवसर पर गीत (लोक गीत) भी गाये जाते हैं। मसलन विवाह के समय विनायक पूजन, जच्चा के द्वारा जल-पूजन पर घूघरी बनती है और गीत गाये जाते हैं।

—खर्च के अनुसार आयोजन। नेग के अनुसार विरुद।

—परिश्रम के अनुसार पारिश्रमिक।

—जैसा मेहनताना वैसी मेहनत।

जैड़ी थारी धौलक, वैड़ौ म्हारौ वीणौ। ५३५४

जैसी तेरी ढोलक, वैसा मेरा तानपुरा।

—भजन-मंडली में जैसी तूने ढोलक बजाई वैसा मैंने अपना तानपुरा बजा दिया। जब तेरी ढोलक ही ताल में नहीं है तो मेरा तानपुरा क्योंकर सुर में रहता।

—एक दूसरे पर दोषारोपण के समय सफाई देने की जरूरत पड़े, तब।

जैड़ी दीखत, वैड़ी सीखत। ५३५५

जैसा देखे, वैसा सीखे।

—किसी भी घर-परिवार के बच्चे माँ-बाप का अनुकरण करते हैं।

—यह उक्ति बच्चों की बजाय बुजुर्गों को संबोधित है कि यदि अपने बच्चों में अच्छे संस्कार डालने हैं तो वे अपने आचरण को उत्कृष्ट रखें और ऐसा कोई बुरा काम न करें जिससे बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़े।

पाठा : **जैड़ौ देखै, वैड़ौ सीखै। देखै जैड़ौ सीखै।**

जैड़ी देवी, वैड़ा पंडा। ५३५६

जैसी देवी, वैसे पंडे।

—शीतला देवी का वाहन है—गधा और इसके पुजारी हैं—कुम्हार। इसे ठंडे-बासी भोजन का ही प्रसाद चढ़ाया जाता है। छोटे बच्चों के मुँह पर काजल व कुंकुम की टीकियाँ देकर उन्हें सवारी का बछेरा बनाकर कामना की जाती है कि हे मैया! बच्चों की चेचक से रक्षा करना।

—ओछे व्यक्तियों की घातक साँठ-गाँठ के लिए भी इस उक्ति का प्रयोग होता है।

मि.क.सं.५१७३

जैड़ी नीत वैड़ी बरगत। ५३५७

जैसी नीयत वैसी बरकत।

आ.दे.क.सं.७६२७

जैड़ी बोई, वैड़ी वाढ़ी। ५३५८

जैसी बोई, वैसी काटी।

दे.क.सं.५३४५

जैड़ी भिजोई, वैड़ी निचोई। ५३५९

जैसी भिगोई, वैसी निचोई।

निचोई = निचोड़ी।

—किसी काम को कुशलता-पूर्वक न करने पर...!

—घर की बिगड़ी हुई स्थिति को जस-तस चलाने का प्रयास।

जैड़ी मत वैड़ी गत। ५३६०

जैसी मति वैसी गति।

—मनुष्य की जैसी मति या बुद्धि होगी,उसी के अनुसार उसके कार्य की गति आगे बढ़ेगी।

—जैसी बुद्धि वैसी कुशलता।

—जैसी मति वैसी प्रकृति।

जैड़ी मां वैड़ी बेटी, जैड़ौ सूत वैड़ी फेटी। ५३६१

जैसी माँ वैसी बेटी, जैसा सूत वैसी फेटी।

फेटी = लाल रंग की मोटी किनारी और मोटे सूत की धोती,जो घुटनों से कुछ ही नीचे पहनी जाती है।

—माँ के गुण व लक्षण बेटी में परिलक्षित होते हैं और सूत का रंग-रूप फेटी में उतरता है।

—अनुवांशिक प्रभाव निःसंदेह प्रकट होता है।

जैड़ी व्है गांव री रीत, वैड़ी उठाइजै घर री भींत। ५३६२

जैसी हो गाँव की रीत, वैसी उठे घर की भीत।

—परिवार एक स्वतंत्र इकाई होते हुए भी उसका संपूर्ण संचालन संबंधित समाज के विधान से ही क्रियान्वित होता है!

—सामाजिक परंपरा के पथ पर ही परिवार अपनी मंजिल तय करता है।

जैड़ी संगत वैड़ी पंगत। ५३६३

जैसी संगत वैसी पंगत।

—संगत के संस्कारों का ही पंगत या पाँत अनुसरण करती है।

—जैसा समाज का चरित्र होगा,बहुत-कुछ उसी के अनुरूप व्यक्ति का चरित्र होगा।

पाठा : जिसी संगत विसी पंगत।

जैड़ी संगत वैड़ी रंगत। ५३६४

जैसी संगत वैसी रंगत।

—संगत का रंग चढ़े बिना नहीं रहता।

—आदमी के रंग-ढंग की पहिचान उसकी सोहबत।

पाठा : जैड़ी संगत वैड़ा ई लक्खण। जैड़ौ संग वैड़ौ रंग।

जैड़ी सेडळ माय, वैड़ी असवारी थाय! ५३६५

जैसी शीतला माई, वैसी सवारी भाई !

—चेचक के दानों से बच्चों का हुलिया बिगाड़ने वाली देवी के योग्य सवारी गधे के अलावा और क्या हो सकती है ?

—जो व्यक्ति जिस योग्य होता है उसी के अनुरूप उसका सत्कार होना चाहिए।

जैड़ौ करसी वैड़ौ भरसी। ५३६६

जैसा करेगा, वैसा भरेगा।

दे.क.सं.१८७३

जैड़ौ काठ, वैड़ा छोडा। ५३६७

जैसा काठ, वैसी छीलन।

दे.क.सं.५३४८

जैड़ौ किड़कियौ वैड़ौ बरसियौ कोनीं। ५३६८

जैसा गरजा वैसा कहाँ बरसा।

—बादल जिस गर्जन-तर्जन के साथ जैसा घुमड़ा, वैसा उमड़ा नहीं।

—जो व्यक्ति बढ़-बढ़कर बातें बनाये और उनके अनुरूप सहयोग न दे, तब...!

—जैसा क्रोध किया वैसी बहादुरी नहीं दिखाई।

जैड़ौ खावै अन्न, वैड़ौ हुवै मन्न। ५३६९

जैसा खाये अन्न, वैसा हो जाये मन।

दे.क.सं.२५८

जैड़ौ खावै, वैड़ी डकार आवै। ५३७०

जैसा खाये, वैसी डकार आये।

दे.क.सं.२५३

जैड़ौ खेत वैड़ी नेपै। ५३७१

जैसा खेत वैसी फसल

—कार्य-कारण संबंध।

—जैसी माँ वैसी संतान।

जैड़ौ गुळ वैड़ौ मीठौ। ५३७२

जितना गुड़, उतना मीठा।

दे.क.सं.३६२५,५१६४

पाठा : जितरौ गुळ उतरौ मीठौ। जितना गुड़ उतना मीठा।

जैड़ौ गोविंद वैड़ी घोड़ी, विधना खूब मिळाई जोड़ी। ५३७३

जैसे गोविंद वैसी घोड़ी, विधना ने खूब मिलाई जोड़ी।

—जैसा अनाड़ी सवार, वैसी ही मरियल घोड़ी! जब दो मित्रों में, पति-पत्नी में या गुरु-शिष्य में समान कमजोरियाँ एवं एक-से दुर्गुण हों, तब...!

—इस उक्ति में अच्छाइयों की बजाय, खामियों व अवगुणों का ही संकेत है।

जैड़ौ घोड़ौ वैड़ौ असवार। ५३७४

जैसा घोड़ा वैसा ही सवार।

मि.क.सं.५३७३

जैड़ौ ठरकौ व्है उणीज परवांणै कांम करणौ चाहीजै। ५३७५

जैसी हैसियत हो, उसीके अनुरूप काम करना चाहिए।

—कोई भी काम करते समय अपनी हैसियत को भूलना अमूमन घातक होता है।

—हैसियत के अनुसार काम करते रहने पर कोई भी आदमी आर्थिक बोझ तले दबता नहीं। धीरे-धीरे उन्नति करता रहता है।

—सपने में भी अपनी औकात को याद रखना हितकारी है।

जैड़ौ डोळ, वैड़ौ मोल। ५३७६

जैसा डौल, वैसा मोल।

—किसी वस्तु, पशु-मवेशी या आदमी के डौल मुताबिक ही उसका मूल्य होता है।

—किसी भी व्यक्ति की शारीरिक या बौद्धिक योग्यता के अनुसार ही उसका मानदेय तय होता है।

जैड़ौ ढोर, वैड़ौ बंधणौ। ५३७७

जैसा ढोर, वैसा बंधन।

—पशु की शक्ति के अनुसार उस पर नियंत्रण की विधि अपनाई जाती है।

—जिस व्यक्ति की जैसी विध्वंसक क्षमता या प्रतिरोध की ताकत हो उसे परास्त करने के लिए वैसा ही उपाय किया जाता है।

जैड़ौ ढोल रै डाकौ, वैड़ी गूंज। ५३७८

जैसा ढोल का डंडा, वैसी ही गूँज।

—विवाह या उत्सव आयोजन में जितना खर्च, उतनी ही महिमा।

—जैसा कार्य वैसी ही नामवरी।

—जैसा कौशल वैसी ही सफलता।

—जितनी पूँजी, उतना ही व्यापार।

जैड़ौ तिंवार, वैड़ा ही गीत। ५३७९

जैसा त्योहार, वैसे ही गीत।

—होली पर फागुन के गीत, रक्षा बंधन पर भाई-बहिन के गीत, सावन की तीज पर दांपत्य जीवन की खुशहाली के गीत और गनगौर पर सुहाग की आकांक्षा के गीत अर्थात् अवसर के अनुरूप ही गीत गाये जाते हैं।

—जैसा कर्म, वैसा यश।

जैड़ौ त्यूंहार वैड़ी त्यूंहारी, जैड़ौ जंवाई वैड़ी जवारी। ५३८०

जैसा त्योहार वैसी त्योहारी, जैसा जमाई वैसा सत्कार।

—हर त्योहार के अपने-अपने व्यंजन निर्धारित होते हैं। रक्षा बंधन पर सिवैयाँ, शीतला-अष्टमी पर ठंडे और बासी व्यंजन, दीपावली पर लड्डू-घेवर, बकरा-ईद पर माँस-पुलाव इत्यादि। इसी तरह दूर-नजदीकी दामाद का रिश्ते के अनुसार ही सत्कार होता है।

—जिस व्यक्ति के जैसे गुण-लक्षण होते हैं, उसीके अनुरूप उसका समाज में आदर-भाव होता है।

पाठा : जसौ त्यूंहार, वसी त्यूंहारी, जसौ जंवाई, वसी जवारी।

जैड़ौ थांरौ देणौ-लेणौ वैड़ा म्हारा गीत। ५३८१

जैसा तुम्हारा देना-लेना, वैसे मेरे गीत।

मि.क.सं.५३७९.

जैड़ौ पांवणौ, वैड़ौ ई जीमावणौ। ५३८२

जैसा पाहुन, वैसी जीमावन।

जीमावणौ = तीमारदारी, सत्कार।

—मनुष्य की हैसियत के अनुसार ही उसकी आव-भगत होती है।

—मुँह देखकर ही तिलक लगाये जाते हैं।

—जैसी लियाकत वैसी ही पगार।

पाठा: **जिसड़ौ प्रामणौ, उसड़ौ ई तेवड़।**

जैड़ौ देस, वैड़ौ भेस। ५३८३

जैसा देश, वैसा भेस।

—देश के अनुसार भेष धारण करने से काफी सुविधाएँ स्वतः हो जाती हैं, अन्यथा कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। भेष का मलतब केवल बाहरी पहिनावे से ही नहीं है, रीति-रिवाज, संस्कृति इत्यादि से भी है। यदि कोई प्रवासी अन्य देश की भाषा, रीति-रिवाज और संस्कृति का अनुसरण करके चलता है तो वह उस देश की सुविधाएँ प्राप्त कर सकता है।

—हर देश का अपना सांस्कृतिक वैविध्य होता है।

जैड़ौ बाजै बायरौ वैड़ी लीजै ओट। ५३८४

जैसी चले बयार, वैसी लेनी ओट।

दे.क.सं.५१७८

जैड़ौ वींद वैड़ी जांन। ५३८५

जैसा दूल्हा, वैसी बरात।

—दूल्हे की जैसी हैसियत होती है, उसीके अनुसार बरात सजती है। इस कहावत का प्रचलन महादेव की बरात को लक्ष्य करके होना चाहिए। जैसे औघड़, भंगेड़ी और भभूत रमाये भोले शंकर—गले में साँप, नंदी पर सवार और सिंह-चर्म (बाघंबर) लपेटे हुए, वैसी ही उनकी बरात—भूत-प्रेत, पिशाच और विकलांग इत्यादि।

—जो व्यक्ति जैसा होता है, उसे वैसे ही संगाती मिल जाते हैं।

—जैसा साधु, वैसी ही उसकी मंडली।

—जैसा नेता, वैसे ही उसके अनुयायी।

जैड़ौ सांग हुवै, वैड़ा ई दूहा कथीजै। ५३८६

जैसा स्वाँग वैसा यशगान।

—मनुष्य जो भी कर्म करता है—वह उसके स्वाँग-स्वरूप की स्वीकृति होता है—दान के बहाने वह दानवीर का स्वाँग लाता है; वीरता के बहाने वीर का स्वाँग लाता है, व्यापार-व्यवसाय के बहाने वह सेठ का स्वाँग लाता है। कंजूसी के बहाने वह मूजी का स्वाँग लाता है। जो व्यक्ति जिस योनि में स्वाँग के बहाने जो कर्म करता है—वैसा ही उसका प्रचार होता है।

जैतल टाळ किसौ रातीजोगौ। ५३८७

जैतलदे के बिना कैसा जागरण।

ऐतिहासिक प्रसंग: जैताँ, जैतल, जैतलदे, एक पतिव्रता राजपूत रमणी का आख्यान। राजस्थान में विवाह के अवसर पर रात्रि-जागरण की परंपरा है। स्त्रियाँ सामूहिक रूप से जैतलदे का गीत अवश्य गाती हैं। साथ-साथ अन्य देवी-देवताओं के मांगलिक गीत (लोक गीत) भी गाये जाते हैं। पर जैतलदे के गीत गाये बिना कोई भी रात्रि-जागरण पूरा नहीं माना जाता।

—जिस विशिष्ट व्यक्ति की उपस्थिति के बिना कोई आयोजन सफल न माना जाय तब...।

जैर खावण नै ई कोडी कोनीं। ५३८८

जहर खाने के लिए भी कौड़ी नहीं।

—जिस जमाने में कौड़ी का भी मुद्रा के रूप में प्रचलन था, संभवतया उस वक्त से यह कहावत चली आ रही हो।

—निहायत गरीब व्यक्ति से चंदा या सहयोग माँगने पर उसे यह कहने को मजबूर होना पड़ता है कि यदि एक कौड़ी भी पास होती तो वह जहर खाकर अपने कष्टमय जीवन को ही समाप्त कर देता। फकत कौड़ी के अभाव में ही वह जीवित है!

पाठा : जैर खावण नै ई टकौ कोनीं।

जैर खावैला सो मरैला। ५३८९

जहर खायेगा वह मरेगा।

—जो व्यक्ति स्वयं अपना अहित करने पर आमादा हो, उसे कोई नहीं बचा सकता।

—जहर तो अपना काम करता ही है, चाहे कोई अजाने खाये या जानकर खाये—चाहे दुष्ट खाये और चाहे संत खाये!

—अनिष्टकारी वस्तु से अनिष्ट ही होता है।

पाठा : जैर खासी, जिकौ मरसी।

जैर तौ उतरचाड़ौ ई भलौ। ५३९०

जहर तो उतरा हुआ ही अच्छा है।

—अनिष्टकारी चीज से सभी बचाव की कामना करते हैं।

—क्रोध भी विष की नाईं शमित हो, उतना ही हितकारी है।

जैर रौ कांईं थोड़ौ! ५३९१

जहर का क्या थोड़ा!

—घातक वस्तु की मात्रा नहीं उसका दुष्प्रभाव ही असर करता है।

—दुष्ट व्यक्ति की संगत कम हो तब भी अमंगलकारी है।

जैर रौ कीड़ौ जैर में राजी। ५३९२

जहर का कीड़ा जहर में राजी।

—हर व्यक्ति अपने आचरण के मुताबिक वैसी ही संगत स्वत: खोज लेता है।

—हीन व्यक्ति हीन संगत में ही खुश रहता है।

जैर सूं जैर दटै। ५३९३

जहर से जहर दबता है।

—दुष्ट व्यक्ति दुष्ट से ही सीधा होता है।

—सज्जनता से दुष्टता का निराकरण नहीं हो सकता।

पाठा : जैर नै जैर मारै।

जैसमंद वाळी अमर टांकी है। ५३९४

जयसमंद वाली अमर टाँकी है।

—जयसमुद्र पर अमर टाँकी चलती ही रहती है।

—मेवाड़ की कृत्रिम झील जयसमंद पर पत्थरों की घड़ाई के लिए सदा टाँकी बजती ही रहती है।

—जिस व्यक्ति के लंबे-चौड़े कारोबार का डंका सर्वत्र बजता हो, उसके लिए...।

जो-झे

जो खोटू करे जो हाथ जोड़े।–भी.३८९ ५३९५

जो खोटा करे वह हाथ जोड़े।

—जो अपराधी होगा वही चिरौरी करेगा।

—जिसने अपराध ही नहीं किया, वह क्यों किसी से क्षमा याचना करे?

—जिस व्यक्ति के कर्म साफ, उसका दिल साफ।

—इसके विपरीत भी कि जिसका दिल साफ उसके कर्म साफ।

जोखौ व्है तौ नफा रै लोभ। ५३९६

जोखिम भी है तो लाभ की खातिर।

—कोई भी व्यक्ति घाटे की नीयत से व्यापार नहीं करता। लक्ष्य तो हमेशा लाभ के लिए ही रहता है। फिर भी घाटा हो जाय तो उसे सहन करना ही पड़ता है।

—हर काम के साथ अच्छाई-बुराई जुड़ी रहती है।

जोग कदै ई नीं टळै। ५३९७

योग कभी नहीं टलता।

—जो होना है, वह होकर ही रहता है।

—हर कार्य का अपना योग पूर्व-निर्धारित होता है।

जोग बडौ के भोग। ५३९८

योग बड़ा कि भोग।

संदर्भ-कथा : यों तो अमूमन सभी राजा सनकी और नीम-बावरे होते हैं । पर एक रजवाड़े के राजा की सनक का कोई पार नहीं था । राज्य में कोई भी संन्यासी आता तो मुस्तैद सैनिक उसे पकड़कर राजा के सामने पेश करते । राजा अपनी सनक में आँखें तरेर कर पूछता,' योग बड़ा कि भोग ?' साधु के मुँह से जो भी जवाब मिलता, राजा आगे पूछता कि सिद्‌ध करके बताओ । मायना समझाकर बताओ । साधु के निरुत्तर होने पर जल्लाद उसे घसीटकर काल-कोठरी में बंद कर देते । इस तरह उस राजा ने सैकड़ों साधुओं को बंदी बना दिया । एक बार एक पहुँचा हुआ महात्मा निर्भय अपनी मस्तानी चाल से शहर के परकोटे में घुसा । सैनिकों ने उसे पकड़ने की चेष्टा की तो उन्हें झिड़कते कहा,' मैंने सब सुन रखा है,इसलिए जानकर ही राजा से मिलने आया हूँ । मेरा हाथ पकड़ने की जरूरत नहीं ।'

दरबार में पहुँचते ही राजा ने उठकर उसका स्वागत किया । पास बैठते ही उसने अधीर होकर पूछा,'योग बड़ा कि भोग ?'

महात्मा ने अपने भगवे झब्बे पर निगाह डाली और कहा,' राजन,अपनी-अपनी जगह दोनों ही बड़े हैं ।' राजा ने हठ करते पूछा,' सिद्‌ध करके बताओ ।' तब साधु ने मुस्कराते कहा, 'यही बताने आया हूँ । पर आपको सिंहासन छोड़कर तीन महीने के लिऐ मेरे साथ,मुझ जैसा बाना पहिनकर चलना पड़ेगा ।' उसकी सनक का कोई पार नहीं था । बड़े राज कुँअर और दीवान के जिम्मे राज्य छोड़कर जैसा महात्मा ने कहा वैसा ही किया ।

दोनों ही विचरण करते-करते एक दूसरे राज्य में पहुँचे। दरबार लगा था। कई राजा-महाराजा राजकुँअरी के स्वयंवर में आये थे । राजकुँअरी सखियों के साथ हाथ में माला लिए एक-एक पाँत के सामने घूम रही थी । उसे किसी भी राजा-महाराजा व सेठ-साहूकार का गला स्वयंवर की माला के योग्य नहीं लगा । जब कि हर उम्मीदवार स्वयं को योग्यतम मान रहा था । अचानक राजकुँअरी की नजर भीड़ में खड़े एक योगी पर पड़ी । उसने उधर ही आगे बढ़कर उसके गले में माला पहिना दी । योगी पहिले तो चौंका । फिर अगले ही क्षण अपने को संयत करके उसने गले से माला निकालकर राजकुँअरी की ओर बढ़ाते कहा,'तुम से भारी भूल हुई है । मैं साधु के वेश में किसी भी राज्य का राजा नहीं हूँ । वाकई एक संन्यासी हूँ । मैं ऐसी भूल नहीं कर सकता ।'

राजकुँअरी ने मुस्कराते कहा,' महात्मन मैंने भूल से नहीं,दृढ़ संकल्प करके ही आपके गले में माला डाली है । अब दूसरा कोई उपाय नहीं । आप ही मेरे पति हैं । स्वीकार करें,चाहे

न करें।' एक अंतरंग सहेली ने कहा,' आप खाने-कमाने की चिंता नहीं करें, आधा राज्य दहेज में मिलेगा।'

महात्मा ने शांत स्वर में कहा, 'अपरिग्रह के राज्य में मेरे लिए कहीं कुछ भी अभाव नहीं है।' इतना कहकर वह माला वहीं फेंककर अपनी ही धुन में चल पड़ा। राजकुँअरी भी सखियों का संग छोड़कर महात्मा के पीछे चलने लगी।

उचित अवसर समझकर साधु ने इशारा किया तो सनकी राजा भी उसके साथ राजकुँअरी के पीछे रवाना हो गया। चलते-चलते साँझ घिर आई। फिर रात का सघन अँधियारा। पीछा करती तीन जोड़ी आँखें देखती रहीं और सबसे आगे चलने वाला योगिराज जाने कहाँ अंतर्धान हो गया कि कोई सुराग तक नहीं लगा। राजा और साधु ने राजकुँअरी को अपने राज्य में लौटने के लिए खूब समझाया पर वह टस-से-मस नहीं हुई। उसने दृढ़ता के साथ कहा, 'चाहें तो आप भी मेरा साथ छोड़ सकते हैं, पर मैं लौटकर नहीं जाऊँगी। जब तक योगीराज न मिलें मैं उनका पीछा करती रहूँगी। देखती हूँ वे कब तक छिपे रहेंगे।'

घने जंगल में कहीं भी राह नहीं मिली तो वे तीनों एक सघन पेड़ के नीचे बैठ गये। कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। उस पेड़ पर चिड़िया का निवास था। घोंसले में चार जीव थे—चिड़ा, चिड़िया और दो बच्चे। अचानक चिड़िया बोली, 'आज अपने घर तीन मेहमान आये हैं। तुम्हारे रहते क्या इसी तरह ठिठुरते रहेंगे?' 'क्यों ठिठुरते रहेंगे?' पति ने उत्साह के स्वर में कहा, 'मैं सोच ही रहा था कि तुमने मेरे मुँह की बात छीन ली। अब उड़ता हूँ, अतिथियों के लिए कुछ भी करना पड़े, करूँगा। तू बच्चों का खयाल रखना।'

तत्पश्चात् एक जलती लकड़ी टप से अतिथियों के बीच पड़ी। फिर तो साधु ने झटपट सूखी टहनियाँ इकट्ठी कीं और धूनी जगा ली। राजा को ऐसा लगा कि जैसे कोई नया राज्य मिल गया हो। राजकुँअरी के भी जी-में-जी आया। पर घोंसले के प्राणियों की चिंता का कोई पार नहीं था। वे मेहमानों के लिए करें तो क्या करें? अचानक चिड़े ने कहा,' ये तीनों ही सवेरे से भूखे हैं। अतिथियों के लिए मरना भी जीवन से बेहतर है। मैं तो अब चला, तू बच्चों को पालपोस कर बड़ा कर लेना।' यह कहकर घोंसले का मालिक तो जलती धूनी में पड़कर पूरा सिक गया। दूसरे हीं क्षण चिड़िया बोली, 'अतिथियों की चिंता तो मुझे होनी चाहिए और तुम बीच ही में टपक पड़े।' बाप के बाद माँ भी धूनी में जल मरी। तब बड़े बच्चे ने कहा, 'अतिथि तो तीन हैं। दो से क्योंकर भूख मिटेगी।' धूनी में पड़ते-पड़ते उसने अपनी बात पूरी की।

अब छोटे के लिए सब्र करना मुश्किल था। उसने धूनी में गिरते-गिरते कहा,' सबसे छोटा हुआ तो क्या? माँ-बाप की सीख मुताबिक क्या मैं अपनी जिम्मेवारी से पीछे हटूँगा?' और वह भी जल्दी सिकने की खातिर धूनी में अपनी पाँखें फड़फड़ाने लगा।

सूर्य की पहली किरण उस अद्‌वितीय महायज्ञ की साक्षी होने का लोभ संवरण नहीं कर सकी। सघन पेड़ों के बीच से वह धूनी पर ि;लमलान लगी।

सहसा साधु को चेत हुआ। हड़बड़ाकर उठ बैठा। राजा की ओर देखकर बोला,' क्यों, अब तो मुझे जाने की इजाजत है? मुझे कुछ भी सिद्‌ध नहीं करना पड़ा। अपने-आप ही सिद्‌ध हो गया। बेचारे साधुओं को अब तो मुक्त कर दीजिएगा।'

' वह तो कर ही दूँगा। योगीराज तो राज के ऐश्वर्य का मोह छोड़कर अंतर्धान हो गये। राजकुँअरी चाहे तो मैं अपने बड़े राजकुँअर से इसका ब्याह कर दूँगा।'

र.जकुँअरी ने परिहास के आशय से मुस्कराते कहा,' राजकुँअरों की चाह होती तो मैं योगीराज के गले में स्वयंवर की माला क्यों पहिनाती? जिस दिन मैं स्वयं को खोज लूँगी, उसी क्षण उन्हें भी पालूँगी।'

योग एक साधना है। भोग एक प्राकृतिक अनिवार्यता है। उस पर नियंत्रण रखना आसान नहीं है। भोग एक पाशविक क्रिया है। योग एक सात्विक संयमित क्रिया है। मनुष्य के साथ आदि-काल से यह समस्या जुड़ी है और अनंत काल तक जुड़ी रहेगी कि वह इंद्रियों को वश में रखने की साधना करे या उन्हें भोग के लिए स्वच्छंद छोड़ दे। समाज में रहने के कारण मनुष्य के लिए समन्वय का रास्ता ही श्रेयस्कर है।

—अपने-अपने स्तर पर दोनों ही श्रेष्ठ हैं।

जोगमाया रै चढ़योड़ा बकरा री गळाई क्यूं धूजै? ५३९९

जगदंबा के लिए चढ़े बकरे की नाईं क्यों धूज रहा है?

—ऐसी लोक मान्यता है कि बलि के बकरे को जब देवी स्वीकार कर लेती है, तब वह काँपने लगता है। तभी उसकी बलि दी जाती है, वरना उसे छोड़कर दूसरे बकरे को लाना पड़ता है।

—जो व्यक्ति अकारण ही डर के मारे सहम जाय, उसके लिए।

जोग हठ, राज हठ, तिरिया हठ अर बाळ हठ कद लुळै? ५४००

योग हठ, राज हठ, त्रिया हठ और बाल हठ कब झुकते हैं?

—योगी, राजा, त्रिया और बालक—ये चारों अपनी-अपनी जगह हठ के लिए विख्यात हैं। योगी को अपने योग का अहंकार होता है, राजा को सत्ता या सिंहासन का अहंकार होता है। औरत को अपने रूप-यौवन का अहंकार होता है। और बच्चा अपनी नासमझी के कारण किसी भी नैतिक या सामाजिक दायित्व से मुक्त होता है। स्वच्छंद होता है। बच्चे का अज्ञान ही उसकी अप्रत्यक्ष ताकत है। इसलिए वह आसानी से अपनी जिद नहीं छोड़ता।

जोगी किणरा मिंत ! ५४०१

योगी किसके मित्र !

—साधु, संन्यासी या योगी एक ठौर बँधकर नहीं रहते, सदैव विचरण करते हैं, इसलिए इनकी कोई सामाजिक जिम्मेवारी नहीं होती। कोई भी सामाजिक बंधन इन्हें मान्य नहीं होता, इसलिये साहचर्य के अभाव में इन्हें किसी से भी आत्मीयता नहीं होती। किसी के प्रति अनुराग की भावना नहीं होती।

—वैरागियों पर अप्रत्यक्ष व्यंग्य।

जोगी जागै जणा ई मांगै। ५४०२

योगी जब जागे तभी माँगे।

—संन्यासी या योगी का जीवन-यापन भिक्षा पर हीं निर्भर करता है। उसके पास किसी तरह की संपत्ति या परंपरागत जायदाद नहीं होती। उसकी बपौती केवल भिक्षा है। इसलिए जब भी इच्छा हो, समय-असमय हो वह याचना करने लगता है। अभाव के कारण उसके मन में माँगने की ही रट लगी रहती है।

—व्यसनी या नशेबाज पर कटाक्ष कि उसकी प्रवृत्ति हमेशा उसी ओर लगी रहती है।

—कामुक स्त्री या पुरुष पर भी कटाक्ष कि उनके मन में काम-वासना की लगन ही लगी रहती है।

पाठा : बाबौ जागै जणा ई मांगै।

जोगी जुगत जांणै नहीं, गाभा रंगियां कांई होय ! ५४०३

योगी युक्ति जाने नहीं, बसन रंगने से क्या हो !

—योग की वांछित साधना के पश्चात् ही कोई योगी कहलाता है। केवल भगवा बाना धारण करने से संन्यासी नहीं हो जाता।

—कोई भी व्यक्ति बाहरी तामझाम से बड़ा नहीं होता, भीतरी गुणों से बड़ा होता है।

—पाखंडी व्यक्तियों पर कटाक्ष।

जोगी-जोगी लड़ै जद तूंबा फूटै। ५४०४

जोगी-जोगी लड़ें तब तूँबे फूटते हैं।

—साधु-संन्यासियों के पास तूँबे-तूँबियों के अलावा कोई अन्य हथियार तो होता नहीं। यदि किसी कारण उन में झगड़ा होता है तो तूँबों से लड़ते हैं। अतएव उन्हीं का चकनाचूर होता है।

—अभावग्रस्त व्यक्ति पर कटाक्ष।

जोगीड़ा तौ रमग्या, आसण उडै भभूत। ५४०५

जोगी तो रम गये, आसन उड़े भभूत।

—साधु-संन्यासी तो विचरण करते रहते हैं। धूनी ठंडी हुई और आगे प्रस्थान। पीछे राख उड़ती रहती है।

—योग्य व्यक्तियों की अयोग्य संतान पर कटाक्ष।

—उत्सव के पश्चात् बिखरे कूड़े-कबाड़ पर व्यंग्य।

जोगीड़ा नाचै जबरौ के नाचतां-नाचतां ई पींड्यां पतळी पड़ी। ५४०६

जोगी तू नाचता तो गजब है कि नाचते-नाचते ही पिंडलियाँ पतली हुई हैं।

—जो व्यक्ति जिस काम में पारंगत होता है, उसकी प्रशंसा करना बेमानी है।

—जिसका जो पेशा है, उस में वह सहज रूप से प्रवीण हो जाता है। उसके कौशल की दाद देना व्यर्थ है।

—निरंतर अभ्यास से सफलता मिल ही जाती है, इस में श्रेय जैसा कोई बात नहीं।

जोगी ढोली हीर कमांणा, खपरां-खपरां वांटक्यूं।—भी. २७७ ५४०७

जोगी और ढोली साझे में खेती करें, खप्पर-खप्पर अनाज भरें।

—साधु और ढोली माँग-मूँगकर ही जीवन-यापन करते हैं। और खेती मेहनत और पसीना माँगती है। इसलिए ये दोनों ही खेती के योग्य नहीं माने जाते। दुर्योग से साझे में खेती भी कर लें तो बीज जितनी भी फसल नहीं हो सकती।

—अयोग्य व्यक्तियों की सहकारिता पर कटाक्ष।

—सफलता कौशल पर निर्भर करती है—हाथों की गणना पर नहीं।

जोगी नै वाल्हा तूंबड़ा, भोगी नै वाल्हा भोग। ५४०८

जोगी को प्यारे तूँबड़े, भोगी को प्यारा भोग।

—अपनी-अपनी रुचि, अपनी-अपनी मान्यता और अपने-अपने संस्कारों के आधार पर ही राग-विराग उत्पन्न होता है। पसंदगी और नापसंदगी का चयन होता है।

—जिसने कुछ जाना-देखा ही नहीं, वह उसकी चाह कैसे कर सकता है?

—अपनी-अपनी पसंद।

जोगी बधावै अर पातर घटावै। ५४०९

जोगी बधाये और वेश्या घटाये।

—जोगी अपनी उम्र बढ़ाकर बताता है और वेश्या घटाकर।

—जिसे जो अनुकूल हो, वह वैसा ही समाधान बिठा लेता है।

—लाभ-हानि या भले-बुरे की अवधारणा विभिन्न होती है।

जोगी होयर जोवियौ, जोग तणौ जंजाळ। ५४१०

जोगी बनकर जाना, जोग हुआ जंजाल।

—किसी भी जीवन की एकरसता अंततः घुटन या ऊब का रूप धारण कर लेती है।

—मनुष्य का जीवन ही अंतरविरोधों से परिपूर्ण है, किसी भी स्थिति में वह सदा संतुष्ट या प्रसन्न नहीं रह सकता।

जोजरा घड़ा री बोली ई जोजरी। ५४११

जर्जर घड़े की आवाज भी जर्जर।

—जिसके जैसे संस्कार होते हैं, वह वैसा भी आचरण करता है।

—अंततः भीतर के गुण ही बाहर प्रकट होते हैं।

—गँवार व्यक्ति शालीन व्यवहार नहीं कर सकता।

—कमजोर व्यक्ति की आवाज में दम नहीं होता।

जोड़-जोड़ मर जासी, माल जंवाईड़ा खासी। ५४१२

जोड़-जोड़ मर जाएँगे, माल जमाई खाएँगे।

—संपत्ति तभी सुखप्रद है जब तक उसका सदुपयोग होता रहे। वरना दूसरे ही उसका आनंद उठाते हैं।

—कंजूस की संचय वृत्ति पर कटाक्ष जो भरपेट खाना भी न खाये। और आगे वालों के लिए कलह का आधार खड़ा कर जाये।

—कैसा भी पराक्रमी मरने पर एक कौड़ी भी साथ नहीं ले जा सकता, सब कुछ यहीं छोड़ जाता है। पीछे बचे हुए वारिस मौज उड़ाते हैं।

जोड़ा नै खांडै जम करै के ईस्वर। ५४१३

जोड़ी को खंडित यम करता है कि ईश्वर।

—यम तो ईश्वर की आज्ञा का पालन करता है। और ईश्वर व्यक्तियों के कर्मानुसार निर्णय लेता है। इसलिए भला-बुरा जो कुछ भी घटित होता है वह भाग्य या कर्म के अधीन है।

—होनी अपना रास्ता स्वयं बनाती है, उसका संचालन अन्य किसी के हाथ में नहीं। सिवाय यमराज और ईश्वर के।

जोड़ायत मुई नै जोड़ौ फाट्यौ। ५४१४

जोड़ायत मरी और जोड़ी फटी।

—इस कहावत के दो अर्थ हैं। एक तो सीधा-सादा यह कि अद्‌र्धांगिनी के मरने पर जीने में कोई सार नहीं। घर बिखर जाता है।

—दूसरा छिपा अर्थ यह है कि पति-पत्नी की जोड़ी तो होती ही है, पर जूतियों की भी जोड़ी कहलाती है। इधर तो पत्नी का बिछुड़ना हुआ और उधर जूतियों की जोड़ी भी जीर्ण-क्षीर्ण हो गई। जूतियों की तरह पत्नी भी नई आ जाएगी। सामंती मान्यता के अनुसार पत्नी को पाँव की जूती ही समझा जाता रहा है। फटी तो बदल ली।

जोड़ै सो तोड़ै । ५४१५

जोड़े वही तोड़े ।

—जो अदीठ शक्ति या ईश्वर दो विभिन्न इकाइयों को मिलाकर जोड़ता है, वही समय आने पर जुड़ी हुई इकाइयों को तोड़ता भी है ।

—मिलन और विछोह सब सर्व शक्तिमान के हाथ है । बाकी सब निमित्त मात्र हैं ।

जोणा वरे ने जोणा वळे ।– भी. २७८ ५४१६

जो खर्च करते हैं, वे कमाकर भी लाते हैं ।

—जिस परिवार में सभी कमाई करने वाले होते हैं, वहाँ अधिक व्यक्ति हों तब भी आर्थिक स्थिति बिगड़ती नहीं ।

—ज्यादा हाथ कमाने वाले हों तो ज्यादा मुँह भी भरे जा सकते हैं ।

जोत जागी, भरांत भागी ।– भी. ३९० ५४१७

जोत जगी, अँधियारी भगी ।

—प्रकाश होने पर ही अंधकार विलुप्त होता है ।

—ज्ञान का उजाला होने पर ही अज्ञान की कालिख मिटती है ।

जो दूखे जणाये खबर, बीजो हूं जाणे ।– भी. ३९१ ५४१८

जिसे पीड़ा होती है, वही उसका अनुभव करता है, दूसरे उसे महसूस नहीं कर सकते ।

—अपना अनुभव ही सर्वोपरि प्रमाण है, बाकी सब अनुमान झूठे हैं ।

—भुक्तभोगी ही अपनी व्यथा समझता है, बाकी तो सब तमाशबीन हैं ।

आ. दे. क. सं. ६६२९

जोधा भाज सकै तौ भाज, थारौ रिड़मल मास्यौ जाय । ५४१९

जोधा भाग सके तो भाग, तेरा रिड़मल मारा जाय ।

ऐतिहासिक प्रसंग : राव रिड़मल राव जोधा के पिता थे । राव रिड़मल ने मेवाड़ के बूढ़े महाराणा को अपनी युवा बेटी ब्याही । महाराणा के दिवंगत होने पर राव रिड़मल बेटी की सहायता हेतु मेवाड़ गये । उनकी नियत में कुछ फर्क पड़ गया । वे मेवाड़ और मारवाड़ को मिलाकर एक

करना चाहते थे। मेवाड़ के राजघराने में इस बात की भनक पड़ी तो रिड़मलजी को मारने की मंत्रणा की गई। उन्हें पलंग से बाँधकर मारना चाहा। इस समय राव जोधा भी पिता के साथ मेवाड़ में ही थे। तब एक ढाढ़ी ने सारंगी की टेर में राव जोधा को यह सूचना दी कि यहाँ से भागना हो तो भाग जाओ, तुम्हारे पिता राव रिड़मल मारे जा रहे हैं। तब जोधाजी भागकर मारवाड़ में आये। मंडोर के बाद जोधपुर की स्थापना की।

—संकट की वेला किसी को भी सावधान करने के लिए यह उक्ति काम में आती है।

जो नर जिसड़ा होय, विसड़ी पाळै प्रीत। ५४२०

जो नर जैसा होय, वैसी निभाये प्रीत।

—जिसका जैसा व्यक्तित्व होता है, उसीके अनुसार वह संबंध निबाहता है।

—प्रेम की मर्यादा रखना आसान नहीं है। प्रेम निस्वार्थ भावना और त्याग की अपेक्षा रखता है, जो हर व्यक्ति के लिए संभव नहीं।

जोबन अर जमारौ जावणहार। ५४२१

जोबन और जीवन जावनहार।

—यौवन और जीवन अंततः व्यतीत हो जाता है।

—उम्र, रूप और यौवन स्थायी नहीं होते, इसलिए इन पर गर्व करना व्यर्थ है।

—नहीं रहने वाली चीज के लिए चिंता करना बेकार है।

पाठा : जोबन जमारौ जावतां जेज नीं लागै।

जोबन दिन भाळै नीं रात। ५४२२

जोबन न दिन देखे न रात।

—यौवन के मद में मनुष्य को समय-असमय का ध्यान नहीं रहता। और न उचित-अनुचित का ही खयाल रहता है।

—यौवन अंधा होता है उसे न तो सामाजिक नैतिकता का ध्यान रहता है और न वर्जनाओं का। उसे न तो दिन का उजाला नजर आता है और न रात का अँधियारा।

जोबनिया थूं भल जाजै, मत जाजै थूं मथवाय। ५४२३

जोबन तू भले ही जाय, पर तू मत जाना खुमारी।

—यौवन ढल जाय तो कोई बात नहीं। पर उसकी खुमारी नहीं उतरनी चाहिए।

—सत्ता भले ही छिन जाय, पर हेकड़ी कायम रहनी चाहिए।

—व्यर्थ का आडंबर दिखलाने वालों पर कटाक्ष।

जो बोलै वौ छांग में जावै। ५४२४

जो बोले वही गाएँ चराने जाय।

छांग = गायों-भैंसियों का झुंड जो जंगल में चरने जाता है।

संदर्भ: संयुक्त परिवार के सबसे छोटे सदस्य ने बताया कि आज गायों के बछड़े घर पर ही रह गये तब माँ ने उसे ही डपटकर बछड़े चराने के लिए भेज दिया

—समस्या का समाधान बताने वाले पर ही जब उसे संपन्न करने का भार वहन करना पड़े तब।

—सुझाव देने वाले पर ही जब समाधान की जिम्मेवारी आ पड़े तब।

जो बोलै सो कूंटौ खोलै। ५४२५

जो बोले सो ही कुंडी खोले।

मि.क.सं.५४२४

जो भरोसौ ई नीं करै वौ धोखौ क्यूं खावै? ५४२६

जो भरोसा ही न करे वह धोखा क्यों खाये?

—किसी पर विश्वास करने से ही धोखा होता है। पर जो व्यक्ति किसी पर भरोसा ही न करे, तब धोखा होने का प्रश्न ही नहीं उठता।

—जो व्यक्ति काम ही नहीं करता, उससे गलती होने की संभावना ही नहीं बनती।

—अविश्वास करने वाले व्यक्ति के लिए।

जोयनै चालै सो कद ठोकर खावै! ५४२७

देखकर चले वह कब ठोकर खाय!

—पाँवों की ओर देखकर न चलने वाला ही अमूमन ठोकर खाता है। और देखकर चलने वाला बच जाता है।

—आगा-पीछा सोचे बिना काम करने से कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं, इसलिए दूरदर्शिता जरूरी है।

—जीवन में सतर्कता अनिवार्य है।

जोयां बाबौजी री झोळी में जेवड़ा लाधै। ५४२८

तलाश करने पर साधु-बाबा की झोली में रस्सियाँ मिलती हैं।

—साधु-महात्मा की झोली में प्रत्याशा के रूप में शंख, माला या अध्यात्मिक ग्रंथ मिलने चाहिएँ, पर उनकी बजाय रस्सियाँ, चाकू या हथोड़ा मिले तो आशंका पैदा होती ही है।

—जिस व्यक्ति का बाना कुछ और हो तथा आचरण कुछ और हो तब।

जोरू जमीं जोर री, जोर हट्यां और री। ५४२९

जोरू जमीन जोर की, जोर हटे और की।

—शक्ति के अभाव में स्त्री और जमीन पर दूसरे लोग अधिकार जमा लेते हैं।

—अपनी ताकत से ही अपनी सुरक्षा संभव है।

पाठा : जर जमीं जोर री, जोर हट्यां और री।

जोरू संभाळै गांठ, मां संभाळै आंत। ५४३०

जोरू सँभाले गाँठ, माँ सँभाले आँत।

—जब कोई व्यक्ति दिसावर से कमाकर लौटता है तो पत्नी सबसे पहले उसकी गठरी सँभालती है कि वह कितनी कमाई करके आया और उसके लिए क्या-क्या चीजें लाया। पर माँ उसकी सूरत देखती है कि उसका स्वास्थ्य कैसा रहा ! उसने अच्छी तरह खाया-पीया कि नहीं।

—पत्नी का रिश्ता स्वार्थ का है, माँ का रिश्ता अँतड़ियों का है। खून का है। अंग्रेजी की कहावत भी है कि पानी की अपेक्षा खून गाढ़ा होता है।

जोसी पाटै नै वेद खाटै। ५४३१

जोशी पाट पर और वैद्य खाट पर।

—जोशी यानी पंडित पाट या वेदी पर बिराजे हुए यजमानों की खातिर मंगल-कामना करता है और वैद्य खाट में पड़े रोगी का उपचार करता है।

—लोगों के लिए भविष्यवाणी करने वाले ज्योतिषी को अपनी कुछ खबर ही नहीं होती कि वह कब पाट पर बैठा-बैठा ही मर जाय। और वैद्य की भी यही परिणति है कि वह दूसरे रोगियों का उपचार करते-करते स्वयं न जाने किसी बीमारी से खाट पर ही फोत खेल जाय।

—इस कहावत में मानव-जीवन की विडंबना लक्षित होती है।

जोसी रै घर-बार, पोथ्यां री कांई तुठार। ५४३२

जोशी के घर-बार, पोथी-पन्नों का क्या तुठार।

तुठार = कमी।

—दूसरों के भविष्य का निर्देशन करने वाले जोशी के घर पर सर्वत्र पोथी-पन्ने ही बिखरे रहते हैं। उसे अपने वर्तमान की कोई खबर नहीं रहती।

—जिसका जो पेशा होता है, उसके घर में वैसी ही सामग्री मिलती है।

जोसी, साध अर पांडियौ, अै तीनूं ई फोगाटेअ। ५४३३

जोशी, साधु और पंडा, ये तीनों ही मुफ्तखोर मुस्तंडा।

—जोशी, साधु और पंडों की जीविका में ही दान-दक्षिणा अनिवार्य है।

—परंपरागत मुफ्तखोरों के प्रति व्यंग्य।

जोहर जितरा जाप। ५४३४

जौहर जितने जाप।

जौहर = सामंतकालीन युद्ध की एक प्रथा। जब गढ़ में घिरे राजपूत सैनिकों को यह एहसास हो जाता कि शत्रु गढ़ में प्रवेश कर जाएगा तब वे तो केसरिया बाना पहनकर मरने के लिए आक्रांता से भिड़ जाते थे और उनकी स्त्रियाँ गढ़ में चिता बनाकर जीवित ही आग की लपटों में जल जाती थीं ताकि शत्रु उन्हें नहीं पा सके।

—सामूहिक रूप से एक साथ जलने की क्रिया तो समान ही दिखती थी, पर जलने वाली स्त्री का व्यक्तित्व सर्वथा भिन्न होता था, इस कारण उसकी सहनशक्ति, उसकी शारीरिक पीड़ा के अनुसार ही इष्ट देवता का सुमिरन या जाप करती थी।

—जैसी व्यथा वैसा सुमिरन।

जोहरी नै जोहरी परखै। ५४३५

जौहरी को जौहरी ही परखता है।

—जौहरी की चालाकियों को जौहरी ही प्रहिचान सकता है, साधारण आदमी नहीं।

—बड़े व्यक्तियों के प्रपंच को बड़े लोग ही समझ सकते हैं।

—तथाकथित श्रीमंतों पर कटाक्ष।

जो हीयौ हुवै हाथ, तौ जावौ ठींगां रै साथ। ५४३६

अपना मन रहे हाथ तो जाओ ठगों के साथ।

—अपना मन अपने वश में रहे तो वह कैसी भी संगति में अछूता रह सकता है।

—मन विचलित न हो तो उसका कोई कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता।

—इस कहावत में मन की दृढ़ता परिलक्षित है। यह कहावत औरतों पर ही ज्यादा चरितार्थ होती है।

दे.क.सं.५३३२

ज्यांनै राखै सांईंयां मार सकै ना कोय। ५४३७

जिसका रक्षक साँई, कोई मार सके नाहीं।

—बचाने वाले ईश्वर के हाथ इतने लंबे हैं कि वह कैसी भी स्थिति में जिसे चाहे बचा सकता है।

—मरना-जीना सब ईश्वर की इच्छा पर निर्भर करता है।

ज्यां रां पड़्या सुभाव जासी जीव सूं। ५४३८
आक न मीठौ होय सींचौ गुळ घीव सूं॥

जिसका जैसा स्वभाव बन जाता है, वह मरने से पहिले नहीं छूटता। जिस तरह आक के पौधे को गुड़-घी से सींचने पर भी वह मीठा नहीं हो सकता।

—आदत, व्यसन और कुबान की प्रबलता प्रकृति-प्रदत्त स्वभाव से कम शक्तिशाली नहीं होती।

पाठा : नीम न मीठौ होय सींचौ गुळ-घीव सूं।

ज्यांरा बगत पांवणा, वांरा सै कांम सुहावणा। ५४३९

जिनका वक्त हो पाहुन, उसका हर काम मन-भावन।

—समय अनुकूल हो तो कैसा भी जटिल काम चुटकियों में संपन्न होता है। और प्रतिकूल हो तो सरल काम भी दुश्वार हो जाता है।

—समय या बखत से बड़ा कोई हिमायती नहीं और समय से बड़ा कोई बैरी नहीं।

—तुलसी बाबा भी इस तथ्य की पुरजोर ताईद कर गये हैं कि तुलसी नर का क्या बड़ा समय बड़ा बलवान। काबा लूटी गोपिका वही अरजुन वही बाण॥

ज्यांरा मरग्या पातसा, रुळता फिरै वजीर। ५४४०

जिनके मर गये बादशाह, भटकत फिरें वजीर।

—जिस प्रकार बैल के मरने पर उसकी देह से चिपटे चींचड़े मर जाते हैं, उसी प्रकार राजा के मरने पर या शक्तिहीन होने पर उसके आश्रित व्यक्ति बेकार हो जाते हैं।

—बड़े व्यक्तियों का मुखापेक्षी कभी अपने बूते पर खड़ा नहीं हो सकता।

दे.क.सं.१३१४,५११७

ज्यांरी खावां बाजरी, वांरी बजावां हाजरी। ५४४१

जिनकी खाएँ बाजरी, उनकी बजाएँ हाजरी।

—जिससे स्वार्थ-सिद्धि होती है, उसके आगे-पीछे सब फिरते हैं। कुछ-न-कुछ सेवा करने का बहाना ढूँढ़ते हैं।

—आश्रयदाता के आदेश की कोई अवहेलना नहीं कर सकता।

ज्यांरै भांणै घी घणौ, वांरी ऊंडी धस्स। ५४४२

जिनके बासन घी बहुतेरा, उनकी पहुँच चौफेरा।

—जो व्यक्ति खिलाने-पिलाने में कुशल होता है, उसकी पहुँच के सब द्वार खुल जाते हैं।

—जिस उदार व्यक्ति का हाथ खुला रहता है, उसे कहीं भी रुकावट नहीं होती।

ज्याज में बैठसी वौ तौ समदर पूजसी। ५४४३

जहाज में बैठेगा वह समंदर को पूजेगा।

—जहाज के यात्रियों की खातिर समुद्र के अलावा अन्य कोई ठौर-ठिकाना नहीं। संकट की वेला आँधी-तूफान में उसकी आराधना करनी ही पड़ती है। उसके विकराल रूप के सामने आदमी बिल्कुल बौना है।

—आश्रयदाता की चिरौरी करना नितांत स्वाभाविक है।

—दुष्ट के फंदे में फँस जाने पर उसके तलवे चाटने ही पड़ते हैं।

ज्यादा लाड सूं टाबर इतरै। ५४४४

ज्यादा लाड़ से बच्चे बिगड़ते हैं।

—बच्चों को समझाना सबसे अधिक कठिन है। ज्यादा नियंत्रण रखने पर उनका व्यक्तित्व कुंठित हो जाता है। इसलिए उन्हें बरतने में बड़ा संतुलन रखना पड़ता है। प्रारंभिक प्रशिक्षण से ही उन्हें मार्ग-दर्शन मिलता है।

पाठा: **ज्यादा लाड सूं टींगर बिगड़ै।**

ज्यूं आयौ, त्यूं ई गियौ। ५४४५

ज्यों आया, त्यों ही गया।

संदर्भ-कथा: एक व्यक्ति कहीं से ऊँट चुराकर लाया। तीन-चार दिन बाद उसके यहाँ से भी वह ऊँट चोरी चला गया। पड़ोसी ने पूछा कि ऊँट कितने में बेचा? कुछ नफा रहा कि नहीं? तब उसने झेंप मिटाने के लिए मुस्कराते कहा, 'नफा-नुकसान कुछ भी नहीं। जितने में लाया, उतने में ही बेच दिया। वह तो आया ज्यों ही गया।'

—चोरी के माल में बरकत नहीं होती।

ज्यूं-ज्यूं आवै रांगै, पूणी तीन मांगै। ५४४६

ज्यों-ज्यों आये राँगे, पौने तीन माँगे।

राँगे आना = सही रास्ते पर आना। परेशानी में विवेक से काम लेना।

प्रसंग: मेला शुरू होने पर व्यापारी हर वस्तु का ऊँचा भाव बताता है, तब बिक्री आसानी से होती नहीं। मेला समाप्त होते-होते कीमतें घटने लगतीं हैं। व्यापारी सवाये मूल्य की बजाय पौने मूल्य पर बेचने को तैयार हो जाते हैं। तब उनकी मजबूरी को देखकर यह कहावत कही जाती है।

—मजबूरी में समझौता करने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

ज्यूं-ज्यूं कहीयौ रावत लूंणौ, त्यूं-त्यूं लेड घणेरौ रूनौ। ५४४७

रावत लूणसिंह ने ज्यों-ज्यों समझाया, त्यों-त्यों बनिया अधिक चिल्लाया।

रावत = राजपूतों की एक जाति-विशेष जो रास, बाबरा, ब्यावर, आसिंद, देवगढ़, मदारिया इत्यादि इलाकों तक फैली हुई है। अंग्रेजी राज्य के पूर्व वे राहगीरों को लूट लेते थे। लूंणौ = रावत जाति का एक विशिष्ट लुटेरा—लूणसिंह, जिसने राहगीर बनिये को धीरज बँधाने की कोशिश की, पर वह तो रावत जाति का नाम सुनते ही चिल्लाने लगा।

—खौफनाक लोगों का आश्वासन कुछ भी माने नहीं रखता।

—भला दुष्ट व्यक्तियों का एतबार क्योंकर हो!

ज्यूं-ज्यूं बडौ व्है, त्यूं-त्यूं अकल माथै भाटा पड़ै। ५४४८

ज्यों-ज्यों बड़ा होता है, त्यों-त्यों अक्ल पर पत्थर पड़ते हैं।

—जिस व्यक्ति की उम्र तो बढ़ती रहे और वह अनुभव से कुछ न सीखे उसके लिए।

—जो ठोट व्यक्ति अनुभव का लाभ न उठाये, उस पर कटाक्ष।

ज्यूं-ज्यूं भीजै कांबळी, त्यूं-त्यूं भारी होय। ५४४९

ज्यों-ज्यों भीगे कामरी, त्यों-त्यों भारी होय।

—संपत्ति की बढ़ोतरी के साथ-साथ लालसा, अभिमान और अहंकार का वजन भी बढ़ता रहता है।

—किसी मसले या विवाद को अधिक बढ़ाने से वह अधिक बोझिल और कष्टदायक होने लगता है।

ज्यूं रूणेचौ त्यूं ई पिंडतजी री ढांणी। ५४५०

जैसा रूणेचा, वैसी पंडितजी की ढाणी।

रूणेचौ = प्रसिद्ध सिद्ध पुरुष रामदेव तँवर का निवास स्थान, जहाँ आज भी जबरदस्त मेला लगता है। हजारों यात्री दर्शनार्थ आते हैं। हरजी भाटी रामदेवजी का मौसेरा भाई और उनका परम श्रद्धालु था। सबसे पहिला पर्चा उन्होंने हरजी भाटी को ही दिया। हरजी भाटी के वंशजों

को पंडितजी कहते हैं। पंडितजी की ढाणी में भी वैसा ही मेला लगता है। रूणेचा और पंडितजी की ढाणी दोनों ही पूज्य धाम हैं।

ढांणी = गाँव से दूर बसी छोटी बस्ती को ढांणी कहते हैं।

—दो बड़े व्यक्ति समान रूप से प्रसिद्ध हों तब कहा जाता है कि दोनों एक ही हैं, परस्पर कोई अंतर नहीं। मसलन जैसे महात्मा गाँधी, वैसे ही विनोबा भावे।

झखत विद्या, पचत खेती। ५४५१

घोखने से विद्या और खटने से खेती।

—बार-बार याद करने से विद्या कंठस्थ होती है और रात-दिन परिश्रम करने या खटने पर खेती पकती है। मामूली गफलत होने पर सफलता असंदिग्ध है।

—निरंतर अभ्यास और अथक मेहनत ही सफलता की कुंजी है।

मि.क.सं.३१४४

झगड़ा झागडुवां रा। ५४५२

झगड़ा झगड़ने वालों का।

—जो व्यक्ति जिस काम में माहिर होता है, वही उसके लिए उपयुक्त है।

—अकुशल व्यक्ति को काम सौंपने पर उस में सफलता नहीं मिलती।

पाठा : झगड़ौ झागडुवां मूंघौ। मूंघौ = महँगा।

झगड़ा भरी बात ने राखणी।– भी.३९२ ५४५३

झगड़े की बात कायम नहीं रखनी चाहिए।

—जो भी नतीजा हो, किसी भी बात को संपन्न कर लेना चाहिए।

—कोई भी काम या बात अधर-झूल में लटकानी नहीं चाहिए।

झगड़ा रौ मूळ हांसी नै रोग रौ मूळ धांसी। ५४५४

झगड़े का मूल हाँसी और रोग का मूल खाँसी।

पाठा : झगड़ा रौ घर हांसी नै रोग रौ घर धांसी।

दे.क.सं.१९१४

झगड़ै ई झगड़ै, थारौ कीणौ तौ जोय। ५४५५

झगड़ता ही जा रहा है, अपने अनाज की ओर तो देख।

—मनुष्य का स्वभाव है कि वह अपने दोष जानने की बजाय दूसरों के दोष ज्यादा देखता है। आज भी छुटपुट व्यापारी मुख्यतया मालिनें अनाज के बदले साग-सब्जियाँ बेचती हैं। जब कोई व्यक्ति कंकर और रेत मिले अपने अनाज को नजर-अंदाज करके बार-बार मालिन से अधिक सब्जी हथियाने की चेष्टा करे, तब।

—दूसरों के दोष निकालने के साथ-साथ अपने दोषों की तरफ भी ध्यान रखना जरूरी है।

झगड़ो अर हेत बधावै जित्तौ ई बधै। ५४५६

झगड़ा और प्यार बढ़ाये जितना ही बढ़ता है।

—झगड़े और प्रीत की शुरुआत होने पर उसका अंत उतना आसान नहीं होता। लेकिन झगड़े में तो फकत हानि-ही-हानि होती है इसलिए उसका अंत जितना जल्दी हो उतना ही अच्छा। इसके विपरीत प्रेम का बढ़ना तो एक उदात्त भावना है। कोई भी व्यक्ति किस ओर अग्रसर हो यह उसके विवेक पर निर्भर करता है कि वह किसे बढ़ाये और किसे घटाये।

पाठा : **झगड़ौ अर संभाळ तौ बधावै जित्ती ई बधै।**

संभाळ = भेंट, उपहार।

झगड़ौ थोड़ौ अर थापा-मूकी घणी। ५४५७

झगड़ा थोड़ा अर थप्पड़-घूँसे ज्यादा।

—झगड़े का मुद्दा मामूली हो और फसाद ज्यादा हो तब।

—निराधार तथ्य का हुल्लड़ अधिक हो तब।

झगड़ौ-रांझौ आपरी पुळ आयां लीजै। ५४५८

राड़-झगड़ा अपना मौका आने पर सलटाना चाहिए।

—हर अच्छी-बुरी बात का अपना अनुकूल समय होता है, उचित अवसर का लाभ उठाने से सफलता मिलती है।

—हर काम के लिए समय की सही पहिचान करना अनिवार्य है।

झट काढ़ी पट वाई । ५४५९

झट निकाली, पट चलाई ।

—तलवार झटपट म्यान से बाहर निकाली और तत्काल प्रहार ।

—किसी भी काम को अपेक्षित समय में ही संपन्न करना उचित है । ढील करना घातक है । कई अवरोध उत्पन्न होने की गुंजाइश रहती है ।

झड़ जठै ई खड़ । ५४६०

जहाँ झड़ी वहाँ घास ।

—हलकी-हलकी बरसात की झड़ी लगे, तब घास खूब पैदा होता है ।

—समय पर उचित साधन उपलब्ध हों तभी सफलता मिलती है ।

पाठा : **झड़ टाळ खड़ कठै** । झड़ी के बिना घास कहाँ ।

झड़पा मार्‌यां धन भेळौ कोनीं व्है । ५४६१

छीना-झपटी से धन इकट्ठा नहीं होता ।

—हर काम का एक शालीन या भद्र तरीका होता है । उसका उल्लंघन करने से सफलता की बजाय अव्यवस्था ही हाथ लगती है ।

—सीधी राह चलने की बजाय टेढ़ी राह चलने से व्यवधान ही उपस्थित होते हैं, मंजिल नहीं मिलती ।

झरड़ौ पाबू सूं ईं करड़ौ । ५४६२

झरड़ा पाबू से भी करड़ा ।

करड़ा = कठोर, पराक्रमी, बहादुर ।

ऐतिहासिक प्रसंग : पाबू राठौड़ की एक प्रसिद्ध प्रतिज्ञा-वीर के रूप में ख्याति है । ये धाँधल जी के पुत्र थे । बड़े भाई का नाम बूड़ाजी, जिनके पुत्र का नाम झरड़ा था । पेट चीर कर पैदा होने के कारण उसका नाम झरड़ा रखा गया । पाबूजी ने देवल चारणी को उसकी गाएँ बचाने का वचन दिया था । पाबू के बहनोई जींदराज ने जब देवल की गाएँ घेरकर ले जानी चाहीं तब पाबूजी को यह सूचना मिलने पर वे ब्याह का गठबंधन काटकर देवल की गाएँ वापस लाने के लिए बहनोई जींदराव से भिड़ गये । आखिर इसी झगड़े में वे खेत रहे । तत्पश्चात

भतीजे झरड़ा ने चाचा का बदला लिया, अपने फूफा जींदराव को मारकर। इसलिए यह ऐतिहासिक उक्ति बनी कि झरड़ा पाबू से अधिक बलिष्ठ था।

—कोई छोटा व्यक्ति बड़े व्यक्ति की तुलना में अधिक सफल हो तब!

झळकणै सूं सोनौ कोनीं व्है। ५४६३

चमकने वाली हर चीज सोना नहीं होती।

—ऊपरी आडंबर से किसी व्यक्ति की गुणवत्ता नहीं पहिचानी जाती, खरी पहिचान तो उसके असली गुणों से ही होती है।

—ऊपरी चमक-दमक से बहुधा गलतफहमी हो जाती है कि वह मूल्यवान भी है।

झांट-मांट झूंपड़ी तारागढ़ नांव। ५४६४

छोटी-मोटी झोंपड़ी, तारागढ़ नाम।

—जब कोई छोटा व्यक्ति बड़ी-बड़ी डींग हाँके तब।

—अच्छे नाम के विपरीत गुण होने पर।

—कोई व्यक्ति थोथा दिखावा करे तब।

झाझा दायां जापौ बिगाड़ै। ५४६५

ज्यादा दाइयाँ जापा बिगाड़ती हैं।

जापौ = प्रसव।

दे.क.सं.३८४१

झाझा लाज करै छिनाळ। ५४६६

ज्यादा लाज करे छिनाल।

—जिस व्यक्ति में गुणों का अभाव होता है, वही अधिक दिखावा करता है। जिस तरह चोर अत्यधिक भक्ति का प्रदर्शन करता है। अति भक्ति चोर लक्षणम्।

—भीतर की कमी को बाहरी दिखावे से जो व्यक्ति ढाँपने की चेष्टा करे।

झाझा हेत तूटण नै अर मोटी आंख फूटण नै। ५४६७

ज्यादा प्रेम टूटे और बड़ी आँख फूटे।

—गाढ़े प्रेम में मामूली त्रुटि भी ज्यादा अखरती है, इसलिए उस में दरार पड़ना स्वाभाविक है। आँख छोटी हो तो बचाव संभव है, पर बड़ी आँख में कहीं भी चोट लग सकती है।

—प्रगाढ़ प्रेम की प्रत्याशा भी गहरी होती है, पूर्ण न होने पर मोहभंग शीघ्र हो जाता है। बड़ी आँख में फूस या कण पड़ जाय तो उसके खराब होने की अधिक संभावना होती है।

झाड़ जैड़ा पाटिया नै ओळ जैड़ी औलाद। ५४६८

पेड़ जैसी पट्टियाँ और वंश जैसे वंशज।

—जैसा पेड़ होगा वैसी उसकी लकड़ी होगी और जैसे पुरुष होंगे वैसी ही उसकी औलाद होगी।

—अनुवांशिकता के लक्षण चरितार्थ होते ही हैं, उसके प्रभाव से बचना संभव नहीं।

झाड़ नीं व्है जठै अेरंड ई रूंख। ५४६९

झाड़ न हो वहाँ एरंड भी पेड़।

दे.क.सं.२०७,१३७७

झाड़ बिछाई कांबळी, रह्या निमांणै सोय। ५४७०

झाड़ बिछाई कामरी, निःशंक रहे सोय।

—पूँजी के नाम पर एक कंबल थी, झाड़-बिछाकर निर्विघ्न सोते रहे।

—धन की जोखम न हो तो कैसी चिंता, कैसा डर

झाड़ागर जगत रौ साळौ, आवै घोड़ै जावै पाळौ। ५४७१

ओझा जगत का साला, आये घोड़े पर जाये पैदल।

—झाड़-फूँक करने वाला साले की तरह सबका परिचित होता है। जरूरत पड़ने पर सवारी भेजकर उसे बुलाना पड़ता है। और जब कार्य सिद्ध हो जाय तो उसकी कोई परवाह नहीं करता। बेचारे को पैदल ही अपने गाँव जाना पड़ता है।

—मनुष्य की दुनिया में मतलब के व्यवहार का ही सामान्य प्रचलन है।

झाड़ै जाय जद झाड़ याद आवै। ५४७२

शौच के समय ही झाड़ याद आते हैं

—पहिले की तरह आज भी गाँवों में शौच के लिए बाहर जाते हैं। ओट के लिए झाड़ी की जरूरत पड़ती है।

—जरूरत पड़ने पर ही उपाय की तलाश की जाती है।

—जब जैसी आवश्यकता पड़े, समाधान मिल ही जाता है।

—जरूरत पड़ने पर ही अपनों की याद आती है।

झाड़ौ जांणै नीं अर झाड़ागर बाजै। ५४७३

झाड़-फूँक जाने नहीं और ओझा कहलाये।

—दिखावटी व्यक्तियों के आचरण पर कटाक्ष।

—जब कोई अयोग्य व्यक्ति सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त कर ले या किसी ऊँचे पद पर पहुँच जाए।

झाड़ौ तौ जांणै नीं बीछू रौ अर हाथ घालै काळा नै। ५४७४

मंत्र तो जाने नहीं बिच्छू का और हाथ डाले साँप को।

—अयोग्य व्यक्ति के दुस्साहस पर कटाक्ष।

—अकुशल व्यक्ति अपने कौशल का अतिरेक प्रदर्शन करे तब।

झालर रौ बाजणौ अर गिंडकां रौ भुसणौ। ५४७५

झालर का बजना और कुत्तों का भूँकना।

—शुभ कार्य में विघ्न पैदा करने वालों के लिए।

—किसी मांगलिक कार्य में अप्रत्याशित अड़चन उत्पन्न हो जाय तब।

झाळ अर काळ आगै कुण ई नीं बचै। ५४७६

आग और काल से कोई भी नहीं बच सकता।

दे.क.सं.२२१७

झीणी सुई सात पुड़द बींधै। ५४७७

पतली सुई सात पर्त बींधती है।

—जब कोई अकिंचन व्यक्ति बड़ा काम कर दिखाये तब।

—हर छोटी-बड़ी वस्तु के अस्तित्व की अपनी सार्थकता होती है।

—दूसरा अप्रत्यक्ष अर्थ भी है कि सुई जैसे तीखे बोल हृदय की सात पर्तें छेकते हैं।

—भाले की बजाय कड़वे बोलों से गहरा घाव होता है।

झीर-झीर धाबळियौ अर नांव सिणगारी। ५४७८

फटा-पुराना लहँगा और नाम सिंगारी।

—नाम के विपरीत स्थिति।

—अच्छा नाम रखने से अवगुण या दोष नहीं छिपते।

—नाम का महत्त्व नहीं गुणों का महत्त्व है।

पाठा : लीर-लीर गाभा अर नांव लिछमी बाई।

झुकतै चेळा रा सै सीरी। ५४७९

झुकते पलड़े के सब साथी।

—संपन्न व्यक्ति के सब हिमायती होते हैं।

—लाभ पहुँचाने वाले का सभी मुँह जोहते हैं।

पाठा : निंवतै चेळा रा सै भोड़ू।

झूंपड़ै सौ मिनकियां लड़ै। ५४८०

झोंपड़े में सौ बिल्लियाँ झगड़ रही हैं।

—बिरादरी के पंच इकट्ठे होकर जहाँ फैसला करने के लिए तकरार कर रहे हों, उनके लिए।

—जिस परिवार में हमेशा कलह रहती हो।

झूठ आटा में लूण जित्तौ ई खटै। ५४८१

झूठ आटे में नमक जितना ही चलता है।

—आटे में नमक अनुपात से मिला हो तो रोटी स्वादिष्ट होती है, ज्यादा हो तो कड़वी हो जाती है। उसी प्रकार बातचीत में वांछित झूठ हो तो बात मीठी लगती है।

—सरासर झूठ शीघ्र पकड़ में आ जाता है।

दे.क.सं. २५१६

झूठ कित्ती भांय हालै। ५४८२

झूठ कितनी दूर चल सकता है।

—झूठ की ज्यादा गति नहीं होती, वह कुछ ही देर बाद औंधे मुँह गिर पड़ता है।

—झूठ अधिक समय तक टिकाऊ नहीं रहता।

—झूठ की उम्र बहुत छोटी होती है।

दे.क.सं.२५१७

झूठ तौ पांगळौ व्है। ५४८३

झूठ तो पंगु होता है।

दे.क.सं.२५२२,२५२३,२५२६

झूठ तौ म्हैं बोलूं नीं अर साच री म्हारै आखड़ी। ५४८४

झूठ तो मैं बोलूँ नहीं और सच बोलने की सौगंध।

— मक्कार व्यक्ति पर कटाक्ष।

—दुहरे चरित्र वाले पाखंडी का व्यक्तित्व ऐसा ही होता है।

पाठा : कूड़ तौ म्हैं भाखूं नीं अर साच री म्हारै सौगन।

झूठ नै झाळ लागै, साच नै कीं आंच नीं। ५४८५

झूठ को झाल लगे, साच को आँच नहीं।

—हरिण्य कश्यप की बहिन होलिका नित्य अग्नि से स्नान करती थी। भाई के आदेश से वह अपने भतीजे प्रह्लाद को गोद में लेकर लपलपाती आग में यह सोचकर बैठी कि आग उसका तो कुछ भी बिगाड़ नहीं सकती, पर प्रह्लाद जल जायेगा। पर हुआ उलटा कि हत्यारे की बहिन तो जल मरी और प्रह्लाद बच गया। झूठ जल मरा और सच को तनिक भी आँच नहीं लगी। इसी संदर्भ में इस उक्ति का प्रयोग होता है।

झूठ बिना झगड़ौ नीं, धूड़ टाळ धड़ौ नीं। ५४८६

झूठ के बिना झगड़ा नहीं, धूल के बिना धड़ा नहीं।

धड़ौ = तराजू का संतुलन करने हेतु एक पलड़े में रखे हुए खाली बरतन के भार के बराबर दूसरे पलड़े में रखा जाने वाला पदार्थ।

—हर झगड़े की बुनियाद किसी-न-किसी झूठ पर निर्धारित होती है, उसके बिना झगड़े की शुरुआत नहीं हो सकती, उसी प्रकार धूल के बिना घड़ा नहीं हो सकता।

—झगड़े के लिए झूठ अवश्यंभावी है और घड़े के लिए धूल अवश्यंभावी है, फिर भी झूठ की तुलना में धूल का महत्त्व भी ज्यादा है। झूठ हर समाज में तिरस्कृत होता है, पर हर समाज में उसके बिना काम नहीं चलता।

पाठा : कूड़ टाळ कळै नीं, धूड़ टाळ घड़ौ नीं।

झूठ बोलणियौ अर धरती सोवणियौ सांकड़ैलौ क्यूं भुगतै ? ५४८७

झूठ बोलने वाला और धरती पर सोने वाला क्यों तंगी भुगते ?

—झूठ बोलने की कोई सीमा नहीं होती और धरती पर सोने वाले के लिए जगह की कोई कमी नहीं होती, जहाँ चाहे वहीं पसर-पसर कर सोये।

—झूठे व्यक्ति पर अप्रत्यक्ष कटाक्ष, साथ-ही-साथ निर्धन व्यक्ति का भी उपहास।

दे.क.सं.२५१८

झूठ बोलणौ नै धूड़ खावणी बिरौबर व्है। ५४८८

झूठ बोलना धूल खाने के समान है।

—झूठ की प्रताड़ना और वर्जना। पर आश्चर्य की बात यह कि जिस समाज में जितना अधिक झूठ को तिरस्कृत किया जाता है, उतना ही अधिक उस समाज में झूठ का आम प्रचलन होता है। आज-कल तो झूठ हवा और पानी क उनमान अनिवार्य हो गया है।

दे.क.सं.२५१९

पाठा : कूड़ भाखणौ अर धूड़ खावणौ सरीखौ।

झूठ बोल्यां जग धीजै। ५४८९

झूठ बोलने पर ही दुनिया आश्वस्त होती है।

—खुशामद तो सरासर झूठ पर ही आधारित होती है और वह हर एक को बहुत अच्छी लगती है। इसके विपरीत सत्य हर समाज में आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित होता है, पर उसे न कोई सुनना चाहता है और न कोई कहना चाहता है। अजीब विडंबना है।

दे.क.सं.२५२०

झूठ री दौड़ डागळै तांई । ५४९०

झूठ की दौड़ पहली मंजिल तक ।

—झूठ बोलने वाले व्यक्ति का भेद तत्काल उघड़ जाता है ।

—झूठ की पहुँच बहुत सीमित होती है । वह अधिक समय तक नहीं टिक सकता ।

दे.क.सं.२५२५,२५२६

झूठ रै किसा सींग-पूंछ होवै । ५४९१

झूठ के सींग-पूँछ थोड़े ही होते हैं ।

—झूठ की पहिचान का कोई प्रत्यक्ष या ठोस प्रमाण हो तो पता भी चले—सींग या पूँछ जैसा, इसलिए साच और झूठ में भेद करना मुश्किल हो जाता है । और मानवीय भाषा सत्य की बजाय झूठ को व्यक्त करने में सर्वाधिक काम आती है ।

दे.क.सं.२५३५

झूठ रौ कांई मथारौ ! ५४९२

झूठ की क्या सीमा !

—सत्य की सीमा होती है,पर झूठ तो जितना बोलो उतना ही कम है ।

—दूसरा अर्थ यह भी है कि झूठ कौन नहीं बोलता,वह सार्वजनिक है । कोई भी व्यक्ति यह दावा नहीं कर सकता कि वह झूठ नहीं बोलता । साँच बोलने वालों का अवश्य अकाल है, पर झूठ तो ईश्वर की तरह सर्व-व्यापी है ।

—संसार की भौतिक बहबूदी जितनी झूठ की वजह से हुई है,उतनी सत्य की वजह से नहीं । सत्यवादी तो हर युग में प्रताड़ित रहे हैं,उन्हें दुख,यातना और सूली मिलती रही है और झूठ हमेशा सिंहासन पर आसीन हुआ है । उसके हाथ में सत्ता की बागडोर रही है ।

दे.क.सं.२५३६

झूठ-साच रौ लेखौ तौ रांम जांणै । ५४९३

झूठ-साच का लेखा तो राम जाने ।

—सिवाय ईश्वर या खुदा के कोई भी झूठ-साच का पता नहीं लगा सकता । इनकी पहिचान असंभव नहीं तो मुश्किल जरूर है । बेचारा मनुष्य न तो झूठ का पता लगा सकता है और न साच का । फिर भी प्राणी जगत में मनुष्य के अलावा कोई झूठ नहीं बोलता ।

दे.क.सं.२५२९

झूठा खत में साख कुण घालै ! ५४९४

झूठे खाते में साख कौन डाले !

—झूठे व्यक्ति का कोई भी हिमायती नहीं बनना चाहता।

—झूठे की साख भरे वह अव्वल झूठा।

दे.क.सं.२५३०

झूठा री कांईं पिछांण के वौ बात-बात में सौगन खाय। ५४९५

झूठे की क्या पहिचान कि वह बात-बात में सौगंध खाय।

—यों तो झूठ की पहिचान बड़ी मुश्किल है, पर जो व्यक्ति बात-बात में कसम खाये, वह वास्तव में झूठा है तभी उसे सौगंध के सहारे की जरूरत पड़ती है।

दे.क.सं.२५३२

झूठा री पत कोनीं, मूरख रौ मत कोनीं। ५४९६

झूठे की पत नहीं, मूर्ख का कोई मत नहीं।

—झूठे व्यक्ति की समाज में रंचमात्र भी प्रतिष्ठा नहीं होती और मूर्ख व्यक्ति का अपना कोई मत नहीं होता, वह दूसरों के मत से ही चलता है। अनुशासित होता है। इसीलिए तो धर्म के प्रणेताओं के पीछे अगणित मतानुयायी होते हैं।

दे.क.सं.२५३३

झूठा री बावड़ै कोनीं। ५४९७

झूठा कभी सुखी नहीं हो सकता।

—झूठे व्यक्ति के जीवन में अच्छे दिन कभी लौटकर नहीं आ सकते।

—झूठ कभी फल नहीं सकता, फूल नहीं सकता।

दे.क.सं.२५३४

झूठा रौ मूंडौ काळौ ५४९८

झूठे का मुँह काला।

—झूठा व्यक्ति समाज में सबसे अधिक अस्पर्श्य है, उसकी छाया से भी बचना चाहिए।

—कहने -सुनने में यह बात बहुत अच्छी लगती है क्योंकि यह सर्वोपरि असत्य है। सिद्धांत रूप में हम सत्य का चाहे जितना ढोल पीटें पर आज सर्वत्र झूठ का ही बोल-बाला है और सच्चाई का मुँह काला है। जो व्यक्ति जितना ही झूठा है, वह उतना ही संपन्न है, सत्ता का अधिपति है और सर्वाधिक प्रतिष्ठित है। हर युग में, हर समाज का यही ढर्रा रहा है।

दे.क.सं.२५३७

झूठी खाख छांणी, लाधी नीं दाझी धांणी। ५४९९

झूठी राख छानी, लाधी नहीं जली धानी।

—अथक मेहनत करने के बाद कुछ भी नतीजा हाथ नहीं लगे तब।

—वर्षों की शोध-खोज के बाद कोई भी निष्कर्ष नहीं निकले तब!

दे.क.सं.२५४०

झूठी साख भरै, उणरा बडेरा नरक में पड़ै। ५५००

झूठी साख भरे, उसके पुरखे नरक में पड़ें।

—झूठी साख भरने वाला अकेला ही कष्ट नहीं भोगता, उसके पुरखों को भी नर्क का दंड भोगना पड़ता है। इसलिए न झूठ बोलो और न झूठे की हिमायती करो।

—शास्त्र, धर्म और सूक्तियों में झूठ भले ही प्रताड़ित हो, पर समाज में सर्वत्र उसकी प्रतिष्ठा है। उसका डंका बजता है। सत्य सदैव पराजित हुआ है और झूठ की हमेशा विजय हुई है।

दे.क.सं.२५४१

झेर सूं ई सेर व्हिया करै। ५५०१

झेर से ही शेर होता है।

झेर = अशक्त, अक्षम।

—जन्म-जात शिशु कितना असहाय और अशक्त होता है, पर समय पाकर युवावस्था में वह शेर की नाईं अतिशय बलवान हो जाता है।

—समय का चमत्कार वक्त पर ही प्रकट होता है, बेवक्त नहीं।

—समाज में आज जो वर्ग अक्षम है, भविष्य में वही सर्वाधिक शक्तिशाली होगा।

झेरां तौ आवती इज ही अर बिछावणौ लाधौ। ५५०२

ऊँघ तो आ ही रही थी और बिछौना मिल गया।

—जरूरतमंद को समय पर उसकी इच्छा के अनुसार चीज मिल जाये उसकी खुशी का पार नहीं रहता। भूखे को खाना मिल जाये, निर्धन को धन मिल जाये।

—कामुक पुरुष और स्त्री के लिए भी कामना करने पर कामेच्छा पूरी हो जाय तब भी यह कहावत प्रयुक्त होती हैं।

दे.क.सं.१२७५

टं-टो

टंक अर टेम कदै ई टाळणौ नीं। ५५०३

जून और समय कभी टालना नहीं चाहिए।

—दो जून भोजन नियमित समय पर करने से स्वास्थ्य ठीक रहता है। और जीवन में स्वास्थ्य ही सर्वोपरि महत्त्व की वस्तु है। यों तो यह कहावत बहुत ही सामान्य है, पर इसकी अहमियत यों बढ़ जाती है कि मनुष्य भोजन प्राप्ति के लिए ही रात-दिन खटपट करता रहता है और भोजन की वेला ही नहीं निकाल पाता। देर-सबेर हो ही जाती है।

—स्वास्थ्य के बाद दूसरा महत्त्व है—समय का, उसे व्यर्थ गँवाना या टालना उचित नहीं। जो व्यक्ति समय की पाबंदी नहीं रखता, उसका कोई एतबार नहीं।

टंक टळै पण मावरौ नीं टळै। ५५०४

जून भले ही टल जाय पर तलब नहीं टलती।

—जिस व्यक्ति को किसी भी नशे का व्यसन हो—भाँग, गाँजा, सुल्फा, शराब, अफीम इत्यादि, वह उसका अभ्यस्त हो जाता है। गुलाम हो जाता है। नशे का समय होते ही ऐसी शारीरिक व मानसिक तलब होती है कि वह नशा किये बिना रह नहीं सकता। भूखा रहना मंजूर पर तलब की समय पर पूर्ति होना अनिवार्य है, वह नहीं टल सकती।

—मनुष्य व्यसन का गुलाम होता है, वहाँ उसकी इच्छा-अनिच्छा से काम नहीं चलता।

टंक टाळ्यां माया नीं जुड़ै। ५५०५

जून टालने से माया नहीं जुड़ती।

—किसी भी जून का खाना बचाने से धन नहीं जुड़ता, उसके लिए तो अलग ही कौशल व हुनर अपेक्षित है।

—जरूरतें कम करने से धन इकट्ठा नहीं होता, धन तो परिश्रम, व्यवसाय व कौशल से प्राप्त किया जाता है।

टंट में सूळ। ५५०६

टंट में शूल।

टंट = एड़ी के ऊपर वाली नस को राजस्थानी में टंट कहते हैं। यों काँटा या शूल चुभने पर पीड़ा तो होती ही है, पर टंट में शूल धँसने पर चलना बहुत कठिन है।

—विवश व्यक्ति के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।

—किसी आदमी को इस तरह मजबूर किया जाय कि उसकी इच्छा-अनिच्छा का कुछ भी जोर न चले तब।

टका अेक रौ कांम नीं अर घड़ी अेक री वेळा नीं। ५५०७

टके की कमाई नहीं और पल भर की फुरसत नहीं।

—समय के उचित उपयोग से ही कमाई होती है। धन प्राप्त होता है। पर जो व्यक्ति कमाई के नाम पर धेला भी नहीं कमाये और किसी के काम की खातिर घड़ी भर का भी समय नहीं निकाल सके, उस पर सीधा कटाक्ष है।

—जो व्यक्ति अकारण अपना समय नष्ट करे, उसके लिए।

—जो व्यक्ति हरदम व्यस्त रहने का दिखावा करे पर कमाई के नाम पर कौड़ी भी अर्जित नहीं करे उसका उपहास करने की खातिर, यह कहावत बहुत सटीक है।

टका-टका री निंवत है। ५५०८

टके-टके की अनबन।

—आज तो दस रुपये की भी कोई कीमत नहीं। पर कोई जमाना था, अंग्रेजों से भी पहले जब टके की अहमियत थी। टका भी बड़ी मुश्किल से हाथ आता था। इसलिए भाई-भाई भी परस्पर टके की खातिर नीयत बिगाड़ लेते थे।

—जिन दो व्यक्तियों के बीच बात-बात में कलह हो तब।

पाठा : टकै-टकैं न्यूत है। टकै-टकै री नैत।

टका देय साखीणी क्यूं प णीजणी ? ५५०९

टके देकर रिश्तेदारिन से ब्याह क्यों करना ?

—साखीणी का पर्यायवाची शब्द मुझे हिंदी में नहीं मिला। फिलहाल रिश्तेदारिन से ही काम चलाना पड़ेगा।

—सवर्ण जातियों में वर-पक्ष के परिवार को मँगनी के पूर्व टीका (नकद राशि) और ब्याह पर दहेज दिया जाता है। दूल्हे की कीमत वसूल की जाती है। पर कुछेक अनुसूचित या निर्धन जातियों में कन्या की कीमत वसूल की जाती है। जब वर पक्ष वालों को रुपये देकर ही दुलहिन लानी है तो फिर रिश्तेदारी में ही ब्याह क्यों किया जाय ताकि हमेशा एहसान या उपकार से उऋण ही न हो।

—जब किसी काम के लिए रुपये ही खर्च करने हैं तो रिश्तेदारों का ऊपर से एहसान क्यों लिया जाय, किसी अपरिचित से भी काम लिया जा सकता है ताकि हरदम सुनना तो न पड़े।

पाठा : दांम भांगनै साखीणी क्यूं परणीजणी ?

रिपिया खरचनै साखीणी क्यूं लावणी ?

टका री डोकरी नै टकौ सिर मुंडाई रौ। ५५१०

टके की बुढ़िया और टका सिर मुंडन का।

—कम मूल्य की वस्तु पर अधिक खर्च करना अविवेकपूर्ण है।

—छोटे काम के लिए अधिक परेशानी उठाना उचित नहीं।

— सस्ती चीज लेकर उस पर अधिक खर्च करना कहाँ की समझदारी है।

पाठा : टका री कूकड़ी (मुरगी) अर नौ टका खाल उतराई रा।

टका री हांडी ई ठोक-बजाय लिरीजै। ५५११

टके की हँडिया भी ठोक-बजाकर ली जाती है।

—रुपया-पैसा मनुष्य समाज में सर्वोपरि महत्त्व का आविष्कार है। जब उसके बदले में कोई चीज खरीदी जाय चाहे उसका मूल्य बहुत ही थोड़ा क्यों न हो उसे आँख बंद करके लेने की बजाय अच्छी तरह देख-भाल कर लेना चाहिए।

—मित्रता, ब्याह-संबंध या गुरु जैसे बड़े कामों में तो और भी जाँच-पड़ताल या परख करना अनिवार्य है।

टका री हांडी फूटी, कुत्ता री जात पिछांणी। ५५१२

टके की हँडिया फूटी, कुत्ते की पहिचान हो गई।

—एक बार धोखा खाने पर भविष्य में सावधान होने के लिए इस उक्ति में निर्देश है।

—जब किसी मामूली धोखे से मित्र या परिजन के चरित्र का पता चल जाये।

—अनुभवहीनता की मामूली क्षति के परिणाम-स्वरूप भविष्य में भारी नुक्सान न हो, उससे बचने की सीख।

—कुछ खोकर ही बहुमूल्य अनुभव हासिल किया जाता है।

पाठा : टका री हांडी फूटी अर गिंडक री जात पिछांणी।

टका रौ कित्तौ जोर, बूढ़ौ परणीजै और। ५५१३

टके का कितना जोर, बढ़ऊ ब्याहे और।

—रुपये की अदम्य शक्ति के सामने सभी पराजित होते हैं, तभी ढलती उम्र के बुड्ढ़े को घरवाले अपनी कन्या ब्याहते हैं।

—दुनिया में कोई भी अपराजेय शक्ति है तो वह पैसा ही है।

—धन की महिमा।

टका रौ पाजी। ५५१४

टके का पाजी।

—जिस व्यक्ति में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से किसी गुण का लेशमात्र भी न हो।

—यों मनुष्य की देह प्राचीन काल से एक लाख रुपये की मानी जाती रही है। पर मानवीय गुणों के अभाव में कोई एक टका भी न देना चाहे तब।

—सर्वथा निकम्मे व्यक्ति के लिए।

टका वाळी रौ ई [illegible]णियौ बाजसी । ५५१५

टका देने वाली का ही झुनझुना बजेगा ।

संदर्भ-कथा : किसी गाँव का एक व्यक्ति मेले में जा रहा था । गाँव की दस-बारह औरतों ने अपने बच्चों की खातिर झुनझुने या खिलोने लाने का काम बताया । उसने सभी के लिए हामी भर ली । पर एक औरत ने उसे हाथोंहाथ पैसे देने के बाद ही खिलौनों के लिए कहा । सभी औरतें उसके लौटने का इंतजार करती रहीं । क्योंकि गाँव में सभी से उसका परिचय था । सभी औरतें अपने बच्चों को झुनझुनों के लिए बहलाती रहीं । वह मेले से लौटकर आया तो सभी औरतों ने उसे घेर लिया । पर उन्हें आश्चर्य के साथ बड़ा दुख भी हुआ कि वह तो केवल एक ही झुनझुना लाया,जिसने पैसा दिया था । उसने मुस्कराते कहा,'मैंने सबके लिए झुनझुने माँगे थे । पर मेले में बिना पैसे कोई बात ही नहीं करता । जिसने पैसे दिये उसीका बच्चा झुनझुना बजाएगा ।'

—मानवीय संसार में सर्वत्र पैसे की दुंदुभि बजती है ।

पाठा : टकै आळी रौ झुणझुणियौ बाजसी ।

टका हरता, टका करता । ५५१६

टका हरता, टका करता ।

—पैसे में दुहरा गुण है कि वह दुख हरता है और सुख करता है ।

—माया की महिमा अपरंपार है ।

—ईश्वर को तो किसने देखा,पर पैसे में ईश्वर के सभी गुण मौजूद हैं ।

टके नी हांडी टक चढ़े ने टक ऊतरे ।– भी.३९३ ५५१७

टके की हँड़िया झट चढ़े, झट उतरे ।

—साधारण भोजन के लिए काम आने वाले अकिंचन बासनों की उम्र नहीं होती । जितने जल्दी चढ़ते हैं,उतने जल्दी उतर जाते हैं । दुबारा काम नहीं आते ।

—सस्ती चीजें टिकाऊ नहीं होतीं ।

—मूँघा रोये एक बार,सस्ता रोये बार-बार ।

पाठा : टका री हांडी टक चढ़ै अर टक उतरै ।

टकै बींद, मोहर जांनी। ५५१८

टके दूल्हा, मोहर बराती।

—दूल्हे का मूल्य टके जितना, पर बरातियों का मूल्य मोहर के समान। जब किसी लग्न पर सैकड़ों शादियाँ हों, तब दूल्हा तो हर शादी में एक ही होता है, वह बदल नहीं सकता। पर बरातियों की बेहद कमी हो जाती है। तब बराती किराये पर इकट्ठे किये जाते हैं। बरातियों के बिना दूल्हे की भी शोभा नहीं। वक्त-वक्त की बात है—दूल्हा सस्ता और बराती महँगे।

—श्राद्ध पक्ष में जिस तरह कौओं की पूछ होती है। उसी तरह समय की बलिहारी कि अकिंचन वस्तु के भी भाव बढ़ जाते हैं, तब इस कहावत का मर्म स्पष्ट होता है।

टकै रा साबू सूं ऊजळौ पण होईजै। ५५१९

टके के साबुन से उजला तो हो ही जाता है।

—बाहर का उजलापन तो सस्ते साबुन से भी उजागर हो जाता है, पर भीतर का उजलापन बड़ी साधना से जगमगाता है।

—जब कोई छैला अपने उजले लिबास का दिखावा करे तब।

टकै री छोरी, तेवड़ बिना दोरी। ५५२०

टके की छुकरिया और पकवान की तलब।

—जब कोई ओछा व्यक्ति नाज-नखरे करे तब।

—अकिंचन व्यक्ति जब हवाई महत्त्वाकांक्षा रखे तब।

—अपनी औकात को भूलकर जब कोई बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाये तब।

टकै री पींजारी अर नखरौ मुलक रौ। ५५२१

टके की पिंजारी और नखरा दुनिया भर का।

—जब कोई व्यक्ति अपनी हैसियत से परे दिखावा करे तब।

—समझदार व्यक्ति अपनी हैसियत के अनुसार सीधी राह चलता है, पर मूर्ख व्यक्ति आडंबर किये बिना जी नहीं सकता।

टकै रौ तीतर नै रिपिया रौ भळकौ। ५५२२

टके का तीतर और रुपये की चकाचौंध।

—सस्ते तीतर का पिंजरा जब चमचमाता हो।

—जो व्यक्ति आडंबर युक्त जीवन का अभ्यस्त हो।

—किसी भी व्यक्ति को अपनी हैसियत के दायरे में ही संतुष्ट होकर जीना चाहिए।

टकै रौ नैतियार नै थांन माथै झाड़ै जावूं। ५५२३

टके का न्योतिहार और थान पर शौच करूँ।

—जब कोई सामान्य व्यक्ति महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त करने की अनधिकार चेष्टा करे तब।

—अपनी औकात भूलकर जब कोई व्यक्ति बड़ी महत्त्वाकांक्षा रखे, उस पर कटाक्ष।

टकै रौ साग अर रिपिया रौ बघार। ५५२४

टके का साग और रुपये का छौंक।

—अकिंचन वस्तु प्राप्त करने के लिए जब अत्यधिक खर्च करना पड़े तब।

—अव्यावहारिक नादान व्यक्ति पर कटाक्ष जो मामूली उपयोग में आने वाली चीज के लिए ज्यादा खर्च करे।

पाठा : टका री तरकारी नै रिपिया रौ तड़कौ।

टकै सेर गुळ नै टकै सेर खाजा। ५५२५

टके सेर गुड़ और टके सेर खाजा।

दे.क.सं.३२

टकौ नीं धेलौ यार, तोरण वांधण नै त्यार। ५५२६

न टका और न धेला यार, तोरण परसने को तैयार।

—यार के पास न टका और न धेला और विवाह के लिए मुँह धोकर चल पड़े। फकत मुँह धोने से तो बात बनती नहीं। ब्याह के लिए कई तामझाम होते हैं। खर्च करना पड़ता है।

—जब कोई व्यक्ति ओछी पूँजी से बड़ा व्यापार करना चाहे तब।

—अकिंचन साधनों से बड़ा काम संभव नहीं होता।

—थोथी निराधार महत्त्वाकांक्षा रखने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

टकौ माई-बाप । ५५२७

टका माँ-बाप ।

—न माँ-बाप का रिश्ता बड़ा है न भाई-बहिन का । सब रिश्तों में बड़ा रिश्ता फकत पैसों का । चाहे रंक हो, चाहे राजा । चाहे सेठ, चाहे भिखारी ।

—कंजूस व्यक्ति पर कटाक्ष जो रुपये को ही राम समझता है ।

पाठा : पईसौ माई-बाप । रिपियौ माई-बाप ।

टकौ लाग्यौ नीं पातड़ी , घर में वींदणी दड़कै आ पड़ी । ५५२८

टका लगा न पैसा, घर में बहू आ गई सहसा ।

संदर्भ-कथा : दूल्हे को ब्याहने एक बरात बड़ी ठाट-बाट से गई । दुलहन के एक छोटी बहिन और थी । विवाह के योग्य । बरात में दूल्हे के दूर रिश्ते का मौसेरा भाई आया था । स्वस्थ सुंदर । पुष्ट-देह । घर की आर्थिक-स्थिति ठीक नहीं थी । माँ-बाप दो-तीन साल बाद इकलौते बेटे की शादी करना चाहते थे । दूल्हे की सास को लड़का पसंद आ गया । बड़ी बेटी के साथ-साथ छोटी बेटी को भी ब्याह दिया । दूल्हे के मौसेरे भाई ने किंचित् आना-कानी की, पर आखिर मान गया । बहू सुंदर और समझदार थी । सास-ससुर ने बड़े प्यार से बहू को अपनाया ।

—जब कोई अच्छा काम अप्रत्याशित रूप से आशाओं के अनुकूल स्वतः संपन्न हो जाये तब ।

टकौ लेयगी दाई नै कूंडौ फोड़ घर आई । ५५२९

टका ले गई दाई, कूँडा फोड़ घर आई ।

—आजकल सामान्यतया हर बासन प्लास्टिक का होता है, उसी तरह पुराने जमाने में ज्यादातर बासन मिट्टी के होते थे । दाई-माई सद्य-जात बच्चे को मौसम के अनुसार ठंडे, गुनगुने या गर्म पानी से मिट्टी के कूँडे में नहलाती थी । बच्चे के घरवाले टका-दो-टका नेग के निमित्त कूँडे में डालते थे । वह नेग दाई का ही होता था । दाई अपना नेग क्योंकर भूलती ? पर हड़बड़ाहट में टका लेते समय उसके हाथ से कूँडा फूट गया । नेग तो ले जाना ही था । पर दाई की लापरवाही से खामखाह कूँडे का नुकसान हो गया । अपशकुन हुआ सो अलग से । बहुत मुश्किल से बच्चा अपना गुजर-बसर कर सकेगा ।

—कोई व्यक्ति अपने स्वार्थ के वशीभूत दूसरों का असावधानी से नुकसान कर जाये तब ।

पाठा : टकौ दाई लेयगी अर कूंडौ फोड़गी ।

टट्टी सूं मूत आगूंच आवै । ५५३०

पाखाने से पेशाब पहिले आता है ।

—किसी चूक या गलती के कारण घर के मालिक को उलाहना देते सयम उसके नौकर पहिले भिड़क जाएँ तब ।

—किसी अपराधी को दंड देने से पूर्व उसके हिमायती लड़ने के लिए आमादा हो जाएँ तब ।

—निर्बल व्यक्ति को गुस्सा ज्यादा आता है ।

टट्टू नै मार्‌यां टार कांपै । ५५३१

टट्टू को मारने से घोड़ा काँपता है ।

—छोटे अपराधी को दंडित करने से बड़ा अपराधी स्वतः डर जाता है ।

—जिस प्रकार बेटी को डाँटने पर बहू अपने-आप समझ जाती है, उसी प्रकार छोटे विद्यार्थी को हुड़कने पर बड़ा विद्यार्थी मन-ही-मन डरने लगता है ।

पाठा : रोड नै ठोक्यां ताजण रा थरणा कांपै ।

टट्टू को पीटने पर तेज घोड़ी काँपने लगती है ।

टणकां री टग । ५५३२

श्रीमंतों का सहारा ।

टग = वह उपयुक्त छोटा या बड़ा पत्थर जो बड़े शिलाखंड को ऊँचा करने या रोकने के लिए या सहारे के निमित्त सब्बल के नीचे लगाया जाता है ।

—उस व्यक्ति को लक्ष्य करके यह कहावत कही जाती है, जो बड़े व्यक्तियों के सहारे अपना हर काम निकाल लेता है ।

—आजकल हर नेता या बड़े अधिकारी के पास ऐसे व्यक्ति मिल जाते हैं, जिन्हें देखकर कहा जाता है—इनका क्या कहना है, ये तो 'टणकां री टग' हैं ।

टपकण लागी टापरी, भींजण लागी खाट । ५५३३

टपकने लगी झोंपड़ी, भीगने लगी खाट ।

—कैसा भी निर्धन व्यक्ति अपनी झोंपड़ी को सुरक्षित तो रख ही सकता है, यदि वह अहदी, अकर्मण्य या आलसी न हो तो, बरसात की एक बूँद भी उस में टपक नहीं सकती ।

—उस अकर्मण्य व्यक्ति पर कटाक्ष जो चौमासे के पहिले अपनी झोंपड़ी को पूर्णतया दुरुस्त नहीं कर सकता। बरसात की झड़ी लगने पर झोंपड़ी टपकने लगती है। खाट बिछौने भीगते रहते हैं।

—उन सभी अदूरदर्शी निठल्ले व्यक्तियों के लिए जिनकी आदत काम को टालने की रहती है और वे समय रहते कोई भी काम संपन्न नहीं कर सकते। दुष्परिणाम भुगतने पर भी उनका आलस्य नहीं उड़ता।

टपरी में झांकरा अर बारणै नाच। ५५३४

झोंपड़ी पूरी जर्जर और बाहर नाच।

—उस अकर्मण्य, अव्यावहारिक और महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति के लिए जो अपनी हैसियत से परे अधिक खर्च करने को तैयार रहता है। झोंपड़ी की मरम्मत तो होती नहीं और बाहर आँगन में नाच करवाने की तैयारी चल रही है।

—घर की आर्थिक-स्थिति को नजर-अंदाज करके जो व्यक्ति आमदनी से कहीं ज्यादा खर्च करे।

टपरी में सोवै, महलां रा सपना जोवै। ५५३५

झोंपड़ी में सोये, महलों के सपने जोये।

—सपने तो हर व्यक्ति देखता है—चाहे वह राजमहल में सोये या झोंपड़ी में। स्वप्न-विहीन जिंदगी मौत का ही दूसरा नाम है। पर सपनों को साकार करने की वैसी निष्ठा और वैसा प्रयत्न भी तो हरदम होना चाहिए। झोंपड़ी में सोते हुए सपने देखने वालों ने, महलों में रहकर सपने देखने वालों को ध्वस्त किया है। पर सपने को साकार करने की अदम्य शक्ति व अथक परिश्रम अनिवार्य है।

—झोंपड़ी में रहने वाला महलों के सपने जरूर देखें, देखने ही चाहिएँ पर उस राह बढ़ने का हौसला कभी न टूटे तो सफलता अवश्य मिलती है।

—सपने देखना गुनाह नहीं है, पर सपने का पीछा न करना अवश्य गुनाह है।

टळै जित्तै टाळूं। ५५३६

टले जब तक टालूँ।

संदर्भ कथा : एक बनजारे ने काम की सहूलियत के लिए एक चौधरी को नौकर रखते समय कहा,' जैसा मैं खाऊँगा,तुझे भी खिलाऊँगा। जैसा पहनूँगा,तुझे भी पहिनाऊँगा। बरस बीतने पर एक मोहर दूँगा। पर काम जब भी जरूरत पड़े करना होगा। मंजूर हो तो बोल।' चौधरी ने कहा,'सब मंजूर है। पर राम-नाम की माला नहीं छोड़ सकता। सवा घड़ी सुबह और सवा घड़ी साँझ,फकत इतना समय मेरा है। बाकी सब आपका। पर माला के बीच में आवाज नहीं दे सकेंगे।' बनजारे ने भी राम-नाम के पवित्र काम में बाधा पहुँचाना ठीक नहीं समझा। चौधरी को नौकर रख लिया। यों उसके पास चार-पाँच नौकर पहिले भी थे। चौधरी के भरोसे नहीं था। बनजारों के दो काम जरूरी होते हैं। सूर्योदय की वेला कारवाँ लदना और सूर्यास्त की वेला पड़ाव डालना और चौधरी के लिए माला का समय वही था। बनजारा अपने कौल-वचन पर कायम था और चौधरी राम-नाम की माला पर। बाकी समय कोई खास काम नहीं रहता था। पर बनजारे के बताये काम को वह सलीके से करता था। सवेरे कारवाँ उठता। दिन भर चलता और शाम को पड़ाव। लदने और उतरने में माला जितना ही समय लगता था। कई दिन तक यही क्रम चलता रहा। एक दिन राह चलते बनजारे ने परिहास करते कहा,'मेरे लिए तो ये बैल ही ईश्वर हैं। रात-दिन इन्हीं की माला जपता हूँ। बाकी और किसी माला में मेरा मन नहीं लगता। न हो तो पाँच-पचीस नाम मेरे खाते ही डाल दे।' चौधरी ने उत्साह जतलाते कहा,' क्यूँ,पाँच-पचीस ही क्यों,आप कहें तो सारे नाम आपके खाते में डाल दूँ।'

बनजारे ने कहा,' जैसी तेरी मरजी। पर तेरा यह ऋण उतारूँगा कैसे ? भगवान के घर तेरा खाता तो बंद ही हो जाएगा। मेरा कहा मान,सवेरे अपना खाता चालू रख और शाम की माला मेरे नाम।' बनजारे की आशा के विपरीत चौधरी तो कहते ही मान गया।

पर भगवान के रोजनामचे और खाता-बही का आज दिन तक किसे भी पता नहीं चला। एक दिन बनजारा अपनी जिज्ञासा पर नियंत्रण नहीं रख सका तो वह आँखें बंद किये चौधरी के पीछे छिपकर सुनने लगा। राम-नाम की बजाय चौधरी तो कोई दूसरा ही जाप कर रहा था—टळै जित्तै टाळूं,बळै जित्तै बाळूं,गळै जित्तै गाळूं। टळै जित्तै टाळूं। उसे स्वयं तो राम-नाम में कोई रुचि नहीं थी। पर जिन्हें रुचि थी,उनके मुँह से तो कभी ऐसा मंत्र या जाप नहीं सुना। आखिर शंका का समाधान नहीं हुआ तो उसने चौधरी से पूछना ही उचित समझा। चौधरी बड़े धर्म-संकट में फँस गया। बुद्धि तेज थी। अदेर जवाब दिया,'मतलब तो मैं भी नहीं जानता। गुरु ने जैसा मंत्र दिया,याद कर लिया।'

बनजारे ने आश्वस्त होकर कहा,'अच्छी बात है,यही तो होना चाहिए। कभी गुरु मिलें तो पूछकर बता देना। न हो तो तू कुछ दिन के लिए उनके पास ही चला जा। उनसे पूछकर बताना।' चौधरी का धर्म-संकट और गहरा गया। ऐसा लगा कि उसे कोई भीतर से दुत्कार रहा हो। अब तक तो ऐसा कभी नहीं हुआ। उसकी ही जीभ वश में नहीं रही। जोर-जोर से नहीं बोलता तो सारा भरम बना रहता। उसका कोई घर-परिवार नहीं था। वरना बनजारे के पास वह रहता भला। इस बार झूठ बोलने में उसे जोर पड़ा। धीमे से कहा,' आप कहें तभी चला जाऊँगा। कुछ खास जल्दी तो नहीं है।'

बनजारे ने हँसते-हँसते ही कहा,'मुझे क्या जल्दी है। जब इच्छा हो चले जाना। इतने बरस बिना जाने चल गया तो कुछ दिन और चल जाएगा। गुरु का पता ठिकाना तो अच्छी तरह जानता है न?'

यकायक उसके मुँह से कुछ भी जवाब नहीं निकला। मानो उसका गला रुँध गया हो। धीमे से बोला,'जानता हूँ।'

' तो कल ही चला जा!'

' ऐसी भी क्या जल्दी है...!'

'नहीं नहीं',मुझे कोई जल्दी नहीं,तेरी इच्छा हो तब जाना। न हो तो मत जाना। कुछ दिन से ऐसा लग रहा है कि तुझ जैसे भक्त का विछोह मैं झेल नहीं सकूँगा। दोनों साथ ही चलेंगे। तब तक तुझे कुछ भी काम करने की जरूरत नहीं। समय कम पड़े तो चाहे जितना जाप कर। मुझे कोई एतराज नहीं। ओह,मैं भूल गया तो कोई बात नहीं,तुझे तो नहीं भूलना चाहिए था।'

चौधरी का कलेजा जैसे छिल रहा हो। दिमाग में मानो चींटियाँ रेंग रही हों। बनजारे से भी चौधरी की बदलती रंगत छिपी नहीं रही। आगे की बात को वहीं विराम देकर उसने परिहास के बहाने एक जटिल प्रश्न कर डाला,'तुम्हारे जाप का आधा समय बीत गया। इसका दंड तुझें मिलेगा या मुझे?'

अब कहीं चौधरी का बवंडर थमा। उसकी स्थिति सामान्य हुई। इस बीच जाने उसके भीतर कितनी नदियाँ बह गईं। ठठाकर जोर से हँसा। हँसते-हँसते ही कहने लगा,' दंड तो मुझे ही मिलना चाहिए था पर कुछ ज्यादा ही मिल गया।' फिर बनजारे के पाँवों की ओर हाथ बढ़ाते बोला,'आपके सिवाय मेरा कोई दूसरा गुरु नहीं है। मैंने तो इतने दिन आपके साथ छल किया था। पर आपके सद्व्यवहार से मेरी तो मति ही बदल गई ...।'

बनजारे ने आश्चर्य के भँवर से उबरते पूछा,' क्या कह रहा है तू ...?' चौधरी ने उसे टोकते कहा, 'पहिले पूरी बात तो सुन लीजिए। जो भी कह रहा हूँ, बिल्कुल सच कह रहा हूँ कि काम की मार जितने टले टालना चाहता हूँ। नशे की आदत है न! इसलिए चिलम पर चिलम भरकर तंबाकू जितना जले, जलाना चाहता हूँ।' फिर मुस्कराते बोला, 'अब रही बात जाप की, आप देख ही रहे हैं कि आपसे तिगुना स्वादिष्ट भोजन करता हूँ। वह जितना पचे पचाना चाहता हूँ। बस, मैं अब तक यही जाप करता रहा, 'टळै जित्तै टाळूं। बळै जित्तै बाळूं। गळै जित्तै गाळूं। पर आपके संत स्वभाव से मेरी तो काया ही बदल गई। आज से इस जाप को आग लगाता हूँ। और आप देखते जाइये। पाँच आदमियों से कम काम करूँ तो मुझे दंड दीजिए।'

इस बार बनजारा ठठाकर हँसा। चौधरी को गले लगाते बोला, 'नहीं रे बावले, तू अपना काम चालू रख। तेरे बदले मैं काम करूँगा। काम की अपनी महिमा है। जाप की अपनी महिमा है—चाहे राम का जाप करो, चाहे रावण का। तू जाप तो जरूर करता है। पर उसका मतलब नहीं जानता। मैंने तो सिर्फ तीन बार मंत्र जपा और एक ही काया के भीतर मेरा दूसरा जन्म हो गया। यह माया का चक्कर है ही ऐसा कि जितना कमाओ, उतनी ही तृष्णा और बढ़ती है। इसलिए अब जितना टले, इस बला को टालना चाहता हूँ। क्रोध जितना जले जलाना चाहता हूँ। अभिमान या अहंकार जितना गले गलाना चाहता हूँ। जाप के बोल वही हैं, पर उसका भाव अलग है। टळै जित्तै टाळूं, बळै जित्तै बाळूं और गळै जित्तै गाळूं। सौ पीढ़ियों की माया का घूरा इकट्ठा कर लिया है और मैं तो एक ही जनम में मर जाऊँगा। फिर रात-दिन यह अविराम चक्कर क्यों ? तेरे जाप से ही मुझे यह अचीता ज्ञान मिला। तू मेरा नौकर नहीं, गुरु है।'

चौधरी ने मनाही के आशय से गरदन हिलाते प्रतिवाद किया, 'नहीं, मैं यह झूठी बात मानने वाला नहीं हूँ। आप ही मेरे गुरु हैं।'

आधे झुके चौधरी का हाथ पकड़ते बनजारे ने कहा, 'मैं तो सार की बात इतनी ही समझ पाया कि साच-झूठ के सारे पैमाने गलत हैं। और गुरु को कहीं बाहर तलाशने की जरूरत नहीं। वह तो भीतर बिराजमान है। पर उधर झाँकने का समय तो मिले। एक ही झाँकी में सारा ब्रह्मांड नजर आ जाता है।'

—किसी भी जाप के शब्द उतना वजन नहीं रखते, जितने उसके भाव।

—प्रत्येक जाप का फल व्यक्ति की आंतरिक भावना पर निर्भर करता है।

टसक री टारड़ी नै कादा मांय घच्च। ५५३७

ठसक की घोड़ी, कीचड़ में धँसी।

—जो घोड़ी गर्दन उठाये ऊपर देखती हुई चलती है, अजाने ही उसके पाँव कीचड़ में धँस जाते हैं।

—थोथे हेकड़ीबाज और दंभी मनुष्य का आखिर पराभव होता है।

—घमंडी का सिर नीचा।

टांगां पिणियारी गावै। ५५३८

टाँगे पनिहारी गायें।

ी. का एक प्रसिद्ध लोकगीत, जिसकी धुन बड़ी मोहक है। इसका लक्षणात्मक प्रयोग हुआ है। ज्यादा चलने से जब पाँव थक जाएँ, पिंडलियों की नसें तन जाएँ तब थका-हारा मनुष्य कहता है कि उसकी टाँगे पनिहारी गा रही हैं।

—थके-हारे मनुष्य की मजबूरी।

पाठा : फींचां अलगोजौ व्हैगी।

टांडौ क्यूं के सांड हां, पोटा क्यूं करौ के गवू रा जाया हां। ५५३९

हुंकारते क्यों हो कि साँड़ हैं, गोबर क्यों करते हो कि गाय के बछड़े हैं।

—जो व्यक्ति कमजोर के सामने हेकड़ी दिखाए, बहादुरी जताये और शक्तिशाली के सामने चिरौरी करने लगे तब।

—दुहरे चरित्र वाले व्यक्ति के लिए जो समय पर आँख भी दिखाए और मौका पड़ने पर हाथ भी जोड़े। तिस पर दोनों स्थितियों का औचित्य भी समझाए।

पाठा : धडूकौ क्यूं के सांड हां, पोटा क्यूं करौ के गऊ रा जाया हां।

टाट उघाड़ी अर नांव मुकटधर। ५५४०

टाट उघाड़ी और नाम मुकटधर।

—नाम के विपरीत वास्तविकता।

—नाम मोटा और हुलिया खोटा।

टाट जिणरा थाट । ५५४१

टाट जिसके ठाट ।

—एक प्रचलित धारणा है कि गंजा मनुष्य अमूमन धनाढ्य होता है । और धनाढ्य के किस बात की कमी । ठाट-ही-ठाट रहता है ।

—यों गंजे व्यक्ति को बाल काटने,सिर धोने का झंझट नहीं होता,इसलिए आराम-ही-आराम है ।

टाटणी कांई टाळ पाड़ै । ५५४२

गंजी क्या माँग निकाले ।

—अभावग्रस्त व्यक्ति क्या ऐश करे ? क्या मौज मनाये ?

—साधनहीन व्यक्ति का कुछ भी वश नहीं चलता ।

पाठा : टाटली कद टाळ काढ़ै ।

टाट री लंगोट अर निजाम सूं रिस्तौ । ५५४३

बारदाने की लंगोट और निजाम से रिश्ता ।

—साधनहीन व्यक्ति बड़ा काम करने की डींग मारे तब ।

—अक्षम व्यक्ति बड़ी योजना के लिए हाथ-पाँव मारे तब ।

टाटिया नै कागलां रौ डर । ५५४४

गंजे को कौओं का डर ।

—गंजे व्यक्ति को कौए की चोंच ज्यादा नुकसान पहुँचाती है,इसलिए डर भी अधिक रहता है ।

—दोषी व्यक्ति को सदैव पुलिस का डर बना रहता है ।

टाटिये गांव इरंडियौ ई रूंख । ५५४५

सूखे गाँव में एरंड ही पेड़ ।

—अनपढ़ों के बीच मामूली पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी विद्वान कहलाये तब ।

—अंधों के बीच काने का भी बड़ा आदर होता है ।

मि.क.सं.२०७,१३७७

टाटियौ अर कांकरां में सूवण रौ बळौ। ५५४६

गंजा और कंकरों में सोने का दुराग्रह।

—जिस व्यक्ति को अपने भले-बुरे का बोध न हो।

—जो व्यक्ति अपने ही हाथों अपना अनिष्ट करे तब।

दे.क.सं.३१७६

टाटियौ चटियां पड़ै। ५५४७

गंजा लड़ने को आतुर।

—गंजे को गंजा कहकर चिढ़ाने से वह गले पड़ता है। खीजता है। लड़ने को आतुर रहता है।

—किसी भी कमजोरी को लक्ष्य करने से उसका बुरा मानना स्वाभाविक है।

टाटी रा घर नै फेरतां कांई जेज लागै? ५५४८

छप्पर के घर का द्वार बदलने में क्या देर लगती है?

—गरीब को बेदखल करने में देर नहीं लगती।

—गँवार का रुख बदलना बहुत आसान है।

टाट्या नी टाट जाय टेव नी जाये।–भी.३९४ ५५४९

गंजे की गंज मिटने पर भी उसकी लत नहीं छूटती।

—गंजे को सिर खुजलाने की आदत होती है। यदि किसी उपचार से गंज मिट भी जाए तो खुजलाने की बान नहीं छूटती।

—बुराई समाप्त भी हो जाय, फिर भी उससे उत्पन्न खराब आदतों का मिटना संभव नहीं होता।

पाठा: टाट्या री टाट जावै पण टेव नीं जावै।

टाट्या सूं बाळ उधारा कद दिरीजै। ५५५०

गंजे से बाल उधार नहीं दिये जाते।

—यदि कोई गरीब किसी की मदद न कर सके तब।

—जिसके पास जो साधन ही नहीं, उसे क्योंकर दे सकता है।

टाडी हीयाळो हारा हाऊ लागे, हारू काम हाऊ थाये ।– भी. ३९५ ५५५१

ठंडी-मीठी बातें सबको सुहाती हैं, उससे सारे काम बन जाते हैं ।

—इसके विपरीत कटु बात सच होते हुए भी बुरी लगती है । बना-बनाया काम बिगड़ जाता है ।

—मुँह से संबंध बिगाड़ने में बड़ी हानि होती है ।

टापरौ सिळगाय कुण तपै ? ५५५२

टपरा जलाकर कौन तापना चाहता है ?

—अकिंचन सुख की खातिर भारी क्षति उठाना ठीक नहीं । जिस प्रकार अपनी झोंपड़ी जला कर उससे तापना बुरा है, उसी तरह सारी संपत्ति लुटाकर मामूली लाभ उठाना शोभनीय नहीं है ।

—परिवार में कलह की आग कोई लगाना नहीं चाहता ।

टाबर अर गिंडक नै धुरकार्यो ौ ई आछौ । ५५५३

बच्चे और कुत्ते को दुत्कारना ही अच्छा है ।

—बच्चे और कुत्तों को दुत्कारने की बजाय पुचकारने से हानि पहुँचाते हैं ।

—बच्चा चंचल होता है, कुत्ता अशांतिप्रिय होता है, इसलिए झिड़कने से चुप रह जाते हैं ।

टाबर अर छाळी, सेडळ माता रखवाळी । ५५५४

बच्चे व बकरियाँ जायीं, संरक्षक शीतला माई ।

—बहुधा छोटे बच्चों व बकरियों पर चेचक का प्रकोप ज्यादा होता है । शीतला माई उनकी रक्षा करे तो करे ।

—असहाय का सहायक भगवान ।

टाबर किणरौ के धणी रौ ? ५५५५

बच्चा किसका कि पति का ?

—विवाहित औरत अपनी अवैध संतान को वैध बताकर दोष मुक्त हो जाती है ।

—जब कोई अपराधी अपने अकर्म छिपाकर दोष मुक्त होना चाहे तब ।

टाबर तौ आज मरै अर कालै सोगाळ कांईं कांम आसी ? ५५५६

बच्चे तो आज मर रहे हैं, तब कल इफरात किस काम की ?

—अभावग्रस्त परिवार के बच्चे तो आज भूखों मर रहे हैं, तब भविष्य में अनाज की गाड़ियाँ क्या काम आएँगी ?

—समय पर आवश्यकता की पूर्ति हो तभी वह कल्याणकारी है ।

टाबर तौ नागा ई फिरै । ५५५७

बच्चे तो नंगे ही फिरते हैं ।

—बच्चों के लिए सामाजिक अनुशासन पूरा लागू नहीं होता ।

—सामाजिक मर्यादा के प्रति बच्चों की उतनी चेतना नहीं होती, इसलिए उनके द्वारा उल्लंघन की कोई परवाह नहीं करता ।

टाबर तौ पेट में ई लात मारै । ५५५८

बच्चे तो पेट में भी लातें मारते हैं ।

—बच्चे तो जन्म से पहिले ही चंचल होते हैं इसलिए उनकी शरारत क्षम्य है ।

—बच्चों की चंचलता उनका अवगुण नहीं प्रकृति प्रदत्त नियामत है ।

टाबर तौ रोटी मांगै इज । ५५५९

बच्चा तो रोटी माँगता ही है ।

—बच्चों को भूख ज्यादा लगती है । हाथ सूखा और बच्चा भूखा । और उन्हें सामाजिक मर्यादा का उतना बोध भी नहीं होता कि वे संकोच करें । बच्चा तो प्रकृति-पुत्र है । जब भी खाने-पीने की तलब होती है, माँग लेता है । उसके लिए तो सभी घर अपने ही होते हैं ।

टाबर दूबळा घणा के चिणां रौ खांण के चिणां व्है तौ ऊभा ई चाब जावां । ५५६०

बच्चे दुबले बहुत हैं कि चनों का चबेना कि चने हों तो खड़े-खड़े ही चबालें ।

—जब किसी घर का मुखिया अपनी गरीबी छिपाने का प्रयास करे और नासमझ बच्चे उजागर कर दें तब ।

—अपने घर की कमजोरी या अभाव सभी ढाँपने की चेष्टा करते हैं, पर बच्चे अजाने ही ढक्कन उघाड़ लें तब।

टाबर देखै हियौ, डोकर देखै कियौ। ५५६१

बच्चे भाव देखते हैं, बुजुर्ग काम देखते हैं।

—बच्चे तो निस्वार्थी और निर्लोभी होते हैं, उन्हें तो मीठी बातों से भी बहलाया जा सकता है, पर अनुभवी बुजुर्ग बातों से खुश नहीं होते, वे तो ठोस काम व स्वार्थसिद्धि से ही प्रसन्न होते हैं।

—बच्चे मन टटोलते हैं, बुजुर्ग धन टटोलते हैं।

टाबर नै कांई जोवौ, टाबर रौ मांमाळ जोवौ। ५५६२

बच्चे को क्या देखते हो, बच्चे का ननिहाल देखो।

—जो व्यक्ति वंश की विशुद्धता और कुलीनता को ही सर्वोपरि समझते हैं, उन्हें लक्ष्य करके यह उक्ति कही जाती है, शेष सारी बातें गौण—मसलन आर्थिक बहबूदी, रूप-रंग और शिक्षा इत्यादि।

टाबर नै डोकर रौ मन सारीसौ। ५५६३

बच्चे और बूढ़े का मन एक समान।

—बच्चे की तरह बूढ़ा भी निरुपाय होता है।

—बच्चा हर चीज खाने के लिए ललचाता है, उसी प्रकार बूढ़ा भी।

—छोटी उम्र के बच्चे अबोध होते हैं, उसी प्रकार साठ बरस के बाद बुड्ढे भी सठिया जाते हैं।

—बच्चों के उनमान बूढ़ों को भी बहलाना आसान है।

टाबर नै हिंयाळी देवणी, सिसू-पीसू नीं करणौ। ५५६४

बच्चे को स्नेह से बहलाना चाहिए, उसे शिशु-पशु कहना उचित नहीं।

—बच्चा स्नेह से पलता है, डाँट-फटकार से नहीं।

—बच्चे को बड़ा करना सबसे मुश्किल काम है और महत्त्वपूर्ण भी।

टाबरपणै सीखोड़ी लोह री लकीर । ५५६५

बचपन की सीख, लोह की लीक ।

—बचपन के संस्कार बड़े स्थायी होते हैं, इसलिए बचपन में ही शिक्षा का महत्त्व सर्वोपरि है । वह अंत तक अमिट रहता है ।

—बच्चे के कोमल अंतस् में बैठी बात आजीवन अक्षुण्ण रहती है ।

टाबर पेट, बाजरी खेत, वस-पांचूं रौ सावौ । ५५६६

बच्चा पेट में, बाजरी खेत में, वसंत पंचमी का लगन ।

—संतान पेट में है, यह भी पता नहीं कि बच्चा होगा या बच्ची, खेत में बाजरी खड़ी है, यह भी पता नहीं कि सूखे से फसल नष्ट होगी या अतिवृष्टि से । और वसंत पंचमी के शुभ दिन, हे जँवाई तुम गाजों-बाजों के साथ आना । ऐसी निराधार झूठी आशा, जो घनघोर निराशा से भी बदतर होती है ।

—शेखचिल्ली की तरह हवाई कल्पना करने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष ।

पाठा : **थळ थेट, बेटी पेट, आजै जंवाई पावणा ।**

टाबर मर्‌यां सुगाळ नीं व्है । ५५६७

बच्चे मरने से सुकाल नहीं होता ।

—बच्चे मरने से बचत नहीं होती । हर कोई अपने भाग्य की खाता है और बचाता है ।

—खर्च कम करने की बजाय आखिर तो कमाने मे पार पड़ता है ।

टाबर रै बिरौबर टाबर थोड़ौ ई होईजै । ५५६८

बच्चे के बराबर बच्चा थोड़े ही हुआ जाता है ।

—बच्चा गलती करे तो बड़े को गलती नहीं करनी चाहिए ।

—बच्चा तो नादानी में गलती करता है, तब समझदार आदमी को वैसी ही गलती करना जरूरी नहीं । विवेक फिर किस दिन के लिए होता है !

टाबर सूं हांसौ, मूरख सूं तमासौ । ५५६९

बच्चे से हँसी और मूर्ख से दिल्लगी ।

—बच्चे से हँसी-ठिठौली और मूर्ख से मजाक नहीं करनी चाहिए ।

—हँसी-ठिठौली बराबरी वाले से की जाती है और दिल्लगी या तमाशा हम उम्र समझदार के साथ करना चाहिए, वरना ये हानिकारक सिद्ध होते हैं।

टाबर है पण लांठां रा ई कांन कतरै। ५५७०

बच्चा है पर बड़ों के भी कान कतरता है।

—छोटी उम्र का बच्चा जब ज्यादा होशियारी बताये तब।

—अमूमन बनिये के बच्चों की विशेष चतुराई देखकर यह कहावत प्रयुक्त होती है।

टाबरां री टोळी भूंडी, घर में नार बोळी भूंडी। ५५७१

बच्चों की टोली बुरी, घर में औरत बधिर बुरी।

—बच्चों की टोली को बानर-सेना भी कहा जाता है, वे एक जगह इकट्ठे हो जाएँ तो उत्पात ही करते हैं। घर में बधिर औरत हो तो ऊँचे स्वर में बोलना पड़ता है। घर का भेद पड़ोसी सुन लेते हैं। ऐसी कहावतों में केवल तुकबंदी के कारण ही समन्वय होता है। दूसरी भाषाओं में वैसी तुकबंदी होना संभव नहीं। इसलिए तारतम्य टूट जाता है।

टाबर री दोस्ती नै जीव रौ जंजाळ। ५५७२

बच्चों की दोस्ती, जी का जंजाल।

—इस कहावत का सूत्र ऐसी ही एक अन्य कहावत में मिलता है। एक औरत की सखी उसे नसीहत देती है कि 'कुत्ता ठोकी कर लीजै, पण टाबर ठोकी मत कीजै।' मतलब कि कुत्ते से संभोग करवा लेना पर बच्चे से नहीं। कुत्ता तो जाने-अजाने किसी से कहता नहीं, पर बच्चा तो भेद खोलेगा-ही-खोलेगा। इसलिए उससे साँठ-गाँठ जी का बबाल बन जाती है। उनकी चंचलता क्या आफत ले आये, पता नहीं चलता।

पाठा : नादान री दोस्ती जीव रौ कळेस।

टाबरां री रांमत टाबरां नै ई ओपै। ५५७३

बच्चों का खेल बच्चों को ही सोहे।

—हर उम्र का अपना तकाजा होता है और वह उसी उम्र में शोभा देता है, उचित लगता है। बच्चों की चंचलता, उनके भोलेपन और उनके खेल तमाशों का अपना ही आनंद है। पर

उनका अनुकरण प्रौढ़ावस्था या बुढ़ापे में किया जाय तो अत्यंत फूहड़ और कुत्सित हो जाता है। मसलन गुड्डा-गुड्डी का खेल बच्चों के लिए कितना आनंद-दायक है, पर बड़े होने पर उसका अनुकरण किस सीमा तक कुत्सित् हो जाता है।

—बच्चों की नादानी उनका गुण है,उनकी शोभा है,पर बड़ों के लिए वह अवगुण बन जाती है। अशोभनीय लगती है।

टाबरां सूं घर बसता व्है तौ बूढ़ां नै कुण बूझै ? ५५७४

बच्चों से घर बसे तो बूढ़ों को कौन पूछे ?

—बच्चे अनुभवहीन होते हैं, इसलिए घर का संचालन करने में असमर्थ हैं। बूढ़े-बुजुर्ग अनुभवों के ही भंडार हैं इसलिए उनकी सर्वत्र पूछ होती है। और परिवार सुचारु रूप से चले,उसके लिए अनुभव अनिवार्य है। पर यह बात याद रखने की है कि अनुभव-हीनता बच्चों का गुण है और अनुभव-दक्षता बूढ़ों का।

टाबरियां घर बसै तौ बाबौ बूढ़ी क्यूं लावै ? ५५७५

बच्चों से घर बसे तो बाबा बूढ़ी क्यों लाये ?

—माँ के दिवंगत होने पर यदि बच्चे घर का काम सँभाल लें तो पिता को दूसरी पत्नी लाने की क्या जरूरत ! मगर नौसिखियों से घर नहीं चलता इसलिए बाबा बूढ़ी औरत से ब्याह कर लाता है ताकि घर का संतुलन बरकरार रहे।

पाठा : **छोकरियां घर बसै तौ बाबौ बूढ़ी क्यूं लावै।**

टाबरिया फळ खावै , गवर माता गुण मांनै। ५५७६

घर के बच्चे फल खाएँ, माँ-गणगौर गुण माने।

गवर माता = गणगौर। राजस्थान की वरकांक्षिणी कुमारियों और सौभाग्यवती महिलाओं का एक हर्षोल्लासपूर्ण पवित्र सांस्कृतिक पर्व या त्योहार।

गुण = एहसान।

संदर्भ : दांपत्य प्रेम के उच्चादर्श के रूप में शंकर-पार्वती के जोड़े की अभिव्यक्ति ही 'गणगौर पूजा' महोत्सव में होती है। पूरे अठारह दिन गणगौर पूजा के रूप में इस त्योहार की चहल-पहल रहती है। प्रसाद के लिए आटे में फोग के बीज डालकर ढोकले बनाये जाते हैं,उन्हें फल कहा

जाता है। गणगौर को प्रसाद चढ़ाने के बाद परिवार के बच्चे वे फल खाते हैं—बड़े शौक से। और गणगौर एहसान मानती है।

—जिस काम में दुहरा लाभ हो तब !

मि.क.सं.३९७२

टार ई खावै कुटार ई खावै। ५५७७

घोड़ा-घोड़ी भी खाते हैं, टट्टू भी ख़ाते हैं।

—घोड़ा-घोड़ी और टट्टुओं के अतिरिक्त अन्य पशुओं पर भी यह कहावत लागू होती है कि खाने इत्यादि का खर्च तो अच्छे-बुरे या महँगे-सस्ते मवेशी में बराबर होता है, पर उपयोग या फायदे में बेशी फर्क होता है। अतएव लाभ-हानि की तुलना को ध्यान में रखते हुए यह कहावत प्रयुक्त होती है कि सस्ते की बजाय महँगा और अच्छी नस्ल का मवेशी अंततः सब दृष्टि से ज्यादा उपयोगी और फायदेमंद साबित होता है।

टार मार्‌यां केकांण कांपै। ५५

टट्टू को मारने पर घोड़ा भी काँपता है।

—दुबले-पतले घोड़े को पीटने से पास में खड़ा अच्छी नस्ल का घोड़ा भी भयभीत होता है।

—निर्बल को शक्ति से दबाकर रखने से शक्तिशाली या बदमाश स्वतः डर जाता है।

मि.क.सं.५५३१

टाला-टोगड़ा लेयनै विखा में राखलौ भलांईं, पण मऊ-माळवै जांणौ इज पड़सी। ५५७९

अच्छे-चुनिंदा मवेशी अकाल में भले ही रखलो, पर बाकी सामान्य पशुओं को लेकर मालवा जाना ही पड़ेगा।

संदर्भ : पश्चिमी राजस्थान में अकाल पड़ने पर आम प्रजा अपने मवेशी लेकर मालवा प्रांत में जाती थी।

—यह कहावत चुनिंदा पशुओं के अलावा चुनिंदे मनुष्यों पर भी लागू होती है कि दुख या विपत्ति के समय गिनती के बड़े मनुष्य ही अविचलित रहकर अपने स्थान पर रह सकते थे, पर आम रैयत को विचलित होकर गुजर-बसर के लिए मवेशियों के साथ मालवा जाना

पड़ता था। राजा-ठाकुर तब इतने सक्षम नहीं होते थे कि वे आम-प्रजा के लिए अनाज-घास की व्यवस्था कर सकें।

—सामूहिक विपत्ति के समय कुछेक साधन-संपन्न व्यक्ति टिके रह सकते हैं, पर आम-प्रजा का हाल बिगड़ जाता है।

टाली री दौड़ पींपळी तांई। ५५८०

गिलहरी की दौड़ पीपल तक।

—छोटी-मोटी आफत के डर से गिलहरी झटपट पास के पेड़ पर चढ़ जाती है। उसका एकमात्र सहारा पेड़ ही होता है।

—किसी भी असहाय व्यक्ति के सीमित साधनों की ओर इस उक्ति का लक्ष्य है। मसलन मियाँ की दौड़ मस्जिद तक।

पाठा : टीली री दौड़ खेजड़ी तांई। टीलोड़ी रौ वासौ रूंखड़ा।

टाळौ ईस अर बैठौ बीस। ५५८१

छोड़ो ईस और बैठो बीस।

ईस = चारपायी या खाट की लंबी पट्टी जो बाजू में रहती है।

—ईस को छोड़कर बीस आदमी बैठें तब भी वह नहीं टूटती, पर एक ही आदमी कुछ जोर से बैठे तो वह टूट जाती है। सूखी लकड़ी लचकदार नहीं होती, पर ताना-बाना लचकीला होता है।

—हर छोटे-बड़े काम में युक्ति अनिवार्य है, तभी वह संपन्न होता है।

दे.क.सं. ४७८८

टाळ्यां टळै नै बाळियां बळै। ५५८२

टालने से टल जाय, जलाने से जल जाय।

—कोई भी विघ्न टालने पर टल जाता है और उकसाने पर बढ़ जाता है।

—कैसी भी कठिन स्थिति में आदमी को विवेक से काम लेना चाहिए ताकि वह बिगड़ने से बच जाय।

टिकोरौ हिलायां मिळै तौ कमाई सारू कुण थुड़ै। ५५८३

टकोरा हिलाने से मिल जाय तो कमाई के लिए कौन मेहनत करे।

—पंडे पुजारियों पर कटाक्ष कि जब आराम से बसर हो, तब क्यों खामखाह शरीर को कष्ट दें। क्यों खून-पसीना एक करें।

—अकर्मण्य व आलसी व्यक्ति को लक्ष्य करके।

टिर ऊपर बाळ नहीं, मर ऊपर गाळ नहीं। ५५८४

जीभ पर बाल नहीं, मरने से बड़ी गाली नहीं।

—यदि मनुष्य की जीभ पर बाल या उस में हड्डी हो तो उसके मुँह से बोल तक नहीं फूटते। किंतु लाचार व्यक्ति बिना प्रतिरोध किये चुपचाप सह लेता है। मौत से भी बड़ी यातना का घूँट पी लेता है।

टींगर रोवै नै रांड पोवै। ५५८५

बच्चे रोयें ओर फूहड़ पोये।

—फूहड़ औरत को किसी काम का सलीका नहीं होता। बच्चे भूख के कारण रोने लगते हैं, तब वह रोटियाँ बनाने बैठती है।

—जिस नासमझ व्यक्ति के काम में तरतीब नहीं होती, उस पर।

—जो अहदी या आलसी व्यक्ति समय पर काम नहीं कर सके।

टींटोड़ी री टांगां लांबी हुवै। ५५८६

टिटहरी की टाँगें लंबी होती है।

टींटोड़ी = टिटहरी। लंबी और पतली टाँगों की यह चिड़िया अक्सर पानी के पास रहती है। जमीन के अलावा किसी पेड़ पर नहीं बैठती। अपने अंडों व बच्चों के प्रति बेइंतहा सतर्क रहती है। ऐसी भी लोक मान्यता है कि जब तक उसके अंडों से बच्चे निकलकर समर्थ न हों, तब तक बारिश नहीं होती। कुदरत भी उसके बच्चों का खयाल रखती है। पाँखें होते हुए भी वह ज्यादा उड़ती नहीं, पतली टाँगों पर बहुत तेजी से दौड़ती है।

—कुदरत हर प्राणी में कुछ-न-कुछ विशेषता रखती है। कुदरत के वैविध्य की ओर संकेत।

टींटोड़ी समद उळीच्यौ, पाखियां रै पांण। ५५८७

टिटहरी ने समंदर उलीचा, पक्षियों के सहारे।

संदर्भ-कथा : समुद्र के किनारे एक टिटहरी ने अंडे दिये। उनकी हिफाजत के लिए वह आठों पहर चौकस रहती। ज्वार के कारण समुद्र का पानी आगे बढ़ने लगा तो टिटहरी ने चिल्ला-चिल्लाकर समुद्र से खूब आरजू-मिन्नत की। पर विशाल हौसले का समंदर निरीह पक्षी की क्या परवाह करता ! अपने दर्प में आगे बढ़ता गया। और घोंसले सहित टिटहरी के अंडे निगल गया। माँ की ममता भला क्योंकर धीरज रखती ? उसके हृदय-विदारक आह्वान से दुनिया के छोटे-बड़े सभी पक्षी वहाँ एकत्रित हुए। जिसकी चोंच में जितना भी पानी समाया, उसे बाहर उलीचने लगा। अनंत समुद्र का पानी सूखने लगा तो आखिर उसने हार मानी और टिटहरी के अंडे सुरक्षित सौंप दिये।

—संगठन की शक्ति अपराजेय है।

—दंभ किसी का भी कायम नहीं रहता।

टीकली कमेड़ी। ५५८८

नामजद कुमरी।

—गाँव के लाल-बुझक्कड़ विशिष्ट व्यक्ति को परिहास में 'टीकली कमेड़ी' कहकर संबोधित किया जाता है।

—आज-कल के फर्जी नेताओं के लिए यह कहावत उपयुक्त है।

टीकलौ रांधी लापी, भीखलौ आयौ आपी। ५५८९

अमुक ने बनाया हलुवा, तमुक पहुँचा बिन-बुलाया।

—आमंत्रण के बिना ही जो व्यक्ति किसी आयोजन या उत्सव में पहुँच जाय।

—'मान-न-मान मैं तेरा मेहमान' से मिलती-जुलती कहावत।

टीका री वेळा लिलाड़ पाछौ करै। ५५९०

तिलक की वेला ललाट दूर खिसकाये।

—जो व्यक्ति लाभ की उपयुक्त वेला वंचित रह जाय तब।

—जो नामसझ व्यक्ति उचित अवसर का फायदा न उठा सके तब।

पाठा : टीका रै टांणै लिलाड़ अळगौ करै ।

टीकी तौ लिलाड़ रै इज दिरीजै । ५५९१

बिंदिया तो ललाट पर ही दी जाती है ।

—बिंदिया ललाट पर ही दी जाये तभी दोनों की शोभा है ।

—अधिकारी व्यक्ति को उसका उचित प्राप्य मिल जाने पर ।

टीकी माथै टीकी । ५५९२

बिंदी पर बिंदी ।

—ईर्ष्यावश जो काम किया जाय, उसके लिए ।

—सुहागिन औरत अतिशय साज-सिंगार करे तब भी शोभा देता है ।

—जिस व्यक्ति को यश के बाद यश मिलता जाये ।

पाठा : टीकी माथै टीकी दीधां टाळ कांईं ठा पड़ै ।

टीकौ सभागिया रै भाग । ५५९३

तिलक सौभाग्यशाली को ही नसीब होता है ।

—अभागे के लिए विवाह का आनंद कहाँ, वह तो भाग्यशाली के ही निमित्त है ।

—किसी व्यक्ति का भाग्य अचीता फले तब ।

पाठा : टीलू तकदीर वाळा नै थाय ।– भी. ३९६, टीलू = तिलक ।

टीडारांम वेद हाळी सधगी । ५५९४

टीडाराम वैद्य वाली पार पड़ गई ।

—योग्यता के बिना किसी व्यक्ति को खामखाह यश मिल जाय जब ।

—जब कोई अनहोनी बात संयोग से सफल हो जाये तब ।

टीपणौ तौ जोसी ई बांचसी । ५५९५

पंचांग तो जोशी ही बाँचेगा ।

—जो व्यक्ति जिस काम के योग्य होता है, वही उसका उचित अधिकारी है ।

—जो व्यक्ति किसी काम के लिए अपरिहार्य हो ।

टीली री टगटगाट कुण सुणै ? ५५९६

गिलहरी की सुगबुगाहट कौन सुने ?

—गरीब या असहाय की फरियाद कोई नहीं सुनता।

—निर्बल की सहायता कोई नहीं करता।

—निर्धन की कहीं पूछ नहीं होती।

—अनाथ सर्वत्र उपेक्षणीय रहता है।

टुकड़ा दै-दै बछड़ा पाळ्या, सींग व्हियां मारण चाल्या। ५५९७

टुकड़े दे-देकर बछड़े पाले, सींग हुए तब मारन आये।

—खिला-पिलाकर बछड़ों का पालन-पोषण किया, किंतु जब बड़े हुए तो पोषक को ही मारने लगे।

—कृतघ्न पुत्रों के लिए जो बड़े होने पर माँ- बाप पर धौंस जताएँ।

टुकड़ा वगर मोटा मोटा रूकाई जाय।– भी. २८८ ५५९८

टुकड़ों के बिना बड़े-बड़े अटक जाते हैं।

—टके या पैसों के बिना बड़े-बड़े निष्क्रिय हो जाते हैं। किसी काम के लिए उन्हें राह नहीं मिलती।

—साधन-हीन व्यक्ति कभी आगे नहीं बढ़ सकता। उसकी प्रगति अवरुद्ध हो जाती है।

टुकड़ौ राळ्यां कुत्तौ ई पूंछ हिलावै। ५५९९

टुकड़ा डालने पर कुत्ता भी पूँछ हिलाता है।

—रिश्वत का टुकड़ा डालने पर कैसा भी खूँखार अधिकारी पूँछ हिलाने लगता है।

—रुपया सर्व-शक्तिमान है, जिसके सामने बड़े-बड़े महाबली पस्त हो जाते हैं।

टुकड़ौ राळ्यां टाळ गिंडक भुसतौ नीं ढबै। ५६००

टुकड़ा डाले बिना कुत्ते का भूँकना बंद नहीं होता।

—जब तक रिश्वत न मिले अधिकारी गुर्राता है।

—भ्रष्ट अधिकारी का विशिष्ट लक्षण कि रिश्वत न मिलने पर वह सिद्धांत झाड़ता है। रिश्वत का कौर मुँह में आते ही उसका मुँह बंद हो जाता है।

टुकयक-टुकयक करतां सरवर छिलै। ५६०१

बूँद-बूँद से सरोवर भर जाता है।

—थोड़ा-थोड़ा संचय करने से ही माया के भंडार भरते हैं।

—संसार में अकिंचन कुछ भी नहीं, हर छोटी-से-छोटी चीज की अपनी अहमियत है। बूँदों की अनुकंपा का स्वरूप ही तो सरोवर है।

पाठा : छांट-छांट सूं सरवर छिलै अर छांट-छांट उडियां सरवर सूखै।

टुळता नै पुळतौ नीं पूगै। ५६०२

चलने वाले को चिंतक नहीं पहुँच सकता।

—जो व्यक्ति मंजिल की खातिर अपनी राह चल पड़ता है, बैठे-बैठे योजना बनाने वाला उसकी होड़ नहीं कर सकता।

—सोच-विचार करने वाले की बजाय जो व्यक्ति काम शुरू कर देता है, हमेशा सफलता में आगे रहता है।

टूटी हथियार ने टूटो-लूटो बेटो वगत में काम आवे।—भी. ३९७ ५६०३

टूटा हथियार और लूला-लँगड़ा बेटा समय पर काम आता है।

—संसार में कोई भी वस्तु नगण्य व उपेक्षणीय नहीं होती, किसी-न-किसी जरूरत पर काम आ ही जाती है।

—दुनिया में व्यर्थ चीज की भी अपनी सार्थकता है जो समय पर ही चरितार्थ होती है।

टेक्टर मैसी, घी देसी। ५६०४

ट्रेक्टर मैसी और घी देसी।

—ट्रेक्टरों में सबसे अच्छा ट्रेक्टर मैसी फर्ग्यूसन और स्वास्थ्य के लिए सबसे अधिक पौष्टिक देशी घी।

—लोक-जीवन अपने बदलते अनुभवों से नये-नये लोक-गीत, नई-नई सूक्तियाँ और नई-नई कहावतें सृजित करता रहता है। मानवीय जीवन के सामूहिक अवचेतन का यह निरंतर प्रवाह कभी रुकता ही नहीं।

टेढ़ी आंगळी टाळ घी नीं निकळै । ५६०५

टेढ़ी अँगुली के बिना घी नहीं निकलता ।

—जमा हुआ घी टेढ़ी अँगुली से ही बाहर आता है, सीधी अँगुली से नहीं ।

—कुटिल व्यक्ति सद्व्यवहार से नहीं मानता वह टेढ़ी हरकतों से ही सीधा होता है ।

पाठा : सीधी आंगळी घी कद नीसरै !

टेढ़ी खीर । ५६०६

टेढ़ी खीर ।

संदर्भ-कथा : एक जन्मांध ने बार-बार लोगों के मुँह से खीर की अत्यधिक प्रशंसा सुनी तो उसने अचरज करते किसी व्यक्ति को पूछा, 'जिस खीर की आप इतनी तारीफ करते हैं, वह कैसी होती है ?' आँखों वाले उस आदमी को अंधे की बात बड़ी अटपटी लगी । कहा, 'इस में पूछने की क्या बात, खाकर देख ले ।'

'ना, पूरी जानकारी के बगैर मैं कोई काम नहीं करता । मेहरबानी करके मुझे समझाएँ कि यह खीर क्या बला है ?' अंधे की जिज्ञासा स्वाभाविक थी । 'बला ? बला फिर कैसी ? खीर तो खीर ही होती है, इतना भी नहीं जानता ?' 'तभी तो पूछ रहा हूँ । आप की तरह हम आसानी से कोई बात कैसे जान सकते हैं ? हम अंधों की परेशानी तो भगवान भी नहीं समझता । शायद वह भी मेरी तरह अंधा हो । पर आपने तो अपनी आँखों से अच्छी तरह देख-भालकर खीर खाई होगी । फिर उसके बारे में बताना क्या मुश्किल है ? आप मुझे मामूली इशारा ही कर दें तो मैं सब समझ जाऊँगा । अंधों की अकल बड़ी तेज होती है ।' आँखों वाले के सामने बड़ी विकट समस्या खड़ी हो गई कि इस अंधे को कैसे समझाए कि खीर कैसी होती है ? हर चीज को देखने की इतनी बड़ी नियामत के बावजूद एक अंधे के सामने खामखाह लज्जित होना पड़ेगा । मामूली माथा लड़ाते ही उसे एक बात सूझी, खीर का रंग सफेद होता है और बगुले का रंग भी सफेद होता है । जोश के साथ बोला,'खीर का रंग बगुले की तरह सफेद होता है ।'

अंधे ने फिर शंका की,'और यह बगुला कैसा होता है ?'

खुली आँखों को और अधिक उघाड़कर उस आदमी ने कुछ देर सोच-विचार किया । फिर कहा,'बगुले की गरदन इस तरह टेढ़ी होती है ।' 'किस तरह टेढ़ी होती है, जरा और खुलासा करके समझाएँ ?'

तब उसने अपनी कोहनी बगुले की गरदन के समान टेढ़ी बनाई। एकदम पास आकर बोला, 'थोड़ा हाथ फिराकर समझने की कोशिश कर, सब समझ में आ जाएगा।'

और अंधे के द्वारा तीन बार हाथ फिराते ही उसकी समझ में आ गया। अचरज प्रकट करते बोला, 'तो क्या खीर इस तरह लंबी और टेढ़ी होती है ? तब तो लोग-बाग उसकी बेकार ही तारीफ करते हैं। ऐसी टेढ़ी खीर गले में फँस जाए तो प्राण लेकर ही छोड़े। आँखों वाले शायद उसे छून-छूनकर ही खाते होंगे। पर मैं तो मरते दम तक कभी खीर नहीं खाऊँगा। भगवान आपका भला करे कि मुझे सावचेत कर दिया।'

और उस अंधे ने सचमुच ही गले में अटक जाने के डर से जीवन पर्यंत खीर नहीं खाई। उसे अपने संकल्प की दृढ़ता पर बेहद अभिमान था।

—अच्छी तरह समझे बिना जो व्यक्ति ज्ञान का थोथा अभिमान करता है, उसकी जानकारी अंधे की उस टेढ़ी-खीर से बढ़कर नहीं होती।

—अज्ञान का अहंकार बड़ा अडिग होता है।

टेढ़ौ चालतौ सांप बिल में वड़तौ सीधौ व्है। ५६०७

टेढ़ा चलता साँप बिल में घुसते समय सीधा हो जाता है।

—जो दुष्ट व्यक्ति बाहर उत्पात मचाते हैं, अपने घर में आते ही सीधे हो जाते हों, उनके लिए।

—कैसा भी कुटिल व्यक्ति कहीं-न-कहीं तो सामान्य रहता है।

टेम आयां हाडां री ई पूछ हुवै। ५६०८

वक्त आने पर कौओं की भी पूछ होती है।

—अनुकूल समय आने पर सर्वथा उपेक्षणीय व्यक्ति का आदर-सम्मान किया जाय तब।

—चुनावों के दौरान आजकल मतदाताओं की कितनी खुशामद की जाती है, पर उससे पूर्व उन्हें कोई नहीं पूछता। जिस तरह श्राद्ध-पक्ष के अलावा कौओं की पूछ नहीं होती।

टेम टळ्यां पिछतावौ पोतै। ५६०९

समय बीतने पर पछतावा शेष।

—मनुष्य के लिए समय का ही सर्वाधिक महत्त्व है। समय पर गफलत करने पर पश्चाताप के अलावा कुछ भी हाथ नहीं लगता।

—समय पर काम करने वाला व्यक्ति निश्चित रूप से सफल होता है।

टेम टळ्यां पूठै टीपणौ कांईं करै ? ५६१०

समय टलने पर पंचांग क्या करे ?

—मुहूर्त चूकने पर पंचांग में दोष निकालना व्यर्थ है।

—समय पर काम करना ही सार्थक होता है।

टेम पड़्यां फूट्योड़ा बासण ई नीं लाधै। ५६११

जरूरत के समय फूटे बासन भी नहीं मिलते।

—किस्मत फूटी हो तो फूटे बासन भी हाथ नहीं लगते।

—समय पर किसी आधे-अधूरे व्यक्ति का भी साथ नहीं मिले तब।

टेम री कांण, मिनख रौ मोटौ गुण ५६१२

समय का सम्मान, मनुष्य का बड़ा गुण है।

—जो व्यक्ति समय का मान रखेगा, तो समय भी उसका मान रखेगा।

—समय की पाबंदी रखने पर, सारे काम पाबंद रहते हैं।

टेम रौ टंटौ तौ मर्‌यां ईं मिटै। ५६१३

समय का झंझट तो मरने पर ही मिटता है।

—मनुष्य का जीवन है क्या ? केवल समय ही तो। समय के साथ ही माँ की कोख में भ्रूण उत्पन्न होता है। नौ महीने का समय बीतने पर ही संतान का जन्म होता है। समय पर ही सर्वथा निरीह शिशु घुटनों के बल चलता है, फिर पाँवों पर। समय पाकर ही वह जवान होता है। बूढ़ा होता है। समय पर ही दाँत निकलते हैं, गिरते हैं। बाल सफेद हो जाते हैं। गर्दन हिलने लगती है। बलिष्ठ युवक वृद्धावस्था में फिर शिशु के उनमान असहाय हो जाता है। भ्रूण के पहिले और मृत्यु के बाद किसी का कोई अस्तित्व नहीं रहता।

—मरने से पहिले समय की दखल नहीं मिटती।

टेम-सर कांम करण में ईं सार है। ५६१४

समय पर काम करने में ही सार है।

—इस दुनिया में कोई सार-वस्तु है तो समय। और समय में ही सारे सार-तत्त्व निहित हैं। बीज को समय पर पानी न मिले तो वह अंकुरित ही नहीं होता। और समय-समय पर नियमित सार-सँभाल करने पर ही फसल हाथ लगती है।

—समय पर काम करना ही, सफलता की एकमात्र कुंजी है।

टेमौ-टेम सै मोटा व्है। ५६१५

समय-समय पर सभी मोटे होते हैं।

—प्राणी-जगत् में क्या पेड़, क्या कोंपल, क्या अंकुर, क्या चूहा और क्या हाथी समय पाकर ही बड़े होते हैं। समय को कोई जीत नहीं सकता।

इसी आशय का दोहा भी है :

धीरे धीरे रे मना, धीरे सब-कुछ होय।
माली सींचै सौ घड़ा, रितु आयै फल होय॥

टोकार सूं तौ भाटौ ई भागै। ५६१६

नजर लगने से पत्थर भी टूट जाता है।

—लोक-मान्यता के अनुसार नजर लगने का भी कम जादू नहीं है। हाथी पलक में लुढ़क जाय। कैसा भी शिला-खंड चूर-चूर हो जाय।

—दूसरा लक्षणात्मक अर्थ यह भी है कि प्रशंसा करने से व्यक्तित्व खंडित होता है।

टोगड़ा चरावता तौ बाप रै ई घणा हा। ५६१७

बछड़े चराते तो बाप के घर भी काफी थे।

संदर्भ-कथा : किसी किसान का बेटा काफी आलसी था। काम के नाम पर उसे मौत आती थी। न ढोर-डंगर चराता और न खेती के किसी काम में हाथ बँटाता। गाँव के पास ही राम संन्यासियों का बड़ा रामद्वारा था। बीसियों गाएँ-बछड़े। आराम-तलबी राम-संन्यासियों का मुस्तंड शरीर देखकर वह आलसी बेटा एक दिन उस रामदुआरे की शरण में चला गया। कुछ दिन तो महंत ने उसे आराम से खिलाया-पिलाया। एक दिन मौका देखकर उसे काम में जोतना मुनासिब समझा। उस महा-आलसी चेले को जंगल में बछड़े चराने के लिए कहा तो उसने जवाब दिया, 'बछड़े ही चराने होते तो बाप के घर भी इनकी कमी नहीं थी।'

—जो व्यक्ति जन्म से आलसी और अहदी होते हैं, उन्हें कहीं भी काम करना नहीं सुहाता।

टोगड़ियौ खूंटै रै पांण कूदै। ५६१८

बछड़ा खूँटे के जोर पर कूदता है।

दे. क. सं. ३०४५

टोटा नी टापरी मांये रात-दाड़ौ राड़।– भी. ३९८ ५६१९

टोटे की टपरी में रात-दिन राड़।

—अभावग्रस्त परिवार में रात-दिन कलह मिटती ही नहीं।

—आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति न होने के कारण संतुलन रख पाना संभव नहीं होता, इसलिए झगड़ा होना स्वाभाविक है।

—निर्धन के घर में हमेशा रोना-रींकना।

—आदमी नहीं लड़ते टोटा लड़ता है।

पाठा : तोटा री टपरी में, रात-दिहाड़ै राड़। टोटौ लड़ै।

ठ-ठौ

ठगां रै ठग ई पांवणा। ५६२०

ठगों के ठग ही पाहुने।

—समान लच्छन वालों की मंडली स्वतः जुड़ जाती है।

—कोई भी व्यक्ति अपनी सोहबत से पहिचाना जाता है।

ठगायोड़ौ बांणियौ अर कूटीज्योड़ौ राजपूत साच नीं बोलै। ५६२१

ठगा हुआ बनिया और पिटा हुआ राजपूत सच नहीं बोलता।

—बनिया यदि ठगा जाय तो उसकी अक्ल का पेंदा आ जाता है। यदि राजपूत किसी से पिट जाय तो उसकी बहादुरी का गुबार निकल जाता है। इस कारण वे झूठी मर्यादा के लिए अपनी कमजोरी को छिपाने की चेष्टा करते हैं।

—प्रत्येक व्यक्ति अपनी शान को बचाने की मंशा से सच्चाई को ढाँपने का प्रयास करता ही है।

ठग्यां ठग, ठगायां ठाकर। ५६२२

ठगने वाला ठग, ठगाने वाला ठाकुर।

—जो व्यक्ति किसी को ठगता है वह ठग है। निकृष्ट व्यक्ति है। और जो व्यक्ति ठगा जाता है, वह बड़ा है। ज्ञानी है। उसकी प्रतिष्ठा बड़ी है।

—कोई भी व्यक्ति कटु अनुभवों से ही सीखता है, सहनशील बनता है। और जो सहनशील है, वही बड़ा है।

ठठारै री बिलड़ी खुड़कां सूं नंह डरै । ५६२३

ठठेरे की बिल्ली आहट से नहीं डरती ।

—ठठेरे लोह, पीतल या ताँबे इत्यादि की चद्दरों को पीट-पीटकर बासन बनाते हैं । बहुत जोर से ठकाठक होती है । अतएव उनके घर में पली बिल्ली सामान्य खटपट की आवाज से नहीं डरती ।

—अति निर्लज्ज व्यक्ति के लिए कि जो मामूली बदनामी की परवाह नहीं करता ।

ठठेरी ठठेरी सूं आटौ-साटौ नीं करै । ५६२४

ठठेरी ठठेरी से अदला-बदला नहीं करती ।

—ठठेरे पुराने बर्तन खरीदकर उन्हें गलाकर पुनः नये बासन बनाते हैं । सस्ते में खरीदते हैं, और नये बासन महँगे बेचते हैं । इसलिए ये हम-पेशेवर से अदला-बदली नहीं करते । उस में नफा नहीं रहता । एक-दूसरे की चालाकी को भली-भाँति समझते हैं ।

—जो व्यक्ति स्वयं चालाक, दुराचारी या भ्रष्ट होता है वह दूसरों का भरोसा नहीं करता, इसलिए कि हर व्यक्ति में उसे अपनी ही प्रतिच्छवि नजर आती है ।

ठांगर रै हेज घणौ, ना-पीरी रै तेज घणौ । ५६२५

ठांगर के स्नेह बहुतेरा, ना-पीहरी के तेज बहुतेरा ।

ठांगर = वह गाय जो सुगमता से दूध नहीं दे ।

ना-पीरी = जिस औरत के पीहर में कोई न हो ।

—कठिनाई से दूध देने वाली गाय अपने बछड़े या बछिया को अधिक स्नेह करती है । जिस अभागी बहू के पीहर में कोई न हो वह चिड़चिड़ी हो जाती है ।

—जो व्यक्ति खामखाह की आत्मीयता का प्रदर्शन करे और काम कुछ न आये । और इसके विपरीत जिस बहू के पीहर में कोई न हो तो वह किसके सामने आत्मीयता प्रकट करे । अतएव उसके स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है ।

ठाकर आवै डोढ्यां, ठकरांणी वगावै लोढ्यां । ५६२६

ठाकुर आये ड्योढ़ी, ठकुरानी फेंके लोढ़ी ।

लोढ़ी = मसाले बाँटने का सिल-बट्टा ।

—बदनाम या चरित्रहीन व्यक्ति को जब उसकी घरवाली घर में न घुसने दे तब।

—तेज स्वभाव की घरवाली जो पति से हरदम लड़ती झगड़ती रहती है।

ठाकर गुडाळ्यां ई चालै, पगां ई चालै। ५६२७

ठाकुर घुटनों के बल भी चलते हैं, पाँवों पर भी चलते हैं।

संदर्भ-कथा : किसी एक गाँव के ठाकुर की आर्थिक स्थिति बहुत बिगड़ गई तो बाजरी की खड़ी फसल से सिट्टे, ककड़ियाँ और मतीरे रात के समय चुरा लाता था। तिस पर शराब के नशे में उसे अपनी मर्यादा का कोई खयाल नहीं रहता था। खेत के मालिक चौधरी को पता चलने पर ठाकुर को हाथोंहाथ विनम्रता-पूर्वक उलाहना देना चाहता था कि आप तो हमारे रक्षक हैं। यदि आप ही भक्षक बन जायें तो हम कहाँ फरियाद करें! एक दिन चाँदनी रात को उसकी मनचीती हुई। ठाकुर घुटनों के बल चलता हुआ ककड़ियाँ और मतीरे तोड़ रहा था। कभी पाँवों पर चलते-चलते सिट्टे भी तोड़ लेता। जब ठाकुर घुटनों के बल चल रहा था तो चौधरी ने जोर से ललकारा, 'कौन है? जरा सामने तो आ?' ठाकुर झिझककर खड़ा हुआ। पाँवों पर चलता हुआ रुआब से बोला, 'यह तो मैं ठाकुर हूँ। मतीरे की मन में आ गई तो चला आया।' चौधरी ने जानकर अनजान बनते कहा, 'मैं तो घुटनों के बल चलने वाला बच्चा ही समझ रहा था। आप तो पाँवों पर चल रहे हैं। हमारे मालिक हैं। मुझे ही आदेश भिजवा देते। टोकरी भरकर हाजिर कर देता। मैंने होश खो दिया होता और घुटनों के बल चलते बच्चे को पत्थर मार बैठता। मेरा तो मरण हो जाता।'

ठाकुर का नशा काफी उड़ गया था। झेंपते हुए बात को सँवारना चाहा, 'अरे हम तो लीला रच रहे थे। हम कृष्ण-भगवान के ही तो वंशज हैं। वे माखन चोर थे तो हम ककड़ी चोर हैं। सिट्टे-चोर हैं। पर यह चोरी नहीं लीला है, समझा?'

'समझ गया मालिक? मैं तो फकत खेती करना जानता हूँ। लीला-फीला नहीं जानता। आप बड़े आदमियों की बातें ही अलग हैं। जब चाहें घुटनों के बल चलने लगते हैं और जब इच्छा हो दौड़ने लग जाते हैं। अब जरा गढ़ के परकोटे तक दौड़कर बताएँ तो जानूँ कि आप सचमुच लीला कर रहे हैं।'

और ठाकुर बच्चे की नाईं मुट्ठियों में थूककर चौधरी के खेत से सरपट दौड़ पड़ा। पीछे मुड़कर तक नहीं देखा।

—जो व्यक्ति अपने गलत कामों का औचित्य सिद्ध करना चाहे, उसके लिए।

ठाकर तौ कंवळै मंड्योड़ौ ई खोटौ। ५६२८

ठाकुर तो दरवाजे की चौखट पर मँडा हुआ भी बुरा।

संदर्भ-कथा : एक बनिये ने तिमंजली हवेली बनवाई। ठाकुर को खुश करने के लिए उसने ठाकुर के स्वर्गीय पिताजी का चित्र मँढ़वाकर मुख्य दरवाजे के ऊपर लगा दिया। चित्र को देखते ही डर लगने लगता। बड़ी-बड़ी मूँछें। गोल साफा। बड़ी-बड़ी आँखें। एक हाथ में तलवार और एक हाथ में भाला। हवेली की प्रतिष्ठा के समय सब लोगों को सुनाते हुए सेठ चित्र की प्रशंसा करने लगा कि ठाकुर साहब के नाम से आज भी चोर-लुटेरे थर्राते हैं। किसी की हिम्मत नहीं होती कि कोई डकैत इधर नजर भी कर ले। ठाकुर ने भी किसी-न-किसी बहाने दो-तीन बार बनिये से पूछ लिया कि तब तो ठाकुर साहब के भय से चोर-डकैत इस गली या चौक में भी नहीं घुस सकते। बनिये ने डींग हाँकते कहा,'अजी,क्या मजाल कि कोई चोर-डकैत सपने में भी इस हवेली की ओर आँख उठाले।'

तत्पश्चात् साल में दो-तीन बार ठाकुर आकर सेठ से हवेली की कुशल-क्षेम के बारे में पूछ लेता। अंत में धीरे से यह मंत्र भी सुना देता कि स्वर्गीय ठाकुर साहब के भय से चोरों का बाप भी इस हवेली में चोरी का खयाल नहीं कर सकता। इस तरह ठाकुर को चक्कर काटते-काटते तीन बरस हो गये। एक दिन ठाकुर ने यों ही बात छेड़ दी कि हिसाब तो हर साल हो जाना चाहिए, वरना गड़बड़ हो जाती है। बनिये ने ठाकुर की उस बात का हार्दिक समर्थन किया। तब ठाकुर ने तनिक तकाजा करने के आशय से कहा,'सेठजी, अपना भी कुछ पुराना हिसाब है, आज-कल में हो जाय तो ठीक है। क्यूँ ?'

सेठ ने भी कहा,'क्यूँ नहीं, हिसाब हो तो जरूर हो जाना चाहिए। पर आप तो उधार में कुछ सौदा ही नहीं लेते। आपकी तरफ मेरा कुछ भी बकाया नहीं है।' तब ठाकुर ने तनिक तटस्थता से कहा,'पर आपकी ओर मेरा काफी बकाया निकलता है। आप ही के कहने से ठाकुर साहिब की मुस्तैदी और उनके भय से लाखों-करोड़ों रुपये की सुरक्षा हो गई। तीन बरस की पहरेदारी के तीस हजार रुपये तो ज्यादा नहीं होते। आप से हमारा घरेलू संबंध है। वरना लाख रुपयें में भी पिताजी का चित्र नहीं टाँगने देता। आप से तो फकत तीस हजार रुपये ही लूँगा। एक बरस की रखवाली के सिर्फ दस हजार रुपये। लाखों-करोड़ों रुपये की चोरी या डकैती की एवज में दस हजार रुपये तो कुछ भी नहीं हैं।'

बनिये का माथा ठनका। हकलाते कहा,'मैंने तो ठाकुर साहब की प्रतिष्ठा के लिए यह चित्र टाँगा था...।'

'कोई बात नहीं। प्रतिष्ठा के साथ हवेली की चौकीदारी भी हो गई। इससे सस्ते में कोई ठाकुर तुम्हारी हवेली की पहरेदारी तो करके बताये। ठाकुर साहब की प्रतिष्ठा का सवाल है। प्रति वर्ष दस हजार रुपयों से कम एक कौड़ी भी नहीं लूँगा।'

बनिये ने अब और बहस करना उचित नहीं समझा। चुपचाप तिजोरी से तीस हजार रुपये लाकर तसवीर नीचे उतारी और उस पर रुपये रखकर ठाकुर के हवाले कर दिये। कहा, 'मेरी इतनी हिम्मत नहीं कि ठाकुर साहब से हवेली की चौकीदारी कराऊँ। प्रतिष्ठा के ये तीस हजार रुपये और यह रही तस्वीर ! अच्छी तरह सँभालिये। समझूँगा कि चोरी हो गई। घर की बात है। लीजिए।'

ठाकुर ने चुपचाप पिताजी का चित्र और रुपये सँभाले और गढ़ की ओर रवाना हो गया।

—बुरे आदमी की छाया और नाम भी अशुभ है। अजाने ही क्षति हो जाती है।

—दुष्ट आदमी मरकर भी पीछा नहीं छोड़ते।

ठाकर पधारस्या अे ठकरांणी, नीं चूल्है आग, नीं परिंडै पांणी। ५६२९

ठाकुर पधारे ए ठकुरानी, न चूल्हे आग, न परिंडे पर पानी।

परिंडो = घर में वह स्थान जहाँ पानी पीने के मटके-घड़े रखे जाते हैं।

संदर्भ-कथा : ठाकुरों के ऊल-फैल की वजह से अमूमन आय तो कम होती है और खर्च बहुत ज्यादा। ठिकाना घाटे में चलता है। ऐसे ही एक ठिकाने का प्रसंग है कि एक ठाकुर अपने ननिहाल से लौटकर आया तो ठाकुर की विधवा मौसी ने कहा, 'हे ठकुरानी ठाकुर पधारे हैं। न चूल्हे में आग है औन न परिंडे में पानी।' वे दोनों तो सख्त परदे की वजह से बाहर नहीं जाती थीं। दासियों को जब भरपेट खाना ही नहीं मिलता तो वे आग-पानी की क्यों चिंता करें। ठाकुर डाँट-डपटकर कुछ काम करवा ले तो करवा ले। ननिहाल से रुपये लाने ही गये थे। हाथ आये हों तो कुछ दिन तापड़-धिन्न उड़ेगा। फिर बार-बार वही हालत—न चूल्हे आग और न परिंडे पर पानी।

—जिस अव्यावहारिक व्यक्ति को अपने घर-परिवार की कतई चिंता न हो।

ठाकर बाळौ सेविये अर ढळती लीजै छांह। ५६३०

किशोर ठाकुर की सेवा और ढलती छाँह का आश्रय।

—जिस ठाकुर से बचपन में घनिष्ठता हो वह ठेट तक उपयोगी रहती है। और ढलती छाँह का आश्रय काफी देर तक सुखदाई रहता है।

—हर व्यक्ति को अनुकूल समय की सही पहिचान हो तो वह कल्याणकारी साबित होती है।

ठाकर री गोली पण गांव री सिरमोली। ५६३१

ठाकुर की गोली पर गाँव की सिरमोली।

—ठाकुर की दासी पर गाँव की सिरमौर।

—बड़े व्यक्ति का चाकर भी सामान्य लोगों पर हुक्म बजाता है।

—जो व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का दोहरा लाभ उठाये।

पाठा : राज री बांदी, पण गांव री धणियांणी।

ठाकर रै चाकर घणा। ५६३२

ठाकुर के चाकर बहुतेरे।

—जो संपन्न व श्रीमंत हैं, उनके नौकरों की क्या कमी!

—जो रुपयों से खेले, उसके कदम-कदम पर चेले।

ठाकरसा रै घोड़ै सोना रा पागड़ा के गुळ रा व्है तौ ई थोड़ा। ५६३३

ठाकुर के घोड़े के सोने के पागड़े कि गुड़ के हों तब भी कम हैं।

पागड़ौ = घोड़े के चारजामे में लगा पायदान, रकाब।

संदर्भ-कथा : एक किसान के दो अबोध बच्चे घोड़े पर सवार ठाकुर को देख रहे थे। पीले चमकते रकाब पर सहसा बड़े बच्चे की नजर पड़ी तो उसने आश्चर्य प्रकट करते कहा कि ठाकुर के पायदान तो सोने के हैं! तब छोटे भाई ने उसका समर्थन करते कहा कि इन्हें कमी किस बात की है, गुड़ के रकाब हों तब भी कम हैं। छोटे बच्चे की दृष्टि में गुड़ से मीठी और मूल्यवान वस्तु और कोई नहीं, सोना भी उसके सामने फीका है।

—जिस व्यक्ति को किसी वस्तु या पदार्थ की सही पहिचान नहीं होती, वह उसका मूल्य नहीं आँक सकता।

ठाकरां, अऊत गिया के गियां ई जावां हां। ५६३४

हे ठाकुर, निपूते हो क्या कि सदैव निपूते ही रहेंगे।

—सामर्थ्यहीन व्यक्ति को सफलता मिलना दुश्वार है।

—जिस व्यक्ति के जीवन में अभावों का निरंतर ताँता लगा रहता है, उसके प्रति।

—जो व्यक्ति अपनी बदनामी की तनिक भी परवाह नहीं करता हो।

ठाकरां, आंतरै सिरकौ के दुख पासी वौ मतै ई सिरक जासी। ५६३५

हे ठाकुर, दूर खिसको कि दुख पाएगा वह खुद सरक जाएगा।

—संवेदन-शून्य व्यक्ति के लिए जिसे अपनी सुविधा के अतिरिक्त और किसी का खयाल नहीं रहता।

—जो व्यक्ति अपने स्वार्थ और अपनी सुख सुविधाओं में आकंठ डूबा हो।

ठाकरां, कीं गावौ के रोवण सूं ई नीं धापां। ५६३६

हे ठाकुर, कुछ तो गाओ कि यहाँ तो रोने से ही फुरसत नहीं।

—अभावग्रस्त व्यक्ति को मन बहलाने की भी फुरसत नहीं मिलती।

—जीवन निर्वाह के कोल्हू में जुते मनुष्य के चक्कर समाप्त न हों तब तक वह सुख की झाँकी भी क्या देख ले।

ठाकरां, कुबेळा के कुबेळा तौ म्हां इज हा। ५६३७

हे ठाकुर, कुवेला कि कुवेला तो हम ही हैं।

संदर्भ-कथा : पुराने जमाने में बनिये साँझ पड़ने पर यात्रा करते तो राह में ठाकुर के आदमी उन्हें लूट लेते। एक दिन ठाकुर साँझ पड़ने पर बाहर जाने के लिए घोड़े पर चढ़ा तो किसी भुक्तभोगी बनिये ने आशंका प्रकट करते पूछा कि इस कुवेला में वे बाहर क्यों जा रहे हैं। तब ठाकुर ने मुस्कराते कहा, 'कुवेला तो हम खुद हैं। किसी को कोई खतरा है तो हमीं से है, हमें किसी से खतरा नहीं।'

—भले मानुस ही समाज-कंटकों से डरते हैं, भला समाज-कंटक किससे डरें।

पाठा : ठाकरां, गैर-बखत के गैर-बखत तौ म्हे ई हां !

ठाकरां, खळ कांई खावौ के आ ई कुत्ता सूं खोसी। ५६३८

हे ठाकुर, खली क्यों खा रहे हो कि यह भी कुत्ते से छीनी है।

—विवशता जो न कराये थोड़ा है !

—गरीबी या मजबूरी कोई भी नैतिक या सामाजिक व्यवधान नहीं मानती।

—जो व्यक्ति इतना अध:पतित हो जाये कि उसे लौकिक मान-मर्यादा का तनिक भी खयाल न हो।

ठाकरां, खांगा घणा हालौ के खरचौ लागै। ५६३९

ठाकुर, बड़े बाँके-बाँके चल रहे हो कि खर्च लगता है।

—आडंबर या ठाट-बाट आसानी से नहीं निभता, तदनुसार रुपये खर्च करने पड़ते हैं।

—कुछ-न-कुछ उदारता किये बिना सामाजिक प्रतिष्ठा आसानी से नहीं निभती।

—व्यसन या हेकड़ी, खर्च किये बगैर कायम रखना मुश्किल है।

ठाकरां, घोड़ी ठेका तीन देसी के म्हैं तौ पैलड़ै ठेकै ई हेटै आस्यूं, दोय तौ अेकली देसी। ५६४०

हे ठाकुर, घोड़ी तीन बार उछलेगी कि मैं तो पहली उछाल में ही नीचे गिर पड़ूँगा, बाकी दो उछालें तो अकेली देगी।

—अक्षम या कमजोर व्यक्ति तो पहली ठोकर में गिर पड़ता है। जीवन के शेष अवरोध झेलने की उसमें शक्ति ही नहीं होती।

—जिंदगी के झटकों को बर्दाश्त करना हर व्यक्ति के बूते की बात नहीं होती।

—अमीर या संपन्न व्यक्ति जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना मुश्किल से ही कर पाता है।

ठाकरां, घोड़ी दौ के घोड़ी ढळ्योड़ी के आ हींसै है नीं के बावळा, थूं जिनावरां री बोली तौ समझै, मिनखां री बोली नीं समझै! ५६४१

ठाकुर साहब, घोड़ी दीजिए कि घोड़ी तो चरने गई है? कहाँ—वह तो हिनहिना रही है? अरे पगले तू जानवरों की बोली समझता है, मनुष्यों की नहीं!

—जो व्यक्ति अपनी इच्छा से सहयोग न करे तो उससे आगे पड़ताल करने में कोई सार नहीं।

—मनुष्य की बात समझने के लिए उसकी वाणी ही पर्याप्त नहीं, उस में निहित आशय को समझना भी जरूरी है।

ठाकरां, जोरावर कैड़ाक के थाकल रै तौ जीव रा ई लेवू हां। ५६४२

हे ठाकुर, तुम बहादुर कैसे हो कि निर्बल को तो प्राण लेने पर ही छोड़ूँ।

—शक्ति का प्रयोग अपने से कमजोर को ही दबाने में काम आता है, ताकतवर से कोई भिड़ना नहीं चाहता।

—दूसरों की निर्बलता ही साधन संपन्न व्यक्तियों की शक्ति होती है।

ठाकरां, टाबर-टूबर कित्ता के भाई रा साळा रै सात डावड़ा। ५६४३

हे ठाकुर, आपके बाल-बच्चे कितने हैं कि भाई के साले के सात बेटे हैं।

—अपने अधिकार की वस्तु पर ही निर्भर किया जा सकता है, दूसरों के वैभव पर इतराना उचित नहीं।

—पड़ोसी के जलते चूल्हे से अपनी रोटियाँ नहीं सिक सकतीं।

—जो व्यक्ति खामखाह के खयालों में जीना चाहे।

—निराधार तथ्यों के सहारे जो व्यक्ति स्वयं को बहलाना चाहे या तथ्यहीन बात को सँवारना चाहे तब...।

ठाकरां, दूबळा क्यूं के करड़ खायगी! ५६४४

हे ठाकुर, दुबले क्यों कि हेकड़ी खा गई!

—थोथी हेकड़ी के फलस्वरूप कई खुशहाल घर और प्रसिद्ध व्यक्तित्व नष्ट हो जाते हैं।

—मिथ्या आडंबर विनाश की मूल जड़ है।

ठाकरां धाड़ा री वेळा कठै हा के धाड़वी तौ म्हे खुदौखुद इज हा। ५६४५

हे ठाकुर, डाका पड़ने के समय कहाँ थे कि डाकू तो हम खुद ही थे।

—दुख या संकट पैदा करने के लिए ही जिनका अस्तित्व है, उनसे कष्ट निवारण या सहयोग की अपेक्षा रखना व्यर्थ है।

—जब रक्षा करने वाले ही लूटने पर उतारू हो जाएँ तो बचाव का कोई रास्ता नहीं बचता।

ठाकरां, धौळा आया अर थें दौड़ौ के दौड़-दौड़ नै ई धौळा लीन्हा, नींतर काळा में ई ढाय लेता। ५६४६

हे ठाकुर, सारे बाल सफेद होने आये और आप भाग रहे हैं कि भाग-भागकर ही तो यह सफेदी ली, वरना काले बालों के रहते ही कोई मार डालता।

—तथाकथित बड़े व्यक्तियों से बड़ी आशा रखना सर्वथा तथ्यहीन है।

—मजबूरी की हालत में जस-तस दयनीयता-पूर्वक दिन गुजार लें सो अपने हैं, अन्यथा थोथे आदर्शों का भ्रम पालने में खतरा है।

—कैसे भी बड़े व्यक्ति को जीवन का मोह तो होता ही है।

ठाकरां, परण्या के कंवारा के आधा परण्या अर आधा कंवारा के आ कीकर के म्हे तौ त्यार छां, पण धकलौ बेटी देवै तौ! ५६४७

हे ठाकुर, तुम ब्याहे कि कुँआरे कि अध ब्याहे और अध-कुँवारे कि यह क्योंकर कि हम तो पूरे तैयार पर कोई अपनी बिटिया दे तो...!

—इकतरफा आधारहीन आकांक्षाएँ कभी फलीभूत नहीं होतीं।

—जो व्यक्ति शेखचिल्ली के उनमान खाम-खयाली से जीवन बहलाना चाहे।

ठाकरां, पुणचौ पतळौ दीसै के लाग्यां बेरौ पड़सी। ५६४८

हे ठाकुर, कलाई पतली दिखाई पड़ती है कि घूँसा लगने पर पता चलेगा।

—जो व्यक्ति दिखने में कमजोर हो पर ताकतवर काफी हो।

—जो व्यक्ति ऊपर से दिखने में भोला हो, पर वास्तव में चालाक हो।

ठाकरां, बोरां में तौ लटां है के लटां री भावड़ ई तौ खावां। ५६४९

हे ठाकुर, बेरों में तो कीड़े हैं कि कीड़ों के स्वाद से ही तो खा रहे हैं।

—जो व्यक्ति वर्जना को ही अनुकूल या संगत बना दे।

—जो व्यक्ति अपनी खामियाँ अथवा अपराध का अविलंब औचित्य खोज ले।

ठाकरां, भाजौ किस्याक के धकलै लोभ के लारली तांण! ५६५०

हे ठाकुर, दौड़ते कैसा हो कि या तो आगे लोभ हो या पीछे दबाव हो!

—जिस व्यक्ति में लोभ और भय का बराबर मिश्रण हो तभी वह सक्रिय हो पाता है।

—प्रमुख रूप से लोभ और भय हर व्यक्ति को समान रूप से संचालित करते हैं।

ठाकरां, मूवा सुण्या के सांप्रत सांम्ही ऊभा बातां करां के म्हांनै तौ अेक ठावै मोतबर कह्यौ। ५६५१

हे ठाकुर, तुम्हें तो मरा हुआ सुना था कि रूबरू बातें कर रहा हूँ न, कि मुझे तो किसी विश्वस्त मोतबर ने कहा था।

—जो व्यक्ति प्रत्यक्ष में विश्वास न करके सुनी-सुनाई बातों पर अधिक विश्वास करते हैं, उन पर कटाक्ष।

—जो व्यक्ति आँखों की बजाय कानों पर अधिक भरोसा करता हो।

—चरित्रहीन बदनाम व्यक्ति जीता हुआ भी मरे के समान होता है, इस ओर भी इस कहावत का परोक्ष संकेत है।

ठाकुरद्वारा रै अगाड़ी अर कोट रै पिछाड़ी। ५६५२

ठाकुरद्वारा के आगे और गढ़ के पीछे।

—मंदिर के सामने और गढ़ के पीछे चलना चाहिए। मंदिर के सामने चलने से देवता के दर्शन हो जाते हैं और ठाकुर के गढ़ के पीछे चलने पर बेगार से बच जाते हैं।

—सज्जनों की संगत करना उचित है और दुष्टों का परित्याग करना उचित है।

मि.क.सं. २६७८, ३२०५

ठाट, तिलक अर मधरी वांणी, दगाबाज री खरी निसांणी। ५६५३

ठाट, तिलक और मधुर वाणी, दगाबाज की खरी निशानी।

—जो व्यक्ति ऊपरी ठाट-बाट का प्रदर्शन करते हैं, ललाट पर तिलक लगाये रहते हैं और मीठी वाणी में संभाषण करते हैं—बस, यही किसी धोखेबाज की सही पहिचान है।

—ऊपरी आचरण से भीतर के व्यक्तित्व का पता नहीं चलता।

ठाडै निबळा रा दो गळियारा। ५६५४

समर्थ और निर्बल के दो गलियारे।

—सबल की राह अन्याय, अत्याचार और अधर्म की राह है और निर्बल की पगडंडी असहायता, निरीहता की है जो हमेशा दूर-ही-दूर रहती हैं।

—सबल या समर्थ शोषक हैं। निर्बल या अशक्त शोषित हैं। इनके रास्ते क्योंकर एक हो सकते हैं।

ठाडै रा दो बंट। ५६५५

सबल के दो हिस्से।

—सबल हमेशा से निर्बल पर राज्य करते रहे हैं और करते रहेंगे। वे अपनी शक्ति का दुरुपयोग करके दूसरों के अधिकार छीनने में माहिर होते हैं।

—तुलसी बाबा ने भी सबलों के आतंक को भली-भाँति समझ लिया तभी यह निष्कर्ष निकाल पाये—समरथ को नंह दोस गुसांई।

पाठा : नागै रा दो बंट !

ठाडै रौ ठींगौ माथा माथै। ५६५६

सबल की धौंस माथे पर।

—शक्ति ही सर्वोपरि न्याय है।

—भला शक्तिशाली को चुनौती कौन दे ?

ठाडै रौ धन रांम रुखाळै। ५६५७

समर्थ के धन का राम रक्षक।

—राम या भगवान भी समर्थ का हिमायती है, निर्बल का नहीं। गरीबों से धन छीनकर वह शक्तिशालियों को बाँटता है और उनके खजाने की पहरेदारी भी करता है।

—सबल या समर्थ के सामने ईश्वर की नहीं चलती, वह भी उनकी हाजरी बजाता है।

ठाडौ काढ़ै गाळ, खमडोळ में ई टाळ। ५६५८

समर्थ निकाले गाली तो मजाक में टाली।

—निर्बल व्यक्ति समर्थ का मुकाबला नहीं कर सकता। समर्थ गाली दे या अपशब्द कहे, उसका सामना तो किया नहीं जा सकता। मजाक समझकर टाल देना ही शोभनीय है।

—दुष्ट व्यक्ति के अन्याय अत्याचार मन मारकर सहन करने पड़ते हैं। निर्बल का दूसरा कोई जोर ही नहीं चलता।

ठाडौ मारै अर रोवण ई नीं दैवै। ५६५९

समर्थ मारे और रोने भी नहीं दे।

—समर्थ पीटे तो वह कहीं फरियाद भी करने न दे। कहीं रो-धोकर शिकायत करो तो ऊपर से और धमकाता है कि किसी से कह दिया तो जान से हाथ धोना पड़ेगा।

—समर्थ के अन्याय की दो विशिष्टताएँ कि उसके अत्याचार को सहो और चुप रहो। किसी के सामने मुँह न खोलो।

दे.क.सं.४८८१

ठाडौ लोह ताता नै खावै। ५६६०

ठंडा लोहा गर्म को खाता है।

—ठंडी छैनी लाल-सुर्ख लोहे को काटती है।

—समय पर किसी विरोध को सहन करने वाला, अपने विरोधी को उसी प्रकार काट देता है, जिस तरह ठंडा लोहा गर्म लोहे को काटता है।

—जो व्यक्ति सहिष्णु होता है, वह क्रोधी व्यक्ति को पराजित कर देता है।

ठार-ठारनै खावणौ। ५६६१

ठंडा कर-कर खाना।

—जिस तरह गरमागरम खाने से मुँह जलता है, उसी प्रकार हड़बड़ी में काम करने से काम बिगड़ता है।

—धीरज और शांति-पूर्वक काम करना ही सब कार्यों की सफलता का रहस्य है।

ठारी पड़्यां स्याळ आपरी घुरी संभाळै। ५६६२

सर्दी पड़ने पर सियार भी अपनी खोह सँभालते हैं।

—कैसा भी भोला व्यक्ति अपने मतलब की बात खूब समझता है।

—जरूरत पड़ने पर हर व्यक्ति स्वतः अपनी समस्या का उपाय खोज लेता है।

ठालप सूं बेगार भली। ५६६३

बैठे से बेगार भली।

—काम की ही सर्वोच्च मर्यादा है और अकर्मण्यता से बढ़कर कोई घिनौनी बात नहीं।

—जिस समाज में श्रम की प्रतिष्ठा है, आखिर वही विजयी होता है।

ठाला-भूला भेळा थाये, जे वगर ठा नी वात करे।–भी.३९९ ५६६४

जब निठल्ले शामिल होते हैं तो बेपते की गपशप करते हैं।

—किसी भी समाज में निठल्लों की कद्र नहीं होती।

—वही समाज प्रगति करता है जो अथक परिश्रम में विश्वास रखता है।

ठाली ठकराई काख में छांणौ। ५६६५

कोरी ठकुराई और बगल में कंडा।

—अपनी औकात भूलकर दिखावा करने वाले पर कटाक्ष।

—जो निर्धन व्यक्ति व्यर्थ का आडंबर दिखाये।

—ऊँची दुकान फीके पकवान के समकक्ष कहावत।

ठाली बैठी डूंमणी, घर में घाल्यौ घोड़ौ। ५६६६
दूध बाजरी भोटती, घास खोदवा दौड़ी॥

खाली बैठी डोमनी, घर में बाँधी घोड़ी।
दूध बाजरी जीमती, घास लाने दौड़ी॥

संदर्भ-कथा : एक डोमनी के पास गाय थी। मजे में उसका दूध पीती। दही खाती। बाजरे की रोटी छाछ में चूरकर खाती। बड़े आराम से जीवन बीत रहा था। उसे जाने क्या सनक सूझी कि गाय बेचकर एक टट्टू खरीद लिया। दूध-दही का स्वाद तो दरकिनार टट्टू के लिए सुबह-शाम घास काटकर लाना बड़ा कठिन कार्य हो गया। उसकी लीद न कुछ काम आये न कुछ मतलब सारे। गाय के गोबर से उपले थापकर रसोई बना लेती थी। दुख उठाना होता है तो स्वतः कुमति सूझ जाती है।

—जो व्यक्ति लाभ का काम छोड़कर घाटे का काम करने लगे तब।

—आरामदायक काम की एवज में कोई व्यक्ति कठिनाई का काम करने लगे तब।

ठाली बैठी नायण पाडा मूंडै। ५६६७

खाली बैठी नाइन पाड़े मूँडे।

—निठल्ला व्यक्ति उपयोगी काम न करके व्यर्थ कामों में समय व्यतीत करे तब।

—बेकार बैठा व्यक्ति सनकी हो जाता है। वाहियात काम करने में मशगूल रहता है।

ठालौ-ठणौ नै बाजै घणौ। ५६६८

खाली ठाँव, ठनठन ज्यादा।

—ज्ञानी गंभीर होता है, अनपढ़ अधिक बकबक करता है।

—जल से आधी भरी गगरी छलकती है, मुँह तक भरी स्थिर रहती है।

ठावै-ठावै टोपला, बाकी नै लंगोट। ५६६९

अच्छों-अच्छों को टोप, बाकी को लंगोट।

—प्रभाव एवं प्रतिष्ठा के अनुसार भेंट-पूजा होने लगे तब।

—जैसा मुँह वैसा तिलक।

—बड़े व्यक्तियों का आदर और छोटों की उपेक्षा, हर समाज में यह सामान्य प्रवृत्ति है।

ठिकांणा लारै ठाकर बाजै। ५६७०

ठिकाने के पीछे ठाकुर कहलाते हैं।

—ठिकाना बड़ा तो ठाकुर बड़ा और ठिकाना छोटा तो ठाकुर छोटा।

—पद के अनुरूप ही प्रतिष्ठा निर्भर करती है।

ठीकरी घड़ौ फोड़ दै। ५६७१

ठीकरी घड़ा फोड़ दे।

ठीकरी = मिट्टी के बासन का टूटा टुकड़ा।

—पानी से भरा घड़ा छोटी ठीकरी के आघात से फूट जाता है।

—ठीकरी मिट्टी के बासन का ही अंश है। इसलिए घर का भेदी महाघातक होता है। लंका का सर्वनाश कर देता है।

—कभी-कभार अकिंचन व्यक्ति भी शक्तिशाली को नुक्सान पहुँचा सकता है। क्रांति में यही होता है कि निहत्थे किसान, मजदूर राज्य के सशस्त्र सैनिकों को परास्त कर देते हैं।

ठीकरी रा ठाकुरजी रै थूक रौ तिलक। ५६७२

ठीकरी के ठाकुरजी को थूक का तिलक।

ठीकरी = मिट्टी के बासन का टूटा टुकड़ा।

—जैसा देव वैसी पूजा।

—जैसा पद वैसी प्रतिष्ठा।

ठीमरां भेळौ ठीमर अर टाबरां भेळौ टाबर। ५६७३

बड़ों के साथ बड़ा और बच्चों के साथ बच्चा।

—वह मस्तमौला जो हर मंडली के अनुकूल हो। जब बड़ों की मंडली में हो तो बड़ों जैसी गंभीर बातें करे और बच्चों की मंडली में हो तो बच्चों में घुलमिल जाये।

—जिस व्यक्ति की संगति सबको सुहाये।

ठोकर खायां चेतौ होवै। ५६७४

ठोकर खाने पर होश आता है।

—आदमी नुकसान खाकर ही सीखता है।

—जीवन यात्रा में कटु अनुभवों का अपना ही महत्त्व है।

पाठा : ठोकर खाधां अकल आवै।

ठौड़ रौ मिणियौ, ठौड़ ई सोवै। ५६७५

ठौर का मनका, ठौर ही सोहे।

—अपनी उपयुक्त जगह पर ही कोई चीज शोभा देती है।

—हर व्यक्ति के स्वभावानुसार, शिक्षा के अनुसार, पद व स्तर के अनुसार अपनी-अपनी मंडली होती है और वह उसी में अच्छा लगता है।

डं-डौ

डंक मारणौ बीछू रौ सभाव। ५६७६

डंक मारना बिच्छू का स्वभाव।

—जो कुटिल व्यक्ति हमेशा दूसरों को नुकसान पहुँचाये।

—चुगलखोर चुगली किये बिना नहीं रहता।

डंडिया टाळ गैर नीं रमीजै। ५६७७

डंडियों के बिना घूमर नहीं खेली जाती।

डंडियौ = होली के पर्व पर 'डंडिया-गैर' के उपयोग में लाया जाने वाला डंडा विशेष।

—हर वस्तु अपनी जगह अपरिहार्य होती है,उसकी जगह दूसरा विकल्प नहीं होता।

—हर उत्सव प्रदर्शन का अपना तरीका होता है। मसलन दीवाली पर आतिशबाजी और होली पर हुड़दंग।

डफोळां रा माल मसखरा खावै। ५६७८

मूर्खों का माल मसखरे खाते हैं।

—मूर्ख व्यक्ति को कोई भी आसानी से ठग लेता है।

—मूर्ख व्यक्ति को एक बच्चा भी बेवकूफ बना सकता है।

पाठा : मालजादां रा माल मसखरा खावै।

डबगरां रै घर मिनड़ी मुई, वास भेळी वास थई। ५६७९

डबगरों के घर बिल्ली मरी, बदबू के साथ बदबू तरी।

—जो घर या व्यक्ति पहिले से ही इतना बदनाम हो कि किसी भी नई बदनामी का उस पर कुछ भी असर न हो।

—उस निर्लज्ज व्यक्ति के लिए जो किसी भी कुकृत्य के लिए पछतावा नहीं करे।

डबडब बाजै। ५६८०

डबाडब बजे।

—जब कोई व्यक्ति किसी विशिष्ट अनुष्ठान या आयोजन के लिए कई व्यक्तियों को आमंत्रित कर दे और वहाँ पहुँचने पर कुछ भी तैयारी नजर न आये तब।

डब्बा तौ अंजण लारै ई चालै। ५६८१

डिब्बे तो इंजन के पीछे ही चलते हैं।

—बड़े व्यक्तियों के पीछे ही अनुयायियों का ताँता लगा रहता है।

—जिस समृद्ध व्यक्ति के आश्रित कई जन हों।

—परिवार के सदस्य मुखिये का ही अनुगमन करते हैं।

डरकण रौ बेली तौ रांम ई कोनीं। ५६८२

डरपोक का हिमायती तो राम भी नहीं होता।

—कायर व्यक्ति का साथ तो ईश्वर भी नहीं देता।

—बुलंद हौसले वाला या पराक्रमी ही किसी काम में सफल होता है। दब्बू व्यक्ति से कुछ भी आशा नहीं की जा सकती।

—जो व्यक्ति समय पर पीछे हट जाय तो वह कभी आगे नहीं बढ़ सकता। उन्नति नहीं कर सकता।

डर कनै गियां डर मिटै। ५६८३

डर के पास जाने पर ही डर मिटता है।

—डर से भागने पर डर और गहरा होता है। उसका सामना करने से असलियत सामने आ जाती है और भ्रांति का भय दूर हो जाता है।

—किसी भी भय का समाधान विमुख होने से नहीं सामना करने से ही होता है।

डरता नै दोय दीसै। ५६८४

डरपोक को दो दिखते हैं।

—डरपोक व्यक्ति को परिस्थितियों की विषमता दुगुनी नजर आती है।

—घबराहट से विवेक नष्ट हो जाता है, परिस्थिति की सही पहिचान नहीं होती।

डरता नै सास ई को आवै नीं। ५६८५

डरपोक को साँस भी नहीं आता।

—घबराहट के मारे डरपोक व्यक्ति का साँस तक रुक जाता है।

—डरपोक व्यक्ति के हाथ-पाँव ढीले पड़ जाते हैं। साँस उखड़ जाता है।

डरती हर-हर करती। ५६८६

डरती हर-हर करती।

—डर या संकट की वेला ही ईश्वर याद आता है। अजाने ही उसका नाम होंठों से उच्चरित होने लगता है।

—सामान्य स्थिति में राम-नाम का किसे भी ध्यान नहीं रहता। विपदा की वेला ही उसका सुमिरन स्वतः शुरू हो जाता है।

डर तौ घणौ खाया रौ व्है। ५६८७

डर तो अधिक खाने से होता है।

—अधिक खाने से बदहजमी होती है। बीमारी की आशंका रहती है।

—अधिक रिश्वत खाने वाला अधिक डरता है। उसे छिपाना आसान नहीं होता।

डरतौ डूंम करै सुभराज। ५६८८

भयभीत डोम करे शुभराज।

सुभराज = अभिवादन।

—छोटे-से-छोटा और बड़े-से-बड़ा आदमी डर के बिना किसी की मान-मर्यादा का खयाल नहीं रखता।

—डर के बिना अनुशासन संभव नहीं।

—अभिवादन की बात तो दर-किनार भय के बिना प्रीत भी नहीं होती।

डर माया नै काया नै कैड़ौ। ५६८९

डर तो माया को है, काया को नहीं।

—जब कोई व्यक्ति कुवेला रात के समय यात्रा पर निकले और उसे कोई कहे कि रात की बजाय सवेरे रवाना हो जाना। रात को कुछ-न-कुछ डर रहता है, तब यात्री सहज-भाव से जवाब देता है कि डर है तो माया को है, काया को नहीं। उसके पास जोखम ही क्या है जो लुटने का डर हो।

—धनवानों को ही हरदम माया का डर रहता है, गरीब को उसका डर नहीं होता।

डर हौ जठै ई रात पड़ी। ५६९०

डर था वहीं रात पड़ी।

—जिस बात की आशंका हो और वह प्रत्यक्ष घटित हो जाय तब।

—परिस्थितियों की मजबूरी का चक्कर ऐसा ही होता है जिसका डर हो और वही सामने मिल जाय।

पाठा : डर हौ उठै ई दिन आथम्यौ।

डळी रा ठोकाक। ५६९१

डली के इच्छुक।

डळी = गुड़ या द्रव्य की डली। या खाने की कोई वस्तु।

—जो व्यक्ति किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए या किसी चीज को खाने की लालसा से ही उपस्थित हो।

—अपनी स्वार्थ-सिद्धि के अतिरिक्त जिस व्यक्ति का कोई लक्ष्य न हो।

डांग पकड़ीजै पण जीभ नंह पकड़ीजै। ५६९२

लाठी पकड़ी जा सकती है, पर जीभ नहीं पकड़ी जा सकती।

—प्रहार को रोका जा सकता है, पर बदनामी को नहीं रोका जा सकता।

—बुरे को बुरा तो लोग कहेंगे ही, भय की वजह से चुप नहीं रह सकते।

डांग भागी तौ ई डोकरां जोगी परी है। ५६९३

लाठी टूट गई फिर भी बूढ़ों के योग्य तो है।

—लाठी टूटने पर प्रहार के काबिल न भी रहे, फिर भी बूढ़ों के सहारे की खातिर तो पर्याप्त है ही।

—बहादुर व्यक्ति कमजोर होने पर भी मरियल व्यक्ति को पछाड़ने के लिए काफी है।

—लखपति निर्धन भी हो जाय, गरीब की अपेक्षा तो समृद्ध रहता ही है।

पाठा : डांग टूटी तौ ई ठींगला जोगी परी है। डांग तूटी तौ ई डूंमा जोगी निसैवार। डांग भागी तौ ई डांगरां जोग परी है।

डांग माथै डेरा। ५६९४

लट्ठ पर डेरा।

—जो व्यक्ति नितांत अकेला हो और लाठी के अतिरिक्त जिसके पास कुछ भी संपत्ति न हो। जिसे सपने में भी किसी बात की जोखम न हो।

—सभी तरह की जिम्मेदारियों से मुक्त व्यक्ति के लिए।

पाठा : डांग माथै डेरौ, धकलौ घर मेरौ।

डांग रै पांण बांदरौ नाचै। ५६९५

लाठी के बल पर बंदर नाचे।

—जिस प्रकार लाठी के भय से बंदर नाचने लगता है, उसी प्रकार मार के भय से काम चोर चालाक व्यक्ति काम में जुट पड़ता है।

—पराक्रम के सम्मुख हर कोई मजबूर होता है।

डांम्योड़ौ सांड। ५६९६

दागी साँड़।

—नंबरी बदमाश के लिए।

—निर्भीक समाज-कंटक के लिए।

डाकण आळा ढाई आखर। ५६९७

डायन वाले ढाई अक्षर।

—विधाता के लेख टलें तो डायन के ढाई अक्षरों का प्रभाव टले, ऐसी मान्यता है।

—उस चालाक व दुष्ट आदमी के लिए जिसकी हर चालाकी पार पड़ती हो।

डाकण ई दोय घर तौ टाळै। ५६९८

डायन भी दो घर टालती है।

—डायन अपना और बाप का घर टालती है। वहाँ अपने हथकंडे नहीं बताती।

—डायन की दुष्टता का भी अपवाद होता है। पर जो कुटिल व्यक्ति परिजनों तक को अपना शिकार बनाने से न छोड़े तब उस पर कटाक्ष करके यह कहावत कही जाती है कि दो घर तो डायन भी छोड़ती है, पर तू तो डायन से भी गया-गुजरा निकला। एक घर से भी नहीं टला।

पाठा: **अेक घर तौ डाकण ई टाळै। डाकण तीन घर टाळै।**

डाकण किणरा पेट परनाळै? ५६९९

डायन किसका पेट चीरे?

—अमूमन यह मान्यता है कि डायन किसी जच्चा का पेट चीर कर बच्चा नहीं खाती, वह तो खेलते-कूदते छोटे-बच्चों का कलेजा चाटकर उन्हें धीरे-धीरे खत्म करती है।

—जो व्यक्ति बाहर-ही-बाहर हाथ साफ करे उसके लिए।

—जो व्यक्ति सामने आकर नहीं, छिपकर घात करे।

डाकण किणरी मासी? ५७००

डायन किसकी मौसी?

—डायन किसी भी नाते-रिश्ते का लिहाज नहीं रखती। वह तो हर कहीं अपना शिकार खोज लेती है।

—जो कामुक या कुटिल व्यक्ति डायन के उनमान किसी नाते-रिश्ते का लिहाज नहीं रखे।

डाकण कूंडौ मांड्यां बैठी। ५७०१

डायन कूँडा लेकर बैठी।

—ऐसी सामान्य धारणा है कि डायन कूँडे या तगारी में स्नान करके अपने हथकंडे आजमाती है।

—जो दुष्ट व्यक्ति अपने दाँव-पेच की पूरी तैयारी करके दुष्टता के लिए आतुर हो।

डाकण खावै तौ काळौ मूंडौ अर नीं खावै तौ काळौ मूंडौ । ५७०२

डायन खाये तो काला मुँह और न खाये तो काला मुँह ।

—बदनाम व्यक्ति पर ही हमेशा संदेह किया जाता है, चाहे वह निर्दोष ही क्यों न हो ।

—नामजद चोर चोरी न भी करे तो भी उसी पर इलजाम लगता है ।

डाकण ते हाऊ ने चेनाळ खोटी ।– भी.४०० ५७०३

डायन की अपेक्षा छिनाल बुरी ।

—डायन तो एक-दो बच्चों पर ही हाथ साफ करती है पर कुलटा कई नवयुवकों को बिगाड़ती है ।

—हत्यारे की अपेक्षा व्यभिचारी ज्यादा बुरा होता है । क्योंकि हत्यारा तो आवेश के वशीभूत किसी की हत्या करता है, पर व्यभिचार तो एक प्रवृत्ति का परिचायक है ।

पाठा : डाकण सूं छिनाळ खोटी ।

डाकण नै फेर जरख चढ़ी । ५७०४

डायन और फिर जरख चढ़ी ।

—ऐसी मान्यता है कि डायन जरख पर सवार होकर अपना शिकार ढूँढ़ती है, फिर उसकी कामयाबी में क्या कसर ।

—किसी दुष्ट व्यक्ति को बड़े आदमी का सहारा मिल जाय तब ।

पाठा : डाकण हुती'र जरख चढ़ी ।

डाकण नै माळवौ कांई भांय ? ५७०५

डायन के लिए मालवा क्या दूर ?

—जरख डायन का वाहन माना जाता है, तब उसे अपने शिकार तक पहुँचने में क्या देर लगती है !

—दुष्ट व्यक्ति की सर्वत्र पहुँच होती है । उसे सहयोग करने वाला कहीं-न-कहीं मिल जाता है ।

—चोर या समाज कंटकों के लिए दूरी कुछ भी माने नहीं रखती, वे कहीं भी पहुँच जाते हैं ।

पाठा : डाकण नैं माळवौ किसौ आंतरै ।

डाकण नै मासी कैय बतळावणी। ५७०६

डायन को मौसी कहकर पुकारना चाहिए।

—दुष्ट व्यक्ति को छेड़ने की बजाय उससे विनम्रता-पूर्वक ही पेश आना चाहिए ताकि उसको दुष्टता करने का सीधा बहाना नहीं मिले।

—शुभ-ग्रहों की कोई परवाह नहीं करता, पर अशुभ ग्रह के लिए यज्ञ या पूजा-पाठ किया जाता है, इसी प्रकार दुर्जन या खल व्यक्ति से बचाव की खातिर उससे सद्व्यवहार करना ही लाभदायक है।

डाकण बेटा दै के लै। ५७०७

डायन बेटे दे कि ले।

—कंजूस या लोभी व्यक्ति से दान या उपकार की आशा रखना व्यर्थ है।

—भ्रष्टाचारी से सहयोग की आशा रखने वाले को हताशा ही हाथ लगती है, क्योंकि रिश्वत लिए बिना वह किसी काम में हाथ डालता ही नहीं।

डाकण भोपा अेक मतू। ५७०८

डायन भोपों की समान मति।

—प्रजा को लूटने वाला चाहे कर्मचारी हो, चाहे बोहरा हो, चाहे राजनेता हो, सभी शोषक के रूप में समान होते हैं।

—दुष्ट व्यक्तियों की एक-सी दुष्प्रवृत्ति होती है।

डाकण री मीट काळजा माथै। ५७०९

डायन की नजर कलेजे पर।

—ठग को हर वक्त अपने शिकार की ही टोह रहती है।

—कामुक व्यक्ति के मन में हमेशा स्त्री की चाह रहती है।

—भ्रष्ट व्यक्ति का ध्यान रिश्वत पर ही लगा रहता है।

डाकण रै कांई गनौ! ५७१०

डायन के लिए कैसा रिश्ता!

दे.क.सं.५७००

डाकण रै हाथ पलीतौ । ५७११

डायन के हाथ में पलीता ।

पलीतौ = कोई मंत्र लिखकर, बत्ती के आकार में लपेटा हुआ कागज । इस पलीते की धूनी प्रेतग्रस्त को दी जाती है ।

—डायन को समय पर उचित साधन मिल जाय तो उसे अपने कुकृत्य में जल्दी सफलता मिलती है ।

—समाज-कंटकों को पुलिस या राजनेताओं का संरक्षण मिल जाय तब ।

—दुष्ट व्यक्तियों के हाथ में सत्ता की बागडोर आ जाय तब ।

डाकणि भूखी, मड़ै रै मांस नहीं ।–व.३२० ५७१२

डायन भूखी और मुरदे पर माँस नहीं ।

—गरीब व्यक्ति के पास रिश्वत देने के लिए पैसा न हो तब ।

—आधुनिक नेताओं की अमिट क्षुधा और प्रजा की दयनीय स्थिति का चित्रण ।

पाठा : डाकण भूखी अर मड़ा रै मांस कोनीं ।

डाकणियां रा डोळा अछांना नीं रैवै । ५७१३

डायनों की आँखें छिपी नहीं रहतीं ।

—चेहरा और आँखें समूचे व्यक्तित्व के परिचायक होते हैं, जिसके माध्यम से अंदरूनी भावना का पता चल जाता है ।

—दुष्ट व्यक्ति अपने हुलिये से पहिचाने जाते हैं ।

—छिनाल या कुलटा की आँखें उनके चरित्र को उजागर कर देती हैं ।

डाकणियां री गळियां में टाबर गियौ परौ । ५७१४

डायनों की गलियों में बच्चा चला गया ।

—जब कोई निरीह बच्चा बदमाशों की कुसंगति में चला जाय तब ।

—कोई भला व्यक्ति धूर्तों के चक्कर में आ जाय तब !

—जब कोई सद्‌गृहस्थ महिला कुटनियों के जाल में फँस जाय तब ।

—जब कोई भोला युवक किसी छिनाल के फंदे में फँस जाय ।

डाकणियां रै ब्याव में न्यूंतियारां रौ गटकौ। ५७१५

डायनों के ब्याह में मेहमानों का ही मरण।

—डायनें अपने यहाँ आमंत्रित व्यक्तियों पर ही प्रतिघात करती हैं।

—दुष्ट व्यक्ति पहिले अपने परिजनों पर ही हाथ साफ करता है।

पाठा : डाकिण रै विवाह में नौतहार खवीजै।—व. २७९

डाकणियां सूं टाबर किसा छांना! ५७१६

डायनों से बच्चे कहाँ छिपे रहते हैं!

—दुष्ट व्यक्तियों से अपना शिकार छिपा नहीं रहता।

—वेश्याएँ छिनाल औरतों को शीघ्र पहिचान लेती हैं।

पाठा : डाकणियां सूं गळियारा छांना कोनीं। डाकणियां सूं छोरा अछांना कद रैवै!

डाकिणि नै पारका मिळै तौ खावै, नहीं तौ घर रां नै ई पूगै।—व. ३३५ ५७१७

डायनों को पराये मिलें तो खाए, वरना अपनों का ही स्वाहा:।

—दुष्ट व्यक्ति को दूसरा शिकार न मिले तो घरवालों को ही हानि पहुँचाता है।

—कामुक व्यक्ति की वासना बाहर पूरी न हो तो घर की औरतों से ही अपनी भूख मिटाता है।

डाकियां रा डाव, आधै पांणी न्याव। ५७१८

डाकिनों के दाँव, आधे पानी न्याय।

—शैतानों का दाँव लगने पर वे अपने हित में ही न्याय करते हैं।

—दुष्ट व्यक्ति को न्याय का जिम्मा मिल जाय तो वे आधा माल पहिले ही हड़प जाते हैं।

डाकी मरया नै डर भागौ। ५७१९

डाकी मरे और डर मिटा।

—दुष्ट व्यक्ति के मरने पर ही डर मिटता है।

—चोर डकैतों की मृत्यु पर सामान्य जन आराम की साँस लेते हैं।

पाठा : डाकी मूवा अर डर मिट्यौ।

डाकी रै दांतां झिलियां केड़ै कुण बचै ? ५७२०

डाकी के जबड़े में फँसने पर कौन बचता है ?

—जालिमों के गिरोह में फँसने के बाद छुटकारा संभव नहीं।

—दुष्ट व्यक्ति के कब्जे में आने पर कैसा बचाव !

डाकौत सूं कांईं गिरैदसा छांनी ? ५७२१

डाकोत से ग्रह-दशा कहाँ छिपी रहती है ?

डाकोत = डंक ऋषि से उत्पन्न एक जाति विशेष जो शनिश्चर की पूजा करती है और शनिश्चर का दान भी लेती है। ये लोग ज्योतिष-विद्या का कार्य भी करते हैं।

—नेताओं से जनता की नब्ज छिपी नहीं रहती।

—धूर्त व्यक्ति मौके का हर दाँव-पेच जानता है।

डागळा री दौड़ कितरीक ? ५७२२

छत की दौड़ कितनी ?

—छत की एक सुनिश्चित सीमा है। दौड़ने के लिए पर्याप्त खुली जगह नहीं होती। और नँ उसका उपयोग ही दौड़ने के निमित्त है।

—हर चीज की अपनी-अपनी उपयोगिता होती है।

—जो व्यक्ति छोटा काम करके बड़ी-बड़ी डींग हाँके तब।

डाढ़ हिलियोड़ी खोटी। ५७२३

हिलती हुई दाढ़ बुरी।

—किसी रूप में कोई भी कमजोरी हो, वह खराब है। उसे दूर करने की चेष्टा करनी चाहिए।

—कमजोरी या बुराई को प्रारंभ से ही दुरुस्त करना लाभ-दायक है।

डाढ़ हेटै कांकरौ आयां ठा पड़ै। ५७२४

दाढ़ के नीचे कंकर आने से ही पता चलता है।

—धोखा खाने पर ही दुष्ट आदमी की पहिचान होती है।

—क्षति उठाने के बाद ही बदमाश व्यक्ति का पता चलता है।

डाढ़ी दंत सवार, सिर साथै ई चालसी। ५७२५

दाढ़ी, दाँत और सवार, सिर कटने तक साथ रहेंगे।

—बहादुर व्यक्ति की प्रशस्ति में कि उसके जिंदा रहते दाढ़ी का एक बाल या दाँत का एक छोटा-सा टुकड़ा या धड़ किसी के भी हाथ नहीं आएगी ! सिर कटने के बाद ही इन्हें कोई छू सकता है।

—शूरवीर व्यक्ति के जिंदा रहते कोई उसके पास नहीं फटक सकता।

पूरा दोहा : **डाढ़ी दंत सवार, सिर साथै ई चालसी।**

तुरी, कटारी, नार, तीनूं ईं पर-घर-मालसी ॥

योद्धा के मरने पर घोड़ी ,कटारी और नारी तीनों ही दूसरे ले जाएँगे।

डाढ़ी मांय सूं सांप निकळ्यौ। ५७२६

दाढ़ी में से साँप निकला।

—अप्रत्याशित विपदा के आने पर कहा जाता है कि अचानक दाढ़ी से यह साँप क्योंकर निकला !

—अचीती त्रासदी घटित होने पर।

डाढ़ी री झळ आपरी पैलां बुझावै। ५७२७

दाढ़ी की लपट अपनी पहिले बुझाते हैं।

—हर व्यक्ति पहिले अपना बचाव करना चाहता है।

—हर व्यक्ति को पहिले अपनी चिंता रहती है,फिर दूसरे की।

डाळ तौ तूटी पण आंबौ हाथै आयौ। ५७२८

डाली तो टूटी पर आम हाथ लगा।

—जो व्यक्ति अपने किंचित् लाभ की खातिर दूसरों के बड़े नुकसान की तनिक भी परवाह नहीं करे।

—यह आदमी की स्वाभाविक वृत्ति है कि वह अपना लाभ पहिले सोचता है, चाहे उसके बदले दूसरे का कितना ही नुकसान क्यों न हो जाय !

डावड़ा रै सोयां ब्याव थोड़ौ ई टळै। ५७२९

दूल्हे के सोने पर ब्याह थोड़े ही टलता है।

—दूल्हा सोने का बहाना भले ही करले, उससे ब्याह नहीं टल सकता, वह तो होकर ही रहेगा।

—किसी भी छोटे बहाने से बड़ा काम नहीं रुकता।

डावै हाथ रौ खेल। ५७३०

बाएँ हाथ का खेल।

—अति सामान्य या छोटा काम करने में ज्यादा देर नहीं लगती।

—जो कार्य सहज ही संपन्न हो जाय।

—अति कुशल व्यक्ति के लिए जो बात-ही-बात में काम पूरा कर दे।

डावौ नींतर जीमणौ ई सही। ५७३१

बायाँ नहीं तो दाहिना ही सही।

—हल या बैलगाड़ी में बाईं बाजू मजबूत बैल रहता है। दाहिनी बाजू मामूली कमजोर हो तब भी चलता है। इनकी अदल-बदल भी हो सकती है।

—जिन दो चीजों में ज्यादा अंतर न हो।

डावौ पग उघाड़ौ चायै जीमणौ, नागी तौ व्है ई। ५७३२

बायाँ पैर उघाड़ो चाहे दाहिना, नंगी तो होना ही है।

—परिवार में एक की बदनामी होने से सबकी बदनामी होती है।

—धर्म-संकट की स्थिति, जब घर के ही आदमी की नीयत बिगड़ जाय, तब किसे अपनी व्यथा जतलाये।

डिगंबरां रै गुड़ै धोबियां रौ के कांम? ५७३३

दिगंबरों के गाँव में धोबियों का क्या काम?

—दिगंबर साधुओं के शरीर पर चिंदी कपड़ा भी नहीं होता, तब उसे धोबी की क्या जरूरत!

—अनपढ़ों की बस्ती में विद्वान की क्या आवश्यकता!

—सीमित जरूरतों वाले व्यक्ति को वैभव की लालसा नहीं होती।

डीकरा मोटौ व्है थारै झम्मक लाडी लास्यूं । ५७३४

मेरे लाड़ले तू बड़ा हो, तेरे लिए चमाचम दुलहिन लाऊँगी ।

—जो व्यक्ति थोथे आश्वासन से किसी का मन बहलाना चाहे तब ।

—आधुनिक नेता जो विकास के नाम पर जनता से झूठे वादे करते रहे हों ।

डीकरी नै उखरड़ी बधतां वार नीं लागै । ५७३५

बेटी और घूरा बढ़ते देर नहीं लगती ।

—परवाह या चिंता किये बिना ही घर में कन्या बढ़ती है और बाहर घूरा बढ़ता है ।

—जिस समाज में कन्या की घूरे से अधिक कद्र न हो ।

डीकरी रा बाप नै ऊंघ नीं आवै । ५७३६

बेटी के बाप को नींद नहीं आती ।

—बेटी के ब्याह में खर्च बेशुमार होता है, इसलिए उसका जन्म होते ही बाप की चिंताएँ बढ़ने लगती हैं । और चिंताओं की वजह से नींद उड़ जाती है ।

—बेटा कमाई करता है और बेटी खर्च करवाती है इसलिए नींद न आने का कारण बनती है ।

डीकरी सौरी पण धांन-चूंन री तांण । ५७३७

बिटिया आराम से है पर तनिक धान-चून की तंगी रहती है ।

—इस कहावत का कटाक्ष के रूप में प्रयोग होता है, मसलन कि लड़का है तो खूबसूरत पर मिरगी के दौरे पड़ते हैं ।

—जो व्यक्ति वास्तविक स्थिति को छिपाने की चेष्टा करे ।

डीकरी हांती री धणियांणी, पांती री थोड़ी ई व्है । ५७३८

बेटी भेंट की अधिकारिणी है, हिस्से की नहीं ।

—जो व्यक्ति अपने अधिकार से अधिक पाने की चेष्टा करे ।

—मजदूर मालिकों से अधिक परिश्रम करता है, पर वह मजदूरी के पैसों का ही अधिकारी है, उससे ज्यादा नहीं ।

डीघा दिन अर बावनी रातां। ५७३९

लंबे दिन और छोटी रातें।

—ग्रीष्म ऋतु में दिन तो काफी लंबे होते हैं, पर रातें छोटी होती हैं।

—समय-समय की बलिहारी।

डील तौ धिधकै अर नांव केसर बाई। ५७४०

शरीर तो धधकता है और नाम केसर बाई।

—जिस व्यक्ति में नाम के विपरीत गुण हों।

—बाहरी आडंबर की बजाय भीतर गुण हों तो बेहतर है।

डील देखनै डांम दिरीजै। ५७४१

शरीर देखकर दाग दिया जाता है।

—जुर्म के मुताबिक सजा। छोटे जुर्म की छोटी सजा और बड़े जुर्म की बड़ी सजा।

—हैसियत के मुताबिक चंदा वसूल होना चाहिए।

डील भांगूं पण रिपिया थनै नीं भांगूं। ५७४२

शरीर तोड़ूँ पर रुपया तुझे नहीं तोड़ूँगा।

—मक्खीचूस व्यक्ति के लिए जो खाना बचाने के लालच में शरीर को भले ही क्षति पहुँचा दे, पर रुपया न तोड़े।

—उस विवेक रहित कंजूस के लिए जो काया की बजाय माया को अधिक महत्त्व दे।

डील में कोढ़ चवै अर नांव सूंदरी। ५७४३

शरीर में कोढ़ की मार और नाम सुंदरी।

—नाम के विपरीत वास्तविकता।

—नाम बड़ा और दर्शन खोटा।

डील रै चीरौ लाग्यां तौ रगत ई नीसरै। ५७४४

शरीर के चीरा लगने पर खून ही निकलता है।

—जैसा कार्य वैसा परिणाम।

—दुष्ट को छेड़ने पर वह कष्ट ही पहुँचाता है ।

डील रै डांम लागै पण अकल रै नीं । ५७४५

देह के दाग लगता है पर अक्ल के नहीं ।

—अक्ल तो जन्म के साथ ही उत्पन्न होती है,दी नहीं जाती । बाहर से थोपी नहीं जाती । बुद्धि देह के भीतर की चीज है,बाहरी अलंकरण नहीं ।

मि.क.सं.८८

डीलां पधारौ अर कांम सुधारौ । ५७४६

सशरीर पधारो और काम सुधारो ।

—अपने शारीरिक श्रम से ही काम संपन्न होता है, हुक्म देने से नहीं ।

—कोई भी काम बातों से नहीं पसीना बहाने से सफल होता है ।

डूंगर केरा वाहळा ओछां तणा सनेह । ५७४७

पर्वतीय नाले और ओछों का स्नेह स्थिर नहीं रहता ।

—ढलाई के कारण पहाड़ से उतरते नालों का बहाव बहुत तेज होता है,पर कुछ ही देर बाद वह निःशेष हो जाता है । उसी तरह ओछे व्यक्तियों की प्रीत भी शीघ्र टूट जाती है ।

पूरा दोहा : **डूंगर केरा वाहळा, ओछां तणा सनेह ।**

वहता वहै उतावळा, छटक दिखावै छेह ।।

डूंगर चढ़सी पांगळी, सीस अणूंतौ भार । ५७४८

पहाड़ चढ़ेगी अपाहिजा, सिर पर अतिशय भार ।

—अक्षम व्यक्ति बड़ी-बड़ी महत्त्वाकांक्षाएँ रखे तब ।

—औकात के परे योजनाएँ बनाने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष ।

डूंगर तौ निरखण जोग इज व्है । ५७४९

पहाड़ तो निहारने के लिए ही होते हैं ।

—बड़े आदमियों से सहयोग की आशा रखना व्यर्थ है,वे तो केवल दर्शनीय होते हैं ।

—श्रीमंतों का आडंबर देखने के लिए होता है,वे किसी के काम नहीं आते ।

डूंगर नै छींयां किण सूं सज आवै ? ५७५०

पहाड़ पर छाया भला कौन कर सकता है ?

—गरीब व्यक्ति धनाढ्य की भला क्या सहायता कर सकता है ?

—सामान्य व्यक्ति श्रीमंतों को सहारा नहीं दे सकता ।

डूंगर बळती दीसै, पगां बळती कोनीं दीसै । ५७५१

पहाड़ जलती दिखाई दे, पैरों जलती नजर न आये ।

—मनुष्य की यह स्वाभाविक वृत्ति है कि उसे दूसरों की गलतियाँ तत्काल नजर आती हैं पर अपनी गलतियाँ उसे दिखलाई नहीं पड़तीं ।

—अपनी कमजोरी देखने के लिए मनुष्य के पास वह आँख ही नहीं होती । पर दूसरों की कमजोरी वह आँखें बंद करके भी देख लेता है ।

डूंगर माथै आथरा ! ५७५२

पहाड़ पर झूल !

—किसकी क्षमता है जो पहाड़ पर झूल डाल सके ?

—जो व्यक्ति असंभव काम में हाथ डालना चाहे तब ।

—साधन-हीन भला उद्योगपतियों को क्या सहारा दे सकता है ?

पाठा : डूंगर माथै ओढ़णा ।

डूंगरी माथै गढ़ व्है अर पसवाड़ै डूंगर व्है तौ अंत-पंत लगाव होवै । ५७५३

पहाड़ी पर गढ़ हो और बाजू में हो पहाड़ तो अंतत: लगाव हो जाता है ।

—कोई व्यक्ति धन से बड़ा हो, कोई पद से बड़ा हो तो आपस में पट जाती है ।

—दो गुणी व्यक्तियों में परस्पर मेल हो जाता है ।

डूंगर माथै तौ चढ़ियां ई बेरौ पड़ै । ५७५४

पहाड़ पर तो चढ़ने पर ही पता चलता है ।

—बड़े आदमी से तो व्यवहार करने पर ही उसके व्यक्तित्व का पता चलता है कि वह कैसा है ?

—काम पड़ने पर ही बड़े आदमियों की पहिचान होती है ।

डूंगरिया रळियावणा आघा ईसरदास। ५७५५

पहाड़ तो दूर से ही सुहाने लगते हैं।

—डिंगल के महान भक्त कवि ईसरदास की यह उक्ति है कि पहाड़ तो दूर से सुहाने दिखते हैं। पास जाने पर अनघड़ पत्थर का ढेर लगता है।

—बड़े व्यक्तियों के नाम ही बड़े होते हैं, काम बड़े नहीं होते।

पाठा : डूंगरिया रळियावणा दूरां सूं दीसंत। डूंगर तौ आंतरै सूं ई रळियावणा लागै।

डूंम आसी डरड़ौ आसी, भांड आसी भरड़ौ आसी। ५७५६

डोम आयेगा ऊँट लायेगा, भाँड आयेगा तो घोड़ा लाएगा।

डरड़ौ = बूढ़ा ऊँट। भरड़ौ = वह घोड़ा जिसका रंग न तो पूरा सफेद हो न पूरा काला।

—ब्याह या किसी उत्सव में डोम आयेगा तो बूढ़ा ऊँट लाएगा, जिसे घास खिलाना पड़ेगा। भाँड आएगा तो घोड़ा लाएगा, जिसे दाना और घास दोनों खिलाने पड़ेंगे।

—किसी भी विशिष्ट आयोजन में कुछ-न-कुछ अचीती आफत आ ही जाती है।

डूंम कठै जावतौ दीवाळी करै! ५७५७

डोम कहाँ जाकर दीवाली मनाये!

—उस अप्रतिष्ठित व्यक्ति पर कटाक्ष जिसके आने-जाने का कुछ अता-पता न हो।

—खाने के लिए जहाँ-तहाँ भटकने वाले व्यक्ति के लिए।

डूंम कीं जांणै तौ बखांणै। ५७५८

डोम कुछ जाने तो बखाने।

—डोम कुछ जानता हो तो कुछ वर्णन भी करे, कुछ बताये भी।

—अज्ञानी व्यक्ति के सामने कुछ भी शंका करना बेकार है, क्योंकि वह तो कुछ जानता ही नहीं।

डूंम गाय-गाय मरै, धणी रै भायका ई कोनीं। ५७५९

डोम गा-गाकर मरे और मालिक को परवाह ही नहीं।

—जिन गुणहीन व्यक्तियों को कला की परख ही न हो।

—याचक कितना ही अच्छा गायक हो उसकी कद्र नहीं होती।

—गरीब की फरियाद भला कौन सुनता है?

पाठा : डूंमड़ौ गाय-गाय हारग्यौ, धणी यारै ई नीं करी।

डूंमड़ा कोजौ गायौ के माई-बाप पूरौ व्हियौ। ५७६०

डोम तूने बुरा गाया कि माँ-बाप पूरा हुआ।

—डोम के बुरा गाने पर उसकी बुराई की गई तो उसने हाथ जोड़कर कहा कि मालिक मैं तो जैसा-तैसा पूरा गा चुका। आप अत्यंत दयालु हैं। जो इच्छा हो दान दीजिये, मैं अपनी राह चला जाऊँगा।

—कोई भी कार्य लोगों को पसंद न आये तो तत्काल बंद कर देना चाहिए।

डूंमणी रै रोवण में ई राग। ५७६१

डोमनी के रोने में भी राग।

—किसी बात को स्वाभाविक ढंग से कहते हुए भी उस में किसी विशिष्ट भाव की ओर संकेत करने वाले व्यक्ति के लिए।

—जिस बात का कोई छिपा हुआ परोक्ष अर्थ हो।

—चतुर व्यक्ति के लिए।

डूंम तिंवारी सूं राजी। ५७६२

डोम त्योहारी से राजी।

तिंवारी = त्योहार पर बना हुआ विशिष्ट भोजन। लापसी या हलवा।

—याचक भोजन से ही प्रसन्न हो जाता है।

—छोटे व्यक्ति को कुछ मामूली देकर ही खुश किया जा सकता है।

डूंम मांगै नींतर खावै कांई? ५७६३

डोम न माँगे तो खाये क्या?

—जिस जाति का पेशा ही माँगना हो, जिसके बिना उसका निर्वाह नहीं हो सकता।

—जिस व्यक्ति का जो पेशा है, उसी पर निर्भर रहना पड़ता है।

डूंम री घोड़ी डिगरां में मरै। ५७६४

डोम की घोड़ी डिगरों में मरती है।

डिगरां = भेड़-बकरी या अन्य मवेशियों द्‌वारा चरी हुई पगडंडियाँ।

—आलस के कारण डोम अपनी घोड़ी को नजदीक ही खुली छोड़ देता है। डोम की घोड़ी दूर जाकर चरने की अभ्यस्त नहीं होती वह चरी हुई सूखी जमीन पर मुँह मारते-मारते ही मर जाती है।

—आलसी या अकर्मण्य व्यक्ति की असफलता का कारण वह स्वयं ही होता है। उसका आलस ही उसे ले डूबता है।

डूंम री घोड़ी में घणौ कस नीं व्है। ५७६५

डोम की घोड़ी में अधिक दम नहीं होता।

—गरीब व्यक्ति के साधन भी दमदार नहीं होते।

—गरीब व्यक्ति के जीने का आधार ही कमजोर होता है।

डूंम रै प्रांमणौ गांव नै भारी। ५७६६

डोम का मेहमान गाँव को भारी।

—ढोली के घर आये मेहमान का बोझ गाँव वालों पर ही होता है, क्योंकि गरीबी के कारण मेजबान की ऐसी स्थिति नहीं होती कि वह उसकी मेहमान-नवाजी कर सके।

—निर्धन व्यक्ति के अतिथियों का बोझ उसके पड़ोसियों व सगे संबंधियों पर ही होता है।

पाठा : कमीण रौ पांवणौ गांव नै भारी।

दे.क.सं.२२२

डूंम हाळी लपचेड़। ५७६७

डोम जैसा पिछ-लग्गू।

—याचक आसानी से पीछा नहीं छोड़ता।

—जो व्यक्ति किसी बात के लिए बार-बार तंग करे।

डूंम हाळौ नखरौ। ५७६८

डोम वाला नखरा।

—बड़े आदमियों के याचक होने के कारण ढोली काफी टीमटाम से रहते है ।

—जो साधन हीन व्यक्ति व्यर्थ का आडंबर करे तब ।

डूंमां आडी डोकरी अर बळदां आडी भैंस । ५७६९

डोम की बाधक डोकरी और बैलों की बाधक भैंस ।

—घर में कोई याचक आता है तो बुढ़िया उसे कुछ देने नहीं देती । बाधक बन जाती है । भैंस दूध देती है । घरवाले सुखी रहते हैं । बैलों की बजाय भैंस को अच्छा घास-बाँटा मिलता है । इसलिए भैंस बैलों की बाधक बन जाती है ।

—कोई व्यक्ति किसी को मदद करना चाहे और उसके सलाहकार मदद के लिए रोक-टोक करें तब ।

पूरी उक्ति : **डूंमा आडी डोकरी अर बळदां आडी भैंस ।**
बिद्या आडी वींदणी, इज्जत आडी अैस ॥

डूंमां री डावड़ी अर जरी रौ घाघरौ ५७७०

डोम की छोकरी और जरी का घाघरा ।

—अपनी औकात से परे दिखावा करे,उस पर कटाक्ष ।

—जो व्यक्ति अपनी आर्थिक-स्थिति को नजर-अंदाज करके ऊल-फैल करे तब !

मि.क.सं.२२१४

डूंमां रै डाढ़ी आयां परवारै । ५७७१

डोम दाढ़ी आने पर बिगड़ते हैं ।

—गायक जातियों के लड़के दाढ़ी आने के पहिले सुरीले कंठ से गाते हैं । दाढ़ी आने पर उनका कंठ कर्कश हो जाता है । वैसा सुरीलापन नहीं रहता । इसलिए गाने का मिठास मर जाता है ।

—जिस घर-परिवार के लड़के बड़े होने पर बिगड़ने लगते हैं,उनके लिए ।

पाठा : डूंमां रै डाढ़ी आयां बिगड़ै ।

डूंमां रै नित ई दीयाळी । ५७७२

डोम के हर रोज दीवाली ।

—याचक जातियाँ अमूमन यजमान पर ही निर्वाह करती हैं। जैसा यजमान खाते हैं, वैसा ही उन्हें खिलाते हैं। इसलिए उनका हर दिन त्योहार जैसा ही बीतता है।

—जो व्यक्ति दूसरों के बूते पर मौज-मस्ती मनाये।

डूंमां रै ब्याव में गीतां रौ कांई घाटौ ! ५७७३

ढोलियों के ब्याह में गीतों का क्या घाटा !

—डोम, ढोली इत्यादि जातियाँ जब यजमानों के उत्सव-आयोजनों में खूब गाती हैं, तब स्वयं उनके घर ब्याह इत्यादि में गीतों की क्या कमी !

—जो पेशेवर जातियाँ परंपरा से अपने हुनर में माहिर होती हैं, उनके परिवार में उस हुनर की क्या कमी।

डूंमां रौ सी जेठ में उडै। ५७७४

डोम की सर्दी जेठ महीने में उड़ती है।

—ऐसी मान्यता है कि ढोलियों को सर्दी बेशुमार लगती है। जेठ की गर्मी में इन्हें कहीं सर्दी से राहत महसूस होती है।

—जो व्यक्ति असामान्य व्यवहार करे उसके लिए।

—जिस दुखियारे का दुख आसानी से नहीं मिटे।

डूबतां नै डुबोवै अर तिरतां नै तारै। ५७७५

डूबते को डुबाता है और तैराक को तारता है।

—जो व्यक्ति अपने-आपको डुबाने की गफलत करता है, उसे भाग्य या ईश्वर भी डुबाता है और जो व्यक्ति तैरकर पार होना चाहता है, उसे ईश्वर भी पार होने में सहायता करता है।

—जो आदमी अपनी सफलता के प्रयास में रत रहता है, उसे भगवान का साथ मिलता है और जो अकर्मण्यता के वशीभूत कुछ काम नहीं करता उससे भगवान भी विमुख रहता है।

—जो व्यक्ति अपनी मदद करता है, उसका भगवान भी साथ निभाता है।

डूबता नै तिणकै रौ जास। ५७७६

डूबते को तिनके का सहारा।

—असहाय को किंचित् भी सहयोग मिल जाय तो वह उबर सकता है।

—चारों ओर आफत-विपदाओं से घिरे मनुष्य को कहीं से भी आशा की एक छोटी-सी किरण भी नजर आ जाये तो वह बच सकता है।

पाठा : डूबता नै तिणकै री सारौ। डूबतौ मांणस तिणकौ झांपै। डूबतौ मांणस अंवाळ में हाथ घालै।

अंवाळ = पानी के ऊपर तैरता कचरा व झाग।

डूबनै मर्‍यौ तौ ई मर्‍यौ, तिरनै मर्‍यौ तौ ई मर्‍यौ। ५७७७

डूबकर मरा तो भी मरा, तैरकर मरा तो भी मरा।

—डूबकर मरने और तैरकर मरने से त्रासदी कम नहीं होती।

—कारण कुछ भी हो यदि परिणाम घातक है तो कारण की भिन्नता कुछ माने नहीं रखती।

डूबा माथै तीन बांस। ५७७८

डूबे ऊपर तीन बाँस।

—डूबे हुए व्यक्ति पर पानी चाहे एक हाथ हो, चाहे सौ हाथ, कुछ फर्क नहीं पड़ता।

—आफत-विपदाओं के दलदल में फँसने के पश्चात् उबरना मुश्किल है।

—कर्ज में दबे व्यक्ति का बचना दूभर है।

डूब्यौ वंस कबीर, रौ, जायौ पूत कमाल। ५७७९

डूबा वंश कबीर का, जन्मा पूत कमाल।

—कबीर की मान्यताओं से विपरीत मान्यताएँ उनके पुत्र कमाल की थीं। इसलिए कबीर के भाग्य की विडंबना कि अपने पुत्र को भी सही माने में अनुयायी नहीं बना सके।

—जिस परिवार की औलाद बिगड़ जाय उनके लिए।

डेडर नै हाथी री कांई बराबरी? ५७८०

मेंढक और हाथी की क्या बराबरी?

—अशक्त और शक्तिशाली में कैसी समानता!

—गरीब और धनाढ्य में कैसी समानता।

—विषम विचारों के व्यक्तियों में मेल नहीं होता।

डेडर हाथी थोड़ौ ई डाक सकै । ५७८१

मेंढक हाथी को फलांग नहीं सकता ।

—निर्बल व्यक्ति पराक्रमी का सामना नहीं कर सकता ।

—निर्धन व्यक्ति धनाढ्य के सामने पूर्णतया विवश होता है ।

पाठा : मींडकौ हाथी नै कद डाक सकै ।

डेडरां रै कूद्यां नाडी थोड़ी ई फाटै । ५७८२

मेंढकों की उछलफाँद से तालाब फटने से रहा ।

—मेंढक चाहे कितने ही जोर से फलांग भरे तालाब के उस पार नहीं जा सकता ।

—गरीब व्यक्ति अभावों के दलदल से उबर नहीं सकता ।

डेडरां रै डरड़ाटां बिरखा जांणीजै । ५७८३

मेंढकों की टर्र-टर्र बरसात की सूचक ।

—हुड़दंग-कोलाहल तो उत्सव-आयोजन का ही परिचायक है ।

—बच्चों की किलकारियाँ खुशहाली की सूचक होती हैं ।

डेडरां वाळी पंसेरी । ५७८४

मेंढकों वाली पँसेरी ।

पंसेरी = पाँच सेर का बाट ।

—मेंढक चाहे कितना जोर लगाएँ पंसेरी नहीं उठा सकते ।

—अक्षम व्यक्ति बड़ा काम नहीं कर सकते ।

डेडरा रौ जीव दरियावां ! ५७८५

मेंढक का जी तालाब में !

—तालाब ही मेंढक का प्राण है ।

—पानी के लिए मेंढक के प्राण तरसते हैं ।

—भक्त का मन सदैव भगवान में लीन रहता है ।

—कामुक व्यक्ति का मन हमेशा औरत के लिए तरसता है ।

डेडरा वाळौ दरियाव । ५७८६

मेंढ़क वाला समंदर ।

संदर्भ-कथा : संयोग से एक बार समंदर का मेंढक कुए में गिर पड़ा । कुए के मेंढ़क ने चौंककर पूछा, 'कौन है, कौन है ।' समंदर के मेंढक ने अपने दुर्भाग्य का रोना रोया तो कुएँ के मेंढक ने आश्वस्त करते कहा, 'इस में रोने-धोने की क्या बात है ! तुम्हारा समुद्र कुएँ से बड़ा थोड़े ही होगा ?' समंदर के मेंढक को सहसा हँसी आ गई । कहा, 'तू समंदर का अनुमान नहीं लगा सकता । कुएँ से लाख-लाख गुना बड़ा होता है ।' कुएँ के मेंढक ने दोनों पाँव पसारकर जानना चाहा—इतना बड़ा ! समंदर के मेंढक ने टर्राते कहा, 'नहीं रे नहीं ! तुम सपने में भी समंदर की विशालता का अनुमान नहीं लगा सकते ।' कुएँ के मेंढक की खातिर समंदर की कल्पना भी संभव नहीं थी । उसने कुएँ के पानी की तीन परिक्रमा देकर पूछा, 'तो क्या तुम्हारा समंदर इतना बड़ा है ?' तब समंदर के मेंढक ने अट्टहास करते कहा, 'क्यों बेकार मेहनत कर रहे हो । सौ बरस तक चक्कर काटते रहो तब भी उसकी विशालता का अनुमान लगाना तुम्हारे लिए असंभव है ।' कुएँ के मेंढक ने जोश में आकर कहा, 'यह बात तो उठी वहीं से झूठी है । तुम्हारा समंदर इस कुएँ से बड़ा हो ही नहीं सकता । तुम लाख समझाओ मैं नहीं मानता ।' तब समंदर के मेंढ़क ने धीर-गंभीर सुर में कहा, 'तुम से मगजमारी करना संगत नहीं, तुम कुएँ के मेंढक हो, समुद्र की कल्पना करना भी तुम्हारे वश की बात नहीं ।'

—संकीर्ण विचारों वाले व्यक्ति पर कटाक्ष ।

—जिस व्यक्ति के अनुभव का दायरा अत्यधिक सीमित हो ।

डेडरा वाळौ भैंस रौ पग हुवौ । ५७८७

मेंढक की नाईं भैंस के खुर का अभिमान ।

—अति संकीर्ण विचारों वाले व्यक्ति पर कटाक्ष ।

—जिस व्यक्ति के अनुभव का दायरा बेहद सीमित हो ।

मि.क.सं.५७८६

डेडरिया करै डरां-डरां , खाली कोठा भरां-भरां । ५७८८

मेंढक करे टर्र-टर्र, रीते कोठे भर-भर ।

—मेंढकों की टर्र-टर्र, वारिश होने की पूर्व-सूचना का लक्षण है। किसी शुभ सूचना या मांगलिक अवसर का पहिले आभास हो जाय तब।

—मधुर वाणी सुख-शांति की परिचायक होती है।

डेढ़ छैल री नगरी में ढाई छैल आयौ, ठगैला, पण ठगावैला नीं। ५७८९

डेढ़ छैल के नगर में ढाई छैल आया, ठगेगा पर ठगायेगा नहीं।

—सेर को सवा सेर मिल जाय तब!

—किसी धूर्त को महाधूर्त मिल जाय तब!

डेरां-डेरां पीर नीं व्है। ५७९०

घर-घर में पीर नहीं होता।

—घर-घर में महान व्यक्ति नहीं होते।

—महान व्यक्ति तो बिरले ही होते हैं।

—आदर्श व्यक्तियों का जन्म तो शताब्दियों में होता है।

डेरै-डेरै मीर। ५७९१

बस्ती-बस्ती मीर।

—जिस परिवार के सभी व्यक्ति विलक्षण हों।

—जिस परिवार के सभी व्यक्ति एक-से-एक बढ़कर हों।

डैरां सांम्ही डोली बावै। ५७९२

डेहर की ओर डोली फेंकने में क्या तुक।

डैर = जो नीची जमीन बरसात में भर जाय।

डोली = पानी सींचने का छोटा उपकरण।

—जिस चीज की जहाँ बहुतायत हो उधर वही चीज ले जाने में कोई सार नहीं।

—उलटे बाँस बरेली को।

—साँभर झील पर नमक उछालना।

डोई की जांणै तेवड़ रौ स्वाद ? ५७९३

डोई क्या जाने पकवान का स्वाद ?

डोई = काठ का बड़ा चम्मच ।

—चम्मच पकवान बनाते समय उसके बीच ही रहता है, पर वह नहीं जानता कि उसका स्वाद कैसा है ।

—गँवार क्या जाने अध्यात्म का स्वाद या ईश्वर की महिमा !

—जो अरसिक साहित्य या संगीत में नहीं समझे ।

डोई ढकणी नै मैणी देवै । ५७९४

डोई ढक्कन को ताना दे ।

डोई = काठ का बड़ा चम्मच ।

—डोई पकवान को इधर-उधर हिलाती है, परोसने का काम भी करती है । मतलब वह चंचला है । ढक्कन भेद छिपाने का काम करता है । वह गंभीरता का परिचायक है । और डोई चाटुकारिता की ।

—चाटुकार व्यक्ति गंभीर व्यक्ति का उपहास करे तब ।

—छिनाल औरत पतिव्रता की बुराई करे तब !

डोकरद्ये डाकण मोट, क्यारे चेनाळ कैंज हैं ।– भी. २७९ ५७९५

बुढ़िया को डायन, युवती को छिनाल कहते ही हैं ।

—असलियत की पहिचान किये बिना अफवाहों पर विश्वास करना उचित नहीं है ।

—किसी की भी बदमानी पर विश्वास कर लेना स्वाभाविक है पर संगत नहीं ।

डोकरियां नै राजकथा सूं के कांम ? ५७९६

बुढ़ियाओं का राजनीति से क्या सरोकार ?

—यह उक्ति बारहठ कृपारामजी द्वारा रचित राजिया के सोरठे पर आधारित है !

दोहा : **चरखौ रोटी रामं, इतरौ मुतलब आपरौ ।**
की डोकरियां कांम, राजकथा सूं राजिया ।।

—सामान्य व्यक्ति को अपने काम-से-काम रखना चाहिए, राजनीति व इधर-उधर की बातों से क्या मतलब !

दे.क.सं.२३८४

डोकरियां भावै ई पतिवरता। ५७९७

बूढ़ी औरतें मजबूरी में पतिव्रता होती हैं।

—समय या उम्र की अपनी पहिचान होती है। बीत जाने पर उसका प्रभाव क्षीण हो जाता है।

—अभावग्रस्त व्यक्ति ऐयाशी नहीं कर सकता।

डोकरी असवार बिरौबर आया। ५७९८

बुढ़िया और घुड़सवार बराबर आये।

प्रसंग : एक घुड़सवार तेजी से चलकर बारबार राह में रुक जाता और एक बुढ़िया अपनी सामान्य चाल से अनवरत चलती रही, कहीं भी नहीं रुकी। परिणाम-स्वरूप वे अपनी मंजिल पर साथ-साथ पहुँचे।

—निरंतर काम करते रहने की अपनी खूबी है, उतावली करना ठीक नहीं।

डोकरी कित्ता बरसां में व्ही के व्हियां ई जावूं ! ५७९९

बुढ़िया कितने बरस की हुई कि होती ही जा रही हूँ !

—जिस बात का आसानी से कहीं कूल-किनारा न दिखे तब।

—जिस बात का समाधान नजर न आये तब।

दे.क.सं.४६२२

डोकरी केई डोफा देख्या ! ५८००

बुढ़िया ने ऐसे कई गाफिल देखे हैं !

—जो अनुभवी या होशियार व्यक्ति सहज ही किसी के बहकावे में नहीं आए तब वह शान से कहता है कि ऐसे मूर्ख व्यक्ति कई देखे हैं, वरना कब का फँस चुका होता।

डोकरी गांव नै कैजै मत के म्हनै कह्यां गांव नै कैवण री जरूरत ई कोनीं। ५८०१

बुढ़िया गाँव को कहना मत कि मुझे कहने पर गाँव को कहने की जरूरत ही नहीं।

—जिस व्यक्ति के पेट में कोई बात न पचे तब !

—औरतें सामान्यतया किसी भी भेद को छिपाकर नहीं रख सकतीं।

डोकरी टाळ पिछोकड़ै कुण जावै ? ४८०२

बुढ़िया के अलावा पिछाड़ी कौन जाये ?

—बुढ़िया के अलावा पिछाड़ी कौन शौच जाये !

—बदनाम व्यक्ति पर ही जब हर बुरे काम का संदेह किया जाय तब !

—परिवार के प्रत्येक अच्छे-बुरे काम की जिम्मेदारी बुजुर्ग पर ही रहती है।

डोकरी-डोकरी कितरौ भार के अेक घड़ौ परौ उतार। ४८०३

बुढ़िया-बुढ़िया कितना भार कि एक घड़ा और उतार।

—काम तो आखिर निरंतर करने से ही होता है, सोच से नहीं।

—हर काम के लिए अपना निर्धारित समय निश्चित होता है, हड़बड़ी करने से जल्दी संपन्न नहीं होता।

—काम का बोझ करते रहने से ही कम होता है।

डोकरी तौ मुई पण जमदूतां घर दीठौ। ४८०४

बुढ़िया को तो मरना ही था, पर यमदूतों ने घर देख लिया।

—बुढ़िया की उम्र तो ढल चुकी थी, उसके मरने की कोई परवाह नहीं, पर मौत ने घर देख लिया तो कल बच्चे-युवकों पर भी यही गुजरेगी, तब वाकई चिंता की बात होगी।

—छोटी हानि के भय से निरंतर बड़ी हानि की संभावना से आक्रांत रहने वाले व्यक्ति के लिए।

—घर के किसी भेद का सुराग लग जाये तब !

—दुर्व्यसन की शुरुआत होने पर वह बढ़ता रहता है, छूटता नहीं।

डोकरी दूबळी कीकर के आखै गांव री तळतळावण। ४८०५

बुढ़िया दुबली क्योंकर कि पूरे गाँव की चिंता का भार।

दे.क.सं. २१५१

पाठा : डोकरी थाकी जावै के गांव रौ सांसौ।

डोकरी धसै नै चोर नसै। ५८०६

बुढ़िया खाँसे और चोर भागें।

—बुढ़िया तो बीमारी की वजह से खाँसी, पर चोरों ने सोचा कि घरवाले जाग गये। सावधान हो गये। चोरी करने की हिम्मत नहीं हुई और वे भाग छूटे।

—चोर के पाँव कमजोर होते हैं।

—संयोग से सिर पर आई आफत टल जाये तब।

डोकरी नै कांई पापड़ बटणा सिखावै ? ५८०७

बुढ़िया को क्या पापड़ बेलना सिखाये ?

—किसी भी हुनर में प्रवीण व्यक्ति को वही पाठ सिखाये तब।

—अनुभवी व्यक्ति को सीख देने पर।

डोकरी मरी कियां के सांस नीं आयौ। ५८०८

बुढ़िया मरी कैसे कि साँस नहीं आया।

—जो बात किसी से छिपी हुई नहीं है, फिर भी कोई उसी के बारे में पूछताछ करे तब परिहास में वैसा ही जवाब देना पड़ता है।

—सर्व-विदित बात के लिए कोई व्यर्थ शंका करे तब !

डोकरी मसांण किणरा के आयां-गियां रा। ५८०९

बुढ़िया ये मसान किसके कि आने-जाने वालों के।

संदर्भ : किसी राहगीर ने एक बुढ़िया से पूछा कि गाँव का नाम क्या है। बुढ़िया ने उत्तर दिया— अमरपुरा। राहगीर ने आगे और शंका की—फिर ये मसान किसके लिए है ? बुढ़िया ने बताया—आने-जाने वालों के लिए है। इस गाँव में तो कोई मरता ही नहीं।

—किसी स्वाभाविक स्वयं-सिद्ध बात के लिए कोई तथ्यहीन जिज्ञासा करे तब !

डोकरी-मां नातै जासी के अरटियौ ऊंधौ करनै ई बैठी हूं। ५८१०

माजी पुनर्विवाह करोगी कि चरखा औंधा करके ही बैठी हूँ।

—चरखा औंधा करने का तात्पर्य कि तैयार होकर बैठना है।

—जो व्यक्ति अपना ही नुकसान करने के लिए आमादा हो।

—जो व्यक्ति अपनी बदनामी की तनिक भी परवाह न करके कोई भी बुरा काम करने को उद्यत हो, उसके लिए।

पाठा : डोकरी घर करै के खुरा खांच्यां बैठी हूं।

डोकरी-माई थूं डाकण है तौ रायचंद रौ काळजौ खायलै। ५८११

माई ! तू डायन है तो रायचंद का कलेजा खाले।

—जो काम खुद करने की हिम्मत न हो और वह दूसरों के द्वारा करवाने की मंत्रणा सोचे तब।

—जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे को अपराध करने के लिए उकसाये तब।

डोकरी रा डील में माथौ ई माथौ है। ५८१२

बुढ़िया की देह में सिर-ही-सिर है।

—जिस दुबले-पतले व्यक्ति के शरीर में सिर-ही-सिर नजर आये।

—जो व्यक्ति केवल कमजोरियों का ही पिंजर हो।

डोकरी रै कहै खीर कुण रांधै ? ५८१३

डोकरी के कहे खीर कौन पकाये ?

—जिस व्यक्ति की अपने परिवार में कुछ न चले, उसके लिए।

—किसी व्यक्ति की राय न मानने पर, वह खीज से इस उक्ति का प्रयोग करता है।

—जिस बूढ़े-बुजुर्ग की घर में इज्जत न हो।

पाठा : डोकर री खातर खीर कुण रांधै ?

डोकरी रै घर में नाहर बड़ग्यौ। ५८१४

बुढ़िया के घर में नाहर घुस गया।

—जब कोई अशक्त व्यक्ति बलवान के द्वारा सताया जाय तब !

—जब कोई कमजोर परिवार में नामजद बदमाश की घुसपेठ होने लगे तब।

डोकरी वाळौ खिरगोस ! ५८१५

बुढ़िया वाला खरगोश !

संदर्भ-कथा : जंगल में कंडे बीनती बुढ़िया की टाँगों के बीच से खरगोश निकल गया तो वह रोती-चिल्लाती गाँव में आई। लोगों ने समझाया कि जब खरगोश निकल गया और उससे कोई क्षति नहीं हुई, तब खामखाह चिल्लाने से क्या फायदा ! तब उसने रोते-रोते ही कहा कि वह बेकार नहीं रो रही है। आज खरगोश ने रास्ता देख लिया तो कल नाहर, बाघ या भेड़िया निकलेगा। यह शुरुआत ही ख़राब है।

—गलत राह की शुरुआत ही बुरी है, जहाँ तक बन पड़े उससे बचना ही चाहिए।

डोकरी वाळौ हांसौ। ५८१६

बुढ़िया वाली मजाक।

संदर्भ-कथा : एक बुढ़िया की गाँव में पूछ कम हो गई तो वह ढलती रात जागने पर जोर-जोर से चिल्लाई—चोर, चोर। अड़ोसी-पड़ोसी अदेर इकट्ठे हुए। पर चोर का कुछ भी अता-पता नहीं चला। न उसके पद-चिह्न भी कहीं नजर आये। कैसा भी नामजद चोर हो, आकाश से उतरकर तो आया नहीं। बुढ़िया ने चार-पाँच बार चोर-चोर की चिल्लाहट से गाँव को खामखाह तकलीफ दी। पर एक बार आधी रात को वाकई उसके घर में चोर घुस आया। वह बहुत देर तक चिल्लाती रही, पर किसी ने भी उसकी चिल्लाहट पर भरोसा नहीं किया ! चोर मजे से चोरी करके भाग गया।

—झूठा व्यक्ति सच बोले तब भी उसका कोई भरोसा नहीं करता।

—व्यर्थ की मजाक-मजाक के द्वारा जब वास्तव में बड़ी हानि हो जाये तब।

डोकरी सोधै चूंखा, उडगी पोटां री पोटां। ५८१७

बुढ़िया सोधे फाहे, उड़ गये गट्ठर पर गट्ठर।

—जो व्यक्ति अल्पतम हानि की परवाह करे और भारी नुकसान की ओर से आँखें मींचे रहे।

—उस लापरवाह समझदार व्यक्ति पर कटाक्ष जो अत्यंत छोटी बातों के प्रति सतर्क रहे और बड़े-से-बड़े घाटे की परवाह न करे।

डोकरो देखी ने अड़वो नी, मोटक्यार देखी ने बिहवो नी।–भी.४०२ ५८१८

बूढ़ा देखकर अड़ना नहीं, नौजवान देखकर डरना नहीं।

—बूढ़ा व्यक्ति अपने अनुभवों के कारण कई दाँव-पेच जानता है, इसलिए उससे भिड़ना उचित नहीं। इसके विपरीत जो नवयुवक बलिष्ठ दिखता है, पर उस में अनुभवों की कमी है। उससे डरना व्यर्थ है।

—शारीरिक पुष्टता की तुलना में अनुभव की ताकत अधिक होती है।

डोकरो मुवो ने डग-डगारो मटक्यो।– भी.४०३ ५८१९

बढ़ऊ मरा और सब हिचकिचाहट मिटी।

—परिवार का बुजुर्ग जब तक जीवित रहता है—उसका पूरा नियंत्रण रहता है। घर में अनुशासन रहता है। उसके अंकुश का सदैव ध्यान रहता है। पर उसके दिवंगत होने पर परिवार का हर सदस्य अपनी मनमानी करने लगता है। अनुशासन बिगड़ जाता है। परिवार का पराभव होने लगता है।

—पारिवारिक सुख-शांति के लिए बुजुर्गों का आशीर्वाद निहायत अनिवार्य है।

पाठा : डोकरौ मूवौ अर गिरगिराटौ मिट्यौ।

डोका साटै डांगरौ मूंघौ कोनीं। ५८२०

घास के बदले बैल महँगा नहीं।

—जैसा-तैसा घास खाकर भी बैल हर किसी मौके पर काम आता है। उसका कुछ-न-कुछ महत्त्व है जो घास के खर्च से कहीं बेशी है।

—मामूली खर्च बचाने के आशय से उपयोगी वस्तु की उपेक्षा करना संगत नहीं।

पाठा : डोकां सूं मूंघा तौ ढोबा ई कोनीं।

डोका बांस री होड कद करै ? ५८२१

डंठल बाँस की होड़ नहीं कर सकते।

—लड़ाई-झगड़े में ज्वार-बाजरे के डंठल बाँस के लट्ठ की बराबरी नहीं कर सकते।

—कमजोर व्यक्ति सत्ता के लट्ठ का सामना नहीं कर सकता।

—शक्तिशाली निर्बल पर सदा राज्य करते रहे हैं।

डोका री संडासी सूं फाळ्यौ नीं झिलै। ५८२२

सरकंडे की संडासी से फालिया नहीं पकड़ा जा सकता।

फाळ्यौ = फालिया = तपे हुए लाल-सुर्ख लोहे का टुकड़ा जो लोहे की संडासी में पकड़कर गढ़ा जाता है। यदि वह सरकंडे की संडासी से पकड़ा जाय तो वह तुरंत जल जाएगी।

—कोई अक्षम व्यक्ति बड़े काम में हाथ डाले तब !

—किसी निर्बल व्यक्ति को कठिन कार्य सौंपा जाय तब।

डोड्या रौ जोर आगड़ा तांईं। ५८२३

डोडिये का जोर आगड़े तक।

प्रसंग : काँटी की एक बेल, जो जमीन पर ही छाई रहती है। कच्ची रहने पर सभी मवेशी खाते हैं। पकने पर गाँठों के काँटे ऊँट व बकरी ही खाते हैं। पाँवों में गड़ने पर काँटा गहरा नहीं पैठता, क्योंकि उसके पीछे चौड़े आगड़े की रुकावट रहती है। (यहीं ऐसे स्थलों पर मातृभाषा की अपरिहार्य विशिष्टता है, जिसके शब्दों को हिंदी में समझाना काफी कठिन है)।

—कोई भी दुष्ट व्यक्ति अपने सामर्थ्य के अनुसार ही कष्ट पहुँचा सकता है।

पाठा : **कांटी रै बोबिया रौ आगड़ा तांईं जोर।**

डोढ़ अकल आप में अर आधी अवरां में। ५८२४

डेढ़ अकल आप में और आधी दूसरों में।

—जब कोई अल्पज्ञानी किसी विद्वान की गंभीर बातों का खंडन करे तब !

—संकीर्ण विचारों वाला दंभी अपने-आपको सर्वाधिक बुद्धिमान समझता है।

डेढ़ घोड़ौ नै डीडवांणै पायगा। ५८२५

डोढ़ घोड़ा और डीडवाने अस्तबल।

—नागौर जिले के डीडवाने में सैनिकों के अस्तबल युद्ध की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रहे हैं। इसके विपरीत जिस व्यक्ति के पास डेढ़ घोड़ा ही हो और वह आकांक्षा रखे या होड़ करे डीडवाने के अस्तबल की।

—जो साधन-रहित व्यक्ति ऊँची-ऊँची महत्त्वाकांक्षाएँ रखे उस पर कटाक्ष।

डोढ़ चावळ री खीर नीं बणै। ५८२६

डेढ़ चावल की खीर नहीं बनती।

—अल्प साधनों से बड़ा काम संभव नहीं हो सकता।

—गरीब व्यक्ति की कामनाएँ कभी फलीभूत नहीं हो सकतीं।

डोढ़ मींगणी धुकै। ५८२७

डेढ़ मींगनी धुके।

—यत्किंचित् ईंधन का ताप अधिक देर नहीं रह सकता।

—छोटा कटाक्ष भी मामूली धूआँ देने लायक जलन पैदा कर सकता है।

डोढ़ हुंस्यार घणौ ठगीजै। ५८२८

डेढ़ होशियार अधिक ठगा जाता है।

—डेढ़ होशियार हमेशा इस मुगालते में रहता है कि वह सबको उल्लू बना सकता है, पर उसे कोई नहीं ठग सकता। इसी गलत-फहमी के कारण वह अजाने ही अधिक ठगा जाता है।

—दंभी के मुगालते में जोर नहीं होता, वह अकसर मात खाता है।

डोढ़ी चालै रे कतरणी वायल में। ५८२९

टेढ़ी चले रे कैंची वायल में।

—महीन वाइल या झीनी मलमल को काटते समय कैंची काफी टेढ़ी चलती है।

—किसी भी दुश्मन को हानि पहुँचाने के लिए टेढ़े दाँव-पेच अनिवार्य हैं।

डोफै लियौ गळा में डाळौ, गिणियां पांन चरै गोपाळौ। ५८३०

मूर्ख ने लिया गले में फंदा, गोपाल चरे पान चुनिंदा।

—जो व्यक्ति किसी भोले व्यक्ति को मूर्ख बनाकर उसके बूते पर ऐश करे।

—मूर्खों का माल होशियार व्यक्ति उड़ाएँ तब।

डोबी नी टाटली चाळी नीं चाकरी।– भी.४०४ ५८३१

भैंस के चारे की और बकरी को चराने की व्यवस्था बराबर होती है।

—यदि भैंस के लिए चारे-बाँटे की बड़ी व्यवस्था करनी पड़ती है तो वह दूध भी अधिक देती है। बकरी के लिए कँटीली डालियाँ काटने की व हिंसक पशुओं से रक्षा करने की व्यवस्था भी कम नहीं और वह उसी अनुपात में दूध भी कम देती है।

—छोटे-बड़े सभी प्राणियों को जीवित रखकर उपयोग में लाने की अपनी-अपनी समस्या होती है।

—छोटे-बड़े काम की व्यवस्था के अनुरूप ही उसका उपयोग है।

डोबौ दूवा नै नीं अर रांड रोवा नै नीं। ५८३२

भैंस दूहने के लिए नहीं, राँड रोने के लिए नहीं।

—अभावग्रस्त अकेले व्यक्ति के लिए न ढोर-डाँगर का झंझट है और न मरने पर पीछे रोने वाली औरत है।

—जिस व्यक्ति की पारिवारिक और सामाजिक कोई जिम्मेवारी न हो।

डोर तौ अेक जणै री हलाई हालै। ५८३३

डोर तो एक जने के हिलाने पर हिलती है।

—परिवार में एक व्यक्ति का नियंत्रण हो तभी परिवार सुचारु रूप से चलता है। पर राज्य एक व्यक्ति के द्वारा चलाने पर अधिनायक की निरंकुश मनमानी से व्यक्ति क्रूरतम हो जाता है।

डोरी बळे, डोरी नो आमळो नीं बळे।– भी.४०५ ५८३४

रस्सी जल जाती है पर ऐंठ नहीं जलती।

—जो व्यक्ति आर्थिक व सामाजिक रूप से बरबाद होने पर भी अपनी हेकड़ी न छोड़े, उस पर कटाक्ष।

—दयनीय स्थिति के बावजूद दंभ नहीं छोड़ने पर।

पाठा : **राहड़ी बळै पण बट नीं जावै।**

डोरी सूं भाटौ वढ़ै। ५८३५

रस्सी से पत्थर कटता है।

—विनम्रता से कठोर दिल भी पसीज जाता है।

—निरंतर प्रयास से कैसा भी दूभर काम सफल होता है।

—नितनेम की महिमा अपरंपार।

डोरौ तूटतां जेज लागै पण आव तूटतां जेज नंह लागै। ५८३६

धागा टूटते देर लगती है पर आयु टूटते देर नहीं लगती।

—नश्वर मनुष्य का कब प्राण टूट जाय, कुछ पता नहीं चलता।

—मानवी-जीवन क्षण-भंगुर है, इसमें राजा या रंक किसी के लिए व्यतिक्रम नहीं।

डोरौ तूट्यां गांठ पड़ै। ५८३७

धागा टूटने पर गाँठ पड़ती है।

—मित्रता या आपसी रिश्तों का धागा एक बार टूटने पर जुड़ता नहीं, जुड़ भी जाय तो हमेशा के लिए उस में गाँठ पड़ जाती है। मन में बसा वैमनस्य नहीं मिटता।

—जहाँ तक बन पड़े दोस्ती या रिश्ता न टूटे तो श्रेयस्कर है। एक बार टूटने पर मनमुटाव जाता नहीं।

डौळ डाकण रौ अर मिजाज परी रौ। ५८३८

हुलिया डायन का और मिजाज परी का।

—कुरूप स्त्री के द्वारा अधिक साज-सिंगार करने पर या नखरे करने पर दूसरी स्त्रियाँ इस कहावत के द्वारा अपने मन की भड़ाँस निकालती हैं।

—जो व्यक्ति अपनी औकात भूलकर आडंबर का प्रदर्शन करे तब!

ढं - ढौ

ढंढ वाळी छम्माछोळ है । ५८३९

ढंढ वाली मायावी लीला है ।

ढंढ = पुराना तालाब जो काश्त के काम आता हो ।

—ऐसी मान्यता है कि पुराने तालाब के किनारे खेजड़ी, पीपल इत्यादि पर प्रेतों का निवास रहता है । वहाँ वे प्रेत-लीला मचाते हैं । उत्पात करते हैं ।

—निर्जन स्थान पर होने वाली प्रेत अथवा मायावी लीला ।

—जिस एकांत अड्डे पर उपद्रव या उत्पात होते हों ।

ढकणी नै डोयलौ मोसा मारै । ५८४०

ढक्कन को डोई ताने मारती है ।

दे.क.सं.५७९४

ढकणी में ढोकळौ , मेह बाबौ मोकळौ । ५८४१

ढक्कन में ढोकल नूर, मेह बाबा पूरमपूर ।

—चौमासे की सुहानी ऋतु में दाल-ढोकला या दाल-बाटी व चूरमा सामूहिक रूप से खाने का रिवाज है ।

—बरसात की रिमझिम, बादलों की गड़गड़ाहट, बिजलियों की झबझब, हरियल वनस्पति का मदभरा वातावरण देखकर बच्चे आनंद में विभोर होकर गाते हैं—ढकणी में ढोकळौ, मेह बाबौ मोकळौ ।

—खुशहाली व बहबूदी के अवसर पर मन स्वतः नाच उठता है।

ढक्योड़ौ मत उघाड़, बाकी सै घर बहू थारौ ई है। ५८४२

ढकी हुई चीज मत उघाड़, हे बहू, बाकी सब घर तेरा ही है।

—घर के छिपे हुए भेद को मत उघाड़, हे बहुरानी, बाकी घर सब तेरा ही है, उसकी मर्यादा रखना।

—बहू की सीमित स्वतंत्रता की ओर संकेत कि घर में तो सब उपयोगी चीजें ढकी रहती हैं, यदि उन्हें उघाड़ कर नहीं बरते तो फिर यह कैसी छूट है, केवल मीठी बातों से बहलाने की।

ढपोळ संख। ५८४३

ढपोर शंख।

—शंख दो तरह के होते हैं—एक तो पंच-मुखी शंख जो प्रत्येक आशा को पूर्ण करता है। दूसरा ढपोर-शंख जो झूठे दिलासे देता रहता है, पूरा एक भी नहीं करता।

—जो व्यक्ति झूठी आशा देता रहे और काम छदाम भर भी न करे।

—महामूर्ख व्यक्ति के लिए उपयुक्त संबोधन।

ढबां खेती पखां न्याव, पखां व्है बूढ़ां रा ब्याव। ५८४४

ढंग से खेती, पक्ष से न्याय और पक्ष से हो बूढ़ों का ब्याह।

—ढंग या सलीके से खेती होती है। पक्ष सबल हो तो न्याय होता है और सबल पक्ष से ही बूढ़ों का ब्याह होता है।

—आपसी सहयोग से ही अधिकांश कार्य संपन्न होते हैं।

ढबै तौ आप सूं अर जावै तौ सगा बाप सूं। ५८४५

रहे तो अपने-आपसे ही और जाये तो सगे बाप से ही।

—स्त्री रहती है तो स्वयं अपने नियंत्रण से ही, वरना वह अपने बाप का भी नियंत्रण नहीं मानती।

—स्त्री अपने पति के घर अपने मन से ही रह सकती है, वरना जोर-जबरदस्ती तो उसके बाप की भी नहीं चल सकती।

ढम-ढम बाजै आछौ लागै, नेग मांगतां मुंहडौ भांगै। ५८४६

ढम-ढम बजे अच्छा लगे, नेग चुकाते मुँह बिगाड़े।

—यों ढोल की अनुगूँज अच्छी लगती है, सुहाती है पर जब ढोली नेग माँगता है, तब बहुत बुरा लगता है।

—जो व्यक्ति किसी चीज का आनंद तो लेना चाहे, पर उसकी कीमत चुकाने के लिए आनाकानी करे तब।

ढमाढम ढोल अर मांहै पोल। ५८४७

ढमाढम ढोल और भीतर पोल।

—ढोल गूँजता तो बहुत जोर-शोर से ही है, पर उसके भीतर तो सर्वत्र पोल-ही-पोल है।

—जिस व्यक्ति के नाम का तो खूब ही बोलबाला हो, पर भीतर आर्थिक-स्थिति बहुत खराब हो। छवि के अनुरूप जिस बंदे का व्यक्तित्व न हो।

ढळकती छीयां। ५८४८

ढरकती छाया।

—छाया का रुख देखकर बैठने वाले को सदा आराम रहता है।

—जिस व्यक्ति पर बड़े आदमियों की छत्रछाया रहती हो तो उसे वक्त-जरूरत सहयोग की खातिर परेशानी उठानी नहीं पड़ती।

ढळग्यौ पांणी, लारै धूड़-धांणी। ५८४९

ढल गया पानी, पीछे धूल-धानी।

—पानी मोती का ढले या मनुष्य का, पीछे उसकी रंचमात्र भी कीमत नहीं रहती।

—जब तक इज्जत है, सब कुछ है, इज्जत जाने पर सारी संपदा व्यर्थ है।

ढळता नै ढाळ आयौ। ५८५०

ढलते को ढाल मिला।

—चलने की इच्छा हो और ढलाई मिल जाय तो गति बढ़ जाती है।

—इच्छा के अनुसार मौका मिल जाय तब।

—कुलटा को एकांत मिल जाय तो उसकी इच्छा-पूर्ति में कोई कसर नहीं रहती।

पाठा : ढळता नै ढाळ लाधी ।

ढळ मीठा व्है तौ स्याळिया कद छोडता । ५८५१

ढेले मीठे हों तो सियार कब छोड़ते ।

दे.क.सं.१९५३

ढळ वायनै ढींढौ ई नीं वायौ । ५८५२

ढेला फेंककर वापस कंडे का टुकड़ा भी नहीं फेंका ।

—मुख जबानी निमंत्रण तो दिया, पर वापस किसी को बुलाने ही नहीं भेजा ।

—सच्चे मन से किसी को निमंत्रण न देने पर ।

—किसी बात को गंभीरता से न लेने पर ।

ढळे ते खावे भळे ।– भी.४०६ ५८५३

ढरके तो खाय पराये ।

—कोई वस्तु छलके या गिरे तो उसका उपयोग दूसरे ही करते हैं ।

—आपसी अनबन के कारण कोई भेद प्रकट हो जाये तो उसका लाभ दूसरे ही उठाते हैं ।

ढळ्यौ घांटी अर हुवौ माटी । ५८५४

ढला घाँटी और हुआ माटी ।

—खाने का स्वाद या आनंद है तो जिह्वा का है । जिह्वा से आगे कंठ की घाटी उतरने पर कैसा भी व्यंजन माटी हो जाता है ।

—मर्यादा लाँघने पर कुछ भी इज्जत शेष नहीं रहती ।

ढांक्यो धरम ने उघाड़्यो पाप ।– भी.४०७ ५८५५

ढका हुआ धर्म और उघड़ा हुआ पाप ।

—कोई भी दुष्कर्म जब तक ढका रहे तो उस में कोई नैतिक बुराई नहीं है, पर जब वह प्रकट हो जाता है तब अपराध या पाप की कोटि में शुमार हो जाता है ।

—छिपा हुआ भेद न उघड़े तब तक ही ठीक है ।

ढांकियां पूत नी मोटा थाये।–भी.२८० ५८५६

ढककर रखे पुत्र बड़े नही होते।

—जिस बच्चे को सर्दी या गर्मी के मौसम में ज्यादा हिफाजत से रखा जाता है वह ज्यादा बीमार होता है।

—बंधन में रखे हुए बच्चे बड़े होने पर ज्यादा उद्दंड होते हैं।

ढांढा कांई जांणै खेत किणरौ ? ५८५७

ढोर क्या जानें कि खेत किसका है ?

—ढोर को अपने या पराये खेत की पहिचान नहीं होती, वह तो सामने घास देखने पर खाने लगता है।

—जो कामुक व्यक्ति घर या परायी स्त्री में भेद न कर सके, उस पर कटाक्ष।

ढांढा नै गवूं के कणक री कांई ठा पड़ै ? ५८५८

ढोर को गेहूँ या कनक की क्या पहिचान ?

—पशु को तो अपना पेट भरने की चिता रहती है, जो सामने खाने की चीज नजर आती है, उसे खा लेता है।

—कामुक व्यक्ति को औरत जात से ही लगाव रहता है, वह अच्छी-बुरी में भेद नहीं करता।

ढांणी में रोयां कुण सुणै ? ५८५९

ढानी मे रोने पर कौन सुने ?

ढांणी = एक या एक से अधिक कच्चे मकानों की वह बस्ती जो गाँव से दूर खेत में बसी हुई होती है।

—दूर एकांत के दुख का किसे भी पता नहीं चलता।

ढाई आखर। ५८६०

ढाई अक्षर।

—प्रेम शब्द में ढाई अक्षर हैं, इसे जाने सो ज्ञानी है, वरना सैकड़ों ग्रंथ पढ़ने वाला पंडित भी मूर्ख है। प्रेत में भी अक्षर तो ढाई हैं, पर इसे जानने वाला व्यक्ति बड़ा धूर्त या पाखंडी होता है।

ढाई चावळां री न्यारी खीचड़ी पकावै। ५८६१

ढाई चावलों की अलग ही खिचड़ी पकाये।

—जो व्यक्ति मिल-जुलकर किसी के साथ काम न करके अपनी अलग ही खटखट करे, उसके लिए।

—सामूहिक रूप से संगठित होकर काम करने की जिस व्यक्ति में रंचमात्र भी प्रवृत्ति न हो, उसे लक्ष्य करके।

ढाई दिन रौ झूंपड़ौ, तारागढ़ नांव। ५८६२

ढाई दिन का झोंपड़ा, तारागढ़ नाम।

—किसी हलके मूल्य की वस्तु का नाम बड़ा हो, उसके लिए।

—नाम से विपरीत लक्षण वाले व्यक्ति के लिए।

—किसी नगण्य चीज को बड़ा नाम देने से वह महत्त्वपूर्ण नहीं हो जाती।

दे.क.सं.५४६४

ढाई दिन रौ राजा। ५८६३

ढाई दिन का राजा।

—ब्याह में बने-ठने दूल्हे को राजस्थानी में 'वींदराजा' कहते हैं। ढाई दिन तक उसका मान-सम्मान रहता है। यदि इस मान-सम्मान से वह अभिमान करने लगे तो बुरा ही है।

—जो व्यक्ति ऊँचा पद पाकर अहंकारी हो जाय उसके लिए।

ढाकणी में नाक डुबाय मरणौ पड़सी। ५८६४

ढक्कन में नाक डुबाकर मरना पड़ेगा।

—उस निर्लज्ज व्यक्ति के लिए जो अपने दुष्कर्म की परवाह न करके मस्ती से घूमता फिरे।

—जो ढीठ व्यक्ति अपनी बदनामी की ओर तनिक भी ध्यान न दे।

ढाक रा तीन पांन। ५८६५

ढाक के तीन पान।

—सदा एक-सी स्थिति में रहने वाले व्यक्ति के लिए।

—अपरिवर्तनीय स्वभाव वाले व्यक्ति के लिए।

ढाळ देखयां दौड़ण रौ मन मतै ई व्है जावै। ५८६६

ढाल देखकर दौड़ने का मन स्वत: हो जाता है।

—दुष्कर्म करने का मौका मिले तो मन उस ओर प्रवृत्त हो ही जाता है।

—कमजोर व्यक्ति अवसर मिलने पर नियंत्रण नहीं रख सकता।

ढाही तारे डोबी डुबावे, डोबी नूं पूंछड़ो नी हावूं।–भी.२८१ ५८६७

गाय तारती है, भैंस डुबाती है, इसलिए भैंस की पूँछ पकड़ना ठीक नहीं।

—गाय चार पाँवों से तैरती हुई पानी में कहीं रुकती नहीं, पार निकल जाती है और उसकी पूँछ पकड़ने वाला भी उसके साथ-साथ पार हो जाता है। पर भैंस गहरे पानी में पिछले पाँवों पर बैठ जाती है, सिर ऊँचा रखकर साँस लेती रहती है। पर उसकी पूँछ पकड़ने वाला डूब जाता है।

—घर में गाय रखना भैंस की बजाय अधिक लाभप्रद है। इसलिए गाय संकट से उबारने वाली है और भैंस क्षति पहुँचाने वाली है।

—गरीब व्यक्ति धोखा नहीं देता, अमीर-लोग धोखा दे जाते हैं।

ढाही नूं डोबी नीचे, डोबी नूं ढाही नीचे करवू है।–भी.४०८ ५८६८

गाय का भैंस के नीचे, भैंस का गाय के नीचे करना है।

दे.क.सं.३५०८

ढाहो तो हाकी न लेवो, डोबी दोईन लेवो।–भी.४०९ ५८६९

बैल को जोतकर लेना, भैंस को दूहकर लेना।

—बैल को हल में या बैलगाड़ी में जोतकर उसकी परख करनी चाहिए और भैंस को दूहकर उसकी परख करनी चाहिए ताकि अच्छे-बुरे की पहिचान हो जाये।

—हर वस्तु की उपयोगिता और उसकी परख अलग-अलग होती है।

ढाहो मरी जाये ने खेती नो नीपजे जेहू काम नी करवू।–भी.४१० ५८७०

बैल मर जाये और खेती की उपज न मिले, ऐसा काम नहीं करना चाहिए।

—खेती करते समय बैल से इतना काम नहीं लेना चाहिए कि वह मर जाय और खेती भी अधूरी रह जाय।

—मनुष्य को जब दिमाग मिला है तो विवेक से काम करना ही श्रेयस्कर है।

ढींगा चावै जितरा घलालै, पतासौ घालूं नीं अेक। ५८७१

ढींगे तो चाहे जितना डलवा ले, पर बताशा डालूँ नहीं एक।

ढींगा = पक्के तोल का मोटा पैसा।

संदर्भ-कथा : एक आदमी बनिये की दुकान पर एक पैसे के बताशे लेने गया। बनिया बताशे तोलने लगा तो ग्राहक ने कहा, 'एक ढींगा तो और डाल।' इस पर बनिये ने जवाब दिया, 'ढींगे तेरी इच्छा हो जितने डलवाले पर बताशा एक भी अधिक नहीं डालूँगा।'

—जो व्यक्ति केवल बातों-बातों में ही सहयोग करे, पर वास्तविक सहयोग कुछ भी न करे।

—मिथ्या सहानुभूति दिखाने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

ढीलां रौ करम ई ढीलौ। ५८७२

ढीलों का भाग्य भी ढीला।

—आलसी व्यक्तियों का भाग्य भी आलस्य कर जाता है, वह मौके पर साथ नहीं देता।

—कर्म करने से ही भाग्य फलता है।

ढूंगां माथली माथा माथै ओढ़ली। ५८७३

कूल्हे पर का कपड़ा सिर पर ओढ़ लिया।

—लज्जा ढाँपने के लिए कूल्हों पर बसन पहिना जाता है, पर उसी बसन को कोई सिर पर डाल ले, तो उसकी लज्जा तो उघड़ जाएगी। कपड़े पहिनने का मायना ही बदल जाएगा।

—उस निर्लज्ज दंभी व्यक्ति के लिए जो अपनी बदनामी की कुछ भी परवाह न करके उसे और अधिक फैलाने की धृष्टता करे।

पाठा : **ढूंगां रौ माथै ओढ़्यां केड़ै कांई कैवणौ!**

ढूंगां रा फळ तौ लींड़ इज व्है। ५८७४

मलद्‌वार के फल तो लेंडी ही होती है।

—दुष्ट व्यक्ति से अच्छे काम की आशा रखना व्यर्थ है।

—धूर्त मानुस अपनी धूर्तता से कभी बाज नहीं आ सकता।

ढूंगां रै अेडियां लगायनै गदियौ । ५८७५

कूल्हों पर एड़ियाँ लगाकर भागा ।

—बिना रुके तेजी से भागने वाले व्यक्ति के लिए जो काम से जी चुराये ।

—कामचोर व्यक्ति काम की वेला कहीं नजर नहीं आता, वह जाने किस तरकीब से ओझल हो जाता है ।

ढूंगां रै दूखणौ अर आंगणै बैठणौ । ५८७६

कूल्हों पर फोड़ा और आँगन की बैठक ।

दे.क.सं.४४६

ढूंगां रै लंगोट ई कोनीं अर तंबू में आवण दै । ५८७७

कूल्हों पर लंगोट ही नहीं और तंबू में आने दे ।

—अभावग्रस्त व्यक्ति ऊँची-ऊँची महत्त्वाकांक्षा रखे तब ।

—अपनी औकात को भूलकर जब कोई व्यक्ति व्यर्थ हेकड़ी दिखाये तब ।

ढूंगां रौ गड़ नै फळसै रौ घर बैरी सूं ई भूंडौ । ५८७८

कूल्हों का फोड़ा और फलसे का घर बैरी से भी बुरा ।

—नितंब पर फोड़ा होने से न तो बैठा जा सकता है, न ठीक तरह चला जा सकता है और न सीधा सोया जा सकता है । फलसे पर घर होने से कोई भी राहगीर पानी माँग सकता है, कभी-कभार खाना भी खिलाना पड़ता है । दूसरे गाँव का मार्ग भी बताना पड़ता है और बस्ती में किसी घर का ठिकाना भी बताना पड़ता है । बेगार-बेगार में ही समय बीत जाता है । ऐसी आफत किसी बैरी पर भी न पड़े ।

—जिस व्यक्ति के लिए परिस्थितियों से बचने का कोई उपाय न हो ।

ढूंगां हेटै सांप मसळै । ५८७९

कूल्हों से साँप मसले ।

—जो कुटिल व्यक्ति छिपकर घात करे उसके लिए ।

—अमूमन यह उक्ति औरतों के लिए कही जाती है जो छिप-छिपकर चाल चलती हैं ।

ढूंगा नीं तपै जित्तै सूत नीं कतै । ५८८०

कूल्हे नहीं तपें तब तक सूत न कते ।

—अथक मेहनत करने से ही कोई काम सफल होता है ।

—पसीना बहाये बिना कैसा भी कार्य संपन्न नहीं होता ।

ढूंढ्यौ धरम पक्कौ, पीसौ लगै न टक्कौ । ५८८१

ढूँढिया धर्म पक्का, पैसा लगे न टक्का ।

ढूंढ्यौ = जैन पंथ के बाईस टोलों का श्रावक,साधु । जिनके लिए जैन समाज हाजरी में रहता है । सफेद बाने और मूँड मुँडाने की एक कौड़ी भी खर्च नहीं होती । जरूरत की सब चीजें मुफ्त में मिलती हैं । दीक्षा ग्रहण करते समय भारी उत्सव मनाया जाता है ।

—किसी सुविधाजनक निःशुल्क काम में पूरी सहूलियत रहे, तब ।

ढूबा रै गुण आई लात । ५८८२

कुबड़े के लिए लाभप्रद हुई लात ।

—एक व्यक्ति की कूबड़ पर लात लगी तो वह ठीक हो गई ।

—कभी-कभार बुराई का परिणाम भी अच्छा निकल आता है ।

—जब किसी संयोग से नुकसान की बात फायदेमंद साबित हो जाय तब ।

पाठा : ढूबा वाळी लात ।

ढूला-ढूलीज परणाया के कोई ब्याव मांड्यौ हतौ । ५८८३

गुड्डा-गुड्डी को भाँवरें खिलाईं कि कोई ब्याह भी रचा ।

—जब कोई व्यक्ति उत्सव-आयोजन में वांछित खर्च न करे तब ।

—कोई व्यक्ति किसी काम को गंभीरता-पूर्वक संपन्न न करे तब !

ढेका फाट जावै पण काछियौ नीं फाटै । ५८८४

कूल्हे फट जाएँ पर कच्छा न फटे ।

—किसी कारीगर या मिस्त्री के मजबूत काम की प्रशंसा करते समय इस उक्ति का प्रयोग होता है ।

—कुशल कारीगर की तारीफ करते समय ।

ढेका भींच्यां सूं बात नीं बणै। ५८८५

कूल्हे भींचने से बात नहीं बनती।

—शौच की वेला मलद्वार भींचने से पार नहीं पड़ता, आखिर तो पाखाने से निवृत होने पर ही राहत मिलती है।

—जो व्यक्ति किसी कठिन काम का निहायत आसान तरीका काम में लाये तब।

—मक्खीचूस व्यक्ति की प्रवृत्ति पर कटाक्ष कि भलाई की वेला दिल भींचने से काम नहीं बनेगा।

ढेपौ भांग्यां धूळ निकळै। ५८८६

ढेला तोड़ने पर धूल ही निकलती है।

—गरीब को सताने से कुछ हाथ नहीं लगता।

—अधम व्यक्ति को छेड़ने से बदनामी ही मिलती है।

ढैया-ढैया घर बतावै। ५८८७

ढहे-ढहे घर बताये।

—कोई व्यक्ति किराये के लिए मकान देखने आये और उसे खंडहर-ही-खंडहर दिखाए जाएँ तब।

—परोक्ष रूप से असहयोग करने की प्रवृत्ति।

ढोकळा तौ साजी सूं ई सस्वादा व्है। ५८८८

ढोकले तो साजी से ही स्वादिष्ट होते हैं।

ढोकळा = ढोकला = चना, गेहूँ, बाजरी, मक्का आदि के चून की बनी हुई मोटी और गोल बाटी जो कचौरी के आकार की होती है और बरतन को बंद करके भाप द्वारा पकाई जाती है। साजी = एक प्रकार का क्षार विशेष जो ढोकले या पापड़ बनाने के काम आता है एवं औषधि में भी काम आता है।

—साजी के मिश्रण से ढोकले स्वादिष्ट लगते हैं।

—जिन दो पदार्थों के मिश्रण से अच्छी चीज बने उसके लिए।

ढोकळा वाळी बाफ बारै नीसरतां कांईं जेज लागै ! ५८८९

ढोकले वाली भाप बाहर निकलते क्या देर लगती है !

—ढोकले की भाप के समान ही मनुष्य की प्रतिष्ठा है, पोल खुली और खुली।

—कलई खुलने पर छिपी हुई वास्तविकता उजागर हो जाती है।

—प्रतिष्ठा बनाये रखना बड़ा मुश्किल काम है।

ढोर नै समझावणौ सोरौ, मूरख नै समझावणौ दोरौ। ५८९०

ढोर को समझाना आसान, मूर्ख को समझाना मुश्किल।

—मूर्ख व्यक्ति पशु से भी गया-गुजरा है, इसलिए कि पशु को समझाया जा सकता है पर मनुष्य को नहीं।

—ढोर को बुद्धि का भ्रम तो नहीं होता, इसलिए उसे समझाएँ तो वह समझ सकता है। इसके विपरीत मूर्ख व्यक्ति को बुद्धि का भ्रम होता है, इसलिए वह कुछ भी समझने के लिए तैयार नहीं।

ढोल अर ढोलकी में घणौ फरक हुवै। ५८९१

ढोल और ढोलक में बड़ा फर्क होता है।

—ढोल प्रतीक है मूर्खता का, ढोलक प्रतीक है समझदारी व चतुराई की। इसलिए दोनों में बड़ा फर्क है।

—पुरुष और स्त्री में बहुत अंतर है।

ढोल जितरा मंजीरा फूट्या। ५८९२

ढोल जितने मँजीरे फूट गये।

—असली चीज को बचाने की मंशा से जो खर्च किया जाता है और वह उससे अधिक हो जाये, तब।

—आशा के प्रतिकूल अधिक क्षति हो जाये तब।

ढोलण जी सोरठ गावौ के रोवूं तौ उण राग नै इज हूं। ५८९३

अरी ढोलन सोरठ गा ए कि रोना तो उसी राग का है।

—अक्षम व्यक्ति से आशा करने पर निराशा ही हाथ लगती है।

—हर व्यक्ति हर कार्य के लिए सक्षम नहीं होता।

ढोलण री जीभ तौ गुणगुणावती इज रैवै। ५८९४

ढोलन की जीभ तो गुनगुनाती ही रहती है।

—जिस व्यक्ति का जो पेशा होता है, वह सहज ही उस में प्रवीण हो जाता है।

—जो व्यक्ति बेबात चकचक करता रहे।

ढोल माथै आपै ई पग ऊपड़ै। ५८९५

ढोल पर अपने-आप ही पाँव उठते हैं।

—पारस्परिक सहयोग से उत्साह बढ़ता है।

—जो जितनी मजूरी देगा, उतना ही काम होगा।

पाठा : ढोल रै डाकै नाच मतै ई आवै।

ढोल में पोल है, बाजै जितरै बजायलौ। ५८९६

ढोल में पोल है, बजे तब तक बजालो।

—जहाँ जितनी पोल है, समय रहते उसका फायदा उठा लो तो अच्छा है।

—राज्य की अनुशासनहीनता के दौरान जो मजे लूटने हों, लूट लो।

ढोल में सगळै पोल। ५८९७

ढोल में सर्वत्र पोल।

—प्रशासन की अराजकता का चित्रण।

—घर-परिवार में जिम्मेदार मुखिया के अभाव से पोल-ही-पोल रहती है।

पाठा : ढोल रै मांय पोल।

ढोल री ठौड़ ढोलक बजायां नीं सजै। ५८९८

ढोल की जगह ढोलक बजाने से पार नहीं पड़ता।

—सही उपकरण पर ही काम की सफलता निर्भर करती है, गलत उपकरण से काम बिगड़ता है।

—हर वस्तु या हर व्यक्ति की अपनी अपरिहार्यता है। कोई किसी का पूरक नहीं होता।

ढोल रै जांणै डाकौ दीन्हौ । ५८९९

ढोल पर जैसे डाका पड़ा ।

डाकौ = ढोल, नगाड़ा आदि बजाने का डंडा ।

—खुशी के मौके पर खुशी छलक ही उठती है ।

—ढोल को छेड़ते ही जिस तरह ढोल बजता है, उसी तरह जिस व्यक्ति के पेट में बात नहीं पचती, वह भी उकसाने पर भीतर की बात बता देता है ।

ढोळायौ नै झिड़काणौ । –व. ११७ ५९००

ढुलाया और झड़काया ।

—भरपूर नुकसान हो तब ।

—दोहरी क्षति हो तब ।

ढोलियां रा रोट तौ मनवारां में पकै । ५९०१

ढोलियों की रोटियाँ तो मनुहारों में पकती हैं ।

—जो व्यक्ति बातों-बातों से काम पूरा करे तब ।

—जो मेजवान खाली मनुहारों से ही मेहमान का थोथा स्वागत करे तब ।

ढोलियां रौ छोरौ कह्यौ के म्हारै माईतां नैं अन्न मत मिळजौ म्हनै बळीता सारू मैलैला । ५९०२

ढोलियों के छोकरे ने कहा कि मेरे माँ-बाप को अनाज न मिले, मुझे ईंधन के लिए भेजेंगे ।

—जो व्यक्ति अपने किंचित् स्वार्थ के लिए घरवालों को बड़ी क्षति पहुँचाने की कामना करे ।

—अकर्मण्य व्यक्ति परिवार की रंचमात्र भी चिंता नहीं करता ।

ढोली गावतौ नै टाबर रोवतौ ई चोखौ लागै । ५९०३

ढोली गाता हुआ और बच्चा रोता हुआ ही अच्छा लगता है ।

—ढोली का गाना सुनकर लोग उत्सुकता से एकत्रित होते हैं । बच्चे के रोने पर घरवाले उसकी आवश्यकता पूरी करने के लिए भागते हैं । ढोली गा-बजाकर अपनी जरूरतें पूरी करता है । बच्चा रोकर अपनी बात मनवाता है ।

—हर व्यक्ति की गुजर-बसर का अपना तरीका होता है।

ढोलीघोड़ा व्हियोड़ौ। ५९०४

ढोलीघोड़ा बना हुआ।

—निहायत निकम्मे व्यक्ति के लिए जिसकी कोई उपयोगिता न हो।

—सेवानिवृत्त अधिकारी के लिए।

ढोली नूं छोरूं गद्यो नी मरे, भील नूं छोरूं रोद्यो नी मरे।– भी.४११ ५९०५

ढोली का बालक गाने से नहीं मरता, भील का बच्चा रोने से नहीं मरता।

—ढोलियों का पेशा ही गाने का है। परिवार का हर सदस्य उसका अभ्यस्त होता है—क्या बच्चा और क्या बूढ़ा। भीलों का बच्चा निरंतर अभावग्रस्त रहने के कारण रोता रहता है। वह रोने का अभ्यस्त है इसलिए रोने से उसका कुछ नहीं बिगड़ता।

—हर व्यक्ति की जीवन-शैली का अपना-अपना ढब होता है।

पाठा : **ढोली रौ डावड़ौ गायां नीं मरै अर थोरी रौ रोयां नीं मरै।**

ढोली, मल्हार गाव के लारलै गांव गायनै आयौ। ५९०६

ढोली, मल्हार गा कि पिछले गाँव गाकर आया।

—अकुशल व्यक्ति काम न करने के बहाने ढूँढ़ता है।

—जो अयोग्य व्यक्ति अपनी कमजोरी को छिपाने की चेष्टा करे तब।

ढोली रै घरां तौ ढोल ई मिळै। ५९०७

ढोली के घर तो ढोल ही मिलता है।

—जो व्यक्ति जिस उपकरण से निर्वाह करता है, उसके घर तो वही उपकरण मिलता है।

—जिस अभावग्रस्त परिवार में जीने का एक ही नगण्य आधार हो।

ढोली रौ धन पाखती इज व्है। ५९०८

ढोली का धन तो उसके पास ही होता है।

—ढोली की पूरी संपदा उसके साथ ही रहती है—ढोल और उसकी गायन कला।

—अभावग्रस्त व्यक्ति की आर्थिक-स्थिति का चित्रण।

ढोसी रा डूंगर चीकणा व्है'ता तौ नारनोळ रा कुत्ता कदैई चाट जावता। ५९०९

ढोसी के पर्वत चिकने होते तो नारनोल के कुत्ते जाने कब चाट जाते।

—ढोसी के पर्वत पर च्यवन ऋषि का आश्रम है जो नारनोल से पाँच मील की दूरी पर पश्चिम में स्थित है।

—किसी वस्तु का किंचित् भी उपयोग हो तो उसे कोई नहीं छोड़ता।

तं - ती

तंगी में कुण संगी ? ५९१०

तंगी में कौन संगी ?

—जब खस्ता हालत होती है, तब हर कोई दूर खिसक जाता है। घर के रिश्तेदार तक मुँह मोड़ लेते हैं, पहिचानते तक नहीं।

—जब आर्थिक संकट में सहयोग की सबसे अधिक जरूरत रहती है, तब कोई साथ नहीं देता।

तंबाखू भेळौ गुळ बळै। ५९११

तंबाकू के साथ गुड़ भी जलता है।

—हुक्के का तंबाकू गुड़ के मेल से बनता है। चिलम के तंबाकू में भी गुड़ की कुछ मात्रा रहती है। जब तंबाकू जलाकर पीते हैं तो गुड़ भी साथ जलता है!

—कुसंगति का प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता।

तकदीर बड़ी के तदबीर ? ५९१२

तकदीर बड़ी कि तदबीर ?

—किस्मत ठीक हो तो तदबीर यानी युक्ति अपने-आप सूझ जाती है। वरना सब उपाय धरे रह जाते हैं।

—दूसरी तरफ तदबीर अंततः किस्मत भी बना लेती है। अपनी-अपनी जगह पर दोनों का महत्त्व है।

तकदीर सांम्ही तदबीर नीं चालै। ५९१३

तकदीर के सामने तदबीर नहीं चलती।

—किस्मत या भाग्य की तुलना में बुद्धि,साहस और युक्ति कुछ माने नहीं रखते।

—मनुष्य के जीवन में भाग्य ही सर्वोपरि है,बाकी सब गौण।

तगदीर ने थीगळो नी लागे।– भी.४१२ ५९१४

तकदीर के पैबंद नहीं लगता।

—जो भाग्यवादी विचारधारा के पोषक होते हैं वे विधि के विधान को सर्वथा अपरिवर्तनशील मानते हैं,जिस में रंचमात्र भी परिवर्तन की गुंजाइश नहीं रहती।

—भाग्य में लिखे को कोई मिटा नहीं सकता,उस में संशोधन असंभव है।

तड़कै तौ ल्यौ चकाचक के किणरै ? के आ बात ई साची। ५९१५

सवेरे तो चकाचक माल उड़ेगा कि कहाँ ? कि यह बात भी सच्ची।

—हवाई बातों का कुछ भी आधार नहीं होता।

—झूठे आश्वासन से कोई बात नहीं बनती।

तन मोर-सो , मन चोर-सो। ५९१६

तन मोर-सा, मन चोर-सा।

—जो व्यक्ति शारीरिक रूप से सुंदर व शाली।। दिखे,पर भीतर से चोर प्रवृत्ति का हो।

—जो व्यक्ति दिखने में कुछ और आचरण में कुछ और।

तन री पीड़ रौ औखद व्है , मन री पीड़ रौ कीं औखद नीं। ५९१७

तन की पीड़ा की औषधि है, मन की पीड़ा की कोई औषधि नहीं।

—उपचार तो शरीर का होता है,मन का नहीं।

—शारीरिक घाव का तो इलाज होता है,पर मन आहत हो जाय तो उसका कोई इलाज नहीं।

तन रूड़ौ , मन कूड़ौ। ५९१८

तन रूड़ा, मन कूड़ा।

—तन सुंदर,मन झूठा।

—जो व्यक्ति दिखने में सुंदर हो और मन का मैला हो।

—दोगले व्यक्ति के लिए।

तन रौ तरसै अर मन रौ खावै। ५९१९

तन का तरसे और मन का खाये।

—रक्त-संबंधों वाले परिजन तो टुकुर-टुकुर देखें और मन की आत्मीयता रखने वाले मित्रगण खाएँ।

—जो व्यक्ति सगे-संबंधियों की उपेक्षा करे और यार-दोस्तों को मौज कराये।

तन संवळौ, मन अंवळौ। ५९२०

तन सीधा, मन टेढ़ा।

—दुहरे चरित्र वाला व्यक्ति पारदर्शी नहीं होता। ऊपर से जैसा दिखता है, वैसा होता नहीं।

—जो व्यक्ति बाहर से साफ सुथरा रहे और भीतर से गँदला।

तन सीतळ व्है सीत सूं, मन सीतळ व्है मीत सूं। ५९२१

तन शीतल हो शीत से, मन शीतल हो मीत से।

—शरीर तो सर्दी से शीतल होता है और मन को शांति मिलती है मित्र के साहचर्य से। आफत-विपदा के दुख से मित्र ही रक्षा कर सकता है। मन की वेदना मिटा सकता है।

—जिस व्यक्ति को अच्छे मित्र मिल जाएँ, वह सबसे अधिक भाग्यशाली है।

तन सुखी तौ मन सुखी। ५९२२

तन सुखी तो मन सुखी।

—शरीर स्वस्थ है तो मन भी स्वस्थ है।

—मन की प्रसन्नता के लिए ही शरीर का स्वस्थ होना जरूरी है।

तन्नै कहग्यौ सो मन्नै ई कहग्यौ। ५९२३

तुझे कह गया सो मुझे भी कह गया।

संदर्भ-कथा : एक बुढ़िया अपनी दुहिता की खातिर सिर पर काफी बड़ी गठरी लिए जा रही थी। गठरी में चाँदी के गहने। चार-पाँच नये वेश। चूड़ा-चूड़ियाँ। साज सिंगार का सामान। जेठ का महीना, मानो आकाश अँगारे बरसा रहा है। रेतीली राह। बुढ़िया पसीने से तरबतर।

फिर भी उसे ब्याह के लिए जस-तस पहुँचना ही है । सामने ढाई कोस की दूरी ही तो है । संयोग से एक घुड़-सवार उधर से निकला । बुढ़िया के जी को शांति मिली । यदि यह भला मानुस दुहिता के घर यह गठरी पहुँचा दे तो वह आराम से पहुँच जाएगी । उसने घुड़-सवार को आवाज देकर रोका । कहा, 'अगला ही गाँव मेरी दुहिता का है । उसके लिए गहने-लत्ते ले जा रही हूँ । काफी भार है । मैं पता-ठिकाना बता देती हूँ । यदि वहाँ पहुँचा दे तो मेरा बोझ मिट जाएगा ।' घुड़-सवार को अगले ही दुराहे पर मुड़ना था । वह बुढ़िया से माफी माँगकर झट उसी ओर आगे बढ़ गया । बेचारी बुढ़िया को राहत मिल जाती तो ठीक रहता । लेकिन कुछ कदम आगे बढ़ते ही बुढ़िया को ऐसा महसूस हुआ कि उसके सिर से सारा बोझ हट गया है और वह बड़े आराम से चल रही है । बेचारा घुड़-सवार कितना भला और खानदानी था सो गठरी नहीं ले गया । उसने तो न उसका नाम-धाम पूछना चाहा और न पता-ठिकाना । यदि वह लेकर चंपत हो जाता तो वह उम्र भर उसे खोज नहीं पाती । दुहिता के ससुराल वाले उसके कहे पर विश्वास थोड़े ही करते । भगवान उसका भला करे ।

उधर घुड़-सवार के दिमाग में उलटा चक्कर घूमा । कैसी बेवकूफी कर गया । हाथ आये माल को गँवा दिया । भली बुढ़िया तो बिना नाम-पता पूछे ही गहने-लत्ते सँभला रही थी । कैसी अक्ल मारी गई सो झट मना कर दिया । चलो, ज्यादा देर नहीं हुई । वापस चल कर माँग लेता हूँ । मना थोड़े ही करेगी । वह तुरंत मुड़कर बुढ़िया के पास आया । सफाई देते कहने लगा, 'उस वक्त माँ की बीमारी के कारण मुझे ध्यान नहीं रहा । तुम्हारी दुहिता के ही गाँव से वैद्य को लेकर जाना है । घोड़े को इतनी गठरी का क्या भार ! मुझे दे दे मैं हाथोंहाथ पहुँचा दूँगा ।' तब बुढ़िया ने मुस्कराते कहा, 'अब तू रहने दे भैया । तुझे कह गया, वह मुझे भी कह गया । ऐसी एक गठरी और हो तो भी उठालूँ । तुझे बेकार तकलीफ पड़ी माफ करना ।'

—मन की भावना स्वतः प्रकट हो जाती है, वह छिपती नहीं ।

—अंतरात्मा से उम्दा जासूसी कोई नहीं कर सकता ।

दे.क.सं.२९१

तप रै पाखती घी तौ पिघळै इज । ५९२४

आँच के पास घी तो पिघलता ही है ।

—जवान औरत और नवयुवक साथ-साथ रहें, हँसी दिल्लगी करें तो वासना जाग्रत होती ही है । संयम रखना मुश्किल हो जाता है ।

—हम उम्र के युवक-युवतियों की संगति से विकार उत्पन्न होता ही है।

तपै सो खपै। ५९२५

तपे सो खपे।

—अधिक गर्मी से वर्षा होती है और वर्षा होने से गर्मी नष्ट होती है। उत्ताप मिटता है।

—क्रोधी मनुष्य का विनाश अवश्यंभावी है।

तप्योड़ौ भाटौ तेड़ खावै। ५९२६

तपा हुआ पत्थर दरक जाता है।

—सहन करने की सीमा होती है,गरीब को अधिक सताने से कभी-न-कभी उसकी सहन-शक्ति जवाब देगी। दरकेगी और वह सामना करने को उद्यत होगा।

तमियौ सिरांतिये धरनै सोवै। ५९२७

हँडिया सिरहाने धरकर सोता है।

तमियौ = मिट्टी का एक पात्र विशेष।

—जो दरिद्र व्यक्ति मूल्यहीन वस्तु भी सिरहाने धरकर सोता हो। उसकी भी चोरी होना वह झेल नहीं सकता।

—जो व्यक्ति जस-तस गरीबी में निर्वाह करे।

तरत दान ने महापन्न।– भी.४१३ ५९२८

तुरत दान, महापुण्य।

—अविलंब दान करने पर बहुत अधिक पुण्य होता है।

—यथा समय जो बात सलट जाय,वह बेहतर है।

—किसी भी छोटे-बड़े काम को आगे टालना उचित नहीं।

पाठा : **तुरंत दांन महापुन्न। तुरत दांन महाकल्यांण।**

तरत नी काकड़ी तरत नी लागे।– भी.४१४ ५९२९

तुरत की ककड़ी तुरत नहीं फलती।

—कोई भी पौधा या फसल बोते ही शीघ्र बड़ा होकर फल नहीं देता।

—हर काम समय पाकर सिद्ध होता है।

—हर काम के लिए निर्धारित समय अपेक्षित है। उतावली करने से कुछ पार नहीं पड़ता।

पाठा : तुरंत री काकड़ी तुरंत नीं लागै।

तरवर बिना सरवर सूना। ५९३०

तरुवर के बिना सरोवर सूना।

—तालाब की शोभा गाछ-बिरछों से है। राहगीर को छाँह। पशु-पक्षियों का निवास।

—गुणों के अभाव में आदमी सर्वथा श्रीहीन है, उसकी कुछ भी शोभा नहीं, उसी तरह कि तालाब की शोभा गहर-घुमेर पेड़ों से होती है।

तरवार अर कुपिया वाळी ठगाई। ५९३१

तलवार और कुप्पे वाली ठगाई।

संदर्भ-कथा : किसी मेले में दो ठग ठगाई करने के लिए निकले। एक के पास थी तलवार और दूसरे के पास था घी का कुप्पा। वे एक दूसरे से अपरिचित थे। शाम तक उन्हें कोई खरीदार नहीं मिला तो दोनों ने राजी-खुशी आपस में सौदा कर लिया। लेकिन कुप्पे वाले ने घर जाकर देखा तो सिर्फ ऊपर-ऊपर तीन-चार अंगुल घी था। नीचे सब गोबर। तलवार वाले ने घर जाकर म्यान से तलवार बाहर निकाली तो वह लकड़ी की।

—जो धूर्त व्यक्ति परस्पर एक ही हीन लक्षणों के हों, उनके लिए।

तरवार बाजतां ई हींजड़ा सूथण में मूतै। ५९३२

तलवार बजते ही हिंजड़े सुत्थन में मूतने लगते हैं।

—जो व्यक्ति बढ़-बढ़कर बातें करे और समय पर पीठ दिखा दे।

—बहादुरी की डींग मारने वाले कायर व्यक्ति पर कटाक्ष।

तरवार-बाजी आछी पण दांता-कसी खोटी। ५९३३

तलवार बजनी अच्छी पर दाँत बजने खराब।

—तलवार के युद्ध का फैसला तत्काल हो जाता है। पर वाक-युद्ध का निर्णय कभी होता ही नहीं। इसलिए शस्त्रों की लड़ाई अच्छी और दाँतों की लड़ाई बुरी।

—रोज-मर्रा की कलह बड़ी घातक होती है।

पाठा : तरवार बिचै दांत बाजणा भूंडा । तरवार बाज्योड़ी चोखी , पण दांत बाज्योड़ा खोटा ।

तरवार म्यांन में इज आछी । ५९३४

तलवार म्यान में ही अच्छी ।

—तलवार जब तक म्यान के भीतर रहे तब तक ही बेहतर,बाहर निकलते ही खून-खराबा होता है ।

—शांति हर सूरत में श्रेयस्कर है ।

—बात मन के भीतर दबी रहे तभी ठीक है । बाहर निकलने पर कलह की आशंका रहती है ।

तरवार रौ कैय तीर मंगायौ , इण ठाकर रौ भरोसौ ई आयौ । ५९३५

तलवार का कहकर तीर मँगाया, इस ठाकुर का भरोसा ही आया ।

दे.क.सं. २११८

तरवार रौ घाव भर जावै , जीभ रौ नीं भरै । ५९३६

तलवार का घाव भर जाय, जीभ का नहीं भरता ।

—तलवार का घाव मरहम या अन्य औषधियों से ठीक हो जाता है पर जीभ के घाव का कोई उपचार नहीं,वह जीवनपर्यंत सालता रहता है ।

—दृष्टव्य है कृपाराम जी खिड़िया का सोरठा,जो अपने सेवक राजिया को संबोधित करके कहा था ।

पाटा पीड़ उपाव , तन लाग्यां तरवारियां ।

बहै जीभ रा घाव , रत्ती न औखद राजिया ॥

(तरवार से लगे शरीर के घावों का तो मरहम-पट्टी से उपचार हो सकता है,रे राजिया,पर जीभ के घावों की कोई औषधि नहीं है)

तळ घसै नै पीर बसै । ५९३७

तला घिसे, पीहर बसे ।

—जो औरत ससुराल की बजाय मायके में रहे,रोज आना-जाना करे तो निःसंदेह जूतियों के तले घिसेंगे ही ।

—जो व्यक्ति अपनी नासमझी से फिजूल खर्च करे,जिसका कोई औचित्य नहीं हो ।

तळाब तिरसौ अर ब्याव भूखौ। ५९३८

तालाब के रहते प्यासा और ब्याह में रहकर भूखा।

—उस अव्यावहारिक नादान व्यक्ति के लिए जो तालाब के पास रहकर अपनी प्यास नहीं बुझा सके और ब्याह के बीच भी अपना पेट न भर सके।

—जो व्यक्ति साधन और सुख-सुविधाओं का उपयोग नहीं कर सके। प्रत्यक्ष लाभ से वंचित रह जाय,उसके लिए।

तळा में व्है तौ उवाळा में ई आवै। ५९३९

कुएँ में हो तो उवाले में भी आये।

उवाळौ = उवाला = वह स्थल जहाँ कुएँ से भरे चरस का पानी गिरता है।

—आमद हो तो खर्च का जुगाड़ बैठता है।

—आमदनी होने पर ही अंटी में पैसा रहता है।

तळै तौ हूं पण माथै टांग म्हारी है। ५९४०

नीचे तो हूँ पर ऊपर टाँग मेरी है।

—कुश्ती में चित पड़ा तो क्या हुआ,टाँग तो ऊपर मेरी है।

—जो निर्लज्ज व्यक्ति किसी भी सूरत में अपनी हार या गलती मंजूर न करे।

तवा तौ सगळै काळा इज व्है। ५९४१

तवा तो सर्वत्र काला ही होता है।

—तवा स्वयं आँच सहकर लोगों की क्षुधा शांत करता है,घोर तपस्या करता है तो विवर्ण होना उसकी नियति है।

—अथक परिश्रम करने वाले, धूप में जलने वाले सफेदपोश नहीं बन सकते।

तवा नै तौ काळौ होवणौ इज है। ५९४२

तवे को तो काला होना ही है।

—दूसरों की सेवा के लिए जिन्होंने अपना जीवन समर्पित कर दिया है,वे बदनामी की कालिख से अछूते नहीं रह सकते।

—धूएँ की कुसंगति का असर तो तवे पर होगा-ही-होगा।

तवा माथली थारी अर खीरां माथली म्हारी। ५९४३

तवे पर की तेरी और अंगारों पर की मेरी।

—तवे पर आधी सिकने के बाद रोटी अंगारों पर पूरी सिकती है। जो व्यक्ति पहिले स्वार्थ-सिद्धि करना चाहता है उसके लिए।

—गरीबी के बीच पलने वाले व्यक्ति धीरज नहीं रख सकते।

तवा री काची अर सासरै सूं भाजी नै कठै ई ठौड़ कोनीं। ५९४४

तवे की कच्ची और ससुराल से भागी को कहीं ठौर नहीं।

—तवे की कच्ची रोटी को कोई नहीं खाना चाहता। ससुराल से भागी औरत की प्रतिष्ठा कहीं नहीं रहती। न पीहर में और न ननिहाल में।

—अयोग्य, अवांछित व लांछित व्यक्ति की कहीं पूछ नहीं होती।

तवा सूं ऊतरी अर चूल्हा में पड़ी। ५९४५

तवे से उतरी और चूल्हे में पड़ी।

—जिस प्रकार तवे पर अध-सिकी रोटी अंगारों पर डालने के बाद पूरी सिकती है, एक उत्पीड़न से छूटकर दूसरे उत्पीड़न में गिरती है।

—जिस व्यक्ति पर एक के बाद एक संकट आते रहें, उसके लिए।

तवै चढ़ै नै धाड़ खाय। ५९४६

तवे पर चढ़ी को ही झपट लेना।

—जिस अभावग्रस्त परिवार में खाने वालों की संख्या ज्यादा हो तो वे भूख के मारे तवे की अध-कच्ची रोटी पर ही डाका डाल देते हैं।

—गरीबी का दयनीय चित्रण इस उक्ति में अंकित हुआ है।

तवौ कैवै हूं सोनै रौ, चूल्हौ कैवै चढ़ै तौ म्हारै इज माथै। ५९४७

तवा कहे मैं सोने का, चूल्हा कहे आसन तो मेरा ही है।

—कोई व्यक्ति अपनी बेइंतहा झूठी प्रशंसा करे, उसकी पोल खुलकर ही रहती है।

—पूरा भेद जानने वाले व्यक्ति के सामने ही कोई अपनी झूठी बड़ाई करे, उस पर कटाक्ष।

तवौ हांडी नै काळी बतावै । ५९४८

तवा हँडिया को काली बताये ।

—तवा जो स्वयं बुरी तरह काला है, वह हँडिया की निंदा करता है कि वह काली है । पर तवे को अपनी कालिख नजर नहीं आती ।

—जो व्यक्ति अपने बेशुमार अवगुणों को नजर अंदाज् करके दूसरों की सरे आम निंदा करे जो उससे कम दोषी हैं ।

—यह आदमी का स्वभाव है कि उसे दूसरों के अवगुण और अपने गुण ज्यादा दिखते हैं ।

तां केय्यो ने माये ढीच करावय्ये ।– भी.४१६ ५९४९

तुम्हारा कहना हुआ और मुझे अग्नि-परीक्षा देनी पड़ी ।

—सीता के चरित्र को लेकर राम के मन में शंका उत्पन्न हुई और सीता को अग्नि-परीक्षा देनी पड़ी ।

—पुरुष को होंठ खोलने में कुछ जोर नहीं पड़ता और स्त्री का जीवन नष्ट हो जाता है ।

—कहने में किसी का कुछ नहीं बिगड़ता, पर उसका दुष्परिणाम जिसे भुगतना पड़ता है, वही उसकी वेदना को समझ सकता है ।

तांडौ क्यूं के सांड हां , पोटा क्यूं करौ के गवू रा जाया हां । ५९५०

हुंकारते क्यों हो कि साँड हैं, गोबर क्यों करते हो कि गऊ के जाये हैं ।

दे.क.सं.५५३९

तांत बाजी अर राग पिछांणी । ५९५१

ताँत बजी और राग पहिचानी ।

—मनुष्य की बातचीत से ही उसके व्यक्तित्व का पता चल जाता है ।

—समझदार व्यक्ति बात की चाशनी से ही सारा मर्म समझ लेते हैं ।

पाठा : तांत बाजी नै राग परखी ।

तांते अेवां मारे नाम , काड्यू ताहले हेडे ।– भी.४१७ ५९५२

तुमने मेरे परंपरागत यशस्वी नाम को बदनाम किया ।

—कोई संतान यदि अपने कुकर्मों से परिवार के बुजुर्गों का नाम बदनाम करे तब ।

—कोई कुलटा अपने कुलीन खानदान को अपने कारनामों से कलंकित करे तब।

तांन तौ बाजा माथै ई आवै। ५९५३

तान तो बाजे पर ही आती है।

—साधनों के अनुसार ही सफलता मिलती है।

—जैसा पारिश्रमिक वैसा परिश्रम।

तांबा री मेख, ऊभी तमासौ देख। ५९५४

ताँबे की मेख, खड़ी तमाशा देख।

विशेष टिप्पणी : प्रत्येक नक्षत्र के चार पाद माने जाते हैं। प्रथम पाद सुवर्ण, द्वितीय पाद रौप्य, तृतीय पाद ताम्र और चतुर्थ पाद लोहे का होता है। घनिष्ठा से ५ नक्षत्र का स्वर्णपाद, आर्द्रा से १० नक्षत्र तक रौप्य पाद, विशाखा से ७ नक्षत्र तक ताम्रपाद तथा शेष ५ नक्षत्र लोहपाद माने जाते हैं। पायौ = पाद = नक्षत्र का चतुर्थांश समय।

—बच्चे का जन्म सोने के 'पाये' अशुभ होता है और ताँबे के 'पाये' इतना शुभ कि वह जीवन पर्यंत ऐश करता है।

—ताँबे के पैसों की इफरात हो तो संसार के सब सुख उपलब्ध हैं।

ताऊजी तिमाळै पूगा। ५९५५

ताऊजी तिमाले पहुँचे।

—ताऊजी ऊपर देवलोक में पहुँचे। दिवंगत हो गये।

—जिस बुजुर्ग ने अपनी जवानी में खूब उद्दंडता व दुराचार किया हो उसके मरने पर।

ताकड़ी जोयनै तोलौ, वगत जोयनै बोलौ। ५९५६

तराजू देखकर तौलो, समय देखकर बोलो।

—जाने अजाने किसी के साथ धोखा मत करो और समय की अनुकूलता व प्रतिकूलता देख कर बातचीत करो। किसी को भी अपशब्द मत कहो।

—सांसारिक दृष्टि से हर व्यक्ति को व्यवहार-कुशल होना चाहिए।

ताकड़ी तणी राम ना हाथ मांये है।– भी.४१८ ५९५७

तराजू की डंडी राम के हाथ में है।

—दुनिया में हर व्यक्ति का न्याय करने वाला ईश्वर है।

—किसे भी अहंकार करने की जरूरत नहीं, आखिर न्याय तो ईश्वर के हाथों ही होने वाला है।

पाठा : ताकड़ी री डंडी रांम रै हाथ।

ताकड़ी नीं तौ धरम जांणै अर नीं जात। ५९५८

तराजू न तो धर्म जानता है और न जात।

—तराजू किसी के साथ पक्षपात या अन्याय नहीं करता।

—तराजू की भाँति हर व्यक्ति को निष्पक्ष और संतुलित होना चाहिए।

ताकड़ी माथै कोई नीं चढ़ै। ५९५९

तराजू पर कोई नहीं चढ़ता।

—तराजू के एक पलड़े में जितने वजन के बाट होंगे, दूसरे पलड़े में उतना ही माल चढ़ेगा—न कम न बेशी।

—तराजू सर्वथा निष्पक्ष व न्यायकर्त्ता होता है।

—जो व्यक्ति खामखाह संदेह करे उसे समझाने के लिए कि तराजू किसी के प्रभाव में नहीं आता।

ताकतवर सूं कुण ताळी नीं मिळावणी चावै। ५९६०

ताकतवर से कौन ताली मिलाना नहीं चाहता।

—जो व्यक्ति शक्तिशाली होता है, सभी उससे मेल रखना चाहते हैं।

—सत्ताधारी की सभी खुशामद करते हैं, उससे संपर्क बनाना चाहते हैं।

ताजा नाहर हाथ आवै नीं अर बासी नाहर खावै नीं। ५९६१

ताजे सिंह हाथ आते नहीं और बासी सिंह खाते नहीं।

संदर्भ-कथा : एक सियार-सियारनी का जोड़ा सिंह की गुफा में घुस गया। तीन बच्चे थे उनके। जब कुछ देर बाद उन्हें सिंह के आने का आभास हुआ तो सियारनी ने बच्चों को जबरदस्ती रुलाया। सियार ने पूछा कि बच्चे क्यों रो रहे हैं? तब सियारनी ने सिंह को सुनाने के आशय से कहा, 'बच्चे रोज शेर का कलेजा खाते हैं, जाओ बाहर और तुरत सिंह का कलेजा लेकर

आओ। मैं बच्चों को रोते नहीं सुन सकती। तब सियार ने कहा, 'जानता हूँ, अपने बच्चों की आदत खूब अच्छी तरह जानता हूँ, उन्हें सिंह का बासी कलेजा अच्छा नहीं लगता और इस जंगल में सिंह भूले-भटके भी मिलते नहीं हैं। पर बच्चों की खातिर कोशिश तो करनी होगी।' यह सुनते ही शेर तो पूँछ दबाकर भाग छूटा। जिंदा रहा तो नई गुफा बना लेगा।

—संकट की वेला बुद्धि व चतुराई से काम निकालना चाहिए।

ताजी ई आखड़ जावै। ५९६२

ताजिन भी लड़खड़ा जाती है।

—अच्छी नस्ल की बढ़िया घोड़ी भी लड़खड़ाकर गिर पड़ती है।

—कैसे भी होशियार व्यक्ति से भूल हो ही जाती है।

ताजी ताजणौ कद खिवै? ५९६३

ताजिन चाबुक सहन नहीं करती।

—अच्छी नस्ल की घोड़ी स्वयं जरूरत पर तेज दौड़ती है। वह चाबुक मारने की जरूरत ही नहीं रखती।

—अपने हुनर में प्रवीण कोई भी व्यक्ति अपनी आलोचना नहीं सुन सकता।

ताजी नै ताजणौ अर रजपूत नै रेकारौ। ५९६४

ताजिन को चाबुक और राजपूत को रेकारा बर्दाश्त नहीं होता।

—अच्छी नस्ल की तेज घोड़ी चाबुक की मार पसंद नहीं करती और कोई भी कुलीन व्यक्ति अभद्र व्यवहार सहन नहीं कर सकता।

—शालीन व स्वाभिमानी व्यक्ति अपशब्द सुनना पसंद नहीं करता।

ताजौ माल तुरंत खपै। ५९६५

ताजा माल तुरत बिकता है।

—ताजे माल की बिक्री में कुछ भी समय नहीं लगता।

—नवयुवती के ग्राहकों की कमी नहीं रहती।

ताण्यां थारै मांय बो आवै के म्हारौ वासौ ई कठै है! ५९६६

कोपीन तुझ में बदबू आ रही है कि मेरी ठौर कौन-सी है!

—जिस जगह लंगोट बँधी रहती है, उस में बदबू आना लाजिमी है।

—कुसंगति का कुप्रभाव अवश्यंभावी है।

ताता पांणी सूं किसी बाड़ बळै ! ५९६७

गर्म पानी से बाड़ नहीं जलती !

—जिस तरह गर्म पानी से काँटों की बाड़ नहीं जलती, उसी तरह संत स्वभाव वाले व्यक्ति उत्तप्त शब्दों की परवाह नहीं करते, वे शांत बने रहते हैं।

—गँवार व्यक्ति गाली-गलौज बर्दाश्त कर लेता है।

ताती रोटी अर ठाडौ पांणी। ५९६८

गर्म रोटी और ठंडा पानी।

—सब तरह से अनुकूल परिस्थिति हो तब।

—दोहरे लाभ की बात हो तब !

ताती हांडी ताट मेलै। ५९६९

गर्म हँडिया दरकती है।

—यदि गफलत से खाली हँडिया पर आँच लगती है तो वह तड़क जाती है।

—किसी को दुख देने पर बद्दुआ निकलती है, तब ऐसा कहते हैं।

पाठा : बळती हांडी ताट मेलै।

तातै तवै छांट रौ कीं असर नीं व्है। ५९७०

गर्म तवे पर बूँद का कुछ असर नहीं होता।

—गर्म तवे पर एक बूँद पड़ने से वह ठंडा नहीं होता, उलटे पानी की बूँद स्वयं नष्ट हो जाती है। पर पर्याप्त पानी डालने से कैसा भी गर्म तवा ठंडा हो जाता है।

—क्रुद्ध स्वभाव वाले व्यक्ति पर मीठे शब्दों का असर नहीं होता।

—अपर्याप्त साधनों से कोई काम सफल नहीं होता।

तातौ खायौ नीं रातौ पैर्‌यौ। ५९७१

न ताता खाया और न लाल पहिना।

—एक दयनीय स्त्री की व्यथा कि उसने जीवन भर न तो गर्म भोजन किया और न कभी अच्छा वेश पहिना।

—अभावग्रस्त दुखियारे व्यक्ति के लिए।

तातौ खावै, छिंयां सूवै, उणरौ वेद पिछोकड़ रोवै। ५९७२

ताता खाये, छाया में सोये, उसका वैद्य पीछे रोये।

—जो व्यक्ति नियमानुसार खाये-सोये वह स्वस्थ रहता है, अतएव वैद्य को कुछ कमाई नहीं होती।

—नियमित जीवन बिताने वाला अस्वस्थ नहीं होता।

—व्यवस्थित जीवन सदैव लाभप्रद रहता है।

तार तूट्यौ अर राग पूरी थई। ५९७३

तार टूटा और राग पूरी हुई।

—साधन समाप्त होने के साथ ही कार्य संपन्न हो जाय तब।

—साँस टूटा और आयु समाप्त हुई।

—जिस क्षति से संयोगवश हानि न उठानी पड़े।

तारा चांनणौ करै तौ चंदरमा कांईं झख मारै। ५९७४

तारे चाँदनी करें तो चंदरमा क्या झख मारे।

—अयोग्य व्यक्तियों से काम संपन्न हो जाय तो कुशल व्यक्ति को कौन पूछेगा!

—अकिंचन व्यक्ति बड़े आदमियों की होड़ नहीं कर सकता।

तारा सैकड़ूं पण चांद तौ अेक ई घणौ। ५९७५

तारे अनेक पर चाँद तो एक ही पर्याप्त है।

—अनेक अयोग्य व्यक्ति मिलकर भी कोई काम नहीं कर सकते, जबकि योग्य व्यक्ति अकेला ही काम संपन्न कर देता है।

—गणना की बजाय योग्यता ही उपादेय और सार्थक होती है।

ताल नीं सझी जितरा मजीरा फूटग्या। ५९७६

ताल नहीं जमी जितने मजीरे फूट गये।

—जिस काम में लाभ की बजाय हानि अधिक हो।

—आशा के विपरीत क्षति उठानी पड़े तब।

तालाव तरय्यो, वीवो भुखियो।– भी.४१५ ५९७७

तालाव के रहते प्यासा, विवाह के बीच भूखा।

दे.क.सं.५९३८

ताळा साहूकारां सारू व्है, चोरां सारू नीं। ५९७८

ताले साहूकारों के लिए होते हैं, चोरों के लिए नहीं।

—चोर तो कैसी भी सुरक्षा तोड़कर चोरी कर लेते हैं, फिर मामूली तालों की क्या बिसात! ताला तोड़ने का संकोच तो साहूकार के मन में होता है।

—नियम-कायदों की मर्यादा तो न्यायप्रिय व्यक्ति के लिए है, दुष्टों के लिए नहीं।

ताळी लाग्यां ताळौ खुलै। ५९७९

ताली लगने पर ताला खुलता है।

—चाबी लगने से ही ताला खुलता है।

—उचित उपकरणों से ही काम संपन्न होता है।

—यथोचित समाधान से ही समस्या हल होती है।

—युक्ति से ही काम संपन्न होता है, शक्ति से नहीं।

पाठा : ताळौ तौ ताळी लाग्यां ईं खुलै।

ताळौ घर रौ रुखाळौ, मूंडौ करग्यौ काळौ। ५९८०

ताला घर का रखवाला, मुँह कर गया काला।

—ताले के भरोसे घरवाले निश्चिंत सोये रहे और चोर चोरी करके माल ले गये, घरवालों का मुँह पछतावे से विवर्ण हो गया।

—जिम्मेदार एवं विश्वस्त व्यक्ति धोखा दे जाय तब!

ताव छोड तेजरौ कुण मोल लेवै? ५९८१

बुखार छोड़कर त्रिज्वर कौन मोल ले?

तेजरौ = त्रिज्वर। हर तीसरे दिन आने वाला बुखार, जो बड़ा कष्टप्रद होता है।

—छोटी आफत छोड़कर बड़ी आफत कोई बुलाना नहीं चाहता।

—अपना भला-बुरा सोचने लायक बुद्धि सब में होती है।

तावड़िये रौ मेह बरसै, भूत-भूतणी परणीजै। ५९८२

धूप के रहते मेह बरसे, भूत-भूतनी ब्याह में सरसे।

—आसोज (आश्विन) की वारिश के बादल व्यापक नहीं होते। छुटपुट होते हैं। वे अचानक बरस जाते हैं। धूप भी फैली रहती है। बरसात भी होती रहती है। ऐसी मान्यता है कि इसी विचित्र दृश्य की पृष्ठभूमि में भूत-भूतनी अपना ब्याह रचाते हैं। बच्चों की खातिर यह असामान्य परिस्थिति एक करिश्मा है।

—बच्चों का मन बहलाने के लिए विचित्र परिस्थिति का चित्रण जरूरी होता है।

तावड़ै ताप धौळा नीं लिया। ५९८३

धूप में तपकर सफेदी नहीं ली।

—सफेद बाल वृद्धावस्था के परिचायक हैं। इसलिए अनुभव की प्रगाढ़ता के सूचक भी।

—जब किसी बुजुर्ग व्यक्ति को जो अनुभवों से समृद्ध है, कोई नवयुवक उसके काम में चूक बताये, तब बुजुर्ग व्यक्ति कहता है कि धूप में बैठकर बाल सफेद नहीं किये हैं, लंबे अनुभवों के कारण सफेद हुए हैं।

पाठा : धूप में बैठनै धौळा नीं लिया।

ताव देयनै पेचूंटी लेवणी। ५९८४

बुखार देकर पेचूँटी लेनी।

पेचूंटी = नाभि के ठीक नीचे पेट की वह नस जो अँगुली के दबाने से रह-रह कर उछलती हुई-सी जान पड़ती है। किसी कारण इसके इधर-उधर हट जाने से शरीर टूटता है, रोटी खाने की इच्छा नहीं होती। जानकार व्यक्ति से मालिश के द्वारा सही ठौर लाई जाती है। ठौर पर आते ही आराम महसूस होता है। बुखार तो शरीर का धर्म है। सहने की शक्ति बढ़ाता है। भला उसकी एवज में पेचूँटी जैसा कष्टप्रद विकार कौन लेना चाहेगा ?

—कोई व्यक्ति मामूली आफत के बदले बड़ी आफत को न्योता दे तब!

ताव नै कुण तेड़ै ? ५९८५

बुखार को कौन बुलाता है ?

—दुष्ट व्यक्ति से कोई भी संपर्क नहीं करना चाहता, वह जितना दूर रहे उतना ही अच्छा है।

—दुष्ट व्यक्ति किसी के बुलावे की प्रतीक्षा नहीं करते, अपना शिकार स्वयं ढूँढ़ लेते हैं।

पाठा : ताव नै कुण तेड़ै जावै ।

तावळौ सो बावळौ । ५९८६

उतावला सो बावला ।

दे.क.सं.१२४५

ताव हाथी रा ई हाडका भांगै । ५९८७

बुखार हाथी के भी हाड़ तोड़ता है ।

—बुखार की पीड़ा हाथी जैसे प्रचंड प्राणी को भी पस्त कर देती है । उसके हाड़-हाड़ में असह्य पीड़ा होती है । फिर मनुष्य जैसे सामान्य प्राणी को अशक्त कर दे तो इस में आश्चर्य क्या ?

—बुखार के समय कोई आदमी तकलीफ का रोना रोये तब उसे सांत्वना देने की खातिर यह कहावत प्रस्तुत की जाती है ।

पाठा : ताव हाथी रा ई हाड खोळा करै ।

तिड़्योड़ी हांडी तौ जोजरी ई बोलै । ५९८८

दरकी हुई हँडिया तो जोजरी ही बोलती है ।

जोजरी = दरार पड़ा हुआ मिट्टी का बासन जो बजाने पर एक विशेष किस्म की आवाज करता है, उसे जोजरी आवाज कहते हैं ।

—जिस व्यक्ति में कमजोरी हो, वह बुलंद नहीं हो सकता । दयनीय आवाज में ही बात करता है, जिसमें निराशा भरी होती है ।

—टूटने पर कोई भी आदमी हताश हो जाता है ।

तिणकलिये घर बोयौ । ५९८९

तिनके ने घर बर्बाद किया ।

संदर्भ-कथा : एक चौधरी के पास जमीन कम थी। गुजर-बसर बड़ी मुश्किल से होती थी। चौधराइन बड़ी मितव्ययी थी। एक दिन उसने पति से कहा,'खेती के भरोसे बैठने से घर की तंगी नहीं मिटेगी। मेरी हँसली और गजरे बेचकर एक बढ़िया भैंस खरीद लें तो सहारा मिलेगा।' चौधरी मान गया। ससुराल से बढ़िया भैंस ले आया। चौधरी पास के शहर में घी बेच आता। मजे से गाड़ी गुड़कने लगी। बच्चों को दूध-दही मिल जाता। माँ-बाप छाछ से काम चला लेते। चारे-बाँटे की कोई कमी नहीं थी। एक दिन संयोग का ऐसा तमाशा हुआ कि हँड़िया की मलाई पर तिनका गिर पड़ा। चौधराइन ने सलीके से बाहर निकालकर फेंकना चाहा कि मन में एक दूसरा उपाय सूझा। तिनके पर थोड़ी मलाई चिपकी हुई थी। धूल में फेंकने से क्या फायदा! उसने तिनके को चूसकर फेंक दिया पर जीभ के स्वाद को नहीं फेंक सकी। मलाई का ऐसा बेजोड़ स्वाद! बेचारी ने अब तक छाछ का ही स्वाद जाना था। थोड़ी मलाई लेकर और खाई। मन तृप्त नहीं हुआ तो दूध की सारी मलाई खा गई। तिनके की किंचित् मलाई ने उसकी मति ही भ्रष्ट कर दी। वह नित सुबह शाम पूरी मलाई कटोरे में लेकर खा जाती। फिर घी कहाँ से आता! चौधरी हैरान कि दूध की मात्रा वही पर घी में इतनी कमी कैसे आ गई? आस-पास के ओझों ने झाड़-फूँक की पर कोई फर्क नहीं। चारे-बाँटे की उधार भी चुकानी भारी पड़ गई तो चौधरी ने परेशान होकर भैंस बेचने की बात चलाई। तब कहीं चौधराइन का होश ठिकाने आया। पति के पाँव पकड़कर जो सच्ची बात थी बता दी। अंत में कहा,'चाहो तो मेरी जीभ काट लो,पर भैंस मत बेचो। मुझे क्या पता था कि एक तिनके की मार से घर इस तरह बर्बाद हो जाएगा। मैं सब सँभाल लूँगी। इस बार माफ कर दो।'

चौधरी मान गया। घर की हालत सुधरने लगी। चौधराइन दिन भर भैंस की तिमारदारी करती। गरमियों में दो बार स्नान करवाती। सहलाती। साल भर में हँसली और गजरे वापस बन गये। एक भैंस और खरीदली। अगले वर्ष कुछ जमीन और खरीद लेंगे। चौधराइन हरदम घर का काम करती। चौधरी खेती सँभालता। देखते-देखते घर में खुशहाली फैलती गई।

—कभी-कभार एक मामूली गफलत से भयंकर विनाश हो सकता है।

—जीभ का चटोरापन घोर दुर्दशा का कारण बन जाता है।

तिणका री ठौड़ हळ ठरकावै। ५९९०

तिनके की ठौर हल घुसेड़े।

—जहाँ तिनका मुश्किल से समाये वहाँ हल डालने की चेष्टा करना अत्याचार की पराकाष्ठा है। इस तरह की दुर्दांत जबरदस्ती करने वाले आततायी के लिए।

—जो व्यक्ति निर्ममता की सीमा का उल्लंघन करने लगे, उसे लक्ष्य करके।

तिणका रौ चोर सो तरवार रौ चोर। ५९९१

तिनके का चोर सो तलवार का चोर।

दे.क.सं.१७४४

तिणकौ किसौ बैरी रौ जाड़ तोड़ देवै ? ५९९२

तिनका कहीं बैरी का जबड़ा तोड़ सकता है ?

—छोटे उपकरण से बड़ा काम नहीं लिया जा सकता।

—किंचित् साधन से बड़ी सफलता नहीं मिल सकती।

तिणग सूं सिळगै सै वनराय। ५९९३

चिनगारी से जले सारी वनराजि।

—नगण्यतम भूल से भी सर्वनाश हो सकता है।

—जब किसी अकिंचन बात से महाभारत हो जाय तब...।

तिणै ई चोर नै तिणकलै ई चोर। ५९९४

त्रण का भी चोर और तिनके का भीं चोर।

—कोई व्यक्ति त्रण चुराएगा वह भी चोर कहलाएगा और जो तिनका चुराएगा वह भी चोर कहलाएगा।

—किसी भी छोटे अपराध की प्रवृति बड़ी होती है और वही बाद में बड़ा अपराध करने को बाध्य करती है।

तिणौ तोड़नै दो तिणा को करै नीं। ५९९५

तिनके को तोड़कर दो तिनके भी नहीं कर सकता।

—सर्वथा अक्षम व्यक्ति के लिए जो एक तिनके को तोड़कर उसके दो टुकड़े भी नहीं कर सकता।

—नितांत अकर्मण्य, अहदी, निठल्ले और घनघोर आलसी व्यक्ति के लिए।

तिपड़ा सूं पड़्यां के बंचै के गरुड़ पुरांण। ५९९६

तिमाले से पड़ने पर क्या बचता है कि गरुड़ पुराण।

—मरने के पश्चात् आत्मा की मुक्ति के लिए नौ दिन तक गरुड़ पुराण बँचता है, हिंदुओं के परिवार में।

—तीसरी मंजिल से गिरने पर क्या बचता है ? बचेगा तो कुछ भी नहीं। सिर्फ गरुड़ पुराण की शरण बचती है। राजस्थानी में 'बचने' और 'बँचने' के लिए द्विअर्थ में एक ही शब्द से बात बन जाती है।

—भीषण कार्य का परिणाम भी भीषण होता है।

तिरस लागै सो बेरै भागै। ५९९७

प्यास लगे सो कुएँ पर भगे।

—कुआँ तो एक ठौर स्थिर रहता है, अपनी जगह से खिसकता ही नहीं, जिसे प्यास लगे उसे ही वहाँ जाना पड़ेगा। कामासक्त पुरुष को शांति औरत से ही मिलती है।

—जो गरजमंद होगा, वही आने-जाने के लिए कष्ट उठाएगा।

—जरूरतमंद ही चक्कर काटने के लिए मजबूर होता है।

तिरस लाग्यां बेरौ थोड़ौ ई खोदीजै। ५९९८

प्यास लगने पर कुआँ थोड़े ही खुदवाया जाता है।

—जरूरत से पहिले पूर्व-नियोजित काम ही सार्थक होता है, वरना उसका कोई औचित्य नहीं। मसलन आग लगने पर कुआँ खुदवाने से आग नहीं बुझती।

—समय पर उपलब्ध हो, उसी चीज का महत्त्व है।

तिरसां मरै जद बेरौ खोदण री सूझै। ५९९९

प्यास लगे तब कुआँ खोदने की जरूरत महसूस हो।

—जो व्यक्ति समय रहते काम पूरा न कर सके, उसे कभी सफलता नहीं मिलती।

—योजनाबद्ध तरीके से काम का तालमेल न बैठे तो वह कभी पूरा नहीं होता।

तिर[illegible]गजी परा लटकै तौ ई नकरयो [illegible] हूंडी सिकरै नीं। ६०००

तिरसिंहजी कुछ भी कर लें तो भी लौटाई हुंडी नहीं सिकर सकती।

—हुंडी के लिए एक बार मना हो जाय तो कैसा भी बड़ा आदमी उसे सिकरा नहीं सकता।

—अनियमित काम के लिए चाहे कितना ही जोर लगाया जाय, वह पार नहीं पड़ता।

तिरिया चरित नंह जांणै कोय, खसम मारि नै सत्ती होय। ६००१

त्रिया-चरित्र नहीं जाने कोय, खसम मारकर सती होय।

—एक कुलटा स्त्री स्वयं अपने हाथों से पति को मारकर उसकी चिता पर सती हो गई।

—त्रिया-चरित्र बहुत जटिल होता है, उसे समझ पाना किसी के लिए भी संभव नहीं।

तिरिया-चरित रौ तोतक कुण जांणै? ६००२

त्रिया-चरित्र के रहस्य को कौन जान सका है?

—स्त्री के चरित्र को मनुष्य तो दरकिनार स्वयं ईश्वर या देवता भी नहीं जान सकते।

—छलनामयी नारी के मन की बात जानना असंभव है।

तिरिया ताड़ण सार। ६००३

स्त्री की उपेक्षा करने में ही सार है।

—स्त्री से बचकर रहने में ही कल्याण है।

—नारी जाति ही प्रताड़ना के योग्य है।

तिरिया तेरह मरद अठारै। ६००४

त्रिया तेरह और मर्द अठारह।

—स्त्री तेरह वर्ष की आयु में और मर्द अठारह वर्ष की उम्र में विवाह के योग्य हो जाता है। इस उम्र में उनकी शादी करना ही उचित है।

—पुरुष की अपेक्षा नारी में काम-वासना आधक होती है, इसलिए समय रहते उसका विवाह कर देना चाहिए।

तिरिया तेल हमीर हठ चढ़ै न दूजी बार। ६००५

त्रिया तेल हम्मीर हठ दूसरी बार नहीं चढ़ता।

—विवाह के पूर्व दुलहन को केवल एक ही बार तेल चढ़ाया जाता है, दूसरी बार नहीं।

—रणथंभौर के चौहान नरेश हम्मीर ने शरणागत की रक्षा हेतु अपने वचन का पालन करके अल्लाउद्दीन खिलजी जैसे प्रबल सुलतान से जमकर लोहा लिया और अंत में प्राण देकर भी अपने वचन की मर्यादा निभाई।

पूरी उक्ति इस प्रकार है :

सिंघ गमन, पुरुष वचन, केळ फळै इक बार।

तिरिया तेल, हमीर हठ, चढ़ै न दूजी वार॥

तिरिया सरम री, कमाई करम री। ६००६

त्रिया शर्म की, कमाई कर्म की।

—लज्जा ही औरत का सर्वोपरि गुण है, जिसे त्यागने पर उसकी कोई कद्र नहीं होती। भाग्य के अनुसार मनुष्य कमाई करता है। भाग्य से वंचित मनुष्य कभी सफल नहीं होता, उसी प्रकार लज्जाहीन स्त्री का कहीं सम्मान नहीं होता।

पाठा : तिरिया सरम री, पुण्याई करम री।

तिल घटै नीं राई बधै। ६००७

तिल घटे न राई बढ़े।

—भाग्य में जो लिखा है, वह टल नहीं सकता।

—भाग्य-लिपि न तिल भर घट सकती है, न राई भर बढ़ सकती है।

—आफत-विपदा के समय जो व्यक्ति विचलित होने लगे, तब इस उक्ति के द्वारा उसे सांत्वना दी जाती है कि जो कुछ भी घटित होता है, वह ईश्वरीय प्रेरणा से होता है, इस में रंचमात्र भी परिवर्तन नहीं हो सकता।

तिल देखौ तिलां री धार देखौ। ६००८

तिल देखो, तिलों की धार देखो।

—किसी भी काम को उतावली में न करके धैर्य-पूर्वक सोच-विचारकर करना चाहिए।

—पहली मुलाकात में ही आदमी की सही पहिचान नहीं होती, धीरे-धीरे उसके गुण-अवगुणों की पहिचान करनी चाहिए।

तिल रै ओलै परबत। ६००९

तिल की ओट पहाड़।

—किसी छोटी-सी बात की आड़ में होने वाली बहुत बड़ी बात।

—कभी-कभार बहुत छोटी बात के पीछे बहुत बड़ा रहस्य छिपा रहता है।

पाठा : राई ओलै परबत।

तिलवाड़ै तूठी नै वळवाड़ै वूठी। ६०१०

तिलवाड़े तुष्ठमान हुई, अरावली से निसृत हुई।

—लूनी नदी अरावली पहाड़ों की वर्षा से प्रवहमान होकर तिलवाड़े के समतल मैदान में फैल जाती है। उसे उपजाऊ बना देती है। पर जहाँ से उसका उद्‌गम हुआ, वहाँ लाभ नहीं पहुँचाती।

—किसी अधिकृत व्यक्ति को लाभ न मिलकर दूसरों को मिल जाय तब।

तिलां री परख तौ तेली ई जांणै। ६०११

तिलों की परख तो तेली ही जानता है।

—जिसका जो हुनर है, वह उसी में प्रवीण होता है।

—पेशेवर आदमी को ही अपने पेशे की सही पहिचान होती है।

तीज अर तेरस कदै ई भेळी नीं व्है। ६०१२

तृतीया और त्रियोदशी कभी साथ नहीं हो सकती।

—विरोधी स्वभाव वाले व्यक्तियों में परस्पर मेल नहीं हो सकता।

—कोई व्यक्ति असंभव काम को संभव बनाने की निरर्थक चेष्टा करे तब।

तीज तिंवारां बावड़ी, ले डूबी गिणगौर। ६०१३

तीज त्योहारों की सूचक, गनगौर अभावों की परिचायक।

—सावन की तृतीया के उपरांत विभिन्न त्योहार-उत्सव आते ही रहते हैं, पर गनगौर के बाद त्योहारों में कमी पड़ जाती है, आनंद-उछाह नष्टप्राय: हो जाते हैं।

—एक व्यक्ति ऐसा होता है कि जिसके आगमन के साथ खुशियाँ आती हैं और एक व्यक्ति ऐसा होता है जिसके पदार्पण से अवसाद उत्पन्न होता है।

तीज रौ चांद तिगरियौ करावै। ६०१४

तृतीया का चाँद कष्टदायक होता है।

—ऐसी धारणा है कि द्‌वितीया का चाँद देखना शुभ है, मंगलदायक है। तृतीया का अशुभ और कष्टदायक। चतुर्थी का चाँद भी अशुभ। चोरी का आरोप लगता है।

—जिस व्यक्ति के साहचर्य से क्लेश उत्पन्न हो।

तीजां-बीजां मोकळी पण आखातीज अेक। ६०१५

तृतीया-द्‌वितीया बहुतेरी पर अक्षयतृतीया एक।

—अक्षयतृतीया वर्ष में एक ही आती है। उसका माहात्म्य भी बड़ा है। बाकी प्रत्येक महीने में दो-दो तृतीया आती हैं, जिनका कोई खास महत्त्व नहीं।

—किसी महापुरुष और असाधारण व्यक्ति को लक्ष्य करके।

तीजी घड़ियां पौर करायौ। ६०१६

तीन घड़ियों में ही प्रहर किया।

—चार घड़ी का एक प्रहर होता है। जो व्यक्ति एक प्रहर के काम को तीन घड़ी में संपूर्ण कर देता है तब उसकी प्रशंसा करते हुए यह कहावत प्रयुक्त होती है।

—जो व्यक्ति नियत समय से पहिले काम संपन्न कर लेता है और दूसरों से संपन्न करवा लेता है—उसके लिए भी।

पाठा : तीनां घड़ियां पौर करायौ।

तीजी ताळ खीर ई खारी लागै। ६०१७

तीसरी बार खीर भी कड़वी लगती है।

—नित्य प्रति के उपयोग से स्वादिष्ट व्यंजन भी फीका लगता है।

—किसी भी वस्तु की बहुतायत से उसका महत्त्व कम हो जाता है।

—अधिक संपर्क से नीरसता उत्पन्न होती है।

तीजी पीढ़ी बावड़ै के तीजी पीढ़ी जाय। ६०१८

तीसरी पीढ़ी बहुरे या तीसरी पीढ़ी बिगड़े।

—ऐसी मान्यता है कि तीसरी पीढ़ी या तो उत्कर्ष की सूचक होती है या अपकर्ष की।

—जो व्यक्ति असहाय है उसके आगे की तीसरी पीढ़ी शक्ति संपन्न हो सकती है।

—जो व्यक्ति संपन्न है उसके आगे की तीसरी पीढ़ी अभावग्रस्त हो सकती है।

तीजी फाळ नीं बावड़ै, भागां लार न जाय। ६०१९
सिंघां आ इज आखड़ी, पर मार्‌यौ नीं खाय॥

तीसरी कूद भरे नहीं, भागे के पीछे न जाय।
सिंहों का यही संकल्प, दूसरे का मारा न खाय॥

—शेर का यह नैसर्गिक गुण है कि तीन छलांग के बाद वह शिकार का कुत्तों की तरह पीछा नहीं करता। रुक जाता है। अपने मारे हुए शिकार के अलावा मरा हुआ जंतु नहीं खाता।

—अपने सिद्धांतों पर जीने वाले व्यक्ति की पहिचान सामान्य व्यक्तियों से एकदम भिन्न होती है। वह कष्ट उठा लेगा, पर अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं करेगा।

—महान चरित्र वाले व्यक्ति को लक्ष्य करके।

तीजै चावळ सीझै, चौथै लोग पतीजै। ६०२०

तीसरे उफान चावल सीझते हैं, चौथे पर लोग विश्वास करते हैं।

—अंततः परिश्रम करने से काम सफल होता ही है, लोग भी विश्वास करने लगते हैं।

—प्रत्येक काम का अपना समय निर्धारित होता है, उतावली करने से काम शीघ्र संपन्न नहीं होता।

पाठा : तीजै लोग पतीजै, चौथै चावळ सीझै।

तीजै सूखौ, आठवें काळ। ६०२१

तीसरा सूखा, आठवाँ अकाल।

—पश्चिमी राजस्थान में हर तीसरे साल वर्षा का अभाव और आठवें साल अकाल। यही इस मरुभूमि की नियति है।

—पश्चिमी राजस्थान के प्राकृतिक प्रकोप की ओर संकेत।

तीजौ बळद खळौ भांगै। ६०२२

तीसरा बैल खलिहान तोड़ता है।

—खलिहान के लिए गार से जमीन लीपकर तैयार की जाती है ताकि अनाज में रेत का मिश्रण न हो। सामान्य खलिहान दो बैलों से संपूर्ण हो जाता है। तीसरा बैल यदि जोड़ा जाय तो उसके खुर लिपी हुई जमीन पर पड़ते हैं। रेत उखड़ने लगती है।

—अनावश्यक व्यक्तियों से काम को क्षति पहुँचती है।

तीड अर लरड़ी अेक ई घसारै चालै। ६०२३

टिड्डी और भेड़ एक ही चाल चलती हैं।

—अंधानुकरण के लिए प्रचलित उक्ति है भेड़ चाल। भेड़ों का झुंड आगे की भेड़ के पीछे चलता रहता है। उसी प्रकार रानी टिड्डी के पीछे पूरा टिड्डीदल अंधानुकरण करता हुआ उड़ता है।

—रूढ़ियों का अक्षरश: पालन करने वाले व्यक्ति के लिए।

तीडा भांबी वाळी सधगी। ६०२४

तीडा भाँबी वाली सफलता।

—दृष्टव्य है विजयदान देथा का 'तीडाराव' उपन्यास जिस में उक्त चरित्रनायक को बिना योग्यता के सांयोगिक सफलता का मिथ्या श्रेय मिलता रहता है। वह जुलाहे से राजा के सर्वोच्च स्थान पर पहुँच जाता है।

—जिस अनधिकृत व्यक्ति को लगातार सफलता मिलती रहे, पर उस श्रेय का वह तनिक भी अधिकारी नहीं होता।

तीतर छोड वनी में दीन्हा, भटजी भया निरवाळा। ६०२५

तीतर वन में छोड़ दिये, भट्टजी भये वैरागी।

—भट्टजी ने तीतर पाल रखे थे। जब उन्हें वन में छोड़ दिये तो वे विरक्त हो गये।

—जब कोई व्यक्ति मामूली जिम्मेदारियों से अकस्मात् मुक्ति पाले तब।

तीतर पंखी बादळी, विधवा काजळ रेख। ६०२६
आ बरसै वा घर करै, इण में मीन न मेख॥

तीतर पंखी बादली, विधवा काजल रेख।
यह बरसे वह घर करे, इस में मीन न मेख॥

—तीतर की पाँखों जैसा बादलों का रंग हो तो वह जरूर बरसेंगे। विधवा की आँखों में काजल अंकित हो तो वह अवश्य नया घर बसायेगी। इन दोनों बातों में व्यतिक्रम नहीं होता।

—बाहरी साज-सिंगार से भीतर के गुणों का पता चल जाता है।

तीतर बोल्यौ तीन वांणी, चुम्मौ, चूरमौ, ऊनौ पांणी। ६०२७

तीतर बोला तीन बानी, चुंबन, चूरमा, ताता पानी।

—तीतर की शुभ वाणी से काम वासना तृप्त हुई, स्वादिष्ट भोजन मिलने से क्षुधा शांत हुई और गर्म पानी की सुविधा से स्नान हो गया—और क्या चाहिए।

—शुभ शकुनों के परिणामस्वरूप मनवांछित कामना पूरी हो जाय तब।

तीतर रै मूंडै कुसळ है। ६०२८

तीतर के मुँह में कुशल है।

—प्रभात की वेला तीतर पहिले बायाँ बोलकर फिर दाहिना बोले तो शकुन बहुत अच्छे माने जाते हैं। यदि केवल दाहिनी बाजू बोले तो अशुभ है।

—तीतर के बोलने पर ही आनंद-मंगल निर्भर करता है।

—समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति जो बात कह दे, वह प्रामाणिक है।

—पंचों के मुँह में ही न्याय बसता है।

पाठा : तीतर रै मूंडै सूण।

तीन आंगळ री लिलाड़ी अर उण में ई भंवरौ। ६०२९

तीन अंगुल का ललाट और उस में भी भँवरा।

भंवरौ = ललाट के बीच बालों का गोल चक्र।

—ललाट भाग्य का सूचक है। सामान्य भाग्य में भी जब व्यवधान उपस्थित हो जाय।

—मामूली सुख-सुविधा में भी जब कोई अड़चन उत्पन्न हो जाय।

तीन कनौजिया अर तेरह चूल्हा। ६०३०

तीन कनोजिये और तेरह चूल्हे।

—कान्यकुब्ज ब्राह्मण इस सीमा तक स्वच्छता और छूआछूत रखते हैं कि दूसरे चूल्हे से आग भी नहीं लेते। उनकी इस प्रवृत्ति को अतिरंजित करके दरसाया गया है कि तीन कनोजिये

तेरह चूल्हों से खाना पकाते हैं। दूध के लिए अलग चूल्हा, सब्जी के लिए अलग चूल्हा और चपातियों के लिए अलग।

—जो व्यक्ति अत्यधिक सफाई रखता हो, उसके लिए।

तीन कोस उपरांत ई कांणौ मिळ जावै तौ पाछौ आजावणौ। ६०३१

तीन कोस के बाद भी काना मिल जाय तो वापस आ जाना चाहिए।

—काने के शकुन बहुत बुरे माने जाते हैं, इसलिए।

—काना व्यक्ति दुष्ट व धूर्त होता है, इसलिए उससे दूर ही रहना चाहिए।

तीन कौडी रौ पाजी। ६०३२

तीन कौड़ी का पाजी।

—प्राचीन समय में कौड़ी भी मुद्रा के प्रचलन में थी। मुद्रा में सबसे न्यून।

—निकम्मे व्यक्ति के लिए जिसका मूल्य तीन कौड़ी भी नहीं है।

तीन घेर वे जटे गड्डो वे, ग्राम मांये हाये नीं वे?–भी.४१९ ६०३३

तीन घर हों वहाँ भी मुखिया, गाँव में क्यों नहीं?

—तीन घर हों वहाँ भी एक मुखिया होता है, तब गाँव में उसके अनुरूप पंच जरूर होने चाहिएँ।

—गाँव में न्याय चाहने वाला व्यक्ति जब कम पंचों की उपस्थिति मंजूर नहीं करे तब!

तीन चीजां याद रीवी—तेल, लूण, लकड़ी। ६०३४

तीन चीजें याद रहीं—तेल, नमक और लकड़ी।

—जीवन-संघर्ष में पराजित व्यक्ति बाकी सब सिद्धांत या आदर्श भूल जाता है। केवल तीन चीजें याद रख पाता है—तेल, नमक और लकड़ी।

—भाग्य का मारा हुआ व्यक्ति जो अपनी दैनंदिन जरूरतों को भी पूरा नहीं कर सके।

तीन डिब्बा नै तेरह टी.टी.। ६०३५

तीन डिब्बे और तेरह टी.टी.।

—प्रशासन की अकुशलता पर कटाक्ष।

—छोटे काम की खातिर अधिक व्यक्तियों को जिम्मेदारी सौंप देने पर।

तीन तीखा डांव जीतै पण हारै नहिं। ६०३६

तीन प्रबल दाँव जीते पर हारे नहीं ।

—चौपड़ के खेल में कौड़ियाँ डालने पर यदि तीन का दाँव पड़े तो नि:संदेह जीत है, हारने का कोई प्रश्न नहीं।

—किसी भी काम की शुरुआत शुभ हो तो उस में सफलता मिलती ही है।

तीन तीतर तेरह जणा, जिण में ठाकर, ठावा घणा। ३०३७

तीन तीतर तेरह जन, जिन में ठाकुर आये बन-ठन ।

—भोजन कम हो और खाने वाले बहुतेरे हों, तब।

—ककड़ी एक और खाने वाले अनेक।

तीन तेरै घर बिखेरै। ६०३८

तीन तेरह, घर का विग्रह ।

—जिस घर में विभिन्न मत वाले हों तो घर एकजुट नहीं रहता, बिखर जाता है ।

—जिस घर में बाहर वालों की पंचायती होने लगे तो उसका विखंडन हो जाता है ।

तीन में न तेरा में, म्रिदंग बाजै डेरा में। ६०३९

न तीन में न तेरह में, मृदंग बजे डेरे में ।

—जो व्यक्ति इधर-उधर व्यर्थ की पंचायती न करके, अपने हाल में ही मस्त हो ।

—जो व्यक्ति किसी पक्ष का समर्थन या विरोध न करे ।

तीन पग तांणियां नै चित्तौड़ तांई चोकौ। ६०४०

तीन कदम धरे और चित्तौड़ तक चौका ।

—घर छोड़कर यात्रा पर निकल पड़े तो चित्तौड़ तक चौका-ही-चौका है। छूआछूत की भावना स्वत: मिट जाती है।

—घर से बाहर छूआछूत की संकीर्णता निभती नहीं।

तीन-पांच। ६०४१

तीन-पाँच ।

—जो व्यक्ति खामखाह हेकड़ी दिखाये तब।

—जो अनधिकृत व्यक्ति फालतू हुज्जत करे तब।

तीन पाव चून अर चौबारां रसोई। ६०४२

तीन पाव चून और खुले आम रसोई।

दे.क.सं.४४०१

तीन बड़ियां तौ घणा झोळ साथै ई ओपै। ६०४३

तीन मुँगेरी तो वेशी तरी के साथ ही सोहे।

—कम सामग्री से जस-तस काम चलाना पड़े तब।

—अभावग्रस्त जीवन को युक्ति से पार पटकना चाहिए।

—पारस्परिक सहयोग के बिना काम नहीं चलता।

तीन बळद वाळा रौ हळ छूटौ नीं रैवै। ६०४४

तीन बैल वाले का हल पड़ा नहीं रहता।

—हल खींचने के लिए दो बैल आवश्यक होते हैं। यदि संयोग से एक बैल बीमार हो जाय तो तीसरा अतिरिक्त बैल जुतने पर हल चलता रहता है। खेती का काम रुकता नहीं।

—आधुनिक यंत्र वाहनों में स्टेपनी का जो उपयोग है, वही हल में तीसरे बैल का उपयोग है।

पाटा : तीन बळद वाळा रौ हळ छूटौ नीं रैवै, दो लुगायां रै धणी रौ घर नीं भागै।

तीन-बीसी अर साठ रौ झगड़ौ। ६०४५

तीन-बीसी और साठ का झगड़ा।

—तीन-बीसी यानी बीस का तिगुना—मतलब कि साठ।

—बात वही की वही—पर समझ का फर्क होने से विवाद बढ़ जाता है।

—खामखाह की लड़ाई के लिए।

—जिस झंझट का कोई ठोस आधार नहीं हो।

तीन बुलाया तेरह आया, दे दाळ में पांणी। ६०४६

तीन बुलाये तेरह आये, दे दाल में पानी।

—तीन आदमियों के न्योते पर तेरह व्यक्ति आ जाएँ तो दाल में अधिक पानी डालकर बाजी रख लेना ही उचित है।

—बिगड़ी परिस्थिति को जैसे-तैसे अनुकूल बना लेने पर।

तीन रांडां म्हनै रंडवौ करगी, अेक रांड तौ म्हैं करस्यूं। ६०४७

तीन राँडें मुझे रँडुवा कर गईं, एक राँड तो मैं भी करूँगा।

—विवाहित पुरुष पत्नी के गुजरने पर रँडुवा कहलाता है। और पति के गुजरने पर स्त्री राँड कहलाती है। एक व्यक्ति ने तीन बार शादी की पर औरतें मरती गईं। वह तीन बार रँडुवा हुआ। ईर्ष्या-वश चौथी शादी करके स्वयं मरकर पत्नी को राँड यानी विधवा करना चाहता है।

—ईर्ष्यालु व्यक्ति बड़े-से-बड़ा खतरा झेलने को उद्यत रहता है।

तीन लोक सूं मथरा न्यारी। ६०४८

तीन लोक से मथुरा न्यारी।

—कृष्ण की जन्म-भूमि होने की वजह से जिस प्रकार मथुरा तीनों लोकों से अलग है, न्यारी है, उसी प्रकार जब किसी व्यक्ति में सामान्य लोगों की अपेक्षा कुछ विशिष्ट गुण हों तब यह कहावत प्रयुक्त होती है।

—प्रचलित नियम तथा परंपरा के विरुद्ध काम करने वाले पर।

—सर्वथा भिन्न स्वभाव वाले व्यक्ति के लिए।

मि.क.सं.३७२१

तीन सुहाळी तेरा थाळी, बांटण वाळी सत्तर जणी। ६०४९

तीन पपड़ियाँ, तेरह थाली, बाँटने वालीं सत्तर नारी।

—मैदे की तीन पपड़ियाँ, जिन्हें रखने के लिए तेरह थालियाँ हैं और बाँटने वाली सत्तर औरतें हैं।

—अतिशय आडंबर प्रदर्शित करने पर।

—आजादी के बाद भारत की शासन व्यवस्था का लगभग यही स्वरूप है।

तीर तौ सिकार दीस्यां ईं चलाईजै। ६०५०

तीर तो शिकार दिखने पर ही चलाया जाता है।

—लक्ष्य के बिना कोई भी काम सुगमता से संपन्न नहीं होता।

—दाँव तो उचित अवसर देखकर ही खेला जाता है।

तीरथ कर्यां पूठै तिरणौ याद आवै। ६०५१

तीर्थ करने के बाद तैरना याद आये।

—अवसर चूकने के बाद पश्चाताप करना निरर्थक है।

—उचित अवसर पर जिस काम का पूरा लाभ न उठाया जाय तब।

तीरथां जावै सो ई मूंडीजै। ६०५२

तीर्थ करेगा वही मूँडा जाएगा।

—जो तीर्थ करने जाएगा वह पंडों के द्वारा ठगा जाएगा।

—तीर्थ जाने पर नाई के द्वारा मुंडन करवाना अनिवार्य है।

—हर कार्य की अपनी विधि होती है, उसे विधिवत ही संपन्न करना चाहिए।

तीर नींतर तुक्कौ ई सही। ६०५३

तीर नहीं तो तुक्का ही सही।

तुक्कौ = तुक्का = शल्य रहित बाण। बिना फल का तीर।

—बड़ी सफलता की बजाय छोटी सफलता ही मिल जाये तब।

—बड़ी आशा की निस्बत निहायत छोटी आशा पूरी हो जाय तब।

—काम पार पड़े तो भी ठीक, न पड़े तो भी ठीक।

तीर फाड़णी सोरी कोनीं। ६०५४

तीर फाड़ना आसान नहीं।

तीर = तालाब अथवा नदी आदि का किनारा। तट।

—तट पार करना आसान नहीं।

—जो व्यक्ति जिस काम में निपुण है, वही उस काम को कर सकता है।

—जीवन के अविरल प्रवाह को पार करना दुश्वार है।

—सामाजिक मर्यादा का निबाह करना बड़ी टेढ़ी खीर है।

तीर सूं कागलौ डरै ज्यूं डरै। ६०५५

तीर से कौए की नाई डरे।

—कौआ अत्यधिक सतर्क व चतुर पक्षी है। अँगुली को तीर समझकर ही उड़ जाता है। उसी प्रकार जो व्यक्ति कोई भी अवैध काम करने से डरे वह अपने लिए इस उक्ति का सहारा लेता है।

—कोई भी गलत काम करने से पहिले जिस व्यक्ति की आत्मा डरती हो। काँपती हो।

तीरै सो ई मीरै। ६०५६

जो उपलब्ध है, वही श्रेष्ठ है।

—जो हाजिर है वही उपयुक्त हथियार है।

—जो पास में हो वही श्रेष्ठ है,उसका ही पूर्णतया उपयोग करना चाहिए।

तु-त्र

तुड़ायनै आई अर भिड़कनै न्हाटगी। ६०५७

तुड़ाकर आई और बिदककर दौड़ गई।

—संयोग से हाथ लगी वस्तु संयोग से चली जाय तब।

—जिसका जैसा स्वभाव होना है, वह अंततः प्रकट होकर ही रहता है।

तुरंग अर तुरक रा तेज रौ आगूंच बेरौ नीं पड़ै। ६०५८

तुरंग और तुर्क की तेजी का पहिले पता नहीं चलता।

—घोड़े पर सवारी करने से ही उसकी गति का पता चलता है। तुर्क से सामना होने पर ही उसकी ताकत व फुर्ती का पता चलता है।

—किसी वस्तु, जंतु और मनुष्य की पहिचान उसे बरतने पर ही होती है।

तुरकण रै कात्योड़ा में फिदड़कौ नीं पड़ै। ६०५९

तुर्कन के कते हुए में गाँठ नहीं पड़ती।

—हर पहलू से तुर्क महिला अत्यधिक चतुर और बुद्धिमान होती है। इसीलिए इस कहावत में इसका प्रयोग हुआ है। पर विशिष्ट से सामान्यीकरण होने पर वह हर कुशल व्यक्ति की परिचायक हो गई।

—जिस कुशलतम व्यक्ति के काम में रंचमात्र भी त्रुटि न हो।

पाठा : तुरकणी रै कात्या में ई फिदड़को ?

तुरकणी रै चाखणा में कांई खाटौ अर कांई मीठौ। ६०६०

तुर्कन के चखे हुए में क्या खट्टा और क्या मीठा।

—ज्ञानी व चतुर व्यक्ति हर बात के बाह्य व आंतरिक पक्षों पर पूर्णतया सोचकर ही उसे स्वीकार करता है।

—अभिज्ञ और प्रबुद्ध व्यक्ति की बात में संदेह की कोई गुंजाइश नहीं रहती।

तुरकणी रै रांध्योड़ा में के खांमी ! ६०६१

तुर्कन के रँधे हुए में क्या खामी !

दे.क.सं.६०५९

तुरक री डाढ़ी अर मुकलावा री लाडी। ६०६२

तुर्क की दाढ़ी और गौने की लाडी।

लाडी = दुलहन।

—जिस तरह दुलहन के मन में प्रसाधन के प्रति बड़ा उछाह रहता है, उसी तरह तुर्क को अपनी दाढ़ी सँवारने और उसे मेहँदी से रँगने का उछाह रहता है।

—जो व्यक्ति सजने-सँवरने के प्रति काफी जागरूक हो।

तुरक रै टोपी ई धन। ६०६३

तुर्क के लिए टोपी ही धन।

—जो व्यक्ति थोड़े में ही संतुष्ट हो जाय।

—जिस व्यक्ति के पास अधिक धन-दौलत न हो।

तुरक रौ दांतण व्है ज्यूं। ६०६४

तुर्क के दातुन की नाईं।

—नीम या बबूल का दातुन करने के बाद हिंदू उसे चीरकर दो टुकड़े कर देते हैं। मुसलमान उसे चीरते नहीं। जो व्यक्ति निपट अकेला हो उसके लिए।

—जिस व्यक्ति के परिवार में कोई दूसरा रिश्तेदार न हो उसके लिए।

तुरक लड़ियां, तुरंग चढ़ियां। ६०६५

तुर्क लड़ने पर, तुरंग चढ़ने पर।

—तुर्क की पहिचान लड़ने पर होती है। घोड़े की पहिचान चढ़ने पर होती है।

दे.क.सं.६०५८

तुरत मजूरी जो परखावै, ज्यांरौ कांम अजेज व्है जावै। ६०६६

तुरत मजदूरी जो परखाये, उनका काम अदेर हो जाये।

—मजदूरों को समय पर पैसा मिल जाय तो काम के प्रति उनका उत्साह बना रहता है, काम शीघ्रता से संपन्न हो जाता है।

—मजदूरों के पैसे मारने वाले का काम सुगमता से पूरा नहीं होता, इस कहावत में यह ध्वनि भी लक्षित होती है।

तुळसियौ जिसौ ई हुळसियौ। ६०६७

तुलसिया जैसा ही हुलसिया।

—जिस व्यक्ति के आगे-पीछे कोई न हो।

—जिन दो व्यक्तियों के लच्छन समान हों।

तुळसी जग में दो बड़ा के रिपियौ के रांम। ६०६८

तुलसी जग में दो बड़े या रुपया या राम।

—संसार में रुपये की महिमा राम से कम नहीं।

—रुपये और राम में परस्पर ऐसी होड़ है कि जहाँ राम है वहाँ रुपये को ठौर नहीं और जहाँ रुपया है वहाँ राम को ठौर नहीं।

तुळसी-थांणा में भांग रौ बूंटौ। ६०६९

तुलसी के चौरे में भाँग का पौधा।

—तुलसी का पौधा बहुत पवित्र माना जाता है। उस में कई गुण मौजूद हैं। भाँग का पौधा नशीला होता है। लोग उसे हेय दृष्टि से देखते हैं।

—जिस कुलीन परिवार में कोई दुष्ट पैदा हो जाय उसके लिए।

तुळसी नर का क्या बड़ा समै बड़ी बळवांन। ६०७०

तुलसी नर का क्या बड़ा समय बड़ा बलवान।

—समय से बलवान और शक्तिशाली और कोई नहीं। मनुष्य समय के सामने सर्वथा अकिंचन है। चाहे अर्जुन हो, चाहे भीम या कृष्ण।

पूरा दोहा : **तुळसी नर का क्या बड़ा समै बड़ी बळवांन।**

काबा लूटी गोपिका, वही अरजुन, वही बांण॥

तूंगां रै भौळै मिरी न खवीजै।—व.३४० ६०७१

राई के भरोसे मिर्च मत खा लेना।

दे.क.सं.१७२३

तूं तौ पाद्यां सरै तौ हगण नै न जावै।—व.३४६ ६०७२

पादने से चल जाय तो तू पाखाना भी न जाय।

—बेमिसाल आलसी व्यक्ति के लिए कि यदि पादने से चल जाय तो वह शौच करना भी टाल दे।

—मामूली मेहनत से काम सफल हो जाय तो कोई भी कठिन काम नहीं करना चाहता।

पाठा : **पाद्यां सरै तौ झाड़ै कुण जावै।**

तूं न कूदै राजीया, औ गोहूं कूदै वाजीया।—व.२९७ ६०७३

तू न कूदे राजिया, ये गेहूँ कूदे वाजिया।

वाजिया = गेहूँ की एक किस्म विशेष।

—जो व्यक्ति दूसरों के बल-बूते पर हेकड़ी दिखाये।

—जिस व्यक्ति को अपनी संपन्नता पर ज्यादा घमंड हो।

पाठा : **थूं नंह कूदै राजिया, अं गवूं कूदै वाजिया।**

तूंबा री बेल रै तौ तूंबा इज लागै। ६०७४

तूँबे की बेल पर तो तूँबे ही लगते हैं।

—अकुलीन परिवार की तो अकुलीन ही संतान होती है।

—वंशानुगत प्रभाव से संतान बच नहीं सकती।

तूंबा री बेल तौ खारी इज व्है। ६०७५

तूँबे की बेल तो कड़वी ही होती है।

—अनुवांशिकता के लक्षण अपरिहार्य रूप से संतान में प्रकट होते हैं।

—संतान तभी बुरी होती है, जब उसकी माँ बुरी होती है।

तूंबी तिरै अर तिरावै, तूंबी ठाडौ पांणी पावै, तूंबी लाडूड़ा खवाड़ै। ६०७६

तूँबी तैरती है और तैराती है, तूँबी ठंडा पानी पिलाती है और तूँबी लड्डू खिलाती है।

—भगवे वेश के साथ तूँबी उस बाने का ही स्वरूप है, जिसके परिणामस्वरूप साधु का सर्वत्र सम्मान होता है, लोग आदर के साथ उसे अच्छा भोजन कराते हैं, यह सब उस वेश और तूँबी का ही प्रभाव है। तूँबी साधु को ठंडा पानी पिलाती है। तूँबी पानी में डूबती नहीं, साधु को भी डूबने नहीं देती। फिर साधु उसका गुणगान क्यों न करें?

तूंबी तौ गंगाजी गियां ई खारी री खारी। ६०७७

तूँबी तो गंगाजी में नहाने पर भी कड़वी रहती है।

—जिस कुपुत्र पर अच्छी संगति का भी कोई असर न हो।

—जिस दुष्ट व्यक्ति में सुधरने की रंचमात्र भी गुंजाइश न हो।

तूंबी री तपेली कितीक चालै! ६०७८

तूँबी की देगची कब तक चलेगी!

—तूँबी काठ से भी कमजोर और शीघ्र जलने वाली होती है, भला चूल्हे पर टिकने का उस में सामर्थ्य कहाँ?

—जो व्यक्ति किसी काम के काबिल न हो।

—साँच की आँच पर झूठ कब तक टिका रह सकता है?

—धोखाधडी अधिक नहीं चल सकती।

तूंबौ तिरै, तूंबौ तारै, तूंबौ कदै न भूखां मारै। ६०७९

तुंबा तरे, तुंबा तारे, तुंबा कभी न भूखों मारे।

दे.क.सं. ६०७६

तूटतै आभै वळी नीं लागै। ६०८०

टूटते आकाश के नीचे थंभा नहीं लगता।

—बहुत बड़े व्यक्ति पर आफत आये तो उसे कोई सहारा नहीं दे सकता।

—राजा की विपदा को प्रजा दूर नहीं कर सकती।

तूटी ठपरी, ईंधण चुंवै, आंधी रांड अबोलणौ, दुख भूलस्यां मुवै। ६०८१

टूटी टपरी, गीला ईंधन, अंधी-गूँगी पत्नी, दुख बिसरेगा मरने पर।

—ऐसा घनघोर दुख जो मरने पर भी नहीं भुलाया जा सके।

—ऐसी भयंकर आफत जो सर्वथा असह्य हो।

तूटी डाळ, उडग्यौ मोर, धी मरी, जंवाई चोर। ६०८२

टूटी डाल, उड़ गया मोर, बेटी मरी, जमाई चोर।

—जब तक डाल पेड़ से जुड़ी थी, मोर या अन्य पक्षी उस पर बैठते थे। विश्राम करते थे। जब वह टूट गई तो पंछी उड़ गये। फिर कैसा संबंध! बेटी के जिंदा रहने तक ही दामाद की कद्र है। उसके मरने पर वह चोर की नाईं घर में रहने का अधिकारी नहीं है।

—जो रिश्ते स्वार्थ पर टिके रहते हैं, स्वार्थ मिटने पर वे कायम नहीं रहते। टूट जाते हैं।

तूटी डुखली अर सेजां रा सपना जोवै। ६०८३

टूटी खटिया और सेज का सपना देखे।

—जब कोई गरीब व्यक्ति ऐयाशी की आकांक्षा रखे।

—अभावग्रस्त आदमी साधन-संपन्न होने का सपना पाले।

तूटी नाड़ बुढ़ापौ आयौ, तूटी खाट दळिद्दर छायौ। ६०८४

टूटी गरदन बुढ़ापा आया, टूटी खाट दारिद्र्य छाया।

—गरदन हिलने लगे तो समझ लेना चाहिए कि बुढ़ापा आ गया। टूटी जर्जरित खाट को देखकर अनुमान कर लेना चाहिए कि दरिद्रता घर पर छा गई है।

—हिलती गरदन बुढ़ापे की सूचक है और टूटी खाट निर्धनता की परिचायक है।

तूटी री बूंटी कठै, कठै काळ री टाळ। ६०८५

टूटी की बूटी नहीं, काल किसी को छोड़े नहीं।

—जब साँस टूट जाता है तो कोई जड़ी-बूटी या औषधि काम में नहीं आती। काल का कोप होने पर कोई नहीं बचता।

—मौत का इलाज नहीं, काल को किसी का लिहाज नहीं।

मि.क.सं.३०५५

तूटी हाल अर हुवा निहाल। ६०८६

टूटी हाल और हुआ निहाल।

हाल = हल की वह लंबी पट्टी या लट्ठा, जिसका एक सिरा हल के बीच में फँसा रहता है तथा दूसरे सिरे पर जुआ बाँधा जाता है।

—हल की हाल टूटी तो कुछ विश्राम ही मिला।

—अकर्मण्य व्यक्ति काम न करने का कुछ-न-कुछ बहाना खोज ही लेता है।

तूटौ तौ ई तोडौ, भागौ तौ ई भाखर। ६०८७

तूटा तब भी तोडा, खंडित हुआ तब भी पहाड़।

तोडौ = टोडा = घोड़े के मुँह की नाईं घड़ाईदार बड़ा पत्थर, जिस पर झरोखा टिका रहता है। वह टूट भी जाय तब भी पत्थर के रूप में उसकी उपयोगिता शेष रहती है। चाहे कितना ही खंडित-विखंडित हो जाय, पहाड़ तो पहाड़ ही है।

—बड़ी वस्तु टूट भी जाय तो उसके टुकड़ों का कुछ-न-कुछ महत्त्व है।

—अति समृद्ध व्यक्ति की आर्थिक हालत बिगड़ने पर भी वह सामान्य व्यक्ति से बढ़कर ही होता है।

पाठा : तूटा तौ ई तोडा अर फूटा तौ ई गोडा।

तूटौ बांणियौ जूंना खत फिरोळै। ६०८८

टूटा बनिया पुरानी बहियाँ टटोलता है।

—हताश व्यक्ति को मन बहलाने के लिए कुछ-न-कुछ बहाने की तलाश रहती है।

—पराजित व्यक्ति पुरानी स्मृतियों से लिपटा रहना चाहता है।

तूटौ हथियार अर पांगळौ बेटौ अबखी में आडा आवै। ६०८९

टूटा हथियार और अपाहिज बेटा विपत्ति में काम आता है।

—समय पर अकिंचन वस्तु भी काम आती है। इसलिए तुच्छ समझकर उसकी उपेक्षा उचित नहीं।

—कोई भी वस्तु या व्यक्ति उपेक्षणीय नहीं होता, वक्त पर उसकी भी कुछ-न-कुछ उपयोगिता निकल आती है।

तूटौ हाथ गळा नै भारी। ६०९०

टूटा हाथ गले को भारी।

—जब हाथ टूट जाता है तो पट्टी बाँधकर उसे गले में लटकाया जाता है। वह गले का बोझ बन जाता है।

—कोई गरीब रिश्तेदार संपन्न व्यक्ति के आश्रय में रहने लगे तब।

—परिवार के निर्बल या बेकार सदस्य का बोझ बड़ों को उठाना पड़े तब।

तूट्योड़ौ पांन पाछौ कद लूमै ? ६०९१

टूटा पान वापस कब झूमे ?

—पेड़ से गिरा हुआ पत्ता वापस डाली पर नहीं लहरा सकता, उसी प्रकार टूटा हुआ साँस वापस शरीर में प्रवेश नहीं कर सकता।

—मरने के बाद कोई भी प्राणी वापस लौटकर नहीं आ सकता।

तूठौ तौ ई बांणियौ, रूठौ तौ ई भोपाळ। ६०९२

तुष्ट तो भी बनिया, रुष्ट तो भी भोपाल।

—बनिया तुष्टमान होकर भी उतना नहीं दे सकता जितना रुष्ट महाराजा दे सकता है।

—हर व्यक्ति के सहयोग और सामर्थ्य की सीमा एक-सी नहीं होती।

पाठा : तूठौ तौ ई बांणियौ, रूठौ तौ ई राव। **तूठौ बांणियौ अर रूठौ राव।**

तूठ्यां गुण नीं करै सो रूठ्यां कांई खांगा करै। ६०९३

तुष्ट होने पर जो भला नहीं कर सकता वह रुष्ट होने पर क्या बिगाड़ सकता है!

—जो व्यक्ति खुश होने पर कुछ दे नहीं सकता, वह नाराज होने पर क्या छीन सकता है!

—जो व्यक्ति कैसी भी मनःस्थिति में उदासीन रहे ।

तूमड़ी में तेरह गुण, भेद बिना जांणै कुण ? ६०९४

तूँबी में तेरह गुण, पहिचान बिना जाने कौन ?

—गुण-ग्राहक हुए बिना किसी के गुण की पहिचान नहीं हो सकती ।

—पारखी ही किसी वस्तु की सही परख कर सकता है ।

तूहड़ा रौ के मीठौ ? ६०९५

तूँबे का क्या मीठा ?

—जिस व्यक्ति में अच्छाई के नाम पर कुछ भी न हो ।

—दुष्ट व्यक्ति से किसी भी प्रकार के भले की उम्मीद नहीं करनी चाहिए ।

तेजरा रौ कैवै जद ताव रौ हूंकारौ भरै । ६०९६

त्रिज्वर का कहे तब बुखार की हामी भरे ।

तेजरौ = तेजरा = त्रिज्वर । हर तीसरे दिन आने वाला बुखार जो सामान्य बुखार की अपेक्षा बड़ा कष्टप्रद होता है ।

—कामचोर व्यक्ति को बड़े काम के लिए कहा जाय, तब कहीं छोटे काम की हामी भरता है ।

—कंजूस व्यक्ति से बहुत अधिक रुपयों की माँग की जाय तो वह थोड़े रुपये देना मंजूर कर लेता है ।

—हर व्यक्ति की प्रवृत्ति बड़े कष्ट से बचने की होती है ।

तेजी ई आतळै छै । ६०९७

तेजी ही दौड़ती है ।

—व्यापार में तेजी होने पर ही माल खरीदने की भागमभाग रहती है ।

—मंदी में व्यापारी स्वयं मंद हो जाते हैं और तेजी में तेज हो जाते हैं ।

तेजी नै ताजणौ सदै नीं । ६०९८

तेज घोड़ी को चाबुक बर्दाश्त नहीं होता ।

—किसी भी काम में पारंगत व्यक्ति को मीनमेख पसंद नहीं होती ।

—कुशल व्यक्ति अपने काम की निंदा सुनकर भड़क उठता है।

मि. क. सं. ५९६३

तेजी रौ बोलबालौ, मंदी रौ मूंडौ काळौ। ६०९९

तेजी का बोलबाला, मंदी का मुँह काला।

—हर व्यापारी माल की तेजी से खुश होता है और मंदी से नाखुश।

—दूसरा छिपा संकेत यह भी है कि हर व्यक्ति को उन्नति की चाह होती है और अवनति की नहीं।

तेड़ियां आवै नीं, नेतियां जीमै नीं। ६१००

बुलाने पर आये नहीं, न्योतने पर जीमे नहीं।

—जो व्यक्ति कैसी भी स्थिति में मानने को तैयार न हो।

—दंभी या सनकी व्यक्ति के लिए।

तेड़ियां टाळ तौ रांम रै वासै ई जावण री आंट। ६१०१

बिन बुलाये तो राम के घर भी न जाने का प्रण।

—कई व्यक्ति निमंत्रण नहीं मिलने पर बड़ी शान से कहते हैं कि भैया हम तो बिन बुलाये राम के घर भी नहीं जाना चाहते। राम का घर मतलब कि ऊपर। मौत बुलाने आती है तभी राम के घर जाते हैं। व्यर्थ का अहंकार कुछ भी माने नहीं रखता।

तेडिया वगर को नी आवे, पलां घरे ने बाण्ने वो।—भी. ४२१ ६१०२

बिन बुलाये वह किसी के द्वार पर नहीं जाता।

—आमंत्रण के बिना कहीं भी जाना सम्मान-जनक नहीं है।

—कुछ व्यक्ति ऐसे सिद्धांतवादी होते हैं कि वे औपचारिक निमंत्रण के बगैर सगे-संबंधियों के घर भी नहीं जाते। अपना-अपना सिद्धांत और अपनी-अपनी सनक।

तेता पांव पसारजै, जेती लांबी सोड़। ६१०३

इतने पाँव पसारिये जितनी लंबी सोड़।

सोड़ = रजाई।

—अपने सीमित साधनों को ध्यान में रखकर ही हर काम करना चाहिए।

—अपनी हैसियत को भूलकर अपव्यय करने से कष्ट उठाना पड़ता है।

दे.क.सं.५३१०

तेरह कक्का भेळा व्है तद सिरमाळी रोटी भेळौ व्है। ६१०४

तेरह कक्कों का योग जुड़े तब श्रीमाली खाना खाता है।

—सिखों के पाँच कक्कों की नाईं श्रीमाली ब्राह्मणों के तेरह कक्के हैं। जिनकी पूर्ति होने पर श्रीमाली भोजन करता है। इसीलिए भोजन करने में बहुत देर हो जाती है।

—जो व्यक्ति औपचारिकताओं का बहुत अधिक पालन करे।

तेरह रा तीन ई दीज्यौ, पण नांव दरोगौ धर दीज्यौ। ६१०५

तेरह के तीन ही देना, पर नाम दरोगा रखना।

—तनख्वाह भले ही कम हो, तेरह रुपयों की जगह तीन ही रुपये देना पर पद का नाम दरोगा ही रहना चाहिए।

—जो व्यक्ति आर्थिक हानि सहकर भी ऊँचे पद की लालसा करे।

तेरू री लुगाई सेवट रांड हुवै। ६१०६

तैराक की औरत आखिर राँड होती है।

दे.क.सं.३८०४

पाठा : तेरू री रांड व्है।

तेल जित्तौ ई खेल। ६१०७

तेल जितना ही खेल

—दीपक में जितना तेल होगा, तब तक ही प्रकाश रहेगा। जब तक प्रकाश रहेगा, तब तक ही खेल चलेगा।

—मनुष्य जीवन की नश्वरता को लक्ष्य करके।

तेल जोवौ, तेल री धार जोवौ। ६१०८

तेल देखो, तेल की धार देखो।

दे.क.सं.६००८

तेल टाळ ई कोई दीवौ बळतौ होसी ? ६१०९

तेल बगैर भी कोई दीया जलता है ?

—जिस तरह तेल के बिना दीपक नहीं जलता, उसी तरह भोजन के बिना शरीर नहीं चलता।

—घी के बिना मनुष्य के शरीर में प्रकाश नहीं हो सकता।

तेलण वाळी खळ। ६११०

तेलिन वाली खली।

संदर्भ-कथा : एक तेलिन का धंधा बहुत अच्छा चलता था। दिन भर कोल्हू चलता रहता। घर के पास ही एक खंडहर था। काफी लंबा-चौड़ा। किसी सर्दी की मौसम में ऐसी शुरुआत हुई कि खंडहर में निबटने के लिए गई तो वह पानी की बजाय चार-पाँच खली की डलियाँ साथ ले गई। उन्हीं से सफाई की। और डलियाँ वहीं डाल दीं। तत्पश्चात् उसकी वह आदत ही बन गई। गरमियों में भी खली ले जाती। तेलिन के पड़ोस में एक होशियार बनिया रहता था। उसे पहिले दिन ही खली के भेद का पता लग गया। वह डलियाँ इकट्ठी करके घर ले आता। लोहे की एक कोठी में डाल देता। पूरे वर्ष भर उसके नियमित काम में एक दिन की भी नागा नहीं हुई। दो कोठियाँ ठसाठस भर गईं। तेलिन सोचती कि ताजी खली की डलियाँ कुत्ते खा गये।

तिलहन की फसल यों भी बड़ी मुश्किल से हाथ लगती है। आठ-दस बरसों में एक बार। अगले दो बरसों में तिलहन की फसल सौ-सौ कोस तक नहीं हुई। तेलिन का सारा कारोबार ठप्प। रोटियों के भी लाले पड़ने लगे। तेलिन खुशहाली के दिनों में उसी बनिये से हर सामान रोकड़ लाती थी। जब संकट की ऐसी घड़ी आई तो तेलिन बोहरे के घर गई। पर न रुपये उधार मिले न अनाज और न दूसरा ही कोई सामान। अंत में सेठ ने कहा, 'मेरे पास खली है, कहे तो दे दूँ।' तेलिन और अधिक खुश हुई। घर में दो ही प्राणी थे। दो बेटियों की पिछले वर्ष ही शादी कर दी। दोनों पति-पत्नी सुबह-शाम खली खाकर अपना काम चलाते। दोनों कोठियाँ खाली हो गईं तो बनिया उसे उधार भी देने लगा। एक दिन तेलिन ने तनिक नाराजी प्रकट करके पूछा, 'आपने पहिले उधार के लिए मना क्यों किया ? सेठ ने बाजरी तौलते-तौलते ही जवाब दिया, 'पहिले अनाज देता तो मेरी खली बिकती नहीं। तेलिन ने पूछा, 'अब खली क्यों नहीं रखते ?' सेठ उसको नसीहत देना चाहता था। साफ कहा, 'जिस

दिन तू खंडहर में फिर डलियाँ डालनी शुरू कर देगी तो दे दूँगा।' इतना कहकर सेठ ने मुस्कराकर तेलिन की ओर देखा। जवाब की आशा से नहीं। न उसे शर्मिंदा करने के लिए। पर सेठ के आश्चर्य की सीमा नहीं कि तेलिन न तो शर्मिंदा हुई और न सेठ को ही भला-बुरा कहा। चाहने पर भी वह सेठ की ओर देख नहीं सकी। कहना भी बहुत कुछ चाहती थी। पर जीभ ने साथ नहीं दिया। तब सेठ बोला, 'खली का सारा रुपया तेरे खाते में जमा है; बाद में भी तुझे उधार के लिए मना नहीं करूँगा। लक्ष्मी का सम्मान करना नहीं जानती तो कम-से-कम उसका अपमान तो नहीं किया होता। हम बनियों के पास कमाई का यही एक गुर है। तू भी याद रखना।'

—कैसी भी खुशहाली हो, मनुष्य को इतराना नहीं चाहिए।

तेलण सूं नीं मोचण घाट, उणरै मोगरी इणरै लाट। ६१११

तेलिन से न मोचिन घाट, उसके मोगरी, इसके लाट।

—जो व्यक्ति अपना मन बहलाने के लिए बड़े आदमियों के समकक्ष समझने की खातर मन-ही-मन मुगालते में रहे, उसके लिए।

—हर व्यक्ति को अपने जैसे-तैसे साधनों पर ही संतोष करके अपना निर्वाह करना चाहिए।

—किसी भी व्यक्ति के लिए रोटी-पानी की तरह मुगालते में जीना भी एक अनिवार्यता है।

तेल तिलां सूं उतरियौ तौ खळ सूं कांई सनेह! ६११२

तिलों से तेल निचुड़ गया तो खली से कैसा मोह!

आ.दे.क.सं.६११३

तेल तिलां सूं ऊतर्‌यौ, खळ बळीता जोग। ६११३

तेल तिलों से उतरा, खली ईंधन के योग्य।

—मनुष्य के गुण निःशेष हो जाएँ तो उसका शरीर माटी के ही समान है।

—मनुष्य का चरित्र चुक गया तो वह साँस लेती जिंदा लोथ के समान है।

—रूप एवं यौवन चुक जाने के पश्चात् पिंजर तो जलने के योग्य है।

तेल तौ तिलां मांय सूं ई निकळै। ६११४

तेल तो तिलों से ही निकलता है।

—व्यापारी का सब खर्च-लाभ, वस्तु के विक्रय मूल्य पर ही निर्भर करता है। माल का मूल्य चाहे कितना ही बढ़े वह ग्राहकों से ही वसूल करता है। जिस प्रकार तेल तिलों से ही निकलता है, कोल्हू की लाठ से नहीं, उसी प्रकार व्यापारी की कमाई ग्राहक से ही होती है, हाट, तराजू और बाट से नहीं।

—उद्योग-पति की अधिकांश कमाई मजदूरों की मेहनत से ही होती है।

तेल तौ तेली रौ जळै, मसाळची रौ पीतौ बळै। ६११५

तेल तो तेली का जले, मशालची बेकार कलपे।

—सामंती व्यवस्था में ठाकुरों के यहाँ शादी या अन्य उत्सव में तेली से ही मुफ्त में तेल लिया जाता था। मशालची के हाथ में केवल मशाल रहती थी, तेल सारा तेली का जलता था। पर ठाकुर व तेली की बजाय दुख सारा मशालची को ही होता था कि कितना तेल जल रहा है।

—जो व्यक्ति स्वयं तो किसी का भला कर नहीं सकता, कोई दूसरा भी करे और वह मन-ही-मन दुख पाये, पछताये—उसके लिए।

—जो हीन स्वभाव का व्यक्ति दूसरों के द्वारा किसी की भलाई होते नहीं देख सके।

पाठा : तेल बळै तेली रौ तौ मसाळची क्यूं धाधळिया लेवै ?

तेल बळै ठिकांणा रौ, नाई रौ कांई जाय ?

तेली रौ तेल बळै अर मसाळची रौ जीव।

तेल बळै हाडा-राव रौ, मसाळची क्यूं धमीड़ा लेय ?

तेल बळै रांणा-राव रौ, बरकै क्यूं नाई ?

तेल नीं कोई ताई, रांड गुलगुलां आई। ६११६

तेल न कोई ताई, राँड गुलगुलों के लिए मचले।

—घर में तेल अथवा तेल में तले जाने हेतु कोई सामग्री नहीं है और चट्टू औरत को गुलगुले खाने की तलब हो रही है।

—जिस व्यक्ति को घर की सही स्थिति का पता न हो और वह अव्यावहारिक आशाएँ पाले।

—पूँजी और साधनों के अभाव में जो व्यक्ति बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाये।

तेल पायनै घी काढ़ै। ६११७

तेल पिलाकर घी निकाले।

—गाय-भैंस को बिनौले, खली, तिल और तेल देकर उनसे अधिक घी निकाला जाता है।

—जो व्यक्ति अपने स्वार्थ की खातिर कम खर्च करके अधिक वसूल करना चाहे।

—जो मालिक कम मजदूरी देकर मजदूरों से ज्यादा लाभ कमाना चाहे।

तेल बळै बाती बळै, नांव दीवा रौ होय। ६११८

तेल जले बत्ती जले, नाम दीये का होय।

—खर्च तो कोई और करे और यश किसी दूसरे को मिले तब।

—दूसरों के काम का श्रेय लेने वाले व्यक्ति पर।

पूरा दोहा :

तेल बळै, बाती बळै, नांव दीवा रौ होय।
बेटा तौ गौरी जिणै, नांव पीव रौ होय॥

तेल बाकळा भैंरूं पूजा। ६११९

तेल बाकले भैरव पूजा।

बाकळा = बाकले = उबला हुआ अनाज, जो देवी-देवताओं या भूत-प्रेतों को चढ़ाया जाता है।

—भैरव एक ऐसा देवता है जो छोटी मनौती से ही खुश हो जाता है।

—जो कर्मचारी थोड़ी रिश्वत से ही मान जाता हो।

तेल बाळियां अंधारौ मिटै। ६१२०

तेल जलाने से अँधेरा मिटता है।

—विद्या से अज्ञान का अँधियारा मिटता है।

—ज्ञान से ही मनुष्य को प्रकाश मिलता है।

तेल में घी कोई नीं घालै। ६१२१

तेल में घी कोई नहीं डालता।

—घी की अपेक्षा तेल सस्ता होता है, इसलिए ऐसा कौन नादान है जो तेल में घी की मिलावट करे।

—सस्ती वस्तु में महँगी चीज की मिलावट कोई नहीं करता।

—अपदार्थ की कोई सहायता नहीं करता।

तेल में जांणै माखी डूबी। ६१२२

तेल में मानो मक्खी डूबी।

—मक्खी तेल में गिरते ही अविलंब मर जाती है।

—कोई भी व्यक्ति प्राणघातक काम करे तो उसका मरण निश्चित है।

तेल में तुरतुरियौ कूदै ज्यूं कूदै। ६१२३

तेल में तुरतुरिया की नाईं कूद रहा है।

तुरतुरियौ = तुरतुरिया = पकोड़े से विच्छिन्न नन्हे टुकड़े जो छोटे होने की वजह से अधिक उछलते हैं।

—छिछला व्यक्ति उछल फाँद करे तब।

—ओछा व्यक्ति उतावली करे तब।

पाठा : तेल री कड़ाई में तुरतुरिया री गळाई क्यूं नाचौ ?

तेल रै चूरमा सूं कांईं मूंघा। ६१२४

तेल के चूरमे से मूँघे थोड़े ही हैं।

—मामूली योग्यता वाला कोई भी व्यक्ति सामान्य भोजन के काबिल तो होता है।

—सामान्य परिजन का आतिथ्य-सत्कार करने पर इस युक्ति का प्रयोग होता है कि इतना खर्च गैरवाजिब नहीं है।

तेली खसम कर्‌यौ, पछै लूखौ क्यूं ? ६१२५

तेली खसम किया, फिर रूखा क्यों खाये ?

—संपन्न व्यक्ति से संबंध स्थापित करने के बाद तंगी क्यों भुगतना ?

—बाहुल्य के बीच रहकर कष्ट उठाने की जरूरत क्या है ?

पाठा : तेली री जोरू लूखौ क्यूं खावै ?

तेली धणी कर्‌यौ पछै पांणी सूं क्यूं पग धोवै ? ६१२६

तेली से ब्याह किया, फिर पानी से पैर क्यों धोये ?

—जो व्यक्ति अवसर का अत्यधिक लाभ उठाये ।

—जिस वस्तु की बहुलता है, उसे उपयोग में न लेना उचित नहीं ।

—जो संपन्न व्यक्ति ऐयाशी का ज्यादा ही प्रदर्शन करे तब !

मि.क.सं.६१२५

पाठा : तेली रै घरै पांणी सूं पग क्यूं धोवणा ?

तेली ने तो दूखे ने तेरमां अे डामे ?– भी.४२२ ६१२७

तेली को कष्ट है और तेरमा को दागता है ।

—कष्ट देने वाले का ही निराकरण करना संगत है ।

—बेकसूर को सजा देना अनुचित है ।

तेली बे-बगारियौ खाय ! ६१२८

तेली बिना छौंक के खाय !

—जो व्यक्ति बहुलता के बीच भी उसका उपयोग न कर सके ।

—कंजूस अपनी संपत्ति का लाभ न उठा सके तब ।

तेली रा तीन मरौ , माथै लाठ पड़ौ । ६१२९

तेली के तीन मरें, ऊपर से लाट पड़े ।

—जो व्यक्ति किसी के भले-बुरे से सर्वथा उदासीन रहे ।

—दूसरों की कष्ट-पीड़ा से जिस व्यक्ति का कोई सरोकार न हो ।

तेली रै ई तेल रौ तोटौ ? ६१३०

तेली के ही तेल का टोटा ?

—किसी वस्तु की प्रचुर मात्रा होने पर भी जब कोई व्यक्ति उस चीज का अभाव बताये तब ।

—बाहुल्य के बीच रहकर भी व्यक्ति उसका उपयोग न करे तब !

तेली रौ जमारौ अर ऊजळा गाभा ! ६१३१

तेली की जिंदगी और उजले वस्त्र !

—परिस्थितियों के प्रभाव से अछूता रहना असंभव है।

—परिस्थितियों की मजबूरी अपरिहार्य है।

तेली रौ तेरमौ बंट अर लड़ाई में आध। ६१३२

तेली का तेहरवाँ हिस्सा और लड़ाई में आधा।

—तेल निकालने की कमाई तो तेली के लिए बहुत कम होती है, पर काम की जिम्मेदारी पूरी। मामूली कसर रह जाय तो भी कलह में कमी नहीं रहती।

—जो अनधिकृत व्यक्ति खामखाह की परेशानियाँ मोल ले तब।

तेली रौ बळद आखै दिन भंवै पण ठौड़ रौ ठौड़। ६१३३

तेली का बैल सारे दिन घूमे पर वहीं-का-वहीं।

—जो व्यक्ति अपने जीवन में तनिक भी प्रगति न कर सके, उसके लिए।

—निरर्थक परिश्रम।

पाठा : तेली रौ बळद सौ कोस चालै तौ ई वठै रौ वठै।

तेवड़िया जित्ता खरचौ परा, उमाया जितरा बरसौ परा। ६१३४

जो तय किया वह खर्च कर दीजिये, उमंग मुताबिक बरस जाइये।

—इस कहावत का सांस्कृतिक संदर्भ है। विवाह के समय वर या वधू के मामा दवारा जब गहना, धन या अन्य माल दिया जाता है तो मामा व उसके परिजनों से यह आशा की जाती है कि उन्होंने जो तय किया है उतना खर्च कर दें और खुशी के इस अवसर पर दिल खोलकर देना चाहें, वह दे दें।

—उचित अवसर पर आदमी को उन्मुक्त भाव से खर्च करना चाहिए।

तैरू री मौत पांणी में इज व्है। ६१३५

तैराक की मौत पानी में ही होती है।

—जो व्यक्ति जिस हुनर में दक्ष होता है, वहीं उसे मात खानी पड़ती है।

—जिसकी जो नियति होती है, वह टल नहीं सकती।

तोख सबां रा राखती, वेस्या रैयगी बांझ। ६१३६

सबको खुश रखने वाली वेश्या स्वयं बाँझ रह गई।

—जो व्यक्ति सबको खुश रखना चाहता है, उसे अंत में निराश ही होना पड़ता है।

—जो कार्यकर्ता पचासों नेताओं के संपर्क में रहकर भी लाभ न उठा सके।

मि.क.सं.४८६०

तोटा भेळौ तोटौ। ६१३७

टोटे के साथ टोटा।

—दोहरी क्षति होने पर मन को सांत्वना देने के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है—कोई परवाह नहीं, हानि के साथ एक और हानि सही।

—जहाँ खर्च करना अनिवार्य है वहाँ हानि-लाभ की बात नहीं सोची जाती।

तोटा भेळौ तोटौ, खा रांड गवां रौ रोटौ। ६१३८

टोटे के साथ टोटा, खा राँड गेहूँ का रोटा।

—जो व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मौज-मस्ती करना चाहे।

—जो व्यक्ति घर की गिरती हुई दशा की परवाह न करके पहिले की तरह उसी भाँति खर्च करता रहे, उसके लिए।

तोटायलौ दो घर पाळै। ६१३९

टोटे वाला दो घर पालता है।

—कर्जदार दो घरों का पोषण करता है—एक अपना व दूसरा बोहरे का। अपने घर के अभावों से जूझता-जूझता वह बोहरे को ब्याज-पर-ब्याज देकर उसे भी संपन्न रखता है।

—कैसी अजीब विडंबना है कि संपन्न व्यक्ति जहाँ अपना घर चलाता है।' वहाँ अभावग्रस्त व्यक्ति दो घर चलाता है।

पाठा : तोटायलौ तीन घर पाळै। तीसरा घर जामिन का।

तोटौ जद ई जांणिये, करै पुरांणी बात। ६१४०

टोटा तब ही जानिए, करे पुरानी बात।

—संपन्न व्यक्ति अतीत को भूलकर आगे की योजनाएँ बनाता है, उन्हें कामयाब बनाने में संघर्षरत रहता है। गुजरे दिनों को सोचने का उसे वक्त ही नहीं मिलता। और इसके विपरीत जो व्यक्ति वर्तमान में टूट गया है, वह पिछले दिनों की याद में ही व्यस्त रहता है कि उसके

पास यह था, वह था ! तब समझ लेना चाहिए कि वह वर्तमान के अभावों व टोटे से त्रस्त हो गया है। पुराने दिनों की जुगाली करने में खोया रहने लगा है।

तोटौ तौ नीत रौ। ६१४१

टोटा तो नीयत का है।

—नीयत साफ हो तो व्यक्ति अभावों से जूझता हुआ भी खुशहाल हो सकता है, पर नीयत बिगड़ने पर वह कभी सफल नहीं हो सकता।

—जो संपन्न व्यक्ति अभावों का रोना रोते हुए देनदारों का उधार चुकाना नहीं चाहता तब दूसरे व्यक्ति कहते हैं कि अमुक के पास धन की कमी थोड़े ही है, नीयत की कमी है। नीयत का टोटा है।

तोटौ लड़ै। ६१४२

टोटा लड़ता है।

—आदमी नहीं लड़ते, टोटा लड़ता है। अभाव ग्रस्त घर में आवश्यक वस्तुओं की कमी के कारण छीना-झपटी लगी रहती है। लड़ाई कभी मिटती ही नहीं।

—सारे झगड़ों का मूल कारण निर्धनता है।

तोत रा घोड़ा कित्ती भांय चालै। ६१४३

तोत के घोड़े कहाँ तक चलेंगे।

तोत = आडंबर, ढोंग, झूठ, असत्य।

—ढोंग अधिक नहीं चलता, आखिर पोल खुलती ही है।

—झूठ के पाँव नहीं होते, वह चल नहीं सकता।

पाठा : तोत रा घोड़ा किताक कोस चालै !

तोत रा घोड़ा कित्ता दिन दौड़ै !

तोत रा घोड़ा दौड़ावै। ६१४४

तोत के घोड़े दौड़ाता है।

तोत = आडंबर, ढोंग, असत्य, झूठ।

—जो व्यक्ति आडंबर और झूठ का ही जीवन बिताये।

—जिस व्यक्ति का सारा काम-काज ढोंग और असत्य पर ही आधारित हो।

तोत रा घोड़ा मैदान रै बिचाळै थाकै। ६१४५

तोत के घोड़े मैदान के बीच थकते हैं।

तोत = ढोंग, आडंबर, झूठ।

—आडंबर का घोड़ा अधिक दौड़ नहीं सकता, बीच राह में ही गिर पड़ता है।

—आखिर ढोंगी व्यक्ति की पोल खुलती-ही-खुलती है।

तोप में तोप किलकिला तोप। ६१४६

तोप में तोप किलकिला तोप।

किलकिला = इसी नाम की एक विशिष्ट तोप।

—मशहूर व्यक्ति के लिए, जो अन्य लोगों के मुकाबले काफी भारी पड़ता हो!

—यों भी आम बोलचाल की भाषा में कहा जाता है कि फलाँ आदमी बड़ी तोप है।

तोप रै मूंडै आ जांणौ पण घर रै मूंडै नीं आवणौ। ६१४७

तोप के मुँह आ जाना पर घर के मुँह मत आना।

—तोप के सामने आने पर तो आदमी की तत्काल मृत्यु हो जाती है, वह सुख-दुख के जंजाल से मुक्त हो जाता है, पर घर के मुखिये की आफत-विपदाओं का कोई पार नहीं। उसे सुबह शाम के बीच न जाने कितनी बार मरना पड़ता है।

—घर की जिम्मेदारी निभाना, युद्ध की जिम्मेदारी से ज्यादा कठिन है। आखिर परिवार की गुजर-बसर के लिए ही तो आदमी सेना में भर्ती होता है।

तोपां रै धमाकै ताळी री कांई तनकौ। ६१४८

तोपों के धमाकों में ताली की क्या बिसात।

—इसी आशय की कहावत है—नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है!

—बड़ों के आगे गरीब और असहाय की फरियाद भला कौन सुनता है!

—बड़े लोगों के शोरगुल में गरीब की फुसफुसाहट का कहाँ पता चलता है!

तो मां कई लक्खण नी, कूतरा मां जे लक्खण हाउ हे।—भी.४२३ ६१४९

तुझ में कोई गुण नहीं, इससे तो कुत्ते के गुण ही अच्छे।

—जो व्यक्ति.कुत्ते से भी गया-गुजरा हो।

—अति निकृष्ट और महामूर्ख व्यक्ति के लिए।

तोय भजूं पण मोय न भजूं। ६१५०

तुझे भजता हूँ पर स्वयं को नहीं भजता।

—निष्काम व्यक्ति के लिए जो केवल राम-नाम का सुमिरन करता है पर अपने लिए कोई कामना नहीं करना चाहता।

—जो आदमी अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर जनता-जनार्दन की सेवा करता हो।

तोये राम खवड़ाये जेम खाजे।– भी.२८२ ६१५१

तुझे राम खिलाये वैसे ही खाना।

—दूसरों का अनुचित ढंग से लिया हुआ धन हानिकारक होता है।

—राम की इच्छा के अलावा अपनी कोई इच्छा न रखने की सीख।

तोरण तारां री छींयां। ६१५२

तोरण तारों की छाया में।

तोरण, विशिष्ट टिप्पणी—विवाह के अवसर पर वधू-पक्ष के मुख्य द्वार पर लगाया जाने वाला काष्ठ की खपच्चियों का बना एक मांगलिक उपकरण। विवाह के समय बरात लेकर दूल्हा जब ससुराल आता है, तब मुख्य द्वार पर तोरण को हरी टहनी से स्पर्श करता है।

—सवर्ण हिंदुओं में अमूमन रात को विवाह होता है। झिलमिलाते तारों के बीच ही तोरण का अस्तित्व है। शांतिमय जीवन का प्रतीक।

तोरण तिणगां ऊछळी, मांडै लागी लाय। ६१५३

तोरण चिनगारियाँ उछलीं, मंडप में लगी आग।

—जिन जातियों में वर-पक्ष से राशि लेकर कन्या का विवाह होता है, यदि वे तोरण के समय वादे के अनुसार राशि न चुकाएँ तो तकरार होती है, तकरार झगड़े का रूप धारण कर लेती है। कन्या-पक्ष वाले उत्तेजित होकर लड़ने को आमादा हो जाते हैं। चारों ओर कुहराम मच जाता है।

—समय पर वादा न निभाने का परिणाम बुरा ही होता है, इसलिए जहाँ तक बन पड़े मनुष्य को अपना वादा निबाहना चाहिए।

तोलड़ी तेरह वांना मांगै। ६१५४

हँडिया तेरह यत्न माँगती है।

—यों हँडिया दिखने में साधारण व सस्ता बासन है—मिट्टी की बनी। लेकिन चूल्हे पर चढ़ने के पूर्व उसके लिए दिन-रात यत्न करने पड़ते हैं। खटना पड़ता है। पसीना बहाना पड़ता है।

—दोनों वक्त चूल्हा जलता रखना और खाली हँडिया की पूर्ति करना बड़ा कठिन कार्य है।

पाठा : तोलड़ी तेरह तेवड़ मांगै।

तोल माथै मोल। ६१५५

तौल ऊपर मोल।

—तौल के अनुसार ही मूल्य निर्धारित होता है—चाहे गुड़ हो, चाहे सोना और चाहे मोती।

—तुला न्याय की प्रतीक है, उस पर खरा उतरने वाले का ही मूल्य है।

तोळौ बडौ के रत्तौ ? फेर घड़ावण रौ मत्तौ। ६१५६

तोला बड़ा कि रत्ता ? फिर घड़ाने का मत्ता।

संदर्भ-कथा : एक ठाकुर जब भी गहने घड़वाता, सुनार को अपने गढ़ में बुलाकर घरवालों की निगरानी में घड़वाता। एक बार उसने शहर के मशहूर सुनार को बुलवाया। जिस बड़ी कुँअरी की शादी थी, उसे ही निगरानी पर बिठा दिया। वह बड़ी-बड़ी आँखों से एकटक सोने पर ही नजर रखती। सोनार ने डरते-डरते खूब गहने गढ़े पर मनवांछित मिलावट नहीं कर सका। कुँअरी पलक ही नहीं झपकाती थी। एक बार कुँअरी ने जिज्ञासा वश पूछ लिया, 'सोनी जी, एक बात तो बताओ कि तोला बड़ा कि रत्ता ? सुनार अदेर समझ गया कि कुँअरी तो एकदम नासमझ है। उसने आगे तुक मिलाई—फिर घड़ाने का मत्ता। ठाकुर के पास हाजिर होकर अरदास की, 'हुजूर' नई जगह पर कारीगरी मन मुताबिक नहीं हुई। आपकी आज्ञा हो तो दुबारा मेहनत करके बढ़िया गहने बनाऊँगा।' ठाकुर ने अपनी होशियारी दिखाते कहा, 'दुबारा घड़ाई नहीं दूँगा।' सुनार तो कहते ही मान गया। कुँअरी के सामने उसने जी भरकर

मिलावट की। वह एकटक आँखें फाड़े देखती रही। उसे तनिक भी सुनार की नीयत पर संदेह नहीं हुआ।

—अधिक होशियारी बरतने पर भी धोखा हो जाए तब।

त्रण ओलै परबत। ६१५७

तिनके की ओट पहाड़।

—आँख के सामने तिनका रखने से पर्वत भी छिप जाता है।

—कभी-कभार किसी अकिंचन कारण से भी बड़ी कठिनाई पैदा हो जाती है।

—मामूली चीज के पीछे भी बड़ा रहस्य छिपा रहता है।

त्रण भारत। ६१५८

त्रण भारत।

संदर्भ-कथा: एक बनजारा बनिये की हाट गुड़ लेने के लिए गया। वर्षा का मौसम था। गीला गुड़ ही लेने को मजबूर होना पड़ा। वनजारा बड़े ध्यान से तराजू की ओर देख रहा था। उसे गुड़ पर एक तिनका चिपका नजर आया तो उसने झट उठाकर उसे दीवार पर फेंक दिया। तिनके पर गुड़ देखा तो तीन मक्खियाँ उस पर बैठ गईं। छिपकली तो मक्खियों की ही ताक में रहती है। लपककर दो मक्खियाँ निगल गई। एक उड़ गई। बनिये की हाट में छिपी बिल्ली की नजर पड़ी तो वह छिपकली पर झपटी। बनजारे के कुत्ते ने बिल्ली को देखा तो वह अदेर उस पर झपटा। आगे बिल्ली और पीछे कुत्ता। हाट में रखी तीन-चार मटकियाँ फूट गईं। बनिये को नुकसान बर्दाश्त नहीं हुआ तो उसने पत्थर का बाट कुत्ते पर फेंका। संयोग से सीधा कुत्ते के कपाल पर लगा। कुत्ते की कपाली से लहू बहते देखा तो बनजारा अपना आपा ही बिसर गया। कसकर बनिये की पीठ पर लाठी का जोर से प्रहार किया तो बनिये की आँखों के सामने अँधेरा छा गया। जमीन पर लुढ़कते ही वह इतने जोर से चिल्लाया कि आस-पास की दुकानों से बाहर निकलकर बनियों ने वनजारे पर बाटों की वर्षा कर दी। एक बाट उसके ललाट पर लगा। खून की धार बह चली। मालिक की यह हालत देखी तो स्वामीभक्त कुत्ता अपने घाव की परवाह न करके सीधा बनजारों के डेरे पर दौड़ा। थोड़ी ही देर में बनजारों का हुजूम लंबी-लंबी लाठियाँ लेकर आया। एक-एक लाठी के प्रहार से दुकानदार जमीन पर लुढ़कते रहे। बजार के निकट ही राजपूतों की बस्ती थी। गाँव की नाक कटती देखी तो वे

तलवार-भालों से बनजारों पर टूट पड़े। महाभारत मचा तो ऐसा मचा कि देखते-देखते तीन सौ योद्धा खेत रहे। योद्धा तो योद्धा ही होते हैं। उनकी कोई जाति नहीं होती। गुड़ से लिथड़े एक तिनके की वजह से बाजार में खून-ही-खून बहने लगा। पर उसकी कोई कीमत नहीं थी।

—नगण्यतम बात पर महाभारत का युद्ध छिड़ सकता है।

थ - था

थनै ओरणा वाळी मिळ जासी तौ मनै ई पोतिया वाळौ मिळ जासी। ६१५९

तुझे ओढ़नी वाली मिल जाएगी तो मुझे भी साफा वाला मिल जाएगा।

—जिन जातियों में पुनर्विवाह होता है, किसी एक दंपती के बीच मनमुटाव हो तो पत्नी कहती है तुम्हें ओढ़नी वाली स्त्री मिल जाएगी तो मुझे भी साफा वाला मर्द मिल जाएगा।

—कोई किसी पर पूर्णतया निर्भर नहीं करता।

—कोई व्यक्ति किसी के लिए अपरिहार्य नहीं है।

थनै कांईं, रोटी थारा कुत्ता नै ई मोकळी। ६१६०

तुझे क्या, तेरे कुत्ते को भी रोटी बहुत।

—जो व्यक्ति हर किसी अतिथि का पूरा सत्कार करे, दिल का उदार हो, दुख-सुख में हर किसी से सहयोग करे, तब उसके स्वभाव की सराहना करते हुए लोग कहते हैं कि तुम्हारी बात तो दूर, तुम्हारे कुत्ते को भी रोटियों की कहीं कमी नहीं। तुम्हारे नाम से कौन परिचित नहीं।

—जो व्यक्ति बहुत मिलनसार, खुशमिजाज, घर आये किसी मेहमान का आदर-सत्कार करे, मुँह से जवाब देने की बजाय हाथ से जवाब दे—उसके लिए।

थनै हूकणी आवै तौ मनै लुटणी आवै। ६१६१

तुझे हूँकनी आये तो मुझे लुटनी आये।

संदर्भ-कथा : एक सियार और ऊँट के गहरी दोस्ती थी। सियार था चालाक और ऊँट था भोला। एक दिन सियार ने ऊँट से कहा, 'भैया, नदी के उस पार खेत बड़े हरे-भरे हैं। लोग भी

अपरिचित हैं। आधी रात के समय चरकर वापस लौट आएँ तो बड़ा मजा रहे। पर मैं इतनी चौड़ी नदी पार नहीं कर सकता।' ऊँट का मन सीधा था, तुरत जवाब दिया, 'तो क्या हुआ मैं तुम्हें पीठ पर बिठाकर बड़े मजे से पार कर सकता हूँ।' सो दो-तीन दिन तक मित्रों ने खूब मौज मनाई। चुपचाप चरकर आ जाते। एक रात जब दोनों मित्र खेत में चर रहे थे। सियार का पेट तुरत भर गया। ऊँट का पेट भरने में काफी देर थी। सियार ने कहा, 'भाई दो-तीन दिन तो मैं मन मारकर चुप रह गया। 'हूँकनी' किये बिना यह हरा घास हजम ही नहीं होता। मुझे तो हूँकना ही पड़ेगा।' तब ऊँट ने कहा, 'मुझे भर-पेट खाने तो दे। कुछ देर ठहर। तेरे हूँकने से खेत का मालिक दौड़ा आएगा। लट्ठ से पीट-पीटकर अधमरा कर देगा।' सियार ने कहा, 'बिना हूँके तो मेरा पेट फट जाएगा। चुप रहना मेरे वश की बात नहीं है।' इतना कहकर वह जोर-जोर से हूँकने लगा। खेत का मालिक इसी ताक में था। दो दिन चौकसी नहीं रखी तो काफी नुकसान हो गया। सियार तो जोर-जोर से चिल्लाकर भाग खड़ा हुआ। ऊँट मजे से मोठ की हरी-भरी फसल चर रहा था कि पीठ पर लट्ठ की करारी चोट पड़ी। गरदन उठाकर भागने की चेष्टा की तो एक लट्ठ मुँह पर। खेत का मालिक और बेटा दोनों तैयार होकर आये थे। ऊँट को अधमरा करके छोड़ा। बेचारा ऊँट लट्ठ की चोटें सहता हुआ जस-तस खेत के बाहर आया। कुछ देर बाद ही सियार पर उसकी नजर पड़ी तो ऊँट ने पिटने की बात ही नहीं की। मित्र को देखकर उलटी खुशी जताई। सियार हमेशा की तरह उसकी पीठ पर बैठ गया। बड़ा आराम मिला—भरे पेट की वजह से चलना भारी पड़ रहा था। ऊँट का सारा शरीर टीस रहा था। सियार के बैठने से तकलीफ और ज्यादा हुई। नदी के बीच में आते ही ऊँट नीचे बैठ गया। सियार आधे से ज्यादा पानी में डूब गया। उसने घबरा कर कहा, 'अरे, यह क्या कर रहे हो। बीच नदी में इस तरह बैठ क्यों गये। पाँव फिसल गया क्या?' ऊँट ने कहा, 'पाँव बिलकुल नहीं फिसला। जानकर ही बैठा हूँ। अब मैं चार-पाँच बार लुटूँगा। बिना लुटे हरे मोठ हजम नहीं होंगे। तुम्हें हूँकने की आदत है तो मुझे लुटने की। बिना लुटे मेरा पेट फट जाएगा।' इतना कहकर वह बाईं करवट लेटा। उसके लेटते ही सियार नदी के तेज प्रवाह में बहने लगा। ऊँट खड़ा होकर इधर-उधर देखने लगा। डग-डग हँसते बोला, 'अब आजा। तुझ जैसा नीच मैं नहीं हो सकता।' सियार तो बहते-बहते काफी दूर चला गया था और न उस में सुनने की शक्ति ही शेष रह गई थी।

—दुष्ट के साथ दुष्टता का ही बरताव करना चाहिए। उसके साथ उदारता बरतना उचित नहीं।

—मित्र के साथ धोखा करने का हाथोंहाथ बदला मिल जाता है।

थळ-थेट, बेटी पेट, आजै जंवाई प्रांमणौ। ६१६२

थल ठेट, बेटी पेट, आना जमाई पाहुन बनकर।

—सुदूर मरुस्थल, बेटी अभी कोख में ही और जामाता के पाहुन बनकर आने की आशा है।

दे.क.सं.३३६६

पाठा : थळ थेट, बेटी पेट, घर जंवाई वैगौ आव।

थळ रा थूंब होवतां वार नीं लागै। ६१६३

रेगिस्तान में टीले बनते देर नहीं लगती।

—प्रकृति में परिवर्तन अपरिहार्य है। मैदान की जगह टीले, टीले की जगह मैदान, पहाड़ की जगह समंदर और समंदर की जगह पहाड़ बनते देर नहीं लगती।

—परिवर्तन का नियम अटल है, इस में व्यतिक्रम नहीं होता।

थहळी रौ भूत सात पीढ़ियां री जांणै। ६१६४

देहरी का भूत सात पीढ़ियों की बात जाने।

—अति निकट रहने वाले सात पुश्त का भेद जानते हैं। अतएव उनके साथ बैर-भाव न रख कर मित्रता-पूर्ण रवैया ही रखना चाहिए। अन्यथा मौका मिलने पर वे क्षति भी पहुँचा सकते हैं।

—परिजन परिवार की सभी भली-बुरी बातों से परिचित रहते हैं।

थां आगै घोड़ी हुआ तौ ई गरज कांई सरी नीं। ६१६५

तुम्हारे आगे घोड़ी बने तब भी कुछ बात बनी नहीं।

—बहुत निहोरे व खुशामद करने पर भी कोई सक्षम व्यक्ति काम न आये तब।

—जो तथाकथित श्रीमंत किसी से कुछ भी सहयोग न करें तब।

थांकी कढ़ी तौ म्हांकी ई कढ़ी। ६१६६

तुम्हारी कढ़ी तो हमारी भी कढ़ी।

संदर्भ-कथा : किसी जगह बारात का खाना हो रहा था। राजपूतों की बारात थी। सभी अपने पास तलवारें लेकर ही बैठे थे। सभी बाराती शराब व अफीम के नशे में चूर थे। सब्जियों में एक सब्जी पकौड़ों की कढ़ी बनी थी। परोसने वाले ने एक वृद्ध अफीमची के पास आकर दो-बार पूछा 'कढ़ी-कढ़ी।' अफीमची चौंका। तुरत म्यान से तलवार निकाल कर बोला, 'तुम्हारी कढ़ी तो हमारी भी कढ़ी।' मतलब कि तुम तलवारें निकाल रहे हो तो हम चुपचाप देखते थोड़े ही रहेंगे। हम भी तलवार निकालकर सामना करने को तैयार हैं। हमें कायर मत समझना—थांकी कढ़ी तौ म्हांकी कढ़ी।

—गलत-फहमी के कारण बेबात झगड़ा हो जाय तब।

थां गत सो म्हां गत। ६१६७

तुम्हारी गति सो मेरी गति।

—कोई आफत का मारा किसी के पास सहयोग के लिए जाय और सामने वाला तत्काल उसकी मदद को तैयार हो जाय। उसे आश्वस्त करते कहे—जरूर मदद करूँगा। जैसे मुझ पर ही यह आफत आई हो। अब तुम्हारी गति सो मेरी गति।

—दो अभिन्न मित्रों का पारस्परिक कथन कि आफत-विपदा की वेला पीछे नहीं हटेंगे—जो तुम पर बीती, समझलो कि मुझ पर ही बीती।

थांन जिसी स्यांन होवै। ६१६८

थान जैसी ही शान।

—जैसा देवालय, धर्म-स्थल या जैसा मंदिर वैसी ही उसकी प्रतिष्ठा।

—गुण या प्रतिभा के अनुसार ही सम्मान।

थांरा जाया ई कदै पगां हालसी ? ६१६९

तुम्हारे जाये ही कभी पाँवों चलेंगे ?

जाया = संतान।

—तुम्हारे वादे भी कभी पूरे होंगे ?

—जो व्यक्ति आश्वासन-पर-आश्वासन देता रहे और काम कभी न हो, तब उससे यह पूछा जाय कि तुम्हारी संतान कभी पाँवों पर चल सकेगी ?

—हवाई बातें करने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

थांरा पगरखा म्हांसू न ऊमड़ै । ६१७०

तुम्हारी जूतियाँ मुझ से न उठ पाएँगी ।

—कोई सामान्य व्यक्ति बड़े व्यक्ति से रिश्ता होने पर विनम्रता-पूर्वक यह कहता है कि मेरी क्षमता नहीं है जो आप जैसे बड़े आदमी के यहाँ रिश्ता करने की बात सोच सकूँ ।

—कोई सामान्य व्यक्ति बड़े आदमी का भार न उठा सके तब ।

पाठा : आपरा पागड़ा म्हारा सूं नीं ऊठै ।

थांरा सूं कीं कारी लागै तौ लगावौ नीं । ६१७१

तुम कुछ उपाय कर सकते हो तो करो ।

—कोई बात बिगड़ने पर किसी समझदार या सक्षम व्यक्ति से ही यह आशा की जा सकती है कि वह कुछ निस्तार कर सके तो करे ।

—सामर्थ्यवान ही बुरे समय में किसी के काम आ सकता है ।

थांरी उडायोड़ी चिड़ियां तौ रूंखां ई नीं बैठै । ६१७२

तुम्हारी उड़ाई चिड़ियाँ तो पेड़ों पर ही न बैठें ।

—जिस गप्पी या महा झूठे व्यक्ति की कोई बात सपने में भी सच न हो ।

—हरदम झूठे आश्वासनों से बहलाने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष ।

थांरी दाढ़ी हालै, थांरै घर में न रहूं ।–व.६० ६१७३

तुम्हारी दाढ़ी हिलती है, तुम्हारे घर नहीं रहूँगी ।

संदर्भ-कथा : एक दढ़ियल पति की पत्नी किसी भी सूरत उसके घर रहना नहीं चाहती थी । बात-बेबात हरदम यह धमकी देती रहती कि वह घर छोड़कर चली जाएगी । एक दिन पति ने पूछा, 'तू बार-बार जाने की धमकी दे रही है, पर यह तो बता कि तू जाना क्यों चाह रही है ? क्या तकलीफ है तुझे ?' पत्नी ने कहा, 'तकलीफ तो ऐसी कुछ नहीं, पर तुम्हारी दाढ़ी हिलती है, मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकती ।'

—जो व्यक्ति किसी-न-किसी बहाने असहयोग करना चाहे तब ।

थांरी धाजी रै, साथळ मांय सूं गोडौ निकळग्यौ ! ६१७४

तुम्हारी माजी की जंघा से घुटना निकला !

—किसी को चौंकाने के लिए खामखाह की मजाक करना— मसलन साइकिल वाले को कोई कहे— रुको, रुको, तुम्हारी साइकिल का पहिया घूम रहा है। इसी तरह घुटना तो जंघा का ही एक हिस्सा है, पर सुनकर एक बार तो चौंकना ही पड़ता है।

—जिस प्रत्यक्ष सच्चाई को सुनकर भी विश्वास न हो।

थांरै घर रा ऊंदरा-ऊंदरी ई राजी व्है तौ हुंकारौ दीजौ। ६१७५

तुम्हारे घर के चूहे-चुहियाँ भी राजी हों तो हामी भरना।

—घर के छोटे-बड़े, बूढ़े, बच्चे, माँ-दादी, दास-दासी सभी खुश हों तो यह काम करना अन्यथा नहीं। कोई व्यक्ति किसी के घर रिश्ता करना चाहे, तब यह उक्ति कही जाती है।

—जो व्यक्ति परिवार के सभी सदस्यों की राय से काम करता हो।

दे.क.सं. ३९७०

थांरै घरां खाजौ मती, म्हारै घरां आजौ मती, सिगरी निंवतौ है। ६१७६

तुम्हारे घर खाना नहीं, मेरे घर आना नहीं, सपरिवार निमंत्रण है।

—जो व्यक्ति ऊपरी मन से मनुहार करे उसके प्रति कटाक्ष।

—मजाक के लिए भी इस उक्ति का प्रयोग होता है।

थां सूं बोलै जिणरौ गरु ई झूठौ। ६१७७

तुम से बोले, उसका गुरु ही झूठा।

—सगे-संबंधियों या घनिष्ठ मित्रों में काफी मन-मुटाव हो जाय और कोई अन्य शुभचिंतक परस्पर समझौता कराना चाहे तब यह उक्ति कही जाती है कि हम तो परस्पर एक दूसरे का मुँह भी देखना नहीं चाहते, बात भी कर लें तो उसका गुरु झूठा।

—जब आपसी संबंध दुश्मनी की सीमा तक बढ़ जाएँ।

थाकल घोड़ा नै घास रा ई जांदा। ६१७८

मरियल घोड़े को घास की भी कमी।

—जिस व्यक्ति का कोई उपयोग न हो तो उसकी सभी उपेक्षा करते हैं।

—कार्य करने की क्षमता हो तभी उसकी पूछ होती है।

थाकल बेटा रै कणकती रौ ई भार। ६१७९

मरियल बच्चे को करधनी का भी भार।

—जो बच्चा रोग के कारण क्षीण हो गया हो उसे मामूली करधनी का भी बोझ लगता है।

—अस्वस्थ व्यक्ति किंचित् वजन भी नहीं उठा सकता। इसीलिए स्वस्थ शरीर की महिमा है।

थाकसी तौ वैवण वाळा थाकसी, मारग भवै ई नीं थाकै। ६१८०

थकेंगे तो चलने वाले ही थकेंगे, मार्ग कभी नहीं थकेगा।

—प्राणी चले जाते हैं पर संसार कायम रहता है।

—दूसरा छिपा अर्थ यह है कि वेश्यागामी थक जाते हैं, वेश्या नहीं थकती।

थाका मिनख रौ करम ई थाकल। ६१८१

थके मनुष्य का भाग्य भी थका हुआ।

—गरीब का भाग्य भी दुर्बल होता है, साथ नहीं देता।

—अभागे को किसी काम में सफलता नहीं मिलती।

थाका रौ थांभ। ६१८२

गरीब का स्तंभ।

—जो व्यक्ति गरीबों की सहायता करे।

—गरीबों के उत्थान-हेतु जो व्यक्ति थंभे की नाईं अडिग रहे।

थाको हाळी दोवे-दोवे कांटो काढ़े।– भी.४२४ ६१८३

थका हुआ हाली दूब से काँटा निकाले।

—नौकर या मजदूर विश्राम के लिए बहाने खोजते हैं, पर मालिक का डर भी लगा रहता है तब वे यों ही काम करने का दिखावा करते हैं—मसलन दूब से काँटा निकालना, जो दूब के द्वारा सपने में भी संभव नहीं है।

थाकौ भांबी छांणा ई हंगै। ६१८४

थका भाँबी कंडे हँगता है।

—गरीब व्यक्ति को सताने पर कुछ भी हाथ नहीं लगता।

—निरीह या असहाय आदमी को परेशान करना व्यर्थ है।

थाकौ देखनै अड़णौ नीं, मातौ देखनै डरणौ नीं। ६१८५

मरियल देखकर भिड़ना नहीं, मोटा देखकर डरना नहीं।

—ऊपर से दिखने वाली वास्तविकता से कभी-कभार धोखा भी हो जाता है, मसलन मरियल में अंदरूनी ताकत हो सकती है और मोटा मनुष्य भीतर से खोखला हो सकता है।

—ऊपरी लक्षणों से सच्चाई का पता नहीं चलता।

थाक्योड़ा रै तौ रूंगता ई बधै। ६१८६

थके हुए के तो बाल ही बढ़ते हैं।

—मरियल मवेशियों के बाल अधिक बढ़ते हैं। साधनहीन व्यक्ति के और किसी चीज की वृद्धि नहीं होती, सिवाय बालों के और जिनका भी कोई महत्त्व या मूल्य नहीं।

—गरीब व्यक्ति के पास बालों की ही बहुलता होती है।

थाक्यौ ऊंट गांव सांम्ही भाळै। ६१८७

थका ऊँट गाँव की तरफ देखता है।

—थका हुआ व्यक्ति किसी-न-किसी बहाने विश्राम की चाह करता है।

—कोई भी व्यक्ति ऊँट की नाईं चाहे जितना परिश्रमी हो, उसे भी आराम की जरूरत है।

थाप उगरांमी अर रोवण रौ मिस लाधौ। ६१८८

हाथ उठाया और रोने का बहाना मिला।

—बहाने-बाज व्यक्ति के लिए उचित कारण की दरकार नहीं, वह बेबात ही बहाने ढूँढ़ लेता है।

—बहाने बनाना ही जिस व्यक्ति का मुख्य काम हो वह किसी भी मौके पर बहाना खोज लेता है।

थाप खाय गाल राता राखणा। ६१८९

थप्पड़ खाकर मुँह लाल रखना।

—माल-मलीदा खाने से आदमी पुष्ट होता है। चेहरा लाल दिखता है। पर अच्छे भोजन के अभाव में मुँह लाल रखने का दिखावा करना है तो अपने ही गालों पर अपने ही हाथ से थप्पड़ खाने को मजबूर होना पड़ता है।

—जैसे-तैसे इज्जत कायम रखने वाले व्यक्ति के लिए।

पाठा : थाप खाय मुंहडौ रातौ राखां।

थाप नै मूंडौ कांई आंतरै ! ६१९०

थप्पड़ को मुँह क्या दूर !

दे.क.सं.३५२८

थापीजै जैड़ा ई बाळीजै। ६१९१

थपीजे त्यों ही जलाते हैं।

—गाय, भैंस और बैल के गोबर को पाथकर जो ईंधन बनाया जाता है, उसे थेपड़ी कहते हैं। पूरी सूखने पर वह चूल्हे में जलाने योग्य होती है। थेपड़ी सूखी और चूल्हे में। संचय करने की स्थिति न हो तब यह उक्ति काम में आती है कि प्रतिदिन जितना पाथते हैं, वही ईंधन के काम आ जाता है।

—रोज मेहनत करने से ही चूल्हा जले, वैसी स्थिति वालों के लिए।

—लाये जैसा ही खाये।

पाठा : थापै जैड़ा ई बाळणा पड़ै।

थाय्यू ज्याते थाय्यू थाय्योज जाये।– भी.४२५ ६१९२

बिगड़ा सो तो बिगड़ा ही, आगे और बिगड़ता जा रहा है।

— जो काम बिगड़ा उसका पछतावा नहीं करके आगे नहीं बिगड़े वैसा यत्न करना चाहिए।

—बिगड़े हुए काम को तो सुधारा नहीं जा सकता, पर आगे न बिगड़े वैसा प्रयत्न तो किया ही जा सकता है।

थारा आगला भो ना लेख, मुं हूं करूं ?– भी.४२६ ६१९३

तेरे पूर्व जन्म का लेख, मैं क्या करूँ ?

—मनुष्य का सुख-दुख पूर्व-जन्मों के कर्म का ही परिणाम है, उसे कोई टाल नहीं सकता।

—भाग्यवाद के सिद्धांत में विश्वास करने वालों के लिए।

थारा ई गमाया घर गिया अे कांदा खांणी नार ! ६१९४

तूने ही घर को डूबाया, ऐ प्याज खाने वाली नारी !

—पहिले माल-मलीदे उड़ाकर घर का विनाश करके जो बाद में प्याज खाकर निर्वाह करे वैसे पति या पत्नी पर कटाक्ष।

—मौज-मौज में घर फूँककर बाद में कष्ट उठाये, उसके लिए।

थारा कांटा थारै ई भागसी। ६१९५

तुम्हारे काँटे तुम्हें ही चुभेंगे।

—जो व्यक्ति किसी की सीख से बुरे या गलत काम करने बंद न करे, उसके लिए कि दुष्परिणामों को उसे ही भोगना पड़ेगा और कोई नहीं भोगेगा।

—जो बुरे काम करेगा, बुरे फल भोगेगा।

थारा घर रौ छाती-कूटौ म्हारा घर में क्यूं ? ६१९६

तेरे घर की कलह मेरे घर में क्यों ?

—दूसरों के सुख-दुख से कोई सरोकार न रखने वाले व्यक्ति के लिए, जिसकी चिंता अपने घर-आँगन के बाहर न हो।

—अपना घर, अपनी चिंता।

थारा छोटक्या नै न्यूंतौ के मन करै जिणनै बुलालै सै सवा-सेरिया है। ६१९७

तेरे छोटू को न्योता है कि चाहे जिसे बुला, सब सवा सेर खाने वाले हैं।

—जिस परिवार के सदस्य एक-से-एक बढ़कर पेटू हों।

—जिस विभाग के छोटे-बड़े सभी कर्मचारी एक-से-एक बढ़कर रिश्वतखोर हों।

थारा धाड़ा में धूड़। ६१९८

तेरी डकैती में धूल।

संदर्भ-कथा : एक डकैत ने बामन के घर डाका डाला। बामन गरीब था। कुछ भी माल हाथ नहीं लगा। बामन खाट पर पड़ा-पड़ा सब देख रहा था। वह जाने लगा तो बामन ने उलटे

डाकू से ही मदद माँगी कि वह कुछ देकर जाए, सुबह का भी अनाज नहीं है। डाकू के पास भी कुछ नहीं था। उसने भी अपनी मजबूरी बताई। तब बामन ने कहा—तेरी डकैती में भी धूल है।

—भारी खतरा उठाकर भी मन-वांछित लाभ न हो तब।

थारा म्हारा दो गेला। ६१९९

तेरे मेरे दो पंथ।

—हर व्यक्ति को अपना अलग मत, अपने अलग विचार रखने का अधिकार है। किसे भी उस में दखल देने का हक नहीं।

—सबको अपनी-अपनी राह चलने की स्वतंत्रता है।

थारा सींग समावै जठै ई जा। ६२००

तेरे सींग समाये वहीं जा।

—किसी भी परिवार में कोई उद्दंड व्यक्ति अपनी आदतों से बाज न आये तब इस उक्ति का प्रयोग होता है कि हम तेरी बदफैली अब बर्दाश्त नहीं कर सकते, तेरे सींग समाये वहीं जा।

—जिस व्यक्ति का खर्च इतना ज्यादा हो कि परिवार वाले परेशान होकर उसे यह उक्ति सुनाते हैं।

थारा सूं कैड़ौ लेखौ ? ६२०१

तुझ से कैसा लेखा ?

—दो अभिन्न मित्रों या सगे-संबंधियों में जहाँ हिसाब-किताब कुछ माने नहीं रखता कि किस पर कितना खर्च हुआ। वे एक दूसरे से अलग थोड़े ही हैं— फिर कैसा लेखा-जोखा !

—दूसरा छिपा अर्थ यह भी है कि कोई व्यापारी या अन्य व्यक्ति किसी से पूरा लाभ उठाकर भी यह अपनापन जताये उससे क्या लेखा-जोखा, घर की बात है।

थारा हाटा, कुरी ना खाटा।–भी.२८३ ६२०२

तुम लोग कुरी की कढ़ी हो।

कुरी = निम्न श्रेणी का एक अनाज विशेष।

—निकम्मे व्यक्ति के लिए जो किसी काम-काज का न हो।

—ओछी व हीन वृत्ति के मनुष्य की खातिर।

थारी आंख में ताकू घूं, कायर मत ना हुवै। ६२०३

तेरी आँख में तकुआ डालूँ, कायरता मत दिखाना।

—जो व्यक्ति अपने अवगुणों को अनदेखा करके दूसरों की परीक्षा करना चाहे।

—जो व्यक्ति किसी को खामखाह नुकसान पहुँचाये और साथ-ही-साथ उस नुकसान को झेलने के लिए प्रोत्साहित भी करता जाये।

थारी आंख्यां आडा काच फिर जावैला, म्हारी चवू तौ घड़ दै। ६२०४

तेरी आँखों के आगे काच फिर जाएगा, मेरी चऊ तो घड़ दे।

चवू = हल में फाल (हलवाणी) के नीचे लगाया जाने वाला काठ का नुकीला व सम्मुख से चपटा उपकरण। केर की लकड़ी से बनता है।

संदर्भ-कथा : एक किसान और एक खाती में जबरदस्त मित्रता थी। एक दाँत रोटी टूटती थी। चौमासे का मौसम था। खेतों में जुताई हो रही थी। दुर्योग की बात कि खाती को काला नाग डस गया। किसान रोटी लेकर बैठा ही था कि उसे किसी ने बुरी खबर सुनाई। किसान का कौर हाथ-का-हाथ में ही रह गया। घरवालों ने रोटी खाने के लिए बहुत कहा पर उसने तो जैसे सुना ही नहीं। केर की लकड़ी का एक टुकड़ा हाथ में लेकर खाती के घर की ओर दौड़ा। घर पहुँचा तो देखा कि मित्र बैलगाड़ी पर बैठकर ओझा के थान जा रहा है, जो दो कोस दूर था। मित्र को आया देखकर खाती बड़ा खुश हुआ, पर उसकी हालत बिगड़ रही थी। पलकें झपक रही थीं, खुल रही थीं। मामूली मूर्छा आने लगी थी। किसान ने मित्र की आँखों में झाँककर, लकड़ी का टुकड़ा आगे बढ़ाते कहा, 'खेत अधूरा छोड़कर आया हूँ। तेरी आँखों के सामने काच फिर जाएँगे, पहिले मेरी चऊ तो घड़ दे। कल तक खेत सूख जाएगा।'

—स्वार्थ की पराकाष्ठा। घोर स्वार्थी के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।

—जो व्यक्ति स्वार्थ के आगे इतना अंधा हो कि उसे दूसरों का दुख सपने में भी नजर न आये!

थारी आंख्यां चांनणौ, म्हारी आंख्यां अंधारौ। ६२०५

तेरी आँखों उजाला है, मेरी आँखों अँधेरा है।

—अँधेरे में कोई व्यक्ति यात्रा करते समय साँप से होंठों-ही-होंठों में गुनगुनाते हुए यह अरदास करता है कि मेरी आँखों के सामने तो अँधेरा है, फकत तेरी आँखों के सामने उजाला है, मुझे डसना मत। बार-बार इसे रटता है।

—इसी प्रकार चुड़ैल व डायन से भी रात के अँधेरे में यही अरदास की जाती है।

—समर्थ व सक्षम व्यक्ति से भी कोई गरजमंद या आफत में फँसा व्यक्ति हाथ जोड़कर कहता है कि वह तो सर्वथा असमर्थ है फकत उसीकी आँखों में प्रकाश है, जो करना है उन्हें ही करना है।

पाठा : थारी आंख्यां चांनणौ।

थारी आगते ऊमर नी पाके।– भी.४२७ ६२०६

तेरी शीघ्रता से उम्र नहीं पकती।

—कोई किशोर कितनी ही उतावली या आकांक्षा करे वह प्रौढ़ नहीं हो सकता।

—शीघ्रता करने से कोई काम जल्दी पूरा नहीं होता, वह तो अपनी अपेक्षित अवधि में ही संपन्न होता है।

थारी ई जूती नै थारौ ई माथौ। ६२०७

तेरी ही जूती और तेरा ही माथा।

—कोई व्यक्ति औंधे काम करे तब उसे आगाह किया जाता है कि या तो औंधे काम बंद कर दे, वरना तेरी जूती और तेरा ही सिर।

—जो नालायक व्यक्ति किसी के साथ ज्यादती करे और सजा उसी को दे।

—कोई बोहरा किसान की जूती से उसीकी पिटाई करता हो, दुहरा लाभ कमाता है।

दे.क.सं.५१२८

पाठा : थारी मोगरी नै थारौ ई माथौ।

थारी कांईं तौ जवा, मोथिया जित्ती जड़ है। ६२०८

तेरी औकात ही क्या, मोथिया जितनी जड़ है।

मोथियौ = मोथिया = एक प्रकार का बारीक घास जिसकी जड़ गहरी नहीं होती, खींचते ही उखड़ जाती है।

—असहाय निर्बल व्यक्ति के लिए।

पाठा : म्हारी जड़ तौ मोथिया जितरीक है।

थारी कांण नीं, थारै धणी री कांण है। ६२०९

तेरा लिहाज नहीं, तेरे मालिक का लिहाज है।

दे.क.सं.२४२८

थारी जीभ नै गुळ-घी। ६२१०

तेरी जीभ को गुड़-घी।

—कोई अन्य व्यक्ति किसी को अच्छी खबर दे, बधाई की बात सुनाये तो सुनकर खुशी का इजहार करते हुए वह व्यक्ति उसे कहता है—तेरी जीभ को गुड़-घी।

—अच्छी खबर सुनाने वाले के प्रति मंगल कामना।

दे.क.सं.५१९४

थारी जूती नै म्हारौ माथौ। ६२११

तेरी जूती और मेरा सिर।

—किसी व्यक्ति के ऊपर दोष मँढ़ने पर वह सफाई देते हुए कहता है कि यदि इस में वह कसूरवार साबित हो तो उसका सिर और सामने वाले का जूता।

—निर्दोष साबित होने के लिए सफ़ाई के रूप में इस उक्ति का प्रयोग होता है।

थारी दन्या मांये रेई ने धूळ जमारौ।–भी.४२९ ६२१२

तेरी दुनिया में रहकर जिंदगी धूल समान है।

—जो ईश्वर गरीबों का सहायक न हो, उससे यह शिकायत की जाती है कि उसने संसार में पूरा जीवन व्यर्थ गँवाया। कुछ मौज नहीं की। अभावों-ही-अभावों में जिया।

—सृष्टिकर्ता के प्रति उलाहना कि उसने गरीबों को संसार में भेज तो दिया, पर हर किसी का मोहताज बनाकर।

—किसी अकर्मण्य या लंपट व्यक्ति के निरर्थक जीवन को लक्ष्य करके उलाहना देना।

थारी बात गी, म्हारी रात गी। ६२१३

तेरी बात गई, मेरी रात गई।

—बिरादरी के पंच किसी के हक में फैसला न कर सकें तब यह कहकर मुक्त हो जाते हैं कि उसकी बात गई और उनकी रात गई। सारी रात पंचायती करके भी उसकी गलत बात के लिए वे पक्षधर नहीं हो सके।

थारी वायोड़ी तेरहवें पिंयाळ जाय। ६२१४

तेरा वार तेरहवें पाताल जाय।

—जिस समर्थ व्यक्ति को, जहाँ-कहीं भी जाये, उसे सफलता मिले तब उसकी सराहना में यह उक्ति कही जाती है कि तेरी क्या बात है, सफलता तो तेरे पीछे चलती है।

—जो सक्षम व्यक्ति सर्वत्र कामयाब रहे। जिसका कोई विरोध न करे।

—बहादुर व्यक्ति की अतिरंजित सराहना।

थारी-म्हारी तौ बोली में ई बणै कोनीं। ६२१५

तेरी मेरी बोली में ही नहीं बनती।

—जिन व्यक्तियों के बीच गहरा मतभेद हो, आपस में बैठकर जहाँ बात करना भी मुश्किल हो, वे भला साथ मिल कर क्या काम कर सकते हैं?

—जिन व्यक्तियों के मतभेद किसी भी सूरत में दूर न हों।

थारी म्हारी बोली में इतरौ इज फरक, ६२१६
थें कैवौ फरेस्ता नै म्हे कैवां जरख।

तेरी मेरी बोली में इतना ही फरक, तुम कहो फरिश्ते और हम कहें जरख।

जरख = लक्कड़बग्घा।

संदर्भ-कथा : एक मुसलमान और एक चौधरी में काफी मेल-मुलाकात थी। अकसर उन में दाह-संस्कार के विषय पर चर्चा होती रहती थी। दोनों ही बढ़-बढ़कर कहते कि उनकी दाह क्रिया बेहतर है। मुसलमान कहता कि तुम तो लाश को जला देते हो। कुछ दिनों के बाद राख भी नहीं बचती। हम लाश को गाड़ते हैं। फरिश्ते आकर उन्हें जन्नत में ले जाते हैं। एक दिन चौधरी ने देखा कि कब्रिस्तान में एक जरख लाश खोदकर ले जा रहा है। उसने दूसरे दिन साथी को कहा कि एक जरख कब्र से लाश खोदकर ले जा रहा था। मुसलमान ने प्रतिवाद किया—नहीं नहीं, वह जरख नहीं फरिश्ता होगा। तुम समझते नहीं हो। दोनों ही अपनी-अपनी जिद पर अड़े रहे। आखिर चौधरी ने मुस्कराते हुए कहा, 'बस-बस, अब जिदने की जरूरत

नहीं। तुम्हारी और मेरी बोली में ही फर्क है, हम जिन्हें जरख कहते हैं, तुम उन्हें फरिश्ते कहते हो।'

—जिस बात में तथ्यों का मतभेद न होकर केवल भाषा का अंतर हो।

—किसी गहरे मतभेद को परिहास में टालने का प्रयास करना।

थारी-म्हारी में कीं धर्‌यौ नीं। ६२१७

तेरी-मेरी में कुछ नहीं धरा।

—किसी की निंदा करने में कोई सार नहीं। समाज में कौन ऐसा व्यक्ति है जो दोष-रहित हो और जिसकी निंदा नहीं की जा सके।

—पर-निंदकों को उलाहना के रूप में यह उक्ति कही जाती है।

पाठा : थारी-म्हारी में कीं सार नीं।

थारी सौ रांमदुवाई नै म्हारी अेक 'ऊं हूं'। ६२१८

तेरी सौ राम-दुहाई और मेरी एक 'ऊँ-हूँ'।

—जो व्यक्ति कितना भी समझाने पर अपनी जिद न छोड़े।

—लाख समझाने पर भी जो व्यक्ति किसी की बात न माने। और मरने पर भी अपनी गलती मंजूर न करे।

थारे हाथे कीदूं, हाथे आय्यूं।—भी.४।८ ६२१९

अपने हाथ से किया, वही हाथ लगा।

—दोषी व्यक्ति को समझाते हुए कि अब पछताने में कोई तुक नहीं, बुरे काम का तो बुरा ही नतीजा मिलता है।

—जैसा किया, वैसा भरपाया।

थारै जिसा छप्पन बीसी देख्या। ६२२०

तेरे जैसे छप्पन-बीसी देखे हैं।

छप्पन-बीसी = छप्पन से बीस गुना करने पर जो संख्या बने।

—किसी को कुछ नहीं समझने वाला दंभी।

—जो व्यक्ति अपनी हेकड़ी में किसी की बात न माने, चाहे उसके भले की ही क्यों न हो।

थारै टरड़ तौ म्हारै ई भरड़। ६२२१

तेरे हेकड़ी तो मेरे ही अक्खड़।

—दो मिथ्याभिमानी परस्पर एक दूसरे से बढ़कर अपने को मानें।

—व्यर्थ की हेकड़ी दिखाने वालों पर कटाक्ष।

थारै नांणौ घणौ तौ म्हारै कांम घणौ। ६२२२

तेरे पास रोकड़ बहुत तो मेरे पास काम बहुत।

—कोई संपन्न व्यक्ति मजदूरों पर या नौकरों पर रुआब गाँठे तो कोई मुँहजोर नौकर साफ कह देता है कि तुम्हारे पास धन का जोर है तो मुझे अपने हाथों पर भरोसा है। जहाँ जाऊँगा कमा लूँगा।

—कोई किसी पर निर्भर नहीं रहता। सब अपनी-अपनी मेहनत और अपने-अपने भाग्य का खाते हैं।

थारै बारणै चढ़ूं तौ गाय-कुत्तौ खावूं। ६२२३

तेरे द्वार चढ़ूँ तो गाय-कुत्ता खाऊँ।

—गाय-कुत्ता खाने की कसम, सबसे बड़ी कसम मानी जाती है। किसी सगे-संबंधी द्वारा धोखा खाने पर या भारी क्षति उठाने पर आहत व्यक्ति अत्यधिक परेशान होकर कहता है—अब तेरे द्वार चढ़ूँ तो गाय-कुत्ता खाऊँ।

थारै मांमौजी रौ टूंटियौ हाथ है। ६२२४

तेरे मामाजी का टूँटिया हाथ है।

—इस कहावत का अर्थ करते समय बचपन की निश्छल स्मृति आँखों के सामने कौंध उठती है। जब कोई मित्र या संबंधी कुछ खा रहा हो तो हाथ टेढ़ा करके पीछे की ओर घुमाकर सामने वाला बाल साथी कहता कि तेरे मामा का टूँटिया हाथ बधाई माँगता है। तब खाने वाले मित्र को हथेली पर कुछ-न-कुछ रखना ही पड़ता था।

—सहज निर्मल मन से की हुई याचना नितांत आत्मीय होती है।

थारै मूंडै नै कैर रौ कांटौ। ६२२५

तेरे मुँह को केर का काँटा।

—जिस व्यक्ति के अपशब्द केर के काँटे की तरह चुभें तब उसे यह बद्दुआ दी जाती है कि उसकी जीभ पर केर के काँटे गड़ें।

—बुरे वचन कहने वाले की जीभ का बुरा हो।

पाठा : जीभ रै केर रौ कांटौ।

थारै मूत इज दीवौ बळै कांईं ? ६२२६

तेरे मूत से ही दीया जलता है क्या ?

—दीया तो तेल या घी से जलता है। दुनिया में कोई भी व्यक्ति ऐसा सक्षम नहीं, जिसके पेशाब से दीपक जलता हो। फिर भी कोई दंभी जरूरत से ज्यादा हेकड़ी बताये तब उसे यह उक्ति सुनानी लाजिमी हो जाती है कि ज्यादा अक्खड़ मत दिखाओ तुम्हारे पेशाब से दीये नहीं जलते।

पाठा : थारै मूत सूं किसा दीया बळै !

थारै म्हारै कांईं बेंचणौ ? ६२२७

तुझे मुझे क्या बाँटना है ?

—परस्पर कुछ बाँटना हो तो कम-बेशी होने पर झगड़ा भी स्वाभाविक है। पर जो व्यक्ति खामखाह कलह करे तब उसे चुप करने के लिए।

थारै-म्हारै बणै नीं, थारै टाळ सरै नीं। ६२२८

तेरे-मेरे बनती नहीं, तेरे बिना सरती नहीं।

—जब परस्पर सहयोग के बिना काम न चले तो मिल-जुलकर साथ रहने से दोनों तरफ लाभ है।

—एक साथ रहने वाले व्यक्तियों में झगड़ा होने पर हानि अवश्यंभावी है तो राड़ करना मूर्खता है।

—जब बच्चे आपस में झगड़ें तब उन्हें यह उक्ति कही जाती है।

थारै वाढ़ियौ खड़ ई कुण खावै ? ६२२९

तेरे हाथ से कटा घास भी कौन खाये ?

—जब जानवर ही किसी व्यक्ति के हाथ से कटा घास न खाएँ, तब उसके साथ किसी भी मनुष्य का निबाह असंभव है।

—महा दुष्ट व पर-पीड़क व्यक्ति के लिए।

थारौ ई चूंन अर थारौ ई पुन्न। ६२३०

तेरा ही चून और तेरा ही पुण्य।

दे.क.सं.२५७,४४३८

थारौ उतार, म्हारौ सिणगार। ६२३१

तेरा उतरा, मेरा सिंगार।

—अमीर व्यक्ति के उतरे हुए वस्त्र भी गरीब के लिए सिंगार की मानिंद हैं।

—संपन्न व्यक्ति द्वारा फेंकी हुई वस्तुओं से गरीब अपना काम चला लेते हैं।

मि.क.सं.३१९

थारौ घड़ौ फूटग्यौ, पण म्हारौ घर ढहग्यौ। ६२३२

तेरा घड़ा फूट गया, पर मेरा घर ढंह गया।

संदर्भ-कथा: शेखचिल्ली की कथाओं में से एक यह कथा भी है कि एक बूढ़े तेली ने तेल से भरा एक घड़ा बाजार में पहुँचाने के लिए शेखचिल्ली को एक टके में राजी कर लिया। दोनों साथ-साथ चलने लगे। शेखचिल्ली तो खयाली पुलाव बनाने में माहिर था। घड़े का वजन सिर पर महसूस करते ही उसकी कल्पना उड़ान भरने लगी—टके से अंडा खरीदूँगा। अंडे से चूजा बनते क्या देर लगती है? मुरगी रोज एक अंडा देगी। दस बारह मुर्गे-मुर्गियाँ होते ही एक बकरी आसानी से मिल जाएगी। बकरी साल में दो बार ब्याती है। दस बकरे-बकरियाँ हुई नहीं और एक गाय तैयार। गाय का दूध देखकर कोई भी औरत ब्याह के लिए तैयार हो जाएगी। फिर तो निकाह के बाद बच्चे-ही-बच्चे। सब उससे डरेंगे। उसका कहना मानेंगे। बीबी गाय के घी में चुपड़ी चपातियाँ परोसेगी। बड़ा लड़का खाने की मनुहार करेगा तब कहूँगा—थोड़ा ठहर, अभी नहीं। यह कहते ही शेखचिल्ली ने जोर से सिर हिलाया तो घड़ा नीचे गिर पड़ा। पड़ते ही चूर-चूर। सारा तेल माटी में मिल गया। तेली उसे डाटने लगा तो शेखचिल्ली ने पलटकर जवाब दिया, 'तुम्हें अपने घड़े की पड़ी है। मेरा तो बना-बनाया घर बिगड़ गया, उसकी तुम्हें कुछ फिकर ही नहीं। तुम्हें ऐसा खुदगर्ज तो नहीं जाना था।'

—जो व्यक्ति अपने खयाली नुकसान के सामने किसी की वास्तविक हानि की ओर ध्यान ही न दे।

थारौ घोड़ौ टळै, म्हारौ बोल नीं टळै। ६२३३

तेरा घोड़ा टले, मेरा बोल न टले।

संदर्भ-कथा : एक रास्ते पर कोई घुड़सवार और गाड़ीवान आमने-सामने हो गये। गाड़ीवान ने कहा कि उसकी गाड़ी का एक तरफ टलना आसान नहीं है, आप अपना घोड़ा एक तरफ कर लें। घुड़सवार को अपनी अभिजात सवारी का गुमान था। उसने तनिक रुआब से कहा कि उसका घोड़ा तो इसी राह चलेगा। वह टलना जानता ही नहीं। तुम अपनी गाड़ी हटालो। तब गाड़ीवान ने भी तैश में आकर कहा—हटेगा तो आपका घोड़ा ही, मेरे बोल नहीं बदलेंगे। जो पहिले कह दिया सो कह दिया।

—व्यर्थ की हेकड़ी दिखाने वाले का प्रतिरोध करना असंगत नहीं।

—जो व्यक्ति अपने आभिजात्य दर्प में गरीब मानुस की न्याय-संगत सच्चाई के प्रति उपेक्षा का भाव रखे।

थारौ चंदरमा थनै नीं दीसै। ६२३४

तेरा चंद्रमा तुझे नहीं दिखता।

—कोई संपन्न व्यक्ति अपनी खुशहाली पर तनिक भी गुमान न करके नितांत सामान्य आदमी की तरह कहे कि बस दाल-रोटी मिल जाती है, उस में आप लोगों की मेहरबानी से कभी कोई कमी नहीं पड़ी। तब उसकी शालीनता को लक्ष्य करके लोग कहते हैं कि आपका चंद्रमा आपको नहीं दिखता, हमें दिखता है।

—धनाढ्य व्यक्ति की अतिशय विनम्रता की ओर इंगित करते हुए।

पाठा : थारौ चांनणौ थनै नीं दीसै।

थारौ छाज म्हनै दै अर थूं हाथां झाटक। ६२३५

तेरा सूप मुझे दे और तू अपने हाथों से झटक।

—अपने स्वार्थ में अंधे व्यक्ति को दूसरों की क्षति और असुविधा तनिक भी नजर न आये तब।

—अपने मद के गुमान में जो निरंकुश व्यक्ति दूसरों पर किये अत्याचार से रंचमात्र भी द्रवित न हो।

थारौ टकौ टकूलड़ी, म्हारौ टकौ टाड। ६२३६

तेरा टका टकूलड़ी, मेरा टका टाड।

टकूलड़ी = टके से भी तुच्छ। टाड = आभूषण विशेष।

—जो व्यक्ति अपनी वस्तु को मूल्यवान समझे और दूसरों की वस्तु को मूल्यहीन।

—अपनी चीज के प्रति सबको मोह होता है और वे दूसरों की चीज उपेक्षा के भाव से देखते हैं।

थारौ तेल गियौ, म्हारौ खेल गियौ। ६२३७

तेरा तेल गया, मेरा खेल गया।

—दीये में तेल है, तभी तक खेल चलता है।

—जब तक साँस है, तब तक ही लीला है।

थारौ थूक ई को उलांद्यौ नीं। ६२३८

तेरा थूक भी नहीं उलाँघा।

—अच्छे मित्रों या सगे-संबंधियों में मन मुटाव होने पर किसी भी पक्ष से यह उक्ति कही जाती है कि अब तक तुम्हारी वाजिब गैर-वाजिब किसी भी बात का उल्लंघन नहीं किया और आज मामूली बात पर खफा हो गये?

थारौ थूक बिकै। ६२३९

तेरा थूक बिकता है।

—जिस व्यक्ति की बात कोई नहीं टाले और उस पर तुरंत अमल करे।

—सफलतम वक्ता एवं अभिवक्ता के लिए जिसके मुँह से निकले हर बोल का महत्त्व हो।

थारौ दीठो देवाळो, मांये जाहों चेड़ा ने चेड़ा जाहों मांये।—भी.४३० ६२४०

तेरा दिवाला देख लिया, जैसा भीतर वैसा बाहर, जैसा बाहर वैसा भीतर।

—किसी व्यक्ति की आर्थिक स्थिति का पता घर से चलता है या बाहर के धंधे से। दोनों ठौर कुछ भी नजर न आए तो पोल खुल जाती है।

—फालतू की फोकियत मारने वाले व्यक्ति के लिए।

थारौ बोल गियौ, म्हारौ तोल गियौ। ६२४१

तेरा बोल गया, मेरा तौल गया।

—तूने अपने बोल की मर्यादा तोड़ दी तो मैंने अपने तौल की मर्यादा तोड़ दी।

—जब दोनों पक्ष में कुछ-न-कुछ खामी हो तब!

थारौ भालौ नै म्हारा मोर। ६२४२

तेरा भाला और मेरी पीठ।

—जब दोनों पक्षों में पूरी तन जाये तब कमजोर पक्ष वाला प्रबल को चुनौती देता है कि आ जाना अपना भाला लेकर, घाव खाने के लिए मेरी पीठ तैयार है।

—जब किसी भी सूरत में समझौता न हो।

थारौ राज गियौ, उणरौ ईमांन गियौ। ६२४३

तेरा राज गया, उसका ईमान गया।

—धोखे से राज्य लेने पर विजेता की प्रतिष्ठा तो नष्ट होती ही है। राज्य छिनने की हानि बड़ी है या प्रतिष्ठा खोने की?

—आर्थिक हानि की बजाय नैतिक हानि बड़ी होती है।

थारौ सो म्हारौ नै म्हारौ सो हें, हें। ६२४४

तेरा सो मेरा और मेरा सो हें, हें।

—जो व्यक्ति दूसरों की चीज पर अपना अधिकार समझे और अपनी तो अपनी है ही।

—अन्यायपूर्ण दृष्टिकोण के प्रति कटाक्ष।

पाठा: **थारी सो म्हारी नै म्हारी सो हीं हीं।**

थाल नीं फेरयां रोटी बळै। ६२४५

करवट नहीं बदलने पर रोटी जलती है।

—यत्नपूर्वक काम न करने से काम बिगड़ता है।

—हर काम की सफलता के लिए सतर्कता और कौशल अनिवार्य है।

थाळी चाटौ अर गांव लाटौ। ६२४६

थाली चाटो और गाँव लाटो।

—ठेठ बचपन में मेरी दादी इस युक्ति का बहुत प्रयोग करती थी। उनकी उस सीख से जूठन बचने का तो वास्ता ही नहीं था। थाली एक अँगुली से नहीं चाटी जाती, दूसरी अँगुलियों का सहयोग जरूरी है। उन दिनों काँसी की ही थालियाँ होती थीं। काँसी का तत्त्व शरीर के लिए लाभप्रद होता है। और वास्तव में अँगुलियों को चाटने से ऐसी परितृप्ति मिलती है जो गाँव को लाटने के आनंद से कम नहीं होती। आज भी जब थाली या तासली चाटता हूँ, दादी की वह उक्ति याद आ जाती है।

—छोटे से काम में भी आदमी पूरा मन लगाये तो बहुत तुष्टि मिलती है।

थाळी फूट्यां ठीकरौ हाथ में आवै। ६२४७

थाली फूटने पर ठीकरा हाथ में आता है।

ठीकरौ = बरतन का टूटा टुकड़ा।

—एकता टूटने पर घर टुकड़े-टुकड़े हो जाता है।

—हाथ से बिगड़े काम की बदनामी ही मिलती है।

—घर फूटने पर बिखराव अवश्यंभावी है।

थाळी फेंक्योड़ी हेटी नीं पड़ै। ६२४८

थाली उछाली हुई नीचे नहीं गिरे।

—भीड़ की गणना कब हो और कब उसका पता चले, पर भीड़ पर थाली फेंकने से वह नीचे नहीं गिरे तो सहज ही उसकी विशालता का अनुमान हो जाता है। लोकानुभव की श्रेष्ठता का परिचय इस उक्ति से मिलता है।

थाळी मांय भमरो रमाड़े जेम रमाडूंला।– भी.४३१ ६२४९

थाली में लट्टू के उनमान नचाऊँगा।

—किसी व्यक्ति को कोई खास काम बताने पर वह टालमटोल करे तब उसे परिणाम का भय दिखाने के लिए यह उक्ति प्रयुक्त होती है।

थाळी हंदी झणकार, भलांई फूटै नंह फूटै। ६२५०

थाली गिरने की झनझनाहट, चाहे फूटे-न-फूटे।

—थाली गिरने से उसकी झंकार तो अवश्यंभावी है, पर फूटना जरूरी नहीं।

—किसी काम की बदनामी ही बुरी है, चाहे उसकी असलियत का पता लगे-न-लगे।

थावर रा थावर ई किस्या गांव बळै है? ६२५१

हर थावर को कौन से गाँव जलते हैं?

—किसी एक शनिवार के कुप्रभाव से गाँव में आग लग गई तो अजाने ही यह दहशत बैठ जाती है कि हर शनिवार को आग लगेगी।

—आशंका मात्र से अनिष्ट नहीं होता।

थावर रौ पगफेरौ इज खोटौ। ६२५२

थावर का पदार्पण ही खोटा।

—शनिश्चर की दशा का आरंभ ही अहितकारी होता है।

—शनिश्चर के प्रति लोक-भावना में आशंका-ही-आशंका विद्‌यमान है।

थावानू ज्यो मटवा नूं नी।– भी.४३२ ६२५३

होनहार मिट नहीं सकता।

—होनी अटल है।

—जो होना है वह होकर ही रहता है।

थि-थो

थिरपत नीं थारी ठकराई । ६२५४

स्थिर नहीं तेरी ठकुराई ।

—आतंक किसी का स्थिर नहीं रहता ।

—परिवर्तन ही सृष्टि का अमिट नियम है । जो आज पाँवों के नीचे है, वह कल सिर के ऊपर होगा । और जो आज ऊपर है वह कल पाँवों के नीचे होगा ।

पाठा : थिरपत नीं थारी जोध-जवांनी ।

थूं आंटीली म्हैं अणखीली क्यांकर होय खटाव ? ६२५५

तू अक्खड़ मैं तुनक मिजाज क्योंकर हो निबाह ?

—दो विरोधी स्वभाव वाले मनुष्यों के बीच निबाह होना संभव नहीं ।

—दो जिद्दी या हठीले व्यक्तियों में परस्पर बन नहीं सकती ।

थूं इज बरसै नै थूं इज भीजै । ६२५६

तू ही बरसे और तू ही भीगे ।

—जो व्यक्ति अपनी वस्तु या अपनी संपत्ति का स्वयं ही पूर्ण उपयोग करे, अन्य किसी को भी उस में भागीदार न बनाये ।

—जो व्यक्ति अपने कामों की स्वयं ही प्रशंसा करे ।

थूं ई तौ देखण जोगी ही अर थूं ई काकौ कैय बतळाई। ६२५७

तू ही तो दिखने योग्य थी और तूने ही चाचा कहकर पुकारा।

—तू ही तो दिखने में सुंदर थी। आकर्षक थी और तूने ही मुझे चाचा कहकर संबोधित किया, अब इस मर्यादा का अतिक्रमण नहीं हो सकता।

—जब कोई आशा पूर्ण होने वाली हो और उस में अचानक विघ्न उपस्थित हो जाय तब।

थूं ई थारै सगां सूं सलट। ६२५८

तू ही तेरे समधियों से सलट।

—अपनी की हुई चूक को स्वयं ही सुधारना पड़ता है।

—दो संबंधियों के बीच अनबन होने पर अन्य परिजन दूर रहना ही उचित समझते हैं।

थूं ई मुमई गियौ रे भाया? ६२५९

अरे लल्लू! तू भी मुँबई गया था क्या?

संदर्भ-कथा: ब्याह होते ही पति कमाने के लिए मुँबई चला गया। दस बरस तक खूब कमाई करके आया। बहू को जेवर और इत्र-फुलेल के कई उपहार भेंट किये। लेकिन जब असली उपहार देने का समय आया तो वह कुछ भी भेंट चढ़ा नहीं सका। कल का वादा करके वह करवट बदलकर सो गया। बहू क्या जोर करती! गहने उतारकर सो गई। सवेरे सास-बहू तालाब पर पानी लेने गईं। किनारे ही [illegible]धा-गधी मस्ती कर रहे थे। उत्तेजित गधा बाहर ही बरस गया। बहू को अनायास हँसी छूट गई। पर वह रोने से भी अधिक दारुण थी। न चाहते हुए भी उसके मुँह से बोल फूट पड़े—

सास बहू पांणी नै चाली, गधौ-गधी घूमर घाली।
चढ़ियां पैली ठरगी काया, थूं ई मुंबई गियौ रे भाया?

—अपने कटु अनुभव अन्य किसी व्यक्ति में चरितार्थ होने पर।

थूं ई रांणी, म्हैं ई रांणी, कुण भरै परिंडै पांणी। ६२६०

तू ही रानी, मैं भी रानी, कौन लाये घर में पानी।

परिंडौ = परिंडा = घर में मिट्टी के बासन भरकर रखने का स्थान।

—जब तथाकथित बड़े व्यक्तियों को छोटा व जरूरी काम करने में लज्जा महसू[illegible]ो तब।

—जब घर का कोई भी व्यक्ति काम न करना चाहे तब।

—यदि सभी लोग अपने-अपने बड़प्पन की शेखी मारने लगें और जरूरी काम पड़ा रह जाय तब!

पाठा : थूं ई रांणी, म्हैं ई रांणी, कुण न्हाकै चूल्हा में छांणी।

थूं कांईं फिरै धौळी धोत्याळा, केई फिरगा कड़ा'र मोत्याळा। ६२६१

तू क्या फिरे सफेद धोती वाले, कई फिर गये कड़े और मोती वाले।

—जहाँ बड़ों-बड़ों की थाह न लगे, वहाँ सामान्य व्यक्ति सफल होने की चेष्टा करे तब।

—जिस काम के लिए अच्छों-अच्छों की दाल न गले, उसके लिए कोई साधारण आदमी हाथ-पाँव मारे तब।

थूं कांणी म्हैं खोड़ौ, रांम मिळायौ जोड़ौ। ६२६२

तू कानी मैं लँगड़ा, राम ने जोड़ा मिलाया तगड़ा।

—दो दुर्गुणी व्यक्तियों के बीच आपसी मेल होने पर।

—समान कुलच्छन वाले आदमियों में मित्रता होने पर।

थूं किसी दूबळी सवासणी है? ६२६३

तू कौनसी दुबली सुवासनी है?

सवासणी = सुवासनी = कुँआरी कन्याएँ। राजस्थान में अत्यंत पवित्र एवं आदरणीय मानी जाती हैं तथा कई मांगलिक कार्यों पर इनकी उपस्थिति शुभ एवं मंगलदायक समझी जाती है। अपने पिता के घर रहने वाली विवाहित या अविवाहित स्त्री। व्रत-उपवास या किसी मांगलिक पर्व में सुवासनियों को आदर के साथ खाना खिलाया जाता है। नये वेश दिये जाते हैं।

—जो सुवासनी समृद्ध होती है, उसे किसी सहयोग की आवश्यकता नहीं।

—पूर्ण-रूप से आत्म-निर्भर व्यक्ति को सहयोग की जरूरत नहीं रहती।

थूं किसै बाग री मूळी है। ६२६४

तू किस बाग की मूली है।

—सफल होते किसी काम में टाँग अड़ाने वाले व्यक्ति के लिए।

—कोई अनधिकृत व्यक्ति खामखाह पंचायती करे तब।

थूं के कातै, थूं के बणै, आप फिरै थूं उघाड़ै तणै। ६२६५

तू क्या काते तू क्या बुने, स्वयं फिरे उघड़े बदन।

—जो व्यक्ति कमाई करने का दिखावा तो करे, किंतु कमाई एक धेले की न हो तब!

—जो मनुष्य खटर-पटर तो खूब करे और नतीजा कुछ भी हाथ न लगे तब।

थूंके-थूंके मांडा चोपड़े।—भी.२८४ ६२६६

थूक-थूक से रोटी चिपकाये।

—माँडा या मक्की की मोटी रोटी बनाते समय टूटने पर पानी से बार-बार चिपकाई जाती है।

—आवश्यकता तो हो बहुत ज्यादा और जो व्यक्ति बहुत थोड़े में काम चलाने का असफल प्रयत्न करे, उसके लिए।

—पर्याप्त साधन के अभाव में कोई काम सफल नहीं हो सकता।

थूं क्यूं बोलै चालणी थारै तौ अठोत्तर सौ छेकला। ६२६७

तू क्यों बोले छलनी तुझ में सैकड़ों छेद।

—दुर्गुणों से भरा व्यक्ति नसीहत की बातें बघारे तब।

—बुरा व्यक्ति बढ़-चढ़कर हाँके तब।

थूं क्यूं रोवै बाई, रोवसी थनै लेजावणिया। ६२६८

तू क्यों रोये बहिना, रोएँगे तुझे ले जाने वाले।

—लाड़-दुलार में पली बेटी बार-बार रूठना करे तब उसे लक्ष्य करके कहा जाता है कि वह तो बेकार रो रही है, रोएँगे तो इसके ससुराल वाले।

—बुरे व्यक्ति से साबका पड़ने वाले लोग ही जब शिकायत का रोना रोयें।

थूं क्यूं लाडौ उणमणी, थारै सैली वाळौ साथ। ६२६९

लाडो बिटिया तू क्यों उदास, सशस्त्र दूल्हा तेरे पास।

—ब्याहता कन्या पीहर छोड़ते समय आँसू बहाती है, बिलखती है, तब उसे सखियाँ धीरज बँधाती हैं कि वह क्यों व्यर्थ दुखी हो रही है, उसकी रक्षा का जिम्मा तो अब शस्त्रों से सजे-धजे दूल्हे पर है।

—जिस व्यक्ति के समर्थ व समृद्ध हिमायती हों और वह सोच-फिक्र करे तब।

थूं खत्रांणी म्हैं पांडियौ, थूं वेस्या म्हैं भांड। ६२७०
थारी सरबरा अर म्हारा जीमण में धूळ पड़ी ओ रांड॥

तू खत्रानी मैं पंडित, तू वेश्या मैं भाँड।
तेरे सत्कार और मेरे खाने में, धूल पड़ी ए राँड॥

संदर्भ-कथा : गुरु-पूर्णिमा के पर्व पर एक वेश्या ने सोचा कि किसी बामन को घर बुलाकर भोजन कराये तो बड़ा पुण्य होगा। लेकिन वेश्या के यहाँ बामन तो कोई भोजन करने आएगा नहीं। इसलिए खत्रानी का वेश बनाकर बाजार में निकली। गुरु-पूर्णिमा पर बामनों की बड़ी कमी पड़ जाती थी। एक हृष्ट-पुष्ट भाँड ने पंडित का नामी वेश बनाया। चंदन का त्रिपुंड। गले में रुद्राक्ष की माला। रामनामी दुशाला। पाँवों में खड़ाऊ। खत्रानी ने बहुत गौर से जाँच-पड़ताल की। उसे वही त्रिपुंडधारी पंडित पसंद आया। पंडितजी को बड़े सम्मान के साथ घर लाई। पाँच पक्वान बनाकर खिलाये। एक मोहर दक्षिणा में देते समय उसे किंचित् अपराध बोध हुआ तो उसने कहा, 'हे बामन देवता, मेरा अपराध क्षमा करें। वेश्या के घर कोई पंडित गुरु-पूर्णिमा को भोजन करने आता नहीं, इसलिए मैंने खत्रानी का वेश बनाया। आज कई बरसों के बाद मेरी साध पूरी हुई।' तब पंडित ने मुस्कराते हुए कहा, 'तुझे चिंता करने की जरूरत नहीं। मेरी साध भी आज पूरी हुई। गुरु पूर्णिमा पर कोई भी भाँड को सूखा टुकड़ा भी नहीं देता। आज चकाचक भोजन से मेरी आत्मा तृप्त हुई। तू वेश्या है तो मैं भी एक भाँड हूँ।' उसने रस लेकर उपरोक्त उक्ति सुनाई।

—दो धूर्त व्यक्ति एक दूसरे के साथ छल करें तब।

थूं घटायौ नांणौ, म्हैं घटायौ तांणौ। ६२७१

तूने घटाया नाणा, मैंने घटाया ताणा।

नांणौ = पैसे। तांणौ = बुनते समय कपड़े की लंबाई, ताना।

संदर्भ-कथा : एक बनिया जुलाहे के घर गया। मन पसंद खेसला तैयार मिला। पर भाव-ताव में बात बैठी नहीं। जुलाहे ने जो दाम बताये, उससे एक तिहाई बनिया कम देना चाहता था। ज्यादा जिद की तो जुलाहा मान गया। कहा, 'यह खेसला तो दूसरे के लिए बनाया है। शाम को ले जाएगा। आप तरसों आएँ। अच्छा बना कर दूँगा।' बनिया तीसरे दिन आया तो खेसला

सिमटा हुआ तैयार रखा था। बनिया खुश होकर घर ले गया। खोलकर देखा तो लंबाई कम। वापस जुलाहे के घर उलाहना देने आया। पर जुलाहे ने साफ कहा, 'जब आप किसी भी सूरत नहीं माने तो मैं क्या करता! आपने दाम घटाये तो मैंने ताना घटा दिया। घाटे में काम कोई नहीं करता, न आप और न मैं।' सेठ खीसे निपोर कर चलता बना।

—दो होशियार व्यक्ति परस्पर चालाकी करें तब।

थूं घाल म्हारै मूंडा में आंगळी अर म्हैं घालूं थारी आंख में। ६२७२

तू डाल मेरे मुँह में अँगुली और मैं डालूँ तेरी आँख में।

—तेरी अँगुली खा जाऊँ और तेरी आँख भी फोड़ दूँ।

—अपना बचाव करके दूसरे को दोहरी क्षति पहुँचाना, पर बड़ी सफाई के साथ जिससे सामने वाले को पता न चले।

—अत्यधिक चतुर व्यक्ति के लिए।

थूं चालै तौ चाल निगोड़्या, म्हैं तौ गंगा न्हावूंली। ६२७३

तू चले तो चल निगोड़े, मैं तो गंगा नहाऊँगी।

—जो औरत ढुलमुल पति को अपने इशारों पर नचाये।

—जिस घर में पति की बजाय पत्नी की अधिक चलती हो।

थूं जांणै अर थारौ कांम जांणै। ६२७४

तू जाने और तेरा काम जाने।

—भले की खातिर सीख देने पर जो व्यक्ति कहा नहीं माने तब।

—भले-बुरे का परिणाम अपने ऊपर कोई न लेना चाहे तब।

थूं जा म्हैं आवूं। ६२७५

तू जा मैं आया।

—किसी व्यक्ति को अपने काम की बहुत उतावली हो और वह किसी को साथ लेना चाहे तब सामने वाला व्यक्ति कहता है—तू चल मैं आया।

—जन्म-मरण के आवागमन पर भी इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है जब कोई आत्मीय गुजरने लगता है, तब दूसरा आत्मीय यही बात कहता है।

थूं तौ रोवै राब नै, म्हैं बणाई खीर। ६२७६

तू रोये राब को, मैंने बनाई खीर।

राब = बाजरी, ज्वार या मक्की आदि के आटे को छाछ में उबालकर बनाया जाने वाला एक पेय पदार्थ, जो गरीबों के लिए अनिवार्य भोजन है और अमीरों के लिए शौक की चीज है।

—आशा के विपरीत मन-वांछित भोजन मिल जाय तब।

—अप्रत्याशित रूप से कोई कार्य-सिद्धि हो जाय तब।

थूं तौ रोवै रोटी नै, हूं रंधावसूं दाळ। ६२७७

तू तो रोवे रोटी को, मैं रँधाऊँगा दाल।

—जो व्यक्ति रोटी से ही संतुष्ट हो जाना चाहे, उसे दाल भी साथ मिल जाये तब।

—घर में जो औरत रोटी के लिए भी आना-कानी करे, उससे दाल बनवाई जाय तब!

—काम को टालने वाले व्यक्ति पर उससे भी भारी काम और लाद दिया जाय तब!

थूं थारै नै म्हैं म्हारै। ६२७८

तू तेरे और मैं मेरे।

—तुम अपने रास्ते पर चलो, मैं अपने रास्ते पर चलूँगा, जब दोनों के लक्ष्य अलग-अलग हैं तो रास्ता भी एक नहीं हो सकता।

थूं नीं कूदै राजिया, अै तौ गवूं कूदै वाजिया! ६२७९

तू नहीं कूदे राजिया, ये तो गेहूँ कूदे बाजिया!

दे.क.सं. ६०७३

थूं नीं, तौ थारौ भाई कोई दूजौ। ६२८०

तू नहीं, तो तेरा भाई कोई दूसरा।

—अमूमन पति-पत्नी में अनबन होने पर पत्नी कहती है कि उसे तो घरवाले कहीं-न-कहीं ब्याहते ही, तुम नहीं मिलते तो तुम्हारा भाई कोई दूसरा ले जाता। वह तो पीहर में रहने से रही।

—कोई भी व्यक्ति किसी के लिए अपरिहार्य नहीं होता।

थूं परणीज्यो । है कांई के म्हारा भाई रै दोय है । ६२८१

तू शादी-शुदा है कि नहीं कि मेरे भाई के दो पत्नियाँ है ।

—जो व्यक्ति वास्तविकता को नजर-अंदाज करके मुगालते में जीना चाहे ।

—जो व्यक्ति सीधा कबूल न करके घुमा-फिराकर टेढ़ी बात कहे ।

थूं फिरै डाळ-डाळ तौ म्हैं फिरूं पात-पात । ६२८२

तू फिरे डाल-डाल तो मैं फिरूँ पान-पान ।

—जब कोई होशियार व्यक्ति परस्पर एक दूसरे से कमजोर साबित न होना चाहें तब चुनौती के रूप में कोई भी पक्ष यह उक्ति काम में लेता है ।

—अतिशय चालाक व्यक्ति किसी को धमकी के रूप में यह कहावत प्रयुक्त करता है ।

थूं बांबी में आंगळी दै, हूं मंतर पढूं । ६२८३

तू बाँबी में अँगुली डाल, मैं मंत्र पढ़ूँ ।

—कोई व्यक्ति किसी को खतरे के काम की खातिर उकसाकर स्वयं अपना बचाव करना चाहे, उसका हितैषी बनकर ।

—झूठी आत्मीयता का दिखावा करके जो व्यक्ति किसी को प्राणघाती काम में झोंकना चाहे ।

थूं म्हनै, म्हैं थनै । ६२८४

तू मुझे, मैं तुझे ।

—जैसा तू मुझे पहिचानता है, वैसा ही मैं तुझे पहिचानता हूँ । ज्यादा समझदारी दिखाना उचित नहीं ।

—जब दो व्यक्ति एक दूसरे की चालाकी को भली-भाँति जानते हों ।

थूं म्हारा मोर खुजाळ, म्हैं थारा मोर खुजाळूं । ६२८५

तू मेरी पीठ खुजला, मैं तेरी पीठ खुजालूँ ।

—आपसी समझौता कि मैं तेरे स्वार्थ की पूर्ति करूँ, तू मेरे स्वार्थ की पूर्ति कर ।

—विश्व की पाँचों महाशक्तियाँ इसी उक्ति के आधार पर एकता का दिखावा कर रही हैं ।

थूं रोवै है छाक नै, म्हैं बूझण आई के आटौ उधारौ किण सूं लावूं ? ६२८६

तू रोये शराब को मैं पूछने आई कि आटा उधार कहाँ से लाऊँ ?

—जो गृहस्वामी घर की व्यवस्था से इस सीमा तक अनभिज्ञ हो, उसके लिए कि वह तो शराब को झींक रहा है और उधर घर में आटा तक नहीं।

—आधुनिक राजनेताओं पर कितनी सटीक बैठती है यह कहावत कि वे तो अपनी मौज-मस्ती में बौराये हुए हैं और देश की भीषण दुर्दशा हो रही है।

थूं लै मां रा जायां नै, हूं लेवूं खाट रै पायां नै। ६२८७

तू ले माँ के जायों को, मैं लूँ खाट के पायों को।

—दूसरे को काम बताकर स्वयं आराम करना चाहे, उसके लिए।

—बारी-बारी से काम का भार बदलते रहना उचित है।

थूं वळै कठै मकिया सेकण नै गियौ ? ६२८८

तू फिर कहाँ भुट्टे सेकने गया ?

—दुराचारी व्यक्ति के लिए जो अपनी लत किसी भी कीमत पर छोड़ नहीं सकता। बार-बार पकड़े जाने पर भी।

—इधर-उधर मुँह मारने वाले व्यक्ति के लिए।

थूं वाहजै जूती, म्हैं राखूं टेक, अपां दोनूं अेक-रा-अेक। ६२८९

तू फेंकना जूती, मैं रखूँगा टेक, हम दोनों आपस में एक।

—मिली-भगत। आधुनिक नेता इसी कहावत को चरितार्थ करने में लगे हैं।

—क्रिकेट की मैच-फिक्सिग के लिए इससे लाजवाब उक्ति और क्या हो सकती है !

—जो व्यक्ति दूसरों की आँखों में धूल झोंककर अपना मतलब गाँठना चाहते हों।

पाठा : थूं वाइजै डांग अर म्हैं राखूंला टेक, अपां दोनूं अेक-रा-अेक।

थूं सोफीड़ा री नार, चढ़ चौबारै चाका करै। ६२९०
थूं थारा नै पाळ, म्हारा नै तौ पीयां सरै॥

हे सोफी की औरत तू अपने पति की जितनी चाहे, तारीफ कर, तू उसीकी पूरी हिफाजत कर, मेरे अफीमची पति की रंचमात्र भी चिंता न कर, वह तो यों ही अफीम पीता रहेगा।

सोफीड़ौ = सोफी = जिस व्यक्ति को किसी भी नशे का व्यसन न हो।

—सीख, उपदेश या लांछना का जिस व्यक्ति पर कोई प्रभाव न हो और सुधरने के लिए कोई परवाह न करे।

थूक देय तिल वीण्या, मूठी अेक म्हनै ई देसी। ६२९१

थूक चेप तिल बीने, मुट्ठी भर मुझे भी देगा।

—अभावग्रस्त व्यक्ति से माँग करने पर।

—भिखारी से याचना करने पर।

थूक रा गुलगुला। ६२९२

थूक के पूए।

—जो व्यक्ति थूक उछाल-उछालकर बातों-ही-बातों से अपना मन बहलाये।

—जो व्यक्ति स्वयं को मुगालते में रखे।

—ऊपरी टीम-टाम।

पाठा : थूक रा सातू।

थूक रा चेपा दियां पार नीं पड़ै। ६२९३

थूक चिपकाने से पार नहीं पड़ेगा।

—केवल बातें बनाने से कोई भी काम सफल नहीं होता।

—उपयुक्त साधनों से ही काम संपन्न होता है, अटकलबाजी से नहीं।

पाठा : थूक लगा'र कोई कांम नीं करणौ।

थूक सूं कदै ई कांन चिपै। थूक सूं कदै ई लाडू नीं सांधीजै।

थूक लगायनै ई को पूछै नीं। ६२९४

थूक लगाकर भी नहीं पूछेगा।

—प्रतिष्ठा गिरने पर कोई थूक के भाव भी नहीं पूछेगा।

—जो उच्च अधिकारी पद पर रहते किसी का काम न करे तब गरजमंद मन-ही-मन झुँझलाकर कहता है कि सेवा-निवृत्त होने पर कोई घास तक नहीं डालेगा।

थूक सूं आटौ ओसणै । ६२९५

थूक से आटा गूँधे ।

—जो व्यक्ति उपयुक्त साधन के बिना ही काम संभव करना चाहे ।

—जो महा-कंजूस संपन्न होते हुए भी कष्ट उठाये ।

थूक सूं कांन सांधनै कितराक दिन राखौला ? ६२९६

थूक से कान चिपकाकर कितने दिन रखोगे ?

—इस नश्वर काया को कितने दिन अमर रख सकोगे ?

—माकूल काम किये बिना कोई काम टिकाऊ नहीं होता ।

पाठा : थूक सूं गांठ्योड़ा कित्ता दिन सजै । थूक से गाँठे हुए जूते कितने दिन चलेंगे ।

थूक सूं काळजौ फोड़ै । ६२९७

थूक से कलेजा फोड़े ।

—जो व्यक्ति बातों-ही-बातों में अपना काम बना ले ।

—जो व्यक्ति गीदड़-भभकी से शेर को डरा दे ।

थूक्योड़ौ चाटीजै नीं अर हांकर्‌योड़ौ नटीजै नीं । ६२९८

थूका हुआ चाटा नहीं जाता और वचन तोड़ा नहीं जाता ।

—कही हुई बात से इनकार करना थूके हुए को चाटने के समान ही है ।

—हर व्यक्ति को अपनी बात पर कायम रहना चाहिए, मनुष्य होने की यही सार्थकता है ।

—धर्म-संकट जैसी स्थिति से रूबरू होना पड़े तब ।

थें ई जांन गिया छा के नीं म्हे तौ घरकै ई कांम गिया छा । ६२९९

तुम भी बारात में गये थे क्या, कि नहीं हम तो घर के ही काम गये थे ।

संदर्भ-कथा : एक बारात किसी गाँव में गई । बाराती बदमाश थे । शराब के नशे में कहा-सुनी हो गई तो वधू पक्ष वालों ने जमकर उनकी पिटाई की । गाँव लौटने पर वे किसी भी व्यक्ति को लँगड़ाते देखते या सिर पर पट्टी बँधी देखते या हाथ को गले में झूलते देखते तो अनायास ही उनके मुँह से निकल पड़ता कि तुम भी बारात में गये थे क्या ? नहीं हम तो कहीं घर के ही काम गये थे । दोनों मन-ही-मन झेंपकर चुप हो जाते ।

—मन का अपराध-बोध स्वत: प्रकट हो जाता है।

थें गिया तौ छोडी कठै के अेक वत्ती सीखनै आयौ। ६३००

तुम गये पर छोड़ी कहाँ कि एक अधिक सीखकर आया।

संदर्भ-कथा : एक शराबखोर पास ही के किसी तीर्थ-स्थान पर शराब छोड़ने गया। वहाँ नशेबाज-ही-नशेबाज जाते थे। वह कुछ दिन वहाँ रहा। शराब छोड़ना तो दूर अफीम और सीख गया। घर आकर शराब पीने लगा तो पत्नी ने पूछा, 'यह क्या, तुम तो शराब छोड़ने गये थे? यों ही लौट आये।' तब पति ने जवाब दिया, 'यों नहीं, एक नशा और सीखकर आया हूँ। अब अफीम भी लूँगा। कुछ दिन बाद दोनों एक साथ ही छोड़ दूँगा।' पत्नी ने कहा, 'रहने दो। इस बार तीसरा ही नशा सीखकर आओगे। गलती मेरी ही थी कि तुम्हें मैंने लड़कर भेजा।'

—दुर्व्यसन किसी के आग्रह या सीख से नहीं छूटते, अपने मन से छूटते हैं।

थें चालौ उगूण तौ म्हैं जावां आथूंण। ६३०१

तुम चलो पूरब तो हम जाएँ पश्चिम।

—दो व्यक्तियों के विरोधी स्वभाव की ओर लक्ष्य।

—जिन दो आदमियों की आदतों में मेल की बजाय, विकट भिन्नता हो।

थें भला, अै चोखा। ६३०२

तुम भले और ये अच्छे।

—किसी भी पक्ष को नाराज न करने की प्रवृत्ति, चाहे दोनों ही गलती पर हों।

—दो बदमाशों ने अपने बारे में किसी से राय पूछी कि उन में कौन बेहतर है। कौन आफत मोल ले। उस व्यक्ति ने गोलमाल जबाब दिया कि एक भला है और एक अच्छा है।

थें भाभीजी जीमल्यौ, थांरा काढ़ां न्होरा। ६३०३
ऊंट तौ कूद्यौ ई कोनीं, पैली कूद्या बोरा॥

तुम भौजाई जीमलो, करें तुम्हारे निहोरे।
ऊँट तो कूदा ही नहीं, पहिले कूद पड़े बोरे॥

संदर्भ-कथा : दो भाइयों के परिवार में मन-मुटाव हो गया। उत्सव के मौके पर ननद एक भाई के घर उसको मनाने गई। भाई ने बहिन को जवाब नहीं दिया तो उसने भौजाई के निहोरे किये। भौजाई ने तड़ककर तुरत मना कर दिया। तब ननद ने कटाक्ष करते कहा—ऊँट तो उछला ही नहीं और बोरे पहिले उछल पड़े।

—अधिकृत व्यक्ति खामोश रहे और अनधिकृत आदमी जोर जताये तब।

मि.क.सं.१३०१

थें सवाई जैपर रा तौ म्हे डोढ़ै चूरू रा। ६३०४

तुम सवाई जयपुर के हो तो हम ड्योढ़े चूरू के हैं।

—सवाई जयसिंहजी ने जयपुर बसाया था। और बीकानेर व चूरू राठोड़ों ने। दोनों ही एक-से-एक बढ़कर थे। इस प्रसंग को ध्यान में रखते हुए जब दो व्यक्ति परस्पर एक-दूसरे से स्वयं को बड़ा मानें तब।

थोड़ां रौ मूंडौ खांड सूं भरणौ सोरौ, पण घणां रौ मूंडौ धूळ सूं भरणौ ई दोरौ। ६३०५

थोड़े मुँह खाँड से भरना आसान, पर ज्यादा मुँह धूल से भरना भी कठिन।

—परिवार में कम सदस्य हों तो आराम से गुजर-बसर हो सकता है। ज्यादा हों तो बासी टुकड़े भी मुश्किल से हाथ लगते हैं।

—बदनामी करने वाले थोड़े ही हों तो उन्हें ले-देकर चुप किया जा सकता है, पर अधिक आदमी बदनामी करने पर उतर आएँ तो उन्हें मनाया नहीं जा सकता।

मि.क.सं.३८१३

थोड़ा मिळ्यां मन बधै। ६३०६

कम मिलने पर उमंग बनी रहती है।

—ज्यादा संपर्क से कभी-न-कभी खटपट हो ही जाती है।

—कम मिलने पर अधिक प्यार उमड़ता है।

थोड़ी करस्यां लापसी, बोळा-बोळी धापसी। ६३०७

थोड़ी करेंगे लापसी, बहरा-बहरी खाएँगे।

—परिवार में दो ही व्यक्ति हों तो मन-पसंद भोजन बनाकर खाते हैं। अधिक सदस्य हों तो खाने की वह स्वतंत्रता नहीं रहती।

—जो व्यक्ति दूसरों की बात पर कान न देकर अपनी ही धुन में खोया रहे।

थोड़ी ताळ री नगटाई नै आखा दिन री मौज। ६३०८

थोड़े समय की नकटाई और पूरे दिन की मौज।

—किसी ब्याह या अन्य आयोजन पर बिना न्योते ही बेहया की नाईं पहुँचकर खालो और पूरे दिन मौज मनाओ।

—बदमाश या धूर्त व्यक्ति बिना परिश्रम से चालाकी करके काफी हाथ मार लेता है और ऐश करता है।

थोड़ी देर तौ बण रतन। ६३०९

कुछ देर तो बन रतन।

—घर में मेहमान आएँ तब चंचल लड़के को कहा जाता है कि वह कुछ देर के लिए अच्छा बन जाये, ताकि मेहमानों की राय बुरी नहीं बने।

—सब से बड़ा रत्न आदमी होना ही है। जब आदमी की योनि मिली है तो आदमी बनकर ही रहना चाहिए—जिंदगी बहुत थोड़ी है।

थोड़ी पूंजी नै आटौ गीलौ। ६३१०

थोड़ी पूँजी और आटा गीला।

दे.क.सं.३३२४

थोड़ो मांये घणो राम करदें जेरा थां हे।–भी.४३३ ६३११

थोड़े में बहुत राम करेगा तभी होगा।

—भाग्यवादियों के लिए ईश्वर की इच्छा पर ही सब-कुछ निर्भर होता है। गरीब रहना या संपन्न होना।

—सुख-दुख देने वाला केवल ईश्वर है।

थोड़ौ खरचै नै थोड़ौ खावै, उणरै कदै न तोटौ आवै। ६३१२

थोड़ा खरचे, थोड़ा खाये, उस घर टोटा कभी न आये।

—सोच-विचारकर खर्च करने से तंगी नहीं आती।

—मितव्ययता का महत्त्व दरसाया है।

थोड़ौ जित्तौ ई मीठौ, घणौ जित्तौ ई खारौ। ६३१३

थोड़ा जितना ही मीठा, ज्यादा उतना ही कड़वा।

—नमक जितना कम हो भोजन स्वादिष्ट लगता है, अधिक नमक हो तो कड़वा हो जाता है।

—कोई भी वस्तु कम हो तो अधिक मीठी लगती है, अधिक हो तो उतनी अच्छी नहीं लगती।

—थोड़ी बात का मजा ही कुछ और है।

थोड़ौ-थोड़ौ करतां ईं लंक लागै। ६३१४

थोड़ा-थोड़ा करने पर ही ढेर लग जाता है।

—थोड़ा-थोड़ा संचय करने से ढेरी लग जाती है।

—थोड़ा-थोड़ा खर्च करने से ढेर भी खत्म हो जाता है।

—यह कहावत दोनों अर्थ में काम आती है।

थोड़ौ साथ चोखौ, पण ओछौ साथ खोटौ। ६३१५

थोड़ा साथ अच्छा, पर ओछा साथ बुरा।

—भले आदमी की थोड़ी संगति भी अच्छी पर बुरे आदमी का मामूली साथ भी अनिष्टकारी।

—भले आदमियों का साथ करो, बुरों से दूर रहो।

थोड़ौ सीदौ चाखण में ईं जावै। ६३१६

थोड़ा भोजन चखने में जाये।

—मनुष्य जीवन में थोड़े से बात नहीं बनती, अधिक होना ही ठीक है।

—थोड़ी पूँजी का व्यापार नहीं चलता।

थोथ री माया। ६३१७

थोथ की माया।

—जिस व्यक्ति ने छल-कपट से पूँजी इकट्ठी की हो।

—छल-कपट से ही माया जुड़ती है।

थोथी चिड़ी कपूरी नांव। ६३१८

थोथी चिड़िया, कर्पूरी नाम।

—नाम के विपरीत स्वभाव।

—नाम बड़ा और दरसन खोटा।

थोथी लकड़ी में भंवरा ई घर करै। ६३१९

थोथी लकड़ी में भँवरे घर बनाते हैं।

—जहाँ पोल होती है वहीं लुच्चे आबाद होते हैं।

—प्रशासन ढीला हो तो वहाँ लफंगे मौज मनाते हैं।

थोथै कांम कुटीजै थाळी, कळजुग भांग कुवा में राळी। ६३२०

थोथे काम कुटीजे थाली, कलियुग भाँग कुए में डाली।

—भँगेड़ी कोई भी काम शुरू करने पर रुकता ही नहीं। कलियुग का जमाना ही ऐसा है कि हर कुएँ के पानी में भाँग घुली हुई है। जो भी पीता है व्यर्थ थाली पीटने लगता है। अपनी-अपनी धुन में खोया रहता है।

थोथौ चिणौ बाजै घणौ। ६३२१

थोथा चना बाजे घना।

—जब कोई अनधिकृत व्यक्ति दूसरों को प्रभावित करने के लिए बड़ी-बड़ी बातें बघारे, तब उसकी पोल अदेर खुल जाती है।

—छिछला आदमी अधिक दिखावा करता है।

—गुणहीन व्यक्ति बकवास ज्यादा करता है।

थोथौ लाड अर लूखी प्रीत। ६३२२

थोथा लाड़ और रूखी प्रीत।

—जो व्यक्ति लेन-देन के मामले में बिल्कुल कोरा और ऊपरी मन से लाड़-दुलार प्रकट करे।

—आत्मीयता का झूठा दिखावा करने वालों पर कटाक्ष।

थोथौ संख परायी फूंक सूं बाजै। ६३२३

थोथा शंख परायी फूँक से बजे।

—जो मूर्ख व्यक्ति दूसरों के इशारे पर काम करे।

—जो नादान व्यक्ति दूसरों के सिखाने पर बक-बक करे।

थोबली पड़ी अर छांन भेळी। ६३२४

खंभा गिरा और झोंपड़ी ध्वस्त।

—घर का मुखिया कूच कर जाये तो सारा परिवार डगमगा जाता है।

—चलते-पुर्जे आदमी की मृत्यु से सब काम ठप्प हो जाता है।

थोरड़ा ऊंट खा जावैला, के आज दिन तौ म्हैं खाया हूं। ६३२५

थोरी! ऊँट खा जाएगा कि आज दिन तो मैंने ही खाये हैं।

थोरड़ा = थोरी = एक अनुसूचित जाति जो शिकार पर जीवन निर्वाह करती है। पहिले वे ऊँट भी खाते थे।

—जिस जाति के व्यक्तियों ने जीवन भर ऊँट खाये हों, वह भला ऊँट से क्या डरे।

—अनुभवी व्यक्ति किसी काम में ठोकर नहीं खाता।

थोरड़ा गीत गा के म्हैं तौ लारलै गांव गा आयौ। ६३२६

थोरी गीत गा कि मैं तो पिछले गाँव गाकर आया।

दे.क.सं.५९०६

थोरड़ा थारी मां घर कर्‌यौ के भूंडी व्ही। करनै छोड दियौ के बापजी ताही भूंडी। ६३२७

थोरी! तेरी माँ ने घर किया कि बुरी हुई। करके छोड़ दिया कि यह तो उससे भी बुरी हुई।

—उस ढुलमुल व्यक्ति पर कटाक्ष जो अपनी बात पर कायम न रह सके। अस्थिर प्रकृति वाले मनुष्य के लिए।

—आजकल राजनेता जिस तरह अपना दल छोड़कर दूसरे में जा मिलते हैं, फिर नये दल को छोड़कर तीसरे में घुस जाते हैं, उन पर करारी चोट।

थोरणीयां कद बिलोवणा कीधा ?–व.३०३ ६३२८

थोरनियों ने कब बिलौने किये ?

—अनभिज्ञ या अनुभवहीन व्यक्ति किसी काम में हाथ डाले तब।

—अक्षम व्यक्ति को बड़ा काम बताने पर अपनी सफाई में इस उक्ति का प्रयोग करता है।

पाठा : थोरणियां कद दही बिलोया ?

थोर री खेवटिया कुण करै ? ६३२९

थोर की रखवाली कौन करता है ?

थोर = काँटेदार डंठलों का एक जँगली पौधा जिसे कोई जानवर नहीं खाता।

—अनुपयोगी वस्तु अपने-आप अपने बूते पर ही पनपती है, किसी के सहारे की जरूरत नहीं।

—बुराई को किसी के संरक्षण की जरूरत नहीं, वह स्वतः चारों ओर फैलती है।

थोरी ! कांईं बावै के कोनीं बतावूं के ऊगसी जद देख लेस्यूं के पाबू करै ऊगै ई कोनीं। ६३३०

थोरी ! क्या बो रहे हो कि नहीं बताता, कोई बात नहीं उगने पर देख लेंगे कि पाबू करे उगे ही नहीं।

—हीन स्वभाव का व्यक्ति अपना नुकसान करके भी दूसरों को तंग करने में तृप्ति का अनुभव करता है।

—अधम व्यक्ति से यत्किंचित् आशा रखना भी अनुचित है।

थोरी री डीकरी, केसर रौ तिलक। ६३३१

थोरी की बेटी, केसर का तिलक।

—जो व्यक्ति अपनी औकात भूलकर झूठा दिखावा करे तब।

—छोटी हैसियत का व्यक्ति बड़ी-बड़ी आकांक्षाएँ पाले तब।

थोरै मूरख मूंघौ पड़ै। ६३३२

निहोरे करने पर मूर्ख महँगा पड़ता है।

—मूर्ख व्यक्ति निहोरे करने पर ज्यादा नाज-नखरे दिखाता है।

—नासमझ आदमी सोचता है कि किसी की मनुहार मानने पर उसका मूल्य घट जाएगा।

थोरै करयां तौ भाटौ ई पिघळै। ६३३३

निहोरे करने पर तो पत्थर भी पिघलता है।

—जो अक्खड़बाज आदमी बार-बार कहने पर भी न माने तब यह उक्ति कही जाती है कि इतने निहोरे करने पर तो पत्थर भी पिघल जाता और तुम ऐसे कठोर हो कि टस-से-मस नहीं होते।

थोरयां घी लूखौ व्है। ६३३४

निहोरे करने पर घी भी रूखा हो जाता है।

—मनुहार करने-से घी की चिकनाहट भी दूर हो जाती है।

—सहज प्राप्त होने पर उस वस्तु की महत्ता घट जाती है।

पाठा : **थोरौ करयां घी लूखौ व्है।**

दं - दा

दंत-कथावां अर कंथ पातळा भाग सूं मिळै। ६३३५

दंत-कथाएँ और कंत पतले भाग्य से मिलते हैं।

—ग्रंथ में लिखी चीज तो उपलब्ध हो जाती है पर मुख-जबानी सुनाई जाने वाली कथाएँ किसी भाग्यशाली को मुश्किल से हाथ लगती हैं। इसी प्रकार थुलथुल ढीला पति तो हर कहीं मिल जाता है, पर लंबा छरहरा पति भाग्य से ही मिलता है।

—दंत-कथा और पतले कंथ की तुलना बड़ी विलक्षण है। छरहरे पति से सेज पर जो आनंद मिलता है, वैसा ही अपूर्व आनंद लोक-कथा सुनने पर बच्चों को मिलता है।

दई न मारै डांग सूं, दई कुमत्तां देय। ६३३६

दैव न मारे लट्ठ से, दैव कुमति देत।

—देवता या भाग्य किसी को लाठी से नहीं पीटता, वह तो कर्ता के मन दुर्बुद्धि पैदा कर देता है और वह स्वयं ही अपने विनाश का कारण बन जाता है।

—भाग्य विमुख होने पर दुर्गति अवश्यंभावी है।

दगाबाज दूणौ निंवै, चीतौ, चोर, कबांण। ६३३७

दगाबाज दूना नमे, चीता, चोर, कबान।

—अपना स्वार्थ पूरा करने और दूसरों को क्षति पहुँचाने के लिए दगाबाज व्यक्ति—कबान, चोर और चीते के सदृश अधिक झुककर अपना काम साधने में सफल होता है।

—धोखेबाज व्यक्ति अपना काम निकालने के लिए मौके पर अत्यधिक विनम्र हो जाता है।

दगौ करयौ बांणिया री जोय, पूत खसम नै लीन्ही रोय। ६३३८
नीं मांनौ तौ कर देखौ, करया ज्यांरा घर देखौ ॥

दगा किया बनिये की औरत ने, पूत-खसम से हाथ धो बैठी ।
न मानो तो करके देखो, जिन्होंने किये उनके घर देखो ॥

संदर्भ-कथा : एक महाजन परिवार में चार प्राणी थे। पति-पत्नी, बेटा और जेठ। जेठ अविवाहित था। चाचा के गोद गया हुआ था। संपत्ति बहुत थी। रहता शामिल ही था। चूल्हा-चौका एक। पति के पास व्यवसाय के निमित्त पर्याप्त पूँजी नहीं थी। जेठ की पूँजी और जायदाद हड़पने के लिए सेठानी ने जहर मिलाकर रोटियाँ बनाई। अलग धरकर सो गई। पति और बेटे ने पहिले आकर वे रोटियाँ खा लीं। परिणाम जो होना था वही हुआ। जेठ तो बच गया और बेटा और पति दोनों मर गये। जेठ के पास रखैल की तरह रहने लगी। दगा किसी का सगा नहीं।

—जो दूसरों के साथ धोखा करेगा, वह पहिले धोखा खाएगा।

दगौ किणरौ सगौ ! ६३३९

दगा किसका सगा !

—दगा किसी का सगा नहीं होता, न दगा करने वाले का और न उसका जिसके साथ दगा किया जाता है। कब किसकी ओर मुड़ जाय, पता नहीं चलता।

पाठा : दगौ किणी रौ ई सगौ नीं व्है।

दड़ रै मुंहडै सांप नै ई पाधरौ व्हैणौ पड़ै। ६३४०

बाँबी में घुसते समय साँप को भी सीधा होना पड़ता है।

—कैसे भी कुटिल व्यक्ति को समय पर सीधा होना पड़ता है।

—कैसा भी दुष्ट व्यक्ति किसी-न-किसी के प्रति तो सच्चा रहता ही है।

—दुनिया भर में बदमाशी करके कैसे भी जालिम व्यक्ति को घरवालों के साथ तो रहना ही पड़ता है।

दत्त-दायजौ बैयगौ अर छाती-कूटौ रैयग्यौ। ६३४१

दत्त-दहेज बह गया, काम-काज रह गया।

—दुलहिन जो धन माल और दहेज लाई थी, वह तो जरूरत पड़ने पर सब समाप्त हो गया पर घर का काम-काज, फूस-बुहारा, बरतन-बासन, चूल्हा-चौका, धुलाई-पोचा इत्यादि सब शेष रह गये।

—सुख-सुविधाएँ समाप्त होने पर भी, जीने के निमित्त आवश्यक काम तो मनुष्य को करने ही पड़ते हैं।

दनियां बेरंगी है, जठे हाऊ देखे जठे फरे।– भी.४५४ ६३४२

दुनिया दुरंगी है, जहाँ ठीक दिखे वहीं घूमती है।

—जिस तरह दुनिया अपनी धुरी पर सूर्य के इर्द-गिर्द आठों पहर चक्कर काटती है, उसी तरह उस पर बसने वाले बाशिंदे भी जहाँ सुविधा देखते हैं, वहीं घूमने लग जाते हैं।

—आदमी सुख-सुविधाओं के आस-पास ही चक्कर काटता र ता है।

दनियां में हबळू-नबळू हारू है, हारां अे नबावणो पड़े।– भी.४३८ ६३४३

दुनिया में सबल, निर्बल सभी हैं, इसलिए सबके साथ निबाहकर चलना पड़ता है।

—जब मनुष्य को समाज के बीच अपना जीवन-यापन करना है तो वह डकैत बनकर नहीं जी सकता। सबके साथ निबाहकर चलना आवश्यक हो जाता है।

—समाज में आपसी सहयोग के बिना कुछ भी काम नहीं हो सकता।

दनियां ये हारई पूगे, रामें नीं पूगे।– भी.४३९ ६३४४

दुनिया की पहुँच सर्वत्र है, पर राम तक नहीं।

—संसार में बड़े-से-बड़े व्यक्ति के पास पहुँच मुश्किल नहीं पर राम के पास राजा-बादशाह भी नहीं जा सकते।

—दुनिया में सभी पर वश चल सकता है, पर राम पर किसी का भी वश नहीं चलता।

दन्या कोपे ते कई नीं थाय।– भी.४३५ ६३४५

दुनिया कुपित हो तो कुछ नहीं बिगड़ सकता।

—जब तक ईश्वर की कृपा-दृष्टि है, कोई किसी का कुछ बुरा नहीं कर सकता।

—बुरा-भला सब ईश्वर के अधीन। बेचारे मनुष्य की क्या बिसात कि वह किसी के बुरे-भले का दंभ करे।

दन्या ना जूटा जगड़ां मांय नी लागवू।–भी.२८५ ६३४६

दुनिया के झूठे झगड़ों में नहीं पड़ना चाहिए।

—समय का पूर्ण सदुपयोग करने के निमित्त व्यर्थ बकवास में तनिक भी शक्ति क्षीण नहीं करनी चाहिए।

—समय का हर क्षण अमूल्य है,उसे किसी भी कीमत पर बेकार नहीं गँवाना चाहिए। जो क्षण बीत गया उसे लाखों रुपये देकर भी लौटाया नहीं जा सकता।

दन्या मांय को चकत्यो नी है।–भी.२८६ ६३४७

दुनिया में कोई सुखी नहीं है।

—सबको दुखी मानकर अपने दुख में धीरज रखने के लिए यह कहावत बड़ी सांत्वना प्रदान करती है।

—सिवाय ईश्वर के दुनिया में न राजा-महाराजा,न सेठ-साहूकार,न कोई राव-उमराव और न कोई संत-महात्मा ही पूर्ण सुखी है।

—ईश्वर के उनमान दुख सर्व-व्यापी है।

दन्या मांये रेवू पड़े ते हाप वाळो फूंफाटो राखवो पड़े।–भी.४३६ ६३४८

दुनिया में रहना है तो साँप वाला फूत्कार करना ही पड़ता है।

—दुनिया की यह रीति है कि जो दबता है,उसे ही अधिक दबाया जाता है,वापस डर दिखाने से कभी-कभार राहत मिलती है।

—संसार में रहने के लिए निपट निरीह बनने से काम नहीं चलता,वक्त-जरूरत साँप की तरह फुफकारना भी लाजिमी है।

दन्या में मा-बाप नी मळे, बीजूं हारू मळे।–भी.४३७ ६३४९

दुनिया में माँ-बाप नहीं मिलते, बाकी सब मिलता है।

—माँ की निस्वार्थ ममता और पिता का सहज स्नेह संसार में दुर्लभ है,किसी भी मूल्य पर उसे प्राप्त नहीं किया जा सकता।

—ईश्वर के बाद सर्वोपरि हित चाहने वाले केवल माँ-बाप ही हैं।

दबतौ बांणियौ निंवतौ तोलै। ६३५०

दबता बनिया अधिक तौलता है।

—संसार में भय के बिना कोई किसी से प्रीत नहीं करता और न भय के बिना कोई किसी से सहयोग ही करता है।

—बनिये जैसा निर्मम और निपट स्वार्थी भी भय के सामने हार मानता है।

दबतौ रैणौ ई लांठौ दांव। ६३५१

दबकर रहना ही बड़ा दाव।

—संसार में हर किसी से दबकर रहना ही सर्वोपरि नीति है।

—दबकर रहने से सरल अन्य कोई उपाय नहीं।

दबय्यू-दबय्यू रेवे दियो नी ते दलाली पांती आव हैं। – भी.४४० ६३५२

स्वयं दबा रहकर मामले को भी दबा दो वरना दलाली देनी पड़ेगी।

—कोई भेद प्रकट होने पर या छिपी बात सामने आने पर कुछ संकट आने का खतरा बना रहता है, शायद दंडित भी होना पड़े, इसलिए सब-कुछ दबा-दबा रखना ही श्रेयस्कर है।

—किसी भी प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़े, इसका एकमात्र उपाय है, सब के सामने दबकर रहना।

दबसी सो हारसी, आ ई मिंयां री फारसी। ६३५३

दबेगा सो हारेगा, यही मियाँ को तारेगा।

—मियाँ-भाइयों की यही कारगर नीति रही है कि चाहे बहसबाजी हो, फसाद हो, चाहे युद्ध हो, उस में दबना नहीं चाहिए, जो दबेगा वही हारेगा।

—किसी से भी सामना करना हो, पूरी ताकत और पूरी हिम्मत से करना चाहिए।

दबी चूसी कांन कटावै। ६३५४

दबी चुहिया कान कटाये।

—यों चूहा भी अत्यधिक चालाक और सतर्क जीव है, आसानी से पकड़ में नहीं आता, पर एक बार कब्जे में आ जाये तो चुपचाप कुछ भी सहने को तैयार हो जाता है।

—कैसा भी होशियार और सक्षम व्यक्ति फंदे में फँसने पर पस्त हो जाता है।

दबी ने रेवू दन्या में हूदो है।– भी.४४१ ६३५५

दबकर रहना दुनिया में सबसे आसान काम है।

—दबकर रहने में न ताकत की आवश्यकता है, न शौर्य की, न धन की और न संगठन की। हाथ जोड़ने से ही फंदा कट जाता है।

—दुनिया में दबकर जीना ही सर्वोत्तम सिद्धांत है।

दब्योड़ी मिन्नी ऊंदरा सूं कांन वढ़ावै। ६३५६

दबी हुई बिल्ली चूहे से कान कटाये।

दे.क.सं.१६५२

दमड़ां रौ लोभी बातां सूं कद रीझै! ६३५७

रुपयों का लोभी बातों से कब रीझे!

—जिस व्यक्ति को रुपयों का चस्का लग गया हो, उसे बातों के द्वारा नहीं बहलाया जा सकता।

—रिश्वतखोर कर्मचारी या नेता बातों से खुश नहीं होता, मन-वांछित रुपये प्राप्त होते ही उसके हृदय की कली-कली खिल जाती है।

दमड़ी रा छांणां धूंवाधार मचाई। ६३५८

दमड़ी के कंडों ने धूआँधार मचाया।

—रुपये फूँकने से सब काम सफल होते हैं।

—हैसियत छोटी और आडंबर बहुत।

—कम पैसों से अधिक मौज मारना।

दमड़ी री डोकरी अर टकौ सिर मुंडाई रौ। ६३५९

दमड़ी की बुढ़िया और टका सिर मुँडवाई का।

—तुच्छ वस्तु पर ज्यादा खर्च करना।

—अक्षम व्यक्ति ज्यादा अहमियत दिखाये तब।

मि.क.सं.५५१०

दमड़ी री हांडी ई ठोक-बजायनै लेवणी। ६३६०

दमड़ी की हँडिया भी ठोक-बजाकर लेनी चाहिए।

—छोटी-से-छोटी वस्तु को खरीदते समय लापरवाही न दिखाकर अच्छी तरह परखकर लेना चाहिए।

—ज़ीवन में सतर्कता का महत्त्व भी कम नहीं।

मि.क.सं. ५५११

दमड़ी री हांडी फूटी अर कुत्ता री जात पिछांणी। ६३६१

दमड़ी की हँडिया फूटी और कुत्ते की जात पहिचानी।

—हँडिया में रखी चीज को कुत्ता जूठा कर गया तो कोई बात नहीं, लेकिन कुत्ते के लच्छनों का तो पता चल गया, भविष्य में सतर्क रहने के लिए यह सबक पर्याप्त है।

—किसी विश्वस्त परिजन से मामूली धोखा खाकर हमेशा के लिए सतर्क रहने का सबक मिल जाय तब!

मि.क.सं.५५१२

दम-भाई सगा भाई, अवर भाई घसड़-पसड़। ६३६२

दम-भाई, सगे भाई, और भाई घसर-पसर।

—अफीम, गाँजा और सुल्फा पीने वालों में सगे भाइयों से अधिक घनिष्ठता होती है।

—नशेबाजों में प्यार अधिक होता है।

—रक्त-संबंधों की अपेक्षा भावना का रिश्ता अधिक प्रगाढ़ होता है।

दरजण रौ डीकरौ जीवै जित्तै सींवै। ६३६३

दर्जिन का बेटा, जिये तब तक सीये।

—जिसका जो पेशा होता है, उम्र भर वही काम करने में जिंदगी गुजार देता है।

—कहावत भी है—जीना तब तक सीना। जब तक जीना है तब तक काम से पीछा नहीं छूट सकता।

दरजियां वाळी पाल ! ६३६४

दर्जियों वाली पाल !

संदर्भ-कथा : जोधपुर के पास ही पाल नाम का एक बड़ा ठिकाना था। जोधपुर के दर्जियों के पास अलग-अलग गाँवों से लोग कपड़े सिलवाने आते तब अक्सर डकैतों की चरचा चलती रहती कि चार-पाँच डाकुओं ने अमुक गाँव लूट लिया, फलाँ ने फलाँ गाँव में डकैती की और हजारों का माल लूट ले गये। इस तरह के किस्से रोज सुनते-सुनते उन्होंने भी सोचा कि रात-दिन कैंची सूई से मशक्कत करते हैं तब कहीं पेट भरता है। हम भी कहीं डकैती डालकर मौज क्यों नहीं मनाएँ ! सबने मिलकर मंत्रणा की। सबसे पहिले पाल से ही क्यों न शुरुआत की जाए। सो तीन-चार घड़ी रात ढली तब पचासेक दर्जी पाल गाँव की सीमा पर पहुँच गये। डाका डालने का पहिला ही काम था। गहराई से सोचा कि अभी तक तो लोग-बाग जाग रहे होंगे। सवेरे ढलती रात सभी मजे में मीठी नींद ले रहे होंगे, तब टूट पड़ेंगे। फिलहाल यहीं सो ज़ाएँ। यह विचार सभी को पसंद आया।

जो व्यक्ति सबसे आगे सो रहा था, उसने सोचा कि वह सबसे पीछे चला जा जाए तो ठीक है। चुपके से खिसककर सबसे पीछे सो रहा। यही होशियारी सबने बरती। इस तरह करते-करते सारे दर्जी जोधपुर पहुँच गये। मन मारकर अपने-अपने काम में फिर व्यस्त हो गए। —कमजोर मनोबल का व्यक्ति बड़े हौसले का काम नहीं कर सकता।

पाठा : सूतौ दरजी सात कोस चालै। सूतौ दरजी सात कोस वाढ़ै।

उपरोक्त प्रसंग से ही यह बात स्पष्ट हो जाती है कि किस तरह दरजी सोते-सोते ही पाल से जोधपुर पहुँच गये।

दरजी ! कांचळी सींव जांणै के म्हारौ नांव ई कांचळियौ। ६३६५

दरजी ! कंचुकी सीना जानता है कि मेरा नाम ही कंचुकीराम है।

संदर्भ-कथा : एक दरजी अपने ननिहाल पैदल ही जा रहा था। सीधे रास्ते से फासला लंबा हो जाता था। उसने सोचा कि रास्ता छोड़कर चले तो फासला कुछ कम हो जाएगा। गर्मी की मौसम में जितना आराम मिले वही काफी है। किंतु बीहड़-बीहड़ चलने से वह भटक गया।

साँझ पड़ते ही बीच में एक गाँव आया । रात को यहीं विश्राम कर ले तो अच्छा है । यों अँधियारे में डर भी लगता था । एक भले राजपूत ने रात भर विश्राम की हामी भर ली । खाना खिलाया । बाहर खटिया बिछा दी । सवेरे जाने लगा तो ठकुरानी ने पूछा, भैया, कंचुकी सीना जानते हो तो उसने मुस्कराकर कहा कि माजी मेरा नाम ही कंचुकीराम है । दही-खीच का डटकर कलेवा किया । ठकुरानी और बहू की इच्छा हुई कि एक-एक कंचुकी सिलवा लें तो ठीक रहेगा । दरजी ने सोचा कि इस तररह तो ननिहाल पहुँचने में बहुत देर हो जाएगी । मन में चालाकी सूझी । बहू की कंचुकी का नाप उसने पूरी कलाई तक लिया, जबकि सधवा का नाप कुहनी तक ही लेना चाहिए । विधवा ठकुरानी का माथा ठनका । सोचा शायद भूल पड़ गई हो । जब उसने नाप दिया तो दरजी ने कोहनी तक की लंबाई ली । जबकि उसका नाप गट्टे तक लेना चाहिए । सधवा-विधवा की पहिचान कंचुकी से ही मालूम पड़ती है । ठोट दरजी को दुत्कार कर निकाल दिया ।

—चालाक व्यक्ति अपनी होशियारी से कहीं भी बच निकलता है ।

पाठा : वीरा ! **कांचळी सींव जांणै कांई के म्हारौ तौ नांव ई कांचळियौ ।**

दरजी री सूई कदै ई रेजी में तौ कदै ई रेसम में । ६३६६

दर्जी की सुई कभी खद्दर में तो कभी रेशम में ।

—हर व्यक्ति के जीवन में कभी आराम तो कभी कठिनाई आती ही रहती है ।

—अच्छे- बुरे दिन साथ-साथ चलते हैं, इनसे बच निकलना संभव नहीं ।

दरजी रौ तौ सै कीं सूई-डोरौ ई होवै । ६३६७

दर्जी का तो सब-कुछ सुई-डोरा ही होता है ।

—जो व्यक्ति न्यूनतम साधनों से अपना जीवन निर्वाह कर ले ।

—काम करने की इच्छा हो तो बड़े साधनों के अभाव में भी गुजारा हो सकता है ।

दर माथै लूंकी लांठी व्है । ६३६८

अपने बिल पर लोमड़ी भी बड़ी होती है ।

दे.क.सं.८९७

दरवाजा जड़िया रह्या, नीसरग्या असवार। ६३६९

दरवाजे बंद रहे, निकल गये सवार।

—महापराक्रमी व्यक्ति के लिए जो कैसे भी पहरों के बीच से भाग निकले।

—लक्ष्मी को जाना होता है तो सात तालों के दरवाजों से भी निकल सकती है।

—शरीर से प्राण निकल जाने पर यह उक्ति इसका प्रतीक है।

—जब कोई दुराचारी समस्त परिवार की चौकसी के बावजूद भाग निकले।

दरसण तौ देवतावां रा ई व्हिया करै। ६३७०

दर्शन तो देवताओं के ही होते हैं।

—बड़े व्यक्ति अपने ऊपर न लेकर दर्शनों की बात कहने वाले को कहते हैं—आदमी, आदमी के क्या दर्शन करे, दर्शन तो केवल ईश्वर या देवता के ही होते हैं।

—बड़े व्यक्ति की विनम्रता को लक्ष्य करके...!

दरसण में ई घाटौ। ६३७१

दर्शन का ही घाटा।

—बड़े व्यक्तियों पर कटाक्ष कि उनके तो दर्शन ही दूभर हो रहे हैं।

—चुनाव के दिनों में घर-घर हाथ जोड़ने वाले नेता जीतने के बाद वापस मुँह न दिखाएँ और मिलने जाएँ तो मिलते नहीं, उनके लिए।

दरसण मोटा, परवाड़ा खोटा। ६३७२

दर्शन मोटे, करतब खोटे।

—जिन व्यक्तियों का नाम बड़ा हो और आचरण निकृष्ट हो तब।

—जिस बड़े व्यक्ति की काफी बदनामी हो।

दरियाव रौ वासौ अर माछ सूं बैर। ६३७३

समुद्र का निवास और मगरमच्छ से बैर।

—अपने से ताकतवर आदमी के साथ दुश्मनी ठीक नहीं।

—दुष्ट आदमी से अनबन होने पर जान-माल की क्षति होती है।

दळतां ऊरियौ जिकौ आपरौ । ६३७४

दलते हुए जो डाला वह आपका है ।

—चाकी में पीसते समय या दलते समय जो डालते हैं,जितना डालते हैं,वही अपना है । चाकी कुछ भी घटा-बढ़ाकर नहीं देती ।

—जितना पुण्य करोगे,उतना ही फल मिलेगा ।

दळवा वाळी दळाई लेई ने जाहें ।– भी.४४२ ६३७५

दलने वाली दलाई लेकर जाएगी ।

—दलने वाली स्त्री अपना मेहनताना लेकर जाएगी ।

—जिसने मजदूरी की है,वह अपनी मजदूरी तो लेगा ।

पाठा : दळसी सो देनगी लेसी ।

दलाल रै देवाळौ नीं, मसीत रै ताळौ नीं । ६३७६

दलाल के दिवाला नहीं, मस्जिद के ताला नहीं ।

—दलालों के सौदों की लाभ-हानि का भार तो सेठ पर ही होता है,वह तो केवल दलाली का ही अधिकारी है । मस्जिदों में सामान के अभाव में चोरी का डर ही नहीं रहता,इसलिए ताले की जरूरत ही नहीं पड़ती ।

—जिम्मेदारी तो कर्ता की ही होती है,दूसरों की नहीं ।

पाठा : दलाल रै देवाळौ नीं, हींजड़ा रै साळौ नीं अर मसीत रै ताळौ नीं ।

दळियौ खायनै इळायची नीं मांगीजै । ६३७७

दलिया खाकर इलायची नहीं माँगी जाती ।

—गरीब का जस-तस पेट भर जाय,वही बहुत है,उसे आडंबर या नखरे की वेला ही कहाँ है ।

—अपनी हैसियत से अधिक आशा रखना व्यर्थ है ।

दवागण रै लागै सवागण पाय, म्हारै सरीखी कर म्हारी माय । ६३७८

दुहागिन के सुहागिन लगे पाँव मेरे समान कर मेरी माँ ।

दवागण = दुहागिन = जिस औरत का पति विमुख हो, रुष्ट हो। यदि कोई सुहागिन उससे पालागन करे तो वह ऐसी कामना करती है कि वह भी उसी के समान दुख उठाये, उससे भी अपना पति विमुख हो।

—कोई बुरा या नशेबाज या कोई अभागा व्यक्ति अपनी मंडली बढ़ाना चाहे, तब।

दस बिसवा दादांणौ, बीस बिसवा मांमाळ। ६३७९

दस बिस्वा दादेरा, बीस बिस्वा ननिहाल।

—दादा पक्ष की अपेक्षा संतान पर ननिहाल का अनुवांशिक प्रभाव ज्यादा पड़ता है।

—परोक्ष-अपरोक्ष रूप से सही, संस्कारों का प्रभाव अपरिहार्य है।

दस भायां री भांण कंवारी डोलै। ६३८०

दस भाइयों की बहिन कुँवारी डोलती है।

—किसी बहिन के दस भाई हों तो उसके विवाह की जिम्मेदारी किसी एक की बजाय सबकी समान रूप से रहती है। वे सभी एक दूसरे पर निर्भर रह जाते हैं।

—कई कार्य-कर्ताओं के होने से किसी एक पर उत्तरदायित्व नहीं रहता।

—परिवार में किसी एक मुखिया की जिम्मेदारी न हो तो घर बिखरने लगता है।

—किसी परिवार में सदस्य ज्यादा हों और काम बिगड़ जाये तब इस उक्ति का प्रयोग होता है।

दसां दसरावौ अर बीसां दीवाळी। ६३८१

दस दिन बाद दशहरा और बीस दिन बाद दीवाली।

—स्थापना के दस दिन पश्चात् दशहरे का त्योहार और दशहरे के बीस दिन बाद दीवाली का त्योहार निश्चित है। गाँव में अनभिज्ञ लोगों को गणना करके समझाने के लिए कि इसी अवधि के बीच दोनों त्योहारों की तैयारी करनी है! महीने के तीस दिनों का हवाला देने की बजाय त्योहारों के प्रति उमंग को उकसाने से मन पर गहरा असर पड़ता है।

दसां री लाकड़ी नै अेकण रौ भारौ। ६३८२

दस की लकड़ी और एक का गट्ठर।

—दस व्यक्ति एक-एक लकड़ी देने का सहयोग करें तो एक गट्ठर का योगदान हो जाता है।
—मनुष्य समाज में आपसी सहयोग से ही काम चलता है।

दसा फोरी आवै तंद खूंटी ई हार गिटै। ६३८३

ग्रह-दशा खराब आये तो खूँटी भी हार निगल जाती है।

—राजा विक्रमादित्य की यह सर्वविदित कथा है कि उसकी ग्रह-दशा एक बार इस सीमा तक बिगड़ गई कि दूसरे राजा के महल में विक्रमादित्य अकेला ही ठहरा था और उसके देखते-देखते खूँटी हार निगल गई। उसकी बात पर भला कौन विश्वास करता? विश्वास तभी हुआ जब राजा व दरबारियों के सामने उसकी ग्रह-दशा सुधरने पर खूँटी ने वापस हार उगल दिया। सबको सही पता लगने पर राजकुँअरी के साथ उसका ब्याह रचा दिया।
—दिनमान से बड़ा कोई दुश्मन नहीं और दिनमान से बड़ा कोई हितैषी नहीं।
—ग्रह-दशा खराब होने पर, कब किस वक्त कुछ भी अनहोनी घटित हो जाय, पता नहीं चलता।

दसा रौ चक्कर। ६३८४

ग्रह-दशा का चक्कर।

—ग्रह-दशा के चक्कर कोई भी टाल नहीं सकता।
—ग्रह-दशा का चक्कर ईश्वर के रोके भी नहीं रुक सकता।

दस्तां लागै अर सराय में डेरा। ६३८५

दस्तें लगे और सराय में डेरा।

—अपनी हैसियत से ऊँची आकांक्षा कभी पार नहीं पड़ती।
—सर्वथा नाकाबिल व्यक्ति की महती कामना पर कटाक्ष।

दही खावूं, मही खावूं। ६३८६

दही खाऊँ, मही खाऊँ।

—जिस व्यक्ति का मन बहुत ही डाँवाडोल हो—पल-पल में परिवर्तित होने वाला।
—जिस व्यक्ति का मन रंचमात्र भी स्थिर न हो, कभी किसी बात के लिए तरसे और कभी किसी बात के लिए ललचाये!

दही जावणी दोनूं गमाई । ६३८७

दही-हँडिया दोनों गँवाई ।

—प्रतिष्ठा और धन दोनों गँवाने पर ।

—अधिक लोभ करने से दोहरा नुकसान हो तब ।

दही ने दूणो हारो ग्यो ।– भीं.४३४ ६३८८

दही और बासन दोनों गँवाये ।

दे.क.सं.६३८७

दांणां री जात नीं अर खुररौ रगड़ै नव-नव बार । ६३८९

दानों का तो पता ही नहीं और खरहरा रगड़े नौ-नौ बार ।

—घोड़े का संपूर्ण स्वास्थ्य दाने-चारे पर ही निर्भर करता है । उसकी बजाय खरहरा चाहे कितनी ही बार घोड़े की पीठ पर रगड़ा जाय, चमक नहीं आ सकती ।

—जो व्यक्ति अपनी मजबूरी को छिपाने के लिए ऊपरी दिखावा करे ।

—जिस व्यक्ति की आर्थिक स्थिति खराब हो, लेकिन सजधजकर रहने का शौक हो ।

—काम करने वाले व्यक्ति के खाने की माकूल व्यवस्था न करके, केवल उसकी प्रशंसा करके उसे खुश रखना चाहे, उनके लिए ।

पाठा : दांणौ नीं चारौ, खुररौ तीन-तीन वळा ।

दांणा-दांणा माथै म्होर छाप । ६३९०

दाने-दाने पर मोहर लगी है ।

संदर्भ-कथा : भारतवर्ष में किसी एक राजा का बड़ा साम्राज्य था । उसको झूठी बात से बेइंतहा चिढ़ थी । हत्या, चोरी, जारी व डकैती से भी ज्यादा । एक दिन वह वेश बदलकर प्रजा के हाल-चाल जानने के लिए निकला । उसे एक तिलकधारी अधेड़ बामन मिला । एक ही बात की रट लगाये जा रहा था—दाने-दाने पर मोहर लगी है । राजा अदेर दरबार में लौट आया । सैनिकों को उस अधेड़ बामन का हुलिया बताकर कहा कि उसे तत्काल बंदी बनाकर लाओ । राजा का आदेश होने पर कैसी ढील ! थोड़ी देर में सैनिक उसे पकड़कर ले आये । दीवान की

बजाय स्वयं राजा ने उसे डाँटते हुए गुस्से में कहा, 'मेरे राज्य के नियम-कायदों का पता नहीं कि झूठ बोलने पर सबसे बड़ी सजा मिलती है...।'

राजा आगे और भी कुछ कहना चाहता था, इस बीच बामन ने बेसब्री से कहा, 'सब जानते हुए भी मैं अपनी बात से सपने में भी नहीं मुकरूँगा कि दाने-दाने पर मोहर लगी है। मेरी बात झूठी हो तो मैं सूली पर चढ़ने को तैयार हूँ।' इस बार राजा अपना धैर्य बुरी तरह खो चुका था। बिजली की नाईं कड़कते कहा, 'झूठों के सरताज, तेरे लिए सूली की सजा भी कम है। यदि तू अपनी बात को साबित नहीं कर सका तो दुनिया की सबसे बड़ी सजा तुझे दूँगा और यदि साबित कर दी तो तुझे यह राज्य सौंप दूँगा।'

बामन ने मुस्कराते कहा, 'राजन् न मुझे किसी राज्य का लोभ है और न दंड का भय। इस अधेड़ उम्र तक पहुँचते-पहुँचते मैंने केवल इसी सत्य को जाना है !

अब राजा अपनी तरकीब को छिपाने में असमर्थ रहा। मुट्ठी खोलकर हाथ आगे बढ़ाया और पूछा, 'बता, इस दाने पर किस नाम की मुहर लगी है ?'

बामन जैसे इसी बात की प्रतीक्षा कर रहा था। राजा की हथेली से ज्वार का दाना लेकर अपनी दाहिनी हथेली पर रखकर उसे आँखें फाड़कर देखने लगा मानो उस पर लिखी कोई अदृष्ट लिपि बाँच रहा हो। हथेली को और ऊपर उठाकर देखने लगा। फिर सहसा मुँह ऊँचा करके बोला, 'काबा के एक मुर्गे की मुहर लगी है, इस पर ...।'

राजा के गुस्से को पलीता लगा हो। उबलती वाणी में कहा, 'मुझे बेवकूफ समझ रखा है ? इस दाने पर काबे के मुर्गे की मुहर ? असंभव ! मैं भी बाँचूँ जरा, यह मुहर कहाँ लगी है ?'

राजा ने बामन के हाथ से वह दाना लेकर देखने की चेष्टा की। उसे कुछ नजर नहीं आया। तब बामन ने मुस्कराते कहा, 'यह विद्या आप नहीं जानते। सारे विश्व में मेरे सिवा यह लिपि कोई नहीं बाँच सकता।'

'फिर चालाकी ?' उसने सैनिकों को आदेश दिया कि जब तक यह बात साबित न हो पंडितजी को तहखाने में डाल दो। यह आदेश देकर उसने एक बार फिर हथेली को नाक के पास ले जाकर देखा। तनिक जोर से साँस खींचा तो ज्वार का दाना नाक में चढ़कर कहीं ऊपर जाकर ऐसा अटका कि छींकने पर वापस निकला ही नहीं। वह चिंतित मुद्रा में हीरे-मोती जड़े रंगमहल में चला गया। और उधर बामन सैनिकों के साथ तहखाने में।

सवेरे राजा उठा तो बेहाल। माथे में असह्य दरद ऐसा शुरू हुआ कि छटपटाने लगा। वैद्य-हकीम आये पर कुछ निदान नहीं कर सके। एक बुजुर्ग हकीम ने नब्ज देखकर कहा,

'हुजूर, माफ करें, इस देश में तो आपके सिर-दर्द का कोई पता नहीं लगा सकता। सिर्फ काबा में एक पहुँचे हुए हकीम हैं। फकत वे ही कुछ बता सकें तो गनीमत है। यहाँ किसी दवा से यह दर्द नहीं मिटेगा।'

फिर कैसी ढील! काबा की दिशा में राजा की नौका चल पड़ी। रानी और बड़ा राजकुँअर भी साथ।

समुद्र की लहरों पर झूलती हुई नौका पालने के समान काबा पहुँची। शाही महल में शान के साथ उन्हें ठहराया गया। सबसे बड़े हकीम ने नब्ज देखकर कहा, 'हुजूर बाहर चौक में चलना पड़ेगा। राजा का मरने जैसा हाल। रानी और राजकुँअर उसे चौक में लाये। हकीम ने गौर से आँखें, ललाट, कान और माथा देखा। जाने क्या सोचकर उसने राजा की गरदन के पीछे जोर से मुक्का मारा और संयोग का करिश्मा कि राजा के नाक से ज्वार का वह दाना नीचे गिर पड़ा। और पास ही खड़े मुर्गे ने बाँग देकर अपनी चोंच से वह दाना निगल लिया। अगले ही क्षण राजा की आँखों में निर्दोष पंडित का चेहरा घूमने लगा। अब कहीं उसकी मुस्कराहट का मायना समझ में आया।

शाही ठाट से उसकी विदाई हुई। बुर्जुर्ग हकीम को जी भर कर इनाम दिया। लौटते समय सात दिन पहिले नौका उसके राज्य में पहुँची।

राजा स्वयं रानी और राजकुँअर के साथ तहखाने में पहुँचा। बामन के पाँव पकड़कर क्षमा माँगी। फिर अपने वचन का पालन करते हुए उसने बामन को साम्राज्य सौंपने की खातिर सच्चे मन से खूब निहोरे किये। पर बामन तो माना ही नहीं। अंत में राजा को समझाते कहा, 'मैंने अपने जीवन में जो विद्या अर्जित की है, उसके मुकाबले ऐसे सौ राज्य भी तुच्छ हैं। मन में राज्य का लोभ आते ही मैं यह विद्या भूल जाऊँगा। मेहरबानी करके अब और हठ मत कीजिए।'

राजा ने जाने क्या सोचकर कहा, 'अपनी विद्या आप मुझे नहीं सिखा सकते?'

'जरूर सिखा सकता हूँ। लेकिन साम्राज्य का मोह छोड़ना पड़ेगा।'

राजा ने अधीर स्वर में कहा, 'मैं तैयार हूँ।' तब रानी ने मुस्कराते कहा, मैं भी आपके साथ रहूँगी। आपके अलावा मेरी कहीं ठौर नहीं है।'

तत्पश्चात् बड़े राजकुँअर को चक्रवर्ती साम्राज्य सौंपकर राजा-रानी प्रमुदित होकर अधेड़ बामन के साथ रवाना हो गये, मानो उससे भी बड़ा राज्य उनके हाथ लगा हो।

—हर मनुष्य का भोजन-पानी पूर्व निश्चित है, जहाँ लिखा है, वहीं खाएगा, पीएगा।

दांणौ-पांणी रौ सीर। ६३९१

दाने-पानी का साझा।

—जब तक दाने-पानी का संयोग नहीं जुड़ता, तब तक उसके मिलने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता।

—दाना-पानी तो जिस वक्त जहाँ मिलना है वहीं मिलेगा।

दांणौ-पांणी परसरांम, बांह पकड़ लै जात। ६३९२

दाना-पानी परशुराम, बाँह पकड़ ले जाय।

—जहाँ जिस ठौर कमाई का ठिकाना होगा, वहीं संयोग उसे बाँह पकड़कर ले जाएगा।

—अपनी इच्छा से योजना बनाकर मनुष्य कहीं कुछ भी कमाई नहीं कर सकता, जहाँ कमा खाने का योग है, भाग्य अपने-आप वहीं खींच ले जाता है।

दांत-काटी रोटी। ६३९३

दाँत-कटी रोटी।

—अपनी चीज को जब चाहें, जैसा चाहें उसी तरह प्रयोग में ले सकते हैं। इच्छानुकूल बरत सकते हैं।

—अपने अधिकार में जो वस्तु हो उसे बरतने के लिए न किसी के आदेश की जरूरत है और न अनुमति की।

दांत काढ़ै नातै आई भांवण काढ़ै ज्यूं। ६३९४

दाँत निकाले जैसे नाते आई भाँबिन निकाले ज्यों।

नातौ = नाता = हिंदुओं की कुछ जातियों में प्रचलित एक प्रथा, जिसके अनुसार पति की मृत्यु अथवा अन्य किसी कारण से स्त्री का किसी दूसरे पुरुष के साथ पत्नी रूप में संबंध किया जा सकता है।

—पहिले ब्याह में तो स्त्री लाज-संकोच भी रखती है पर पुनर्विवाह में पहिले-सी लाज नहीं रहती, वह जब-तब मुस्कराने लगती है, तनिक मुक्त होकर हँसी ठिठौली भी कर बैठती है।

—जो व्यक्ति अकारण बिना किसी प्रसंग के दाँत निकाले या जब-तब मुस्कराये उसके लिए।

दांत कुचरियां सूं पेट नीं भरीजै। ६३९५

दाँत कुचरने से पेट नहीं भरा जाता।

—अमूमन लोग-बाग भोजन करने के उपरांत दाँत कुचरते हैं। पर जो व्यक्ति बिना कुछ खाये, यह दिखावा करे कि उसने खाना खा लिया है, इस दिखावे से तो पेट भरता नहीं।

—व्यर्थ दिखावा करने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

दांत जठै चिणा नीं अर चिणा जठै दांत नीं। ६३९६

दाँत जहाँ चने नहीं और चने जहाँ दाँत नहीं।

दे. क.सं.४३८४

दांतण फाटौ नै पाप न्हाटौ। ६३९७

दतौन फटा और पाप भगा।

—पुराने प्रचलन के अनुसार नीम, बबूल, गूगल या जाल आदि का दतौन करने के बाद उसे चीरकर जीभ साफ करते हैं। तत्पश्चात् उसे ऐसी जगह फेंकते हैं कि कोई दूसरा व्यक्ति उस जूठे दतौन का उपयोग न कर सके। यदि कोई भूल-चूक से साबुत दतौन का उपयोग कर ले तो यह पाप-कर्म है। उससे बचने की सरल विधि दतौन चीरकर फेंकना ही है।

—कोई सहज तरीके से पाप मुक्त होना चाहे तब।

दांतण बेच्यां दाळिद्दर नीं जावै। ६३९८

दतौन बेचने से दारिद्र्य नहीं मिटता।

—निहायत सस्ती चीज बेचने से गुजर-बसर नहीं होता।

—छोटा काम करने से बड़ी सिद्धि हासिल नहीं हो सकती।

पाठा : दातळा बेचण सूं दाळद कोनीं जावै। हँसिया बेचने से दारिद्र्य नहीं जाता।

दांत तौ मूंडा में ई चोखा लागै। ६३९९

दाँत तो मुँह में ही अच्छे लगते हैं।

—कोई भी वस्तु अपने यथा-स्थान पर ही शोभा देती है।

—बेबात हँसना उचित नहीं।

पाठा : दांत तौ मूंडा में ई ओपै। दांत तौ मूंडा में ई फाबै।

दांत बिना छप्पन भोग ई फीका। ६४००

दाँत बगैर छप्पन भोग ही फीके।

—दाँतों से चबाने पर ही रस बनता है। और इस में स्वाद होता है। इसलिए दंत विहीन व्यक्ति के लिए सब भोजन फीके हैं। निरानंद हैं।

—इंद्रियों के अभाव में मनुष्य जीवन सर्वथा रसहीन है।

दांत भलांई तूटौ, लोह नीं चबै। ६४०१

दाँत भले टूटें, लोहा नहीं चबता।

—असंभव काम में हाथ डालने से असफलता ही मिलती है।

—जो काम करने के योग्य हो, उसे ही करना चाहिए।

दांतला धणी रै हंसण रौ बेरौ पड़ै नीं रोवण रौ। ६४०२

दंतुर पति के न हँसने का पता चले, न रोने का।

—जिस व्यक्ति की खुशी और नाराजगी का पता न चले।

—जिस आदमी के स्वभाव की सही पहिचान न हो।

—जिस व्यक्ति की खुशी और नाराजगी का कोई परिणाम न हो।

पाठा : **दांतला मांटी रै हंसण रौ पतौ पड़ै नीं रोवण रौ।**

दांतला धणी रौ कीं पतियारौ नीं। ६४०३

दंतुर पति का कुछ भरोसा नहीं।

—दंतुर व्यक्ति का पता नहीं चलता कि वह कब खुश होता है, कब नाराज होता है।

—जिस घुन्ने व्यक्ति की प्रसन्नता और नाराजगी का पता न चले।

पाठा : **दांतला खसम रौ कीं भरोसौ नीं।**

दांतलिया जांणै ठांण रा भाटा व्है ज्यूं। ६४०४

दाँत ऐसे कि मानो ठान के पत्थर हों।

ठांण = ठान = मवेशियों के लिए चरने का स्थान जो पत्थरों से चुना होता है।

—जो निरमोही व्यक्ति दाँतों के रहते हुए भी हँसना नहीं जानता।

—हँसने-मुस्कराने से व्यक्ति के स्वभाव का पता चल जाता है, पर जिस व्यक्ति के दाँतों पर हँसी कभी खिली ही नहीं, वे पत्थरों के ही समान हैं।

दांत हा जद रोटी नीं ही, रोटी है जद दांत कोनीं। ६४०५

दाँत थे जब रोटी नहीं थी, रोटी है तब दाँत नहीं रहे।

—जब इंद्रियाँ स्वस्थ थीं, तब भोग के साधन नहीं थे। और आज भोग के सब साधन उपलब्ध हैं, तब इंद्रियाँ स्वस्थ नहीं रहीं।

—वृद्ध व्यक्ति जब नव-युवती से ब्याह करे, तब अप्रत्यक्ष परिहास के रूप में।

दांतां फाक्यौ सौ ई नफा में। ६४०६

दाँतों से फाँका वही नफे में।

—जो भी चबैना हाथ लगा वही नफे में।

—अभावग्रस्त या गरीब व्यक्ति थोड़े में ही खुश हो जाता है।

दांतां बिचाळै लाली। ६४०७

दाँतों के बीच में लाली।

लाली = जीभ।

—कठोर दाँतों के बीच नर्म-सुकोमल जीभ की नाईं जो सज्जन व्यक्ति दुर्जनों से घिरा हो।

—आधुनिक नेता और नौकरशाही की नृशंसता के बीच निरीह प्रजा की आज यही स्थिति है।

दांतां मांये ते दूध नीं, चोरू वात करे।–भी.४४३ ६४०८

दाँतों में तो दूध ही नहीं, छोकरा बात करता है।

—बड़ों के सामने जब कच्ची उम्र का लड़का बढ़-बढ़कर बातें करे तब।

—बड़ों के बीच छोटे बच्चे का बोलना अशोभनीय है।

दांतां में दूधिया दांत सोवणा। ६४०९

दाँतों में दूधिये दाँत सुहाने।

—निर्दोष, निरपराध बच्चे की हँसी निर्मल होती है। उस में कृत्रिमता नहीं होती।

—दूध पीने वाला शिशु केवल स्वच्छ दूध का ही स्वाद जानता है, बड़ा होने पर तो कई अच्छी बुरी चीजों के स्वाद से पाला पड़ता है।

दांतां री बांधी हाथ सूं को खुलै नीं। ६४१०

दाँतों से बँधी हाथ से नहीं खुलती।

—वाक्-चातुर्य के सामने हाथ निर्बल हैं। जिरह में फँसा आदमी कितने ही हाथ पाँव मारे मुक्त नहीं हो सकता।

—वाक् शक्ति की अपेक्षा अन्य शारीरिक शक्तियाँ निःसत्व होती हैं।

दांतां री भुळावण जीभ नै। ६४११

दाँतों की भोलावन जीभ को।

—नर्म सुकोमल जीभ ने दाँतों से प्रार्थना की—तुम बत्तीस हो, सख्त हो और मैं अकेली हूँ, मेरा ध्यान रखना ! भूल-चूक से भी चबा गये तो मेरा कुछ वश नहीं चलेगा। तब दाँतों ने मुस्कराते कहा, 'हम तो तुम्हारा पूरा ध्यान रखेंगे ही, पर तुम हमारा खयाल रखना, किसी को ऐर-गैर बोल दिया तो हमें एक ही बार में तोड़ डालेगा।'

—जब अपराध कोई करे और सजा दूसरे को मिले, उस प्रसंग में।

पाठा : **दांतां री भुळावण लाली नै।**

दांतां रै लारै स्वाद ई जावै परौ। ६४१२

दाँतों के पीछे स्वाद भी चला जाता है।

—अवस्था के अनुसार ही प्रत्येक चीज अच्छी-बुरी लगती है।

—वृद्धावस्था में जीवन का सब स्वाद नष्ट हो जाता है।

—अवस्था के साथ ही साधन सुहाने लगते हैं।

दांतां रौ कांम आंतां सूं नंह लेवणौ। ६४१३

दाँतों का काम आँतों से नहीं लेना चाहिए।

—दाँतों का काम है चबाना, आँतों का काम है पचाना। यदि दाँत अधूरा काम छोड़ेंगे तो आँतों को पूरा करना पड़ेगा। आँतों का काम बढ़ जाएगा। इसलिए स्वास्थ्य के लिए जरूरी है

कि दाँतों से पूर्णतया चबाने के बाद ही भोजन आँतों में पचाने के लिए पहुँचना चाहिए, ताकि पाचन-क्रिया खराब न हो।

—परिवार के हर व्यक्ति को अपना काम स्वयं करना चाहिए, ताकि वह अन्य परिजनों के जिम्मे न पड़े।

दांतां रौ पीस्योड़ौ नीं खावणौ, घरटी रौ पीस्योड़ौ खावणौ। ६४१४

दाँतों का पीसा हुआ नहीं खाना चाहिए, चाकी का पीसा खाना चाहिए।

—परायी स्त्री से अवैध संबंध होने पर बदनामी होती है, हर जबान पर बात चलती है, इसलिए अपनी विवाहिता पत्नी से संबंध रखने में ही भलाई है।

—हर व्यक्ति को किसी भी तरह की बदनामी से बचना चाहिए।

दांन तौ गुपत ई आछौ लागै। ६४१५

दान तो गुप्त रहना ही अच्छा है।

—लोक मान्यता के अनुसार कि दाहिने हाथ से दिये हुए दान की भनक बाएँ हाथ को भी नहीं लगनी चाहिए। वरना वह दान नहीं रहकर प्रचार हो जाता है।

—इसलिए यह उक्ति प्रचलित है—गुप्त दान महापुण्य।

दांन दियां धन ना घटै, भाखै दास कबीर। ६४१६

दान दिये धन ना घटे, कह गये दास कबीर।

—यह एक प्राकृतिक नियम है कि व्यय करने से वस्तु घटती है। पर दान इस नियम का अपवाद है कि दान करने से घटने की बजाय धन बढ़ता है।

—व्यक्ति की कमाई पर समष्टि का अधिकार है, एक अकेले उस व्यक्ति का ही नहीं।

पूरा दोहा :

चिड़ी चोंच भर ले गई, नदी न घटियौ नीर।
धरम कियां धन ना घटै, कह गये दास कबीर॥

दांन री जड़ तौ ठेट पंयाळ में व्है। ६४१७

दान की जड़ ठेट पाताल में होती है।

—लोक मान्यता के अनुसार धन की जड़ तो दिल में होती है और दान या धर्म की जड़ ठेट पाताल तक गहरी होती है। इसलिए धर्म के पेड़ में कभी पतझड़ नहीं होता।

—इसी उक्ति का दूसरा पहलू है कि संचय की वृत्ति अधर्म है, पाप-कर्म है।

दांन री बाछी रा दांत कुण देख्या ? ६४१८

दान की बछिया के दाँत किसने देखे ?

—मुफ्त का माल जैसा भी मिल जाय वह उत्तम है, उस में कोई दोष नहीं होता, इसलिए उसकी परख करने में कोई सार नहीं।

—मूल्य चुकाकर खरीदी हुई वस्तु का महत्त्व होता है, दान में मिली वस्तु का महत्त्व नहीं होता।

दांनौ तौ दुसमण ई आछौ। ६४१९

समझदार तो दुश्मन भी अच्छा।

—समझदार व्यक्ति दुश्मन होने पर भी कई बिंदुओं पर सोच-विचार करता है। उसकी दुश्मनी से अनहोनी क्षति नहीं होती। इसके विपरीत मूर्ख व्यक्ति से मित्रता रखना भी ज्यादा घातक हो सकता है।

—बुद्धि का माहात्म्य और मूर्खता की प्रताड़ना कि दुश्मन भी हो तो वह मूर्ख की बजाय अक्लमंद होना चाहिए।

दांम अंटै, विद्या कंठै। ६४२०

दाम अंट में, विद्या कंठ में।

अंटी = अंट = धोती लपेटकर जिस में रुपया पैसा दबाकर रखा जाता है।

—धन वही काम आएगा जो अपनी अंटी में हो, पास हो और विद्या वही काम आएगी जो अपने कंठ में बसी हो। पोथियों में बंद ज्ञान कुछ काम नहीं आता। तहखाने में सोने की ईंटें पड़ी हैं, यदि वक्त पर पास न हों तो वह धूल के समान है।

दांम ई खोटा तौ पारखी नै कांई दोस ? ६४२१

दाम ही खोटे तो पारखी में क्या दोष ?

—जब अपना सिक्का ही खोटा है तो परख करने वाले का कसूर बताना उचित नहीं, वह खोटे को खरा तो नहीं कर सकता।

—जब अपने घर की संतान ही बुरी है तो दूसरों में दोष खोजने में कोई सार नहीं।

दांम संवारै कांम। ६४२२

दाम सुधारे काम।

—दाम या धन ही वह सर्वोपरि शक्ति है जिससे दुनिया के सभी काम सुधरते हैं। मुद्रा न हो तो न शरीर की ताकत काम में आती है, न बुद्धि की और न आत्मा की।

—ईश्वर की तरह धन भी सर्वशक्तिमान है।

दांमां रौ लोभी बातां सूं नीं मांनै। ६४२३

दामों का लोभी बातों से नहीं मानता।

—लोभी मनुष्य को कितनी ही शिक्षाप्रद या उच्च आदर्श की बातें बताई जाएँ, उनका उस पर कुछ भी असर नहीं होता। उसकी आत्मा तो केवल धन से ही संतुष्ट होती है।

मि.क.सं.६३५७

दाई भली नीं फत्ती, दोन्यूं रांड कुपत्ती। ६४२४

दाई भली न फत्ती, दोनों ही राँड कुपत्ती।

—अकुशल व्यक्ति से कोई काम सफल नहीं हो सकता।

—काम बिगड़ने के बाद योग्य व्यक्ति भी उसे सुधार नहीं सकता।

दाई रांड टक्का ई लेयगी नै कूंडौ ई फोड़गी। ६४२५

दाई राँड टक्के भी ले गई और कूँडा भी फोड़ गई।

—प्रसव की वेला बच्चे की आँवल काटने के बाद दाई उसे माटी के कूँडे में नहलाती है। घरवाले अपनी खुशी से नेग के रूप में टका डालते हैं। टका तो दाई को ही लेना होता है, पर हड़बड़ी में कूँडा भी फोड़ जाय तब दुहरा नुकसान कर देती है।

—जो व्यक्ति किसी से अपनी स्वार्थ सिद्धि तो करले और उलटा उसे ही नुकसान पहुँचा दे।

दे.क.सं.५५२९

दाई रांड मांगत रा ई लेयगी। ६४२६

दाई राँड प्राप्य का ही ले गई।

—प्रसव के पश्चात् दाई तो अपना नेग पूरा ले जाय और कुछ समय बाद संतान न रहे तब कुंठित मन से यह कहा जाता है कि वह अपना प्राप्य तो ले गई, अपने भाग्य से संतान न बची तो वह क्या करे।

—पैसे खर्च करने के बाद दुर्योग से काम बिगड़ जाय तब।

दाई रै घरै दीयां री कांईं कमी! ६४२७

दाई के घर दीयों की क्या कमी!

—उस समय जब माटी के बासनों का ही पूर्णतया प्रचलन था। प्रसव के पश्चात् भी दाई काफी समय तक काम करती थी। जच्चा की तीमारदारी और बच्चे की आटे से मालिश। मिट्टी के दीये में तेल रखा जाता था। मालिश करने के पश्चात् वह दीया अपने घर ले जाती थी। वह शुभ भी माना जाता था और स्वास्थ्य की दृष्टि से भी ठीक था। इस तरह कई घरों से उसके पास दीयों का ढेर हो जाता था। बाहर फेंकना भी अशुभ समझा जाता था।

—किसी व्यक्ति के पास मूल्यहीन वस्तु की प्रचुरता होने के बावजूद उसकी हीनता में कोई फर्क न पड़े, तब उपहास के रूप में इस उक्ति का प्रयोग होता है।

दाई सूं कांईं पेट छांना! ६४२८

दाई से पेट नहीं छिपता!

—जिस व्यक्ति को बाहर-भीतर की सब जानकारी होती है, उसे आसानी से छकाया नहीं जा सकता।

—विज्ञ मनुष्य से कोई बात छिपी नहीं रहती।

—जिस व्यक्ति को जिस किसी इल्म की पूरी जानकारी होती है, उससे उस इल्म बाबत कुछ छिपा नहीं रहता। और वह बड़े गुमान से इस बात को कहता है।

पाठा : **दाई सूं किसा पेट अछांना।**

दाख पकै तद हाड रै होत कंठ में रोग। ६४२९

दाख पके तब काग के होत कंठ में रोग।

—ऐसी लोक मान्यता है कि दाख फलने लगती है तब कौओं के गले में कोई विशेष रोग हो जाता है, गाँठ-सी उभर आती है, फलस्वरूप कौए दाख नहीं खा सकते।

—उस अभागे व्यक्ति के लिए जो मौका मिलने पर भी उसका लाभ नहीं उठा सकता हो।

पाठा : **दाखां पाकै तद कागला रै गळै गांठ उपड़ै।**

दाझ्या नै कांई बाळणौ ? ६४३०

जले को क्या जलाना ?

—दुखी मनुष्य को और दुख देने में कोई सार नहीं। औचित्य नहीं।

—कोई निष्ठुर व्यक्ति किसी गरीब को सताये तब इस उक्ति के द्वारा उसे उलाहना दिया जाता है।

दाझ्या माथै लूण भुरकावै। ६४३१

जले पर नमक डालता है।

—पहिले से दुखी आदमी को और कष्ट देना, जले पर नमक छिड़कने से भी अधिक असह्य होता है।

—उस निर्मम व्यक्ति को दुत्कार जो गरीब व्यक्ति को सताये।

दाट्योड़ी आग। ६४३२

दबी हुई आग।

—दबी हुई आग आखिर बाहर प्रकट होकर ही रहती है, उसे अधिक समय तक दबाकर नहीं रखा जा सकता।

—अपराध या पाप छिपाकर नहीं रखे जा सकते, वे किसी-न-किसी दिन उजागर होते ही हैं।

पूरा दोहा : **पाप छिप्योड़ौ नंह छिपै, छिपै तौ मोटा भाग।**

दाबी-दूबी, नंह रहै, रूई लपेटी आग॥

दाड़ा ना देवाळां राते देखाये।– भी.४४५ ६४३३

दिन का दिवाला, रात को दिखता है।

—दिन में किसी तरह की कमाई न हो तो घर जाने पर रात को चिंता बढ़ जाती है।

—दिन के समय किये हुए कुकर्म रात के अँधियारे में जगमगाते हैं।

दाड़ू नो दाड़ो हरो हरको नी है।– भी.४४४ ६४३४

सभी दिन समान नहीं रहते।

—दिन के बाद रात और रात के बाद दिन बदलते रहते हैं। इसी तरह सुख के बाद दुख और दुख के बाद सुख का चक्कर चलता रहता है।

—समय परिवर्तनशील है, वह कभी स्थायी रूप से जमा नहीं रहता।

दाड़ो कूकड़ा नी वाट नी जोये।– भी.४४६ ६४३५

दिन मुर्गे की प्रतीक्षा नहीं करता।

—मुर्गा सूर्योदय की वेला जोर-जोर से बाँग देता है, पर उसकी बाँग सुनकर सूर्योदय नहीं होता। वह तो अपने समय पर ही उदय होता है। यह संयोग मात्र है कि मुर्गा उसी समय बोलता है।

—होने वाला काम होकर ही रहता है।

—हर व्यक्ति को अपना काम समय पर करना चाहिए, किसी के भरोसे रहना उचित नहीं।

दाड़ो बावची ऊगा जे कणहूं अणचाना ने हे।– भी.४४७ ६४३६

सूर्य का उगना किसी से छिपा नहीं रहता।

—जो बात दिन के उजाले की तरह स्पष्ट हो, उसे छिपाने का निरर्थक प्रयास करना नितांत असंगत है।

—महान विभूतियों के यश का प्रकाश भी किसी से छिपा नहीं रहता।

दाढ़ रस अर काड़ रस छूटै कोनीं। ६४३७

डाढ़ रस और काम रस नहीं छूटता।

—चटोरे व्यक्ति और लंपट व्यक्ति अपनी आदतों से बाज नहीं आ सकते। एक बार इसका स्वाद लग जाय तो वह छूटता नहीं।

—दुनिया में और भी रस बहुतेरे हैं पर ये दो रस सबसे अधिक घातक हैं।

दाढ़ी आयां डूंम बिगड़ै। ६४३८

डाढ़ी आने पर डोम बिगड़ता है।

दे.क.सं.५७७१

दाढ़ी मांय सूं सांप निकळ्यौ। ६४३९

डाढ़ी से साँप निकला।

—कोई अप्रत्याशित दुर्घटना हो जाय तब ।

—अनायास कोई अचीती आफत आ पड़े तब ।

दे.क.सं.५७२६

दाता गाजै, जाचक लाजै । ६४४०

दाता गाजे, याचक लाजे ।

—देने वाला गर्व-गुमान की मुद्रा में रहता है । हाथ पसारकर लेने वाले की आँखें नीची रहती हैं ।

—जिसका हाथ ऊपर, उसका सिर ऊपर । जिसका हाथ नीचे, उसका सिर नीचे ।

दाता देवै अर भंडारी रौ पेट दूखै । ६४४१

दाता दे और भंडारी का पेट जले ।

—देने वाला अपनी मौज में देता है लेने वाला अपनी मजबूरी में लेता है । लेकिन बिचौलियों का मन खिन्न हो जाता है । उन्हें किसी का भी भला नहीं सुहाता ।

—जो व्यक्ति स्वयं तो किसी का भला न करे, लेकिन भला करने वाले भी जिसे न सुहाएँ ।

—बिचौलिये सदा अड़ंगा लगाते हैं ।

पाठा : दाता देवै अर भंडारी बिचाळै ई पेट कूटै । तेल बळै रावळौ नै कळपै कोठारी ।

मि.क.सं.६११५

दाता देवै पण रुवाण-रुवाण नै देवै । ६४४२

दाता देता है पर रुला-रुलाकर देता है ।

—यहाँ दाता से मतलब ईश्वर के लिए भी है । ईश्वर के घर क्या कमी है, पर वह भी रुला-रुलाकर देता है ।

—जो व्यक्ति सहयोग तो करे पर साथ ही परेशान करने में भी कमी न रखे ।

—जो व्यक्ति बेहद कठिनाई से गुजर-बसर करता हो । काम में सफलता अवश्य मिलती है, पर कठिनाइयाँ पार करने के बाद ।

दाता देवै, भोपा खावै । ६४४३

दाता देता है, भोपा खाता है ।

—देवता देता है, पुजारी खाते हैं।

—बिना परिश्रम किये जिस व्यक्ति की मनोकामना पूरी हो जाये, उस पर कटाक्ष।

—मुफ्त का माल उड़ाने वालों पर व्यंग्य।–

दाता बिचै सूम भलौ झटकै उत्तर देय। ६४४४

दाता की बजाय सूम भला जो झट मना कर दे।

—जो व्यक्ति ललचा-ललचाकर अंत में मना करे, उसकी अपेक्षा जो व्यक्ति पहली बार में ही साफ मना कर दे, वह बेहतर है। व्यर्थ की आशा और चक्कर तो बच ही जाते हैं।

—आशा बँधाकर जो व्यक्ति काम न आये, उस पर कटाक्ष।

दातार थाकै पण जाचक नीं थाकै। ६४४५

दाता थक जाय पर याचक नहीं थकता।

—देने वाले की सीमा होती है, पर लेने वाले की कोई सीमा नहीं होती।

—लेने वाला तो जीवन-पर्यंत मना न करे, पर देने वाला तो आखिर तंग आ ही जाता है!

दातार दूबळौ नीं व्हैणौ। ६४४६

दातार दुबला नहीं होना चाहिए।

—दातार इस सीमा तक समर्थ हो जो कभी किसी को मना करना ही न चाहे।

—याचक उसी दातार का यशगान करते हैं, जो कभी देने के लिए न हिचकिचाये।

दातार नै जूंझार ढक्योड़ा नीं रैवै। ६४४७

दानी और जूझार छिपे नहीं रहते।

—स्वयं दानी भले ही अपने दान की चर्चा न करे, पर लेने वाले तो करते ही हैं, इसलिए उसका जयगान छिपा नहीं रहता। इसी तरह वीरता और पराक्रम तो मैदान में प्रदर्शित होते हैं, चुपके-चुपके नहीं। कायरता छिपी रह सकती है, पर शौर्य छिपा नहीं रहता।

—दुष्कर्म गुप्त रहते हैं, सत्कर्म सबके सामने उजागर होते हैं।

दाद तौ दासी री जाई नै देवणी के जिकौ बाप निजरां ई नीं दीठौ। ६४४८

दाद तो दासी की जायी को देनी चाहिए जो अपने पिता को जानती ही नहीं।

—जन्म लेने के पश्चात् जीवित रहना तो एक मजबूरी है, पर जिसे अपने जन्मदाता का ही पता न चले और निःशंक जीने का हौसला रखे, वह अवश्य सराहना के योग्य है। कसूर तो जन्मदाता का है, जन्म लेने वाली संतान का नहीं।

—जो व्यक्ति व्यर्थ की लज्जा से पीड़ित न हो, उसके लिए।

दादू दुनियां बावळी सोच करै गैली, रोटी देसी रांमजी दिन ऊगां पैली। ६४४९

दादू दुनिया बावरी क्लेश करे बेकार, रोटी देगा ईश्वर साँझ-सकार।

—मनुष्य की अपनी चिंता से कुछ भी काम नहीं बनता, जो समस्त चराचर की चिंता रखने वाला परमेश्वर है, अंततः उसकी चिंता से ही सारी इच्छाएँ पूर्ण होती हैं।

—भाग्यवादी और अकर्मण्य व्यक्तियों का अंधविश्वास।

—ईश्वर और भाग्य में विश्वास करने वालों की मान्यता।

दादू-दुवारा में कांघसियां रौ कांई कांम। ६४५०

दादू-द्वारे में कंघों का क्या काम!

—रामद्वारे के राम संन्यासी और दादू पंथी सिर मुँडाये रहते हैं, इसलिए कंघे की जरूरत ही नहीं रहती।

—जहाँ जिस वस्तु की आशा ही न हो और उसी की वहाँ चाह रखने वाले के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।

—अपात्र, अयोग्य या असमर्थ व्यक्ति से आशा रखना बेकार है।

मि.क.सं.१२६१

दादौ घी खायौ, म्हारी हथाळी सूंघलौ। ६४५१

दादा ने घी खाया, मेरी हथेली सूँघलो।

—जो व्यक्ति पुरखों के गौरव को ही अपने जीवन का औचित्य समझे।

—जो व्यक्ति अपनी अक्षमताओं को ढाँपने के लिए पुरखों के पराक्रम की हरदम दुहाई दे।

दादौ मरग्यौ रोतौ-रोतौ, मरयां पूठै जायौ पोतौ। ६४५२

दादा मर गया रोता-रोता, मरने के बाद जना पोता।

—समय पर आकांक्षा की पूर्ति न होने पर।

—समय और जरूरत बीत जाने के बाद कोई चीज हाथ लगे तब । मिसाल के तौर पर फसल सूखने के बाद वर्षा का वह महत्त्व नहीं रहता ।

दादौ मोलावै अर पोता बरतै । ६४५३

दादा खरीदे और पोते बरतें ।

—यों तो उत्तराधिकार में पुरखों की संपत्ति, जमीन-जायदाद उनके वंशज ही काम में लेते हैं, यह एक सामान्य परिपाटी है, पर दादा के परिश्रम का फल दादा को न मिलकर पोतों को मिले तब यह कहावत काम में ली जाती है ।

—मजबूत व टिकाऊ वस्तु के लिए जो तीन-चार पीढ़ी तक वह उपयोग में आती रहे ।

पाठा : **द्रादौ लावै नै पोतौ बरतै ।**

दाब्या ज्यांरा गढ़-कोट । ६४५४

दबा लिये उन्हीं के गढ़-कोट ।

—जिसने गढ़ या किले को अपने पराक्रम से दबा लिया, वही उनका स्वामी बन गया । समर्थ व्यक्ति ही संपत्ति का अधिकारी होता है ।

—कब्जा सच्चा और बाकी सब प्रपंच झूठे ।

—शक्तिशाली का ही सर्वत्र बोलबाला होता है ।

—जिस समाज-व्यवस्था में सामर्थ्य ही एकमात्र न्याय-संगत माना जाये ।

दायजौ तौ वींदणी इज लावै । ६४५५

दहेज तो दुलहन ही लाती है ।

—हर व्यक्ति या वस्तु का अपना-अपना महत्त्व और अपनी-अपनी उपादेयता होती है किसी दूसरे से उसकी पूर्ति नहीं हो सकती ।

—जिस व्यक्ति का अन्य कोई विकल्प न हो । लूट-खसोट या चोरी से चाहे जितना धन एकत्रित किया जा सकता है, पर दहेज कम हो चाहे बेशी, वह दुलहन के पीछे ही आता है ।

—कार्य कारण संबंध अपरिहार्य है ।

दायण सूं कांईं पेट अछांना ? ६४५६

दाई से क्या पेट छिपा है ?

—अनुभवी व्यक्ति से कोई बात छिपी नहीं रहती।

—जिसका जो हुनर होता है, वह उस में दक्ष होता ही है!

दे.क.सं.६४२८

दायण सूं पेट नीं लुकावणौ। ६४५७

दाई से पेट क्या छिपाना।

—अपने हितैषी व परिजनों से कोई बात छिपाना उचित नहीं है।

—अपने सहयोगियों से दुराव रखना अनुचित है।

दाय पड़ै तौ कण खावौ, दाय पड़ै तौ मण खावौ। ६४५८

इच्छा हो तो कण खाओ, इच्छा हो तो मन खाओ।

—जिसकी जैसी रुचि व सामर्थ्य हो, उतना ही खाये कोई नियंत्रण या अंकुश नहीं है।

—चींटी के लिए कण ही पर्याप्त और हाथी के लिए मन भी अपर्याप्त!

—जहाँ समता की सम्यक व्यवस्था हो।

दारूड़ा पीवै अर मारूड़ा गवाड़ै। ६४५९

दारू पीना और मारू गवाना।

— शराब पीकर जो ठाकुर-नवाब मौज-मस्ती करते हैं, उनका अधःपतन अवश्यंभावी है।

—जो व्यक्ति अपनी प्रभुता में उन्मत्त होकर अपने कर्तव्य की चिंता न करे उसके लिए।

दारू तौ हाथी नै ई ढायलै। ६४६०

दारू तो हाथी को भी पटक देता है।

—दारू के नशे से कैसा भी पराक्रमी अपना आपा खो देता है।

—शराब के सामने कैसा भी शक्तिशाली नहीं टिक सकता।

दारू दोगलो, पीये आचलो, धूळ खावे, धूम मचावे, ओचे घेर करे वास।–भी.४४८ ६४६१

दारू दोगला, पिये हरामी, कुकर्म करे, धूम मचाये, करे नीच घर निवास।

—शराब पीने वाला सब तरह से गया-गुजरा, हीन और पतित होता है।
—शराब में सिवाय अवगुण के और कुछ भी नहीं होता।

दारू पीवणियौ तौ कालायां करसी। ६४६२
दारू पीने वाला तो बौरायेगा ही।
—शराब या किसी नशे की तासीर ही ऐसी होती है कि जो भी उसका आदी होगा—वह पागलपन तो करेगा ही।
—नशेबाज अंततः अपना होश-हवास खोकर ही रहता है। मनुष्य की पहिचान ही विवेक और बुद्धि है—शराब उसी को नष्ट करता है।

दारू वाळा रै देवाळौ कदै ई नीं मिटै। ६४६३
दारू वाले के दिवाला कभी नहीं मिटता।
—नशेबाज को अपने भले-बुरे या हित-अहित का ही ज्ञान नहीं रहता—तब उसका अधःपतन तो अनिवार्य है ही।
—मनुष्य में बुद्धि, ज्ञान और विवेक की ही विशेषता है, शराब उसी पर आक्रमण करता है, तब सर्वनाश तो सुनिश्चित है।

दारू हे दगाखोर, दाये आवे तो पीयो ६४६४
नी ते राखो डील ते दूर।—भी. २८७
दारू है दगाखोर, इच्छा हो तो पियो, नहीं तो रखो शरीर से दूर।
—शराब पीते समय तो बड़ी प्रिय लगती है, फिर चुपके से घात करती है, इसलिए इस बात पर नियंत्रण रख सको तो पियो, वरना शरीर से कोसों दूर रखो, यह बड़ी जालिम चीज है। भीतर घुसकर पछाड़ती है।
—नशा सब दृष्टि से हेय और घातक है।

दाळ टाबर पाळ, मांस रौ मूंडौ काळ। ६४६५
दाल बच्चों की खाला, माँस का मुँह काला।

—दाल वास्तव में बच्चों की अभिभावक है और माँस उनका बेरी है,इसलिए उससे दूर रहना ही कल्याणकारी है ।

—अपने जीवन की खातिर अन्य जीवों की हत्या करना कहाँ तक न्याय-संगत है ! अतएव सादा जीवन और उच्च विचार ही मनुष्य का लक्ष्य होना चाहिए ।

दाळद रौ मूळ आळस इज व्है । ६४६६

दरिद्रता का मूल आलस्य ही है ।

—काम करने से ही सारे कार्य संपन्न होते हैं,दुनिया में ऐसा कोई काम नहीं है जो निष्क्रियता या आलस्य से पूरा होता हो । मनुष्य जीवन की सिद्धि ही कर्म है । इसलिए कर्म-विहीन जीवन मृत्यु और विनाश का ही परिचायक है ।

—उद्यमी और कर्मशील ही समृद्ध होता है और निठल्लापन ही दरिद्रता का मूल कारण है ।

—सक्रियता ही जीवन है,निष्क्रियता ही मृत्यु है ।

दाळ-भात अर लांबौ जीकारौ , अै बाई औ परचौ थारौ । ६४६७

दाल-भात और मीठी मनुहार, ऐ बिटिया यह तेरा ही चमत्कार ।

—वृद्ध मायापति को अपनी बेटी ब्याहने वाले बाप का अपने दामाद के घर विशेष सत्कार होता है । मान-मर्यादा के साथ उसकी तीमारदारी होती है । उस सबकी वजह है—सुंदर एवं युवा बेटी का रूप ।

—अपने मामूली स्वार्थ की खातिर दूसरों का भारी नुकसान करने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष !

दाळ-भात भेळा अर कोकला किनारै । ६४६८

दाल-भात शामिल और कोकले किनारे ।

कोकला = बिना छिलका उतारी हुई सूखी ककड़ी के छोटे टुकड़े । जिसकी सब्जी बनती है । पर दूसरी किसी चीज के साथ इनका मेल नहीं बैठता ।

—जो व्यक्ति किसी के साथ घुलमिल नहीं सके,उसके लिए ।

—जो व्यक्ति अपने बेढ़ंगे स्वभाव के कारण किसी से भी आत्मीयता नहीं कर सके ।

मि.क.सं.४३६५

दाळ-भात में ऊंदरनाथ। ६४६९

दाल-भात में मूसरचंद ।

—किसी अनुकूल शांतिमय स्थिति में बिन-चहेते व्यक्ति के द्वारा अचानक कोई बाधा उपस्थित हो जाय तब।

—निहायत अनुकूल वातावरण में प्रतिकूल विघ्न उत्पन्न हो जाय,किसी अड़ियल व्यक्ति की मौजूदगी से,तब ऐसे मौके पर यह कहावत प्रयुक्त होती है।

पाठा : दाळ-भात में मूसळनाथ।

दाळ-भात रोटी, दूजी बात खोटी। ६४७०

दाल-भात रोटी, अन्य बात खोटी ।

—जीवन के मूलभूत आधार दाल-भात रोटी के अतिरिक्त हवाई आदर्श के सारे ढकोसले व्यर्थ हैं। उनकी स्थापना भी इसलिए की जाती है कि दाल-भात रोटी की पुख्ता व्यवस्था हो जाय।

—मनुष्य जीवित रहेगा तो कुछ-न-कुछ महान कार्य भी करेगा और जीवित रहने के लिए दाल-भात और रोटी बुनियादी शर्त है।

दाळ में कीं-न-कीं काळौ है। ६४७१

दाल में कुछ-न-कुछ काला है ।

—प्रत्यक्ष दिखने वाली बात के भीतर कहीं कुछ रहस्य छिपा हो तब !

—बाह्य प्रकट रूप से,भीतर का रूप मेल न खाये तब इस कहावत का प्रयोग होता है।

पाठा : दाळ में काळौ।

दावड़ै सो बरसै नीं। ६४७२

गरजे सो बरसे नहीं ।

दे.क.सं.३३०९

दास तौ सदावंत उदास। ६४७३

दास तो हर वक्त उदास ।

—तुलसी बाबा बहुत पुरजोर शब्दों में कह गये हैं कि पराधीन सपनेहु सुख नाहिं।

—मालिक का गुलाम होने के कारण उसे प्रतिक्षण अपने स्वामी की ही सुख-सुविधा की चिंता बनी रहती है। इसलिए उसके चेहरे पर हलकी झाँईं भी दिखलाई नहीं पड़ती, जो आनंद की परिचायक हो।

दासी आपरा धोवती तौ लाजां मरै नै पराया कोड सूं धोवै। ६४७४

दासी अपने वस्त्र धोने में संकोच करती है और दूसरों के कपड़े उल्लास से धोती है।

—स्वामी के सुख-आनंद की मान्यता अलग होती है, दास या दासी के हर्ष-विषाद की मान्यता एकदम अलग होती है। मसलन अपने मैले वस्त्र धोने में दासी लज्जा का अनुभव करती है, और दूसरों के गंदे वस्त्र बड़े उत्साह से धोती है।

—स्वयं कष्ट उठाकर भी गुलाम अपने मालिक की सुख-सुविधा का अधिक ध्यान रखता है।

दासी चंचळ, पीव विटळ, बुरी दुहेली तास। ६४७५
गाडर बांधी ऊन नै, ऊभी चरै कपास॥

दासी चंचल, लंपट पिया, दुहरी भौंडी तास।
भेड़ें बाँधी ऊन को, खड़ी चरें कपास॥

तास = स्वभाव, तासीर।

—आशा के विपरीत काम होने पर दुश्चिंता स्वाभाविक है। दासी घर के काम-काज व सुख-सुविधा के लिए रखी थी। उसकी प्रवृत्ति चंचल है। पति जन्मजात लंपट है! इस दुहरी तासीर का नतीजा यह हुआ कि जो भेड़ (दासी) ऊन के लोभ में रखी थी वह कपास चर रही है। दासी मौज मना रही है और पत्नी वंचिता का जीवन बिता रही है।

मि.क.सं. ३४४०

दि - दी

दिखण गियां लखण थोड़ा ई आवै। ६४७६

दक्खिन जाने से ही लक्षण नहीं सुधरते ।

—यह कहावत जन्मजात लक्षण व अनुवांशिकता की परिचायक है। जिसके अनुसार जन्म से जो प्रकृति या प्रवृत्ति मिली है, वह शिक्षा या वातावरण से नहीं बदलती। मनुष्य में जो प्राकृतिक तत्त्व होते हैं, शिक्षा व ज्ञान के माध्यम से केवल उन्हीं का विकास होता है।

—परिवेश या स्थान बदलने से जन्मजात गुणों में परिवर्तन नहीं होता। मूल प्रवृत्ति वही रहती है।

पाठा : दिखण जावै पण लखण नीं भूलै।

दिखणा री गाय किसी खेरणी में दूहीजै। ६४७७

दक्षिणा की गाय कोई चालनी में नहीं दूही जाती ।

—मुफ्त में मिली वस्तु का भी उचित उपयोग होना चाहिए, उसके प्रति भी लापरवाही बरतना गलत है।

—किसी भी वस्तु का मोल उसकी कीमत की बजाय उसके अपेक्षित उपयोग पर निर्भर करता है। लेकिन उसका दुरुपयोग तो किसी भी सूरत में नहीं होना चाहिए।

—निःशुल्क मिली वस्तु के प्रति उपेक्षा अनुचित है।

दिगंबरां रै गांम, धोबी रौ के कांम। ६४७८

दिगंबरों के गाँव, धोबी का क्या काम ।

—जैन संप्रदाय में दिगंबर मुनियों का एक अपना ही पंथ है। यदि वे किसी स्थान में एकत्रित हों तो वहाँ धोबी की कोई उपयोगिता नहीं है।

—हर काम की उपयोगिता देश व काल पर निर्भर करती है। मसलन जहाँ शून्य से नीचे ही हमेशा तापमान रहता है वहाँ पँखे, कूलर व ए.सी. व्यर्थ हैं।

दे.क.सं.५७३३

दिन अस्त अर मजूर मस्त। ६४७९

दिन अस्त और मजदूर मस्त।

—मजदूरी का समय संध्या तक ही रहता है। संध्या होते ही अथक परिश्रम से छुटकारा पाने पर किसे खुशी नहीं होती!

—दिन भर की थकान से निजात मिलते ही अपनी नकद मजदूरी मुट्ठी में आये तो मजदूर की बाँछें खिल जाती हैं।

दिन आथमतां ईं टोगड़ौ ठांण संभाळै अर पांवणौ ठायौ संभाळै। ६४८०

दिन अस्त होने पर बछड़ा अपना ठाण सँभालता है और मेहमान अपना ठिकाना।

ठांण = मवेशी को नियमित रूप से बाँधने का स्थान।

—हर प्राणी की अपनी विभिन्न दिनचर्या होती है, जो समय पर स्वतः प्रकट हो जाती है।

—हर प्राणी अपने विशिष्ट स्थल का ही अभ्यस्त होता है

दिन आयां तौ रावण ई खपग्यौ। ६४८१

दिन आने पर तो रावण ही विनष्ट हो गया।

—दिनमान से अधिक शक्तिशाली और कोई नहीं। उनके सामने रावण, कंस, दुर्योधन जैसे पराक्रमी भी पराजित होकर समाप्त हो जाते हैं।

—समय की कोप-दृष्टि से कोई नहीं बच सकता। न राजा न मायापति।

दिन आयां देवळ ई डिगै। ६४८२

दिन बीतने पर देवल भी ढह जाते हैं।

—देवल-मंदिरों का निर्माण बहुत ही कौशल व मजबूती से होता है पर समय की अदृष्ट मार सबको क्षय करती रहती है और पता तक नहीं चलता।

—केवल समय शाश्वत है, बाकी सब नश्वर।

दिन ऊगै तौ किणी सूं अछांनौ नीं रैवै। ६४८३

दिन उदय होने पर किसी से भी छिपा नहीं रहता।

दे.क.सं. ६४३६

दिन ऊग्यां दीवा नै कुण बूझै ? ६४८४

दिन उगने पर दीये को कौन पूछे ?

—दुनिया में बड़ाबड़ी का खेल है। बड़ों के सामने छोटों की पूछ नहीं होती।

—रात का अंधकार हरने के लिए दीपक कितना उपयोगी है, पर सूर्य के उदय होते ही उसका कोई महत्त्व नहीं रहता।

—हर वस्तु का महत्त्व स्वार्थ की कसौटी पर ही खरा उतरता है।

—प्रत्येक वस्तु की उपयोगिता समय व जरूरत के अनुसार होती है।

दिन करै जैड़ी दुसमण ई नीं करै। ६४८५

दिन जैसा बरताव तो दुश्मन भी नहीं करता।

—दिन के मुकाबले दुश्मन अधिक क्षति नहीं पहुँचा सकता।

—कैसे भी पराक्रमी दुश्मन को शिकस्त दी जा सकती है यदि दिनमान ठीक हों। दिनमान खराब हों तो अत्यंत दुर्बल भी मात दे सकता है।

—दुश्मन पसीज सकता है, पर समय नहीं पसीजता।

पाठा : दिन करै सो दोखी नीं करै।

दिन करै तुरतुर, दैनगियौ करै धुर-धुर। ६४८६

दिन करे तुरतुर, मजूर करे दुर-दुर।

—दिन तो अपनी रफ्तार से धीरे-धीरे सरकता है, पर मेहनत करने वाले को वह लंबा-ही-लंबा महसूस होता है। वह मन-ही-मन दुर-दुर करके उसे जल्दी भगाना चाहता है। इसके विपरीत

वही दिन मालिक के लिए बहुत द्रुत गति से चलने वाला नजर आता है। मालिक कामना करता है—धीरे-धीरे और मजदूर दुत्कारता है दुर-दुर।

दिन कितरोक चढ़्यौ के रेजौ भरयौ। ६४८७

दिन कितना चढ़ा कि रेजा जितना।

रेजौ = हाथ के कते देशी सूत का बना मोटा कपड़ा। जिसका अर्ज छोटा होता है—करीब डेढ़ हाथ और लंबाई करीब बीस हाथ होती है।

—राजस्थान में भाँबी अथवा मेघवाल कपड़े बुनने का काम करते हैं। यदि किसी जुलाहे से पूछा जाय कि दिन कितना चढ़ा तो उसका जवाब होता है—रेजा जितना। उसका अनुभव वही है। हर व्यक्ति अपने अनुभव से स्थिति को आँकता है। मसलन मेरे ठेठ बचपन की एक बात बताना चाहूँगा। साइकिल की मरम्मत करने वाले मिस्त्री ने एक व्यक्ति को लँगड़ाते देखा तो अनायास उसके मुँह से निकल पड़ा—बेचारे के पाँव में डग पड़ गई। साइकिल का चक्का मुड़ जाय तो उसे डग पड़ना कहते हैं। महान वैज्ञानिक आइंस्टीन का सापेक्षतावाद ऐसे तथ्यों से उजागर हुआ था।

—हर व्यक्ति का अनुभव स्वत: प्रकट हो जाता है।

दिन जातां किसी वार लागै। ६४८८

दिन जाते देर थोड़े ही लगती है।

—समय किसी के लिए नहीं ठहरता। वह न राजा का लिहाज करता है न रंक का। उम्र बीत जाने पर ही पता चलता है कि समय तो चुटकियों में बीत गया। 'दीहड़ा गिया जु ताळी देय'—दिन तो ताली बजाकर बीत गये।

वही आंगन, वही देहरी, वही ससुर को गांव।
दुलहन-दुलहन टेरतां, बुढ़िया पड़ गयौ नांव॥

आवास का आँगन वही है, देहरी वही है और ससुराल भी वही है। दुलहन कल सिंगार करके आई थी और देखते-देखते बुढ़िया हो गई।

पाठा: **दिन जातां किसी जेज लागै।** जेज = देर।

दिन जावतां कुण देख्या? ६४८९

दिन जाते किसने देखे?

—समय की गति ऐसी अदृष्ट और सुनिश्चित है पर किसे भी दिखलाई नहीं पड़ती।

—समय रहते काम करना है सो कर लो, वह पुनः लौटकर नहीं आता।

—उर्दू का एक शेर यहाँ निहायत प्रासंगिक है :

बेवजह इस पीरी में खम नहीं,

झुक-झुक के ढूँढ़ता हूँ मेरी जवानी किधर गई ?

—समय की नजर से कोई भी नहीं बच सकता, पर वह किसे भी नजर नहीं आता।

दिन दीसै नीं, फूहड़ पीसै नीं। ६४९०

न दिन दीसे, न फूहड़ पीसे।

दीसै = दिखना।

—चौमासे में बादलों की वजह से सूर्य नजर नहीं आता। दिन का उजाला छिपा रहता है। फूहड़ यह सोचकर अनाज नहीं पीसती कि अभी तो सूर्योदय होने में देर है।

—आलसी या फूहड़ व्यक्तियों को काम न करने का बस कैसा भी बहाना चाहिए।

दिन दूणा नै रात चौगणी। ६४९१

दिन दूने और रात चौगुनी।

—किसी असहाय व्यक्ति की सहायता करने पर, बच्चों की उम्र बढ़ने के निमित्त, परिवार के फलने-फूलने की खातिर या धन-जायदाद की अभिवृद्धि के लिए वह इस कहावत का, आशीर्वाद या शुभकामना के आशय से प्रयोग होता है।

—छोटा शिशु जल्दी से हृष्ट-पुष्ट बने, उसका शारीरिक व मानसिक विकास हो उसके लिए मंगल कामना हेतु।

दिन धवळै दीवाळी करणी। ६४९२

उजले दिन दीवाली करनी।

—दीवाली अमावस्या की रात को अगणित दीप जलाकर मनाई जाती है। सघन अंधकार में दीयों की रोशनी बड़ी सुंदर लगती है। यदि कोई चमचमाती धूप में दीये जलाए तो यह मूर्खता का ही द्योतक है। नासमझी का काम करने वाले के प्रति कटाक्ष।

दिन पलटै, दसा पलटै, पलटै घर पिरवार। ६४९३
अकल पलटै आपरी, सै पलटै संसार ॥

दिन पलटे, दशा पलटे, पलटे घर परिवार।
अकल पलटे आपकी, सब पलटे संसार ॥

—दिनमान, ग्रहदशा या परिवार के पलटने पर तो आदमी उन परिस्थितियों का सामना कर सकता है। पर अपनी बुद्धि ही पलट जाय, तो समझिए कि सारा संसार आपके लिए पलट गया।

—बुद्धि के माहात्म्य को इस उक्ति में सराहा गया है।

दिन पलट्यां डील रा गाभा ई बैरी व्है जावै। ६४९४

दिन पलटने पर देह के वस्त्र भी दुश्मन हो जाते हैं।

—दिनमान बुरे हों तो औरों की बात जाने दीजिये, शरीर के वस्त्र भी बैरी बनकर बदला चुकाते हैं। अचानक आग की छोटी चिनगारी से ही कपड़े जल जाते हैं। कपड़े जलने पर देह भी जलने लगती है।

—ग्रहदशा खराब हो तो देह के कपड़ों की नाईं नजदीक आत्मीय भी विमुख हो जाते हैं।

दिन फिरै जद चतराई चूल्है में जाय परी। ६४९५

दिन फिरने पर चतुराई चूल्हे में चली जाती है।

—दिनमान बदलने पर बुद्धि भी ठिकाने नहीं रहती, वह भी नष्ट हो जाती है।

—ग्रहदशा बदलने पर न शारीरिक शक्ति काम में आती है और न बौद्धिक क्षमता का सहारा रहता है।

दिन फिर्‌यां अंवळी मत उपजै। ६४९६

दिन फिरने पर कुमति सूझती है।

—दई न मारै डांग सूं दई कुमत्तां देय। देवता या भाग्य लाठी से नहीं मारता, वह तो कुमति देकर ही स्वयं का विनाश करवाता है।

मि.क.सं.६३३६

दिनमांन खूटै के बीज खूटै । ६४९७

दिनमान खूटे कि बीज खूटे ।

—दिनमान खूटने पर यानी समाप्त होने पर उन्हीं आफत-विपदाओं का सामना करना पड़ता है जब वंश समाप्त होने की आशंका से साक्षात्कार होता है ।

—वंश मिटने पर उतना ही संकट भोगना पड़ता है जितना दिनमान खत्म होने पर ।

दिनमांन रौ फेर । ६४९८

दिनमान का चक्कर ।

—कोई भी व्यक्ति कष्ट तभी उठाता है, जब दिनमान अनुकूल नहीं होते ।

—मनुष्य के जीवन में दिनमान का प्रभाव पड़ना अपरिहार्य है, उससे बचने का कोई रास्ता नहीं ।

दिन रा आवै डांगां अर रात में अेक-रा-अेक । ६४९९

दिन में आएँ लट्ठम-लट्ठ और रात में एक-के-एक ।

—जो दंपती दिन में जूतम-पैजार तक आ जाते हैं और रात में एक होकर सहवास करते हैं, उन पर कटाक्ष ।

—दिन भर कलह और रात को प्रेम करने वाले दंपतियों का उपहास ।

दिन रा टुस्या आरै-बारै, जूवां हेरै दीवौ बाळै । ६५००

दिन को भटके इधर-उधर, जूएँ खोजें दीया जलाकर ।

—अपने समय का सदुपयोग न करने वाले व्यक्तियों पर कटाक्ष जो दिन के उजाले में इधर-उधर भटकते हैं और रात की वेला दीये की अपर्याप्त रोशनी में जूएँ खोजने का असफल प्रयास करते हैं ।

—ज्यादातर यह कहावत बेशऊर फूहड़ औरतों के लिए प्रयुक्त होती है ।

दिन रा तौ बाछड़ा चारै नै रात रा हीरा परखै । ६५०१

दिन को तो बछड़े चराये और रात को हीरे परखे ।

—जो हुनरमंद व्यक्ति अपने हुनर की मर्यादा न रखकर उसके प्रति अनर्गल बरताव करे, उस पर कटाक्ष। जो व्यक्ति दिन भर गप-शप में व्यतीत करे और रात को दीये के मद्धिम उजाले में नगीनों की परख करे, उसके लिए।

—उस विवेकशून्य व्यक्ति के लिए जो अपने कौशल का महत्त्व नहीं समझता।

दिन रा सिंघ, रात रा गाडर। ६५०२

दिन को सिंह और रात को भेड़।

—जो कायर व्यक्ति दिन के समय अपनी बहादुरी का थोथा गुमान करे और मौके पर बच निकलने की राह खोजे!

—उस भीरु आदमी के लिए जो हरदम सबके सामने अपने शौर्य का बखान करे और रात को अपनी छाया से डरे।

दिन रौ ऊगणौ हौ अर टाबरां री आंख खुलणी ही। ६५०३

दिन का उगना ही था और बच्चों की आँख खुलनी थी।

—संयोग से जब कोई अच्छा मेल बैठ जाय तब।

—किसी के करने या चाहने से नहीं, मात्र संयोग से जब कोई अच्छी बात स्वतः बन जाय!

दिन लागां रौ सोच कोनीं, सुधरिया जित्ता ई चोखा। ६५०४

दिन लगे उसकी चिंता नहीं, सुधरे जितने ही अच्छे।

—परिणाम अच्छा हो तो समय व्यतीत होना सार्थक हो जाता है।

—समय की उपयोगिता कार्य सफल होने पर ही निर्भर करती है। समय का अपने-आप में कोई खास महत्त्व नहीं। हित-अहित की दृष्टि से उसकी परख होती है।

दिन सगळै बोबाड़ा करै अर नांव सांयतरांम। ६५०५

दिन भर बकवास करे और नाम शांतिराम।

—नाम के विपरीत गुण वालों के लिए।

—जिस व्यक्ति का गुण से उलटा आचरण हो, तब!

दिन हांण सहीजै , पण धन हांण नीं सहीजै । ६५०६

दिन-हानि सही जा सकती है पर धन-हानि नहीं सही जाती ।

—उस कंजूस या विवेक-शून्य व्यक्ति के लिए जो समय की अपेक्षा धन का महत्त्व अधिक समझता हो ।

—हर व्यक्ति का अपना-अपना दृष्टिकोण होता है । कोई समय को बहुमूल्य समझता है और धन को गौण । कोई धन की खातिर प्राण देने को तैयार रहता है और समय की तनिक भी परवाह नहीं करता । यह कहावत समय की बजाय धन का महत्त्व अधिक आँकने वालों के लिए है ।

दिनूंगा रौ भूल्योड़ौ सिंझ्या बावड़ जावै तौ भूल्योड़ौ कोनीं बाजै । ६५०७

सवेरे का भूला हुआ शाम को लौट आये तो भूला हुआ नहीं कहलाता ।

—कोई व्यक्ति कैसी भी बड़ी भूल करके, समझ में आते ही उसका पछतावा करे तो पिछली भूल भी रफा-दफा हो जाती है ।

—गलती करना मनुष्य का स्वभाव है, पर गलती स्वीकार करना यह अवश्य विशिष्ट गुण है जो बिरले व्यक्ति में ही मिलता है ।

दियां-लियां तौ डूंम राजी व्है । ६५०८

लेन-देन से तो डोम खुश होता है ।

—इस कहावत के प्रयोग का एक विशिष्ट प्रसंग है । वधू-पक्ष का समधी आर्थिक विपन्नता के कारण बेटी को पर्याप्त दहेज न दे सके तब वर-पक्ष की ओर से संतुष्टि व्यक्त करते हुए कहा जाता है कि जो दिया वही बहुत है । इसकी कोई सीमा तो है नहीं । और लेन-देन से तो डोम खुश होता है । यह भले आदमियों की खुशी का मसला नहीं है ।

—जो व्यक्ति मानवीय रिश्तों की प्रतिष्ठा लेन-देन से अधिक समझते हैं, उनके लिए ।

दियोड़ी अकल कित्ता दिन कांम काढ़ै । ६५०९

दी हुई अक्ल कितने दिन काम आ सकती है ।

—अक्ल या सूझ-बूझ तो अपनी ही काम आती है, दूसरों की सीख से काम नहीं चलता ।

—बाकी सब बातों में तो एक-दूसरे का सहयोग काम आता है पर बुद्धि के सीगे में किसी के सहयोग से सहारा नहीं मिलता, वह तो अपने ही मस्तिष्क से समय पर उपजे तभी बात बनती है।

दियोड़ौ मूंड हिलाय पण छांनै-मांनै खाय। ६५१०

देने पर मना करके चुपके-चुपके खाय।

—थोथी हेकड़ी वाले व्यक्ति के लिए जो लिहाज में कुछ भी लेने के लिए मना करे और बाद में मौका मिलने पर चुपके-चुपके खाये।

—लौकिक दिखावा करने वालों के आचरण में ऐसा ही अंतर्विरोध होता है। मनुहार करने पर शिष्टाचार के नाते इनकार करेंगे। चोरी-छिपे खाने में तनिक भी संकोच नहीं करेंगे।

दियौ-लियौ आडौ आवै। ६५११

दिया-लिया ही काम आता है।

—जरूरत-मंदों को वक्त पर जो सहयोग दिया जाता है, अंततः वही कल्याणप्रद साबित होता है।

—मानव-समाज में पारस्परिक सहयोग का सर्वोपरि महत्त्व है।

दिल चालै पण टट्टू नीं चालै। ६५१२

दिल चले पर टट्टू नहीं चलता।

—आर्थिक अभाव में लालसाएँ तो वैसी ही बनी रहती हैं—अतृप्त और अधूरी, पर धन के अभाव में पूरी नहीं हो पातीं।

—जर्जर बुढ़ापे में शारीरिक स्थिति ऐसी दयनीय हो जाती है कि काम वासना सुलगती रहती है, पर शरीर काम नहीं देता, वह शिथिल पड़ जाता है। इस अवसर पर भी यह कहावत उपयुक्त है।

पाठा : मन चालै पण टारड़ौ नीं चालै।

दिल दरियाव ! ६५१३

दिल दरिया !

—दूसरों की सहायता करने के लिए जिस व्यक्ति का दिल बहुत ही उदार हो नदी की नाईं जो सबका भला करने के लिए ही बहती है। चाहे तो कोई घड़ा भर ले, चोंच भरले और चाहे तो अपना खेत पिला ले।

—जो व्यक्ति हर वक्त किसी के सुख-दुख में काम आये।

दिल लाग्यौ गधी सूं तौ पदमण पांणी भरै। ६५१४

दिल लगा गधी से तो पद्मिनी पानी भरे।

—प्रेम निपट अंधा होता है—उसे सुंदर-असुंदर की तनिक भी परवाह नहीं रहती। गधी पर दिल आ जाय तो परी या अप्सरा का सौंदर्य उसे प्रभावित नहीं करता। वह तो गधी पर ही प्राण न्योछावर करेगा।

—प्रेमी की अपनी निराली ही निगाह होती हैं, जो दूसरों से किंचित् भी मेल नहीं खाती।

पाठा : **दिल लाग्यौ गधी सूं तौ परी कांई चीज है !**

दिल साफ, कसूर माफ। ६५१५

दिल साफ, कसूर माफ।

—दिल या नीयत साफ हो और अजाने भूल-चूक हो जाय तो वह कसूरवार नहीं माना जाता।

—सबसे अहम् बात है मन या अंतस्, यदि वह शुद्ध है तो उसका कोई भी आचरण अशुद्ध नहीं माना जा सकता।

दिलां दरियाव, नसीबां निबळौ। ६५१६

दिल दरिया, नसीब निर्धन।

—जिस व्यक्ति का दिल तो बेहद उदार हो पर भाग्य प्रतिकूल हो, उसके लिए सद्भावना व्यक्त करने वाली उक्ति।

—दिल तो गरुड़ की तरह उड़ान भरे पर भाग्य निहायत पंगु हो, उसे लक्ष्य करके।

दिलां रा दिल साईदार। ६५१७

दिल दिलों का साक्षी।

—बिना भाषा के ही दिल, दिल की बात स्वतः समझ लेता है।

—मुँह की वाणी या बोली होती है, मन की नहीं। मन तो मौन रहकर सब-कुछ ताड़ लेता है।

दिल्ली अबै फकीरां जोगी व्ही। ६५१८

दिल्ली अब फकीरों के काबिल हुई।

—दिल्ली के तख्त पर बड़े-बड़े बादशाह अपने आलम का डंका बजाते रहे, अब वही दिल्ली फकीर व भिखमंगों के काबिल रह गई है।

—दिनमान का प्रभाव कि वह बादशाह को देखते-देखते दर-दर का भिखारी बना देता है।

—किसी वक्त का अमीर जब मोहताज हो जाय, तब उसके प्रति हमदर्दी दरसाते हुए यह कहावत काम में ली जाती है।

दिल्ली कैड़ीक के फकीरां जोगी। ६५१९

दिल्ली कैसी कि फकीरों के काबिल।

—वक्त की मार से कोई ऐश्वर्यशाली परिवार निपट असहाय हो जाय तब।

—तख्त या सिंहासन पर आदमी नहीं, वक्त बिराजमान होता है, वह चाहे तो बादशाह को फकीर बना दे और फकीर को बादशाह बना दे।

—वैभव में बौराये किसी उन्मत्त बंदे का पतन होने पर।

दिल्ली गुडाळ्यां कद पूगीजै? ६५२०

दिल्ली घुटनों के बल कब पहुँचा जाय?

—असमर्थ और अक्षम व्यक्ति की महती आकांक्षाओं के प्रति परिहास।

—बड़े काम पर्याप्त साधनों के अभाव में पूरे नहीं हो सकते।

दिल्ली जावणौ अर गोरवा सूं ई गुडाळियां। ६५२१

दिल्ली पहुँचना है और फलसे के बाद ही घुटनों के बल चलना।

दे.क.सं.६५२०

दिल्ली में रैय भाड़ ई झोंकी। ६५२२

दिल्ली में रहकर भाड़ ही झोंकी।

—जिस व्यक्ति पर वातावरण या परिवेश का कुछ भी असर न हो और वह वैसा-का-वैसा ही जड़-भरत रहे ।

—नितांत असफल व्यक्ति के लिए जो कहीं कुछ भी सीखने के लिए तैयार न हो ।

दिल्ली री कमाई, दिल्ली में लुटाई । ६५२३

दिल्ली की कमाई, दिल्ली में लुटाई ।

—जहाँ कमाया, वहीं गँवाया । बड़े शहरों में कमाई का भी कोई पार नहीं और खर्च का भी कोई पार नहीं । जहाँ से जो अर्जित किया, वह वहीं खो जाता है ।

दिल्ली री तुरकणी मरै नै बूंदी रौ हाडौ भदर व्है । ६५२४

दिल्ली की तुर्कनी मरे और बूँदी का हाडा सिर मुँडाये ।

हाडा = चौहान क्षत्रियों की एक शाखा । राजस्थान में बूँदी की रियासत पर जिनका राज्य था ।

—जिन बातों में पारस्परिक कोई कार्य-संबद्धता न हो, तनिक भी तालमेल न हो, तब इस कहावत का प्रयोग होता है । सुदूर दिल्ली में कोई तुर्कनी मरे और बूँदी का हाडा सिर मुँडाये—यह तो असंबद्धता की ही मिसाल है ।

—दूसरा छिपा अर्थ यह भी है कि आतंक का प्रभाव ऐसा ही होता है, जिसके भय से दूर बैठा व्यक्ति भी अप्रभावित नहीं रह सकता ।

दिल्ली रौ दरवाजौ, लख आवै नै लख जावै । ६५२५

दिल्ली का दरवाजा, लाख आएँ और लाख जाएँ ।

—जिस आबादी के जंगल में किसी के बीच कोई लगाव न हो । पास से कंधा भिड़ाकर चल देते हैं, पता नहीं कौन कहाँ से आया और कहाँ जा रहा है ?

—जिस बड़े शहर में कोई किसी की परवाह न करे, खोज-खबर न ले ।

दिल्ली है तौ आथूणी, नींतर है ई कोनीं । ६५२६

दिल्ली है तो पश्चिम में, वरना है ही नहीं ।

—जो व्यक्ति अपने अज्ञान के प्रति भी पूरा आश्वस्त हो और उसका दंभ करे ।

—अज्ञान के प्रति विश्वास, ज्ञान की अपेक्षा अधिक प्रबल और दृढ़ होता है ।

दिसावरां में पईसा रूंखां रै नीं लागै । ६५२७

दिसावर में पैसे पेड़ों पर नहीं लगते ।

—घर छोड़कर चाहे देश-विदेश जाओ, कमाई के लिए परिश्रम तो करना ही पड़ता है । बुद्धि से काम लेना ही पड़ता है । ऐसा नहीं कि पेड़ों पर लगे पैसों को तोड़कर एकत्रित करलें ।

—कोई व्यक्ति दिसावर से बहुत धन कमाकर लाये और गाँव वाले उससे सहज ही माँगें, तब यह कहकर अपना बचाव करता है कि पैसे बड़ी मुश्किल से अर्जित किये हैं, पेड़ों से तोड़कर नहीं लाया ।

दीखण में डेडरौ , पण मांहै काळौ नाग । ६५२८

दिखने में दादुर, पर भीतर काला साँप ।

—महा धूर्त या छली व्यक्ति के लिए जो बातें तो मीठी करे पर अंतस् उसका काले साँप की बाँबी ही हो ।

—ऐसे मधुर-भाषी कपटियों से दूर रहने की हिदायत भी इस कहावत में है ।

पाठा : दीसण में तौ डेडरियौ पण मांहै मोटौ नाग ।

दीखत रा ई सोवणा रोहीड़ै रा फूल । ६५२९

दिखने में ही सोहने रोहीड़े के फूल ।

रोहीड़ौ = मरुस्थल का वृक्ष विशेष, जिसके फूल काफी सुहाने होते हैं, पर नितांत सौरभ-रहित । किसी भी देवी-देवताओं पर नहीं चढ़ते ।

—उस रूपवान व्यक्ति के लिए जिस में कोई विशिष्ट गुण न हो । एक काव्योक्ति भी है—रूप रूड़ौ गुण-बायरौ रोहीड़ा रौ फूल । रूप तो सुंदर पर गुण-रहित, यह रोहीड़े का फूल ।

दीखती आंख्यां जीवती माखी नीं गिटीजै । ६५३०

दिखती आँखों से जिंदा मक्खी नहीं निगली जा सकती ।

—सरासर गलत काम को मंजूर करने के लिए मन नहीं मानता ।

—सरासर अन्याय-संगत बात के लिए हामी भरना दुश्वार है ।

पाठा : दीसती आंख्यां माखी नीं गिटीजै । दीखती माखी नीं गिटीजै ।

दीखतौ भलौ आदमी है। ६५३१

दिखने में तो भला आदमी ही है।

—कोई किसी से जानना चाहे कि अमुक व्यक्ति कैसा है। तब अमूमन यही जवाब मिलता है कि दिखने में भला ही है, पर भीतर किसने देखा। आदमी की सही पहिचान तो बरतने पर ही होती है।

—बाहरी दिखावट तो सबकी एक जैसी ही होती है—मनुष्य जैसा मनुष्य। पर भीतर से सभी भिन्न होते हैं।

दीखै सीध-सपट्ट, घट रै मांय कपट्ट। ६५३२

दिखे सीधा-सपट, घट के भीतर कपट।

—जो व्यक्ति बाहर से तो सीधा-सतर दिखे पर भीतर कपट-जाल से भरा हो।

—जो व्यक्ति बाहर से कुछ और भीतर से कुछ और।

दीठी गांव री जैड़ी रीत, उठाई आपरी वैड़ी भींत। ६५३३

जिस गाँव की जैसी रीत, उठाई अपनी वैसी भींत।

भींत = दीवार।

—लोकरीति के अनुसार आचरण करना ही संगत है।

—जिस राह गाँव चले, उसी राह बंदा चले।

दे.क.सं.५३६२

दीठौ रांणौजी थांरौ देस, रांड सुहागण अेकै भेस। ६५३४

देखा राणाजी तुम्हारा देश, राँड सुहागिन का एक ही वेश।

रांड = विधवा।

—मेवाड़ में विधवा स्त्री का वही वेश और सुहागिन का वैसा ही वेश। अनुमानतः इसका कारण यह हो सकता है कि मेवाड़ में पति की मृत्यु पर सती होना एक सामान्य बात थी। इसी कारण सती के लक्ष्य को पाने के लिए सुहागिन औरतें भी विधवा जैसा लिबास ही पहिनती थीं। ब्याज-स्तुति के रूप में इस कहावत की शुरुआत हुई होगी पर अब इसका रूढ़ अर्थ यही है कि जहाँ भले-बुरे की सही पहिचान न हो, उसके लिए।

दीदा डांम लागे भण अकल नी लागे ।– भी.४४९ ६५३५

देने से डाँम तो लग जाते हैं पर अक्ल देने से नहीं मिलती ।

डाँम = गर्म लोह-शलाका का दाग ।

—गर्म लोह-शलाका दागने पर उसका निशान तो हमेशा के लिए कायम रह जाता है पर इस तरह दिया हुआ ज्ञान कायम नहीं रहता ।

—बुद्धि या सूझ-बूझ तो अपनी ही काम देती है, किसी के देने से नहीं मिलती ।

दे.क.सं.८८

दीदी अकूल ने लागे ते डाम ते लागे ।– भी.४५० ६५३६

दी हुई राय तो न लगे, पर डाम तो लगते ही हैं ।

—कोई किसी की नेक सलाह माने-न-माने, पर न मानने से उसका दुष्परिणाम तो उसे भुगतना ही पड़ता है । वह तो दाग की तरह स्थायी रह जाता है ।

—किसी की अच्छी सीख न मानने का परिणाम तो कष्टदायक होता ही है ।

दीधा भोग अर टळिया रोग । ६५३७

दिया भोग और टला रोग ।

भोग = दो अर्थ हैं । १. देवी-देवताओं के उपभोगार्थ मूर्ति के सामने रखा जाने वाला प्रसाद, नैवेद्य । २. जागीरदार द्वारा कर स्वरूप लिया जाने वाला कृषि की उपज का कुछ निश्चित हिस्सा, हासिल ।

—देवताओं के सामने प्रसाद चढ़ाने के बाद मन में विश्वास हो जाता है कि सब कष्ट दूर होंगे, मनोकामना पूर्ण होगी । जागीरदार को भोग लटाने के बाद यानी हासिल देने के बाद पूर्णतया स्वतंत्र होकर अपनी फसल का मनचीता उपयोग किया जा सकता है ।

—लौकिक या अलौकिक, अपना कर्तव्य पूरा करने के बाद मनुष्य अपने-आपको पूर्णतया उन्मुक्त महसूस करता है ।

दीन में नीं दुनियां में । ६५३८

न दीन में और न दुनिया में ।

—धर्म और लोक-व्यवहार से वंचित मनुष्य का जीवन सर्वथा निरर्थक है ।

—जो व्यक्ति दुविधा-जनक स्थिति में न धर्म के अनुकूल आचरण कर सके न लोक-रीति की अनुपालना कर सके, वैसे त्रिशंकु व्यक्ति का जीवन व्यर्थ है।

दीया जैड़ा भाग व्है तौ रातिंदौ क्यूं व्है ? ६५३९

दीये जैसा भाग्य हो तो रतौंधी क्यों होती ?

दे.क.सं.४२८९, ४४०४

दीवट तळ अंधारौ। ६५४०

दीया तले अँधेरा।

—कैसे भी ज्ञानी या समझदार व्यक्ति को अपने अवगुण नजर नहीं आते। जिस तरह दूसरों को प्रकाश देने वाला दीपक अपना अँधेरा देख नहीं सकता।

—आदमी अपने गुणों को तो उजागर करना चाहता है, पर अवगुणों को छिपाने का प्रयास करता है।

पाठा : दीया हेटै अंधारौ।

दीवट रै भाय नाहीं, जळ-जळ मरै पतंग। ६५४१

दीये को परवाह नहीं, जल-जल मरे पतंग।

—दीपक कहाँ परवाह करता है कि उसकी लौ से आकर्षित होकर कितने परवाने उस पर अपने प्राण निछावर कर रहे हैं।

—जिस मालिक को अपने निष्ठावान चाकरों के जीने-मरने की रंचमात्र भी परवाह न हो उसके लिए।

दीवा नीचू अंधारू।– भी.४५१ ६५४२

दीया नीचे अँधेरा।

दे.क.सं.६५४०

दीवा में होसी तौ उजास किणी रै सारै कोनीं। ६५४३

दीये में होगा तो उजाला किसी के वश में नहीं।

—दीये में तेल होगा तो प्रकाश अपरिहार्य है, उसे कोई रोक नहीं सकता।

—शरीर में शक्ति हो तो वह दृष्टिगोचर होगी ही, छिपी नहीं रह सकती।

—बंद तिजोरी में पूँजी है तो उसका प्रकाश बाहर होगा ही ।

दीवा री पूछ तौ रात रा इज व्है । ६५४४

दीये की पूछ तो रात को ही होती है ।

—सूर्य चाहे कितना ही तेजवान हो, पर रात के अँधियारे को वह दूर नहीं कर सकता । मिट्टी का अकिंचन दीपक ही अँधेरे को मिटा सकता है ।

—संतान की जरूरत तो दुख के समय ही होती है ।

—अज्ञान का अंधकार हरने के लिए ही गुरु की आवश्यकता है ।

दीवाळी नै भोट्यां धूंथ नंह बधै । ६५४५

दीवाली को जीमने से तोंद नहीं बढ़ती ।

—किसी भी त्योहार पर विशिष्ट भोजन चाहे जितना खा लो, उससे तोंद नहीं बढ़ती । नियमित भोजन से ही आदमी हृष्ट-पुष्ट या स्वस्थ रहता है ।

—एक दिन मौज मनाने से जीवन का समग्र आनंद प्राप्त नहीं होता, उसके लिए नियमित साधना अनिवार्य है ।

दीवाळी मेहां री साळी । ६५४६

दीवाली मेह-वर्षा की साली ।

—खरीफ की फसल के बाद कार्तिक मास की अमावस्या को दीवाली मनाई जाती है । यदि समय-समय पर वर्षा अच्छी होती रहे, तो फसल उसी मुताबिक उम्दा हो । खुशहाली हो । इसीलिए दीवाली को वर्षा की साली के रूप में ग्रहण किया जाता है । वर्षा अच्छी न हो तो साली का मान-सम्मान भी खुशी के साथ नहीं मनाया जाता ।

पाठा : दीवाळी मेघां री साळी ।

दीवाळी रा कोई घाट खावता व्हैला ? ६५४७

दीवाली को भला कोई घाट खाता है ?

घाट = बाजरी, ज्वार या मक्की को दलकर छाछ या पानी के साथ पकाकर बनाया हुआ व्यंजन, जिसे अधिकांशतया गरीब लोग ही खाते हैं ।

—दीवाली के मांगलिक त्योहार पर मीठे पकवान बनते हैं । उस दिन घाट जैसा अति सामान्य भोजन करना अशुभ माना जाता है ।

—जो व्यक्ति खुशी के मौके पर मर्यादा-जनक व्यवहार न करे ।

दीवाळी रा छाज कूटण नै आडा आवै । ६५४८

दीवाली को सूप बजाने के काम आते हैं ।

संदर्भ : दीवाली के दूसरे दिन सुबह गोबर के रूप में गोवर्धन पर्वत की स्थापना करते हैं । ऊपर दीया सँजोते हैं । एकाध काचरी रखते हैं । धागे की ध्वजा बाँधते हैं । गायों को गुलाबी रंग या झिरमट से सजाते हैं । यह अनुष्ठान पूर्ण तब होता है जब सूप की पीठ डंडे से पीटकर बजाते हैं । गाएँ बिदककर गोवर्धन पर्वत को रौंदकर चलती हैं ।

—यों तो सूप अनाज साफ करने के काम आता है, पर दीवाली के त्योहार पर उसकी डंडे से पिटाई होती है ।

—किसी निर्दोष व्यक्ति को दंडित किया जाय, तब !

दीवाळी रा दीया दीठा, काचर बोर मतीरा मीठा । ६५४९

दीवाली के दीये दीठे, काचर, बेर मतीरे मीठे ।

दीठा = देखे । मतीरा = तरबूज ।

—दीवाली की जगर-मगर दीपमालिका के उपलक्ष्य में काचर, ककड़ी, बेर व मतीरे अपना फीकापन, कसैलापन या मामूली कड़वापन छोड़कर मीठे रसयुक्त हो जाते हैं । खाने से हानि की बजाय स्वास्थ्य वद्र्धक होते हैं ।

—शुभ काम का परिणाम भी शुभ होता है । आनंददायक होता है ।

दीवाळी सरिखौ परब मांजरै मारै ।– व. ३५७ ६५५०

दीवाली जैसा पर्व कलह-क्लेश में बिताये ।

—जो बेहूदा या वेढंगा व्यक्ति त्योहार या आनंदोत्सव की वेला अपनी ओछी करतूतों से उसकी मर्यादा नष्ट कर दे ।

—जो व्यक्ति मांगलिक मौके पर उत्पात करके क्लेश उत्पन कर दे, उसके लिए ।

—जो व्यक्ति शुभ-अवसर का उचित लाभ न उठाये ।

पाठा : दीवाळी सारीसा त्यूंहार रौ मठ मारै ।

दीवा सूं दीवौ झुपै। ६५५१

दीयेसे दीया जले।

—एक काम के सहारे दूसरा काम बन जाय तब।

—पारस्परिक सहयोग से काम सफलता-पूर्वक संपन्न होते हैं।

—सत्पुरुष की संगत से प्रकाश की उपलब्धि होती है।

दीवै बाट नै बहू खाट। ६५५२

दीया सोहे बाट और बहू सोहे खाट।

—जिस तरह बाट दीये को शोभित करती है, उसी प्रकार बहू खाट को शोभित करती है।

—बाट से दीये में उजाला होता है और बहू से खाट में उजाला होता है।

—हर वस्तु या व्यक्ति की उपयोगिता स्थान व समय के अनुसार होती है।

दीवौ करनै घर बतावै। ६५५३

दीया करके घर बताये।

—जो नासमझ व्यक्ति घर का भेद उजागर करे।

—अंधकार की ओट में ढकी बातों को उजाला करके सबके सामने प्रत्यक्ष करना।

दीवौ झुपावण री आसंग नीं अर परबत लाय झुपावै। ६५५४

दीया जलाने की शक्ति नहीं और पर्वत पर आग जलाये।

—अपने घर में दीपक जलाना तो आता नहीं और पहाड़ पर आग जलाने की डींग मारे।

—जो व्यक्ति अपनी कठिनाइयों का समाधान न कर सके, पर दूसरे लोगों की विपदाएँ मेटने की बातें बघारे। उस पर कटाक्ष।

दीवौ भखै अंधारौ नै पूत काळौ-स्याह। ६५५५

दीया भखे अंधकार और पूत काला-स्याह।

भखे = भक्षण करता है।

—दीपक तो अंधकार हरकर उजाला करता है और उसी का पुत्र काजल या धूआँ काला-स्याह होता है।

—किसी विद्वान या ज्ञानी व्यक्ति की औलाद मूर्ख हो तब।

—जो व्यक्ति बातें तो उजली बघारे, पर जिसके कारनामे काले हों।

पाठा : दीवट अंधारौ भखै, तिणरौ छोरू काजळ।

दीवौ लेय बेरा में थ कीज्यो। ६५५६

दीया लेकर कुएँ में गिरा।

—जान-बूझकर गलती करने वाले पर कटाक्ष।

—होशियारी बरतते-बरतते जो व्यक्ति धोखा खा जाय।

—जब कोई ज्ञानी संत अधःपतन के गर्त में गिर जाय।

—महाचतुर व्यक्ति जब कोई गलती कर जाय।

दीसती तौ गिलारी, कर ज्याय बिच्छू रौ गटकौ। ६५५७

दीखने में तो गिलहरी, पर खा जाय बिच्छू।

—बाहर से नेक व शालीन दिखने वाला व्यक्ति बुरा काम करे तब।

— जिस व्यक्ति की कथनी और करनी में बहुत अंतर हो।

दीह पाछल रात नै रात पाछल दीह। ६५५८

दिन के पीछे रात और रात के पीछे दिन।

—दिन के पीछे रात छिपी रहती है और रात के पीछे दिन छिपा रहता है।

—सत् के पीछे असत् और असत् के पीछे सत् लगा रहता है।

—अच्छे दिनों के बाद बुरे दिन और बुरे दिनों के बाद अच्छे दिन आते रहते हैं।

—संसार में परिवर्तन का नियम अटल है।

दु-दू

ुकांनदारी आगै पांणी भरै तैसीलदारी। ६५५९

दुकानदारी के सामने पानी भरे तहसीलदारी।

—कैसा भी छोटा-बड़ा व्यवसाय नौकरी से बेहतर है।

—कर्मचारी की तनख्वाह तो बँधी-बँधाई होती है, पर व्यवसाय की कमाई निश्चित नहीं होती, चाहे जितनी हो सकती है।

—छोटे-बड़े सभी अधिकारी दूसरों के मातहत होते हैं, स्वतंत्र नहीं होते। व्यापारी तो अपनी मर्जी का आप मालिक होता है।

ुकांनदारी नरमाई री, हाकमी गरमाई री। ६५६०

दुकानदारी नरमाई की, हाकमी गरमाई की।

—दुकानदारी विनम्रता से चलती है, हाकिमी ऐंठ-अक्खड़ से चलती है।

—दुकानदारी में ऐंठ-अक्खड़ रखी जाय तो ग्राहक नजदीक ही नहीं आते, तब अकेले बैठे मक्खियाँ उड़ाते रहो। घाटा-ही-घाटा है। और इसके विपरीत हाकिम विनम्रता से पेश आये तो प्रशासन नहीं चलता। कोई कहना नहीं मानता। न कोई समय पर आये और न काम करे। इसलिए प्रशासन तो रुआब व सख्ती से ही चलता है।

—काम की गुणवत्ता के अनुरूप मनुष्य की प्रवृत्तियाँ बदलती रहती हैं।

पाठा : दुकानंदारी नरमाई सूं चालै।

दुकांन माथै बैठै, जिणनै गिराक मिळै-ई-मिळै। ६५६१

दुकान पर बैठने से ग्राहक मिलते-ही-मिलते हैं।

—दुकान बंद रहने से प्रतिष्ठा घट जाती है। खुली रहने पर ग्राहक आता ही है। मसल मशहूर है कि मौत और ग्राहक का कुछ पता नहीं कब आ धमके।

—उपस्थिति मात्र से आधी सफलता मिल जाती है।

दुकाळ में अधक-मासौ।–व.२६३ ६५६२

दुकाल में अधिक मास।

—प्रति तीसरे वर्ष आने वाला अधिक मास जो चांद्र वर्ष और सौर वर्ष को बराबर करने के लिए चांद्र वर्ष में जोड़ लिया जाता है, इस में शुक्ल प्रतिपदा से लेकर अमावस्या पर्यंत संक्रांति नहीं पड़ती। पुरुषोत्तम मास।

—आफत-पर-आफत पड़ना।

—जब किसी गरीब पर अचानक कोई और विपत्ति आन पड़े।

पाठा : काळ में इधक मासौ।

दे.क.सं. २२३२

दुख किण जूण में नीं व्है। ६५६३

दुख किस योनि में नहीं होता।

—चराचर में ऐसी कोई योनि नहीं है, जो दुख-कष्ट से मुक्त हो।

—दुख प्राणी-मात्र की अपरिहार्य नियति है।

दुख कैवण रौ नीं व्है, सैवण रौ व्है। ६५६४

दुख कहने का नहीं होता, सहने का होता है।

—दुख की मर्यादा तभी है, जब किसी को कानोंकान पता नहीं चले।

—कहने से दुख बँटता नहीं, बढ़ता है। लोग मखौल उड़ाते हैं। इसलिए चुपचाप सहकर ही उसे बिताना चाहिए।

दुख टांणै माय अर सुख टांणै बेर। ६५६५

दुख की वेला माँ और सुख की वेला पत्नी।

—दुख के समय माँ याद आती है, सुख के दिनों में पत्नी याद आती है।

—दुख में माँ हाथ बटाती है, सुख में पत्नी हाथ बटाती है।

दुख टाळ रंडवौ रांगै नीं आवै। ६५६६

दुख के सिवाय रँडुआ रास्ते पर नहीं आता।

—पत्नी के रहते पुरुष मौज मनाता है। उसके मरने पर उसे दिन को भी तारे दिखने लगते हैं। झाड़-बुहार, पीसना-पोना, रसोई की धूआँ-फूँक, बरतन-बासन माँजना—इसी में सारी हेकड़ी झड़ जाती है।

—पत्नी के गुजरने पर ही रँडुए को उसकी अहमियत का पता चलता है। काम के मारे सिर ही ऊँचा नहीं होता। सब छैलाई छूट जाती है।

दुख टाळ सुख नीं। ६५६७

दुख के बिना सुख नहीं।

—दुख उठाये बिना सुख नहीं मिलता।

—दुख के बिना सुख महसूस नहीं होता।

—सुख-दुख का जोड़ा है।

दुखत्या ना वार ने तेवार हारा अेक।– भी.४५२ ६५६८

दुखी के लिए वार और त्योहार सभी एक समान।

—दुखी या अभावग्रस्त व्यक्ति के लिए जैसा वार वैसा ही त्योहार। त्योहार का आनंद तो वे ही ले सकते हैं जो साधन-संपन्न हैं। दूसरों को त्योहार की खुशियाँ मनाते देख अभावग्रस्त व्यक्ति का दुख और बढ़ जाता है।

दुख पड़्यां सै रांम चितारै। ६५६९

दुख पड़ने पर सबको राम याद आता है।

—दुखियारे का एकमात्र सहारा राम या भगवान ही है। यदि सुख के दिनों में राम-नाम का सुमिरन करें तो दुख आये ही नहीं। पर वह तो दुख की वेला ही याद आता है।

पाठा : दुख पड़्यां सगळां नै ई देवता सूझै।

दुख माथै दुख तौ आया ई करै। ६५७०

दुख-पर-दुख तो आता ही है।

—दुख अकेला नहीं आता, गिरोह के साथ आता है। एक दुख मिटा नहीं कि दूसरा तैयार। या एक साथ आ धमकते हैं।

—घाव पर ठेस तो लगती ही है।

दुख में रांम अर सुख में भांम। ६५७१

दुख में राम और सुख में भाम।

—दुख की वेला राम का ध्यान आता है और सुख की वेला भामिनी याद आती है, चाहे उसके साथ कैसी भी खटपट होती रहे।

—दुख का साथी राम और सुख की साथिन भाम।

दुख में सीरौ ई विस्वादौ लागै। ६५७२

दुख में हलवा भी बेस्वाद लगता है।

—संकट के समय आनंद के उपकरण भी नहीं सुहाते।

—जिस तरह मलेरिया बुखार में सब चीजें कड़वी लगती हैं, उसी तरह आपद्-विपदा की वेला आनंद देने वाली चीजें फूटी आँख भी नहीं सुहातीं।

दुख रा रोवणा तौ सै रोवै। ६५७३

दुख का रोना तो सभी रोते हैं।

—छोटा-बड़ा कोई भी व्यक्ति, गरीब हो चाहे अमीर, राजा हो चाहे रंक, दुख पड़ने पर धैर्य नहीं रखा जाता। दुख प्रकट करना ही पड़ता है।

—संसार में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं, जिसे कुछ-न-कुछ दुख नहीं हो। ईश्वर के अतिरिक्त कोई सर्व-सुखी नहीं हो सकता।

दुख री बात सुणनै राजी नीं हुईजै। ६५७४

दुख की बात सुनकर खुशी नहीं होती।

—दुख की बात सुनकर किसी की बाँछें नहीं खिलतीं, दिल पसीजता ही है।

—दुख सबके दिल को परस करता है।

दुख री मार सूं नाहर ई गाडर बण जावै । ६५७५

दुख की मार से नाहर भी भेड़ बन जाता है ।

—दुख की निरंतर मार से सिंह भी मिमियाने लगता है । हाथी भी रिरियाने लगता है ।

—दुख के आगे सब योद्‌धा सिर झुकाते हैं ।

दुख रै कारणै वन ढळी , वन में लागी लाय । ६५७६

दुख के मारे वन में गई, वन में लगी आग ।

—दुखियारे को शांति देने के लिए दुनिया में कोई ठौर-ठिकाना नहीं है । दुख से परेशान होकर वह जंगल की छाँह लेने जाय तो वहाँ भी आग लगी नजर आती है ।

—अभागे का दुर्भाग्य छाया के उनमान उसके साथ-साथ चलता है ।

दुख रौ औखद दीहड़ा । ६५७७

दुख की औषधि दिन ।

—दुख या विपदा का एक मात्र उपचार समय है । समय बीतने के साथ-साथ माँ अपने जवान-पुत्र की अकाल मृत्यु भूलने लगती है और पत्नी अपने पति की आकस्मिक मौत को धीरे-धीरे बिसरने लगती है ।

—समय सबसे बड़ा वैद्‌य है ।

दुख-सुख रौ जोड़ौ । ६५७८

दुख-सुख का जोड़ा है ।

—दुखी व्यक्ति कभी-न-कभी सुखी होता ही है और सुखी व्यक्ति को कभी-न-कभी दुख का सामना करना ही पड़ता है ।

—दुख-सुख का परस्पर अविच्छिन्न संबंध है । इनका साथ कभी नहीं छूटता ।

दुखां रौ इज दरियाव अर नांव सदासुखरांम । ६५७९

दुखों का ही दरिया और नाम सदासुखराम ।

—नाम के विपरीत लक्षण ।

पाठा : दुखां रौ भांडौ अर नांव सुखरांम ।

दुखां रौ पाळणहार दिन । ६५८०

दुखों का पालनहार दिन ।

दे.क.सं.६५७७

पाठा : दुखां रौ मेटणहार दिन ।

दुखियां री पीड़ दुखिया ई सुणै । ६५८१

दुखियारों की पीड़ा दुखी ही सुनते हैं ।

—सुखी व्यक्ति को तो अपने सुख से ही फुरसत नहीं मिलती । जिसने दुख जाना-समझा है, वही दुखियारों की पीड़ा समझ सकता है ।

—जिसके पाँव न फटी बिवाई, वह क्या जाने पीर पराई ।

दुखिया रोवै, सुखिया सोवै । ६५८२

दुखियारे रोते हैं, सुखियारे सोते हैं ।

—बहुत गहरी कहावत है । ज्ञानी व्यक्ति केवल अपने दुख-सुख तक ही सीमित नहीं रहते । उन्हें स्वयं की बजाय दूसरों का दुख अधिक प्रभावित करता है । दुनिया में दुख कभी मिटता नहीं, इसलिए ज्ञानी कभी सुखी नहीं हो सकता । दूसरों को आँसू बहाते देखकर भला उसकी आँखें क्योंकर सूखी रह सकती हैं ? इसके विपरीत अज्ञानी को अपने सुख के अलावा दूसरों का दुख नजर ही नहीं आता । इसलिए वह चादर तानकर सुख से सोता है । दास कबीर यही बात इस दोहे में कह गये हैं :

सुखिया सब संसार है, खावै अरु सोवै ।
दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवै ॥

दुखे ते डाम देवाड़ो ।– भी.४५३ ६५८३

पीड़ा है तो डाम दिलवाओ ।

—जिस तरह काँटा, काँटे से निकलता है, उसी तरह कष्ट से ही कष्ट दूर होता है । कई असाध्य रोगों का उपचार डाम (दाग) से ही होता है । यदि शरीर में कुछ वैसी ही पीड़ा है तो डाम दिलवाने की एक पीड़ा और सहन करनी होगी, तभी आराम मिलेगा ।

दुगेह में सांप दीठौ। ६५८४

ओसारे में साँप देखा।

संदर्भ : संकोच के मारे स्पष्ट न कहकर इशारे-इशारे में अपना मतलब सिद्ध करना। किसी सँपेरे को दूध पीने की इच्छा हुई। तब किसी एक घर की मालकिन को उसने बताया कि उसके ओसारे में काला साँप देखा है। साँप पकड़ने के लिए या उसे दूर भगाने के लिए मालकिन उसे कटोरे में दूध डालती है। अपनी स्वार्थ-सिद्धि होने पर वह थोड़ी देर पूँगी बजाकर चल देता है कि उसने साँप को दूर भगा दिया।

—कई दुष्ट प्रकृति के मानुस जब दूसरों को खामखाह डर बताकर उनसे अपना मतलब सिद्ध करते हैं, तब इस कहावत का प्रयोग होता है।

दुधारी तरवार। ६५८५

दुधारी तलवार।

—जो दुष्ट दुतरफा हानि पहुँचाये उसके लिए।

—जो दोगला व्यक्ति दोनों तरफ साँठ-गाँठ करे। चोर को कहे घुस और कुत्ते को कहे भुस। जो वकील दोनों पक्षों से मिल जाय।

दुधारू गाय री लात ई सुहावै। ६५८६

दुधारू गाय की लात भी सुहाती है।

दे.क.सं. ३८०६

पाठा : दूझड़ी गाय री लात ई खावणी पड़ै।

दूध देवै उण गाय री लात ई खमणी पड़ै।

दुनियां अकल नै आदरै। ६५८७

दुनिया अक्ल को आदरती है।

—बुद्धि की विशिष्टता के कारण मनुष्य अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ होने का दावा करता है। मनुष्य की विकास यात्रा उसकी बुद्धि का ही परिणाम है। इसलिए दुनिया बुद्धि का सम्मान करती है।

दुनियां ऊगता सूरज नै वांदै। ६५८८

दुनिया उगते सूरज की वंदना करती है।

दे.क.सं.१३६७

दुनियां किणी भांत नीं टिकण देवै। ६५८९

दुनिया किसी भी तरह टिकने नहीं देती।

संदर्भ-कथा : दुनिया की राय से चलने पर कहीं कोई निस्तार नहीं। उसने तो देवों के देव महादेव को भी ऊहापोह में डाल दिया—जब महादेव नंदी पर बैठे तो दुनिया ने भर्त्सना की—देखो इस बूढ़े की मति मारी गई कि स्वयं तो सवारी गाँठ रहा है और बेचारी औरत (पार्वती) पैदल चल रही है। तब दुनिया की राय का सम्मान करते हुए महादेव ने पार्वती को नंदी पर बिठा दिया। पर दुनिया कब चुप रहने वाली। कहा—देखो औरत की मति भ्रष्ट हुई, खुद तो मजे से बैठी है और पति पैदल चल रहा है। तब महादेव ने दुनिया की मर्यादा रखते हुए उसकी राय मानी। दोनों ही नंदी पर बैठ गये। पर दुनिया तो अपनी राय दिये बिना रह नहीं सकती। कहा— देखो ये कितने निर्दयी हैं, बैल के कष्ट की कुछ परवाह न करके दोनों पत्थर की तरह ऊपर जमे हैं। तब दुनिया की राय सुनकर दोनों ही पैदल चलने लगे और नंदी एकदम भार-मुक्त। पर दुनिया कब चूकने वाली। कटाक्ष करते कहा—कितने वज्रमूर्ख हैं। बढ़िया सवारी के रहते पैदल चल रहे हैं।

—स्वार्थों की टकराहट से हर कोई एक-दूसरे की टाँग खींचता रहता है। अपने जीवन की आपाधापी में दूसरे का जीना हराम कर देता है।

—दुनिया जो भी कहे उसे सुन लेना पर करना वही जो अपना मन कहे।

पाठा : दुनिया किणी भांत नीं जीवण दै।

दुनियां गरज बावळी। ६५९०

दुनिया गर्ज बावरी।

दे.क.सं. ३२९६, ३२९७

दुनियां जैड़ी दाखै, वैड़ी भाखै। ६५९१

दुनिया जैसी देखे, वैसी कहे।

—प्रत्यक्ष के भीतर अप्रत्यक्ष रूप क्या है, दुनिया इसकी चिंता नहीं करती। उसे तो जो सामने दिखता है, वही कहती है। कोई छिपाने का चाहे जितना प्रयत्न करे दुनिया आँख से दिखने वाले सत्य को प्रकट किये बिना नहीं रह सकती।

दुनियां तौ मतलब री इज होवै। ६५९२

दुनिया तो मतलब की ही होती है।

—दुनिया के सभी मनुष्य मतलबी तो होते ही हैं, पर उसके देवी-देवता भी मतलब से परे नहीं होते। प्रसाद चढ़ाओ तो खुश, न चढ़ाओ तो नाखुश।

—स्वार्थ की धुरी पर ही सारा संसार चलता है।

दुनियां दुरंगी। ६५९३

दुनिया दुरंगी।

—जिधर स्वार्थ दिखता है, दुनिया वैसा ही रंग धारण कर लेती है। उसी के अनुरूप स्वाँग बदल लेती है।

—अपने दुरंगेपन से ही दुनिया इस मंजिल तक पहुँची है, वरना आदि रूप में ही जड़ होकर रह जाती।

दुनियां नै कुण ढाबै ? ६५९४

दुनिया को कौन रोके ?

—दुनिया जैसा देखती है, अनुभव करती है, वैसा कहेगी, उसे कोई रोक नहीं सकता।

—दुनिया की ज़बान पर कोई प्रतिबंध नहीं लगा सकता।

—दुनिया जिस ओर उमड़ पड़ती है, उस पर कोई लगाम नहीं लगा सकता।

—दुनिया अपनी गति से चलती है, उसे कोई मोड़ नहीं सकता।

दुनियां पराये सुख दूबळी। ६५९५

दुनिया पराये सुख दुबली।

—दूसरों को सुखी देखकर लोग जलते हैं। अपना दुख तो उन्हें है ही, पर दूसरों के सुख से वे और अधिक दुखी हो जाते हैं।

—अपना दुख तो लोग जस-तस सहन कर लेते हैं। पर दूसरों का सुख उनके लिए असह्य है।

दुनिया में अकल डोढ़, आखै में आप अर आधै में दूजा। ६५९६

दुनिया में अक्ल डेढ़, पूरे में आप और आधे में दूसरे।

—कुछ व्यक्ति ऐसे अहंकारी होते हैं, जो अपने सिवाय सारी दुनिया को मूर्ख समझते हैं।

—इस कोटि के विकारग्रस्त मनुष्य तानाशाह बन जाते हैं।

दुनियां में आधै पांणी न्याव हुवै। ६५९७

दुनिया में आधे पानी न्याय होता है।

संदर्भ-कथा : एक दूध बेचने वाली गोसिन पास ही बड़ी बस्ती में दूध बेचकर वापस अपने गाँव लौटते समय तालाब के ऐन किनारे बैठती और दूध का बर्तन माँजकर साफ करती। एक दिन पैसों की थैली बाजू में रखकर बर्तन साफ करने में मगन थी कि जामुन के पेड़ से उतरकर एक शरारती बंदर उसकी थैली उठाकर ऊँची डाल पर बैठ गया। निगाह उसकी गोसिन की ओर ही लगी थी। गोसिन बर्तन साफ करके उठने लगी तो थैली नजर नहीं आई। बंदर के चिह्न देखकर तुरत पहिचान गई कि हो-न-हो कोई बंदर ही थैली उठाकर ले गया है। गौर से ऊपर देखा तो शरारती बंदर के हाथ में थैली लटक रही थी। थैली का मुँह खोलकर कभी-कभार उस में झाँक भी लेता। गोसिन ने हाथ जोड़कर डबडबाई आँखों से चिरौरी की तो बंदर का दिल पसीज गया। उसने थैली में हाथ डालकर एक धेला गोसिन के पास फेंका और दूसरा तालाब के पानी में। काफी दूर। इस तरह उसने आधे पैसे पानी में फेंक दिये और आधे गोसिन को लौटा दिये। गोसिन आश्चर्य-चकित होकर बंदर की ओर एकटक देखती रही। कैसा आधे पानी न्याय किया। पानी के पैसे पानी में और दूध के पैसे गोसिन के हवाले। आखिर कोई-न-कोई देवता इसी तरह आधे-पानी न्याय करता ही है। उससे कुछ भी छिपा नहीं रहता।

—अदृष्ट शक्ति से कुछ भी छिपा नहीं रहता, वह सबका अदल न्याय करती है। दूध-का-दूध और पानी-का-पानी।

दुनियां में अेक-दूजा सूं कांम पड़ै-रौ-पड़ै। ६५९८

दुनिया में एक-दूसरे से काम पड़ता-ही-पड़ता है।

—जिस तरह अकिंचन चूहे ने जंगल के राजा शेर का जाल काटकर उसे मुक्त किया, उसी तरह कैसे भी बड़े व्यक्ति का सामान्य लोगों के बिना काम नहीं सरता। हर व्यक्ति एक-दूसरे पर निर्भर करता है।

—मानव समाज एक-दूसरे के सहयोग के बिना चल ही नहीं सकता।

दुनियां में कुण ई सीखोड़ौ नीं अवतरै। ६५९९

दुनिया में कोई भी सीखकर अवतरित नहीं हुआ।

—जन्म के पश्चात् ही संसार का हर व्यक्ति अपने जैसे-तैसे उपलब्ध परिवेश में ही सब-कुछ सीखता है।

—प्रत्येक मनुष्य का गुरु उसका परिवार, समाज और वातावरण ही होता है।

—बुद्धि या ज्ञान किसी भी वर्ग या जाति का जन्म-सिद्ध अधिकार नहीं, उसके मस्तिष्क का समग्र विकास समाज के बीच ही होता है।

दुनियां में कोई चीज नवी नीं रैवै। ६६००

दुनिया में कोई भी चीज नई नहीं रहती।

—दुनिया की हर वस्तु धीरे-धीरे पुरानी पड़ जाती है, कुछ भी नया नहीं रहता।

—बीज अंकुरित होकर बढ़ते-बढ़ते विशाल वृक्ष का रूप धारण करके एक दिन पात-विहीन ठूँठ बन जाता है। भ्रूण शिशु के रूप में जन्म लेकर उम्र के साथ-साथ वृद्ध होकर कूच कर जाता है।

दुनियां में गरीब दोय, बळद के बेटी रौ बाप। ६६०१

दुनिया में गरीब केवल दो, बैल या बेटी का बाप।

—बैल या बेटी को जहाँ दिया जाता है, वहीं माथा नवाकर चुपचाप सारा काम सलटाते रहते हैं। जो दूसरों की इच्छा पर अपना सारा जीवन बिता दे, उससे अधिक गरीब भला कौन हो सकता है?

—विशिष्ट उपलब्धि के लिए इस कोश के संपादक की कहानी 'झोंपड़ी का ज्ञान' और 'रास्ते की तलाश' का पारायण करें।

दुनियां में गुणां लारै पूजा व्है । ६६०२

दुनिया में गुणों के पीछे पूजा होती है ।

दे.क.सं.३६०९

पाठा : दुनियां में बूझ तौ गुणां री इज व्है ।

दुनियां में जीवण सूं मोटौ जोखौ नीं । ६६०३

दुनिया में जीवन से बड़ी जोखिम नहीं ।

—दुनिया में प्राणी-मात्र के लिए सबसे बड़ी और अंतिम जोखिम मृत्यु ही है । पर मृत्यु के पश्चात् किसी प्राणी को कोई जोखिम हो ही नहीं सकती । मृत्यु सर्वथा निर्विघ्न और निर्विकार होती है । इसके विपरीत जीवन को कदम-कदम पर जोखिम-ही-जोखिम है । फिर भी मनुष्य जीना चाहता है, लंबी उम्र तक जीना चाहता है । मनुष्य-जीवन की यही सबसे बड़ी विडंबना है ।

दुनियां में ठाडै-हीणै रा दो गेला हुवै । ६६०४

दुनिया में बलवान और निर्बल के दो भिन्न रास्ते हैं ।

—बलवान जिधर भी मन करे उधर ही अपना नया रास्ता बना लेता है पर निर्बल व्यक्ति रूढ़ियों की उसी पुरानी लीक पर पाँव घसीटते हुए चलता है ।

—बलवान और निर्बल के रास्ते कहीं नहीं मिलते ।

दुनियां में डाकी नांव कोई नीं धरै । ६६०५

दुनिया में राक्षस नाम कोई नहीं रखता ।

—आज-कल दुनिया में असुर, राक्षस या दैत्य तो अधिकांश व्यक्ति होते हैं, पर वैसा नाम कोई नहीं रखता ।

—मानवीय संसार का यही ढर्रा है कि काम तो सभी असुर-राक्षसों के ही करते हैं, पर अवगुणों के अनुरूप नाम नहीं रखते ।

दुनियां में नागाई तेहरवौं रतन । ६६०६

दुनिया में नंगई तेहरवाँ रत्न ।

—आज के संसार में सचमुच के असली रत्न तो कंकरों के बीच मिलकर अपनी पहिचान खो चुके हैं और समाज-कंटक, दुष्ट और भ्रष्ट व्यक्ति रत्नों की परख के लिए परस्पर होड़ मचाये हुए हैं।

पाठा : नागाई तेहरवौं रतन।

दुनियां में नीत जैड़ी बरगत। ६६०७

दुनिया में नीयत जैसी बरकत।

—मनुष्य की जैसी नीयत होगी, उसी के अनुसार उसके काम में बरकत होती है। पर आजकल ऐसी कहावतों का मर्म केवल उनके शब्दों तक ही सीमित रह गया है। स्वच्छ, नेक नीयत रखने वाला व्यक्ति आज के मिलावटी संसार में कुछ भी कमाई नहीं कर सकता। होना तो यही चाहिए, पर ऐसा होता नहीं है।

पाठा : नीत जैड़ी बरगत।

दुनियां में पैली आपरौ नै पछै परायौ। ६६०८

दुनिया में पहिले अपना और फिर पराया।

—लोक वाङ्मय में हवाई सिद्धांतों के आदर्श अधिक प्रतिष्ठापित नहीं होते। ठोस यथार्थ का अनुभव ही दर्ज होता है। ऋषि-मुनियों का यह सिद्धांत 'वसुधैव कुटुम्बकम्' कितना अव्यावहारिक और काल्पनिक है। इसके विपरीत यह सूक्ति कितनी व्यावहारिक और सच्चाई के सन्निकट है—अपना सो अपना, पराया सो पराया। पहिले अपने की चिंता, फिर पराये की चिंता। इसके अतिरिक्त सारे नारे, उच्च आदर्श की निराधार कल्पनाएँ सब मिथ्या हैं। अलग होने पर मनुष्य बाप, माँ और भाई का भी सगा नहीं रहता। अपनी संतान और अपनी पत्नी, बस...! यही समूचा संसार है, सारे दर्शन, वाद और उपवाद परिवार के चौक तक ही सीमित हैं।

दुनियां में फगत मां-बाप नीं मिळै, बीजा सै मिळै। ६६०९

दुनिया में फकत माँ-बाप नहीं मिलते, बाकी सब मिलते हैं।

—माँ-बाप का निस्वार्थ स्नेह और त्याग संसार में कहीं उपलब्ध नहीं है। यदि भाग्य और संयोग से उपलब्ध हो भी जाय तो उसका मूल्य चुकाने योग्य क्षमता किसी की भी नहीं है। दुनिया की सारी माया भी उसके लिए कम है।

दुनियां में भाई जैड़ौ सैण नीं अर भाई जैड़ौ बैरी नीं। ६६१०

दुनिया में भाई जैसा हितैषी नहीं और भाई जैसा बैरी नहीं।

—प्राणी जगत् विशेषकर मनुष्य समाज में स्वार्थ से बड़ा रिश्ता न माँ-बाप का है और न भाई का। स्वार्थ सधता रहे तो संभवतया शांति बनी रहती है। स्वार्थों का टकराव होते ही एक दूसरे के शुभचिंतक भ्राता, पक्के दुश्मन बन जाते हैं। और यों सामान्यतया भाई से अधिक आत्मीय कोई नहीं होता। भाइयों के बीच संपत्ति के बँटवारे को लेकर तब तक भयंकर झगड़ा रहता है—जब तक सलट न जाये। दूसरों के साथ तो संपत्ति के बँटवारे का कोई मसला नहीं रहता, इसलिए खामखाह झगड़ने में कोई तुक नहीं। पर भाइयों के बीच तो यह संभावना हरदम बनी रहती है, इसलिए दुश्मनी का आधार कभी मिटता नहीं। मनुष्य अपने स्वार्थ के प्रति नितांत अंधा-बहरा होता है।

पाठा: **भाई जैड़ौ सैण नीं अर भाई जैड़ौ दोखी नीं।** दोखी = दुश्मन।

दुनियां में भायां रौ बैर सबसूं भूंडौ। ६६११

दुनिया में भाइयों का बैर सबसे बुरा है।

—दूसरों के साथ संपत्ति के बँटवारे की समस्या नहीं रहती, पर भाइयों के बीच तो झगड़े की यही जड़ रहती है। इसलिए झगड़ा बना रहता है। और संपत्ति का झगड़ा तब तक उग्र बना रहता है, जब तक सही बँटवारा भाई आपस में न मान लें। परायी बहुओं के तो खून का रिश्ता होता नहीं, इसलिए वे अपने स्वार्थवश भाइयों को उकसाती रहती हैं। सामान्यतया झगड़े की जड़ में बहुओं का ही हाथ रहता है। बहू का कहना मानते कोई बिरला ही भाई, भाई का कहना माने!

दुनियां में सगळा ई मां रै चूंघ्योड़ा व्है। ६६१२

दुनिया में सभी माँ के चूँघे हुए होते हैं।

—सही है कि संतान का जन्म माँ-बाप के सहवास से होता है, पर जन्म के पश्चात् बच्चे के दुग्ध-पान व समस्त पालन-पोषण की जिम्मेवारी माँ की ही होती है। माँ के स्तनपान की शक्ति हर संतान को मिलती है। जब कोई ताकतवर निर्बल को देखता है, तब निर्बल यह कहकर अपना पक्ष प्रबल करता है कि उसने भी अपनी माँ का दूध चूँघा है, किसी से दबकर

नहीं चलेगा। केवल ताकतवर ही अपनी माँ का दूध चूँघने का दावा नहीं कर सकते। माँ के दूध की संजीवनी शक्ति सबको मिलती है, इसलिए कोई किसी से कमजोर क्यों होगा?

पाठा : सगळा टाबर ई मां रै चूंघ्योड़ा व्है।

दुनियां में सब नांणै री रांमत है। ६६१३

दुनिया में सब रम्मत रुपयों की है।

रांमत = रम्मत, खेल, तमाशा, लीला।

—मानवीय संसार में सब कारोबार, हलचल और समस्त क्रियाशीलता धन की वजह से ही है। माया का उजाला सूर्य से कम नहीं। सूर्योदय के साथ ही जिस प्रकार समस्त प्राणी चहचहाट और कलरव करके सक्रिय हो जाते हैं, उसी प्रकार संसार में सारी ऊर्जा, शक्ति, संचार और प्रसार सब माया की निर्बाध लीला है। धन के अभाव में सर्वत्र मसान-सी शांति व्याप्त हो जाय।

दुनियां में सै माया मेह री है। ६६१४

दुनिया में सब माया मेह की है।

—बरसात से ही समस्त प्राणियों की गुजर-बसर होती है। बरसात न हो तो कहाँ घास, कहाँ हरियाली और कहाँ अनाज। जीवन संभव ही न रहे। इसलिए संसार में जो कुछ भी खुशहाली है, वह सब बरसात का ही चमत्कार है।

मि.क.सं.४९३०

पाठा : संसार में सरब माया पांणी री।

दुनियां री जीभ कुण पकड़ै? ६६१५

दुनिया की जीभ कौन पकड़े?

दे.क.सं.२७९०

पाठा : दुनियां रै मूंडै ढाकण नीं ढाकीजै। दुनियां रौ मूंडौ थोड़ौ ई खांमीजै।

दुनियां रै मूंडै आडा हाथ नीं लागै।

दुनियां रै सरायां ईं आछौ बाजै। ६६१६

दुनिया के सराहने से ही कोई अच्छा कहलाता है।

—अपने मुँह मियाँ-मिट्ठू बनने से काम नहीं चलता, दूसरे प्रशंसा करें तभी अच्छापन प्रमाणित होता है। माँ या अन्य परिजनों की सराहना भी कुछ माने नहीं रखती, जब तक पराये लोग या अधिकांश समाज के द्वारा प्रशंसा के बोल नहीं फूटते।

दुनियां लग तौ सगळा ई पूगै, पण रांम लग कुण ई नीं पूगै। ६६१७

दुनिया तक तो सभी की पहुँच होती है, पर राम तक कोई नहीं पहुँच सकता।

—राजा, महात्मा, बादशाह या मायापति—ये चाहे जितने बड़े हों पर इन तक तो किसी-न-किसी तरीके से पहुँच सुलभ हो जाती है पर राम के दरबार में साधारण आदमी तो दूर बादशाह या कोई मायापति भी नहीं पहुँच सकता। अलबत्ता भक्तगण वहाँ पहुँचने का दावा अवश्य करते हैं, पर अब तक किसे भी इस सच्चाई का पता नहीं लगा।

मि.क.सं. ६३४४

दुनियां है तौ मतलब तौ व्हैला इज। ६६१८

दुनिया है तो मतलब तो होगा ही।

—समूची दुनिया का अस्तित्व ही स्वार्थ पर टिका है, न कि वराह की दाढ़ पर या शेष नाग के फन पर या कच्छप की पीठ पर। इसलिए स्वार्थ या मतलब के प्रति तनिक भी आश्चर्य नहीं करना चाहिए। संसार की परिभाषा ही स्वार्थ है।

दे.क.सं.६५९२

दुरबळ री हाय खोटी। ६६१९

दुर्बल की हाय-बुरी।

दे.क.सं.३३१८,३३२०

दुविध्या में दोनूं गई, माया मिळी नंह रांम। ६६२०

दुविधा में दोनों गई, माया मिली न राम।

—किसी भी काम की सफलता के लिए दृढ़ निश्चय करना अनिवार्य है। दुविधा या असमंजस की स्थिति में न चरम-लक्ष्य ही प्राप्त होता है और उलटे छोटी-मोटी सांसारिक उपलब्धि भी नष्ट हो जाती है। इसलिए कि चरम लक्ष्य की मृग-मरीचिका के पीछे हाथ लगी माया भी क्षीण होने लगती है।

दुविध्या है अत अटपटी , घट-घट मांय घड़ीह । ६६२१
किण-किणनै सम .ावस्यां , कुवै इज भांग पड़ीह ।।

दुविधा है अति अटपटी, घट-घट माँहि घड़ी ।
किस किसको समझायँ, कुएँ ही भंग पड़ी ।।

—आज देश की एकदम यही स्थिति है, न राजनेता समझने को तैयार हैं, न छोटे-बड़े अधिकारी, न सेठ, न सिपाही, न विद्यार्थी, न किसान और न मजदूर फिर उसका कैसे निस्तार हो ! बाहर से आये विदेशियों का भी भरोसा नहीं, वे तो देशवासियों से अधिक घातक हैं—हर कुएँ में क्या, हर नल में ही भंग घुली है । देश की ऐसी दुर्दशा देखकर ईश्वर ने भी अपने हाथ खींच लिये हैं, वह भी उसका 'मालिक' नहीं बनना चाहता ।

दुसमण अर भाटा नै जोरदार हाथ घालणौ । ६६२२

दुश्मन और पत्थर के लिए पकड़ बहुत मजबूत होनी चाहिए ।

—ढिलाई बरतने से दुश्मन और भी कसकर प्रतिघात करता है । पत्थर छूट जाय तो हाथ-पाँव और पसलियाँ तोड़ सकता है । या तो दोनों से अड़ना ही नहीं चाहिए । गर अड़ो तो पूरी ताकत लगाकर अड़ो, अन्यथा पूरा खतरा बना रहेगा ।

पाठा : भाटा अर बैरी नै जोरदार हाथ घालणौ ।

दुसमण री किरपा बुरी , भली सैण री तास । ६६२३
जद सूरज आड़ंग रचै , तद बरसण री आस ।।

बैरी की अनुकंपा बुरी, सुखद स्वजन का त्रास ।
जब सूरज तप-ताप करे, तब पानी की आस ।।

—दुश्मन की अनुकंपा भी घातक होती है, जब कि परिजनों द्वारा दिया हुआ कष्ट भी उसी तरह कल्याणप्रद होता है, जिस तरह सूरज क्रुद्ध होकर आग न बरसाये तो वर्षा होने की कोई आशा ही नहीं रहती ।

—प्रकट व्यवहार की अपेक्षा अप्रकट नीयत अधिक विश्वसनीय होती है ।

दुसमण रै सांम्ही जूं तौ व्हैणौ ई पड़ै । ६६२४

दुश्मन के आगे जूँ तो होना ही पड़ता है ।

—जूँ हमेशा बालों में छिपकर रहती है। उससे सबक ग्रहण करते हुए दुश्मन से भी छिपकर रहना उचित है, वरना अचीती विपदा का सामना करना पड़ सकता है।

—दुश्मन से बचाव की नीति कारगर सिद्ध होती है।

दुस्टां री संगत में तौ धूड़ इज पड़ै। ६६२५

दुष्टों की संगति में तो धूल ही पड़ती है।

—दुष्टों की संगति से बदनामी तो होती ही है, पर आर्थिक, शारीरिक और मानसिक क्षति भी पहुँचती है, इसलिए उनसे दूर रहना ही लाभ-प्रद है।

—दुष्ट तो वक्त पर दुष्टता किये बिना नहीं रहता, इसलिए उससे बचकर रहना ही श्रेयस्कर है।

दुस्मीं नीं है तौ उधार देयनै जोय। ६६२६

दुश्मन नहीं है तो उधार देकर देखो।

—संभवतया इसी आशय से कुछेक दुकानों पर लिखा रहता है कि 'उधार मित्रता की कैंची है।'

—यदि आपका कोई दुश्मन नहीं है तो किसी को उधार देकर देख लीजिये या किसी का भला करके देख लीजिए—आपके दुश्मनों का ताँता लग जाएगा।

दूखता माथै ठेह। ६६२७

फोड़े पर ठेस।

दे.क.सं.४०८०

पाठा : दूखतै आळी ठेह।

दूखते चोट कांणोड़े पेट।–व.२४१ ६६२८

टीसती पीड़ा और असह्य क्षुधा।

—जब कोई व्यक्ति दुहरे संताप से घिरा हो।

—दुख अकेला नहीं आता। उसके साथ और भी कष्ट आ धमकते हैं।

दूखै जिणरै दूखणौ अर पाकै जिणरै पीड़। ६६२९

दुखे उसके फोड़ा, पके जिसके पीड़ा।

—अपने फोड़े की कसक और घाव की पीड़ा भुक्तभोगी ही जानता है।

—जिसे कष्ट होता है, वही उसकी अनुभूति कर सकता है, कोई दूसरा उसे महसूस नहीं कर सकता।

—अपनी पीड़ा स्वयं ही भोगनी पड़ती है, कोई भी स्वजन उसे बाँट नहीं सकता।

—मीराँ ने भी इसी आशय का मर्म बताया है—घायल री गत घायल जांणै, जे कोई घायल होय।

दूखै पेट, कूटै माथौ। ६६३०

दुखे पेट, पीटे सिर।

—फिर इलाज कैसे हो ? पर ऐसा बहानेबाज तो इलाज चाहता ही नहीं, वह तो केवल बीमारी का ढोंग करना चाहता है। पेट दुखे और सिर थामकर बैठा रहे, तब उसका क्या उपाय ?

—समस्या कुछ और, बताये कुछ और, तब उसका उचित समाधान कैसे हो ?

—भेद छिपाने से स्थिति का खुलासा नहीं होता।

पाठा : दूखै पेट अर दबावै माथौ। दूखै पेट नै बतावै माथौ।

दूजां खातर सुगन बतावै, खुद रा दुख निजर न आवै। ६६३१

दूसरों को शकुन बताये, अपनी विपदा नजर न आये।

—हस्तरेखा या पंचांग देखने वाले जोशी या ज्योतिषी दूसरों को शकुन बताते हैं, निःशंक भविष्यवाणियाँ करते हैं पर अपनी विपदाओं का उन्हें कुछ भी अनुमान नहीं होता, उन पर इस कहावत में करारी चोट की गई है कि ऐसे ही विश्वस्त भविष्यवक्ता हैं तो अपने कष्ट जानें और उन्हें दूर करें।

दूजां रा अैब सबनै निगै आवै। ६६३२

दूसरों के ऐब सबको नजर आते हैं।

—यह एक अजीब मनोवैज्ञानिक गुत्थी है कि दूसरों के छोटे नुक्स भी सबको बड़े रूप में साफ दिखलाई पड़ते हैं, पर अपने बड़े अवगुण देखने के लिए वे निपट अंधे बन जाते हैं। इसके विपरीत मनुष्य को अपने गुण तो अधिक मात्रा में दिखते हैं और दूसरों के गुण दूर-दूर तक दिखलाई नहीं पड़ते।

दूजां रा पग धोवै नायण, आपरा धोवती लाजै । ६६३३

दूसरों के पाँव धोये नाइन, अपने धोने में लजाये ।

—दूसरों के पाँव धोना या दूसरों के लिए छोटे काम करना अवश्य लज्जा की बात है, पर लोभ-लालच के वशीभूत या सेवा की भावना से ही जिन लोगों को ऐसे नगण्य काम करने में लज्जा महसूस नहीं होती पर अपने ही घर वही काम करने में जिन्हें काफी संकोच हो, उनके लिए इस उक्ति में तीखा व्यंग्य है ।

—स्वार्थ के वशीभूत जिस व्यक्ति को अपनी सामाजिक मर्यादा का ध्यान न रहे, उसके लिए ।

मि.क.सं. ६४७४

दूजां री करै आस, नित रा करौ उवास । ६६३४

दूसरों की करे आस, रोज करो उपवास ।

—स्वयं कुछ भी परिश्रम न करके जो व्यक्ति दूसरों की कमाई के प्रति आस लगाये रहता है, सिवाय भूख के कुछ भी हाथ नहीं लगता ।

—इस कहावत का आशय यही है कि दूसरों की आस छोड़कर स्वयं अथक मेहनत करो, तभी निस्तार है ।

दूजां री गवाड़ी च्यार खाटां कमर खुलै । ६६३५

दूसरों के घर चार खटिया पर कमर खोले ।

—जो व्यक्ति अपने घर तो किसी को पेड़ की छाँह तले भी न बैठने दे और दूसरों के घर चार खटिया पर कमर खोले यानी खूब तीमारदारी की आशा रखे, आराम से रहना चाहे, उसके लिए ।

—जो मुफ्तखोर दूसरों के घर रुआब जताये ।

दूजां री गाय नै कुण नीरै ? ६६३६

दूसरों की गाय को कौन चराये ?

—दूसरों की गायों को दूहने वाले तो बहुतेरे हैं, पर चराने वाला कहीं नजर नहीं आता ।

—जो गाय अपने खूँटे पर बँधी रहती है, दूध का बासन भरती है, केवल वही गऊमाता है, दूसरी गाय से अपना क्या सरोकार, एक तिनका भी फालतू क्यों खिलाएँ ? अपनी सो अपनी, पराई सो पराई । चाहे गाय हो या भैंस ।

दूजां री छाछ तौ हमेसां खाटी इज व्है । ६६३७

दूसरों की छाछ तो हमेशा खट्टी होती है ।

—उस कृतघ्न व्यक्ति पर कटाक्ष जो दूसरों से सहयोग लेकर भी उनकी बुराई करे ।

—जिस व्यक्ति को दूसरों में केवल बुराइयाँ ही नजर आएँ ।

दूजां री थाळी में घी घणौ दीसै । ६६३८

दूसरों की थाली में घी अधिक नजर आता है ।

—जिस ईर्ष्यालु व्यक्ति की आँखों में दूसरों का मामूली हित या लाभ भी अधिक खटकता हो ।

—जो व्यक्ति दूसरों का लाभ देखकर मन-ही-मन जले, उसके लिए ।

पाठा : पराई थाळी में घणौ दीसै ।

दूजां री दाळ में आपरी ढोकळी सींझावै । ६६३९

दूसरों की दाल में अपनी ढोकली पकाये ।

ढोकळा, ढोकळी = चना, गेहूँ, बाजरा, मक्का आदि के चून की मोटी और गोल रोटी जो कचौरी के आकार की होती है और बंद बासन में भाप के द्वारा पकाई जाती है ।

— जो चालाक व्यक्ति दूसरों के काम में अपने काम का रास्ता निकाल ले ।

—जो व्यक्ति दूसरों के खर्च पर अपना काम बनाले ।

दूजां री भूंडी चीतै तद आप माथै ई पड़ै । ६६४०

दूसरों की बुरी विचारे तब अपने ऊपर ही पड़ती है ।

—जो कुटिल व्यक्ति दूसरों का बुरा सोचे, अंततः वह स्वयं अपने ही फंदे में फँस जाता है ।

—दूसरों का बुरा सोचने वाला खुद कभी सुख से नहीं रह सकता ।

दूजां री साबती सूं घर री खांडी भली । ६६४१

दूसरों की साबत से घर की खंडित ही भली ।

—दूसरों की पूरी रोटी की बजाय अपनी टूटी रोटी ज्यादा मीठी ।

—पराये घर की सुविधा से अपने घर की दुख-दीनता अधिक सुखद महसूस होती है ।

—इस उक्ति में स्वावलंबन का महत्त्व दरसाया गया है ।

दूजां रै आसरा सूं मोटौ कीं सराप नीं। ६६४२

दूसरों के आश्रय से बड़ा और कोई शाप नहीं।

—तुलसी बाबा के मन में राम के साथ-साथ स्वतंत्रता के लिए कितनी चाह थी। जाने किस वेदना की घड़ी में उनके श्रीमुख से यह मंत्र फूटा— पराधीन सपनेहु सुख नाहिं।

—दूसरों के आसरे जीना मौत से भी विकट त्रासदी है।

दूजां रै घर माथै मछरां नीं करीजै। ६६४३

दूसरों के सहारे मौज-मस्ती नहीं चलती।

—अपने घर की पूँजी पर मौज करो या मस्ती करो, कोई रोकने वाला नहीं, उस पर किसी का नियंत्रण नहीं। पर दूसरों की पूँजी पर तो निवाले-दर-निवाले बंधन है, तिरस्कार है।

—अपने पसीने की बजाय दूसरों के इत्र की आस रखना ज्यादा कष्टप्रद है।

दूजां रै धन लिछमीनाथ बण्योड़ा। ६६४४

दूसरों के धन पर लक्ष्मीनाथ बने हुए हैं।

—जो व्यक्ति दूसरों के धन पर गुलछर्रे उड़ाये, रुआब जताये, वैसा आडंबर अधिक चलता नहीं, सपने की तरह टूट जाता है।

—दूसरों की पूँजी पर ऐश करने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

पाठा : पराये धन लिछमीनाथ बण्योड़ा।

दूजां रै मूसळ रूई सूं ईं पोलौ अर आप सारू तिणकलौ ई भालौ। ६६४५

दूसरों के लिए मूसल रूई से भी नर्म और अपने लिए तिनका भी भाला।

—जो व्यक्ति दूसरों के भारी कष्ट को भी नगण्य माने और अपने मामूली दुख को भी बड़ी भारी आफत समझे।

—दुहरा मापदंड रखने वाले व्यक्ति के लिए।

दूजां रै सोनै रा बाळ, अपांनै कद करै निहाल? ६६४६

दूसरों के सुनहरे बाल, हमें कब करे निहाल?

—दूसरों के सुनहरे बाल अपने सिर की शोभा कभी नहीं बढ़ा सकते।

—राजा या किसी अन्य सेठ के सुनहरे बालों की अपेक्षा अपनी गंज भी बेहतर है।

दूजां रौ मारेळ व्हैणौ, खाहड़ा खावण सूं ई खोटौ। ६६४७

दूसरों के एहसान से दबना जूते खाने से भी बुरा है।

—जूतों की मार का दरद तो कुछ घड़ियों में मिट जाता है, पर एहसान का बोझ हमेशा लदा रहता है।

—त्रण जितना एहसान पहाड़ से भी अधिक भारी होता है, इसलिए जहाँ तक बन पड़े अनशन रखकर जीना भी श्रेयस्कर है।

पाठा : खलकां रौ मारेळ व्हैणौ, ताजणा री फटकार सूं ई माड़ौ।

दूजां रौ माल तूंतड़ां री धड़ में जाय। ६६४८

दूसरों का माल तूँतड़ों की ढेरी में जाय।

तूंतड़ा = बाजरी के दानों पर की बालियाँ—जो फूस जैसी ही निरर्थक होती हैं।

—अपने हाथों से कमाया माल मुश्किल से खर्च होता है। पर दूसरों का माल कचरे की ढेरी के समान नगण्य होता है, जिसे उड़ाने में कोई हिचक नहीं होती।

दूजा पड़्या धेड़ में सगळां पैली आप। ६६४९

दूसरे पड़े खड्ड में, सबसे पहिले आप।

—दावत या अन्य कोई भी ऐश मनाना हो सबसे पहिले अपना ध्यान रखना चाहिए, दूसरे तरसते रहें तो अपनी बला से।

—अपनी चिंता सर्वोपरि, दूसरों की फिक्र करी, न करी।

मि.क.सं.६६०८

दूजा सगळा सांग आ जावै, पण बोहरा रौ सांग अबखौ। ६६५०

दूसरे सब स्वाँग आ जाएँ, पर बोहरे का स्वाँग मुश्किल।

—बाकी जिस-तिस का स्वाँग लाया जा सकता है, पर बोहरे का स्वाँग लाना तो अत्यधिक दुश्वार है। पास में अकूत पूँजी हो, तभी बोहरे का स्वाँग शोभा देता है। अरावली पर्वत को समतल करना आसान है, लेकिन पर्याप्त पूँजी जोड़कर बोहरा बनना मुश्किल है।

दूजी बात खोटी, सिरै दाळ रोटी। ६६५१

दूसरी बातें खोटी, सही दाल रोटी।

दे.क.सं.१६७६,६४७०

दूजौ दुख हाथ में होकौ। ६६५२

दूसरा दुख हाथ में हुक्का।

—लोक वाङ्मय में तंबाकू की प्रताड़ना तो खूब ही की गई है, पर तंबाकू पीने में गाँवों के लोग पीछे नहीं रहते। हुक्के की चिनगारी से कपड़े जलने का डर भी कम नहीं। तंबाकू का धुआँ तो हानिकारक है ही।

दूजौ सांग सोरौ, सती वाळौ दोरौ। ६६५३

दूसरे स्वाँग आसान, सती का स्वाँग दुश्वार।

—राजस्थान में भाँड अन्य जगह पर बहुरुपिया—राजा, शिकारी, गडरिया, बंदर, लुहार और सेठ इत्यादि के स्वाँग आसानी से ले आता है। पर सती का स्वाँग लाना उसके लिए बहुत कठिन है। चिता पर सदेह जलना पड़ता है।

—घर-गृहस्थ की औरतें घर में कैसा भी कठिन-से-कठिन काम कर लेती हैं। जरूरत पड़ने पर युद्ध में चंडी का रूप भी धारण कर सकती हैं, प्रसव की पीड़ा भी सहन कर सकती हैं, पर सती के रूप में चिता पर जलना बेहद कठिन काम है। बिरली औरतें ही कर सकती हैं। यह अच्छी प्रथा है या बुरी—यह एक दीगर प्रश्न है।

दूजौ सुख घर में माया। ६६५४

दूसरा सुख घर में माया।

—स्वस्थ काया के बाद दूसरा सुख मनुष्य के लिए घर में विपुल माया का संचय है। इसके बिना मनुष्य की एक भी जरूरत पूरी नहीं होती—न मकान, न बैल, न गाड़ी, न कपड़े, न बिछावन और न खेती। माया-रहित जीवन मृत्यु से भी बदतर है।

दूझती रौ ओगाळौ, बाखड़ी रै चारौ। ६६५५

दूध देने वाली का कचरा, सूखी गाय-भैंस का चारा।

दूझती = दूध देने वाली गाय-भैंस। बाखड़ी = दूध न देने वाली गाय-भैंस।

—चाहे गऊ-माता हो, चाहे भैंस-महिषी, जब तक उनके स्तनों से दूध निकलता है, तभी उन्हें उम्दा चारा, खली या बाँटा दिया जाता है। सूखने पर न माता की कद्र रहती है और महिषी

की। ठाण का बचा हुआ कचरा उनके सामने डाल दिया जाता है। भूख लगे तो खालें, न लगे तो न खाएँ। किसी को उनकी परवाह नहीं।

—अमीरों के उच्छिष्ट से गरीबों का निर्वाह हो सकता है।

मि.क.सं. ३१९

दूती रांड कठीनै हाली, मांटी-पूत मारवा चाली। ६६५६

दूती रॉंड कहाँ चली, साजन-पूत मारने चली।

—स्वार्थ से बड़ा रिश्ता न पति का और न पूत का। अपनी स्वार्थ-सिद्धि हो तो दूती न पति का लिहाज रखे और न पूत का। उनकी बलि से दूती की मनोकामना पूरी हो तो वह तनिक भी हिचक नहीं रखती।

—जो व्यक्ति अपने स्वार्थ में अंधा-बहरा बनकर अपने परिजनों के प्राणों की भी परवाह न करे।

दूद डोबी मांये नी है, दूद दोवा वाळी मांये है।– भी.४५७ ६६५७

दूध भैंस में नहीं होता, अपितु निकालने वाली में होता है।

—स्पष्ट है कि दूहने वाली की कुशलता, मवेशी के पालन-पोषण में उदारता, वक्त पर उनकी सेवा-चाकरी पर ही दूध की मात्रा निर्भर करती है। तीन दिन भी भैंस को बाँटा न खिलाया जाय तो आधा दूध भी न निकले।

—केवल पूँजी से कमाई नहीं होती, व्यवसायी की अक्ल, निष्ठा और तन्मयता से कमाई होती है।

—फकत औजारों से कोई भी काम संपन्न नहीं होता, कारीगर के कौशल पर सफलता निर्भर करती है।

पाठा : **दूध ढोबा रै मांय नीं, दूहण वाळी रै मांय वै।**

दूद दोवा वाळी नो वीजाये चा।– भी.४५६ ६६५८

दूध दूहने वाली को और दूसरों को छाछ।

—दूध का पहिला अधिकार दूहने वाली का, दूसरों के लिए फकत छाछ।

—किसी वस्तु के सार तत्त्व पर उसके स्वामी का ही अधिकार होता है, शेष तलछट कोई ले जाय, उसकी वह परवाह नहीं करता।

पाठा : दूध धणियां नै अर दूजां नै छाछ।

दूध अर पूत कुण बेचै ? ६६५९

दूध और पूत कौन बेचे ?

—कोई जमाना था तब दूध की मान्यता संतान से कम नहीं थी। यदि संतान का मोल हो तो दूध का मोल हो। पर आज पुत्र का मोल तो उसकी कमाई के अनुसार जरूर है। पर दूध और वह भी पानी मिलाकर बेचने में किसे भी शर्म महसूस नहीं होती।

दूध अर पूत छिपायां नीं छिपै। ६६६०

दूध और पूत छिपाये न छिपे।

—माँ का दूध छिपता नहीं, वह अपनी तासीर का प्रभाव प्रकट करता ही है। माँ के गुण दूध में आ जाते हैं और दूध के गुण पुत्र में आ जाते हैं। पुत्र के गुण-अवगुण नहीं छिपते, न माँ का दूध ही छिपा रहता है। वह पुत्र के माध्यम से बोलता है।

—राजस्थान में जाति के लिए भी दूध का प्रयोग होता है। संत महात्माओं के अलावा भी लोग परस्पर पूछते हैं कि उनका दूध क्या है ? मतलब कि जाति क्या है ? कैसा भी बाना धारण करलो जाति छिपती नहीं।

दूध अर वळै पूजती खांड। ६६६१

दूध और पर्याप्त खाँड़।

—दूध भी पौष्टिक पेय है और खाँड़ का स्वाद भी मीठा है। दोनों एक साथ मिल जाएँ तो क्या कहना !

—दुहरे ठाट या आनंद की वेला प्रमुदित मन से इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

दूध ई धौळौ, छाछ ई धौळी। ६६६२

दूध भी सफेद और छाछ भी सफेद।

—दिखने में दोनों ही पेय सफेद हैं। पर चखने से दूध और छाछ का पता चल जाता है। पर चखने के पूर्व रंग की समानता के कारण धोखा हो जाता है। उसी तरह मनुष्य का भी यही हाल है। ऊपर से सभी मनुष्य दिखते हैं पर भीतर से कोई शैतान है तो कोई सज्जन है। सरल व्यक्ति दुष्ट और सज्जन में भेद नहीं कर पाते। अकसर धोखा खा जाते हैं।

—अच्छे-बुरे के भेद की जिसे पहिचान न हो तब धोखा खाना स्वाभाविक है। अभेद के भेद को न पहिचानने वाली सरल दृष्टि विवेकहीनता की ही द्योतक है।

दूध ई राख, दोवणी ई राख। ६६६३

दूध भी रख, दोहनी भी रख।

दोवणी = दोहनी = वह बासन जिस में दूध दुहा जाता है। दूध दुहने की हँड़िया।

—वही कार्य श्रेयस्कर है जिस में लाभ भी रहे और प्रतिष्ठा भी बच जाय। इस कहावत के शाब्दिक अर्थ में दूध प्रतीक है लाभ या पैसे का। दोहनी प्रतीक है इज्जत या प्रतिष्ठा की। पर व्यापक अर्थ में इसके कई आयाम हैं।

दूध घालणौ दोरौ, छाछ घालणी सोरी। ६६६४

दूध डालना दुश्वार, छाछ डालना आसान।

—मूल्यवान वस्तु का देना मुश्किल है, पर सस्ती चीज देना आसान है। मांगलिक रूप में गुड़ की डली किसे भी दी जा सकती है, पर मिश्री आसानी से नहीं दी जाती।

—हर पदार्थ का लेन-देन उसके विक्रय-मूल्य पर निर्भर करता है।

दूध घालतां दोरी व्है अर छाछ घालतां छाती फाटै। ६६६५

दूध डालते कंजूसी बरते और छाछ डालते छतियाँ दरके।

दे.क.सं.६६६४

दूध चुंघावै मावड़ी, नांव धाय रौ होय। ६६६६

दूध चुंघाये मावड़ी, नाम धाय का होय।

चुंघावणौ = स्तन-पान कराना। मावड़ी = माँ।

—तथाकथित कुलीन घरानों में दूध तो माँ ही पिलाती है, पर बाकी सब पोषण धाय करती है। पर प्रतिष्ठा धाय की ही होती है कि उसने संतान को दूध पिलाकर लालन-पालन किया।

—असली काम किसी का और बाहर नाम किसी का।

दूध जांणै मोर रा आंसू व्है ज्यूं। ६६६७

दूध मानो मोर के आँसुओं की नाईं।

—ऐसी मान्यता है कि नाचते हुए मोर के आँसू ढेलड़ी (मोरनी) निगलती है तभी वह गर्भवती होती है। मोर के आँसू निहायत स्वच्छ और शक्तिवर्धक होते हैं, गर्भाधान के निमित्त बनते हैं। उसी दूध से मोर के आँसुओं की उपमा दी जा सकती है जो पूर्णतया विशुद्ध, स्वच्छ, पौष्टिक और शक्तिवर्धक हो।

दूध तौ जांवण सूं ईं जमै। ६६६८

दूध तो जामन से ही जमता है।

जांवण = दही जमाने के निमित्त दूध में डाला जाने वाला खट्टा पदार्थ ।

—दूध में दूध डालने से दही नहीं जमता। छाछ या दही डालने से ही जमता है।

—गुरु के ज्ञान का जामन अंतस् में प्रवेश करते ही शिष्य का काया-कल्प होता है।

—इसका अप्रत्यक्ष अर्थ एक यह भी कि दो औरतों के पारस्परिक रज से गर्भ नहीं ठहरता। पुरुष के वीर्य से ही गर्भाधान होता है।

दूध तौ माय रौ अवर दूध कायरौ। ६६६९

दूध तो माँ का ही, बाकी दूध बेकार।

—संतान के पोषण हेतु श्रेष्ठतम दूध माँ के स्तनों का ही है, बाकी दूध कामचलाऊ। प्रकृति-प्रदत्त कोई भी व्यवस्था निरर्थक या बेमानी नहीं होती। हालाँकि अब मनुष्य प्रकृति के कार्य-कलापों में दखल देकर उससे श्रेष्ठ साबित करने की होड़ में लगा है। कभी वह वैज्ञानिकों के द्वारा माँ के दूध को घातक सिद्ध करता है, कभी वापस माँ के दूध की महिमा बताने लगता है।

पाठा : दूध तौ मां रौ इज वत्तौ व्है।

दूध-दही रा पांवणां, छाछ नै अळ[illegible]ावणा। ६६७०

दूध-दही के पाहुनों को छाछ डालते संकोच होता है।

—घर में यकायक महँगे मेहमान आ जाएँ, जिनके लिए दूध, दही मक्खन और घी की तीमारदारी भी कम है। लेकिन छाछ के अलावा ये चीजें उपलब्ध न हों तो उन्हें छाछ डालते हुए कितना अटपटा लगता है! पर लाचारी में सब चुपचाप बर्दाश्त करना पड़ता है।

—उच्च मेहमानों के योग्य घर में उचित व्यवस्था न हो,तब विवशता दरसाते हुए यह कहावत प्रयुक्त होती है।

दूध नै दळियौ , कूद नै मिळियौ । ६६७१

दूध और दलिया, कूदकर मिले ।

—दूध और दलिये का मेल इतना माकूल है कि वे खुशी में कूदकर परस्पर मिले ।

—जिन मित्रों में बेहद घनिष्ठता हो,उनके लिए।

दूध नै दोवणी दोनूं गमाई । ६६७२

दूध और दोहनी दोनों गँवाई ।

दोवणी = दोहनी = वह बासन जिस में दूध दुहा जाता है । दूध दुहने की हँड़िया ।

—आर्थिक क्षति भी हुई और प्रतिष्ठा भी खोई ।

—जब किसी काम से दुहरा नुकसान हो तब ।

दूध पांणी रा निवेड़ा कीधा । ६६७३

दूध पानी का निपटारा किया ।

दे.क.सं.६५९७

दूध पीवती बिलाई , गिंडकड़ां में जाय पड़ी । ६६७४

दूध पीती बिल्ली, कुत्तों में जा पड़ी ।

—दूध पीती बिल्ली अचानक कुत्तों से घिर जाय तो दूध के आनंद की बजाय जीवन के ही लाले पड़ जाते हैं ।

—जब सुख-शांति से जीवन बिताते कोई व्यक्ति यकायक किसी अचीती विपदा में फँस जाय तब ।

दूध बाड़ में ढोळता तौ बाड़-चीकणी व्हैती । ६६७५

दूध बाड़ में गिराते तो बाड़ चिकनी होती ।

—जिस निरर्थक खर्च का परोक्ष-अपरोक्ष रूप से रंचमात्र भी सदुपयोग न हो ।

—जिस औलाद के पालन-पोषण और शिक्षा में हजारों रुपये बर्बाद करने के बाजजूद वह रत्ती-भर भी कमाई न करके बिल्कुल ही बिगड़ जाय,उसके लिए ।

—दुष्ट व्यक्ति की सेवा भी इसी तरह निरर्थक जाती है।

दूध बेचौ भलांईं पूत बेचौ। ६६७६

दूध बेचो भले ही पूत बेचो।

दे.क.सं.६६५९

पाठा : दूध बेचणौ अर पूत बेचणौ बिरौबर है। दूध बेचौ भावै पूत बेचौ।

दूध में ईं कांजी। ६६७७

दूध में भी काँजी।

कांजी = कांजिक = कांजिकम् = मट्ठा मिलाकर खट्टा किया हुआ एक पेय पदार्थ- विशेष जो मंदाग्नि व अजीर्ण के रोगियों के लिए औषधि के रूप में प्रयुक्त होता है।

—जो हरामी साथ मिलकर धोखा दे या काम बिगाड़े।

—किसी भले काम में विघ्न पड़ जाय तब।

—बेमेल स्वभाव के व्यक्तियों में मित्रता टिकती नहीं, दूध में काँजी के उनमान फट जाती है।

दूध में खांड अर छाछ में लूण। ६६७८

दूध में खाँड़ और छाछ में नमक।

—जिस चीज के मिश्रण से जो पेय अधिक स्वादिष्ट बनता हो, वही उसके लिए उपयुक्त है। इसी प्रकार मित्रता और पारस्परिक संबंधों में भी खाँड़ और नमक के सदृश मिश्रण श्रेयस्कर होता है।

—योग्यता के अनुसार ही सम्मान होना चाहिए।

दूध में पांणी घाल्यां रंग थोड़ौ ईं बदळै। ६६७९

दूध में पानी डालने से रंग थोड़े ही बदलता है।

—दूध में पानी के मिश्रण से रंग भले ही न बदले पर स्वाद अवश्य बदलता है। दूध की एक तासीर और भी है कि पानी को कभी अपने से विच्छिन्न नहीं करता, पर छाछ पानी को अलहदा करके ऊपर ले आती है और स्वयं नीचे इकट्ठी हो जाती है।

—सज्जन व्यक्तियों पर कुसंगति का तनिक भी असर नहीं होता, वे अपने रंग में उसी भाँति रंगे रहते हैं।

दूध रा दूध में अर पांणी रा पांणी में। ६६८०

दूध के दूध में और पानी के पानी में।

दे.क.सं.६५९७

दूध री गरज छाछ सूं नीं सरै। ६६८१

दूध की गर्ज छाछ से पूरी नहीं होती।

—रंग एक-सा सफेद हुआ तो क्या दोनों के गुणों में बहुत अंतर है। केवल रंग की समानता के कारण दोनों एक नहीं हो सकते। दूध श्रेष्ठ है तो श्रेष्ठ ही रहेगा। छाछ से बेशी मूल्यवान है तो वह मूल्यवान ही रहेगा।

—परोक्ष रूप से यह कहावत पुत्र या कन्या के लिए भी लागू होती है। कन्या पुत्र की होड़ नहीं कर सकती। पुत्र की गर्ज बेटी से पूरी नहीं पड़ सकती।

—बड़े अधिकारी की गर्ज मामूली अहलकार से पूरी नहीं होती।

दूध री मलाई, रुखाळी में मिनकी बिठाई। ६६८२

दूध की मलाई, रखवाली में बिल्ली बिठाई। •

—दुष्ट व्यक्ति के हाथ में बड़ी जिम्मेवारी सौंपने का वही दुष्परिणाम होगा, जो दूध की जिम्मेवारी बिल्ली को सौंपने पर होता है।

—आज-कल के नेताओं पर, नौकरशाहों पर, समस्त कर्मचारियों पर, सेठ-साहूकारों पर, पत्रकारों पर और अमरीका पर यह कहावत एकदम सटीक बैठती है।

पाठा : दूध री **रुखाळी मिनकियां कद करी ?**

दूध रै कड़ाव नींबू निचोवणिया है। ६६८३

दूध के कड़ाह में नींबू निचोने वाले हैं।

—बने-बनाये काम का सर्वनाश करने वाले व्यक्तियों के लिए।

—जो व्यक्ति सामाजिक कल्याण के हर काम में विघ्न उत्पन्न करते हैं, उन पर कटाक्ष।

दूध रौ उफांण कित्तीक ताळ ! ६६८४

दूध का उफान कितनी देर तक !

—संत-महात्मा या सज्जन व्यक्ति का गुस्सा अधिक देर नहीं टिकता।

—निर्बल या कायर व्यक्ति का जोश तत्काल बैठ जाता है।

—जो व्यक्ति पल में क्रुद्ध और पल में शांत हो जाय उसके लिए।

दूध रौ दाझ्योड़ौ, छाछ नै ई ठार-ठार पीवै। ६६८५

दूध का जला, छाछ को भी फूँक-फूँककर पीता है।

—रंग की समानता के कारण दूध से जला व्यक्ति छाछ से भी बिदकता है। पीना जरूरी हो तो उसे भी फूँक-फूँक कर पीता है।

—धूर्त और दुष्टों से एक बार सताया हुआ व्यक्ति साधु-संतों और नेक मनुष्यों पर भी यकायक विश्वास नहीं करता।

—जो व्यक्ति अपने जीवन में एक बार ठगाया जा चुका है,वह बाद में कदम-कदम पर सतर्क हो जाता है।

मि.क.सं.५१४५

दूध रौ दूध अर पांणी रौ पांणी। ६६८६

दूध का दूध और पानी का पानी।

—सच्चे न्यायकर्ता की सर्वत्र प्रशंसा होती है कि उसने दूध और पानी की सच्ची परख कर ली।

—जिस प्रकार नीर-क्षीर विवेकी हंस दूध तथा पानी को अलग कर देता है,उसी प्रकार कोई न्यायकर्ता अपने विवेक से सच्चा न्याय करे तो उसकी न्यायशीलता के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

दूध रौ रंग तौ धवळौ इज हुवैला। ६६८७

दूध का रंग तो सफेद ही होता है।

—प्रकृति का यह अजीब करिश्मा है कि संसार के समस्त प्राणियों का दूध सफेद ही होता है उस में किसी अपवाद की संभावना नहीं।

—धूर्त और दुष्ट व्यक्तियों के कई रंग-ढंग हैं,पर सज्जन,सौम्य,शालीन और महान व्यक्तित्व वाले उदात्त इंसानों की समान प्रकृति होती है। दूध जैसी उज्ज्वल।

दूध वाळौ उफांण। ६६८८

दूध वाला उफान।

—क्षणिक तैश में आना।

—जिस व्यक्ति को तत्काल क्रोध आ जाय तथा वापस शीघ्र ही शांत हो जाय, उसकी प्रवृत्ति का दृष्टांत दूध के क्षणिक उफान से दिया जाता है।

मि.क.सं.६६८४

दूध सारू गाय नीं अर नांव गोपाळ। ६६८९

दूध के लिए गाय नहीं और नाम गोपाल।

—नाम के विपरीत लक्षण।

—जो व्यक्ति अपनी वास्तविक स्थिति भूलकर बड़ी-बड़ी बातें बघारें उनके लिए।

दूध सूं धोयां कोयला किसा धौळा व्है? ६६९०

दूध से धोने पर कोयले सफेद थोड़े ही होते हैं!

—जिस बुरे या दुष्ट व्यक्ति पर सीख-समझाइश का कोई असर न हो।

—जिस दोगले व्यक्ति पर अच्छी संगत का तनिक भी असर न हो।

—जन्मजात प्रकृति उपदेश या शिक्षा से नहीं मिटती।

पाठा : **दूधां धोयां कोयला ऊजळा नीं व्है।**

दूधां न्हावौ अर पूतां फळौ। ६६९१

दूध से नहाओ और पुत्रवती होओ।

—जब कभी कोई दुलहन वृद्धा के पाँव लगती है, तब वह उसके सिर पर हाथ रखकर यह आशीर्वाद देती है। यह आम प्रचलन है। संपत्ति और संतति की अभिवृद्धि। भारत जैसे खेतिहर देश में इससे श्रेष्ठ और क्या आशीर्वाद हो सकता है! दूध प्रतीक है संपत्ति का, ठाट से जीवन बिताने का। पुत्र प्रतीक है बलिष्ठ व संयुक्त परिवार का—जितने हाथ अधिक होंगे, खेती की सँभाल उतनी ही अच्छी होगी। पर आजकल बढ़ती आबादी के अभिशाप को ध्यान में रखते हुए अधिक पुत्रों की माँ होना कल्याणप्रद नहीं है। पर पुत्रवती होना तो मातृत्व की सार्थकता है ही।

दूब तौ चरण सारू इज व्है । ६६९२

दूब तो चरने के लिए ही होती है ।

—सामंती व्यवस्था में गरीब की स्थिति दूब जैसी ही होती है । जिस तरह दूब हर पशु के लिए चरने के निमित्त ही होती है, उसी तरह गरीब व्यक्ति बेगार के लिए ही जन्म लेता है ।

—गरीबों का शोषण तो हर व्यवस्था में होता है ।

—सार्वजनिक चीज हर व्यक्ति के उपयोग की खातिर ही होती है ।

दूबळा ऊंट माथै दो बोरी वत्ती । ६६९३

दुबले ऊँट पर दो बोरी अधिक ।

—किसी गरीब पर दुहरा अत्याचार हो तब ।

—आज्ञाकारी व्यक्ति को दुगनी बेगार करनी पड़ती है ।

—परिवार में सबसे छोटे सदस्य को ही अधिकांश काम करने पड़ते हैं ।

पाठा : **सैणा ऊंट माथै दो थाटी वत्ती लादै । दूबळा माथै दो लदै ।**

थाटी = बोरा । लादै = लदना ।

दूबळा अे हो दुख ।–भी.४५५ ६६९४

दुर्बल को सौ दुख ।

—दुर्बल व्यक्ति को सौ कष्ट घेरे रहते हैं ।

—दुर्बल व्यक्ति को दबाने के लिए सभी तैयार रहते हैं ।

पाठा : **दूबळा नै सौ दोखा ।**

दूबळा चोर सांम्ही मिन्नी ई घोरका करै । ६६९५

दुबले चोर के सामने बिल्ली भी गुर्राती है ।

—दुर्बल व्यक्ति के लिए इस संसार में कहीं सुख नहीं है ।

—दुर्बल व्यक्ति का कोई हमदर्द नहीं होता । बिल्ली भी उसे देखकर गुर्राती है ।

दूबळा नै तौ देव ई मारै । ६६९६

दुर्बल को तो देव भी मारता है ।

—निर्बल का साथ भाग्य या ईश्वर भी नहीं देता। प्रकृति का भी यह अटल नियम है कि जो शक्तिशाली है वही जीवित रहता है। सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट। अशक्त को तो आखिर नष्ट होना ही है। उसकी नियति ही मिट जाने में है!

दूबळा नै दो असाढ़। ६६९७

दुबले को दो आषाढ़।

—दुर्बल मवेशी गर्मियों में वैसे ही कमजोर हो जाते हैं। संयोग से 'अधिक मास' आषाढ़ में आ जाय तो दुबले मवेशी—बकरी, भेड़ व गाय-भैंस के लिए अधिक भार पड़ जाता है।

—दुर्बल व्यक्ति पर दुहरी मार पड़े तब।

पाठा : **दूबळी अर दो असाढ़।**

दूबळा नै दोखौ घणौ के चींचड़ के पांय। ६६९८

दुर्बल को दुख बहुतेरे या तो चींचड़ या पाँय।

चींचड़ = चींचड़ौ = किलनी या किल्ली नामक कीड़ा जो पशुओं के शरीर पर याँ त्वचा से चिपट कर उनका रक्त पीता है।

पांय = पांम = रक्त विकार के समय होने वाला एक रोग विशेष—पीली-पीली फुंसियों के साथ खुजली भी चलती है। दूर से बदबू भी आती है।

—अमूमन दुबले ऊँट और कुत्ते में ये दोनों रोग पाये जाते हैं। हालत बिगड़ती ही रहती है।

—दुर्बल व्यक्ति के दुखों का कोई पार नहीं है।

दूबळा बेटा नै कंदोरौ ई भारी। ६६९९

दुर्बल बेटे को मेखला भी भारी।

—करघनी या मेखला का भी भार महसूस हो उस अशक्त बेटे से किसी भी काम की आशा नहीं रखनी चाहिए।

—जिस कमजोर व्यक्ति के लिए हलका काम करना भी कठिन हो।

पाठा : **दूबळा डीकरा नै कणकती ई भारी।**

कणकती = अमूमन बच्चों की कमर पर बाँधने वाली डोरी।

दूबळौ जैठ देवरां बिरौबर। ६७००

दुर्बल जेठ देवर के समान।

—जेठ उम्र में देवर से बड़ा होता है। सामान्यतया उसके प्रति आदर-सम्मान का भाव रखा जाता है। बहुएँ ससुर व जेठ से घूँघट भी रखती है। पर आर्थिक स्थिति से कमजोर जेठ का कोई आदर नहीं करता, वह देवर के बराबर ही माना जाता है।

—पद में उच्च होने पर भी जो अधिकारी कमजोर होता है, उसका कोई मान नहीं रखता, उसकी कोई आज्ञा नहीं मानता।

दूबळौ तड़कै पण सबळौ नीं तड़कै। ६७०१

दुर्बल तड़कता है पर सबल नहीं तड़कता।

—दुर्बल व्यक्ति को गुस्सा ज्यादा आता है, पर इसके विपरीत बलिष्ठ व्यक्ति धीरज से काम लेता है। क्योंकि उसे अपनी ताकत पर विश्वास है और दुर्बल व्यक्ति गुस्से के द्वारा अपनी ताकत की क्षति-पूर्ति करता है।

—कमजोर को गुस्सा भारी।

दूबळौ देखनै अड़णौ नीं अर मातौ देखनै डरणौ नीं। ६७०२

दुर्बल देखकर अड़ना नहीं और मोटा देखकर डरना नहीं।

—किसी भी व्यक्ति या वस्तु की उसके बाह्य रूप से पहिचान नहीं होती, अमूमन भ्रम की गुंजाइश रहती है। दिखने में दुर्बल व्यक्ति भीतर से ताकतवर और साहसी भी हो सकता है। इसके विपरीत मोटा दिखने वाला व्यक्ति शक्तिहीन व कायर भी हो सकता है।

—किसी भी व्यक्ति के बाह्य स्वरूप से उसके व्यक्तित्व का आकलन नहीं करना चाहिए।

दे.क.सं.५०१४,६१८५

पाठा: थाकोड़ौ देखनै भिड़णौ नीं अर मातौ देखनै डरणौ नीं।

दूबळौ धीणौ दूजां री छाछ गमावै। ६७०३

दुर्बल गाय-भैंस दूसरों की छाछ भी गँवाती हैं।

धीणौ = दूध देने वाले पशुओं का होना।

—जिस परिवार में दुर्बल गाय-भैंस जो कम दूध देती है, वह दूसरों के घर छाछ लेने के लिए भी नहीं जा सकता। जाने पर शायद लोग टोक भी दें कि आपके घर तो गाय-भैंस है फिर छाछ के लिए चक्कर क्यों काटते हो ?

—कमजोर आर्थिक स्थिति के भ्रम वाला व्यक्ति दूसरे छोटे-मोटे फायदों से भी वंचित रह जाता है, क्योंकि लोगों को वहम होता है कि वह संपन्न है, पर वास्तव में वह संपन्न है नहीं।

दूर बळंता , दूर जळंता। ६७०४

आग से दूर, कलह से दूर।

—बुजुर्गों की नसीहत के अनुसार आग और कलह से दूर ही रहना चाहिए।

—दंगे-फसाद से दूर रहना ही लाभप्रद है।

—इस कहावत में शब्दों की जो लयात्मक खूबसूरती है, उसे हिंदी अनुवाद में नहीं उतारी जा सकती। बळंता और जळंता दोनों ही 'जलने' के ही पर्याय हैं। पर इनके अर्थ-संकेत भिन्न हैं।

दूर रा ढोल सुहावणा लागै। ६७०५

दूर के ढोल सुहाने लगते हैं।

—दूर के पहाड़, दूर के ढोल अधिक सुहाने लगते हैं। पहाड़ के पास जाने पर बदरंग पत्थर ही दिखलाई पड़ते हैं। ढोल की आवाज नजदीक से सुनने पर कानों में खटकती है—दूर से अच्छी लगती है।

—दूरी से हर चीज सुंदर लगती है, पास आने पर उसकी बुराइयाँ नजर आने लगती हैं।

दे.क.सं.३३९

दूहा , टुकड़ा , दांम जोड़्यां सूं ई जांणसी। ६७०६

दोहे, टुकड़े, दाम जोड़ने से ही सार्थक होते हैं।

—दोहा पूरा जोड़ने से ही मार्मिक होता है। जीविका भी स्थाई हो तो वह सार्थक है। दाम या धन जुड़ने से ही उसका महत्त्व है।

—प्रत्येक वस्तु की पूर्णता का ही महत्त्व है।

दे - दौ

देखणौ सो भूलणौ नीं। ६७०७

देखना सो भूलना नहीं।

—सुनी हुई बात भूली जा सकती है, पर देखा हुआ दृश्य भुलाया नहीं जा सकता। इसलिए भ्रमण और विचरण का महत्त्व है।

—आँखों से देखी हुई वस्तु की स्मृति पर गहरी छाप अंकित होती है।

देखत रौ चोखौ अर लखणां रौ खोटौ। ६७०८

दिखने में चोखा और लक्षण खोटे।

—बाहर से रूप-रंग और बाना तो अच्छा पर आदतों से बुरा हो, ऐसे छद्म व्यक्ति के लिए।

—ऐसे व्यक्तियों की खातिर दो शब्दों की कहावत और है—गऊ-मुखी नाहर, जिसका मुख तो गाय के समान निर्दोष हो, पर भीतर से व्याघ्र या नाहर की नाईं बर्बर हो।

देखत सीखत। ६७०९

देखादेखी से ही शिक्षा मिलती है।

—राजस्थानी में जो कहावत दो शब्दों के द्‌वारा अर्थ व्यंजित करती है, वह अनुवाद में पाँच शब्दों का विस्तार पाकर भी उतनी मार्मिक नहीं बन पाई। मातृभाषा की यही नैसर्गिक शक्ति है।

—पशु-पक्षियों के बच्चे किसी भी पाठशाला में शिक्षा ग्रहण करने नहीं जाते। माँ की देखादेखी से ही सारी विद्‌या प्राप्त कर लेते हैं।

—दृष्टि, ज्ञान के लिए सबसे उपयुक्त इंद्रिय है।

देखतै नैणां अर चालतै गोडां। ६७१०

दिखती आँखों और चलते घुटनों।

—प्रत्यक्ष शब्दों के भीतर इस कहावत का अर्थ छिपा है। स्वस्थ मनुष्य की कामना है कि आँखों की ज्योति के रहते और पाँवों में चलने की शक्ति के कायम रहते कूच कर जाय तो उससे सुखद मृत्यु और कोई नहीं हो सकती। बिस्तर पर जर्जरित होकर सड़-सड़कर मरने की यातना ही नारकीय अनुभव है।

देख देखंतां, सीख सिखंतां। ६७११

देख दिखंताँ, सीख सिखंताँ।

—बुराइयाँ या अवगुणों को प्रत्यक्ष अपनाने से ही उनकी सही परख होती हो, यह जरूरी नहीं है। दूसरों की बुराइयाँ देखकर भी उनसे नसीहत ली जा सकती है और उनसे बचा जा सकता है। पर वास्तव में ऐसा होता नहीं है। गुण की अपेक्षा अवगुणों की शक्ति इतनी ज्यादा है कि बिना आजमाये उन्हें देखने मात्र से उनकी छूत लग जाती है। जब कोई व्यक्ति किसी सीधे बच्चे को दुष्प्रवृत्तियों में फँसा देखकर अचंभा करे तब उसकी अनुभवहीनता को लक्ष्य करके यह कहावत कही जाती है।

—गुण या अच्छाइयाँ देखने मात्र से नहीं आतीं, लंबे समय तक उन्हें बरतना पड़ता है तब कहीं वे व्यक्तित्व का हिस्सा बनते हैं। बुराइयाँ और अवगुणों का इससे उलटा प्रभाव है—देखते ही वे चिपक जाते हैं।

देख धरम, देख पाप। ६७१२

देख धर्म, देख पाप।

—एकांगी दृष्टिकोण से व्यक्तित्व पूर्ण नहीं होता। खुली आँखों से हर बात की छानबीन करनी चाहिए। ध्यान-पूर्वक धर्म के परिणाम भी देखो, पाप के परिणाम भी देखो फिर अपना रास्ता अपनाओ, तभी अच्छे-बुरे की सही पहिचान होगी।

देख पराई चोपड़ी , थूं कटक पड़ै सुजांन । ६७१३
अेक घड़ी री सरमा-सरमी , आठ पहर आरांम ॥

देख परायी चुपड़ी, तू कटक पड़े सुजान ।
एक घड़ी की शरमा-शरमी, आठ प्रहर आराम ॥

—दूसरों को चुपड़ी रोटियाँ खाते देखकर तू चुपचाप मत बैठ, उन पर टूट पड़ और छीन ले उनके हाथों से रोटियाँ । फकत एक घड़ी की लाजशर्म है, फिर तो सारे दिन आराम है । यह भाग्य या नसीब का लेन-देन नहीं है, सामाजिक व्यवस्था की आपाधापी है, तू भी इस आपाधापी में भागीदार बन, झिझक मत कर और अपना हिस्सा झपट ले ।

देख पराई चोपड़ी , मत कळपावै जीव । ६७१४

देख परायी चुपड़ी, मत ललचाये जीव ।

—अपने हाथ लगी वस्तुओं पर ही संतोष करना श्रेयस्कर है, दूसरों की संपन्नता को देखकर मन ललचाने से फकत क्लेश ही हाथ लगेगा, प्राप्ति कुछ भी नहीं होगी ।

—भौतिक उपलब्धियों की हरदम लालसा रखने वाले व्यक्ति को सामान्य शब्दों में सदुपदेश । पूरा दोहा :

लूखी-सूखी खायनै , ठाडौ पांणी पीव ।
देख पराई चोपड़ी , मत कळपावै जीव ॥

देख बंदा री फेरी , मावड़ थारी के म्हारी । ६७१५

देख बंदे की फेरी, अम्मा तेरी कि मेरी ।

संदर्भ-कथा : गाँव में एक दंपती जस-तस अपना गुजर-बसर कर रहा था । पत्नी बड़ी धूर्त और नाटक-बाज थी । मन करती तभी कुछ-न-कुछ बहाना करके लेट जाती । पति सीधा था । हाथ से रोटी बनाकर खा लेता । उसे भी खिला देता । खाना खाते ही वह सामान्य-स्थिति में आ जाती । पर एक दिन तो उसने गजब ही कर दिया । दोनों हाथों से पेट पकड़कर रोये-ही-रोये । कबूतर की तरह छटपटाये । तीन दिन तक खाना नहीं खाया तो बेचारा पति घबराया । बड़ी मुश्किल से शादी हुई थी । पत्नी को पाँच महीने का गर्भ था । वंश तो चलेगा । कई टोने-टोटके, झाड़ा-फूँक और इलाज करवाये । पर रोग घटने की बजाय और बढ़ने लगा । तब पति ने लाचार होकर पूछा—सब इलाज करके हार गया । कुछ गर्ज नहीं सरी । अब तू ही बता क्या करूँ ?

पत्नी ने रोते-छटपटाते कहा, 'बता तो दूँगी, पर तुम करोगे नहीं ?' पति से घरवाली का तड़पना सहा नहीं जा रहा था। कहा, 'तेरे होने वाले बच्चे की कसम, तू जो कहेगी, वही करूँगा।' पत्नी ने पूरा वचन लेकर कहा, 'मुझे दो दिन से एक ही सपना आ रहा है। फ़कत इस टोटके को सारने के अलावा दूसरा कुछ उपाय नहीं है। कहते संकोच होता है। यह टोटका नहीं सारा तो मैं पेट के बच्चे को साथ लेकर ही मर जाऊँगी।' अंत में बहुत हठ करने पर पत्नी ने जो बात बताई, उसे सुनकर वह सकते में आ गया। पत्नी ने बड़ी मुश्किल से डरते झिझकते बताया कि उसकी सास यानी पति की माँ को सिर मुँडवाकर, उसके पाँव नीले और मुँह काला करके, गधे के मुँह की तरफ पीठ करके सारे गाँव में फिराये तो उसका दर्द ठीक हो सकता है, वरना कुमौत मरना पड़ेगा। पति मान गया। मन-ही-मन सोचा माँ किसी की भी हो, इससे क्या फर्क पड़ता है। खास बात तो सिर मुँडवाने और मुँह काला करने की है। तीन दिन की मोहलत माँगकर वह अपने ससुराल गया। डबडबाई आँखों से बेटी के मरने की बात बताई तो सास तुरत मान गई। माँ का जी था। टोटका पूर्ण होने के पहिले बेटी से मिलना घातक रहेगा। आखिर टोटके के मुताबिक उसने सास को गधे पर उलटा बिठाकर गाँव के तीन चक्कर कटवाये। फलसे के बाहर गधा खड़ा था। उस पर औंधे मुँह बुढ़िया बैठी थी। बहू खाट से खुशी-खुशी उठते हुए बोली—देख बंदी रौ चाळौ, माथ मुंडायौ, मूंडौ काळौ।

पति भी उसके साथ चलता-चलता फलसे तक आया। जब पत्नी आँखें फाड़-फाड़कर हतप्रभ-सी बुढ़िया का चेहरा देखने लगी तो पति ने परिहास करते कहा, 'देख बंदा री हथ फेरी, मावड़ थारी के म्हारी' तब कहीं पत्नी की आँखें खुलीं। माँ ने अदंती मुस्कराहट से इतना-भर कहा, 'तेरी खातिर और तेरे बच्चे की खातिर जैसा तूने कहलवाया मैंने वही किया।' बेटी ने मन-ही-मन सारी बात समझ ली। मुस्कराने की चेष्टा करते कहा, 'मुझे तुझ पर भरोसा था। तूने मेरी लाज रखली। बच्चे की जान बचाली। तेरा एहसान चुका नहीं सकूँगी।'

माँ ने गधे से उतरकर घर की ओर चलते कहा, 'चुकाने की जरूरत क्या है ! तेरी खातिर हर पूनम की रात इसी तरह गाँव में चक्कर काट सकती हूँ। मेरी लाडल बिटिया जुग-जुग जीती रहे।'

माँ के आशीर्वाद से बेटी ने खूब लंबी उम्र पाई और जीवन पर्यंत फिर कभी बीमारी का बहाना नहीं बनाया। उनकी गृहस्थी मजे से चलती रही।

—समय पर वाजिब हाथ बताये बिना बात सुधरती नहीं है।

—जिसके जैसे लच्छन होते हैं, उन्हीं के अनुसार बरतना श्रेयस्कर है।

देखली सीधा री सोय, लैणा अेक अर दैणा दोय। ६७१६

देखली 'सीधे' की सोय, लेना एक और देना दोय।

—किसी मेहमान ने रसोई की हालत देख ली कि इन तिलों में तेल नहीं। यहाँ तो खाने की बजाय कुछ-न-कुछ देना ही पड़ेगा। खिसकने में ही भलाई है।

—वक्त पर सतर्क रहे बिना गाँठ से गँवाना पड़ता है।

देखां ऊंट किण कड़ बैठै ? ६७१७

देखें ऊँट किस करवट बैठता है ?

दे. क. सं. १२८७

देखादेखी इज तौ फोड़ा घालै। ६७१८

देखादेखी ही तो तकलीफ देती है।

—बिना समझे देखादेखी या नकल करने से सुख की बजाय कष्ट ही होता है।

—नकलची तो आखिर नकलची ही कहलाएगा। अपने हाथ की चीज गँवा देगा, दूसरों की प्राप्त नहीं कर सकेगा।

देखा-देखी धरम नै देखा-देखी पाप। ६७१९

देखादेखी धर्म और देखादेखी पाप।

—देखादेखी से धर्म की बातें भी सीखी जा सकती हैं और देखा-देखी से पाप-कर्म भी सीखे जा सकते हैं। अपनी विवेकशक्ति जाग्रत रहे तो कुछ भी दुविधा नहीं।

—पर यह मानव-स्वभाव है कि उसे धर्म की बजाय पाप की छूत शीघ्र लगती है।

देखादेखी साजै जोग, छीजै काया अर बधै रोग। ६७२०

देखादेखी साधे योग, छीजे काया और बढ़े रोग।

संदर्भ-कथा : एक बार महात्मा कबीर अपने शिष्य के साथ कहीं जा रहे थे। जेठ मास की गर्मी आग बरसा रही थी। रास्ते में प्यास लगी तो एक लुहार के घर जाकर उन्होंने पानी माँगा। उस से पहिले लुहार चार यात्रियों को पानी पिला चुका था। राह पर झोंपड़ी थी। वह सीसा गर्म कर रहा था। इस बार उसे झुंझलाहट हुई। भली-सोची न बुरी उसने तो झट कबीर के पात्र में

पिघला हुआ सीसा उड़ेल दिया। कबीर तो योग साधना में पूरे निष्णात थे। पात्र ऊपर किया और गटागट सीसा पी गये और आगे बढ़ चले। उनके पीछे चलते शिष्य ने भी लुहार के सामने पात्र किया तो उसने बचा हुआ सीसा उस में उड़ेल दिया। शिष्य की योग-साधना अधूरी थी। गले में सीसा उतरते ही वह नीचे लुढ़क पड़ा। कबीर ने धड़ाम की आवाज सुनी तो वे दौड़कर आये। शिष्य का उपचार किया। उसके स्वस्थ होने पर वे फिर राह चलने लगे। शिष्य के पूछने पर कबीर ने समझाया कि, 'जब तक तुम्हारी योग-साधना पूरी न हो, भविष्य में फिर कभी मेरी देखादेखी मत करना।'

—देखादेखी करने से पहिले अपने सामर्थ्य की परख अवश्य कर लेनी चाहिए।

देखादेखी हालै ज्यूं लरड़ियां रौ अेवड़। ६७२१

देखादेखी चले ज्यों भेड़ों का झुंड।

—बिना सोचे-विचारे भेड़ों की तरह अंधानुकरण करने से परेशानी ही बढ़ती है। एक भेड़ कुएँ में गिरती है तो बाकी सब भेड़ें उसका अनुकरण करते हुए कुएँ में गिर पड़ती हैं। इसलिए अंधे अनुकरण से ही भेड़-चाल की उक्ति चल पड़ी।

देखी कोनीं पूंगळगढ़ री पदमणी! ६७२२

बड़ी आई पुंगलगढ़ की पद्मिनी!

—जो औरत सुंदर न होते हुए भी नखरे अधिक करे उस पर व्यंग्य।

—जो वास्तव में पद्मिनी की नाईं परम रूपसी होती है वह नखरे करने की बजाय एकदम सादी रहती है।

देखै जिकौ तौ कैवै नीं, लियौ जिकौ देवै नीं। ६७२३

देखे सो कहे नहीं, लिया सो दे नहीं।

—जिसने अपनी अथाह साधना से ईश्वर के दर्शन किये वह तो उस अलौकिक अनुभव को किसी के भी सामने व्यक्त नहीं कर सकता। और जिसने उम्र भर राम का नाम लिया है, वह किसी को बाँट नहीं सकता। यह पूँजी तो अपने पास ही सँजोने की है, उसे बाँटना असंभव है।

—अलौकिक अनुभव न व्यक्त होता है और न किसी को बाँटा जा सकता है।

देखै जैड़ी बरतै। ६७२४

देखे जैसी बरते।

—घर की हैसियत के अनुरूप चलना ही उचित है।

—बच्चे बड़ों के आचरण को देखकर ही अपने जीवन में बरतते हैं।

देखै बाप रै तौ करै आपरै। ६७२५

देखे बाप के यहाँ तो करे अपने यहाँ।

—जो बहू बाप के घर से कुछ भी सीखकर नहीं आती उस पर कटाक्ष।

—बहू बाप के घर जो सीखकर आएगी, वह ससुराल में वैसा ही करेगी।

—हर व्यक्ति अपने वातावरण और परिवेश से ही सीखता है।

देख्यां डरै अर खायां मरै, उणरौ विसवास कुण करै? ६७२६

देखने से डरे और खाने से मरे, उसका विश्वास कौन करे?

—साँप को देखने से डर लगता है, उसके खाने से मृत्यु निश्चित है, फिर उस पर विश्वास क्यों कर किया जा सकता है?

—साँप के चरित्र वाले शैतान व्यक्ति के लिए भी यह उक्ति काम में ली जा सकती है।

देख्यां देह बळै अर सूतां सोड़ बळै। ६७२७

देखने पर देह जले और सोने पर रजाई जले।

—इस कहावत की कुंजी एक दूसरी कहावत में है—'कांणौ मांटी सुहावै नीं, कांणा टाळ नींद आवै नीं।' अर्थात् काना पति सुहाये नहीं, काने बगैर नींद आये नहीं। एक और भी—'सांम्ही धकै कांणौ तौ तीन कोस सूं आंणौ।' अर्थात् यात्रा में काना यदि सामने मिल जाये तो तीन कोस चलने के बाद भी वापस लौट आना चाहिए। ऐसा अपशकुनी काना पति मिल जाय तो उसकी फूटी आँख पर नजर जाते ही—देह में मानो आग-सी सुलग उठती है। लेकिन पति के रूप में स्वीकार जो कर लिया है—तो रात को उसके सहवास बिना नींद भी कहाँ आती है। वासना की ज्वाला में बिछौने जलते महसूस होते हैं।

देख्यां नीं डरै जिकौ खायां नीं मरै। ६७२८

देखने से डर न लगे, उसके खाने से नहीं मरे।

—जिस जंतु के देखने से डर न लगे,उसके खाने से मौत का अंदेशा नहीं रहता। अतएव उसी जंतु का डर अधिक लगता है,जिसके खाने से मृत्यु की संभावना रहती है।

—दुष्ट से सभी डरते हैं,सज्जन से कोई नहीं डरता।

देख्यां पेट नीं भरीजै। ६७२९

देखने से पेट नहीं भरता।

—भोजन पेट में जाये तभी भूख शांत होती है,मात्र देखने भर से पेट नहीं भरता।

—काम तो संपन्न करने से ही पूरा होता है,उसके बारे में विचार करने से संपूर्ण नहीं होता।

देख्यां बेरौ नीं पड़ै, सूंघ्यां तौ पड़ै। ६७३०

देखने से पता न चले, सूँघने से तो पता चलेगा।

—जिस सत्य को पहिचानने में आँख पर्याप्त न हो वहाँ नाक से तत्काल परख हो जाती है।

—मात्र देखने से वास्तविकता का ज्ञान नहीं होता तब अनुभव से सही पड़ताल हो जाती है।

देख्यां भूख भागै। ६७३१

देखते ही भूख शांत हो जाती है।

—लहलहाती लाजवाब खेती को देखकर अनायास यह उक्ति मुँह से छिटक पड़ती है।

—अनिवर्चनीय सौंदर्य को देखकर भी यह उक्ति याद आती है।

देख्यां रा लागू है। ६७३२

देखने पर छोड़ता नहीं है।

—नजर के सामने जब तक कोई खाने की चीज न आये,तब तक उसे खाने की नौबत ही नहीं आती। घर में सामने जो भी चीज दिख जाये,उसे छोड़े नहीं,ऐसे पेटू व्यक्ति के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।

देख्योड़ा मसांण अर असैंधा पांणी सूं डर ई लागै। ६७३३

परिचित मसान और अपरिचित पानी से डर लगता है।

—मसान की जानकारी हो तभी उसका डर लगता है और जिस पानी की जानकारी न हो उस से डर लगता है।

—किसी वस्तु के अभिज्ञान से डर लगता है और किसी चीज के अज्ञान से डर लगता है।

देख्यौ देस बंगालौ, दांत राता अर मूंडौ काळौ। ६७३४

देखा देश बंगाला, दाँत लाल और मुँह काला।

—बंगाली मोशाय सामान्यतया साँवले होते हैं और पान अधिक खाने से उनके दाँत लाल दिखते हैं। जिस देश की इतनी प्रशंसा सुनी थी, उसका यह रूप सामने आया। पर यह देश प्रतिभा के नाम पर विलक्षण है। बड़ी-बड़ी विश्व-प्रसिद्ध-हस्तियाँ यहाँ अवतरित हुई हैं। जो बाह्य स्वरूप देखकर पहिचान करते हैं, उनका मन बहलाने को यह उक्ति ठीक है।

देख्यौ नीं जैपरियौ तौ जुग में आय' र के करियौ? ६७३५

देखा नहीं जयपुरिया तो जग में आकर क्या किया?

—इस तरह की उक्तियों में अपने-अपने प्रांत की प्रशंसा मिलती है। पर जयपुर सचमुच दर्शनीय शहर है—इसकी गुलाबी इमारतें, गलताजी, सरगासूली, जंतर-मंतर, संग्रहालय, राम-निवास बाग, चौपड़ और हवामहल इत्यादि।

देणा नीं लेणा, मस्त मगन रैणा। ६७३६

न देना न लेना, मस्त मगन रहना।

—जिस व्यक्ति को न किसी का देना हो और न किसी से लेना हो उसकी अलमस्ती का बखान है इस उक्ति में।

—जिस व्यक्ति को भौतिक लालसा रंचमात्र भी न हो।

—जिसके पास संतोष-धन है उसे किसी और माया की जरूरत नहीं।

देणौ अर मरणौ बिरौबर। ६७३७

देना और मरना समान।

—जो कंजूस देने के नाम पर किसी को गाली भी न दे, उसके हाथ से कुछ देना मृत्यु के समान ही कष्टदायक होता है।

पाठा : देणौ मरणा सूं दोरौ। दोरौ = कठिन।

देणौ खोटौ बाप रौ, बेटी खोटी अेक। ६७३८
पैंडौ खोटौ कोस रौ, सायब राखै टेक॥

कर्ज बुरा बाप का, बेटी बुरी एक। चलना बुरा कोस का, साहिब रखे टेक॥

—कर्ज तो बाप का भी भार-स्वरूप होता है। घर में बेटी एक भी हो तो उसके पीले हाथ करके ब्याहना भारी पड़ जाता है। बिना मतलब एक कोस भी चलना दूभर हो जाता है। इन तीन बातों की टेक साहिब रखले तो नैया पार हो जाएगी।

देणौ-लेणौ बै जावै, छाती कूटौ रै जावै। ६७३९

देना-लेना बह जाये, प्रपंच बाकी रह जाये।

—जिस व्यक्ति का कारोबार नष्ट हो जाये और बाकी रह जाय हाय-त्राय, उसकी अंतर्वेदना इस उक्ति में व्यंजित है।

—बहू का दहेज तो ससुराल में वक्त-जरूरत काम आ जाता और पीछे रह जाती है काम की असह्य मार!

दे.क.सं.६३४१

देणौ-लेणौ भाडू रौ कांम, गावौ पन्ना मारू आठूं यांम। ६७४०

देना-लेना भोंदू का काम, गाओ पन्ना-मारू आठों याम।

—भोंदू व्यक्ति ही देन-लेन की चिंता करता है, उसे भाड़ में जाने दो, गाओ-बजाओ और मस्त रहो। यही मनुष्य-जीवन की सिद्धि है। चार्वाक-दर्शन की तनिक झाँकी इस उक्ति में झलकती है।

देणौ सोरौ, लेणौ दोरौ। ६७४१

देना आसान, लेना दुश्वार।

—अपनी चीज किसी को देने का तो अधिकार है, पर वापस लेने का अधिकार या उपाय नहीं है। वह तो लेने वाले व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह दे, न दे।

—कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के लिए किसी को देना तो बहुत आसान है पर किसी से लेना उनके लिए बहुत मुश्किल है।

देत-घर सूं चींत-घर सदा ई वत्तौ। ६७४२

देने वाले की अपेक्षा शुभचिंतक सदा बेहतर हैं।

—देने की तो सीमा है, पर शुभकामना के फलीभूत होने की कोई सीमा नहीं है।

—दान लेने की बजाय दुआएँ ज्यादा अमूल्य हैं।

पाठा : **देतड़ बिचै चावतड़ बधतौ।** देने वाले की अपेक्षा चाहने वाला बढ़कर है।

देनगियौ तौ हांडी चढ़ायनै ई जावै। ६७४३

मजदूर तो हँड़िया चढ़ाकर ही जाता है।

—मजदूर के पास तो एक जून से अधिक खाने की व्यवस्था ही नहीं होती। उसकी कोठरी में न तो बासी बचे और न कुत्ते खाएँ। वह तो इस आशा से हँड़िया में पानी चढ़ाकर जाता है कि मजदूरी मिलने पर उबलते पानी में बाजरी डाल देगा। लेकिन उसकी आशा के विपरीत जब मालिक मजदूरी देने के लिए टालम-टोल करता है तब मालिक को अपनी स्थिति समझाने के लिए मजदूर इस उक्ति का सहारा लेता है।

देबा-लेबा नै रांमजी रौ नांव है। ६७४४

देने-लेने के लिए राम जी का नाम है।

—कोई बोहरा अपने आसामी (कर्जदार) से रुपये माँगने जाये। कोई राहगीर पूछे कि सेठजी कहाँ जा रहे हो ? तब वह कहता है कि अमुक व्यक्ति से उधार वसूल करने जा रहा हूँ। तब राहगीर जवाब देता है कि बेकार क्यों चक्कर काट रहे हो, वहाँ तो देने-लेने के लिए रामजी का नाम है।

—जो कर्जदार न दे और न मना करे, उसके लिए।

पाठा : **देवण-लेवण नै हरिजी रौ नांव।**

देयनै दुनिया में कोई नीं पांतरै। ६७४५

देकर भूलने वाला इस दुनिया में कोई नहीं।

—लेने वाला भूल सकता है पर देने वाला भूल जाय, ऐसा मानवीय दुनिया में संभव नहीं।

—जब तक ऋण बाकी है, देने वाले का एहसान बरकरार रहता है।

देर है पण अंधेर कोनीं। ६७४६

देर है पर अंधेर नहीं है।

—अभाव, कष्ट या दुख के मारे कोई अपने भाग्य का रोना रोये तो लोग उसे आश्वस्त करते हैं कि भगवान के घर में देर है पर अंधेर नहीं, क्यों खामखाह चिंताग्रस्त हो रहे हो!

—अच्छे प्रशासन के लिए भी यह कहावत प्रयुक्त होती है।

दे रांड बळीतौ, घर होय रीतौ। ६७४७

दे राँड ईंधन, घर जाय फूँकन।

—जिस घर-परिवार में औरत बहुत चटौरी हो और वह खाने के लिए बार-बार ईंधन देकर खाना पकाये तो घर की पूँजी उड़ते क्या देर लगती है! देखते-देखते भरा-पूरा घर खाली हो जाता है। फूँक-फूँक में धुआँ बनकर उड़ जाता है।

दे रे पांड्या आसीस के म्हैं कांई देवूं म्हारी आंतड़ियां देसी। ६७४८

दे रे पंडे आसीस कि मैं क्या दूँ मेरी अँतड़ियाँ देंगी।

—अच्छे कार्य का फल स्वतः मिलता है, किसी के देने पर निर्भर नहीं करता।

—मुँह की दुआओं की निस्बत अँतड़ियों की नीरव आसीस ज्यादा कारगर सिद्ध होती है।

दे लाख के ले सवा लाख। ६७४९

दे लाख कि ले सवा लाख।

संदर्भ-कथा: एक ब्राह्मण के पास एक छोटा-सा शंख था। वह उसकी पूजा करके हाथ जोड़कर सामने खड़ा होता तो वह नन्हा शंख उसे एक मोहर देता। अधिक माँगने की हिम्मत नहीं होती। उसका जीवन-यापन मजे से चल रहा था। एक ठग को ब्राह्मण के करामाती शंख का पता चला तो वह उसके पास एक बड़ा ढपोर शंख लेकर आया। पूजा करके ठग उससे माँगता—दे लाख। तो ढपोर शंख कहता—ले गिन सवा लाख। दे सवा लाख तो वह शंख उतने ही जोर से कहता—ले दो लाख। इस तरह ढपोर शंख बढ़-बढ़कर बेइंतहा रुपयों का आश्वासन देता। ब्राह्मण ठग के चक्कर में आ गया। अपना करामाती शंख उसे देकर बदले में उससे ढपोर शंख ले लिया। पूजा करके याचना करता तो आश्वासन की राशि अरबों-खरबों तक पहुँच जाती। पर देने के नाम एक कौड़ी भी नहीं। भोला ब्राह्मण जीवन पर्यंत माँगता रहा और ढपोर शंख उसे बढ़-बढ़कर आश्वासन देता रहा।

—मनुष्य-जीवन में कुछ बंदे ढपोर शंख की प्रवृत्ति के होते हैं। जीवन पर्यंत दूसरों को आश्वासन देते रहते हैं और सहयोग एक धेले का भी नहीं।

पाठा : लिपोड़ शंख ! दे लाख के ले सवा लाख !

देव चढ़ी पूजा, कुत्ता खाय के दूजा। ६७५०

देव चढ़ी पूजा, कुत्ता खाय कि दूजा।

दूजा = दूसरे।

—भक्त तो प्रसाद या नैवेद्य चढ़ाकर पूर्ण-रूप से आश्वस्त हो जाता है कि उसके इष्टदेव ने पूजा ग्रहण करली। वह प्रसाद चढ़ाने के बाद मुड़कर भी पीछे नहीं देखता कि उसके प्रसाद का क्या हुआ है ? इष्टदेव ने उसका प्रसाद ग्रहण कर लिया है या कोई कुत्ता या कोई भिखारी उसे चट कर गया है।

—आस्था व अमिट संस्कारों का ऐसा घनघोर प्रभाव होता है कि भक्त को वास्तविकता नजर ही नहीं आती।

देव चावा परचा सूं, घर चावा खरचा सूं। ६७५१

देवों की कीर्ति परचे से, घर का यश खरचे से।

—देवी-देवताओं का जयगान उनके चमत्कारों से होता है। और घर-परिवार का यशगान लोगों पर अधिक खर्च करने से होता है। मसल मशहूर है कि 'हाथ पोला तो जगत गोला।'

—वास्तव में देवी-देवताओं के द्वारा चमत्कार होते हैं या नहीं यह संदिग्ध है, पर निःसंदेह यह तथ्य पूर्णतया सच है कि देवी-देवताओं के नित्य-नये चमत्कारों के मिथ्या आख्यान संबंधित पुजारी, भक्तगण और निहित-स्वार्थी तत्त्व प्रचारित करते रहते हैं, जिससे मठ-मंदिरों की आमदनी प्रति वर्ष कई गुना बढ़ती जाती है।

देव जठै ई जातरा। ६७५२

जहाँ देव वहाँ जात्रा।

जातरा = जात्रा = तीर्थाटन करने वाले भक्त।

—जहाँ देवता और उनके मठ-मंदिर होंगे वहाँ तीर्थ-यात्री जात्रा के लिए जाएँगे-ही-जाएँगे।

—महान विभूतियों के गुणों से खिंचकर प्रशंसकों की भीड़ उनके दर्शनार्थ उमड़ती है।

देव जैड़ी पूजा नै गुळ जैड़ौ मीठौ। ६७५३

देव जैसी पूजा और गुड़ जितना मीठा।

—देवी-देवताओं का जैसा चमत्कार होता है, उसी के अनुरूप उनकी पूजा होती है। यहाँ तक भी कहा गया है कि लातों के देव बातों से नहीं मानते। एक और भी सटीक कहावत है—ठीकरी रै ठाकुरजी नै थूक रौ तिलक। देवी देवताओं में भी छोटे-बड़े व ऊँच-नीच होते हैं। आखिर पुजारी व भक्त तो मनुष्य ही हैं न। अपने स्वार्थ के हिसाब से उनकी पूजा-अर्चना करते हैं। किसी मिष्ठान में जितना गुड़ पड़ेगा—उतना ही मीठा होगा। जितना खर्च उतना ठाट।

—किसी अधिकारी, नेता या किसी व्यक्ति के गुण-अवगुणों के अनुसार ही उसका मान-सम्मान होता है। और खर्च के अनुसार ही किसी अनुष्ठान या उत्सव की शोभा होती है।

देव ढळग्या के पूजा ई टळी। ६७५४

देव ढल गये कि पूजा ही टली।

—देवता नहीं रहे तो पूजा से क्या लाभ उसका खर्च ही बचा।

—किसी आयोजन में उच्च-अधिकारी या नेता के न आने पर उसका खर्च बच जाय तब।

—किसी महँगे अतिथि का किसी कारण वश आना टल जाय तब।

देवण नै केवळ दगौ, लेवण नै जस-पोट। ६७५५

देने में केवल दगा, लेने को यश-पोट।

—जो व्यक्ति देने के नाम पर धोखे के अलावा कुछ नहीं दे सके और यशगान या स्तुति की खातिर मुँह धोये, उस पर कटाक्ष।

—जो व्यक्ति काम करने में ढीला और नाम के लिए उतावला, उसके लिए।

पूरा दोहा : **कूड़-कपट रा कोथळा, राखै मन में खोट।**
देवण नै केवळ दगौ, लेवण नै जस पोट॥
झूठ-कपट की गठरिया, रखे मन में खोट।
देने को केवल दगा, लेने को यश-पोट॥

देवण रौ देवाळियौ, लेवण रौ सेठ। ६७५६

देने को दिवालिया, लेने को सेठ।

—जो बोहरा देते समय कंजूसी बरते और वसूल करते समय सेठ-जैसा रुआब जताये।

—जो व्यक्ति देने में मक्खीचूस और दूसरों से लेते समय सेठ का रुतबा दिखाये।

—जो व्यक्ति बेटी को देते समय गरीबी का इजहार करे और लड़के को ब्याहते समय मालदार बनने का गुमान करे।

देवण-लेवण नै तुळसी रा पांन। ६७५७

लेन-देन के लिये तुलसी के पान।

—मठ-मंदिरों के पुजारी देने के नाम पर तुलसी का पत्ता ही देते हैं और प्रसाद लेने की आशा रखते हैं।

—जो व्यक्ति चिकनी-चुपड़ी बातें तो खूब बघारे पर देने के नाम पर पूरी कोताही बरते, उसके लिए।

देवणिया मांगणियां नै भवै ई नीं पूगै। ६७५८

देने वाले माँगने वालों को हर्गिज नहीं पहुँच सकते।

—देने वाले की तो सीमा होती है, पर माँगने वाले की तो कोई सीमा ही नहीं होती।

—देने वाला थक जाता है पर लेने वाला नहीं थकता।

दे.क.सं.६४४५

देवणियौ दातार अर भंडारी बाधाळ्या लेवै। ६७५९

देने वाला उदार और भंडारी क्लेश करे।

—सेठ तो उत्साह-पूर्वक देना चाहे और मुनीम बीच में ही अड़ंगा लगाये।

—सरकार तो लोगों का भला करना चाहे, पर नौकरशाह नियम-कायदों की रुकावट खड़ी करें।

मि.क.सं.६४४१

पाठा : दाता देवै अर कळपै कोठारी।

देवणियौ भूलै पण लेवणियौ नीं भूलै । ६७६०

देने वाला भूल जाय पर लेने वाला नहीं भूलता ।

—देने वाले के पास तो कई माँगने वाले आते हैं, पर लेने वाला तो एकाध व्यक्तियों से ही लेता है, इसलिए वह भूलता नहीं ।

—एहसान करने वाला तो भूल सकता है, पर एहसान का बोझ लेने वाला नहीं भूलता ।

—दुख देने वाले को याद नहीं रहता, पर दुख सहन करने वाला क्योंकर भूल सकता है ?

देवणौ जैड़ौ लेवणौ । ६७६१

देना जैसा लेना ।

—सामाजिक रस्म-रिवाज में जितना देना पड़ता है, उतना ही वापस मिलता है ।

—जैसा आतिथ्य-सत्कार करते हैं, वापस वैसा ही मान-आदर पाते हैं ।

—गाली देने पर वापस गाली ही खानी पड़ती है ।

—मानवीय दुनिया में तो आदर करके आदर पाना होता है ।

देवता अेक नै पुजारी घणा । ६६६२

देवता एक और पुजारी बहुतेरे ।

—देवता तो एक और कामना करने वाले अनेक, किस-किस की पूर्ति करें ?

—न्यायकर्ता एक और फरियादी अनेक, किस-किस की सुनवाई करें ?

—कमाने वाला एक और खाने वाले अनेक—किसे भूखा रखे, किसका पेट भरे ?

देवता कद दोस करै ? ६७६३

देवता कब दोष करें ?

—जो देवता है वह किसी का भी बुरा नहीं करता । जो बुरा करे वह देवता ही नहीं है ।

—उस शरीफ व सज्जन व्यक्ति के लिए जो किसी को जाने-अजाने दुख नहीं पहुँचाये ।

पाठा : देवता किणनै दुख देवै !

देवता तौ दिन तोड़ै अर दुनियां नै परचा भावै । ६७६४

देवता तो दिन तोड़े और दुनिया को वरदान चाहिए ।

—अपनी ही आफतों में उलझा देवता तो जस-तस अपने दिन व्यतीत करे और दुनिया उससे चमत्कारों की आशा रखे।

—जब कोई सरकार अपने दिन गिने और प्रजा राहत-कार्यों का हुल्लड़ मचाये।

—देवता तो भक्तों के सुख-दुख का ध्यान रखता है, पर देवता के दुखों की किसे भी परवाह नहीं होती।

— बड़े आदमियों के अपने दुख होते हैं और छोटे आदमियों के अपने दुख होते हैं।

पाठा : देवी दिन गाळै अर दुनिया परचा मांगै।

देवता तौ भावना रा भूखा व्है। ६७६५

देवता तो भावना के भूखे हैं।

—पर भक्तों को संतोष नहीं होता, उन्हें तो अपनी कामना का फल अदेर चाहिए, इसलिए पूजा-अर्चना में होड़ लगी रहती है कि कौन अधिक चढ़ावा बोलता है।

पाठा : देवता तौ वासना रा भूखा व्है।

देवता देसी अर पुजारी खासी। ६७६६

देवता देंगे और पुजारी खाएँगे।

—देवताओं के नाम पर चढ़ाया हुआ प्रसाद पुजारी ही खाते हैं। देवताओं का तो फकत बहाना होता है।

—चमत्कार तो देवता बताते हैं और उसका फल पुजारी को मिलता है।

पाठा : देव देसी नै भोपा खासी।

देवता में साच होसी तौ घणा ई जातरू आसी। ६७६७

देवता में करामात होगी तो कई यात्री आएँगे।

—कोई भी व्यक्ति अपने हुनर में माहिर होगा तो पूछने वालों का ताँता लगा रहेगा।

—नेताजी काबिल होंगे तो उनके अनुयायियों की भीड़ उमड़ पड़ेगी।

देवता री आंख बळै अर भोपौ वर मांगै। ६७६८

देवता की आँख जले और भोपा (पुजारी) वरदान माँगे।

—मालिक या मुखिया प्रसन्न चित्त न हो तो उसके आश्रितों का भला नहीं हो सकता।

—कर्ता का रुख पहिचानकर ही उसके सामने कोई माँग रखनी चाहिए।

देवता रैवण सूं मंगता राजी हुवै। ६७६९

देवता रहें तो भिखारी खुश होते हैं।

—देवता की प्रतिष्ठा बनी रहे तो अनेक आश्रितों को लाभ पहुँचता है।

—नेताओं का ठाट बना रहे तो उनके चमचे खुश रहते हैं।

देवता रौ देवपणौ जाय, पण पीतळ रौ मोल कठै जाय! ६७७०

देवता का देवत्व जाय, पर पीतल का मोल कहीं नहीं जाता!

—किसी भी देवता की प्रतिष्ठा भले ही समाप्त हो जाय, पर उसकी मूरत के पदार्थ का मूल्य तो बना ही रहता है। कहावत के अनुसार देवताओं की अधिकांश मूरतें पीतल की ही बनी होती हैं।

—किसी बड़े नेता का मंत्री पद भले ही छिन जाय पर रिश्वत से अर्जित पूँजी तो बची ही रहती है।

देवता रौ महातम पुजारी माथै। •६७७१

देवता का माहात्म्य पुजारी के हाथ।

—मंदिर में प्रतिष्ठित देवी-देवताओं का माहात्म्य पुजारियों की योग्यता पर निर्भर करता है।

—सिद्ध पुरुषों की ख्याति साधकों के द्वारा ही फैलती है।

—नेताओं की पूछ तभी तक बनी रहती है, जब तक उनके कार्य-कर्ता मुस्तैद रहें।

देवतावां में तंत नीं व्है तौ कुण पूजै? ६७७२

देवताओं में सिद्धि न हो तो उन्हें कौन पूजे?

—जाग्रत देवताओं की पूछ सर्वत्र होती है।

—किसी मनुष्य में गुण, ज्ञान, विद्वता और पराक्रम न हो तो कौन पूछे? पर आज की इस उपभोक्ता संस्कृति में सारे चमत्कार, सारा पराक्रम, सारा ज्ञान सिर्फ पैसे में ही समाहित हो गया है। पैसा ही सबसे बड़ा जाग्रत देवता है।

देवतावां रा छळ अर बळ दोनूं चालै। ६७७३

देवताओं के छल और बल दोनों चलते हैं।

—जमाने के अनुरूप देवी-देवताओं के स्वरूप बदलते रहते हैं। यह परंपरा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने छल से बालि को मारा और बल से रावण को। पर आजकल छल अधिक रह गया है। बल का पराभव होने लगा है।

देवतावां सूं दुनियां अछांनी कोनीं। ६७७४

देवताओं से दुनिया छिपी हुई नहीं है।

—देवी-देवताओं से दुनिया की कोई भी बात छिपी हुई नहीं है, पर वे तटस्थ भाव से देखते रहते हैं। किसी भी कार्य में दखल नहीं देते। न किसी का पक्ष लेते हैं और न किसी का विरोध करते हैं। गरीबों की गरीबी बढ़ती रहे। अमीरों का अत्याचार बढ़ता रहे, वे निर्विकार भाव से सब देखते रहते हैं और मुस्कराते रहते हैं।

देव तूठै तौ मारग बैवतां ई तूठ जावै। ६७७५

देव तुष्ठमान हों तो राह चलते ही निहाल कर देते हैं।

—देव तुष्ठमान होना चाहते हों तो राह चलते ही मेहर कर देते हैं, वरना घोर तपस्या करने पर भी कुछ ध्यान नहीं देते।

—आज-कल की दुनिया के देवता भी मन-मौजी हैं।

देव दीठा नै जातरा पूरी व्ही। ६७७६

देवता के दर्शन हुए और यात्रा पूरी हुई।

—देवता के दर्शनार्थ ही यात्रा की जाती है, जहाँ उनकी झाँकी मिली और यात्रा समाप्त हुई।

—लक्ष्य पूरा होते ही काम संपन्न हो जाता है।

पाठा : देव देख्या अर जात पूरी व्ही।

देव दुवारका ने पीर मखां।– भी.४५८ ६७७७

देव द्वारिका और पीर मक्का।

—जब कोई आस्तिक बार-बार देवता की रट लगाता है तो देवी-देवताओं का ही सताया हुआ निराश व्यक्ति कहता है कि कहाँ हमारे आस-पास तो कोई देवी-देवता या पीर नहीं है।

कभी रहे भी होंगे तो देव द्वारिका चले गये और पीर मक्का भाग खड़े हुए। अब जो कुछ भी चल रहा है, देवी-देवताओं के नाम पर ढकोसला चल रहा है।

देवर रै भरोसै डीकरी नीं जाई। ६७७८

देवर के भरोसे बेटी नहीं जायी।

मि.क.सं.२३४६

पाठा : देवर सारू डीकरी नंह जाई। देवर सारू दीकरी न जाई छै।

देवरा रै आगै अर रावळा रै पूठै। ६७७९

देवरे के आगे और गढ़ के पीछे।

देवरा = रामदेवरा। पर यहाँ मंदिर से ही तात्पर्य है।

मि.क.सं.२६७८

देव रै डोरै चालै छै दुनिया। ६७८०

देव के धागे से चलती है दुनिया।

—विश्व-जगत् के सभी प्राणियों की डोर भगवान के हाथ में है, वह जैसे नचाता है, नाचना पड़ता है।

—संसार में कोई प्राणी अपना कर्म करने में स्वतंत्र नहीं है। कठपुतलियों के धागे तो सभी ईश्वर के हाथ में है। वह जिस कर्म में प्रवृत्त करना चाहता है, उसी में खटना पड़ता है। अपने मन से कोई कुछ नहीं कर सकता।

देवां टाळ कोई देवरौ नीं होवै। ६७८१

देवताओं के बिना कोई देवरा नहीं होता।

देवरा = देव का निवास। जिस स्थान पर हो।

—देवी-देवताओं के बिना किसी भी मंदिर की प्रतिष्ठा नहीं होती।

—देवत्व का पद प्राप्त किये बगैर पूजा नहीं होती और पूजा के लिए किसी देवता की प्रतिष्ठा करनी ही होती है।

देवां पैली नगटां री पूजा। ६७८२

देवताओं से पहिले नकटों की पूजा।

—देवता तो कब बुरा करे न करे पर बदमाश या दुष्ट व्यक्ति तो जब इच्छा करे नुकसान पहुँचा देता है, तब भले आदमियों से पहिले या विशिष्ट अतिथियों के पहिले दुष्टों का मन रखना अनिवार्य हो जाता है।

—सज्जनों से पहिले समाज-कंटकों का ध्यान रखा जाय तब!

देवां रा हळ वहै कै छळ वहै।—व. ३१८ ६७८३

देवताओं का हल चले कि छल चले।

— छल शब्द का यहाँ तात्पर्य चमत्कार, करिश्मा या पराक्रम से है।

—देवताओं की फसल हल से उत्पन्न नहीं होती, बल्कि करामात या पराक्रम से उत्पन्न होती है।

—जिस प्रकार किसी फल प्राप्ति के लिए देवताओं को परिश्रम नहीं करना पड़ता उसी प्रकार नेता, नौकरशाह व सेठ-साहूकारों की कमाई भी परिश्रम की बजाय करामात से ही होती है।

देवां रा हाल देव ई जांणै। ६७८४

देवताओं के हाल देवता ही जानें।

—जिस बड़े व्यक्ति की कमाई का सुराग न लगे तब व्यंग्य में इस कहावत का प्रयोग होता है कि देवताओं का हाल देवता ही जाने, मनुष्य बंदे की वहाँ पहुँच नहीं है।

देवां सूं दांनव मोटा व्है। ६७८५

देवों से दानव बड़ा है।

—असुरों ने भी सुरों पर विजय पाई है। देवता मायावी नहीं होते। दानव मायावी होते हैं। वे अपने छल-बल से देवताओं की शालीनता को जीत लेते हैं।

—सज्जन की बजाय दुष्ट प्रबल होता है। सज्जन तो किसी को क्षति नहीं पहुँचा सकते पर दुष्ट तो जब चाहे कष्ट पहुँचा देता है।

देवाळा में डोढ़ पांती। ६७८६

दिवाले में डेढ़ हिस्सा।

—किसी अभागे का परिचय देते हुए इस कहावत का प्रयोग होता है कि उसका क्या कहना, बड़ा अजीब व्यवसाय हाथ लगा है—दिवाले में डेढ़ हिस्सा है। किसी काम में हाथ डाले, घाटा तैयार।

देवाळा रौ सुख आज आयौ। ६७८७

दिवाले का सुख आज आया।

संदर्भ-कथा : किसी गाँव में एक बार आधी रात के समय आग लगी। कई घरों को लीलने के पश्चात् आग का पता चला। तब तक कई घास के ढेर और मवेशियों की लीला समाप्त हो गई। सुबह तक सारे गाँव में हाय-त्राय मच गई। लोग रोने-चिल्लाने लगे। जिसके पास जो पूँजी थी, स्वाहा हो गई। पर नीम के नीचे सोते एक ढोली को कुछ भी क्षति नहीं पहुँची। चबूतरा भी सार्वजनिक था। सबकी आँखों में आँसू थे। पर ढोली की आँखों में खुशी छलक रही थी। लोगों ने सारी उम्र दौड़-दौड़कर माया इकट्ठी की वह चार घड़ी में फुँक गई। उसने उम्र में कुछ नहीं कमाया तो कुछ भी नहीं जला। उसे तो दिवाले का मजा उस दिन ही आया था।

—कभी-कभार अकर्मण्य के जीवन में भी खुश होने का योग जुटता है।

देवाळियौ तीन घर पाळै। ६७८८

दिवालिया तीन घर पालता है।

—गरीब या दिवालिया बोहरे को ब्याज देकर उसे कुछ-न-कुछ कमाई देता है। जामिन के घर की बेगार निकालता है। छोटा-मोटा काम करता है। और अपना घर तो जस-तस पालता ही है। यह गरीब की ही मजबूरी है कि वह अपने घर के अलावा दो घरों का पोषण करता है।

मि.क.सं.६१३९

देवी उतरी मन रै भाव, आप ई घालै, आप ई खाय। ६७८९

देवी उतरी मन के भाव, खुद ही डाले, खुद ही खाय।

—जिस देवी के प्रति मन की भावना उतर जाये, तो उसे कौन प्रसाद चढ़ाये। खुद ही लाओ और खाओ। न ला सको तो उपवास करो।

—जो नेता कार्य-कर्ताओं के मन से उतर जाता है, उसकी कोई बंदगी नहीं करता। खुद ही हाथ-पाँव हिलाओ और मुँह पर बैठी मक्खी उड़ाओ।

देवी में गुण व्हियां तौ पुजारी रोही में ई ढूंढ़ लेसी। ६७९०

देवी में करामात हुई तो पुजारी जंगल में भी तलाश कर लेंगे।

—प्रतिभा कहीं भी हो, छिपी नहीं रहती। बस्ती में हो चाहे वीरान में, पारखी पता कर लेते हैं।

—कस्तूरी-मृग के समान गुणी व्यक्ति की सुवास फैल ही जाती है।

देवूं रांड रै खूसड़ा री के वौ दिन ऊगै के थारै पग खूसड़ा व्है। ६७९१

मारूँ राँड के पैजार कि वही दिन उगे कि तुम्हारे पाँव में पैजार हो।

संदर्भ-कथा: अभाव की अजीब लाचारी है कि पति किसी बात पर नाराज होकर बहू के सिर पर जूते मारना चाहता है और बहू खुशी-खुशी जूते खाने को तैयार है, बशर्ते कि अभागे पति के पाँवों में जूते हों। वही सुनहरा दिन उगे कि उसके नंगे-पाँव जूतों से शोभित हों। पत्नी का जवाब सुनकर पति सकते में आ जाता है। उसे पता ही नहीं कि ब्याह के बाद उसने जूते पहिने ही कहाँ हैं। ब्याह के दिन भी नई जूतियाँ नसीब नहीं हुई थीं। बोहरे की उतरी हुई अधफटी जूतियाँ पहनी थीं। जो तीन दिन बाद ही बोहरे ने वापस खुलवा लीं। बहू के जवाब से पति को ऐसा लगा कि जैसे उसके सिर पर जूते पड़े हों।

—गरीबी की मार जूतों की मार से भी बदतर होती है।

देवै जद बेटा ई देवै, नींतर बेट्यां ई खोस लेवै। ६७९२

दे तब तो बेटे ही दे, वरना बेटियाँ भी छीन ले।

—किसी राज्य की अराजक स्थिति का इससे सटीक वर्णन और क्या हो सकता है कि वहाँ के शासक खुश हों तो बेटे-ही-बेटे दें। नाराज हों तो बेटियाँ भी छीन लें।

—अंधेर नगरी और चौपट राजा जैसा जहाँ हाल हो उस प्रशासकीय व्यवस्था पर कटाक्ष।

देवै जिणरा देवळ चढ़ै। ६७९३

देने वाली की ध्वजा चढ़ती है।

-कैसी अजीब विडंबना है कि संचय करने वाले असंख्य लोगों की कहीं कोई चरचा सुनाई नहीं देती, पर जो बिरले व्यक्ति देते हैं, गँवाते हैं उनका यशगान होता है, उनकी ध्वजा सबसे ऊपर फहराता ह ।

—संचय करने वालों की बजाय लुटाने वालों का नाम अधिक होता है—मसलन भामाशाह ।

देवै बैठां-बैठां तद ऊठण री के दरकार । ६७९४

दे बैठे-बैठे तब उठने की क्या दरकार ।

संदर्भ-कथा : जिस व्यक्ति को देने वाले ईश्वर पर इतना अगाध विश्वास हो, वही ऐसा अविचलित रह सकता है । खड़े होने पर यदि उसे बेशुमार धन प्राप्त हो सकता हो, तब भी उधर हाथ नहीं बढ़ायेगा । देने वाला जब देने पर ही उतारू हो तो उसकी गोदी में लाकर पटकेगा, तभी ग्रहण करेगा । उठकर लेने से दोनों की मर्यादा घटेगी—देने वाले की और लेने वाले की भी । इस संदर्भ में एक फकीर की कथा दृष्टव्य है—एक पहुँचा हुआ फकीर धूनी ताप रहा था । कहीं से फिरती-घिरती एक गधी उसके पास आई । उसने आश्चर्य से उठकर देखा, गधी की गूणती में सोने की मोहरें चमचमाती नजर आईं । वह तत्काल धूनी पर बैठ गया । मन-ही-मन कहा, 'जब देने वाले ने यहाँ तक गधी भेज दी, तो वह उठकर लेने की हिमाकत क्यों करे ? देना होगा तो गोदी में लाकर पटक देगा ।' उसका इतना सोचना हुआ कि गधी लातें उछालकर कूदी और अगले ही क्षण मोहरों से भरी गूणती फकीर की गोदी में आ गिरी । उससे फकीर ने एक कुआँ खुदवाया और पास ही एक सराय बनवाई । यात्री आज भी कुएँ का ठंडा पानी पीते हैं, सराय में विश्राम करते हैं ।

—देने वाले पर अटूट विश्वास हो तो सोते-सोते भी सारी कामनाएँ पूरी हो सकती हैं ।

देवै सो आपरौ । ६७९५

देवे सो ही अपना ।

—अजीब पहेली है कि संचय किया हुआ सारा धन तो यहीं पड़ा रहता है, पर जो अपने हाथ से किसी को दिया, फकत वही साथ चलता है ।

—इसलिए संचय करना निरर्थक है और दूसरों को लुटाया माल ही सार्थक है ।

देवै हिमायती री गधेड़ी , ऐरावत रै लात । ६७९६

मारे हिमायती की गधी ऐरावत को लात ।

ऐरावत = इंद्र का सफेद हाथी।

—खूब ठाट-बाट से पाली हुई गधी अपने गुमान में ऐरावत को भी लात मार देती है। सामान्य अशिष्ट व्यक्ति पर किसी बड़े व्यक्ति का हाथ हो तो वह अपनी नासमझी से विद्वान का भी तिरस्कार कर देता है।

—प्यादे से फरजी भया टेढ़ा-टेढ़ा जात।

देवौ नांव तौ कोई टाबर रौ ई नीं दिरावै। ६७९७

देवा नाम तो किसी बच्चे का भी न रखे।

—जो कंजूस देने के नाम पर किसी को गाली भी न दे, वह भला अपने बच्चे का नाम 'देवा' क्योंकर रख सकता है ?

—मक्खीचूस महाजन की संचय-वृत्ति पर कटाक्ष।

देस चाकरी, दिसावर भीख। ६७९८

देश चाकरी, दिसावर भीख।

—परिचित इलाके में नौकरी से और अपरिचित दिसावर में भीख माँगकर पेट भरना भी बुरा नहीं है।

—सामाजिक मर्यादा के अनुसार ही मनुष्य की गति-विधि निर्भर करती है।

पाठा : **सेंधै चोरी अर परदेस भीख।**

देस चोड़वानो पण वेस चोड़वानू नी।– भी. २८९ ६७९९

देश छोड़ देना पर वेश नहीं छोड़ना।

—परिस्थितियों की मार देश छोड़ने के लिए भले ही मजबूर कर दे, पर अपनी धरती की प्रीत का सूचक वेश किसी भी सूरत में नहीं छोड़ना चाहिए।

—पर आज तो पश्चिम और अमरीका की परोक्ष गुलामी ने अपने ही देश में आबाद बाशिंदों का वेश और परिवेश सब-कुछ छुड़वा दिया है।

पाठा : **देस भलांई छोडणौ पण वेस नीं छोडणौ। देस छोड्यौ पण वेस क्यूं छोडौ।**

देस जिसा ई भेस। ६८००

देश जिसा ई भेष।

—दुनिया में जितने ही देश हैं, उतने ही विभिन्न भेष हैं। पर अब यह वैविध्य समानता में परिवर्तित हो रहा है।

—अपने-अपने सांस्कृतिक, साहित्यिक व कलात्मक वैविध्य को बचाकर रखना ही वास्तविक राष्ट्र-प्रेम है।

पाठा : देस जैड़ौ भेस।

देस-देस नो धाळो न्यारौ-न्यारौ है।– भी.४५९ ६८०१

देश-देश का ढर्रा भिन्न-भिन्न होता है।

—लोगों के कंठ में अवस्थित यह कहावत भविष्य में इतिहास बन जाएगी। सपने के रूप में भी बची नहीं रहेगी। भूगोल और प्राकृतिक संपदा को छोड़कर हर देश की परंपराएँ विकसित देशों के अनुकरण से मिटती जा रही हैं। यह विकास है या विनाश, आज इसका निर्णय नहीं हो सकता। पर जब भी निर्णय की अंतिम घड़ी आएगी तब हमारे पास अपना कहने को कुछ भी नहीं होगा।

पाठा : देस-देस रौ धारौ न्यारौ-न्यारौ व्है। देस-देस रौ ढाळौ। देस-देस रौ न्यारौ धारौ।

देस-निकाळौ कोई भाग निकाळौ नीं व्है। ६८०२

देश-निकाला कोई भाग्य-निकाला नहीं होता।

—देश का निवास छीना सकता है, पर किसी का भाग्य नहीं छीना जा सकता। कई ऐतिहासिक व लोक-कथाओं के निष्कासित राजकुँअरों ने अन्यत्र राज्य जमाया है।

—राजा के विरुद्ध या विमुख होने से भाग्य विमुख नहीं होता।

देस री गधी अर पूरब री चाल। ६८०३

देश की गधी और पूर्व की चाल।

—देश की स्वस्थ परंपरा छोड़कर अन्य संस्कृति का अनुकरण करने वाले पर कटाक्ष।

—अपने ठेठ विद्यार्थी-जीवन में मारवाड़ी की बजाय हिंदी बोलता तो गाँव के लोग आश्चर्य से कहते कि अंग्रेजी छाँट रहा हूँ। कोई मजाक उड़ाते कहता—देस री गधी अर पूरब री चाल।

देसी कुतिया, विलायती बोली। ६८०४

देसी कुतिया, विलायती बोली।

—राजस्थान में आजादी के पहिले अंग्रेजी बोलने पर गाँवों के लोग कहते—देसी कुतिया, विलायती बोली।

—पर अब तो सारी बात ही उलटने लगी है—देसी कुतिया अपनी बोली भूलकर सपने भी विलायती भाषा में देखती है।

देसी जद पावसी, पावसी तद लूणसी। ६८०५

देगा तभी पाएगा, पाएगा तभी काटेगा।

—इस सामान्य-सी कहावत के तीन आयाम हैं :

—धरती में बीज बोएगा तभी पाएगा और पाएगा तभी फसल काटेगा।

—अपना धन किसी को देगा, तभी तू पाएगा। और पाएगा तभी मुक्ति का आनंद प्राप्त करेगा।

—ईश्वर देगा तभी पाएगा और पाएगा तभी बीनेगा।

देह धार्‌यां रौ डंड है। ६८०६

देह धारे का दंड है।

—अन्य प्राणियों के अलावा मनुष्य का जीवन ही कुछ ऐसा विचित्र है—जहाँ कदम-कदम पर खतरा है। और उन सब खतरों से बचकर चलने में ही मनुष्य जीवन की सार्थकता है।

देह में कोनीं लत्ता, लूटैला कलकत्ता। ६८०७

शरीर पर नहीं लत्ता, लूटेगा कलकत्ता।

—अक्षम व्यक्ति की असंभव महत्त्वाकांक्षा का उपहास।

—डॉन क्विगजॉट और शेखचिल्ली की मिश्रित प्रवृत्ति वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

देह रा कांई टका बटै? ६८०८

शरीर के पैसे थोड़े ही मिलते हैं?

—जो व्यक्ति शरीर की फूँक-फूँककर हिफाजत रखते हैं, मामूली मेहनत से भी कतराते हैं, उनके लिए।

—जो व्यक्ति शरीर को रंचमात्र भी कष्ट न देना चाहे।

दैण सारीसी दौरप नीं। ६८०९

कलह जैसा क्लेश नहीं।

—जिस परिवार में हरदम दाँत बजते रहें, उससे बड़ा कोई दुख नहीं।

—कैसी भी बहबूदी के बीच यदि घर में शांति और सद्‌भाव की बजाय आठों पहर राड़ रहे तो उसकी यातना असह्य है।

दैनगिया नै दैनगियौ नीं सुहावै। ६८१०

मजदूर को मजदूर नहीं सुहाता।

—कोई किसी की एवजी में मजदूरी न करले, अच्छा काम व अधिक मेहनत करके परस्पर किसी की हेटी न लग जाय और मालिक की नजर में कोई अधिक न चढ़ जाय ऐसी छोटी-छोटी बातों से मजदूरों के मन में द्‌वेष उपजता रहता है।

दो आवड़ै जठै अेक तौ पड़ै। ६८११

दो भिड़ें तो एक गिरता ही है।

—हारने के कारण जब कोई व्यक्ति पछतावा करने लगे तब उसे आश्वस्त करने के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है कि इस में चिंता करे जैसी क्या बात, दो लड़ते हैं तो एक हारता ही है, हिम्मत रखनी चाहिए, अगली बार तुम जीत जाओगे।

—खोया हुआ आत्म-विश्वास उभारने के लिए।

पाठा : **दो आथड़ै तद अेक तौ हेटै पड़ै। दो जणा लड़ै तौ अेक जणौ थरकीजै ई।**

दोय लड़ै तौ अेक पड़ै-रौ-पड़ै।

दो कतरणियां बिचाळै माथौ। ६८१२

दो कैंचियों के बीच में माथा।

—किसी दुविधा-जनक स्थिति से बचाव का रास्ता न सूझे तब।

—दो परिजनों के बीच झगड़े का निपटारा करना हो तब।

—समान दुष्ट व्यक्तियों के बीच कोई सज्जन फँस जाये तब।

दो घर डूबता अेक ई डूबौ। ६८१३

दो घर डूबते एक ही डूबा।

—जब कोई दंपती समान रूप से बदमिजाज, बदखर्च व झगड़ालू हो, तब आस-पड़ोस के लोग कहते हैं कि यदि इनका आपस में ब्याह नहीं होता, अलग-अलग ब्याहते तो दो घर बर्बाद होते। अब तो एक घर ही डूबा।

पूरी उक्ति : **सोढ़ा रै घर सांखली नै सांखली रै घर सोढ़ौ। दो घर डूबता, अेक ई डूबौ।**

सोढ़ौ = पँवार वंश की सोढ़ा शाखा का व्यक्ति।

सांखली = पँवार वंश की साँखला शाखा की स्त्री।

दो घरां रौ पांवणौ भूखां मरै। ६८१४

दो घरों का पाहुना भूखों मरता है।

—आतिथ्य-सत्कार करने वाले इस भरोसे रह जाते हैं कि दूसरे घर खाना खा लिया होगा।

—जिस व्यक्ति के अधिक पक्षधर होते हैं, वह अकसर सहयोग से वंचित रह जाता है।

—दो व्यक्तियों पर आश्रित मानुस कठिनाई में पड़ जाता है।

दो घोड़ां असवारी खोटी। ६८१५

दो घोड़ों पर सवारी खोटी।

—जब एक व्यक्ति दो काम सँभालने की स्थिति में नहीं होता, तब उसे लक्ष्य करके यह कहावत कही जाती है।

—आदमी का लक्ष्य एक ही होना चाहिए, अधिक लक्ष्य होने से वह डगमगा जाता है।

—दुहरा लालच फायदेमंद नहीं होता।

पाठा : **दो घोड़ां असवारी नीं व्है। दो घोड़ां रौ असवार तौ हेटै ई पड़ै।**

दो ठगां ठगाई। ६८१६

दो ठगों की ठगी।

संदर्भ-कथा : दो ठग एक बार ठगी करने के लिए निकले। एक ने म्यान में लकड़ी की तलवार डाली। मूठ लोहे की थी। दूसरे ठग ने मिट्टी के बासन में नीचे मिट्टी भरकर ऊपर फकत

दो अंगुल घी भरा। बासन को चिकना करके घी बेचने के लिए निकला। संयोग से दोनों एक स्थल पर मिल गये। परस्पर मीठी बातों के पश्चात् दोनों ने एक दूसरे से खुशी-खुशी सौदा कर लिया। सोचा जल्दी ही अच्छी कमाई हो गई। पर घर जाकर दोनों ही काफी पछताये।

—बुरे लक्षणों के दो व्यक्ति परस्पर होशियारी करके अमूमन धोखा खा जाते हैं।

पाठा : दो ठगां ठगाई नीं व्है।

दो तौ चूंन रा ई भूंडा व्है। ६८१७

दो तो आटे के भी बुरे होते हैं।

—जब दो निर्बल व्यक्तियों पर एक बलिष्ठ व्यक्ति वार करे और वह प्रतिशोध न ले सके तब इस कहावत का प्रयोग होता है कि कुछ भी हो दो व्यक्तियों के मुकाबले एक व्यक्ति अक्षम ही होता है। आखिर दो तो चून के भी बुरे होते हैं।

—दो व्यक्ति एक की अपेक्षा दुगुने से भी अधिक काम करें तब।

पाठा : दो तौ माटी रा ई वत्ता व्है। दो तौ गार रा ई बुरा व्है।

दो तौ माटी रा ई बुरा, नीं बरछी, नीं छुरा।

दो दांणां री खातर घोड़ी बेचणी पड़ैला कांई? ६८१८

दो दानों की खातिर घोड़ी बेचनी पड़ेगी क्या?

—जब कोई व्यक्ति घोड़ी को कुछ दिन दाना खिलाकर उस पर अधिकार जताये, तब।

—मामूली एहसान करके जब कोई व्यक्ति काफी समय तक उसकी रट न छोड़े, तब उसे लक्ष्य करके यह कहावत कही जाती है।

—दाने की उचित व्यवस्था न होने पर घोड़ी बेचने की नौबत आ पड़े, तब ...।

—मामूली खर्च की एवज में जब कोई महँगी वस्तु बेचनी पड़े, तब ...।

दो दिन तौ पांवणौ, तीजै दिन पई। ६८१९
चौथै दिन ढबै, थारी अकल कठै गई?

दो दिन तो पाहुना, तीसरे दिन पई।
चौथे दिन रुके, तेरी अक्ल कहाँ गई?

पई = पथिक। पाहुन की बजाय हलका शब्द।

—कैसा भी नजदीक रिश्तेदार हो ज्यादा दिन तक उसका सत्कार नहीं किया जा सकता। मन में दुराव पैदा हो ही जाता है।

—ज्यादा मेलजोल से मित्रता में रूखापन आ जाता है।

—थोड़ा जितना ही मीठा।

पाठा : दो दिन रौ पांवणौ, तीजै दिन अळखावणौ। अळखावणौ = अप्रिय।

दो-दो अर चोपड़ी। ६८२०

दो-दो और चुपड़ी।

—जब कोई व्यक्ति दुहरा लाभ उठाने की चेष्टा करे तब।

—एक ही बार में कोई चतुर दो फायदों की आशा रखे, तब।

पाठा : बे-बे अर चोपड़ी।

दो-दो गयंद न बंधहिं, अेकै खंभू ठांण। ६८२१

दो-दो हाथी एक ही स्थल पर नहीं बँध सकते।

ठांण = स्थान। मवेशी को एक ही ठौर नियमित बाँधने का स्थान।

—दो गुस्सैल अहंकारी व्यक्ति साथ-साथ नहीं रह सकते।

—इससे मिलती-जुलती कहावत है — एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं।

पूरा दोहा : **मांन रखै तौ पीव तज, पीव तजै रख मांन।**
दो-दो गयंद न बंधहिं, अेकै खंभू ठांण ॥ पीव = पति। प्रियतम।

दोनूं ई हाथ भेळा धुपै। ६८२२

दोनों ही हाथ साथ धुलते हैं।

—कितना सूक्ष्म निरीक्षण है। एक हाथ अच्छी तरह नहीं धुलता। दोनों हाथ जुड़ने पर ही वांछित सफाई हो सकती है।

—मानव-समाज में परस्पर एक-दूसरे का सहयोग अपरिहार्य है।

पाठा : हाथ तौ दोन्युं ई साथै धुपै।

दोनूं कांनी मौत है। ६८२३

दोनों तरफ मौत।

—धर्म-संकट की भयावह स्थिति जिससे बचना दूभर हो ।

—मसलन, दो परिजनों की पंचायती का फैसला गले आ पड़े, तब...। माँ-बाप द्वारा तय की हुई लड़की और प्रेयसी के बीच बेटे को ब्याह का निर्णय करना पड़े, तब...। ऐसी कई विकट स्थितियाँ हो सकती हैं जब इस कहावत के द्वारा अपना द्वंद्व व्यक्त किया जाता है ।

दोनूं गमाई रे बूमना मुद्रा नै आदेस । ६८२४

दोनों गँवाई रे बूमना मुद्रा और आदेश ।

आदेस = आज्ञा, हुक्म । जुहार, प्रणाम । बूमना = फकीर, जोगी ।

संदर्भ-कथा : एक राजा के मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ तो वह राज-पाट छोड़कर जोगी बन गया । लेकिन अधिक समय तक वैराग्य का निबाह नहीं हुआ तो एक विधवा कुम्हारी के प्रेम में फँसकर उससे ब्याह कर लिया । कुम्हार बन गया । जब वह राजा था तो सैकड़ों दरबारी उसकी हाजरी में हाथ जोड़े तैनात रहते थे । साधु बन गया तो श्रद्धालु उसका आदर करते थे । पाँव छूते थे । लेकिन कुम्हार बनने पर वह दोनों से ही गया । न दीन का रहा, न दुनिया का ।

—जो विवेक-शून्य व्यक्ति अपनी नासमझी के निर्णय से कहीं का न रहे और दयनीय स्थिति में फँस जाय ।

पूरी उक्ति : **राजा सूं जोगी भयौ, जोगी सूं भयौ कुमार ।**
दोनूं गमाई रे बूबना, मुद्रा नै जुहार ॥

—जब कोई व्यक्ति अपने धर्म या कर्तव्य से च्युत होकर बदनाम या अपमानित होता है, तब !

पाठा : **दोन्युं गमाई रे जोगड़ा, मुद्रा नै आदेस । दोनूं बोई रे बूमना, मुद्रा नै आदेस ।**

दोनूं ढूंगा अेकण ढाळ, जै गोविंदा जै गोपाळ । ६८२५

दोनों नितंब एक ही ढाल, जय गोविंदा, जय गोपाल ।

—जब कोई दंपती या मित्र दोनों ही समान अवगुणों से ग्रस्त हों । तब उनका परिहास करते हुए इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

—एक जैसे दुर्व्यसन वाले व्यक्तियों के लिए ।

—इसका एक छिपा मर्म यह भी है—किसी नपुंसक पति की घरवाली सखियों से अपने मन का दरद प्रकट करती है कि उस में और पति में कोई खास भेद नहीं है। दोनों एक जैसे ही हैं। दो औरतों में परस्पर प्रेम या सहवास होने पर।

दोनूं मूंडा राता व्है जद चटकौ लागै। ६८२६

दोनों मुँह लाल हों तभी मेल बैठता है।

—लोहे के दो अलग-अलग टुकड़ों को एक बनाना हो, तब दोनों मुँह आग में तपाकर गर्म किये जाते हैं। एक-दूसरे को ऊपर-नीचे रखकर जोर से चोट मारने पर दोनों जुड़ जाते हैं। फकत एक मुँह लाल सुर्ख हो और एक ठंडा हो तो उन्हें एक नहीं किया जा सकता, चाहे कितनी ही चोटें मारो। इस में अपवाद की कोई गुंजाइश नहीं।

—परस्पर पूरा मन मिलने पर ही दो व्यक्तियों में मेल हो सकता है। झगड़े का निपटारा या समझौता हो सकता है।

—किसी लड़के और लड़की में दोनों ओर प्रेम उमड़े तभी बात बनती है, वरना नहीं।

दोनूं हाथां में लाडू। ६८२७

दोनों हाथों में लड्डू।

संदर्भ-कथा: एक गूजर के पास उम्दा भैंस थी, पर कुँआरा था। किसी कारण-वश उसका ब्याह टलता रहा। पत्नी का अभाव आठों पहर खटकता रहता था। गाँव में एक दूसरे गूजर के पास भैंस नहीं थी। पर वह विवाहित था। आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि भैंस खरीद सके। आठों पहर पति-पत्नी दूध के लिए तरसते थे। विवाहित गूजर बलिष्ठ था। उसने एक तरकीब सोची। दोनों पति-पत्नी भैंस वाले गूजर के पास गये। बेहिचक सीधा प्रस्ताव रखा, 'यदि कुश्ती में तुम जीत गये तो मेरी औरत तुम रख लेना, यदि मैं जीत गया तो तुम्हारी भैंस मेरी हो जायेगी।' भैंस वाले गूजर को भी अपनी ताकत पर विश्वास था। उसने शर्त पक्की करने के लिए औरत से पूछा। उसने तत्काल हामी भरते कहा। 'हम तो यह सोचकर ही घर से चले थे, सोचना तुम दोनों को है। कोई भी जीते मैं भैंस की मालकिन होऊँगी। मेरे तो दोनों हाथों में लड्डू हैं।'

—किसी भी भले-बुरे निर्णय से जो व्यक्ति मनवांछित लाभ से महरूम न रहे, उसके लिए।

दोनूं हाथां सूं ताळी बाजै । ६८२८

दोनों हाथ से ताली बजती है ।

—यह भी लाजवाब निरीक्षण की उक्ति है कि एक हाथ से ताली नहीं बजती, दोनों हाथों के टकराव से ताली बजती है ।

—दोनों पक्षों की सहमति के बिना जो बात सहज रूप से न बने । मसलन प्रेम या मित्रता दोनों पक्षों के आकर्षण से ही संभव है । इकतरफा घनिष्ठता भी नहीं होती और झगड़ा भी नहीं होता । दोनों पक्ष ही थोड़े-बहुत जिम्मेदार होते हैं ।

दो पगां सूं चौपग्गौ व्हियौ के दो भुजां सूं चतुरभुज व्हियौ ? ६८२९

दो पाँवों से चौपाया हुआ कि दो भुजाओं से चतुर्भुज हुआ ?

—ब्याह के गठबंधन से दो व्यक्ति साथ जुड़ते हैं । यदि जोड़ी बेमेल या अयोग्य हुई तो चार पाँवों वाले किसी पशु से बेहतर नहीं होते । और यदि दोनों मिलकर किसी भी लक्ष्य में जुटें वे चतुर्भुज बन जाते हैं । दो और दो चार भुजाओं की शक्ति अदम्य बन जाती है ।

पाठा : दो पगां सूं चौपगां ।

दो पूरबिया नै तीन होका । ६८३०

दो पूरबिये और तीन हुक्के ।

—जब दो व्यक्ति अपनी बुरी आदतों के कारण मिल-जुलकर साथ निर्वाह नहीं कर सकते हों ।

—जब दो व्यक्तियों में परस्पर छत्तीस का आँकड़ा हो ।

पाठा : दो सारस्वत अर तीन होका ।

दो पोया नै हाथ धोया । ६८३१

दो पोये और हाथ धोये ।

पोया = पोना । रोटी बनाना ।

—दो फुलके पोये और हाथ धोकर निवृत्त । जिस छोटे परिवार में पति-पत्नी दो ही हों, तो काम की मार कतई नहीं रहती । दिन भर अवकाश-ही-अवकाश है । पति किसी काम से बाहर हो तो मौज-ही-मौज । छोटा परिवार, सदा बहार ।

—जो अकर्मण्य औरत रोटियाँ बनाने के अलावा घर का अन्य काम नहीं करती। रसोई बनाई और आराम।

दो बुरा मिळियां ईं बुराई हुवै। ६८३२

दो बुरे मिलने पर ही बुराई होती है।

—कोई भी बुरा काम दो व्यक्तियों के जुड़ने पर ही होता है। किसी एक को कसूरवार बताना न्याय संगत नहीं।

—अकेले व्यक्ति की करतूत से कोई भी वर्जित काम नहीं होता, दो गलती पर हों तभी उसकी शुरुआत होती है।

मि.क.सं.६८२८

पाठा : दो बुरां, बुराई होय।

दो बेरा कस्या दीसै। ६८३३

दो कुएँ किये लगते हैं।

संदर्भ-कथा : एक किसान ने खरीफ की अनिश्चित फसल से परेशान होकर एक बोहरे से चक्रवर्धि ब्याज पर कर्ज लिया और कुआँ खुदवाया। किया तो उसने हिम्मत का ही काम था। पर भाग्य ने साथ नहीं दिया। कुएँ में कच्चा पानी ही निकला। मन-वांछित फसल बोई नहीं जा सकी। बोहरे का ब्याज तो आठों पहर चालू था। बेचारे ने खूब मेहनत की, पर अंत तक बात बनी ही नहीं। बोहरे की जो इच्छा थी, वही हुआ। सारे मवेशी, सारी जमीन-जायदाद बेचकर भी कर्ज नहीं चुका पाया तो बोहरे ने उसके कपड़े भी उतार लिये। जब तक कर्ज न उतरे किसान रोटी-कपड़ों के बदले बोहरे का हाली रहेगा, बही में लिखा-पढ़ी करके अँगूठा लगवा लिया। अपने ही गाँव में घर की खेती छोड़कर बनिये की चाकरी करने के लिए उसका मन नहीं माना। उघड़े बदन दिन के उजाले में बाहर निकलना उचित नहीं था। कमर में फटा कपड़ा बाँधकर आधी रात को वह भाग्य के भरोसे पीढ़ियों का आवास त्यागकर निकल पड़ा। अगले गाँव पार्श्वनाथजी का मंदिर आया। कुछ घड़ी वहाँ बिताकर अल्ल-सवेरे आगे निकल पड़ेगा। मंदिर में घोर अंधेरा था। हाथ को हाथ ना सूझे। इधर-उधर टटोलने लगा तो किसी चिकनी पुतली के नाक-कान पर उसका हाथ फिरा। जिज्ञासा वश उसने दो-तीन बार पुतली पर दोनों हाथ फिराये। पुतली तो एकदम निरावृत्त थी। पूरे शरीर पर एक चिंदी भी हाथ नहीं

लगी। तब उसने गहरी आह भरते कहा, 'तूने, दो कुएँ किये हैं क्या ? मेरे शरीर पर गमछा तो है। एक कुआँ करके ही बर्बाद हो गया। तूने आस नहीं छोड़ी। दो कुएँ किये लगते हैं। शरीर पर एक चिंदी भी नहीं।'

—बुरी तरह सताये मानुस को हर व्यक्ति चिंतित प्रतीत होता है।

दो मांमां रौ भांणजौ भूखां मरै। ६८३४

दो मामों का भानजा भूखों मरता है।

दे.क.सं.६८१४

पाठा : सात मांमां रौ भांणजौ भूखां मरै। घणा मांमां रौ भांणेज भूखां मरै।

दो मां रा दूधिया। ६८३५

दो माँ के दूधिया।

संदर्भ : दो बालक कुश्ती लड़ते हैं। एक तो गिरता ही है और एक जीतता है। जीतने वाला इस भय से दुबारा नहीं लड़ता कि शायद पटकी न खा जाय। गिरने वाला जीतने की आशा में दुबारा यह कहकर कुश्ती लड़ने का आग्रह करता है कि माँ के दो स्तन होते हैं, दूध की मर्यादा तो रखनी ही होगी। दो लकीरें खींचकर वह कुश्ती के लिए आग्रह करता है तो जीतने वाला भी इनकार नहीं कर सकता। माँ के दूध की मर्यादा तो उसे भी रखनी है।

—किसी भी काम में एक बार की असफलता अंतिम नहीं होती, दुबारा कोशिश करने की चेष्टा करनी चाहिए।

दोय आंगळ रौ लिलाड़ जिका में ई भंवरौ। ६८३६

दो अंगुल का ललाट, उस में भी भँवरा।

भंवरौ = सिर या ललाट पर बालों का घुमाव। ललाट भाग्य का प्रतीक है। उस में बालों का भँवरा अशुभ माना जाता है।

—जिस अभागे व्यक्ति का ललाट छोटा हो—सिर्फ दो अंगुल का और यदि उस में भी भँवरा हो तो ललाट आधा ढँक जाता है।

—अभागे व्यक्ति पर कुदरत भी रोष करती है, दूर-दूर तक उसके सुख की कोई गुंजाइश नहीं। ललाट में भँवरा जो है।

—कोई साधन-रहित व्यक्ति मर-खपकर छोटा-मोटा काम करे और उस में भी बाधा पड़ जाय तब !

पाठा : दो आंगळ रौ लिलाड़ नै मांय भंवरी ।

दोय कैवै सो च्यार सुणै । ६८३७

दो कहे सो चार सुने ।

—जो कोई भी दो ओछे शब्द कहेगा यानी गाली देगा तो वापस चार गालियाँ सुनेगा ।

—जो व्यक्ति किसी के साथ बुरा बरताव करेगा, वह बुरा बरताव पाएगा ।

दोय घड़ी री निसरड़ाई अर च्यार पौ'र आरांम । ६८३८

दो घड़ी की बेशर्मी और चार पहर आराम ।

—जो व्यक्ति घटिया काम करने के लिए अपने मन में किसी औचित्य का आधार खोज ले । जैसे बिन बुलाये किसी उत्सव में नीचा सिर करके खाना खा ले तो बाकी पूरे दिन आराम रहेगा । यह सोचकर वह धृष्टता-पूर्वक किसी भी हीन कार्य के लिए अपने मन को समझा लेता है ।

दोय जणा लड़ै तद तीजौ फायदौ उठावै । ६८३९

दो जने लड़ें तो तीसरा लाभ उठाता है ।

—पंचतंत्र के चतुर बंदर ने दो बिल्लियों के बँटवारे में उनकी सारी रोटियाँ खाली थीं । हर बार भारी पलड़े से टुकड़ा तोड़-तोड़कर दोनों पलड़े सफाचट कर दिये ।

—यूरोप के साम्राज्यवादियों ने पराजित देश के बाशिंदों को परस्पर लड़ा-लड़ाकर ही बरसों तक राज्य किया । शोषण किया । खासकर अंग्रेजों के लिए फूट का यह सिद्धांत बड़ा कारगर सिद्ध हुआ ।

पाठा : दो री फूट, तीजा री लूट । दोय लड़ै जणा तीजै नै लाभ व्है ।

दोयती तौ कंवारी डोलै, नांनी रा नव-नव फेरा । ६८४०

नातिन तो कुँआरी डोले, नानी के नौ-नौ फेरे ।

—जो व्यक्ति परिवार की अनिवार्य प्राथमिकताओं को नजर-अंदाज करके फालतू कार्यों के लिए फिजूलखर्ची करे ।

—जिस प्रतिष्ठान के कर्मचारी परस्पर बंदर-बाँट करके उसकी पूँजी उड़ाते रहें और उसके वैधानिक कार्य भी संपन्न न होने दें।

दोय पग व्है जद बेटौ, चार पग व्हियां घेटौ। ६८४१

दो पाँव रहें तब तक बेटा, चार पाँव होने पर घेटा।

—माँ शिकवा-शिकायत करती है कि ब्याह से पहिले जब बेटे के अपने ही दो पाँव थे, वह आज्ञाकारी था। बहू के आने पर दो पैर जुड़ते ही वह चार पाँवों का मेंढ़ा हो गया। लड़ने के लिए सामने आता है। क्या किया जाय?

मि.क.सं.६८२९

दोय बात री मेहणी के चोरी के जारी। ६८४२

दो बात बुरी, चोरी व जारी।

—सामान्य आदमी की मान्यताओं का बस यही मापदंड है कि ईश्वर उसे चोरी और जारी से बचाये। परस्पर बातचीत करते हुए अकसर वे इस कहावत को दुहराकर स्वयं को सतर्क करते रहते हैं। ये दो ऐब न होने पर आदमी दोष-रहित है।

दोय मतीरा अेक हथाळी नंह संभै। ६८४३

दो तरबूज एक हथेली पर नहीं सँभलते।

—दो कठिन काम एक साथ संपन्न नहीं होते।

—दो पंडित, दो बलवान और दो अभिमानी एक साथ नहीं रह सकते।

दोय लुगायां रौ धणी चूल्हौ फूंकै। ६८४४

दो स्त्रियों का पति चूल्हा फूँकता है।

—इसलिए कि दोनों स्त्रियाँ पति की सुविधा के लिए एक-दूसरी के भरोसे रहती हैं।

—इसलिए कि आपसी कलह के कारण दोनों स्त्रियाँ रूठकर सो जाती है।

पाठा : दो बवां रौ वर भूखां मरै।

दोय वेंत डावड़ी, चंवरयां चढ़ी। ६८४५

दो बालिश्त की बच्ची भाँवरें चढ़ी।

—अच्छी सुंदर युवा लड़कियाँ विवाह से वंचित रह जाएँ और गुड़िया-सी बाला मंडप चढ़े, तब !

—बाल-विवाह की कुप्रथा पर कटाक्ष।

दोय हाथ नै तीजौ माथ। ६८४६

दो हाथ और तीसरा माथ।

माथ = माथा = सिर।

—दो हाथ और तीसरा मस्तिष्क पूर्णतया स्वस्थ रहें तो किस चीज का अभाव है ? असली पूँजी तो यही है जो सारे क्रिया-कलाप के निमित्त पर्याप्त है।

—सामान्य व्यक्ति बस इन्हीं के कुशल-क्षेम की हरदम कामना करता है।

दोरौ कांम कर्‌यां टाळ, सोरौ नीं आवै। ६८४७

कठिन काम किये बिना, आसान नहीं होता।

इस कहावत के दो अर्थ हैं—

—कैसा भी कठिन काम आखिर करने से ही आसान होता है। न करने से तो वह वैसा-का वैसा कठिन बना रहता है।

—कठिन काम किये बिना आसान काम भी नहीं किया जा सकता।

दोरौ व्हियां टाळ सोरौ नीं व्है। ६८४८

आफत उठाये बिना आराम नहीं मिलता।

—आराम पाने के लिए लोक-व्यवस्था में कैसा सरल उपाय है—खूब कठिन काम करो, तभी आराम मिलेगा।

—सुख पाने के लिए पहिले दुख उठाना अनिवार्य है।

दोळा तौ गिंडक इज व्है। ६८४९

लूमते तो कुत्ते ही हैं।

—बुरे आदमी ही कष्टदायक होते हैं। घेराव करते हैं।

—कुत्ते तो भोंकेंगे ही, यह उनका स्वभाव है। उसी प्रकार दुष्ट व्यक्ति परेशान करते ही हैं, यही उनका स्वभाव है, छूट नहीं सकता।

पाठा : दोळा तौ कुत्ता इज व्है ।

दो लुगायां वाळा रौ घर नीं भागै । तीन बळदां वाळा रौ हळ ऊभौ नीं रैवै । ६८५०

दो स्त्रियों वाले पति का घर नहीं टूटता । तीन बैलों वाले का हल खड़ा नहीं रहता ।

—जो व्यक्ति अतिरिक्त सावचेती बरतता है उसका जीवन कष्टप्रद होने की बजाय सुगमता से चलता है ।

—जो व्यक्ति भविष्य को ध्यान में रखकर नियोजित व्यवस्था से चलता है, उसका वर्तमान सदा उजला रहता है ।

दोवड़ परवांणै पग पाधरा । ६८५१

दोवड़ के अनुसार पाँव सीधे रखने चाहिएँ ।

दोवड़ = सोड़, चदरिया, खेस इत्यादि ।

—अपनी हैसियत को ध्यान में रखकर ही सारे कार्य करने चाहिएँ ।

—साधनों के अनुसार ही हाथ-पाँव फैलाने चाहिएँ ।

मि.क.सं.१२३०

दो सांप रै बिल में हाथ ! ६८५२

दो साँप के बिल में हाथ !

—अब तक गरीबों को ही सताया है, अब सवा सेर मिला है, सामना करके बताएँ तो जानें ।

—अब तक सज्जन व्यक्तियों से ही पाला पड़ा है, साँप की तरह कुटिल-व्यक्तियों को सीधा करें, तो पता चले ।

—बैठे-ठाले कुटिल व्यक्तियों को छेड़ना उचित नहीं ।

दोस्त वौ ई जकौ दुख में आडौ आवै । ६८५३

दोस्त वही जो दुख में काम आये ।

दे.क.सं.७५९

दोस्ती अर दुस्मणी बराबरी वाळा सूं राखणी । ६८५४

दोस्ती और दुश्मनी बराबरी वाले से रखनी ।

—इसलिए कि बड़ों से दोस्ती टिकती नहीं । और बड़ों से दुश्मनी निभती नहीं ।

—इस कहावत की नसीहत सामान्य होते हुए भी अत्यधिक व्यावहारिक है ।

दोस्ती करणी दौरी , दुस्मणी करणी सौरी । ६८५५

दोस्ती करना मुश्किल, दुश्मनी करना सरल ।

—संबंध जोड़ना ही तो मुश्किल है । तोड़ना बहुत आसान है ।

—संबंध जोड़ने में समय लगता है,तोड़ने में एक क्षण लगता है ।

दोस्ती तूटै नै संधै पण साख नीं तूटै । ६८५६

दोस्ती टूटती है और जुड़ती है पर रिश्ता नहीं टूटता ।

—रिश्ते में अनबन और झगड़ा तो हो जाता है पर रिश्ता बदलता नहीं—भाई, भाई रहता है । साला,साला ही बना रहता है । और मामा,मामा ही ।

—खून का कोई भी रिश्ता कैसी भी प्रगाढ़ मित्रता की तुलना में अधिक गहरा है । कथन भी है कि खून,पानी की अपेक्षा गाढ़ा होता है ।

दोहरायची खाबड़ै पड़ै ।–व.७० ६८५७

जिसका चित्त स्थिर नहीं होता, वह संकट में फँसता है ।

—जिस व्यक्ति का मन इधर-उधर भटकता है,उसे कभी संतोष नहीं होता । उसे देर-सबेर कष्ट उठाना ही पड़ता है ।

—ज्यादा फोकियत बघारने वाला अंततः जाल में फँस ही जाता है ।

दौड़ता घोड़ा दाळ पावै ।–व.२५४ ६८५८

दौड़ते घोड़े दाल के अधिकारी हैं ।

—जो घोड़े दौड़ने में कसर नहीं रखते,उनके लिए दाल में भी कसर नहीं रहती ।

—जो परिश्रम करेगा,उसे वांछित पारिश्रमिक मिलता ही है ।

—जो व्यक्ति काम करने को अपना अधिकार समझता है, वह उसकी फल-प्राप्ति का भी अधिकारी है ।

पाठा : दौड़णा घोड़ा रातब पावसी । (रातब = घी-शक्कर की लापसी)।

दौड़तौ घोड़ौ मतै ई दांणौ मांगलै ।

दौड़ता नै ढाळ लाधी । ६८५९

दौड़ते हुए को ढलान मिली ।

दे.क.सं.३६०१

दौड़नै मिळणौ नीं, आंतरै रैवणौ नीं । ६८६०

दौड़कर मिलना नहीं, दूर रहना नहीं ।

—नसीहत की कहावत है कि मित्रता बनाये रखनी है तो दौड़कर मिलना नहीं चाहिए और न इतना दूर रहना चाहिए कि सूरत देखने का ही वास्ता न पड़े । इन दोनों के बीच का मध्यम रास्ता ठीक है, जिससे मित्रता में कभी विघ्न नहीं पड़ता । यही बात परिजन या रिश्तेदारों के लिए भी ठीक है ।

दौड़ बहू दीवाळी आई, खाटी छाछ खाखरा लाई । ६८६१

दौड़ बहू दीवाली आई, खट्टी छाछ खाखरे लाई ।

खाखरा = चने की रोटी ।

—सास ने दीवाली के आनंदोत्सव की आशाएँ जगाकर खूब काम करवाया । बहू ने भी उत्साह में खूब काम किया । इस उम्मीद में कि त्योहार पर बढ़िया पकवान खाने को मिलेंगे । ऐन त्योहार का दिन आया तो सास ने बहू को खुशी में पुकारा और उसे खट्टी छाछ और खाखरे दिये । बहू की आशाओं के सारे दीपक बुझ गये ।

—मेहनत का वांछित फल न मिलने पर मन बुझ जाता है ।

पाठा : दौड़ बहू दीवाळी आई, तीन पापड़ी पांती लाई ।

दौड़ मिन्नी कुत्तौ आयौ । ६८६२

दौड़ बिल्ली कुत्ता आया ।

संदर्भ : बच्चों का एक खेल है । हाथ पकड़कर वे गोल घेरे में खड़े होकर घूमते रहते हैं । एक बच्चा बिल्ली बनता है और एक कुत्ता । बिल्ली के पीछे कुत्ता भागता है । यदि पाँवों के बीच

से निकल भागने के पहिले कुत्ता बिल्ली को पकड़ लेता है तो स्थिति पलट जाती है। कुत्ता बिल्ली बन जाता है और बिल्ली कुत्ता।

—मनुष्य, जीवन-यापन की आपाधापी में दिन-रात खटर-पटर करता है, इधर-से-उधर भटकता है, अपनी छाया के पीछे भागता है—फिर भी उसकी तृष्णा मिटती नहीं। इसी दौड़-भाग में उसकी साँस थक जाती है और वह हमेशा के लिए चिर-निद्रा में सो जाता है। पता नहीं वह नींद सुख की होती है या दुख की, कौन जाने ?

दौरौ कूट्योड़ौ नै सौरौ खायोड़ौ घणा दिन याद रैवै। ६८६३

सख्त मार और उम्दा भोजन बहुत दिन तक याद रहते हैं।

—जमकर मार खाया हुआ आसानी से पिटाई का दर्द भूलता नहीं। तबीयत से डटकर भोजन किया हुआ भी उसके स्वाद को खूब याद रखता है।

दौलत री भूख सब सूं भूंडी व्है। ६८६४

दौलत की भूख सबसे बुरी होती है।

—गाँव के सामान्य लोग दौलत की परिभाषा 'दो-लात' से करते हैं। पहिली लात आते समय सीने पर पड़ती है सो वह बौराया-सा सीना तानकर अक्खड़ से चलता है। तब दूसरी लात जाते समय कमर पर पड़ती है तो वह झुका हुआ दीन भाव से चलता है। दौलत (दो-लात) का खेल ऐसा ही होता है।

—दौलत की भूख ऐसी विकराल होती है कि वह जीवन-पर्यंत बुझती नहीं।

दौलत सूं दौलत बधै। ६८६५

दौलत से दौलत बढ़ती है।

—इस दौलत का भी अजीब गोरख-धंधा है कि जिस गरीब को इसकी सबसे ज्यादा जरूरत होती है, उससे कोसों दूर रहती है और जिस दौलतमंद को उसकी जरूरत नहीं होती, उस पर हुलस-हुलसकर पड़ती है।

धं - ध

धंधूणी दियां रिपिया नीं बरसै । ६८६६

झकझोरने से रुपये नहीं बरसते ।

—रुपये कोई पेड़ों पर लगे नहीं रहते सो झंझोड़ते ही नीचे गिर पड़ें । बड़ी अथक मेहनत करने से, पसीना बहाने से और सर खपाने से हाथ लगते हैं सो आसानी से नहीं दिये जा सकते ।

—कर्जदार के बार-बार माँगने पर बोहरा उसे मीठा उत्तर देता है कि रुपये पेड़-पौधों पर नहीं लगते ।

धंधो करे जो धाई ने खाये ।– भी. ४६३ ६८६७

काम करने वाला ही भरपेट भोजन कर सकता है ।

—जो व्यक्ति आलस्यवश कुछ भी काम न करके इधर-उधर अपना समय बेकार नष्ट करता है, दीन-हीन अवस्था में गुजारा करता है, उसे लक्ष्य करके यह कहावत कही जाती है ।

—निष्क्रियता की भर्त्सना और कर्म की महिमा इस उक्ति में बखानी गई है ।

पाठा : **धंधौ करै सो धापनै खाय ।**

धंधौ थोड़ौ नै धांधळ घणी । ६८६८

धंधा थोड़ा प्रपंच भारी ।

—जिस व्यक्ति का धंधा तो सामान्य हो, पर हल्ला-गुल्ला अधिक हो, उसके लिए ।

—कमाई से अधिक आडंबर का प्रदर्शन करने वालों पर कटाक्ष ।

धकलै गांव गियां लारलौ गांव याद आवै। ६८६९

अगले गाँव जाने पर पिछला गाँव याद आये।

—कोई नया अधिकारी, पहले वाले से खराब हो तब यह कहावत याद आती है।

—पुराने मित्रों की होड़ नये मित्र नहीं कर सकते। नये मित्रों का स्वार्थ देखकर पुराने मित्रों की अनायास ही याद कौंध उठती है।

धकलौ बासदी तौ अपां पांणी। ६८७०

सामने वाला आग तो हम पानी।

—कोई आग-बबूला हो तो चुपचाप शांत रहने से उसके क्रोध का उफान बैठ जाता है।

—जिस तरह आग से आग भड़कती है और पानी से बुझती है, उसी प्रकार क्रोध से क्रोध भड़कता है और शांति से समझाने पर शमित होता है।

धकै जित्तै धकण दौ। ६८७१

चले तब तक चलने दो।

—जब किसी घर-परिवार में बखेड़ा होने लगे, कलह और द्वेष बढ़ने लगे, फिर भी घर के बूढ़े-बुजुर्गों की चेष्टा रहती है कि जब तक संभव हो परस्पर प्रेम-भाव बना रहे तो घर की मर्यादा बचेगी। जब तक सुख-शांति का वातावरण चलता रहे तो अच्छा है। सब में सुमति लौट सकती है। आखिर हैं तो एक ही पेड़ की शाखा-प्रशाखाएँ।

धक्का दियां हवेली थोड़ी ई पड़ै। ६८७२

धक्के देने से हवेली थोड़े ही गिरती है।

—बदला लेने के लिए पूरी ताकत लगानी जरूरी है, धक्का-धूम से बात नहीं बनती।

—पुरानी जमी हुई व्यवस्था को बदलना फकत नारों से संभव नहीं है। जरूरत पड़े तो खून भी बहाना होगा। क्रांति की देवी खून से ही प्रसन्न होती है।

—बड़े बुजुर्गों का कहना है कि खरगोश का शिकार करना हो तो शेर का सराजाम साथ लो।

धक्का भेळौ धक्कौ। ६८७३

धक्के के साथ और धक्का।

—हानि के साथ कुछ और हानि सही, हिम्मत से काम लेने पर ही बाजी रहेगी।

—जिस व्यक्ति ने झटकों पर झटके खाये हों तो उसकी सहन-शक्ति बढ़ जाती है।

धड़ दोय मन अेक। ६८७४

धड़ दो और मन एक।

—अभिन्न मित्र या प्रेमी-प्रेयसी के शरीर तो दो होते हैं पर मन एक होता है। एक-दूसरे के दुख-में-दुख का अनुभव करते हैं और सुख-में-सुख का अनुभव करते हैं। एक-से सपने देखते हैं।

धड़ पड़ियां री धरती। ६८७५

धड़ देने वालों की धरती है।

—धरती बेरों के भाव मोल नहीं मिलती और न नगीने देकर ही उसे बचाया जा सकता है। देश की धरती को बचाने का बहुत ही मामूली उपाय है— सिर्फ प्राणों की आहुति, मुंड का नैवेद्य।

धड़ां रा खाडा अर खाडां रा धड़ा तौ व्हैता ई आया। ६८७६

टीलों के गड्ढे और गड्ढों के टीले तो होते ही आये हैं।

—सृष्टि के संचालन की खातिर सिर्फ तीन नियम अपरिहार्य हैं। पहिला, परिवर्तन, दूसरा— परिवर्तन और तीसरा—परिवर्तन केवल परिवर्तन। कल जो शिखर पर थे वे आज गहरे गर्त में मिलेंगे और जो आज नीचे दबे पड़े हैं वे कल शिखर पर नजर आएँगे।

धड़ा किणरा भाड़ा राखै, चढ़तां दौरा तौ उतरतां सौरा। ६८७७

टीबे किसका किराया रखें, चढ़ते मुश्किल तो उतरते आसान।

—टीबों पर चढ़ते हुए जितनी तकलीफ होती है, उतरते हुए उतनी ही राहत मिलती है।

—सज्जन या संत-महात्मा किसी का एहसान नहीं रखते, टीबों की नाईं तत्काल उतार देते हैं।

धड़ा री ढाळ अर दौड़ण रौ मन। ६८७८

टीबे की ढलान और दौड़ने का मन।

—किसी के चरित्र की गिरावट का इस उक्ति से बढ़िया विश्लेषण और क्या हो सकता है— कुछ तो उम्र के टीबे की ढलान और कुछ दौड़ने का मन। गिरावट अपरिहार्य है। चाहे

पुरुष हो चाहे स्त्री। चाहे गरीब हो चाहे अमीर। चाहे कुछ भी अपराध या अधःपतन हो, इस उक्ति में सब-कुछ समाहित हो जाता है।

धड़ी रौ माथौ हिलाय दियौ, ढींगै री जंबान कोनीं हिलाई। ६८७९

धड़ी का सिर हिला दिया, ढींगे की जबान नहीं हिलाई।

—कोई व्यक्ति किसी से सहयोग के लिए आये और सहयोग देने वाला मनाही के आशय से पाँच सेर का माथा हिला दे पर टके-सी हलकी जबान से हाँ-ना का उत्तर न दे तब उसे कटाक्ष में यह उक्ति कही जाती है।

—जो व्यक्ति दिल का तो बोदा हो और ऊपर से शिष्टाचार का दिखावा करे उसके लिए।

धड़ूकै अर पोटा ई करै। ६८८०

दहाड़े और गोबर भी करे।

—जिस व्यक्ति का दुहरा चरित्र हो—वक्त पर दहाड़े और मौका मिलने पर भेड़ की तरह मिमियाये।

—जिस व्यक्ति का साँड से स्वभाव मिलता हो, यों तो बादलों की नाईं साँड दहाड़ता है और गोबर भी करता है। दहाड़ना प्रतीक है बहादुरी का। गोबर प्रतीक है—घबराहट या कायरता का।

धड़ूकौ क्यूं के सांड हां, पोटा क्यूं करौ के गवू रा जाया हां। ६८८१

दहाड़ते क्यों हो कि साँड हैं, फिर गोबर क्यों करते हो कि गाय के जाये हैं।

—जो व्यक्ति अपने गुण और अवगुण दोनों का समय पर औचित्य खोजकर अपनी असलियत को छिपाने की चेष्टा करें। साँड के स्वभाव से सीख ग्रहण करते हुए हर कमजोरी का संगत कारण खोज लेते हैं। साँड के दहाड़ने की प्रशंसा सुनकर कहते हैं— दहाड़ेंगे क्यों नहीं, साँड जो हैं। महादेव की सवारी हैं। गोबर करने के लिए उसकी कमजोरी की ओर ध्यान दिलाते हैं तो विनम्रता के साथ जवाब मिलता है—गऊ के जाये हैं, गोबर तो करेंगे ही। मनुष्य-समाज में अधिकांशतया इसी साँड प्रकृति के मनुष्य होते हैं। जिनका दुहरा चरित्र होता है।

—अवसरवादियों की नीति का कोई सिद्धांत नहीं होता।

दे.क.सं.५९५०

पाठा : **तांडौ क्यूं के सांड हां। छेरौ** (पतला गोबर) **क्यूं करौ के गाय रा जाया हां।**

धणियां टाळ किसड़ा घर ? ६८८२

स्वामी के बिना कैसा घर ?

—जिम्मेदार, अधिकृत और अनुभवी स्वामी या मालिक के बिना न घर-परिवार चलता है और न कोई प्रतिष्ठान।

—जिम्मेदार स्वामी को जितनी चिंता व लगन रहती है, वह नौकरों व अन्य पारिवारिक सदस्यों को नहीं रहती।

धणियां टाळ धवळहर सूंना। ६८८३

स्वामी के बिना राजमहल सूने।

धवळ हर = धोळैर = राज प्रासाद।

—सैकड़ों कर्मचारियों के रहते स्वामी या राजा के अभाव में केवल राज प्रासाद ही क्या सारा राज्य ही सूना है। उसके बगैर कौन व्यवस्था की चिंता करे।

—'व्यक्ति' की अपनी गुरुता को अनेदखा नहीं किया जा सकता।

पाठा : **धणी विहूणा धवळहर। धणियां बिना धौळसर सूंना।** विहूणा = विहीन। **धणियां टाळ ढोर सूंना अर माईतां बिना छोरू सूंना। धणियां बिना धन सूंनौ।** धन = वित्त- मवेशी। **धणी टाळ तौ घर सूंना ई होवै।**

धणियां री माथै मेहर है। ६८८४

मालिकों की मेहर है।

—सामंती व्यवस्था के दौरान जब गाँव का ठाकुर या रियासत का राजा जुहार करने वालों का कुशलक्षेम पूछता तो सामने वाला व्यक्ति कोई भी हो जवाब देता—मालिकों की मेहर-मया है। अंदाता की कृपा है। तब मालिक समझ जाते कि सब ठीक-ठाक है। आजकल भी हितैषियों के द्वारा कुशल-क्षेम पूछने पर ऐसा ही जवाब मिलता है— आपकी मेहरबानी है। सामाजिक शिष्टाचार का एक सामान्य उदाहरण।

धणी गोडै जावतां छिनाळ नंह बाजै ।–व.२६६ ६८८५

पति के पास जाने पर छिनाल नहीं कहलाती ।

—सामाजिक स्वीकृति के बिना प्राकृतिक जरूरतों के कार्य भी अवैध कहलाते हैं । पुरुष-नारी का स्वाभाविक व प्राकृतिक मिलन जब तक समाज के द्वारा मान्यता प्राप्त न हो, अवैध या अपराध कहलाता है । पर उसी कर्म को जब सामाजिक मान्यता मिल जाती है तो वह प्रतिष्ठित माना जाता है । मैथुन-कर्म वही है पर पति-पत्नी दुराचारी नहीं कहलाते । किंतु पर-पुरुष और पर-नारी के बीच यही नैसर्गिक कर्म अमर्यादित हो जाता है ।

पाठा : मांटी कनै जातां रुळियार नीं बाजै ।

धणी जतरे धन, धणी गियो ने धन ग्यो ।–भी.४६० ६८८६

स्वामी तब तक धन, स्वामी गया और धन गया ।

—पति के जीवित रहते आमदनी के कई सीगे खुले रहते हैं । उसके गुजरने पर आय के स्रोत बंद हो जाते हैं । बचा हुआ धन खर्च होने में समय नहीं लगता । संयुक्त परिवार में मुखिया अकेला ही नहीं मरता, अपने सभी आश्रितों को मार जाता है । यानी उनका जीवन मृत्यु से अधिक त्रासद हो जाता है ।

धणी जागियौ जणा चोर लाजियौ कांईं ? ६८८७

स्वामी जगा तब चोर शर्मिंदा हुआ क्या ?

—सामान्यतया मनुष्य खुशी में कोई अपराध नहीं करता, मजबूरी में करता है । फिर भी कहीं-न-कहीं दिल की गहराई में अपराध-बोध तो खटकता है । बिना सुराग लगे चुपचाप चोरी का अपकर्म संपन्न हो जाये तो कोई बात नहीं, पर चोरी या किसी अन्य अपराध के बीच पकड़े जाने पर अपराधी शर्मिंदा तो होता ही है । पेशेवर अपराधी संभवतया शर्मिंदा नहीं भी होते । उनकी आत्मा मर जाती है ।

—पति के जगने पर अवैध-सहवास में लिप्त पत्नी और उसका यार तनिक सकुचाये कि नहीं ?

—आत्मा के जगने पर अपराधी को तनिक ग्लानि हुई कि नहीं ?

—यह प्रश्न कोई मामूली नहीं, बड़ा अहम् प्रश्न है, जिसका उत्तर आसान नहीं है ।

धणी तौ धींग इज धारणौ । ६८८८

स्वामी तो धाकड़ ही धारण करना चाहिए ।

—निर्बल स्वामी न तो अपनी रक्षा कर सकता है और न अपने आश्रितों की। इसलिए स्वामी तो तगड़ा ही खोजना चाहिए ताकि हर मुसीबत की बेला रक्षा कर सके और जब-तब हर जरूरत पर सहयोग कर सके।

—सहारा या खूँटा तो मजबूत ही खोजना चाहिए।

पाठा : धणी धारणौ तौ धींग ई।

धणी तौ फुतरका जित्ती ई नीं गिणै अर म्हारौ नांव सब्रागण। ६८८९

स्वामी तो तिनके जितनी भी नहीं मानता और मेरा नाम सुहागिन।

—इकतरफा संबंधों के लिए यह कहावत मुख्य रूप से कही जाती है, चाहे पति-पत्नियों को लक्ष्य करके हो, चाहे नेता और कार्यकर्ताओं को लक्ष्य करके हो, चाहे सेठ और मजदूरों को लेकर हो। मातहत तो स्वामी के नाम पर फूले नहीं समाते और मालिक उनकी रंचमात्र भी परवाह नहीं करता। शायद नाम तक भी याद न हो।

—जिन श्रीमंतों के लिए हम गर्व का अनुभव करें और श्रीमंत सपने में ध्यान न दें।

धणी देवर दोनूं सासू रा जाया, भलांई कुण ई व्हौ। ६८९०

पति देवर दोनों ही सास के पूत, भले कोई भी हो।

—जिस औरत का देवर के साथ प्रेम-संबंध हो उसके लिए दूसरी औरतें उपहास में कहती हैं—क्या फर्क पड़ता है, दोनों ही एक सास के ही जाये हैं।

—कई जातियों में पति के दिवंगत होने पर देवर के साथ ब्याहने की प्रथा है। कहावत में इस ओर भी इशारा है।

—स्वयं पत्नी भी अपराध-बोध महसूस न करना चाहे तो इस बात से अपने मन को समझा लेती है कि पति और देवर में क्या फर्क है, दोनों एक ही माँ के बेटे हैं।

पाठा : धणी जेठ दोनूं सासू रा जाया।

धणी धणियकाणी नी जोड़ी है।—भी.४६१ ६८९१

पति पत्नी की जोड़ी है।

—अकेला न पति पूर्ण है और न अकेली स्त्री ही पूर्ण है। विभिन्न इकाइयों के युग्म से दोनों पूर्णता प्राप्त करते हैं। परस्पर अन्योन्याश्रित संबंधों की निर्भरता पर ही वे संपूर्ण बनते हैं। इसलिए जिस-किसी समाज में स्त्री को हीन समझना अज्ञानता का ही द्योतक है।

पाठा : धणी-धणियांणी री जोड़ ।

धणी धणियांणी राजी तौ कांई करै काजी ! ६८९२

पति-पत्नी राजी तो क्या करे काजी !

संदर्भ-कथा : एक जाट और मियाँ गहरे मित्र थे । भाइयों के उनमान रहते थे । एक दाँत रोटी टूटती थी । जब मियाँ की शादी हुई तो चौधरी हाथ में लट्ठ लेकर सबसे आगे । अन्य बाराती भी खुश हुए । किसी ने बुरा नहीं माना । यह तब की बात है जब दोनों जातियों के नेताओं ने उनके संबंधों में जहर नहीं घोला था । बाकी सब तो समय पर ठीक-ठाक हो गया । पर काजी ने अपनी असलियत जाहिर कर दी । किसी कारण या अकारण नाराज होने पर वह निकाह पढ़ाने नहीं आया । सभी बाराती उदास हो गये । चौधरी को मित्र की यह अचीती आफत सहन नहीं हुई । जमीन पर लट्ठ पटक कर बोला, 'इस में मुँह उतारने की क्या बात है ? मैं शादी करवा देता हूँ ।' मित्र राजी हो गया तो किसी ने भी एतराज नहीं किया । धार्मिक कट्टरता ने अपना काला जाल नहीं बिछाया था । सभी घेरा डालकर मजे से देखते रहे । चौधरी ने दूल्हे-दुलहन को पास-पास बिठाया और अपनी समझ के अनुसार निकाह पढ़ने लगा—

मियाँ बीबी राजी तौ कांई करै काजी ।

ढकणी में दही निकाह होई सही ।

धणी-धणियाणी राजी तौ कांई करै काजी ।

—दो पक्ष परस्पर रजामंद हो जाएँ तो बीच में हस्तक्षेप करना व्यर्थ है ।

धणी नै सूझै ढकणी मांय । ६८९३

स्वामी को सूझे ढक्कन में ।

—पेटू पति पर पत्नी का कटाक्ष कि उसे खाने के अलावा अन्य किसी काम-काज की चिंता नहीं है ।

धणी नै हळ रौ आंचौ अर धणियांणी नै बणाव रौ आंचौ । ६८९४

पति को हल की उतावली और पत्नी को सिंगार की उतावली ।

—समय पर बीज बोने के लिए पति को हल लेकर खेत में जल्दी पहुँचने की उतावली । मदद के लिए पत्नी को भी साथ ले जाने की जल्दबाजी । पर पत्नी को अपने सिंगार की उतावली ।

—जब दो व्यक्तियों को केवल अपने ही लक्ष्य का ध्यान हो और दूसरे पक्ष का तनिक भी खयाल न हो, तब यह कहावत प्रयुक्त होती है।

धणी नो कायदो धणियाणी ने हात मांये ।– भी.४६२ ६८९५

पति का मान रखना पत्नी के हाथ में ।

संदर्भ-कथा : किसी ठाकुर-ठकुरानी में एक खास विवाद रहता था। ठाकुर का कहना था कि घर की सारी इज्जत आबरू, मान-मर्यादा पति के हाथ में है। ठकुरानी का कहना था कि पति के हाथ में नहीं, पत्नी के हाथ में है। ठाकुर नशे में होता तो यह विवाद छेड़े बिना नहीं रहता। पत्नी बिना किसी नशे-पते के मुस्कराकर अपनी बात रखती। एक दिन संयोग ऐसा बना कि बड़े कुँअर की सगाई के लिए बिना किसी पूर्व सूचना के वधु-पक्ष के सरदार आ गये। इच्छा और हैसियत से भी ज्यादा टीका-तिलक दिया। बहुमूल्य गहने चढ़ाये। ठाकुर ने भी उनकी मर्यादा के योग्य कामदार को भोजन की छूट दे दी। तरह-तरह के पकवान बने। माँस और पुलाव। खीर-मालपूए, बदाम का हलुआ, मोतीचूर के लड्डू और मांगलिक लापसी। ठाकुर तो आदेश फरमाकर समधियों के साथ चौबारे का दारू पीने बैठ गया। आस-पास के जागीरदार भी आमंत्रित थे। बड़ी शानदार महफिल जमी।

उधर ठकुरानी के मन में और ही महफिल काम कर रही थी। नौकरों को खूब अच्छी तरह सिखा दिया कि क्या करना है। उन्होंने दो तरह के भोजन की व्यवस्था की। एक तो निहायत गरीबों का खाना। पीतल की थालियाँ। चने व जौ के मोटे टिक्कड़। प्याज, राब और चटनी। खाने का आदेश होते ही सबसे पहले सबके सामने पीतल की थालियों वाला खाना। एक बार उस खाने पर सबकी नजर पड़ते ही एक साथ वे थालियाँ उठ जाएँ और देखते-देखते दूसरे शाही भोजन के थाल सबके सामने नजर आने लगे। नौकरों ने ठकुरानी की हिदायत के अनुसार बड़ी तत्परता से सारा काम संपन्न किया। पहले खाने पर नजर पड़ते ही सभी सरदारों ने नाक-भौंह सिकोड़े। उनके नाक में बल पड़ गये। ठाकुर का मुँह काला पड़ गया। आँखों की रंगत बदलते ही जादू की नाईं झटपट दूसरे थाल चमकने लगे। पकवानों की सुगंध हवा में महक उठी। अतिथियों ने सोचा कि ऐसी ही कोई रस्म होगी। पहिले के खाने की कोई याद नहीं रही। सभी ने खाना तो अपनी भूख के अनुसार ही खाया, पर प्रशंसा इतनी हुई कि ठाकुर की खुशी का पार नहीं रहा। मन-ही-मन अच्छी तरह समझ गया कि पति का मान-सम्मान सब पत्नी के हाथ में है। तत्पश्चात् उसने इस बाबत कभी विवाद नहीं किया।

—घर की इज्जत-बेइज्जत, ख्याति या बदनामी, बहबूदी या दरिद्रता सब घरवाली के हाथ में है। पति तो फकत निमित्त मात्र है।

पाठा : धणी रौ कुरब धणियांणी रै पसाव।

धणी बिना कांईं ढोर। ६८९६

स्वामी के बिना क्या ढोर-डंगर।

—संरक्षक ही अपने आश्रितों का आदर करता है। उसके बिना अन्यत्र कहीं आदर नहीं मिल सकता।

—जिसका कोई योग्य आश्रयदाता न हो, उसकी दुर्दशा उस मवेशी के समान हो जाती है, जिसका कोई मालिक नहीं होता।

पाठा : धणी टाळ किसा ढोर!

धणी बिना गीत सूना तौ सिरदार बिना फौज निकांमी। ६८९७

पति के बगैर गीत सूने तो सरदार के बिना फौज निकम्मी।

—स्वामी या पति घर में न हो तो सारे रंग-राग फीके हैं। घर भूतों का डेरा जैसा लगता है। इसी तरह सरदार या सेनापति के बिना फौज व्यर्थ है। फौज स्वयं तो कुछ निर्णय लेती नहीं, वह तो केवल आदेश की पालना करती है। सेनापति के बिना कौन आदेश दे?

धणी मांनै सो धणियांणी। ६८९८

मालिक माने सो मालकिन।

—यह कहावत बहु-विवाह प्रथा की ओर प्राचीन काल में ले जाती है। मुसलमानों में आज भी बहु-पत्नी विवाह की प्रथा है। यों तो सभी औरतों का विवाह के पश्चात् समान अधिकार होता है। पर पति जिसे माने वही सुहागिन है। उसका मान सबसे अधिक बढ़ जाता है।

—पत्नी का मान-सम्मान पति की इच्छा पर।

—मंत्री या अधिकारी जिसे होशियार मानें वही योग्य कर्मचारी।

धणी मारनै छींयां राळै। ६८९९

पति मारकर छाया में डाले।

दे.क.सं.९५१

धणी री आंख्यां इमी बरसै। ६९००

स्वामी की आँखों से अमृत बरसता है।

—सच्चा स्वामी या संरक्षक वही जो अपने आश्रितों को अमृत भरी आँखों से देखे—क्या घर के सभी छोटे-बड़े सदस्यों को, क्या मवेशियों को और क्या खेत की फसल को।

—अकसर गाँव में सुना जाता है कि खेत का मालिक खड़ी फसल को देखता है तो वह बढ़ने लगती है। उसकी आँखों से अमृत जो बरसता है। अपनत्व, लगाव या प्रेम से वनस्पति भी प्रभावित होती है।

धणी री कांच दाबण गई, आ पड़ी आपरी। ६९०१

पति की काँच दबवाने गई तो आ पड़ी अपनी।

काँच = संस्कृत कक्ष, प्राकृत कच्छ। गुदेंद्रिय का वह भीतरी भाग जो कभी-कभार शौच जाते समय बाहर निकल आता है।

—एक विपदा को दूर करने की चेष्टा में कोई दूसरा अनर्थ अचीता आ पड़े तब।

—एक के बाद एक अप्रत्याशित संकट आ पड़े तब।

धणी रे धणी म्हारा निबळा धणी, थूं बैठ्यां म्हारै चिंता घणी। ६९०२

भर्तार रे भर्तार मेरे निर्बल भर्तार, तेरे बैठे मुझे चिंता अपार।

—निठल्ले पति को पत्नी लाचार होकर उलाहना देती है कि यों उसके हाथ-पर-हाथ धरे बैठने से दिन-ब-दिन चिंता बढ़ रही है।

—अकर्मण्य व्यक्ति का न घर में आदर और न बाहर।

धणी रौ ऊंठ कुहाड़ै नाथौ।—व.१८३ ६९०३

मालिक का ऊँट कुल्हाड़े से नाथो।

नाथणौ = बैल, भैंसा आदि की नाक छेदकर रस्सी डालना ताकि उन पर नियंत्रण किया जा सके या उनको वश में किया जा सके।

—नौकर ऊपर से भले ही विरोध न करे पर वह मन-ही-मन स्वामी का अहित ही सोचता है। उसके मवेशी या उपकरणों के बिगड़ जाने की परवाह नहीं करता। यों नकेल की खातिर

ऊँट के नथुनों में पतली-चिकनी लकड़ी से छेद किये जाते हैं। पर नौकर को भला मालिक के ऊँट की क्यों चिंता होने लगी, उसके नथुनों में भले कुल्हाड़ी ही से छेद करो।

—यों प्रत्यक्ष रूप में नौकर स्वामीभक्त नजर आते हैं, पर उनके अवचेतन में मालिक के अमंगल की ही बात जमी रहती है।

धणी रौ तौ बाड़ौ ई खा़ली व्हैगौ, पण चोरां रै तौ केरड़ी ई पांती नीं आई। ६९०४

मालिक का तो बाड़ा ही खाली हो गया पर चोरों के तो एक बछिया भी हिस्से में नहीं आई।

—जब कई व्यक्ति मिलकर किसी गरीब के घर चोरी या लूट खसोट करें, उसे पूरी आर्थिक हानि पहुँचाएँ पर उन्हें कुछ भी विशेष लाभ न हो तब यह कहावत प्रयुक्त होती है।

—गरीब को सताने से कुछ भी हाथ नहीं लगता।

धणी रौ धणी कुण? ६९०५

मालिक का मालिक कौन?

—बेकसूर व्यक्ति को बड़े आदमियों द्वारा सताया जाने पर पीड़ित के दिल से आह निकलती है कि स्वामी का स्वामी कौन जो उसकी मनमानी को रोक सके।

—भला तानाशाही का विरोध कौन कर सकता है?

धणी रौ माल जावै अर वौ ई चोर कहावै। ६९०६

मालिक का माल जाये और वही चोर कहाये।

—अंधेर नगरी और चौपट राजा का ऐसा ही विचित्र न्याय होता है कि चोरी की फरियाद करने वाले मालिक को ही चोर करार दिया जाय। उसका धन भी गया और बदनामी भी हुई।

—जिस राज्य की न्याय-व्यवस्था बिल्कुल ही विश्वस्त न हो।

धणी रौ माल तौ ढक्योड़ौ, लारै किसा धाड़ा पड़ै। ६९०७

पति का माल तो ढका हुआ है और पीछे कोई डाका पड़ने से रहा।

संदर्भ : गाँव में अमूमन औरतें निर्जन स्थान पर राह के पास ही निपटने बैठ जाती हैं। सामने तो पर्दा कर लेती हैं और पीछे से निपट उघाड़ी ही रहती हैं। शहर से आये अध्यापक सवेरे

घूमने निकलते हैं। औरतों की कतार से कोई औरत संकोच करते सावधान करती है कि कुछ आदमी आ रहे हैं। मुँह नीचा किये औरतें सोचती हैं कि यह तो रोज का ढर्रा है। कोई मुँहफट औरत उपेक्षा का भाव दरसाते कहती है—कहाँ, ये तो बेचारे मास्टर हैं। चुपचाप निकल जाएँगे। यों भी पति का माल तो ढका हुआ है और पीछे कोई डाका पड़ने से रहा।

—गाँव की सहज सामान्य औरतों में वर्जनाओं का ज्यादा झंझट नहीं रहता। अपने मन की भाँति उन्हें सभी का मन साफ नजर आता है।

धणी हुंस्यार अैड़ौ के बेवणी में मूतै। ६९०८

पति होशियार ऐसा कि बेवनी में मूते।

बेवणी = संस्कृत बेपनी = बेवनी। चूल्हे के सामने छोटी पाली का स्थान जहाँ राख इकट्ठी होती है।

—पति होशियार ऐसा कि पेशाब करने के लिये ही बाहर नहीं निकलता, चूल्हे की बेवनी में मूतता है ताकि राख में गीलापन जल्दी सूख जाय और बदबू भी न आये।

—पति की सीधी बुराई न करके ब्याज-स्तुति में निंदा का परिहासत्मक पुट लगा है।

—एक लाक्षणिक अर्थ यह भी है कि पति ऐसा चरित्रवान कि पत्नी के अलावा कहीं बाहर सहवास की इच्छा नहीं रखता।

पाठा: **धणी अैड़ौ चतुर के चूल्हा में मूतै।**

धतूरा रा गुण महादेव जांणै। ६९०९

धतूरे के गुण महादेव जानें।

—ऐसा कोई नशा नहीं जो भोले महादेव से छूटा हो—भाँग, गाँजा, धतूरा, अफीम, सुल्फा, इत्यादि सब।

—किसी बड़े व्यक्ति की बुराइयों का स्पष्ट हवाला देने में झिझक हो तब इस कहावत के सहारे बचाव हो जाता है कि हमारी ऐसी परख कहाँ, धतूरे के गुण तो महादेव ही जानते हैं।

धन अंटै, विद्या कंठै। ६९१०

धन अंट में और विद्या कंठ में।

—मौके पर अंटी में सहज उपलब्ध धन ही काम आता है। उसी तरह मौके पर कंठ में बसी विद्या ही काम आती है। घर में लाखों की माया किस काम की। दिसावर में तो अंट में

खोंसी नकदी ही काम आती है। घर पर धरे शास्त्र धरे ही रह जाते हैं, कंठ में स्थित विद्या ही कठिन समय में काम आती है।

—तत्काल उपयोग में न आये वह धन और वह ज्ञान व्यर्थ है।

धन आयां मिनख आपरी औकात बिसर जावै। ६९११

धन के नशे में मनुष्य अपनी औकात भूल जाता है।

—ज्यों-ज्यों धन या माया की वृद्धि होती है त्यों-त्यों मनुष्य की इनसानियत घटने लगती है।

—तुलसी बाबा भी यही कह गये हैं—प्रभुता पाहि कहा मद नाहिं।

—कवि बिहारी का भी यही कहना है—

कनक, कनक तै सौ गुनी, मादकता इदकाय।

वा खायै बौरात है, आ पायै बौराय॥

कनक = धतूरा, सोना। दोनों के नशे में इतना ही फर्क है कि धतूरा खाने से नशा आता है और सोने का नशा पाने मात्र से चढ़ जाता है।

धन उडण बिचै निरधनता आछी। ६९१२

धन उड़ने की बजाय निर्धनता अच्छी।

—धन नष्ट होने की बजाय गरीबी कहीं बेहतर है, इसलिए कि गरीबी में धन के आधिक्य की पुरानी याद तो परेशान नहीं करती। पर धन के व्यर्थ खर्चने पर उसकी याद कहाँ मिटती है?

पाठा: धन उजड़ै जिण सूं गरीबी चोखी।

धन किणरै साथै चालै? ६९१३

धन किसके साथ चलता है?

—जिस धन को पाने के लिए जीवन-पर्यंत उसका पीछा करना पड़ता है, वह मरने पर एक कदम भी साथ नहीं चलता। विज्ञान ने जाने क्या-क्या चमत्कार किये हैं किंतु मृत्यु के बाद सोने का एक तुस भी साथ ले जाने का आविष्कार नहीं हुआ। फिर भी उसी धन के पीछे मनुष्य मरने-मारने को उद्यत रहता है।

धन जाय जिणरौ ईमांन जाय। ६९१४

धन जाये उसका ईमान जाये।

—इस मानवीय संसार में मनुष्य की सबसे बड़ी ताकत, प्रतिष्ठा और मर्यादा सब धन में निहित हैं। उसके जाने पर सब-कुछ चला जाता है। ताकत चली जाती है, प्रतिष्ठा और मर्यादा बिछुड़ जाती है। तब उस असहाय अवस्था में मनुष्य का ईमान क्योंकर बचा रह सकता है। जिसके पास धन है, उसीके पास ईमान है।

धन, जोबन अर माया, तीन दिनां री छाया। ६९१५

धन, जोबन और माया, तीन दिन की छाया।

—हजारों-हजार बरसों की विकास-यात्रा में मनुष्य यह निहायत छोटी-सी बात भी नहीं सीख पाया कि धन, यौवन और माया सिर्फ तीन दिन की छाया है। और इसी छाया को पाने के लिए उसने कितने-कितने प्रपंच रचे हैं। और वह इन्हीं के पीछे पागल है।

पाठा : धन जोबन माया तीन दाड़ां नी पामणी।— भी.४६४

धन जोबन माया तीन दिन की पाहुनी।

धन जोबन किणरै पांवणा! ६९१६

धन जोबन किसके पाहुन!

—धन जोबन किसी के भी स्थायी मेहमान बनकर नहीं रह सकते। रात के अँधेरे में आते हैं और दिन के उजाले में चले जाते हैं। न राजा इन्हें रोक सकता है, न डकैत, न चोर और मायापति। इनके चकमे से अब तक कोई नहीं बचा और न आगे भी कोई बचेगा। ऐसी अनुगूँज निसृत होती है इन लोक-मंत्रों में। कोई सुनने वाला चाहिए।

धन तौ धणियां रौ, गुवाळ रै हाथ फगत गेडी। ६९१७

धन तो मालिकों का है, ग्वाले के हाथ में फकत लाठी है।

—ग्वाला सारे गाँव की गाएँ चराता है। तरह-तरह के मूल्यवान मवेशियों की रखवाली करता है। शाम को सभी मवेशी अपने-अपने खूँटों पर चले जाते हैं और ग्वाला अपने हाथ में केवल लाठी थामे अपने घर लौट आता है। यदि वह भ्रम से मालिकों के मवेशियों को अपना समझने की भूल कर बैठे तो उसका जीवन दूभर हो जाय। वह जानता है कि रखवाली

के जोर से वह मवेशियों पर अधिकार नहीं जता सकता । पर अधिकांश मनुष्य ऐसा समझने की भूल करते आये हैं और करते रहेंगे कि 'लाठी के जोर पर' उन्होंने जिस माया की जीवन-भर रखवाली की है, वह उनकी ही है ।

दे.क.सं.३५१९

धन दायजा बहग्या अर [illegible]ातांकूटा रैग्या । ६९१८

धन दहेज बह गया और कलह-फसाद रह गया ।

—बहू ओछे स्वभाव की और झगड़ालू हो । रात-दिन घर में लड़ती-झगड़ती हो, उसके लिए कि वह अपने साथ दहेज वगैरह जो भी सामग्री लाई थी, वह तो समाप्त हुई । और वह घर में अशांति फैलाने को पीछे रह गई ।

मि.क.सं.६७३९

धन दूजा कनै अर अकल आप में घणी दीसै । ६९१९

धन दूसरों के पास और अक्ल आप में अधिक दिखती है ।

—यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि दूसरों में अपनी बजाय धन का अनुमान ज्यादा नजर आता है । पर अक्ल या बुद्धि का मसला अलग है वह दूसरों की अपेक्षा अपने में अधिक लगती है ।

—कोई भी व्यक्ति अपने अलावा बाकी सब को मूर्ख समझता है ।

धन धणन्या नूं हूं जो धणन्यां हाते धाग्यो ।– भी.४६५ ६९२०

धन मालिक का था जो मालिक के साथ ही चला गया ।

—जिस परिवार के मुखिया की मृत्यु पर घर की सारी आर्थिक स्थिति लड़खड़ा जाय । लेकिन उसके रहते किसी चीज की कमी नहीं थी । घरवाले इस उक्ति से संतोष ग्रहण करते हैं ।

धन धणियां रौ लागै अर कळपै कोठारी । ६९२१

धन मालिक का खर्च हो और कोठारी का दिल जले ।

दे.क.सं.६४४१

धन ने धणी धोरय्यां हाथे हैं ।– भी.४६६ ६९२२

संपत्ति और स्वामी दोनों ही बैलों पर आश्रित हैं ।

—यांत्रिक उपकरणों के पहिले खेती का अधिकांश काम बैलों के द्वारा ही संपन्न होता था। बैल न होने पर स्वामी न तो खेती कर पाता था और न घर में फसल ही आती थी। बैलों के कंधों पर ही परिवार के निर्वाह का भार रहता था।

—साधनों के अभाव में कोई भी काम संपन्न नहीं हो सकता।

—गऊ-माता के पुत्रों का बखान इस कहावत में दर्ज है, पर अब धीरे-धीरे उनका प्रभाव घटने लगा है।

पाठा : धन अर धणी धौळां रै पांण।

धन बिचै धरम भलौ। ६९२३

धन की बजाय धर्म भला।

—ऋषि-मुनियों के आप्त-वचन और शास्त्रो में धन की बजाय धर्म की महिमा का बखान बहुत ज्यादा है। उनकी दृष्टि में धर्म तो साथ चलता है और धन यहीं पड़ा रह जाता है। पर शास्त्रों का आदेश मनुष्य ने कभी नहीं माना, वह तो धन ही को धर्म और ईश्वर समझता रहा है। फिर भी गिनती के मनुष्यों पर इस तरह की उक्तियों का प्रभाव निःसंदेह पड़ता है।•

धन बिना किसी मरोड़। ६९२४

धन के बिना कैसी अक्खड़।

—धन या संपत्ति निष्क्रिय नहीं है, उसका प्रभाव जाने-अजाने मनुष्य के व्यक्तित्व पर पड़ता ही है। धन के अभाव में मनुष्य ढीला दिखने लगता है। घर में धन का उजाला होते ही चेहरों पर चमक आ जाती है। चाल में अकड़ दिखने लगती है।

—मनुष्य के सारे कार्य-कलाप धन के अभाव में मंद पड़ जाते हैं और उसकी मंदी उसके आचरण में प्रकट होने लगती है।

धन भेळौ धन जावै, रुपिया गोडै रुपियौ आवै। ६९२५

धन के साथ धन चलता है, रुपये के पास रुपया आता है।

धन = मवेशी, पशु।

—एक ही नस्ल के पशु साथ चलते हैं। क्या बकरी, क्या भेड़, क्या गाय-भैंस और क्या ऊँट। अपनी प्रजाति सबको सोहती है। रुपये और संपत्ति की भी यही प्रवृत्ति है। जहाँ उसका आधिक्य नजर आता है, वे उसी ओर खिंचते हैं। अभाव की ओर मुँह नहीं करते।

धन माथै धाड़ा पड़ै । ६९२६

धन पर ही डाका पड़ता है ।

—धन यानी माल पर ही चुंगी, जगात और कर लगते हैं । माल पर चुंगी या कर वसूल करना एक प्रकार का धावा ही है । जिसके पास कुछ भी माल नहीं, वह इस प्रकार के धावों से मुक्त होता है ।

—जहाँ धन है वहीं चोरी होती है, डाका पड़ता है । गरीब को यह खतरा भी नहीं ।

—यदि कोई व्यक्ति माल या मवेशी बेचने जाय और ग्राहक उन्हें महँगे बताये तब व्यापारी कहता है कि पहिले माल तो देखो, जैसा माल होगा वैसा मोल भी होगा । कोई डाका तो नहीं डालता, माल के पैसे तो वसूल करूँगा ही ।

धनय्याओ मारे राम धानूज मिळवहों ।– भी.४६७ ६९२७

अनाज खाने वाले को ईश्वर अनाज ही देता है ।

—ईश्वर को सभी प्राणी-जगत का पूरा ध्यान है । जिस प्राणी का जो भक्ष्य है, वह उसकी पूर्ति करता है । मांसाहारी को मांस, घास वालों को घास और अनाज वालों को अनाज । उसके राज में कोई गड़बड़ नहीं चलती ।

धन राज रौ अर जीव रांम रौ । ६९२८

धन राज्य का और प्राण ईश्वर के ।

—अपना कहने को न धन अपना है और न प्राण । धन राज्य का है और प्राण ईश्वर के हैं । जब राजा की इच्छा होगी धन छीन लेगा । और जब ईश्वर की इच्छा होगी, प्राण झपट लेगा ।

—मनुष्य को 'अपने' का मोह त्यागकर सुकर्मों में भी प्रवृत्त होना चाहिए, मंत्र का संदेश यही है । ये लोकोक्तियाँ किसी भी शास्त्र के मंत्रों से कम नहीं हैं ।

धनवंत खळ खायै तौ मांणस कहै भोळाइयौ थकौ खावै, ६९२९
भूखौ खावै तौ कहै भूखां मरतौ खायै छै ।– व.११४

धनवान खली खाये तो लोग कहते हैं, शौक से खा रहा है,
गरीब खाये तो कहते हैं भूख के मारे खा रहा है ।

—मानव-समाज में दुहरे मापदंड के बिना काम ही नहीं चलता। जब जहाँ जैसी जरूरत हो वैसा मापदंड लगा दिया जाता है। अमीरों के लिए मापदंड अलग हैं, गरीबों के लिए अलग हैं। सवर्णों के मापदंड अलग हैं, दलितों के अलग हैं। अमीर खली या प्याज-रोटी खाये तो उनका शौक माना जाता है और गरीब बासी खाना खाये तो भूख की मजबूरी मानी जाती है। बड़े लोग पराई औरतों के साथ सहवास करते हैं तो वह उनका दिल बहलाना है, लीला है। गरीब के लिए दुराचार और अपराध है। तभी तुलसी बाबा ने बड़े अनुभव की बात कही है—समरथ को नंह दोस गुसाँई।

धनवंती कीजै के ढोर। ६९३०

धनवंती बनाना या ढोर।

—अदृष्ट ईश्वर से कैसी मर्मांतक कामना है कि तुम्हें यदि मनुष्य योनि ही देनी है तो धनवान के रूप में देना अन्यथा ढोर ही बनाना। निर्धन की जिंदगी तो ढोर से कहीं ज्यादा बदतर है।

—गरीब मनुष्य का जीवन व्यर्थ है।

धनवंती नै फगत पईसां री भूख। ६९३१

धनवान को केवल पैसों की भूख।

—यों तो पैसे का महत्त्व मनुष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए है। ज़रूरत की चीज बिना पैसे मिलते ही नहीं। यदि हवा पैसों से मिलती तो गरीबों का जीवन ही दूभर हो जाता। आबादी की सारी समस्या ही हल हो जाती। पर ईश्वर ने यह नियामत खूब सोच-विचार कर ही बख्शी है। इसके विपरीत आदमी की समझ का कमाल कि अपने विक्रय के माध्यम पैसे को ही उसने साध्य मान लिया। पेट की भूख तो दो रोटी से शांत हो जाती है। पर पैसे की भूख संसार की सारी संपत्ति से भी शांत नहीं होती। पैसे के पीछे धनवान को न रोटियों की परवाह और न विश्राम की परवाह—रात दिन पैसों की भूख के मारे वह अन्य शारीरिक जरूरतों को भूल ही गया है। इस लोक-मंत्र का यही मर्म है।

धनवंती रै सै नैड़ा। ६९३२

धनवान के सभी नजदीक।

—खून का रिश्ता और मित्रता का मोह छोड़कर सभी मनुष्य धनवान से संपर्क साधना चाहते हैं। उसके नजदीक रहना चाहते हैं—प्रताड़ना सहकर भी।

—धनवान पैसों के बल पर सबको खरीद सकता है, जो रिश्तेदारों की अपेक्षा अधिक सेवा-बंदगी कर सकते हैं। हाथ खुला हो तो सारा संसार गुलाम है।

धनवांन नै नरक में ई सुरग। ६९३३

धनवान को नर्क में भी स्वर्ग है।

—नर्क या स्वर्ग तो मरने के बाद ही उपलब्ध होता है। धनवान के मरने पर उसके पीछे इतना खर्च व दान-पुण्य होता है और लोग उसकी इतनी प्रशंसा करते हैं, सारे अवगुणों को नजर-अंदाज करके उसके बड़प्पन का बखान करते हैं कि स्वर्ग भी उसके लिए छोटा हो जाता है। मृत्यु के बाद जिसकी इतनी ख्याति हो, भला उसे धर्मराज के दूत स्वर्ग के अलावा कहाँ ले जाएँगे!

—यों इस संसार में ही नर्क और स्वर्ग है। अभावों में कष्ट का जीवन जीने वाले के लिए नर्क और पैसे के बल पर ऐश्वर्य भोगने वाले के लिए स्वर्ग—न गाने-बजाने की कमी, न परियों की कमी और न सुरापान की कमी।

धनवांन रै कांटौ चुभियां हजार दौड़ै। ६९३४

धनवान के काँटा चुभने पर हजार दौड़ते हैं।

—धनवान के पाँव में मामूली काँटा चुभ जाय या चिट्टू अँगुली का जरा कच्चा नाखून भी कट जाय, उसकी सुख-साता पूछने के लिए कैसे भी व्यस्त आदमी के पास समय-ही-समय है। कुशल-क्षेम पूछने वालों का ताँता बढ़ता ही रहता है। पर किसी दुर्घटना में गरीब की हड्डियों का कचूमर भी निकल जाय तो उसकी ओर किसी को झाँकने की भी फुर्सत नहीं। काम की मार के आगे समय ही किसको मिलता है।

पाठा: धनवंती रै कांटौ भाग्यौ सुख बूझै संसार, निरधन डूंगर सूं गुड़ग्यौ कोई नीं बूझै जाय।

धनवांन रौ के कंजूस अर गरीब रौ के दातार? ६९३५

धनवान क्या तो कंजूस और गरीब क्या उदार?

—धनवान की यह अपनी मौज है कि वह कंजूसी करे या किसी का उपकार करे। मनःस्थिति तो कभी एक-सी रहती नहीं। जब मौज हो वह दानवीर कर्ण बन सकता है और जब भी

इच्छा हो कंजूस का अभिनय कर सकता है। पर गरीब के पास तो यह सुविधा सपने में भी उपलब्ध नहीं। देने के लिए पास में पैसा ही नहीं है तो वह जन्मजात कंजूस ही है। उसकी इच्छा अनिच्छा कुछ भी माने नहीं रखती।

धपावू दूध क्यूं नीं पीवै ? ६९३६

पेट भरकर दूध क्यों नहीं पीते ?

संदर्भ-कथा : मारवाड़ में बादलों की कोई प्रतिष्ठा नहीं। इच्छा हो तो बरसें वरना बिन बरसे ही रूठकर चले जाएँ। अकाल पड़ता ही रहता है। अकाल पड़ने पर मारवाड़ के बाशिंदे अपने मवेशी लेकर मालवे की शरण में चले जाते हैं। एक बार ऐसा संयोग हुआ कि अकाल के मारे किसान अपने मवेशी लेकर मालवा की राह चल रहे थे। एक कुँवर अपने गढ़ के झरोखे में बैठा गोधूलि की वेला वह सुंदर दृश्य देख रहा था। झीनी-झीनी खेह उड़ रही थी। डूबते सूरज का हलका-हलका उजास उस महीन धूल से झाँक रहा था। दारू का घूँट लेकर उसने पास बैठी दासी से पूछा, 'ये सब कहाँ जा रहे हैं ?' दासी ने आह भरते कहा, 'मालवे', 'क्यों ?' 'खाने के लिए अनाज नहीं है।' 'अनाज नहीं है तो क्या हुआ ? इतनी सारी गाएँ हैं, पेट भरकर दूध क्यों नहीं पीते ? मूर्ख कहीं के !' दासी कुँअर की समझदारी पर थोड़ी मुस्कराकर चुप हो गई।

—जिसके पास मुफ्त का माल सड़ रहा हो, वह दूसरों की पीड़ा नहीं समझ सकता।

—जिसके पाँव में कभी बिवाई नहीं फटी, वह दूसरों के घावों की कसक क्या समझे ?

धमीड़ा सहै जिकौ ई जागीर भोगै। ६९३७

धमाके सहें वे ही जागीर भोगते हैं।

—जो तोप-बंदूकों के धमाके अपने शरीर पर झेलता है, वही जागीर का अधिकारी है।

—दुनिया में संघर्ष के बिना कुछ भी हासिल नहीं होता।

—कष्ट उठाने वाले को ही सुख नसीब होता है।

—पसीना बहाने वाले के खेत में ही फसल लहलहाती है।

धम्मड़-धम्मड़ पीसै अर जाती रा पग दीसै। ६९३८

धम्मड़-धम्मड़ पीसे और जाने की सूरत दीसे।

दीसै = दिखे, दीखे।

—जो औरत घर छोड़कर जाने का मानस बना लेती है, उसका गृहस्थ के कामों में मन नहीं लगता। जल्दी-जल्दी पीसती है। बरतन-बासन खड़खड़ाती है और कच्ची-पक्की रोटियाँ बनाती है। यह सब इस बात का द्योतक है कि उसका मन वर्तमान परिस्थितियों से भर गया है, वह अन्यत्र जाना चाहती है।

—आदमी के कार्यों से उसकी मनःस्थिति का पता चल जाता है।

धर कूचां, धर मजलां। ६९३९

कूच-दर-कूच, मंजिल-दर-मंजिल।

—अपनी राह पर लगातार चलते रहो, जब तक कामना फलीभूत न हो।

—अभियान के लिए प्रोत्साहन।

—लोक-कथाओं में किसी नायक द्वारा अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कठिनाइयों की परवाह न करके प्रयाण करते समय इस उक्ति को बार-बार दोहराया जाता है।

धरत वीरत री छांय। ६९४०

धरती वीरता की छाँह।

—होश फाख्ता होने पर कहा जाता है कि पाँवों के नीचे से धरती खिसक गई। पर वही धरती वीर-बहादुरों पर छाया करती है, साथ-साथ चलती है।

—धरती का असली भोग करने वाले बहादुर ही हैं।

धरती आंतरै सरक, छैल पांव धरैला अे। ६९४१

धरती दूर खिसक, छैल पाँव पसारेंगे।

—छैल-छबीलों का उपहास; जैसे वे धरती पर पाँव ही नहीं धरते हवा में आकाश की राह चलते हैं। धरती उनकी नजर के सामने भी नहीं टिखनी चाहिए।

—जो व्यक्ति आपे से बाहर आ जाता है, उसके लिए।

धरती जाया किसा धरती पड़्या इज रैवै। ६९४२

धरती पर जन्मे धरती पर पड़े थोड़े ही रहते हैं।

—विपदाओं के दलदल में धँसे परिवार को सांत्वना देने के लिए यह उक्ति काम में ली जाती है कि धरती पर जन्मे बच्चे धरती पर थोड़े ही पड़े रहते हैं। कल पाँवों पर दौड़ने लगेंगे। उत्कर्ष की सीमाएँ छूने लगेंगे। परिवर्तन के हिंडोले पर कौन कहाँ पहुँच जाएगा, पता नहीं चलता।

पाठा : धरत्यां पड़्योड़ौ धरती माथै थोड़ौ इज रैवै। धरती पड़्यां धरती को रैवै नीं।

धरती नै जमदूतां रौ कांई भार ? ६९४३

धरती को यमदूतों का क्या भार ?

—यमदूत कोई सशरीर पाँवों पर चलकर तो आते नहीं, जो उनका भार धरती को महसूस हो। और यों वे जीवित प्राणों को ही हरकर ले जाते हैं, धरती को तो मामूली ठेस भी नहीं पहुँचती, फिर उनसे कैसा खतरा ! धरती तो निर्विघ्न एवं निर्विकार ही रहती है।

—इस उक्ति में थोड़ा-बहुत इशारा वेश्यावृत्ति पर भी है कि उस में लिप्त औरतों को दुष्ट-कामुक व्यक्तियों का क्या भार ?

धरती पड़्या आकास चाटै। ६९४४

धरती पर सोये आकाश चाटते हैं।

—अत्यधिक चंट व चालाक व्यक्ति के लिए कि वह धरती पर भले ही पड़ा रहे, उसकी जीभ इतनी लंबी है कि आकाश को चाट ले।

—बढ़-चढ़कर लंबी-चौड़ी बातें बनाने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष। वह एक पल तो धरती की बात करता है और दूसरे ही पल आकाश को अपनी जबान में लपेट लेता है।

दे.क.सं.४९०४

धरती बीज नीं चोरै। ६९४५

धरती बीज नहीं चोरती।

—धरती पर पड़ा बीज कभी-न-कभी तो उगता ही है, किसी भी सूरत में वह बीज नहीं चुराती।

—धरती पर चाहे जितना अन्याय-अत्याचार फैल जाय, पाप-अपराध बढ़ जाय, फिर भी कहीं-न-कहीं नेक, निष्ठावान, बहादुर, ईमानदार और सत्यवादी इनसान बचे रहते हैं। उनका बीज नष्ट नहीं होता।

मि.क.सं.४९०७

पाठा : धरती कदै ई बीज कोनीं गिटै ।

धरती माते भाटा जतरा देव कीदूं, पण कई उपाय ने लागी ।–भी.२९० ६९४६

धरती पर पत्थर जितने देव माने, पर कोई उपाय नहीं हुआ ।

—दो ही स्थितियों में यह उक्ति चरितार्थ होती है । बाँझ औरत ने पृथ्वी के हर पत्थर को देवता मानकर पूजा, पर उसकी कोख नहीं फलने से सभी देवी-देवता व्यर्थ हैं । पत्थर तो दरकिनार धरती के कण-कण को देवता मानकर पूजा करो, मृत्यु टल नहीं सकती । मरने वाला तो कूच कर ही जाता है, तैंतीस करोड़ देवताओं की घेराबंदी भी उसे रोक नहीं सकती ।

धरती माथै धन घणौ, कमावण रौ घाटौ । ६९४७

धरती पर धन अपार, कमाई करने का घाटा ।

—धरती के भीतर और धरती के बाहर बेशुमार धन बिखरा है, कमाई करने की सूझ, हिम्मत और निष्ठा के अभाव में वह हाथ नहीं लगता ।

—कमाने वाले का हौसला हो तो धरती पर ऐसी क्या चीज है सो प्राप्त नहीं की जा सकती ।

धरती माथै सांप नीं व्है तौ गोगौ कुण धोकै ? ६९४८

धरती पर साँप न हो तो गुग्गा पीर कौन धोके ?

धोकणौ = धोकना, प्रणाम करना, पूजना ।

गोगौ = प्रसिद्ध गोगादेव चौहान । आज भी साँपों के देवता की नाईं इनकी पूजा होती है ।

—धरती पर साँप के जहर का खतरा न हो तो गोगा की पूजा कौन करे ?

—कष्ट पाने और मरने का डर न हो तो दुष्टों की अभ्यर्थना कौन करे ?

धरती माथै सै कंचन ई कंचन होवै तौ कंचन, काच अर कथीर रौ भेद कीकर जांणीजतौ । ६९४९

धरती पर सब सोना-ही-सोना हो तो सोना, काच और कथीर का भेद क्योंकर खुलता ।

—सोने की कमी के कारण आज उसका इतना मूल्य है वरना काच कथीर जितना ही वह सस्ता होता ।

—धूर्त, दुष्ट और समाज-कंटकों की बहुलता के कारण ही समाज में गिनती के नेक और चरित्रवान विभूतियों की पूछ है।

—थोड़ा जितना ही मीठा।

धरती रा बासग मरग्या जणां गोहीड़ां रै टीका आवै। ६९५०

धरती पर वासुकि नाग नहीं रहे तभी गोहिड़ों के टीके आते हैं।

गोहीड़ौ = गोह = गोइड़ौ = छिपकली की जाति का एक जंगली जंतु जो नेवले से कुछ बड़ा होता है। यह बहुत विषैला होता है।

टीकौ = विवाह से पूर्व मँगनी करते समय कन्या पक्ष वालों की ओर से वर पक्ष वालों को दी जाने वाली नकदी, जेवर, पशु आदि। आजकल यह कुप्रथा हजारों की नकदी से ऊपर चली गई— सवर्णों में। कन्याओं का विवाह तक मुश्किल हो रहा है।

—सत्पुरुषों की कमी के परिणाम-स्वरूप दुष्ट व जालिमों की अधिक पूछ होने पर इस उक्ति का प्रयोग होता है।

धरती विहार दै तौ ऊभीज मांहै पैस जावूं। ६९५१

धरती फट जाय तो खड़ी-खड़ी ही भीतर गुम हो जाऊँ।

—मर्यादा पुरुषोत्तम राम वाल्मीकि आश्रम में अपने ही पुत्रों लव-कुश से अंततः पराजित हुए। सीता किसी भी तरह अयोध्या लौटने को तैयार नहीं हुई। दोनों ही पुत्र लव-कुश पिता के साथ चले गये। सीता धरती से ही जन्मी थी। धरती की कोख में ही वापस समाने के लिए प्रार्थना की तो धरती का कलेजा फटा और वह उसमें अंतर्धान हो गई।

—आज भी सीता की नाईं दुख भोगने वाली नारियाँ धरती के फट जाने की प्रार्थना करती हैं। पर वह सुनी-अनसुनी कर देती है। न करे तो सारी औरतें ही दुख के मारे धरती में विलुप्त हो जाएँ। धरती अपनी गोद में जगह नहीं देती तो बाहर ही तड़पती रहती हैं।

धरती सूतां पूठै कांई सांकड़ैलौ? ६९५२

धरती पर सोने के बाद क्या तंगी?

दे.क.सं.४९०६

पाठा : धरत्यां सूवै सो क्यूं सांकड़ेलौ भुगतै।

धरम करतां आवै हांणि, तौ ही न छोडीजै धरम री वांणि।–व.१३२ ६९५३

धर्म करते आये हानि, तब भी न छूटे धर्म की बानि।

—धर्म की राह सुकर्म करते हुए कई परेशानियाँ और कष्ट उठाने पड़ें तो कोई बात नहीं, धर्म की लगन हरगिज नहीं छोड़नी चाहिए।

—अधर्म की राह पर चलते राज्य की अपेक्षा धर्म की राह पर मौत भी मिले तो उसे गले लगाना बेहतर है।

पाठा : धरम करतां होवै हांण, तौ ई नीं छोडीजै धरम री बांण।

धरम करतां धाड़ पड़ी। ६९५४

धर्म करते डाका पड़ा।

—सुकर्म करते बुराई हाथ लगे तब।

—उजले कर्म करने पर कलंक का टीका लगे तब।

धरम कर्‌यां करम नीं फूटै। ६९५५

धर्म करने पर भाग्य नहीं फूटता।

—धर्म की राह चलने वाले से भाग्य कभी विमुख नहीं होता।

—धर्म करने वाले के कर्म कभी नहीं बिगड़ते।

धरम कियां धन नीं घटै। ६९५६

धर्म करने से धन नहीं घटता।

—प्रतिदिन दान-पुण्य करने से संपत्ति क्षीण नहीं होती।

—संचित किये हुए धन की सार्थकता यही है कि दूसरों के लिए धर्मार्थ काम आये।

औघड़ कबीर का पूरा दोहा इस प्रकार है :

चिड़ी चोंच भर ले गई, नदी न घटियौ नीर।

धरम कियां धन ना घटै, कह गयै दास कबीर॥

धरम-धक्कौ। ६९५७

धर्म-धक्का।

—विश्वास दिलाकर घात करना।

—धर्म की ओट में धोखा करना।

धरम धणियां रौ। ६९५८

धर्म स्वामी का।

—धर्म-कर्म उसका जो असली कर्ता हो।

—किसी के भी माध्यम से पुण्य हो, उसका फल बिचौलियों को नहीं, धन देने वाले को ही मिलता है।

—जब किसी बिचौलिये के माध्यम से पुण्य के लिए धन खर्च होता है तब लोगों की दुआएँ सुनकर बिचौलिया कहता है—यह धर्म-पुण्य स्वामी का है, मेरा नहीं।

धरम धोतियां में, पाप पोतियां में। ६९५९

धर्म धोतियों में, पाप पोतियों में।

पोतियौ = साफा। पगड़ी।

—मानवीय संसार में प्रजनन की जड़ धोतियों के भीतर छिपी है, उसीसे नये जन्म की सृष्टि होती है, इससे बढ़कर धर्म का निमित्त और कौन हो सकता है? और इसके विपरीत पाप-कर्म की गठरी माथे पर उठानी पड़ती है। इसलिए पाप साफों के भीतर छिपा रहता है।

—बहुत से बदमिजाज धर्म की रट सुनते ही बालिश्त का इशारा करके कहते हैं— धर्म? कहाँ है धर्म? वह तो यहाँ छिपा है। और पाप छिपा है साफे के भीतर। सारे कुकर्मों की खान मस्तिष्क ही है।

धरम में आयौ अर धाड़ै में गियौ। ६९६०

धर्म से आया और डाके में गया।

—किसी पंडे या पुजारी का संचित धन चोरी में चला जाय तब!

—सत्कर्म से कमाया धन मुकदमे में खर्च हो जाय जब।

—दान में दिया हुआ धन चोरी हो जाय तब।

धरम रा कांम में ढील कैड़ी! ६९६१

धर्म के काम में कैसी ढील!

—क्षण-भंगुर जीवन का कोई पता नहीं, अगला साँस आये कि नहीं, इसलिए धर्म या पुण्य कर्म में एक क्षण की भी ढील नहीं करनी चाहिए।

धरमराज री कचेड़ियां सूंक कोनीं चालै। ६९६२

धर्मराज की कचहरी में रिश्वत नहीं चलती।

—यदि चलती हो तो सारे उद्योगपति यमदूतों को खूब रिश्वत देकर अपने बदले गरीबों को मारकर स्वयं अमर हो जाते। या सभी स्वर्ग चले जाते। पर वहाँ अब तक भ्रष्टाचार की छूत नहीं फैली है।

धरम री गाय रा दांत नीं जोईजै। ६९६३

दान-पुण्य में दी गाय के दाँत नहीं देखे जाते।

—मुफ्त का माल मिले वही अच्छा। उस में शिकवा-शिकायत करने की गुंजाइश नहीं रहती।

—जिस चीज का मूल्य चुकाना पड़ता है, उसी की परवाह की जाती है। मुफ्त के माल की उतनी परवाह नहीं की जाती।

मे.क.सं.६४१८

धरम री जड़ सदावंत हरी। ६९६४

धर्म की जड़ सदैव हरी।

संदर्भ-कथा : एक बामन बड़ा विद्वान था। विद्वान था इसीलिए गरीब था। बच्चों को वेद, उपनिषद, गीता, महाभारत और रामायण पढ़ाने का शौक था। उसकी ख्याति सुनकर आस-पास के गाँवों से कई विद्यार्थी एकत्रित हो गये। एक छोटा-मोटा गुरुकुल-सा खुल गया। बामनी भी कभी-कभार छोटे बच्चों को व्याकरण पढ़ा देती। पर कन्या बाप से भी दो कदम आगे थी। और सुंदर भी शकुंतला से कम नहीं थी। जब तक बामन के पुश्तैनी गहने थे वह गुरुकुल का जस-तस खर्च चलाता रहा। आखिर विदुषी कन्या ने बहुत आग्रह किया तो अध-बूढ़ बामन साहस जुटाकर राज-दरबार में पहुँचा। राजा ने थोड़ी-बहुत उसकी चरचा सुन रखी थी। गुरुकुल के खर्च की समस्या सुनकर वह अदेर प्रतिदिन एक मोहर देने के लिए राजी हो गया। राजा भोला होते हुए भी दयालु था। कहा—आपको आने की जरूरत नहीं, मैं किसी भी सैनिक के साथ मोहर भिजवा दूँगा। पर बामन उस प्रस्ताव के लिए राजी नहीं हुआ। प्रतिवाद करते

हुए कहा—राजमहल अधिक दूर नहीं है। आऊँगा तो मैं खुद ही। एक मोहर के लिए इतना विहार तो करना ही चाहिए। सूरज की पहली किरण के साथ ही मैं दरबार में उपस्थित हो जाऊँगा। आपके अलावा किसी के हाथ से मोहर ग्रहण नहीं करूँगा। आप नहीं मिले तो उसी क्षण लौट जाऊँगा।

राजा ने अब तक किसी के भी मुँह से ऐसी स्पष्ट और अकृत्रिम बात नहीं सुनी थी। चाटुकारिता से धीरे-धीरे उबकाई होने लगी थी। बामन के मुँह की सच्ची बात सुनी तो सहर्ष मान गया। मुस्कराते कहा—उठता तो देर से ही हूँ। पर विद्यादान से बढ़कर खजाने का और क्या महत्त्व हो सकता है। आपके बहाने सूर्य भगवान के दर्शन भी करता रहूँगा। आपने मुझे सत्कर्म का अच्छा मौका दिया। आभारी हूँ। मेरी हथेली से आप मोहर उठाएँगे। मेरा हाथ ही नीचे रहेगा। इतना कहकर उसने हथेली आगे बढ़ाई। मोहर उठाते समय बामन की आँखें भर आईं। रुँधे कंठ से राजा को आशीर्वाद दिया—चिरंजीव रहो। धर्म की जड़ सदावंत हरी रहती है। कभी सूखती नहीं। राजा बामन से भी अधिक खुश हुआ। सच्चे मन का आशीर्वाद उसने पहली बार ही सुना था।

वह धार्मिक अनुष्ठान वर्ष भर तक चलता रहा। बामन सूर्य की पहली किरण का अभिनंदन करने के निमित्त राजमहल पहुँच जाता और राजा उसके पहिले ही तैयार मिलता। राजा के हाथ से हर बार मोहर उठाते समय बामन की आँखें भर आतीं। अगले ही क्षण उसके भीगे गले से आशीर्वाद के वही वचन निकलते—चिरंजीव रहो। धर्म की जड़ सदैव हरी रहती है। कभी सूखती नहीं। राजा के नितनेम में कभी ढील नहीं हुई। उसके स्वभाव में धीरे-धीरे काफी परिवर्तन होने लगा। और उस परिवर्तन से दरबारियों में बड़ी खलबली मचने लगी। सूर्य की देखादेखी राजा की नजर राज के काम-काजों पर दौड़ने लगी। कई काले कारनामों का पता चला। राजा के भोलेपन का फायदा उठाकर सभी दरबारियों ने बड़ी लूट मचा रखी थी। सजा या दंड देने की बजाय राजा ने अधिकांश काम अपने हाथ में ले लिये। रानी को भी काफी जिम्मेवारियाँ सौंपी। राजा के मन-मस्तिष्क में कई बातों का आलोक जगमगाने लगा। बामन को एक की बजाय इक्कीस मोहरें देने की बात की तो पंडित ने साफ मना कर दिया। राजा के बहुत निहोरे करने पर बड़ी मुश्किल से पाँच मोहरों की खातिर अपने मन को यह कहकर समझाया कि विद्यार्थियों के साफ-सुथरे आवास की उचित व्यवस्था हो जाएगी। दीवान के साथ मिलकर दरबारी तो एक मोहर भी बंद करवाने की मंत्रणा सोच रहे थे और

भोले राजा ने एक की बजाय पाँच मोहरों की दक्षिणा शुरू कर दी। पंडितजी का पाखंड भी बड़ा झीना है। आसानी से कोई पकड़ नहीं सकता।

यों एक-एक दिन करते पाँच मोहरों की दक्षिणा को भी तीन महीने गुजर गये। दरबारियों का जीना हराम हो गया। आखिर दीवान ने हिम्मत करके राजा से अरदास की अंदाता, सदैव हरी रहने वाली धर्म की जड़ को एक बार देखने का कष्ट तो फरमाएँ। क्या पता कहीं वह सूखने नहीं लगी हो ? राजा अदेर भभक उठा। कहा—पंडितजी की सत्संग से जीने का आनंद पहली बार मिला और तुम उस में रोड़ा अटकाने की बातें सोच रहे हो। उनके विरुद्ध मैं एक अक्षर भी सुनने को तैयार नहीं।

दीवान ने तब भी हिम्मत नहीं हारी, कहा— भला देवता जैसे पंडितजी का विरोध हम क्यों करने लगे ! मैं तो केवल धर्म की जड़ हरी हो रही है कि नहीं, इतनी भर अरदास करना चाहता हूँ, ताकि धर्म को पानी और अधिक देने की जरूरत है कि नहीं, सही पता चल जाय। वे तो संकोच के मारे कुछ कह नहीं पाते। पर हमें तो उनका भला सोचना चाहिए। गुरुकुल भी बनाना है तो अंदाता की मर्यादा के योग्य बनवाएँ कि दुनिया देखती रह जाए। दीवान का यह दाँव पार पड़ गया। राजा कुछ सोचने लगा तो रानी ने अदेर दीवान के सुझाव का समर्थन करते कहा—हाँ, यह तो और भी अच्छा है। इतने पहुँचवान पंडितजी की बात क्योंकर झूठी हो सकती है ! यदि धर्म की जड़ हरी नजर आये तो वे मानें-न-मानें गुरुकुल की इमारत शानदार बनवाएँगे। अपने राज्य की गरिमा के मुताबिक।

दीवान ने मुक्त कंठ से राजा-रानी का जयगान किया। अब राजा के लिए एक-एक पल बिताना भी भारी पड़ रहा था। ब्यालू करके जल्दी ही रानी के साथ रंग-महल में चला गया। सवेरे जल्दी ही उठ गया। राजा-रानी दोनों सूर्य की अविकल प्रतीक्षा करने लगे। आखिर इतनी देरी की वजह क्या है ? वजह उनकी बेचैनी के अलावा कुछ भी नहीं थी।

समय पर ही सूर्य की पहली किरण फूटी और बामन हाजिर। रानी राजा से अधिक चतुर थी। बामन को पूछा—क्यों, पंडितजी आप रोज आशीर्वाद देते हैं तो अब तक राजाजी के धर्म की जड़ बहुत-कुछ हरी हो गई होगी ?

'जरूर हुई होगी, इस में क्या संदेह।' इस बार राजा ने कहा, 'हमने भी यही सोचा था। आप जैसे विद्वान पंडित की बात क्योंकर झूठी हो सकती है ? आपकी आज्ञा हो तो रानी और दीवान को साथ लेकर मैं भी हरी जड़ को देखना चाहता हूँ। कुछ कमी हो तो।' पंडित

से धीरज नहीं रखा गया तो बीच ही में बोला, 'आपने इतना धर्म किया है तो मेरा दृढ़ विश्वास है कि उसकी जड़ जरूर हरी हुई होगी। पर पुण्य के फल को देखना शास्त्रों में निषिद्ध है। आप न देखें तभी श्रेयस्कर है।' राजा-रानी का उत्साह और अधिक बढ़ गया। उन्होंने बहुत निहोरे किये तो बामन मान गया। कहा, 'जब आपकी इतनी ही इच्छा है तो दक्षिणा की पाँच मोहरें वापस आकर ही लूँगा। जल्दी से चार घोड़े मँगवाइये। आप सब की ऐसी ही इच्छा है तो मैं क्यों मना करूँ?'

यह दृश्य तो एकदम नया होगा! दुनिया के किसी राजा ने अब तक धर्म की जड़ हरी होते नहीं देखी होगी। पंडित का घोड़ा सबसे आगे। वह दक्षिण दिशा की ओर हवा की नाईं उड़ रहा था। पीछे राजा, फिर रानी और अंत में दीवान। बड़ी मुश्किल से बामन के पीछे-पीछे दौड़ रहे थे। दौड़ते-दौड़ते रास्ते में एक भीम तालाब आया। बामन ने मुड़कर कहा, 'निश्चिंत होकर मेरे पीछे-पीछे चले आइये।' इतना कहकर उसने अपना घोड़ा पानी के भीतर डाल दिया। घोड़े की कनौती डूबने के कुछ देर बाद सबने पलकें खोलीं तो वे पाताल-लोक के मुख्य स्वर्णद्वार में प्रवेश कर गये। भाँति-भाँति के पेड़-पौधे और अगणित फूल-ही-फूल। उस विलक्षण महक से राजा का रोम-रोम कलियों की नाईं खिल उठा। ऐसी सौरभ का तो सपना भी मृत्यु लोक में संभव नहीं था। राजा-रानी की मुस्कराहट देखते ही सारे फूल एक साथ मुस्करा उठे। बामन के सिवाय सबके आश्चर्य का पार नहीं था। माली-मालन और उनकी बेटी हर पेड़-पौधे की जड़ में अमृत पिला रहे थे। रानी ने जिज्ञासावश पूछा तो बेटी ने स्मित मुस्कान के साथ कहा, 'मृत्युलोक में एक राजा प्रतिदिन गुरुकुल के विद्यार्थियों की खातिर एक बामन को पाँच मोहरें देता है। यह सब उसी का प्रभाव है। वरना सब पेड़-पौधे सूखे थे।' दीवान को अपने किये पर खूब पश्चाताप हुआ। दाँव उलटा पड़ गया पर राजा-रानी को इतनी खुशी कभी नहीं हुई थी।

कुछ और आगे गये तो सोने का एक विशाल मंदिर बन रहा था। एक-सौ आठ कारीगर और एक-सौ आठ ही मजदूर काम कर रहे थे। पूछा तो पता चला कि मृत्युलोक के एक राजा की मूर्ति यहाँ स्थापित होगी। दुनिया में सर्वोपरि दान विद्या का ही है। वह दानी राजा प्रतिदिन एक पंडित को गुरुकुल के छात्रावास की खातिर पाँच स्वर्ण मुद्राएँ देता है। उसी का पुण्य फलीभूत हो रहा है। मंदिर जब बनकर संपूर्ण हो तब एक बार और पधारियेगा। राजा को अपने यश की ऐसी कल्पना रंचमात्र भी नहीं थी। गर्व के मारे उसका सर चकराने लगा तो

पंडित के सामने हाथ जोड़कर कहने लगा, 'बस, इससे ज्यादा अपनी कीर्ति पचाने का मुझ में माद्दा नहीं है। वापस लौट चलो। दीवान के कहने से मेरी बुद्धि मारी गई।'

पंडित तो कहते ही मुड़ गया। तालाब के बाहर आते ही उन्होंने पलकें उघाड़ीं तो उनके घोड़े मृत्युलोक की धरती पर सरपट भाग रहे थे। दरबार में आते ही उत्सुक दरबारियों ने सदावंत हरी रहने वाली जड़ के बारे में जानना चाहा तो राजा-रानी से कुछ बोला नहीं गया। दीवान ने अपनी थूक सनी जबान से जैसा-तैसा वर्णन किया तो किसे भी विश्वास नहीं हुआ। पर राजा के सामने प्रतिवाद करने का साहस भला किसका होता!

दीवान को अपनी सूझबूझ पर पूरा भरोसा था। राजा के ब्यालू करते ही हाथ जोड़कर उनके सामने अरदास की, 'आपकी समझ का तो मैं सात जन्म में भी मुकाबला नहीं कर सकता। फिर भी जो छोटी-मोटी बात सूझी सो आपको बताये बिना मुझे चैन नहीं मिलेगा। ऐसे पहुँचवान पंडित को रोज चक्कर कटवाने से बड़ा अन्याय और कुछ नहीं हो सकता। आपकी आज्ञा हो तो सूरज उगने से पहले उन्हें पाँच की बजाय एक सौ आठ मोहरें मैं दे आया करूँ। पैदल चलने का इतना पुण्य तो मुझे भी अर्जित करने का मौका दीजिए।' राजा ने दीवान के सुझाव में कुछ संशोधन करते कहा, 'तुम्हारे साथ मैं भी प्रतिदिन वहाँ चलूँगा। ऐसा न हो कि हमारे पहुँचने के पहिले पंडितजी रवाना हो जाएँ।'

राजा की आज्ञा के उपरांत कैसी ढील! राजा तो दीवान से भी पहिले तैयार खड़ा था। उधर पंडित अपने नितनेम के उद्देश्य मे रवाना होने ही लगा था कि राजा और दीवान पर उसकी नजर पड़ी। अंतर्धान होते अँधेरे के बावजूद वह दोनों को ठीक तरह पहचान नहीं सका। कहीं सपना तो नहीं है। आँखें मसलकर देखा। कृष्ण-पक्ष की सप्तमी का चाँद क्षितिज को छूने वाला ही था। फिर भी उस मद्धिम चाँदनी में पंडित ने अच्छी तरह पहिचान लिया कि हैं तो राजा और दीवान ही। आश्चर्य से पूछा, 'आप?' तब राजा ने उनके आने का लक्ष्य अच्छी तरह विस्तार से समझाया। पंडित के गले वह बात उतरी नहीं। सहज भाव से कहा, 'अपनी कन्या को पूछे बिना मैं कुछ भी जवाब नहीं दे सकता। सूर्य-भगवान को जल चढ़ाने से पहिले वह अपनी पूजा संपन्न कर लेगी। तब उसी के सामने सारी बात वापस दोहराइएगा। वह मान लेगी तो मुझे भी स्वीकार है, अन्यथा नहीं।'

राजा को बुरा तो अवश्य लगा पर बाहर कुछ भी प्रकट नहीं किया। राजा और दीवान विद्यार्थियों से बातचीत करने लगे। प्रत्येक विद्यार्थी ने राजा और दीवान के चरणों में सिर

नवाकर प्रणाम किया । सूर्य की पहली किरण फूटते ही ब्राह्मण कन्या ने अपना नितनेम संपन्न किया और पिता के साथ दोनों अतिथियों से मिलने आई । हाथ जोड़कर राजा को प्रणाम किया तो ऐसा लगा जैसे प्रत्यक्ष ऊषा ही आकाश से उतरकर उसके सामने सिर झुका रही हो । ऐसे अपूर्व सौंदर्य की तो उसने कल्पना भी नहीं की थी । अपना आपा ही बिसर गया । दुष्यंत की तरह वह ब्राह्मण कन्या की ओर एकटक देखता रहा । इस सौंदर्य की तुलना में पाताल लोक का वह दिव्य नजारा कुछ भी नहीं था । अधीर स्वर में कहा, 'पंडितजी तुम्हें सुनकर बड़ी खुशी होगी कि आज से ही गुरुकुल के भवन की संपूर्ण जिम्मेवारी मेरी है । राज्य का सारा खजाना भी खाली हो जाय तो चिंता नहीं । आपकी कन्या से विवाह करने के बाद ही मैं राजमहल लौटूँगा ।'

बामन को इस विपत्ति की आशंका थी । दीवान की ओर देखकर बोला, 'क्यों दीवानजी, क्षत्रिय राजा से ब्राह्मण कन्या का पाणिग्रहण निषिद्ध है न ? आप इन्हें समझाइये, यह अधर्म है, पाप है ।'

दीवान तो सब समझकर ही आया था । बेहिचक उत्तर दिया, 'राजा जिस कन्या पर मुग्ध हो जाय, उस कन्या की कोई जाति नहीं होती । अपने नीतिशास्त्रों में इसका विधान है ।'

बेटी ने सोचा कि उसने बात नहीं सँभाली तो फिर किसी से भी सँभलेगी नहीं । तनिक आगे बढ़कर बोली, 'आप सही कह रहे हैं । मैं शास्त्रों के विधान की अवश्य मर्यादा रखूँगी । पर उसके पहिले मैं आपके साथ चलकर धर्म की हरी जड़ को देखना चाहूँगी । बाबा कभी झूठ नहीं बोलते । पर उन्होंने जिस अद्भुत नजारे का वर्णन किया, मुझे विश्वास नहीं होता । आपके संग देखकर विश्वास करना चाहती हूँ । फिर आप जैसा कहेंगे, वही करूँगी । मेरे बाबा मेरी बात कभी नहीं टालते ।'

दीवान को कुछ आज्ञा देने के पहिले राजा के होंठ तनिक खुले ही थे कि ब्राह्मण कन्या ने कहा, 'नहीं, घोड़ों की जरूरत नहीं है । मैं तालाब को यहीं बुला लूँगी । देखिये, यह वही तालाब है न ?' राजा और दीवान हाँ कहें उसके पहिले ही उसने कहा, 'अब शुभ कार्य में देर मत कीजिए । राजा से ब्याह होना किसी भी कन्या के सौभाग्य की बात होगी, इतना कहकर वह तालाब की ओर तेजी से चली । राजा और दीवान को भी उससे कम उतावली नहीं थी । वे भी साथ हो लिए । पिता को जड़वत् एक ही ठौर खड़े देखा तो बेटी ने हाथ का इशारा करते कहा, 'आप पीछे क्यों खड़े रह गये ? यदि वैसा नजारा नहीं दिखा तो मैं किसे उलाहना दूँगी ।' तब पंडित भी मन मारकर रवाना हो गया ।

तालाब में प्रवेश करने के बाद पलकें उघाड़ते ही राजा और दीवान ने जो भयावह नजारा देखा तो वे दहशत के मारे थर-थर काँपने लगे। हरियाली का कहीं दूर-दूर तक नामोनिशान नहीं था। ठौर-ठौर अजगर, साँप, गोह और बिच्छू-ही-बिच्छू बिलबिला रहे थे। जगह-जगह गंदगी के मारे बदबू भभक रही थी। राजा और दीवान का बुरा हाल हुआ। तेजी से आगे बढ़े तो स्वर्ण-महल पत्थर के खंडहरों का ढेर बना हुआ था। माली-मालिन और उसकी कन्या मुँह उतारे हुए उस घिनौने घूरे की ओर देख रहे थे। बामन की बेटी ने पूछा तो उन्होंने आह भरते कहा, 'मृत्युलोक के उसी राजा ने पंडित की कन्या से विवाह करने की अवैध और निकृष्ट मंशा जाहिर की तो पहले का सारा नजारा इस रूप में बदल गया। अब उस राजा के लिए नर्क में भी ठौर नहीं है।'

राजा का सारा मोह भंग हो गया। ब्राह्मण के पाँव पकड़कर उसने खूब चिरौरी की पर वह गुरुकुल के लिए उस घृणित राजा से कुछ भी सहयोग लेने को तैयार नहीं हुआ।

—सद्क्रियाओं की ओर अग्रसर करने के लिए ही इस कहावत का प्रमुख उद्देश्य है।

—दूसरी प्रच्छन्न ध्वनि यह भी है कि अधर्म और अन्याय की जड़ अंततः सूखकर ही रहती है।

पाठा : धरम री जड़ तौ ऊंडी पंयाळ में व्है।

धरम रौ धरम, करम रौ करम। ६९६५

धर्म का धर्म, कर्म का कर्म।

—जिस स्वार्थ के काम में परमार्थ भी शामिल हो। जैसे गाय की सेवा से घर में दूध, दही, मक्खन और छाछ की कमी नहीं रहती और साथ-हो-साथ गऊ-सेवा का पुण्य भी मिल जाता है।

धरम सिरै करम। ६९६६

धर्म श्रेष्ठ कर्म।

—मनुष्य की प्राकृतिक वृत्तियाँ उसे अपकर्म की ओर खींचती रहती हैं। इसलिए भौतिक लालसाओं से बचने के लिए धर्म, पुण्य और परोपकार के लिए लोक-जीवन में इतनी उक्तियाँ है। आदमी सुधरे-न-सुधरे नसीहत का सूत्र तो कायम रहना चाहिए।

धरमी धरम करै अर पापी पेट कूटै। ६९६७

धर्मी धर्म करे और पापी पेट कूटे।

कूटणौ = पीटना।

—अपनी-अपनी समझ और अपना-अपना काम है। भले और दातार मानुस कठिनाइयों से अर्जित किये धन को दान-पुण्य और धार्मिक कार्यों में खुशी से व्यय करना चाहते हैं। और दुष्टात्मा खुद तो कुछ देता नहीं, दूसरों को देते देखकर भी हाय-तोबा मचाता है।

धर मोची रौ मोची। ६९६८

धर मोची का मोची।

संदर्भ-कथा : एक मोची चमड़े के घृणित काम से उकताकर आत्महत्या के बारे में सोचने लगा कि उसे काशी-करवत का ध्यान आया। इस घिनौने काम से मुक्ति भी मिल जाएगी और मोक्ष-प्राप्ति भी आसानी से हो जाएगी। यदि घड़ी भर के कष्ट से मोक्ष मिल जाय तो और क्या चाहिए। सो वह दृढ़ निश्चय करके काशी जाने के लिए उद्‌यत हो गया। वहाँ पहुँचते ही पंडों ने उससे असलियत जाननी चाही कि वह क्यों काशी-करवत लेना चाहता है। तब उसने अपने घृणित धंधे की बुराई करते कहा, 'चमड़े की बदबू सूँघते हुए जीवन बिताने की अपेक्षा मैंने काशी-करवत लेने का फैसला किया है।' उसकी इच्छा के खिलाफ पंडों को कुछ भी अन्य फैसला लेने का अधिकार नहीं था। पर सिर से पाँवों तक करवत चलाने के पहिले हर किसी की मंशा पूछने का उन्हें अधिकार है। सो उसके सिर पर करवत धरते पंडों ने उसकी अंतिम इच्छा जानने के लिए पूछा। उसके आधे प्राण तो करवत के नुकीले दाँतों पर नजर पड़ते ही निकल गये थे। करवत के स्पर्श मात्र से वह पीपल के पत्ते की तरह काँप उठा। दाँत भींचकर सिसकारी भरते कहा, 'मोची बनना चाहता हूँ। पंडों ने उसे दुत्कारते कहा, 'वाह ! क्या बढ़िया मंशा दरसाई है—धर मोची का मोची।'

—अवसर मिलने पर भी जो व्यक्ति अपना लाभ नहीं उठा सके।

धरौ ठावा, पावौ ठावा। ६९६९

धरो सँभाल, पाओ तत्काल।

—सलीके से काम करने की नसीहत कि किसी भी चीज को सँभालकर उचित जगह पर रखने से वह अदेर मिल जाती है।

—बोहरा सोच-समझकर कर्ज देगा तो ब्याज-सहित वापस बिना बाधा के प्राप्त कर सकेगा।

धव चीकणा ज्यां ईं कवाड़ा भोटा। ६९७०

धव चिकना और कुल्हाड़ी भोथरी।

—धव की लकड़ी कठिनाई से कटती है—चिकनी और सख्त होने के कारण। तिस पर कुल्हाड़ी भोथरी हो तो और भी मुश्किल।

दे.क.सं.१६८३

धवळा धाड़ि के धाड़ि तोनै, मोनै जिकौ ले जासी, सो घणा जतन करसी।–व.२१९ ६९७१

हे बैल ! डकैत आये कि डकैत तो तुम्हारे लिए हैं, मुझे तो जो भी ले जाएगा, वह बड़े जतन से रखेगा। चरायेगा।

—बैल और मालिक के बीच क्या ही लाजवाब संवाद हैं। घर में डकैतों का खतरा जानकर मालिक ने बैलों को सावधान करना चाहा। पर बैलों ने डकैतों के खतरे की कुछ भी परवाह नहीं की। मजे में जुगाली करते कहा, 'डकैत आये तो हमें क्या तकलीफ ! घाटा तो तुम्हें पड़ेगा। हमें तो जो ले जाएगा वह तुम्हारी तरह पूरा काम लेगा और घास खिलाएगा। बाँटा खिलाएगा।'

—बिल्कुल मंथरा वाला ही कथन है—कोउ न्रप होय हमैं कहा हानि।

पाठा : धौळा वार आई के जोखौ धणियां नै।

धां - धी

धांणी मांगता परा हुवौ । ६९७२

आखिर धानी माँगते हो जाओगे ।

धांणी = धानी = आग से तप्त की हुई बालू में सेंकी हुई जौ । अकिंचन खाद्य ।

—अनर्थ करने वालों को शाप के निमित्त दी जाने वाली उक्ति कि आखिर अन्याय का फल अच्छा नहीं होता । धानी फाँकते नजर आओगे । सारी रईसी मिट जाएगी ।

धांन खावां धूड़ नीं खावां । ६९७३

धान खाते हैं कोई धूल तो नहीं खाते ।

धांन = अनाज ।

—सीधी खुलासा बात न कहकर जो उलटी-सीधी बात समझाना चाहे तब सामने वाला व्यक्ति कहता है कि हम भी तुम्हारी तरह धान ही खाते हैं, कोई धूल नहीं खाते । जैसी तुम में अक्ल है, वैसी हम में भी है । मूर्ख बनाने की कोशिश न करो ।

—कोई होशियारी से धोखा करना चाहे तब भी इसी रूप में इस उक्ति का प्रयोग होता है ।

—होशियारी किसी की जन्मजात बपौती नहीं है । मनुष्य होने के नाते बुद्धि पर सबका कमोवेश अधिकार है ।

धांन खावै के केर खावै । ६९७४

धान खाता है कि केर खाता है ।

धांन = धान = अनाज । केर = करील की पातविहीन कँटीली झाड़ी के बीज ।

—मनुष्य जैसा दिमाग पाकर भी व्यक्ति कोई नासमझी का काम करते न माने तब उसे डाँट-फटकार करके कहा जाता है कि धान खाता है कि केर, जो ऐसी नासमझी की बात करता है ।

धांन खावै धणी रौ, गीत गावै वीरै रा। ६९७५

अनाज खाये पति का, गीत गाये बीर का ।

दे.क.सं.२५५

पाठा: धान खावै मांटी रौ नै गीत गावै बीरा रा।

धांन खावै सो सै समझै। ६९७६

धान खाये वह सब समझता है ।

धांन = अनाज ।

—गरीब-अमीर सभी धान से गुजारा करते हैं । धान खाने वालों में जैसी अक्ल होती है, सब में होती है । बड़े आदमियों का प्रतिरोध भले ही न करें, मन-ही-मन समझते सब हैं ।

—कोई चतुर व्यक्ति किसी को गलत काम में फँसाना चाहे तब उसे विनम्रता-पूर्वक यह उक्ति कही जाती है ।

धांन जिणरै ई धन। ६९७७

धान है उसी के पास ही धन है ।

धांन = धान = अनाज ।

—धन या सोना चाहे जितना हो, वह खाने-पीने, पहनने के सीधा काम तो आता नहीं है । वह तो फकत विक्रय का एक माध्यम है । नमक की गरज भी सोने के पाउडर से पूरी नहीं होती । जिसके पास पर्याप्त अनाज है, उसे पेट भरने की खातिर रोटी की तो कोई कमी नहीं । इसलिए जिसके भंडार में अनाज भरा है, वह धन से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है । कभी-कभार ऐसी स्थिति भी आती रही है, जब पुराने जमाने में धन देकर भी धान नहीं मिलता था ।

धांन तौ थोड़ौ अर धींगाणौ घणौ। ६९७८

अनाज तो थोड़ा और हेकड़ी अधिक ।

—मामूली हैसियत वाला सामान्य व्यक्ति बढ़-बढ़कर बातें बनाये, तब।

—बूता तो पाव भर, जबरदस्ती करे सरासर।

धांन धणी रौ ऊपड़ै कळपै कोठारी। ६९७९

अनाज मालिक का लगे, क्लेश करे कोठारी।

दे.क.सं.६४४१,६९२१

धांन नवौ अर घी जूंनौ। ६९८०

अनाज नया और घी पुराना।

—नया अनाज खाने में स्वादिष्ट होता है। पुराना घी कई औषधियों में काम आता है। इसलिए दोनों की अपनी अलग-अलग उपयोगिता है।

धांन पारकौ पण पेट तौ पारकौ कोनीं। ६९८१

अनाज दूसरों का था पर पेट तो दूसरों का नहीं था।

—अपने हाजमे की परवाह नहीं करके जो व्यक्ति दूसरों के यहाँ ज्यादा खाकर अपनी तबीयत खराब कर ले, तब।

—जो व्यक्ति लालच के वशीभूत नासमझी का काम करके हानि उठाले, तब।

धांन रौ भाव के रिपिये मण, घिरत रौ भाव के रिपिया रौ रिपिया भर के रोट्यां रावळै जीमौ? ६९८२

अनाज का भाव कि रुपये मन, घी का भाव कि रुपये का रुपये भर कि रोटियाँ ठिकाने में जीमते हो?

—ठाकुर के कर्मचारी ठिकाने में ही रोटियाँ तोड़ते थे, इसलिए उन्हें अनाज के भाव का तो पता ही नहीं रहता कि रुपये मन मिलता है या तीन रुपये मन। सोचते थे कि रुपये मन ही मिलता होगा पर घी तो वहाँ मिलता नहीं था—कभी-कभार खरीदना पड़ता तो भाव याद नहीं रहता था। सोचते कि महँगा ही होगा—रुपये का रुपये भर।

—जो व्यक्ति दूसरों के यहाँ जीवन-यापन करता है, उसे सही वस्तु-स्थिति का पता नहीं रहता।

धांन रौ संचै सदा सिरै। ६९८३

अनाज का संचय सदैव हितकारी।

—भावों की घटत-बढ़त या आकस्मिक तंगी के कारण अनाज का पर्याप्त संग्रह हो तो भोजन की प्राथमिक आवश्यकता पूरी हो ही जाती है। इसलिए धन के संचय की बजाय अनाज का संचय अधिक व्यावहारिक है।

पाठा : धान नो हगरो हृदा हाऊ।– भी.४७३

धांन सीझ्यौ, दोय लुगायां रौ धणी सीझै ज्यां ! ६९८४

अनाज सीझा जैसे दो लुगायों का पति सीझा हो !

—बड़ी व्यावहारिक और सटीक उपमा जो केवल भुक्तभोगी ही बता सकता है कि दो औरतों की आँच से तो लोहे की लाट सीझ सकती है, फिर पति तो मामूली बात है।

धांन सूं मरै, कांम सूं नीं मरै। ६९८५

धान से मरते हैं, काम से नहीं मरते।

—शरीर के लिए परिश्रम तो पौष्टिक पकवान की तरह उपयोगी है। अधिक परिश्रम से मरना संभव नहीं है, पर अधिक खाने से मृत्यु हो सकती है।

—आलसी या किसी कामचोर के लिए यह कहावत सीख के रूप में काम ली जाती है!

धांन है जितरै मनमांनी, धांन खूट्यां छांनी-मांनी। ६९८६

अनाज है तब तक मनमानी, अनाज खूटने पर चुपचाप गुजारा।

—अन्न की इफरात है तब तक कूदफाँद, नाचगान और अनाज के अभाव में उदासी और संताप।

—अन्न की महिमा।

मि.क.सं.२४७

धांमीणी रा किसा दांत गिणीजै। ६९८७

धामीनी के दाँत थोड़ी ही गिने जाते हैं।

धांमीणी = धामीनी = पिता या भाई द्वारा पुत्री या बहन को दी जाने वाली गाय अथवा भैंस।

दे.क.सं.६४१८,६९६३

थांम्यां धूड़ । ६९८८

धामने से धूल ।

धांमणौ = धामना = किसी वस्तु को लेने के लिए आग्रह करना, कहना ।

—आग्रह करके चीज देने में उसका महत्त्व महसूस नहीं होता । माँग होने पर ही उसका उचित मूल्य मिलता है ।

—व्यवसाय का एक उपयोगी गुर है कि आग्रह-पूर्वक देने से चीज की उचित कीमत नहीं मिलती ।

पाठा : मांग्यां माल अर थांम्यां धूड़ । थांम्यौ सोनौ धूळ बिरोबर ।

थांम्योड़ौ दूध ई नीं पीवै । ६९८९

धामने से दूध भी नहीं पीता ।

—दूध जैसा पौष्टिक पदार्थ भी आग्रह-पूर्वक मनुहार करने से महत्त्वहीन हो जाता है ।

मि.क.सं.६९८८

थांय-थांय काठी व्है । ६९९०

धँसा-धँसाकर सख्त करना ।

—कोई व्यक्ति किसी बात को बार-बार दुहराकर पक्की करना चाहे तब उसे लक्ष्य करके यह कहावत कही जाती है ।

—छोटी-सी बात का बतंगड़ बनाने से व्यर्थ परेशानी होती है ।

थांसी, काळ री मासी । ६९९१

खाँसी मौत की मौसी ।

—खाँसी को मामूली रोग जानकर उसके प्रति लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए, वह बढ़ते-बढ़ते काफी घातक सिद्ध हो जाती है ।

—शरीर में कुछ भी विकार हो, उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए ।

धाई ओगाळ न्हाकै ।—व.१७ ६९९२

अघाये ढोर जुगाली करते हैं ।

—धन का दुरुपयोग करने वाले पर कटाक्ष ।

—फिजूल खर्ची के लिए।

पाठा : थाबौ उगाळी रहारै।

धाई ओ वीरा थारा वेस सूं, भिणियां रै खेत बारै काढ़। ६९९३

भरपाई ओ बीर तेरा वेश, कपास के खेत से बाहर निकाल।

—किसी भाई ने बहिन को वेश का लोभ देकर उससे कपास की रूई बीनने का काम बता दिया। झुक-झुककर पूरे खेत की तीन-चार बार रूई बीनने से बहिन का अपना वेश जो पहिना हुआ था, वह भी फटने लगा तो आजिज आकर कहने लगी, भरपाई ओ बीर तेरा वेश, कपास के खेत से बाहर निकाल।

—किसी व्यक्ति को नौकरी की धत्ता बताकर कोई बड़ा अधिकारी बहुत दिनों तक मुफ्त में काम करवाये तब तंग आकर पीड़ित व्यक्ति इस कहावत का प्रयोग करता है।

पाठा : धाई ओ वीरा थारी कांचळी सूं, भिणियां रै खेत बारै काढ़।

धाई थारी छाछ-राबड़ी कुत्तां सूं छुड़ाव। ६९९४

भरपाई तेरे छाछ-राबड़ी कुत्तों से छुड़ा।

दे.क.सं.६९९३

धागड़ियो धान करे, मनख नी करे।—भी.४६८ ६९९५

झगड़ा अन्न करता है, मनुष्य नहीं करता।

—भूखे व्यक्ति की क्षमता ही नहीं कि वह किसी से झगड़ा कर सके। साधन संपन्न व्यक्ति ही उत्पात करता है।

—जिनके पास कुछ है, वे अधिक पाने के लिए हाथ-पाँव पछाड़ते हैं।

धाड़वियां री घोड़ी। ६९९६

डकैतों की घोड़ी।

—अत्यधिक चालाक व धूर्त व्यक्ति के लिए।

—तेज-तर्रार साहसी व्यक्ति के लिए।

धाड़वी-धाड़वी करता ज्यूं फळसै ई आय बाज्या! ६९९७

डकैत-डकैत करने पर फलसे तक घुस आये!

—मामूली प्रशंसा करने पर जो व्यक्ति ज्यादा फूलकर रुआब जताने लगे।

—अपनी तारीफ सुनकर ओछा आदमी इधर-उधर सींग मारने लगे तब।

धाड़ैती खोस्यौ माल तौ बेगारी हुवा निहाल। ६९९८

डकैतों ने छीना माल तो बेगारी हुए निहाल।

—किसी मालिक या व्यापारी का माल बेगारी सिर पर ले जा रहे थे। रास्ते में डकैतों ने डरा-धमका कर माल छीन लिया। मालिक भी साथ था। पर डकैतों के सामने उसका कुछ भी जोर नहीं चला। उसे तो दुख होना स्वाभाविक ही था, पर बेगारी बोझ उतरने से मन-ही-मन बड़े खुश हुए।

—अपनी क्षति होने पर मालिक को जितनी चिंता होती है, नौकरों को नहीं होती।

—दूसरों के नुकसान का दुख करने वाले बिरले ही होते हैं। राजी होने वाले बहुतेरे मिल जाते हैं।

धान खाहां थोड़ूज तो हमजता ओहां।– भी.४७० ६९९९

भरपेट अन्न खाने को न भी मिले, कुछ तो समझते ही हैं।

—प्रत्येक मनुष्य में अपने हिसाब से थोड़ी-बहुत तो समझ होती ही है। वह भी अन्न खाता है। पर कोई उसे मूर्ख समझे, तब सामने वाले को इस उक्ति का तर्क देता है।

मि.क.सं. ६९७३, ६९७६

धान जटे धनेरां व्हे। – भी.४७१ ७०००

जहाँ धान वहाँ धनेरिये तो होंगे ही।

धनेरां = धनेरिया = गेहूँ में लगने वाला छोटा काला कीटाणु।

—जिस व्यक्ति को जहाँ जरूरत होती है वह स्वतः वहीं अपनी जगह खोज लेता है।

—जहाँ घर-परिवार या समाज होगा, वहाँ छोटी-बड़ी बुराइयाँ उत्पन्न हो ही जाती हैं।

धान नी वकाये केलवणा वाळी वकादे।– भी.४७२ ७००१

अन्न की प्रशंसा नहीं होती, रसोईदार की होती है।

—अन्न और सामग्री अच्छी और पर्याप्त होने पर भी यदि रसोई बनाने वाला कुशल नहीं है तो माल बिगड़ जाता है।

—साधनों की अपेक्षा योग्यता की पूछ अधिक होती है।

धापोड़ां रा धपूकड़ा। ७००२

अघायों की ऐयाशी है।

—भूखे पेट तो भजन भी नहीं होता। जो हर प्रकार से तृप्त हैं, साधन संपन्न हैं उन्हें ही विलास सूझता है।

—संसार में जिनके पास भरपूर साधन हैं, उन्हीं का उत्पात है।

धाप्यां पछै तौ फूंफाड़ा करैला इज। ७००३

पेट भरने पर फूत्कार तो करेगा ही।

—साँप की प्रवृत्ति वाला कुटिल मनुष्य परितृप्त होने पर फूत्कार तो करता ही है।

—साधन-संपन्न व्यक्तियों का ही संसार में सारा बखेड़ा है।

धाप्या पेट रा उदंगळ है। ७००४

अघाये पेट वालों का उदंगल है।

उदंगळ = उपद्रव, उत्पात।

दे.क.सं.७००२

धाप्यां माते डूमड़ी खीर रांदे।— गी.४६९ ७००५

भोजन से तृप्त लोगों के लिए डोमन खीर पकाती है।

—भूखे व्यक्तियों को ही भोजन या खीर की सबसे ज्यादा जरूरत है, पर उन्हें कोई नहीं खिलाता। कोई नहीं पूछता। जिनका पेट भरा है, उन्हीं की सभी मनुहार करते हैं।

धाप्योड़ौ ऊंट ओडी गुड़ावै। ७००६

अघाया ऊँट टोकरी लुढ़काता है।

—भूखे पेट वाला आहें भरता है। भरे पेट वाले को ही नखरे सूझते हैं।

—साधन-संपन्न वालों को ही औंधी सूझती है।

धाप्योड़ौ सूर कळसी रौ बिगाड़ करै। ७००७

अघाया सूअर कलसी का बिगाड़ करता है।

कळसी = आठ मन अनाज का एक पात्र।

—जब कोई व्यक्ति किसी चीज का वांछित उपयोग न करके उपभोग से अधिक मात्रा में नुकसान करे उसके लिए।

—साधन-संपन्न या परितृप्त व्यक्ति अकारण ही अधिक क्षति पहुँचाने लगे तब।

पाठा : धायौ सूअर बा'रै बीघां लग उजाड़ करै। धाप्योड़ौ सूर बवणौ बिगाड़ै।

धाबळिया भेळी फूंदी ई रंगीजै। ७००८

धाबले के साथ फूँदी तो स्वत: रंग जाती है।

धाबळौ = एक प्रकार का मोटा ऊनी वस्त्र जो स्त्रियाँ कमर के नीचे पहिनती हैं। अधोवस्त्र। उस पर ऊन के रंगीन फूँदे लटकते हैं।

—जब धाबले को रंगा जाता है तो उस पर लटकने वाले फूँदे तो अपने-आप रंग जाते हैं।

—बड़े लाभ के बीच छोटे-मोटे लाभ तो यों ही निकल आते हैं।

—बड़े कामों के बीच अपने मामूली काम निकालने वाले व्यक्ति के लिए।

पाठा : धाबळा भेळौ फूंदौ मतै ई रंग लेवै।

धाबळिये वाळी कारी। ७००९

धाबले वाली कारी।

धाबळियौ = धाबळौ = एक प्रकार का मोटा ऊनी वस्त्र जो स्त्रियाँ कमर के नीचे बाँधती हैं। अधोवस्त्र। कारी = पैबंद।

—बड़े व्यक्ति के साथ हरदम चिपके रहने वाले व्यक्ति।

—बड़े आदमियों के नाम पर अपनी पेट-पूजा करने वालों के लिए।

धाबळौ भीज्यां भारी व्है। ७०१०

धाबला भीगने पर भारी होता है।

—सांसारिक अनुभव मनुष्य के ज्ञान को अभिवृद्ध करते हैं। उन में निरंतर गांभीर्य का उन्मेष होता रहता है, जिस प्राकार धाबले के भीगने से वह भारी हो जाता है।

—अनुभव के साथ विवेक, तर्क शक्ति व गंभीरता भी बढ़ती रहती है।

—जब किसी आदमी पर कर्ज का बोझ बहुत बढ़ जाता है, ब्याज भी नहीं चुका पाता तब स्थिति असह्य हो जाती है। ऋण का बोझ बढ़ता ही रहता है।

—ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ती है, त्यों-त्यों पापों का बोझ भी बढ़ता रहता है।

—दृष्टव्य है ऐसी ही सर्व प्रचलित कहावत—ज्यौं-ज्यौं भीजै कामरी त्यौं-त्यौं भारी होय।

धायां खीर ई खाटी लागै। ७०११

अघाये को खीर भी खट्टी लगती है।

—कभी-कभार एक कहावत का अर्थ उघाड़ने के लिए वैसी ही दूसरी कहावत बड़ी सार्थक होती है—जैसे इस कहावत के लिए कि पकवान मीठे नहीं होते भूख मीठी होती है। तभी परितृप्त व्यक्ति को खीर खट्टी लगती है।

—थोड़ा जितना ही मीठा।

धायां रौ मांडण, भूखां रौ आडण। ७०१२

सुखियों का शृंगार, दुखियों की ढाल।

—आभूषण सुख के दिनों देह की शोभा बढ़ाते हैं और दुख के दिनों में पूरा साथ निभाते हैं! संकट-विपदा के समय उन्हें बेचकर गुजारा किया जा सकता है। दिन तोड़े जा सकते हैं।

—जो वस्तु सुख की वेला मान-मर्यादा बढ़ाये और दुख की वेला दुर्दिनों में काम आये।

दे.क.सं.३३६८

धाया थारै रातीजोगै, गिंडकां सूं मत तोड़ाजै। ७०१३

भरपाये तुम्हारे रतजगे से, कटवाना मत कुत्तों से।

मि.क.सं.६९९३

धाया नै मल्हार सूझै। ७०१४

अघाये को मल्हार सूझे।

मल्हार = मलार = वर्षा ऋतु में आनंद भाव से गाई जाने वाली एक राग-विशेष।

—अघाये व्यक्ति को आनंद व गुलछर्रे सूझते हैं।

—साधन-संपन्न व्यक्ति ही ठाट से रहता है। मौज मनाता है।

मि.क.सं.७००२,७००४

थायोड़ा कुत्ता कांई सिकार करै ? ७०१५

अघाये कुत्ते क्या शिकार करेंगे ?

—पेट भर जाने के बाद आलस्य व आराम की सूझती है। भरा पेट हो तो कुत्ते शिकार की चिंता नहीं करते।

—अभावों के बीच ही व्यक्ति संघर्ष करता है।

—साधन-संपन्न व्यक्ति लापरवाह हो जाता है।

धायोड़ी जाटणी गोळाबाटी सूं ढूंगा पूंछै। ७०१६

अघायी जाटनी बाटी से मलद्वार साफ करती है।

गोळाबाटी = गोल आकार की मोटी रोटी।

मि.क.सं.७००४

पाठा : **धायोड़ौ जाट थांभा रै घी चोपड़ै। धायोड़ौ जाट गाडी रै वाद वाढ़ै।**

वाद = भैंस के चमड़े की पतली रस्सी, जिस में बैलगाड़ी के कुछ उपकरण बाँधे जाते हैं। उसे वाद कहते हैं।

धायोड़ी तेलण खळ सूं ढूंगा पूंछै। ७०१७

अघायी तेलिन खली से मलद्वार साफ करती है।

संदर्भ-कथा : एक तेलिन अच्छा और ज्यादा तेल निकालने के लिए प्रसिद्ध थी। आस-पास के इलाके से लोग-बाग उसके पास आते। ईमानदार भी बहुत थी। तिल-तिल्ली उसके भरोसे छोड़कर चले जाते। बड़े आराम से गुजारा कर रही थी। तेल निकालने के बदले खली रख लेती। अच्छे भावों बिक जाती। पास ही एक बनिये का बाड़ा था। तेली तो गाँव से बाहर दूर निवृत्त होने चला जाता। पर तेलिन काम की मार से सेठ के बाड़े में ही शौच चली जाती। हाथ में तीन-चार खली के ढेले ले जाती। उन्हीं से सफाई करके बाड़े में फेंक देती। सेठ उसके पड़ोस में ही रहता था। वह देखता कि तेलिन पानी का बासन कभी साथ नहीं ले जाती। उसके मन में शंका उपजी तो वह एक दिन बाड़े में गया। खली के ढेले देखते ही वह सारी बात समझ गया। मन-ही-मन मुस्कराया और खली के ढेले लाकर एक कोठी में डाल दिये। सेठ ने तेलिन को कुछ भी भनक नहीं पड़ने दी। तेलिन सोचती कि कुत्ते खा जाते होंगे। यह क्रम दो बरस तक चला। कोठी भर गई तो सेठ पुराने उतरे घड़ों में खली डालकर मुँह बंद कर देता। तीसरे

साल भयंकर अकाल पड़ा । पूरा चौमासा सूखा निकल गया ! तेलिन होशियार थी । पड़ोसी सेठ से तिलहन खरीद-खरीदकर महँगे भाव से तेल बेचती । सेठ कभी-कभार उधार भी दे देता । पर उसके पास तिलहन खत्म हो गये तो तेलिन मुश्किल में पड़ गई । गाँव के बाहर जानें की कभी फुरसत ही नहीं मिली थी । आखिर चूल्हे पर हँडिया चढ़नी बंद होने लगी तो तेलिन सेठ से खली खरीद-खरीदकर जस-तस गुजारा करने लगी । एक दिन खली भी समाप्त हो गई । तेलिन ने कहा—सेठजी, कहीं से खली का जुगाड़ करो, वरना भूखों मर जाएँगे । सेठ ने मुस्कराते कहा—कहाँ से जुगाड़ करूँ ? तूने इतनी ही खली बाड़े में फेंकी थी । ज्यादा फेंकती तो कुछ दिन और चल जाता । तेलिन का तर्र से मुँह उतर गया । काटो तो खून नहीं । क्या जवाब देती !

आँखें नीची करके चुपचाप खड़ी रही । बाएँ पैर के अँगूठे से धूल कुचरने लगी । आँखें भर आईं । तब सेठ ने धीरज बँधाते कहा—चिंता मत कर । शहर से खरीद कर अगले चौमासे तक तिलहन उधार देता रहूँगा । तेरी साख-पेठ है । पर पैसा होते ही हम सेठ लोग, इस तरह इतराने लगें तो पूँजी कैसे जुड़े ! इस गुर को गाँठ बाँध ले । तेलिन तो जैसे बोलना ही बिसर गई थी । पर पड़ोसी सेठ की मदद से उसका चूल्हा हमेशा जलता रहा । अगले चौमासे ऐसी वारिश हुई, जैसे पानी के बदले तिलहन ही बरसा हो । और सेठ का गुर उसकी गाँठ में बँधा ही था । उसे फिर कभी तकलीफ नहीं हुई ।

—मनुष्य के चेतन या अवचेतन में सम्पन्नता का भी एक मानसिक नशा होता है ।

—गरीबी के उनमान बहबूदी भी मनुष्य की सामाजिक प्रवृत्तियों में विकार उत्पन्न करती है । इसलिए जरूरतों की पूर्ति के अलावा धन की नकारात्मक उपादेयता है ।

दे.क.सं.६११०

पाठा : धायोड़ी भांबण फाफड़ां सूं पूंन पूंछै ।

धायोड़ौ सांड तौ ई नव कट्टा । ७०१८

अघाया साँड फिर भी नौ कट्टे ।

कट्टौ = कट्टा = जमीन का एक नाप विशेष ।

—साँड का पेट पूरा भरा है, फिर भी उसे खुला छोड़ दिया जाय तो नौ कट्टे में खड़ी फसल बर्बाद कर देता है ।

—उस भोजन-भट्ट के लिए, जो खाते-खाते कभी अघाये ही नहीं।

दे.क.सं.७००७

धायौ कूदै। ७०१९

अघाया कूद-फाँद करता है।

—पेट भरा होने पर ही उच्छृंखलता सूझती है।

—साधन-संपन्न लोगों के नखरे ही अलग हैं।

मि.क.सं.७००४

धायौ-धपनूं पुटिया वाळा पग करै। ७०२०

अघा-अघाया पुटिया वाले पाँव फैलाता है।

पुटिया = एक नन्हा-सा पक्षी विशेष जो रात में ऊपर की ओर पाँव करके सोता है, इस मुगालते में कि कहीं आकाश टूट पड़े तो अपने पाँवों पर थामले। दुनिया को मरने से बचाले।

—सामान्य स्थिति वाला व्यक्ति अचानक धनाढ्य हो जाय तो वह फूला नहीं समाता। पुटिया वाले मुगालते में रहता है कि सारी दुनिया का कष्ट निवारण करने वाला वही है।

मि.क.सं.७०११

धायौ धाड़ा करै। ७०२१

अघाया डाके डालता है।

—अजीब विडंबना है कि आजकल अभावग्रस्त व्यक्ति डाके नहीं डालता। साधन-संपन्न व्यक्ति ही उत्पात करता है।

दे.क.सं.७००४

धायौ भूखा री पीड़ कद जांणै? ७०२२

अघाया भूखे की पीड़ा क्या जाने?

—साधन-संपन्न व्यक्ति अभावग्रस्त का दरद नहीं समझ सकता।

—अमीर गरीब की वेदना क्या जाने?

—जिसके पाँवों में कभी बिवाई नहीं फटी वह पराये घावों की कसक महसूस नहीं कर सकता।

धायौ मीर, भूखौ फकीर, मर्‌यां पीर। ७०२३

अघाया मीर, भूखा फकीर, मरने पर पीर।

—मुसलमान की मनःस्थिति को दरसाने वाली उक्ति है। जब उसका पेट भरा है तो कल की फिक्र नहीं करता। अंटी में पैसा है तो तबीयत से मौज मनायेगा। भूखा है तो फकीर बन जाएगा। और मरने के बाद पीर कहलाएगा।

—उस व्यक्ति के लिए जो हर स्थिति में प्रसन्न रहता है। दुखों का रोना नहीं रोता।

धायौ रांगड़ धन हरै, भूखौ तजै पिरांण। ७०२४

अघाया रजपूत धन हरहिं, भूखा तजहिं प्राण।

—जो व्यक्ति थोड़ा संपन्न होते ही दूसरों का धन हरने की चेष्टा करे और अभावों का सामना न करने के कारण आत्महत्या करे। या तो घबराकर या स्वाभिमान के कारण कि गरीबी में जीने की बजाय वह मरना बेहतर समझता है।

धार, अणी अर धमाकौ, अै तीन जात रा हथियार। ७०२५

धार, नोक और धमाका, ये तीन प्रकार के हथियार।

—दुनिया भर के सारे हथियार तीन कोटि में शुमार हो जाते हैं या तो धार वाले या नोक वाले या धमाका करने वाले। कुछ कहावतें अभिज्ञता या जानकारी बढ़ाने के लिए ही होती हैं, यह उन्हीं में से एक है।

धारज्ये ने धावन्ये काम नी थाय, काम धीरे हूं थाय।– भी.४७४ ७०२६

सोचने और उतावली से काम नहीं बनता, धीरज से बनता है।

—मात्र इच्छा रखने से काम नहीं होता। और न जल्दबाजी करने से। उतावलेपन में काम बिगड़ भी जाते हैं। काम संपन्न होता है कौशल और धैर्य से।

—हुनर ही काम की सफलता का मुख्य आधार है।

धावै सो पावै। ७०२७

धाये सो पाये।

—जो दौड़ेगा वही पाएगा। जो सोएगा वह खोएगा।

—जो फिरेगा वही चरेगा।

—जो काम करेगा, वही कमाई करेगा।

धिन खेती, धिक चाकरी, धिन-धिन रे वौपार। ७०२८

धन्य खेती, धिक् चाकरी, धन्य-धन्य रे व्यापार।

—खेती के लिए पसीना तो जरूर बहाना पड़ता है, पर किसान के काम में पुण्य बहुत है—वह दुनिया के लिए अनाज पैदा करता है, जिससे दुनिया जीवित रहती है। असंख्य पशु-पक्षियों का गुजारा होता है। तिसपर बदरंग धरती पर हरियाली उपजाने का आनंद भी कम नहीं। यह सृजन का आनंद है। चाकर तो दूसरों की इच्छा से काम करता है, वह पराधीन है। और व्यापार की कमाई का तो कोई पार नहीं। धूल बेचो और सोना कमाओ। इसलिए व्यापार का बखान। चाकरी को धिक्कार।

धींग कूटै अर रोवण नीं देवै। ७०२९

तगड़ा पीटे और रोने भी न दे।

—प्राणी जगत् में निर्बल होना ही अभिशाप है। जो तगड़े हैं वे निर्बल को कहीं चैन नहीं लेने देते। मनुष्यों में भी यही धाँधली है। तगड़ा पिटाई करेगा और रोने का अधिकार भी नहीं देगा। निर्बल का सहायक तो ईश्वर भी नहीं।

दे.क.सं.४८८१

पाठा : धींग मारै नै रोवण ई नीं देवै। लांठौ जंतरावै अर चुंकारौ ई नीं करण दे।

धींग री जोरू, सगळां री काकी। ७०३०

तगड़े की जोरू, सबकी चाची।

—तगड़े के रिश्तेदार भी मनमानी किये बिना नहीं मानते। फिर उसकी जोरू का तो कहना ही क्या। सब पर रुआब गाँठती है। सबकी चाची कहलाती है। इसके विपरीत गरीब अपनी औरत पर भी नियंत्रण नहीं रख सकता। उसकी जोरू सबकी भाभी या भावज कहलाती है, जिससे सभी मजाक करते हैं।

पाठा : धींग री बेयर, गांव री काकी।

धींगां धरती अर धींगां नार। ७०३१

तगड़ों की धरती और तगड़ों की नारी।

—दुनिया में सर्वत्र तगड़ों ही का राज्य है। निर्बल तो अपनी घरवाली को भी वश में नहीं रख सकता। और तगड़े उसे घुटनों के बीच दबाये रखते हैं।

—अपनी ताकत के बिना कहीं निस्तार नहीं—चाहे शरीर की ताकत हो, पैसे की या जबान की। बस, होनी ताकत चाहिए। कमजोर का कहीं ठिकाना नहीं।

धींगां री संक्रांत। ७०३२

तगड़ों की संक्रांति है।

संक्रांत = वह दिन, जब सूर्य एक राशि से दूसरी राशि में गमन करता है। यह दिन पवित्र माना जाता है। लोग स्नान, दान और पूजा इत्यादि करते हैं। उत्सव मनाते हैं। ब्राह्मण अनाज माँगने जाते हैं।

—जो व्यक्ति आर्थिक रूप से तगड़ा होगा वही उत्सव का आनंद ले सकता है। गरीब टुकुर-टुकुर मुँह देखते रहते हैं। जिसके पास धन होगा, वही दान-पुण्य कर सकता है।

—जो ब्राह्मण शारीरिक रूप से तगड़ा होगा, वह दनादन सब घरों में चक्कर काटकर अनाज इकट्ठा कर लेता है। कमजोर मुँह ताकता रह जाता है।

धींगाणै धरम को हुवै नीं। ७०३३

जबरदस्ती धर्म नहीं होता।

—मन और आत्मा से धर्म हो, वही धर्म है। उस पर किसी की जबरदस्ती नहीं चलती। जबरदस्ती की भी जाय तो धर्म नहीं माना जाता।

—जो इच्छा से दिया जाय, वही दान-पुण्य है। कोई जबरदस्ती छीन ले वह न देने वाले की ओर से पुण्य माना जाएगा और न लेने वाले के लिए ही पुण्य होगा।

धींगाणै रौ धरम है। ७०३४

जबरदस्ती का धर्म।

—सामान्यतया तीर्थ-स्थानों के पंडे अपने यजमानों से जबरदस्ती उनकी इच्छा के बावजूद जबरन धर्म करवा लेते हैं। पंडों के दाँव-पेच के मारे यजमान का कुछ भी वश नहीं चलता। पता नहीं इसका पुण्य होता भी है या नहीं?

—कुछ लोग बार-बार आग्रह करके किसी से जबरदस्ती कोई धर्मार्थ काम कराएँ, तब।

धीणा जिसौ सुख नीं। ७०३५

धीणे जिसा सुख नहीं।

धीणौ = किसी के घर में दूध देने वाले मवेशी—गाय, भैंस व बकरी आदि की संज्ञा। दुधारू मवेशियों का पर्यायवाची।

—दुधारू मवेशी की वजह से घरवालों को खाने-पीने का आराम तो रहता ही है। पर अचानक कोई अतिथि भी आ जाय तो उसका तत्काल दूध, दही, मक्खन, घी व छाछ से सत्कार किया जा सकता है। और उस सत्कार का सुख भी कम नहीं।

धीणा वाळी री पूछ तौ हुवै ई। ७०३६

धीणे वाली की पूछ तो होती ही है।

—जिस घर में दुधारू मवेशी हरदम रहते हों, मालकिन की पूछ तो होती ही है। छाछ माँगने पर छाछ, दूध माँगने पर दूध और दही माँगने पर दही मिल जाय तो अपने-आप उसकी सराहना हो जाती है।

धीणोड़ी रै सांम्ही हीणोड़ी नै कुण बूझै ? ७०३७

दुधारू की तुलना में सूखी को कौन पूछे ?

—जो मवेशी दूध देते हैं उनके सामने बेचारे दूध नहीं देने वाले मवेशियों की कौन परवाह करता है ?

—जो घर में कमाई करके लाता है, उसके मुकाबले बेकार आदमी की कद्र नहीं होती। और तो और अनकमाऊ पूत के लिए माँ की ममता भी कम हो जाती है।

पाठा : धीणोड़ी रै सागै हीणोड़ी मर ज्याय।

धीणौ तौ भैंस रौ, व्हौ भलांई सेर ई। ७०३८

धीणा तो भैंस का, हो भले सेर ही।

—दूसरे दुधारू मवेशियों की तुलना में भैंस सबसे बेहतर है। दूध गाढ़ा होता है। अधिक मीठा होता है। दही भी चिकना और गाढ़ा होता है। घी ज्यादा आता है। चाहे उसका दूध मात्रा में कम ही हो।

धीणौ दूझै के धणी दूझै ? ७०३९

गाय-भैंस दूध देती है या मालिक ?

—सही है कि गाय-भैंस के स्तनों से ही दूध निकलता है। पर मालिक समय पर घास, खली या बाँटा न दे तो उनका दूध सूखते देर नहीं लगती। इसलिए दुधारू मवेशियों का दूध मालिक की मेहनत और उसकी योग्यता पर निर्भर करता है।

धीणौ-धापौ। ७०४०

धीणा-धापा।

धीणौ = किसी के घर में दूध देने वाले मवेशी—गाय, भैंस व बकरी आदि की संज्ञा। दुधारू मवेशियों का पर्यायवाची। धापौ = तृप्ति।

—धान-चून, मेल-जोल, कानून-कायदा इत्यादि की तरह धीणा-धापा जुड़वाँ शब्द है। अन्न और साग से भूख तो मिट जाती है। पर दुधारू मवेशियों के धीणे से जो तृप्ति होती है, उसका कोई जवाब नहीं। देवता भी घी के बिना भोग स्वीकार नहीं करते।

—भोजन का सुख तभी मिलता है जब घर में दुधारू मवेशी हों।

धी दुहेलौ सासरौ, पूत दुहेली पोसाळ।–व.१७१ ७०४१

लड़की को दुख ससुराल में, लड़के को दुख पोसाल में।

दुहेलौ = संकट, दुख। पोसाळ = पाठशाला। विद्यालय।

—लड़की ससुराल जाते समय रोती है और लड़का पाठशाला जाते समय रोता है। प्रारंभ में मन नहीं लगता। दुख महसूस होता है। पर बाद में तो निस्तार वहीं है—लड़की का ससुराल में। लड़के का विद्यालय में। प्रारंभिक दुख की ओर इस उक्ति में संकेत है।

धी मरी, जंवाई चोर। ७०४२

बेटी मरी और जमाई चोर।

जंवाई = जमाई = जामाता, दामाद।

—बेटी रहे तब तक ही जामाता की पूछ होती है। आदर-सत्कार होता है। उसकी मृत्यु के बाद उसे आशंका की दृष्टि से देखा जाता है, कहीं चुपके से चोरी न कर ले। बेटी के रहते उसे नये-नये उपहार दिये जाते हैं।

—जिस व्यक्ति का महत्त्व किसी दूसरे व्यक्ति के माध्यम से हो तो माध्यम के हटने पर उस व्यक्ति का महत्त्व तिरोहित हो जाता है।

धीमा बोलै तौ ई बाड़-कांटा सुणै। ७०४३

धीरे बोलें तब भी बाड़-काँटे सुन लेते हैं।

—किसी बात को गुप्त रखना हो तो उसे जबान से बाहर नहीं निकालना चाहिए। चाहे जितना धीमे बोलने पर भी बहुत संभव है बाड़-काँटा ही सुन ले। बाड़-काँटा सुनना एक मुहावरा है। जिसका आशय है न सुनने वाली चीज भी सुन ले।

धीया रै चाल्यां कोठी हालै, बहू रै चाल्यां आखौ घर हालै। ७०४४

बेटी के चलने से कोठी हिलती है, बहू के चलने से पूरा घर हिलता है।

कोठी = अनाज या अन्य बासन रखने का कुठला, बखार।

—बहू के फूहड़पन पर कटाक्ष। बेटी घर में चलती-फिरती है तो उसके चलने से कुठला ही हिलता है। पर बहू के चलने से पूरा घर हिलता है। बेटी स्वतंत्र है, वह चाहे जैसे चल सकती है। पर बहू को वैसी स्वतंत्रता नहीं है। उसे अपना हर कदम सोच-समझकर रखना चाहिए ताकि फूहड़पन प्रकट न हो। बहू के लिए बीसियों बंदिशें हैं। बेटी उन बंदिशों से मुक्त है। बहू को सब तरह के शिष्टाचार की पालना करनी चाहिए।

धीरज अर नेठाव सूं सै कांम निवड़ै। ७०४५

धीरज और शांति से सब काम संपन्न होते हैं।

—हर काम करने का अपना सलीका होता है। जल्दबाजी और हड़बड़ी में वह बिगड़ता ही है। चंचलता की बजाय धीरज और शांति से ही इच्छानुसार सुधरता है।

धीरज धारणियौ तौ पार उतरै ई। ७०४६

धीरज रखने वाला तो पार ही उतरता है।

दे.क.सं.७०४५

धीरज बडौ। ७०४७

धीरज बड़ा है।

—मानवीय गुणों में धीरज सबसे बड़ा है। धीरज रखने वाले का कभी काम नहीं बिगड़ता। धीरज रखने से व्यय नहीं बढ़ता, अपितु घटता है।

धीरज रा फळ मीठा। ७०४८

धीरज के फल मीठे।

—धीरज का परिणाम हमेशा लाभदायक होता है। उतावली करने से कोई भी रसाल या फल नहीं पकते। वे तो समय पाकर ही पकते हैं। मीठे और स्वादिष्ट होते हैं। उसी तरह धीरज के फल भी समय पाकर मीठे होते हैं।

धीरां रा गांव बसै अर उतावळां री देवळियां हुवै। ७०४९

धैर्यवानों के गाँव बसते हैं और उतावलों की देवलियाँ।

देवली = प्रतिमा। मूर्ति।

—युद्ध में धीरज रखने वालों की जीत होती है। वे गाँव बसाते हैं। उनके नाम से गाँव बसते हैं। उतावले जल्द ही मारे जाते हैं। ज्यादा ही हुआ तो उनके नाम की पुतली खड़ी हो जाती है। या मसान में उनकी दाहक्रिया हो जाती है। धैर्यवान की महिमा अक्षय रहती है। पाठा : उतावळां री देवळियां, धीमां रौ घरवास। धीरां रा देवळी, उतावळां रा मसांण।

धीरा नी चतरी ने आगत ना पाळल्या।– भी.४७५ ७०५०

धैर्यवानों की छतरी और उतावलों की समाधि पर पत्थरों का ढेर।

छतरी = स्मारक।

दे.क.सं.७०४९

धीरै धीरै रे मना, धीरै सब कुछ होय। ७०५१
माळी सींचै सौ घड़ा, रुत आयां फळ होय॥

धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब-कुछ होय।
माली सींचे सौ घड़े, ऋतु आये फल होय॥

—अपने वांछित समय में ही फल पकते हैं, माली उतावली करके घड़ों पर घड़े सींचे, तब भी कोई अपवाद नहीं होने का। फल तो अपनी पूरी अवधि लेकर ही पकेगा। मीठा होगा।

पाठा : धीरै धीरै रे ठाकरां, धीरै सब कुछ होय।
माळी सींचै सौ घड़ा, रूत आयां फळ होय ॥

धीव परायौ धन। ७०५२

कन्या पराया धन।

—जिस कन्या रूपी रत्न की बड़े जतन से रखवाली की, मन वांछित पालन-पोषण किया आखिर इसीलिए कि उसे पराये घर भेजना है। वह बाबुल के जिस आँगन में बड़ी हुई, उसे मन मारकर विदा करना होगा। ससुराल के घर में वह खड़ी-खड़ी जाएगी और उस घर से बाहर निकलेगी तो अर्थी पर लेटे-लेटे ही।

धीव हांती री धणियांणी, पांती री काय नीं। ७०५३

बेटी सौगात की अधिकारी है, हिस्सेदारी की नहीं।

—भेंट या सौगात में बेटी को कुछ भी दिया जा सकता है। पर बाप की संपत्ति में वह भागीदार नहीं बन सकती। पर अब उसके लिए नये कानून के द्वारा पिता की जायदाद में हिस्से का प्रावधान है।

पाठा : बेटी हांती री हकदार, पण पांती री नीं।

धु - ध्रा

धुड़ी हवेली कोठा बिरौबर। ७०५४

गिरी हवेली कोठे के बराबर।

—हवेली गिर भी जाय तो ऊँचाई और उपयोग में कुठले जितनी तो है ही।

—धनी आदमी की आर्थिक स्थिति खराब भी होगी पर गरीब के मुकाबले तो बेहतर होगी।

धुप्या कांन अर व्हियौ सिनांन। ७०५५

धुले कान और हुआ स्नान।

—मारवाड़ में पानी के अभाव की वजह से इस कहावत का प्रचलन और महत्त्व है। नहाते समय शरीर पर पानी तो ठहरता नहीं है। कान भीगे और स्नान संपन्न।

—सामान्यतया मंदिरों के पुजारी नित्यक्रिया की मजबूरी के कारण अल्ल सवेरे स्नान करते हैं यानी बेगार टालते हैं। एक औपचारिकता निबाहते हैं। फिर सर्दियों का स्नान तो रोम-रोम को कँपाने वाला होता है। इन पुजारियों के लिए यह कहावत बहुत ही उपयुक्त है।

पाठा : भीज्या कांन अर व्हियौ सिनांन।

धुर ठाकर कुत्ता रांम-रांम। ७०५६

धुर ठाकुर कुत्ता राम-राम।

संदर्भ-कथा : एक भाँबी ठाकुर के दर्शनार्थ घर से रवाना हुआ तो चलते-चलते सोचने लगा, यदि गढ़ में घुसते हुए पहिले कुत्ता मिल गया तो उसे दुत्कारकर बाद में अंदाता से झुककर राम-राम कर लेगा। एक ही वार में दो काम हो जाएँगे। नीच कुत्ते को दुत्कार और हुजूर को

सलाम। इस मंत्र का जाप करते हुए बड़े विश्वास के साथ लंबे-लंबे कदम भर रहा था। धुर कुत्ता, ठाकुर राम-राम। हुजूर भी उसकी होशियारी देखकर बड़े खुश होंगे। मन में पूर्णतया आश्वस्त होकर उसने गढ़ के दरवाजे में पाँव रखा ही था कि सामने अंदाता घोड़े पर चढ़े मिले। उनकी मरजी का कुत्ता घोड़े के पीछे-पीछे चल रहा था। झट आधा झुककर उसने बड़े विश्वास के साथ मंत्र दाग दिया—धुर ठाकुर कुत्ता राम-राम।

ठाकुर अपनी ही धुन में खरगोश के शिकार की बात सोच रहा था। भाँबी का अभिवादन अच्छी तरह सुना भी नहीं। यदि भूल से सुन भी लिया हो तो अच्छी तरह समझा नहीं। तनिक मुस्कराकर आगे बढ़ गया।

—सामंती व्यवस्था के दौरान यों गरीब रैयत प्रत्यक्ष रूप से तो शोषकों का विरोध करने में असमर्थ थी। पर हो सकता है व्यवस्था के साथ संस्कार नहीं भी बदले हों पर अप्रत्यक्ष रूप से अपने अवचेतन के द्वारा अपने शोषकों से पूरा बदला लिया हो। ऐसी उक्तियाँ उनके अवचेतन में दबा हुआ परोक्ष सत्य है कि नहीं, इस शंका का कौन समाधान करे?

धू चूकै तौ चूकै। ७०५७

धुव चूके तो चूके।

—उत्तर दिशा में सदा एक ही स्थान पर स्थित रहकर चमकने वाला धुव तारा अचल है, अटल है। उसके उगने में कभी चूक नहीं होती। जो व्यक्ति धुव तारे के उनमान अटल और अविचलित हो, अपने लक्ष्य के प्रति स्थिर हो, उसके लिए।

पाठा : धू डिगै तौ डिगै। डिगणौ = डगमगाना।

धूड़ ई खावौ तौ धोरां री ७०५८

धूल भी खाओ तो टीलों की।

—यदि किसी को धूल ही खानी है तो गली-गलियारों की गंदी-मैली धूल की बजाय ऊँचे टीलों की खाये।

—जो लंपट या दुराचारी निम्न जाति के गरीबों की गलियों में धूल चाटता हो तो चुनौती के रूप में उसके लिए यह कहावत दागी जाती है।

धूड़ खायां किसौ काळ भागै। ७०५९

धूल खाने से अकाल नहीं टूटता।

धूड़ खोदै सो खांड खावै । ७०६०

धूल खोदे सो खाँड खाये ।

—जो व्यक्ति किसी भी प्रकार की मेहनत से नहीं कतराएगा, मसलन धूल खोदने जैसा काम भी तबीयत से करेगा, उसे ही खाँड के समान मीठा फल मिलेगा ।

—जो मेहनत की मर्यादा समझेगा, मेहनत भी उसकी मर्यादा रखेगी ।

धूड़ छांणियां सूं कोई धन थोड़ौ ई मिळै । ७०६१

धूल छानने से धन थोड़े ही मिलता है ।

—धूल छानकर धन प्राप्त करने वालों की एक विशिष्ट जाति है—जिसे न्यारिया कहते हैं। जो स्वर्णकारों की भट्टी तथा अन्य स्थान की राख या धूल छानकर जीवन निर्वाह करते हैं। धन या सोने की बजाय ये धूल अधिक फाँकते हैं। इस तरह धन इकट्ठा होता तो बनिये सारे संसार की धूल छान मारते। पर वे तो पेढ़ी पर बैठे-बैठे ही लाखों के वारे-न्यारे कर लेते हैं ।

—अथक मेहनत करने पर अकिंचन मेहनताना मिले, तब ।

धूड़ टाळ धड़ौ नीं, कूड़ बिना झगड़ौ नीं । ७०६२

धूल के बिना धड़ा नहीं, झूठ के बिना झगड़ा नहीं ।

धड़ौ = तराजू का संतुलन करने हेतु तराजू के एक पलड़े में रखे हुए खाली बरतन के भार के बराबर दूसरे पलड़े में रखा जाने वाला पदार्थ। इसके लिए सबसे उपयुक्त है धूल। एक चिमटी बराबर भी संतुलन नहीं बिगड़ता ।

—सर्वथा अकिंचन व्यक्ति का भी ऐसा महत्त्वपूर्ण उपयोग हो सकता है, जिसे कोई भी बड़ा व्यक्ति संपन्न नहीं कर सकता ।

धूड़-धांणी अर धक्का पांणी । ७०६३

धूल-धानी और धक्का पानी ।

—जहाँ सर्वथा अव्यवस्थित और बिगड़ा हुआ काम हो ।

—कोई व्यक्ति किसी विशिष्ट काम के लिए जाय और रंचमात्र भी कामयाबी न मिले, तब ।

पाठा : धूड़-धांणी अर राख छांणी। धूड़-धांणी नै कोकला-पांणी।

कोकला = बिना छिलका उतारी हुई सूखी ककड़ी के छोटे टुकड़े। इससे नगण्य और अस्वादिष्ट सब्जी और कोई नहीं होती।

धूड़ पेलियां तेल निकळै नीं। ७०६४

धूल पेलने से तेल नहीं निकलता।

—गलत दिशा में किये हुए प्रयास का कोई फल न मिले तब।

—कंजूस व्यक्ति की चाहे जितनी चिरौरी की जाय उससे कुछ भी प्राप्त करना असंभव है।

धूड़ में रळियौ तौ फळै ई। ७०६५

धूल में मिला तो फलता ही है।

—जो व्यक्ति धूल में मिलकर बीज की नाईं अपना अस्तित्व मिटाने को तैयार है वह निःसंदेह फलीभूत होता है।

—घूरे पर जाये-जन्मे असहाय-अनाथ बच्चे वहीं पड़े नहीं रहते, खाद की फसल के उनमान बढ़ते हैं।

धूड़ में लट्ठ। ७०६६

धूल में लट्ठ।

—किसी काम के पार पड़ने की बिल्कुल आशा न हो तब इस कहावत का प्रयोग होता है कि बिना किसी पूर्व योजना के धूल में लट्ठ मारा था, पर वह अचीता पार पड़ गया।

—बिना लक्ष्य के यों ही धूल में कोई लट्ठ मारे और उस आकस्मिक प्रहार से कोई साँप या जहरीला सरीसृप मर जाये तो कहा जाता है कि खामखाह धूल में लट्ठ मारा और साँप मर गया। मतलब कि विघ्न टल गया।

—झूठा रुआब और आशंका दिखाकर अपना उल्लू सीधा करना।

धूड़ में सै धन बसै। ७०६७

धूल में ही सारा धन बसता है।

—कहने को ही धूल है पर इसके भीतर ही संसार का सारा धन बसा है—सब तरह का अनाज, फल-फूल, असंख्य वनस्पति, जंगल, अनगिनत रत्न, सोना-चाँदी, ताँबा, पीतल, लोहा

इत्यादि, सब प्रकार के खनिज पदार्थ, सामान्य और कीमती पत्थर, नमक और जल के स्रोत क्या नहीं है— माँ धरती की उर्वर कोख में। उसके दोहन पर नियंत्रण हो तो युगों तक यह संपदा समाप्त नहीं हो सकती।

धूड़ रा दो दांणा ई नीं। ७०६८

धूल के दो दाने भी नहीं।

—एक ही देह के भीतर जो व्यक्ति अनेक अवगुणों से भरा हो और जिस में रंचमात्र भी बुद्धि न हो, उसके लिए...।

पाठा : **अकल रा दो दांणा ई कोनीं।**

धूड़ रा पूळा नै खाखला रा बंध। ७०६९

धूल के पूले और भूसी के बंधन।

—कच्चे मकान या झोंपड़ी को गोबर-मिट्टी के पिंड बनाकर लीपा जाता है, जिस में भूसी मिली रहती है जो मिट्टी को बाँधकर रखने में सहायक होती है। गोबर-मिट्टी के पिंड घास के छोटे-छोटे पूलों की मानिंद प्रतीत होते हैं और भूसी बंधन का काम करती है।

—जो व्यक्ति जस-तस प्रपंच करके अपना टपारा चलाये, उसके लिए।

धूड़ री राहड़ी बंटै तौ नट्योड़ौ बांणियौ पटै। ७०७०

धूल की रस्सी बने तो इनकार किया बनिया हामी भरे।

—धूल की रस्सी बुनना असंभव है, उसी तरह एक बार जिस बनिये ने मना कर दिया, उसका मानना उतना ही दुश्वार है।

—यों बनिये से हटकर यह कहावत उस जिद्दी मनुष्य पर भी लागू हो सकती है, जो एक बार इनकार करने पर किसी के लाख समझाने पर भी न माने।

धूड़ री रोटी अर पांणी रौ लगावण बण जावै तौ बंदौ चूर-चूर खावै। ७०७१

धूल की रोटी अर पानी का लगावन बन जाय तो बंदा चूर-चूरकर खाये।

लगावण = वह खाद्य-पदार्थ, जिससे रोटी लगाकर खाई जाय।

—यदि ऐसा संभव होता तो मनुष्य को सिवाय खाने के और कुछ भी काम नहीं करना पड़ता। विकास की सारी यात्रा ही रुक जाती।

—निपट आलसी और अकर्मण्य की एकमात्र आकांक्षा कि धूल की रोटी और पानी का लगावन बन जाता तो उसकी उम्र निष्क्रियता के सहारे ही पार पड़ जाती।

—आलसियों की इस निराधार बात में भी गहरा तथ्य छिपा है कि संसार के समस्त भोजन व लगावन की तमाम संभावनाएँ धूल और पानी के ही भीतर छिपी रहती हैं।

धूड़ा उडै नैं धूळा बाजै। ७०७२

धूल-कण उड़ते हैं और रज-कण बजते हैं।

—जो राज्य-प्रशासन सर्वथा अविश्वसनीय हो जहाँ फकत बातों की ही आँधियाँ उड़ती हों और वातचक्र घूमते हों।

—जिस व्यक्ति की थोथी बातों में कुछ भी तथ्य नहीं हो।

धूणी-पांणी रौ सीर। ७०७३

धूनी-पानी का साझा।

—जो महात्मा बरसों से धूनी तप रहा हो, उसकी सफल साधना के परिणाम-स्वरूप उसकी सेवा-बंदगी करने वाला योग्यतम विश्वस्त शिष्य मिल जाय तब यह कहावत प्रयुक्त होती है कि धूनी-पानी के साझे का संयोग यों बैठता है।

—विभिन्न जातियों के दो अभिन्नतम मित्रों में सगे भाइयों की अपेक्षा अधिक आत्मीयता हो, तब!

धू'र में ल्याळी देखै ज्यूं कांई देखै? ७०७४

कोहरे में भेड़िये की नाईं क्या देख रहा है?

—बड़ा सूक्ष्म और गहरा निरीक्षण है—चारों दिशाओं में घना कोहरा छाया हुआ है। एवाड़े में भेड़ें मिमिया रही हैं। चारों तरफ मोटी बाड़ है। कोहरे में भेड़िये की हिंस्र आँखों का तेज छिप गया है। वह असमंजस में है, कहाँ से फाँदकर अंदर घुसे। एक मोटी-ताजी भेड़ को तो झपट ही लेगा। पता नहीं मालिक कहाँ होगा? उसके लट्ठ से क्योंकर बचा जाय?

—कोई दुराचारी या चोर धुंध के भेड़िये की नाईं इस तरह पैनी आँखों से देख रहा हो, उसके लिए।

धूळ खाये ज्यो धाई ने खाये ।– भी.४७६ ७०७५

जो धूल खाता है वही भरपेट भोजन पाता है ।

—धूल खाना यहाँ कड़े परिश्रम के लिए प्रयुक्त हुआ है ।

—बिना कड़ी मेहनत के मन-वांछित निर्वाह नहीं हो सकता ।

मि.क.सं.७०६०

धूळ मांये धन है, न्यारो नी ।– भी.४७७ ७०७६

धूल में ही धन है, अन्यत्र नहीं ।

दे.क.सं.७०६७

धूळ मांये धनाई नोपजे, भोग लागे भगवाने तांई दोस हणानो ।– भी.४७८ ७०७७

धूल में ही अन्न उपजता है, भगवान को भोग भी उसी का लगता है तब किस बात का दोष ?

—किसी का भी अन्न ग्रहण करने में कोई दोष नहीं है । भगवान से बड़ा तो मनुष्य भी नहीं । जब वह दोष नहीं मानता तो मनुष्य बेचारे की बिसात ही क्या है !

—किसी के अन्न का अनादर करने वाला मनुष्य कहीं समादृत नहीं हो सकता ।

धूवां री पोट नीं बंधै । ७०७८

धूएँ की गठरी नहीं बँधती ।

—कोई व्यक्ति शेखचिल्ली की नाईं किसी असंभव काम की आकांक्षा करे तब ।

—जिस तरह धूएँ की गठरी नहीं बँध सकती, उसी तरह मनुष्य के मन की दुर्भावनाओं का पता नहीं चल सकता ।

—कोरे मनसूबों से किसी भी काम में सफलता नहीं मिलती ।

धेड़ में धमाक तौ छाती-छल्लौ ई देवै । ७०७९

कुएँ में धमाक तो अपरबली ही दे सकता है ।

—खतरे का काम तो कोई जबरदस्त बंदा ही कर सकता है ।

—वीरत्व का साहसी काम तो कोई पराक्रमी ही कर सकता है ।

—कोई बोहरा बाप-दादों के मौसर (मृत्यु-भोज) में खतरा झेलकर भी सहयोग के लिए आँखें मूँदकर कूद पड़े, तब...।

—जो व्यक्ति अपना भला-बुरा न सोचकर दूसरों की सहायता करे उसके लिए।

धेला अेक रौ कांम नीं, घड़ी अेक री वेळा नीं। ७०८०

धेले का काम नहीं, घड़ी भर की फुर्सत नहीं।

—जिस निठल्ले व्यक्ति के पास धेले भर का काम नहीं, फिर भी दूसरों के लिए घड़ी-आध-घड़ी का समय नहीं निकाल सके।

—जो व्यक्ति स्वार्थ और परमार्थ दोनों के लिए, किसी काम का न हो।

दे.क.सं.५५०७

पाठा: **धेला री कमाई कोनीं, पलक री बिसाई कोनीं।**

टकै री कमाई कोनीं, टुकयक री बिसाई कोनीं।

धेला री डोकरी नै टकौ मूंड मुंडाई रौ। ७०८१

धेले की बुढ़िया और टका सिर मुँडाई का।

दे.क.सं.४६६४

धेला री न्यूंतार, थांभ रै बाथ घालै। ७०८२

धेले की न्योतिहार, थंभे को हाथ डाले।

—राजस्थान में शादी के मौके पर मित्रों व परिजनों की तरफ से लड़की या लड़के के पिता को रिवाज के रूप में कुछ नकद रुपये दिये जाते हैं जिसे 'न्योता डालना' कहते हैं। जो व्यक्ति धेले का न्योता डालकर ऐसा दिखावा करे, जैसे शादी के खर्च का सारा भार वही उठा रहा हो।

—जो व्यक्ति अकिंचन सहयोग करके बड़ा भारी एहसान जताये, तब!

धेला री रांड। ७०८३

धेले की राँड!

—जिस औरत में कौड़ी के भी लक्षण न हों।

—बेहूदी औरत के लिए।

पाठा : टका री रांड।

धेला री हांडी फूटी अर कुत्ता री जात पिछांणी। ७०८४

धेले की हँडिया फूटी और कुत्ते की जात पहिचानी।

दे.क.सं.५५१२

धेलै रौ मुहताज, मांडै गमाई लाज। ७०८५

धेले का मोहताज, माँडे में गँवाई लाज।

मांडौ = विवाह के लिए बनाया हुआ मंडप।

—जब वर पक्ष वाले कंजूसी की वजह से विवाह में वांछित व्यय न करें तो उपहास की बातें सुनकर उन्हें लज्जा का अनुभव तो होता ही है।

धेलौ नीं कौडी, कांन विंधावण दौड़ी। ७०८६

न धेला न कौड़ी, कान बिंधाने दौड़ी।

—कान छेदन एक संस्कार है। छोटी-बच्ची के कान छेदन में स्वजनों को आनंद से भोजन कराना पड़ता है। बच्ची के कानों में सोने की बालियाँ पहिनाई जाती हैं। सुनार को नेग दिया जाता है। पैसा खर्च करने की तनिक भी गुंजाइश नहीं है.फिर भी आकांक्षा प्रबल है। कान छेदन के लिए व्याकुल है,फलस्वरूप उपहास की पात्र है।

—वांछित सामर्थ्य के अभाव में जब कोई बड़ा काम करे तब धनाढ्य लोग उस पर कटाक्ष करते हुए इस उक्ति का प्रयोग करते हैं।

—पारस्परिक स्पर्धा की होड़ में अभावग्रस्त व्यक्ति साधन-संपन्न व्यक्तियों की देखादेखी करना चाहे,तब।

धेलौ व्है तौ खुणखुणियौ मोलाईजै। ७०८७

धेला हो तो झुनझुना बजाये।

—सर्वत्र रुपये की झंकार का ही संगीत है। यदि दुर्भाग्य से पैसा नहीं है तो बच्चा झुनझुने की खनखनाहट से भी महरूम रह जाता है। पैसे वाली माँ का बच्चा ही झुनझुना बजा सकता है।

दे.क.सं.२६९८,२६९९,५५१५

धेलौ व्है तौ गीगौ घूघरां रमै । ७०८८

धेला हो तो बच्चा घुँघरू बाँधकर नाचे ।

—पैसे की अपूर्व लीला से ही बच्चे के हाथ में झुनझुना बजता है और उसके पाँवों में घुंघरू खनकते हैं । पैसा नहीं है तो घुँघरुओं की खातिर रोना ही गरीब बच्चे के भाग्य में बधा है । गरीब का कन्हैया मक्खन की बात तो दरकिनार बासी टुकड़ों के लिए भी तरसता है ।

मि.क.सं.७०८७

द्यै जिकै नै बेटा ई द्यै , नहीं जिकण रै बेटी रौ ई सांसौ ।–व.२८ ७०८९

दे जिसे बेटे ही दे, न दे उसे बेटी का भी संशय ।

—अकसर यह कहावत ईश्वर के लिए प्रयुक्त होती है कि वहाँ भी ऐसी ही धाँधली है । जिसे दे उसको बेटे-ही-बेटे और न दे तो उसे कानी बेटी भी नहीं । उस 'बड़े घर' में भी न्याय नहीं है । कहीं अतिवृष्टि तो कहीं सूखा ।

—जो मन-मौजी मन करे तो बिन माँगे किसी को लुटा दे और इच्छा न हो तो माँगने पर भी धेला न दे ।

पाठा : **दे जिणनै छोरा ई छोरा अर नीं दे उणनै कांणी डीकरी रौ ई रोवणौ ।**

धैळिया री खुरचण । ७०९०

धैलिये की खुरचन ।

धैळिया = मिट्टी का बना बड़ा पात्र,मोटी हँडिया ।

—खीच,दलिया,घाट की खुरचन भी बड़े पात्र में शेष हो तो वह पेट भरने के लिए पर्याप्त है ।

—बड़े कारोबार में एकाध व्यक्तियों का गुजारा आसानी से हो जाता है ।

पाठा : कड़ाव री खुरचण ।

धोतिया लेवतां पोतिया पड़ै , रावळौ तेड़ौ इज अैड़ौ । ७०९१

धोती पहिनते साफे गिरते हैं, राज का बुलावा ऐसा ही होता है ।

—राज्य का सम्मन या बुलावा आने पर होश फाख्ता हो जाते हैं । साफा बाँधों तो धोती गिर पड़ती है, धोती पहनो तो साफा खुल जाता है ।

—राज्य के भय से बड़े-बड़े आदमी भी आतंकित हो जाते हैं।

पाठा : धोतियौ उठावै जित्तै पोतियौ पड़ जावै, राज रौ डर हियै नीं मावै।

धोती में सैंग ई नागा है। ७०९२

धोती में सब नंगे हैं।

—प्रत्येक व्यक्ति में गुण भी होते हैं और अवगुण भी। पर यह मानवीय स्वभाव है कि वह अपने गुणों का तो प्रदर्शन करता है और अवगुणों को छिपाता है। पर आवरण के भीतर तो सभी नंगे हैं। इस चरम सत्य की जानकारी सबको है, फिर भी सब उसे छिपाने का यत्न करते हैं।

—ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जिस में दोष न हों।

—कमोवेश हर आदमी स्वार्थी होता है। दुराचारी होता है।

दे.क.सं. ३४८४

धोती सूखै अंबर। ७०९३

धोती सूखे अंबर।

—जिन व्यक्तियों के लक्षण तो जमीन पर चलने लायक नहीं हैं पर आकाश में धोती सुखाने की डींग मारते हैं, उनके लिए।

—या पहुँचे हुए महात्माओं के लिए जो अपनी भक्ति के जोर पर असंभव कार्यों को भी संभव बना देते हैं।

धोबण सूं के तेलण घाट, उणरै मोगरी, उणरै लाठ। ७०९४

धोबिन से क्योंकर तेलिन घाट, उसके मोगरी, उसके लाठ।

—यह कहावत अमूमन बुराइयों के लिए भी प्रयुक्त होती है—जब यह तय करना पड़े कि दो व्यक्तियों की तुलना में कौन अधिक बुरा है।

—जब दो व्यक्ति एक-से-एक बढ़कर बुरे हों, उनके लिए।

—बड़ी समस्या आ पड़ती है जब यह तय करना पड़े कि नेता बुरे हैं या नौकरशाह—तब यह उक्ति समस्या का समाधान करने में सहायक होती है।

मि.क.सं. ६१११

धोबियां सूं किसा घाट छांना। ७०९५

धोबियों से कौन-सा घाट छिपा हुआ है।

—वे तो घाट-घाट के पानी की थाह लिये हुए हैं—कहाँ कितना गहरा है—कहाँ कितना छिछला है। कहाँ कितना स्वच्छ है, कहाँ कितना गँदला है।

—किसी होशियार व्यक्ति की योग्यता के प्रति संदेह करने पर वह इस कहावत को प्रमाण-स्वरूप प्रस्तुत करता है।

—अनुभवी व्यक्ति के लिए जिसने घाट-घाट का पानी पिया है।

धोबी-घाटै हालौ के माथौ पिछांटां। ७०९६

धोबी-घाट चलते हो कि माथा पछाड़ें।

—जिस व्यक्ति के पास धोने को कपड़े ही न हों, वह धोबी-घाट चलकर क्या अपना सिर पछाड़ेगा।

—निपट अभावग्रस्त व्यक्ति के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

धोबी-बेटा चांद-सा, मोचड़ी अर पट्टा। ७०९७

धोबी-बेटा चाँद-सा, जूता और पट्टा।

—दूसरों के सफेद-बुर्राक कपड़े पहिनकर धोबी का बेटा चाँद-सा सुंदर दिखता है। रुआब से घूमता है। अपना कहने को पाँवों में जूते और माथे के बाल उसके अपने हैं—बाकी सारा ठाट-बाट दूसरों का है।

—जो व्यक्ति दूसरों की कमाई पर झूठी शान दिखाये। मौज उड़ाये, उसके लिए।

पाठा : धोबी रौ जायौ, चांद सो ऊजळौ।

धोबी री गधी, घर-घर लदी। ७०९८

धोबी की गधी, घर-घर लदी।

दे.क.सं. २४७७

धोबी री मोगरी व्है ज्यूं। ७०९९

धोबी की मोगरी हो जैसा।

मोगरी = धोबियों के कपड़े धोने हेतु लकड़ी का उपकरण।

—जो व्यक्ति ठिगना और हृष्ट-पुष्ट हो।

धोबी री हांती गधौ ई खावै। ७१००

धोबी की हाँती गधा भी खाये।

हांती = विवाहादि कुछ विशिष्ट अवसरों पर बनने वाले विशिष्ट खाद्य-पदार्थ का वह अंश जो पड़ोसियों, सगे-संबंधियों एवं बंधु-बांधवों में बाँटा जाता है।

—धोबी के लिए गधा बहुत उपयोगी प्राणी है। घर-परिवार के निर्वाह का माध्यम। पशु या मनुष्य, चाहे रक्त-संबंधी ही क्यों न हो, जो कमाकर देता है, वही प्रिय है। इसलिए धोबी की हाँती का अधिकारी गधा भी है।

—उपयुक्त प्राणी को उसका प्राप्य मिले, यही न्याय-संगत है।

धोबी रै धाड़ पड़्यां खलकां नै घाटौ। ७१०१

धोबी के घर डाका पड़ने पर दूसरों को घाटा।

—धोबी के घर में धन होता है—दूसरों के नये-पुराने कपड़े। उसके घर में चोरी हो या डाका पड़े तो उसे कुछ भी हानि नहीं होती। जिनके कपड़े हैं, उन्हें ही नुकसान पहुँचता है।

—किसी व्यक्ति के घर या प्रतिष्ठान में दुर्घटना होने पर सारी क्षति दूसरों की ही हो, तब!

पाठा : **धोबी रै घर में बड़ग्या चोर, डूब्या और ई और।**

धोबी रै बसौ भलांई कूंभार रै, गधौ तौ लदसी। ७१०२

धोबी के यहाँ रहे या कुम्हार के घर, गधा तो लदेगा।

—मजदूर कहीं मजूरी करे, सर्वत्र मेहनत तो उसे ही करनी पड़ती है।

—गरीब व्यक्ति कहीं भी चाकरी करे, वह शोषण से बच नहीं सकता।

धोबी रौ कुत्तौ घर रौ नीं घाट रौ। ७१०३

धोबी का कुत्ता न घर का, न घाट का।

—धोबी का कुत्ता आधे दिन घर पर रहता है और आधे दिन घाट पर। उसका कोई स्थिर ठिकाना नहीं होता, जिसे वह अपना कह सके।

—जो व्यक्ति न दीन का रहे न दुनिया का।

—जिस व्यक्ति का कोई खास ठिकाना न हो।

पाठा : धोबी रौ गधौ, घर रौ नीं घाट रौ।

धोयां सूं घर धोळौ नीं व्है। ७१०४

धोने से घर उजला नहीं होता।

—जिस घर में निकृष्ट करतब होते हों, वह धोने से उजला नहीं होता। कलंक नहीं मिटता।

—घर को सजाने से उसकी शोभा नहीं बढ़ती, परोपकार या दानपुण्य से बढ़ती है।

—घर में सुलक्षणा बहू और शांति से शोभा बढ़ती है।

धोरां री ध्रोब खूंटै ज्यूं बधै। ७१०५

नाले की दूब खूँटने पर अधिक बढ़ती है।

—नाले के दोनों किनारे बहते पानी के कारण आर्द्र रहते हैं। उन पर उगी दूब तोड़ने से अधिक बढ़ती है।

—जिस तरह नाले की दूब तोड़ने से अधिक बढ़ती है, उसी प्रकार धन को दान-पुण्य या धर्मार्थ लगाने से वह घटने की अपेक्षा बढ़ता ही है।

धोरां रै तौ रेत ई उडै। ७१०६

टीलों से तो रेत ही उड़ती है।

—बुरे काम करने पर तो बदनामी ही फैलती है।

—बुरे व्यक्ति से अच्छे काम की आशा रखना व्यर्थ है।

धोरा किण री कांण राखै, चढ़तां दौरा तौ उतरतां सौरा। ७१०७

टीले किसी का लिहाज नहीं रखते, चढ़ते हुए कठिन तो उतरते हुए आसान।

—चाहे अमीर चढ़े या गरीब, चाहे राजा चढ़े या रंक दोनों के लिए चढ़ना मुश्किल और उतरना आसान।

मि.क.सं.६८७७

धोरा री ढाळ ही अर कीं भाजण री भायड़ ही। ७१०८

कुछ तो टीले की ढलान थी और कुछ दौड़ने की इच्छा थी।

दे.क.सं.६८७८

धोळी भेंता जाहो जेरा खबर पड़ हैं।– भी.४७९ ७१०९

कचहरी जाओगे, तब खबर पड़ेगी।

—राजकीय इमारतों के अलावा प्राय: गाँवों के सारे मकान कच्चे, मिट्टी-गोबर से लिपे होते थे। एक-सा मटमैला रंग। फकत राजकीय-भवन पक्के और सफेदी से पुते होते थे। इस उक्ति में 'धोळी भेंता' यानी सफेद दीवारों से इन्हीं इमारतों की ओर संकेत है।

—कचहरी जाने पर जब सजा सुनाई जाएगी, तभी अपराध का पता चलेगा कि अपराध करना कितना बुरा है!

द्यौं री रांड खासड़ा री, सो दिन कौ निग दिन थारै पगे खासड़ा हुवै।– व.३०९ ७११०

देऊँ राँड के जूते की, वही शुभ दिन उगे के तेरे पैर में जूता हो।

दे.क.सं.६७९१

धौळां नै धीरज दो। ७१११

धवलों को धीरज दो।

—सफेद बालों को अब तो धीरज दो, विश्राम दो।

—ढलती उम्र में भी जो व्यक्ति दिन-रात परिश्रम करे, उसके लिए।

—वृद्धावस्था में जो व्यक्ति कामुकता पर अंकुश न रख सके, उसके लिए।

धौळा केस गेला में पड़्या नीं लाधा। ७११२

सफेद बाल गलियारे में पड़े नहीं मिले।

—विभिन्न अनुभव, ज्ञान, संघर्ष और मंथन करने पर ये सफेद झाग आये हैं, किसी गलियारे में हाथ नहीं लगे। इसलिए नई पीढ़ी को बुजुर्गों की उपेक्षा न करके उनसे उचित लाभ उठाना चाहिए।

—अनुभव और परंपरागत ज्ञान ही मनुष्य-समाज की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि है।

धौळा तौ धरम रा, काळा तौ करम रा। ७११३

धवल तो धर्म के, काले तो कर्म के।

—वृद्धावस्था में सफेद बाल आने पर धर्म के कामों में लगना ही श्रेयस्कर है और जब तक सिर में काले बाल रहें कर्म और उद्यम में व्यस्त रहना ही उपादेय है।
—हर उम्र का अपना-अपना औचित्य है।

धौळा धाड़ आई के मुस्कल धणियां नै । ७११४
हे बैल, डाकू आये कि मुश्किल मालिकों को।
दे.क.सं.६९७१

धौळा माथै काळा मांडणा। ७११५
सफेद पर काले माँडना।
—सफेद कागज पर काले अक्षर अंकित करना, यानी बही की लिखावट पर कर्जदार के अँगूठे का निशान लगवाना। यमराज के जाल में अच्छी तरह फँसाना।
—बोहरे की बही कर्जदारों की लिए उम्र कैद है।

धौळा माथै तौ दाग लागै ई। ७११६
सफेद पर तो दाग लगता ही है।
—स्वच्छ और नेक व्यक्ति पर दाग स्पष्ट नजर आता है। यानी उसकी बदनामी पर लोगों का ध्यान पहिले जाता है।
पाठा : धौळा माथै लाग्योड़ौ दाग झट निगै आवै।

धौळिया रा पच्चीस। ७११७
सफेद बैल के पच्चीस।
संदर्भ-कथा : एक गरीब किसान को हमेशा आर्थिक तंगी रहती थी। रुपयों की लालसा कभी मिटती ही नहीं थी। बैलों की अच्छी जोड़ी थी उसके पास। एक रात उसे सपने में बैलों का व्यापारी मिला। साँवला बैल मजबूत और उम्र में कम था और सफेद थोड़ा कमजोर और अधिक उम्र का था। व्यापारी को एक बैल ही खरीदना था। उसे साँवला बैल ही पसंद आया। पर कीमत साठ रुपये ज्यादा लगी। हुज्जत करने में किसान की आँख खुल गई। व्यापारी

कहीं नजर नहीं आया । किसान को रुपयों की सख्त जरूरत थी । आँखें बंद करके हाथ बढ़ाते बोला—सफेद बैल के तो पच्चीस ही हैं, यही ले लो ।

—गरीबों के जीवन की आशाएँ कभी पूरी नहीं होतीं, मृगमरीचिका की नाईं सपनों में भी छलती रहती हैं ।

पाठा : धौळिया रा तौ पच्चीस ई कोनीं ।

धौळिया रै जोड़ै गोरियौ बैठै, रंग नीं लेय लखण तौ लेवै । ७११८

सफेद के पास लाल बैठे, रंग न ले लक्षण तो लेता ही है ।

दे.क.सं.२२५२

धौळीयां री सरम धवळीया राखै ।–व.१०६ ७११९

सफेद बालों की शर्म बैल रखते हैं ।

—यांत्रिक उपकरणों के पहिले बैल ही खेती के सर्वोत्तम माध्यम थे । उनसे ही घर-परिवार का सारा निर्वाह होता था । घर की मर्यादा और बुजुर्गों की पारिवारिक जिम्मेदारी बैलों की वजह से ही निभती थी । बोहरे का कर्ज भी उन्हीं की वजह से उतरता था, वरना सफेद बालों में धूल पड़ना स्वाभाविक था ।

पाठा : **धौळां री लाज धौळिया राखै** । धवळिया = धौळिया = बैल ।

धौळै बेपारां तारा दीठा । ७१२०

दोपहर के उजाले में तारे दीखे ।

—असहनीय कष्टों के मारे दोपहर को भी आँखों के सामने अँधेरा छा जाता है और उस अँधेरे में तारे चमकते नजर आते हैं ।

—जिस दुर्निवार दुख का निवारण ईश्वर भी न कर सकता हो ।

धौळौ-धौळौ सै दूध नीं हुवै । ७१२१

सफेद-सफेद सब दूध नहीं होता ।

—कुछेक जहरीले पदार्थों का रंग भी दूध की नाईं सफेद होता है पर वे सेवन के योग्य नहीं होते, घातक होते हैं ।

—भले व्यक्ति को सब भले-ही-भले नजर आते हैं सो उचित नहीं।

ध्राव नै कांई ठा के खेत सगां रौ है। ७१२२

ढोर को क्या पता कि खेत रिश्तेदारों का है।

—इसलिए वह किसी के भी खेत में मुँह मार सकता है। उसे तो बस हरी फसल दिखनी चाहिए।

—स्वार्थी के लिए मित्रता, आत्मीयता या दुश्मनी कुछ भी माने नहीं रखती, बस उसका मतलब पूरा होना चाहिए।

—ढोर के उनमान मूर्ख व्यक्ति घरवालों का भी भला-बुरा नहीं सोचता।

—कामुक व्यक्ति की अंधी आँखें अपने-पराये का भेद नहीं करतीं।

नं - न

नंद कळा आगे देव नासै ।–व.११५ ७१२३

नंद की कला के सामने देव नहीं टिकते ।

नंद = गोकुल के गोपों का मुखिया, जिसके यहाँ श्रीकृष्ण का जन्मकाल बीता था । वे अत्यंत सत्पुरुष थे । पर उनके घर अवतारी श्री कृष्ण झूल रहे थे । जिनके चमत्कार से सुर-असुर दोनों घबराते थे । नंदजी की सज्जनता भी इस कारण दूसरी कलाओं से कम नहीं थी । श्रीकृष्ण का वहाँ पलना भी एक बहुत बड़ी कला थी, चमत्कार था । देवता भी उसका सामना नहीं कर पाते थे ।

नंद रा फंद गोविंद पिछांणै पण गोविंद रा फंद कुण ई नीं जांणै । ७१२४

नंद के फंद गोविंद जाने पर गोविंद के फंद कोई न जाने ।

—गोविंद यानी श्रीकृष्ण तो नंदजी के सारे भेद जानते थे, उनकी सारी माया जानते थे । पर गोविंद की माया कोई नहीं जानता ।

—अत्यधिक होशियार व्यक्ति के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है ।

पाठा : अंध रा फंद गोविंद पिछांणै पण गोविंद रा फंद कुण ई नीं जांणै ।

धृतराष्ट्र का भेद तो कृष्ण जानते हैं पर कृष्ण का भेद कोई नहीं जानता ।

नंह आगै नाथ, नंह लारै दांवणौ । ७१२५

न आगे नाथ न पीछे पगहा ।

नाथ = पशुओं के नाक की रस्सी । दांवणौ = पगहा = पशुओं के पैर बाँधने का बंधन ।

—यह कहावत उस व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होती है जो पूर्णतया स्वछंद हो। जिसके आगे पीछे कोई न हो। न मित्र और न कोई सगा-संबंधी। न परिवार की चिंता हो और न कमाई की।

—लावारिस व्यक्ति के लिए।

नंह तीन में, नंह तेरा में। ७१२६

न तीन में, न तेरह में।

—ऐसा व्यक्ति जो किसी गिनती में न हो। यह कहावत ऐसे मौके पर प्रयुक्त होती है कि जो व्यक्ति अपना कोई वजूद न होने पर भी बिना पूछे हर काम में अपनी राय दिये बगैर न माने और लोग परवाह न करके उलटे उसकी खिल्ली उड़ाएँ।

नंह दातळौ आंतरै अर नंह पाड़ौसण रौ नाक। ७१२७

न हँसिया दूर और न पड़ोसिन की नाक।

संदर्भ-कथा: एक पत्नी को अपने पति के आचरण पर संदेह था कि पड़ोस की औरत से उसके अवैध संबंध हैं। पति के मन में अपराध बोध तो था ही। हर बार धीमे-धीमे स्वर में प्रतिवाद करता। पर पत्नी की आशंका त्यों-त्यों बढ़ती रही। आखिर उसने क्रुद्ध होकर कहा—ऐसे ही सत्यवादी बनते हो तो उसका नाक काटकर बताओ। न हँसिया दूर है और न उसका घर। पति लज्जा-वश दाहिने पैर से धूल कुचरने लगा। तब पत्नी फुफकारती हुई हँसिया लेकर लौटी। पड़ोसिन के घर की ओर बढ़ते कहने लगी—भला तुम उसका नाक क्यों काटने लगे? रोज नारियल और गुड़ खिलाते हो। शर्म नहीं आती। मैं काटूँगी उसका नाक। दिल मेरा जल रहा है। पति के हाथ-पाँव फूल गये। हकलाते सारा कसूर मान लिया। अंत में कहा—नाक ही काटनी है तो मेरी काट। उसकी काटने से तुझे सजा होगी। पत्नी हँसिया दिखाते बोली—यदि अब उस घर में पाँव रखा तो दोनों के नाक काटकर कुठौर घुसेड़ दूँगी।

—कोई झूठा व्यक्ति अपनी सफाई के लिए कुछ भी प्रमाण बताने में असमर्थ हो तब!

नंह हाथ सूं पड़ै लूण, नंह पात सूं गिरै चूंन। ७१२८

न हाथ से पड़े लौन, न पात्र से गिरे चून।

—निपट अयोग्य व्यक्ति के लिए जिसकी न तो कोई माने और न वह किसी के रंचमात्र भी काम आये।

—जो व्यक्ति सब तरह से नाकाबिल हो। भारी कंजूस के लिए भी।

नई नां डींगा हरखो नमी ने रेवूं।– भी.४८० ७१२९

नदी में लंबी घास की नाईं झुककर रहना चाहिए।

—वह झुककर रहती है, इसीलिए अपनी सुरक्षा कर लेती है। वरना एक ही थपेड़े में उखड़ जाती। अपने बड़प्पन का उसे तनिक भी गर्व-गुमान नहीं है। मनुष्य को भी चाहिए कि वह भी विनम्र बनकर अपना निर्वाह करे,तभी वह निर्विघ्न जीवन बिता सकेगा।

—विनम्र व्यक्ति की किसी से दुश्मनी नहीं होने पर वह आराम से अपना जीवन बसर कर लेता है।

पाठा : **निंवण बड़ी संसार में, नहिं निंवै सो नीच।** निंवण = विनम्रता।

नकद तौ कैवै 'जी', खा खीचड़ी अर घी। ७१३०

नकद तो कहे 'जी', खा खिचड़ी और घी।

—धनवान व्यक्ति विनम्र होता है। शिष्टाचारी होता है। आदर से पेश आता है। वह जहाँ कहीं भी जाता है,सभी उसका यथायोग्य सत्कार करते हैं। घी-खिचड़ी खिलाते हैं।

नकद नांणौ, वींद परणीजै कांणौ। ७१३१

नकद नाणा, दूल्हा ब्याहे काना।

नांणौ = पूँजी। रुपया।

दे.क.सं.३९४९

नकल में अकल रौ कांई कांम? ७१३२

नकल में अक्ल का क्या काम?

—अक्ल तो मौलिकता में अनिवार्य है,नकल में उसकी जरूरत नहीं। फिर व्यर्थ मगज लड़ाने में क्या तुक!

नकल में ई अकल चाहीजै। ७१३३

नकल में भी अक्ल चाहिए।

—बुद्धि न हो तो नकल करना भी कठिन है।

—बुद्धि तो छोटे-बड़े सब काम में अपरिहार्य है।

नख आंगळियां सूं न्यारा कोनीं । ७१३४

नाखून अंगुलियों से अलग नहीं ।

दे.क.सं.४५७

नख काट्यां कद मुड़दा हळका व्है । ७१३५

नाखून काटने से मुर्दे कब हलके होते हैं ।

दे.क.सं.२६२३

नख दियां लोही आवै । ७१३६

नाखून छूते ही लहू आये ।

—निहायत सुंदर गोरी-चिट्टी युवती के लिए जो इतनी सुकोमल है कि नाखून छूते ही उसके देह से लहू चू पड़ता है ।

नखरा रा नौ टका, बेच्यां बटै नीं बे टका । ७१३७

नखरे के नौ टके, बेचने पर न मिलें दो टके ।

—जो कुरूप स्त्री नखरों की चीजों पर अधिक खर्च करे और सुंदरता में तनिक भी वृद्धि न हो,उस पर कटाक्ष ।

—परिष्कृत लोग श्रृंगार और कृत्रिमता की अपेक्षा नैसर्गिक रूप को अधिक पसंद करते हैं, उनकी दृष्टि में नखरों का कोई मूल्य नहीं होता ।

नखरा री घाल्यां ई मथरा जावै । ७१३८

नखरों के मारे ही मथुरा जाये ।

— अति सामान्य औरत,जिसे अपनी सुंदरता का काफी भ्रम हो,जो प्रसाधन की महँगी सामग्री से अपना बनाव श्रृंगार करती हो । और मथुरा जाकर गोपिकाओं के अपूर्व सौंदर्य से होड़ लेना चाहती हो,उस पर कटाक्ष ।

—कृत्रिम रूप से सजाया सौंदर्य,नैसर्गिक देह-यष्टि का मुकाबला नहीं कर सकता ।

—जिस व्यक्ति ने अपनी योग्यताओं के प्रति बहुत ज्यादा वहम पाल रखा हो ।

नखरौ नायण रौ, बतळावणौ ब्यायण रौ । ७१३९

नखरा नाइन का, बातचीत समधिन की ।

—नाइन घर-घर में काम करने के कारण चतुर हो जाती है। नजाकत का प्रभाव समझती है और उसे जब-तब आजमाती है। जब यह दूसरी औरतों को बनाव-शृंगार कराती है, तब स्वयं पीछे क्यों रहे? समधिन बातचीत सलीके से करती है। उसकी जबान में मिठास घुला रहता है।

नखलेणी तीखी व्है तौ नख वाढ़ै, माथौ कद वाढ़ीजै। ७१४०

नखलेनी तीखी हो तो नाखून काटे, सिर थोड़ा ही काट सकती है।

—हर आदमी के काम करने का अपना बूता होता है और अपने बूते के अनुसार ही काम संपन्न करता है।

—कम योग्यता वाला व्यक्ति बड़ा काम नहीं कर सकता।

नखां आंगळी चेटी।– भी.४८१ ७१४१

नाखूनों से अँगुली दूर रहती है।

—नाखून अँगुली से चिपके रहने के बावजूद दूर हैं। क्योंकि उन में प्राकृतिक विभिन्नता है। बहुत सारी वस्तुएँ ऐसी होती हैं जो एकदम पास होने पर भी एकात्म्य स्थापित नहीं कर सकतीं।

—जो व्यक्ति जितने अभिन्न हैं, उतने ही परस्पर एक दूसरे को समझने में असमर्थ होते हैं। पास होते हुए भी दूर हैं।

—दूसरा अर्थ यह भी है कि एक ही कुटुंब के व्यक्तियों में कैसी दूरी! वे दूर होने पर भी पास हैं।

—दो व्यक्तियों की अभिन्न मैत्री को लक्ष्य करके यह कहावत प्रयुक्त होती है।

पाठा : **नख आंगळियां कैड़ी छेती।**

नखेक जोगण नै पूनां तणी जटा। ७१४२

नन्हीं-सी जोगन कूल्हों तक जटा।

दे.क.सं. २२१४

नग जलम्या है! ७१४३

रत्न जन्मे हैं!

—कैसी अजीब औलाद जन्मी है !

—किसी बड़े व्यक्ति की बिगड़ी औलाद के प्रति कटाक्ष !

नगटां रै किसी पूंछ होवै ? ७१४४

नकटों के पूँछ थोड़े ही होती है ?

—बेशर्म व्यक्ति की पहिचान उसकी शारीरिक बनावट या किसी विशिष्टता से नहीं होती, उसकी करतूतों से होती है।

—मनुष्य को परखने की कसोटी उसका आचरण और व्यवहार है। बरतने पर ही बेशर्म व शालीन व्यक्ति की परख होती है।

नगटाई आगै लांठा ई लटका करै। ७१४५

नकटाई के सामने बड़े लोगों को भी झुकना पड़ता है।

—बेशर्म व्यक्ति तो अपनी बदनामी सुनकर और भी खुश होता है, पर शालीन व्यक्ति को तो कदम-कदम पर अपनी मर्यादा का खयाल रहता है, इसलिए उसे हर कदम सोच-समझ कर रखना पड़ता है कि कहीं भूल-चूक से भी उसकी बदनामी न हो जाये। और यही बेशर्म के हाथ में जीतने का दाँव है।

नगटाई तैरवौं रतन। ७१४६

नकटाई तेहरवाँ रत्न।

—निर्लज्ज व्यक्ति पीछे पड़कर किसी से भी अपना काम निकलवा लेता है। यह कोई मामूली विद्या नहीं है। विशिष्ट विद्या है।

—मानव समाज में डर ही बदनामी का होता है और नकटे को बदनामी से कोई वास्ता ही नहीं और उसकी सफलता का यही राज है।

नगटाई थारौ ई आसरौ। ७१४७

नकटाई तेरा ही आसरा है।

—जब सब हथकंडे असफल हो जाते हैं, तब एक मात्र सहारा बेशर्मी का ही बच रहता है। जिसने कभी असफलता नहीं जानी।

—निर्लज्जता का ब्रह्मास्त्र कभी खाली नहीं जाता।

नगटाई धारयोड़ा रौ कीं औखद नीं। ७१४८

नकटाई धारण किये हुए की कोई औषधि नहीं।

—लोग-बाग अपराध से इसीलिए डरते हैं कि उससे बदनामी फैलती है। सजा मिलती है। कठिन दंड भोगना पड़ता है। पर निर्लज्ज को न बदनामी का डर, न सजा या दंड का। उसके लिए तो यही सहायक है।

नगटाई रा कैड़ा आंक ? ७१४९

नकटाई के कैसे लेख ?

—कहते हैं भाग्य में लिखा मिटता नहीं। किंतु लेख लिखने वाली विधात्री तो स्वयं नकटों से डरती है, उनके भाग्य में कुछ भी लिखना उसके लिए संभव नहीं। वे सर्वथा भाग्य की लिखावट से मुक्त हैं।

नगटाई रा नव खूंटा। ७१५०

नकटाई के नौ खूँटे।

खूंटौ = जमीन में गड़ी लकड़ी जिससे पशु बाँधे जाते हैं।

—मानव समाज में मर्यादा और रीति-रिवाज ही सबसे बड़ा बंधन है, जिससे मनुष्य उच्छृंखल नहीं होता। मर्यादा के खूँटे से मनुष्य बँधा रहता है पर नकटे या बेशर्म व्यक्ति के लिए ऐसा कोई एक खूँटा नहीं होता, जिससे वह बँधा रहे। उसकी बेशर्मी के तो नौ खूँटे होते हैं। जब चाहे अपना खूँटा बदल ले यानी कोई नया बहाना खोज ले।

पाठा : नगटाई रा दोय खूंटा।

नगटाई ली खांधै अर पांणी री पोटां बांधै। ७१५१

नकटाई ली काँधे और पानी की गठरी बाँधे।

—बेशर्मी को कंधे पर धारण किया, फिर कैसी अड़चन ? जितना चाहे झूठ बोलो। गप्पें हाँको। छौंक लगाओ। पानी की गठरियाँ बाँधो, जो कभी बँधती नहीं। सत्य बोलने की तो एक सीमा होती है, पर झूठ बोलने और डींग हाँकने की तो कोई सीमा ही नहीं होती। न पानी की गठरी बँधे और न उसका भार महसूस हो।

नगटा गरु, बेगड़ा चेला। ७१५२

नकटे गुरु, दोगले चेले।

—कोई किसी से कम नहीं, गुरु निर्लज्ज है तो शिष्य दोगला है। और दोगले से निर्लज्ज भी डरता है। चेला गुरु से भी बढ़कर हो गया और गुरु को उस पर गर्व है।

नगटा थारै नाक कित्ता के निन्नांणूं। ७१५३

नकटे तेरे कितनी नाक कि निन्यानबे।

—एक नाक हो तो कटने का भी डर हो। पर बेशर्म के तो निन्यानबे नाक होती हैं। कितनी काटोगे?

—जिस व्यक्ति से शर्म-हया नाम की चीज सौ-सौ कोस दूर रहे।

नगटा थारै नाक पींपळी ऊगी के ठाडी छियां ईं व्ही। ७१५४

नकटे तेरी नाक पर पीपल उगा कि ठंडी छाया ही हुई।

—निर्लज्ज व्यक्ति को अपनी बदनामी का डर तो होता ही नहीं है, चाहे उसकी नाक पर पीपल का पेड़ भी उग जाये तो वह यह सोचकर खुश होता है कि चलो ठंडी छाया ही हुई। पीपल के पत्तों से भी ज्यादा उसकी बदनामी हो जाय तो वह रंचमात्र भी परवाह नहीं करता।

—नकटे व्यक्ति पर ताने-तिसनों की बौछार भी कर दो तो उस पर जाने-अजाने कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। वह तो उलटा निर्लज्ज की नाईं तर्क प्रस्तुत करता है।

नगटा थारौ नाक वढ्यौ के सवा हाथ बध्यौ। ७१५५

नकटे तेरी नाक कटी कि सवा हाथ बढ़ी।

—किसी सज्जन ने नकटे की नाक कटी देखी तो दुख के साथ कहा—नकटे तेरी नाक कटी, जल्दी उपचार करा ले। नकटे ने आश्चर्य से पूछा—कहाँ? यह तो उलटे सवा हाथ बढ़ी है। तुम अपनी नाक का खयाल रखना।

—दुनिया में ऐसा चमत्कारी न तो पैदा हुआ और न भविष्य में होगा जो नकटे को मामूली ही सही, शर्म महसूस करवा दे। यह नेपोलियन के लिए भी असंभव कार्य है।

नगटा देव अर सुरड़ा पुजारी। ७१५६

नकटे देव और ढीठ पुजारी।

सुरड़ौ = जिस बैल या भैंसे की नाक का छिद्र रगड़ खाते-खाते इतना सख्त हो जाय कि वह नाथ के झटकों की तनिक भी परवाह न करे।

—जब देव ही बेशर्म होंगे तो उनके पुजारी बेहया या ढीठ के अलावा और हो ही क्या सकते हैं!

—जब चेला गुरु की अपेक्षा ज्यादा बुरा हो।

मि.क.सं.७१५२

पाठा : नगटा देव अर निसरड़ा पुजारी।

नगटा रै नौपत बाजै, च्यार धड़िंगा इदका लागै। ७१५७

नकटे के नौबत बजे, चार डंके अधिक लगें।

—जब कोई निर्लज्ज अपनी बदनामी को ही यश-गान मानने लगे या सुनाम समझने लगे तो उसका कोई उपचार नहीं।

—बदनामी का डर तो उसे हो, जिसकी समाज में कुछ मर्यादा हो। पर नकटे के लिए तो सामाजिक मर्यादाओं जैसा कुछ लफड़ा होता ही नहीं।

नगटा रै हाथ लोटौ व्है तौ बूक मांडै। ७१५८

नकटे के हाथ में लोटा हो तो अंजलि लगाये।

—बेशर्म के लिए सामाजिक मर्यादा का कोई पैमाना हो तो उसकी अनुपालना भी करे। जब कोई पैमाना ही नहीं है होंठों पर अंजलि लगाने का व्यर्थ दिखावा क्यों करे? वह तो सामाजिक मर्यादाओं से पूर्णतया मुक्त है।

नगटी जोगौ मांटी मिळ ई जावै। ७१५९

नकटी के योग्य पति मिल ही जाता है।

—बेशर्म औरत को बेहया पति मिल ही जाता है।

—दो नकटों की मित्रता देखकर यह कहावत कही जाती है।

नगटी बाई छाछ घात अै के आं लखणां तौ दूध है। ७१६०

नकटी बाई छाछ डाल ए कि ये लक्षण तो दूध जैसे हैं।

—शुरुआत में जब संबोधन ही इतना अभद्र है कि आगे बात बनने की कोई गुंजाइश ही नहीं। कोई उज्जड़ व्यक्ति यह कहे कि हे नकटी बाई छाछ तो डाल। वह वैसा ही रूखा जवाब देती है कि लच्छन तो ऐसे उम्दा हैं कि छाछ का बासन दूध से भर दूँ।

—किसी का अनादर करने पर आदर की प्रत्याशा रखना व्यर्थ है।

—जैसा बरताव करोगे, वापस वैसा ही बरताव मिलेगा।

पाठा : नगटी बाई छाछ घाल अे के थारी जीभ रै लपकै दूध लैजा बीरा।

नगटी बूची रौ वर जोगी। ७१६१

नकटी बूची का जोगी भरतार।

बूची = जिसके कान कटे हों। जोगी = सँपेरा।

—शरीर से विकलांग को भाग्य का विकलांग मिल ही जाता है।

—संसार बहुत लंबा-चौड़ा है। बुरे व्यक्तियों की भरमार है, सो आसानी से दो बुरे परस्पर मिल ही जाते हैं।

पाठा : नगटी-बूची गुसायां री। नगटी रौ जोगी खसम।

नगटी रै ई नथ री मन में। ७१६२

नकटी को भी नथ की चाह।

नथ = बाली।

—नथ पहिनने के लिए नाक ही नहीं है, फिर भी नकटी को नथ की काफी लालसा है।

—नाक कटने से भी ज्यादा शर्म की बात है नाक में पहिनने के लिए नथ की चाह रखना।

—अपनी हैसियत को अनदेखा करके जो अक्षम व्यक्ति कोई बड़ी लालसा करे तब!

पाठा : नगटी नै ई नथ रौ कोड। नकटी नै ई नथ चाहीजै।

नगटी वाळौ लोटियौ, पांणी पी-पी पेट फोड़्यौ। ७१६३

नकटी वाला लोटा, पानी पी-पीकर पेट फोड़ा।

—नकटे के हाथ एक मामूली चीज भी लग जाये तो वह अपना नुकसान करके भी उसका प्रदर्शन करता है। जिस प्रकार एक नकटी औरत को लोटा मिला तो उसने पानी पी-पीकर अपना पेट ही फोड़ लिया।

—ओछे व्यक्ति को प्रदर्शन की बड़ी चाह होती है।

नगटै नै गधै चाढ़ गांव फेरियौ के गांव ई दीठौ। ७१६४

नकटे को गधे पर बिठाकर गाँव में घुमाया कि गाँव ही देखा।

—नकटे के शौर्य का कमाल देखिये कि उसे गधे पर बिठाकर सारे गाँव में घुमाया तो वह बड़ा खुश हुआ कि पहली बार अच्छी तरह गाँव देखा। वह भी पैदल नहीं, गधे की सवारी करके और सारा गाँव जलूस की तरह साथ था।

—कोई व्यक्ति बेशर्मी की सीमा तक ढीठ हो।

नगटौ जांणै उण सूं डरयौ, लोक-लाज सूं घर में बड़्यौ। ७१६५

नकटा जाने उससे डरा, वह तो लोक-लाज से घर में घुसा।

—एक नेक आदमी को नकटा बुरा-भला कहने लगा तो भीड़ इकट्ठी हो गई। होनी ही थी। बेचारा शरीफ आदमी मुँह नीचा करके चुपचाप घर में चला गया। नकटे को बड़ा गुमान हुआ कि उससे डरकर कायर की तरह घर में घुस गया। ऐसा तो औरतें भी नहीं करतीं। क्या मजाल कि उसकी औरत सिर झुकाकर भीतर चली जाय। जिंदा न गाड़ दे।

—हर व्यक्ति अपनी-अपनी समझ के अनुसार जीने का औचित्य ढूँढ़ लेता है।

नगटौ नगटां री जमात बधावै। ७१६६

नकटा नकटों की जमात बढ़ाता है।

—बिना गिरोह, बिना जमात, बिना फौज न डाकुओं का काम चलता है, न साधुओं का, न राजा का और न नकटों का। अपना संप्रदाय बढ़ाने के लिए बेशर्म भी जी-तोड़ प्रपंच करते हैं। जमात बढ़ने से ही उनका हौसला बढ़ता है। संगठन में ही शक्ति है, तब नकटे क्यों पीछे रहें?

नगटौ-बूचौ, सब सूं ऊंचौ। ७१६७

नकटा-बूचा, सबसे ऊँचा।

बूचा = कनकटा।

—नकटा-बूचा अपने-आपको नकटों से भी ऊँचा समझता है। क्योंकि उस में दोहरी खासियत है।

—जब किसी आयोजन और सभाओं में अक्षम एवं बेहया बढ़-बढ़कर बोलता है, दहाड़ता है, तब दूसरे समझदार व्यक्ति शांत रहते हैं और इस कहावत से मन को धीरज बँधाते हैं कि नकटा-बूचा सबसे ऊँचा।

नगध गण हो जेरां ते खबर पड़ हें।– भी. ४८२ ७१६८

नकद गिनोगे तब खबर पड़ेगी।

—जब नकद रुपये गिनकर खर्च करोगे तब पता चलेगा।

—जब कोई व्यक्ति कथनी और करणी का अंतर न समझे और बढ़-बढ़कर बातें बनाये तब यह कहावत प्रयुक्त होती है।

पाठा : नकद गिणतां बेरौ पटसी।

नगर में धूवौं मत करज्यौ, साहजादी री आंख्यां दूखै। ७१६९

नगर में धुआँ मत करना, शाहजादी की आँखें दुख रही हैं।

—जो तुनक-मिजाज व्यक्ति बात-बात में नखरे करे और अपने मामूली आराम की खातिर दूसरों की जरूरतों को सर्वथा भूल जाय।

—किसी बड़े आदमी की सुविधा के लिए जनता को असुविधा उठानी पड़े, तब।

पाठा : सै'र में धूंवौं मत करज्यौ, सहज़ादी री आंख्यां दूखै।

नगर रा लोग निमांण अर बहू मूंडा री भारी। ७१७०

गाँव के लोग ढीठ और बहू वाचाल।

निमांण = मान रहित, निर्लज्ज, ढीठ।

—तब क्योंकर निर्वाह हो। जब दो बदजात व्यक्तियों को साथ रहना पड़े।

—दो बुरे आदमियों का साथ-साथ निबाह नहीं हो सकता।

पाठा : सै'र रा लोग निमांण अर बहू मूंडै री भारी।

नगरी तौ निंवतै नै गांव हांती। ७१७१

शहर तो न्योते और गाँव में हाँती।

हाँती = विवाहादि कुछ विशिष्ट अवसरों पर बनने वाले विशिष्ट खाद्य-पदार्थ का वह अंश जो पड़ोसियों, सगे-संबंधियों एवं बंधु-बांधवों में बाँटा जाता है।

—बड़े आदमियों की खुशामद में चाहे जितना खर्च करे और घरवालों के लिए कंजूसी बरते, उस नासमझ व्यक्ति के लिए।

नगरी में नागी फिरै, वन में ओढ़ै चीर। ७१७२

गाँव में नंगी फिरे, वन में ओढ़े चीर।

—यों तो यह एक पहेली है—जिसका उत्तर है मिर्च। जो खेत में फूल-पत्तों का चीर ओढ़कर सजी-धजी रहती है। जब उसे तोड़कर गाँव में लाते हैं तो पूर्ण निरावृत रूप में।

—फिर भी यह उक्ति उस अबोध और नासमझ व्यक्ति के चरित्र पर घटित होती है जो गाँव में फटेहाल रहे और जंगल में ठाट से रहे। कोई बावरा व्यक्ति ही ऐसा आचरण कर सकता है।

नगारां रै डाकै पींपाड़ी रौ रींकणौ कुण सुणै? ७१७३

नगाड़ों के डंके पींपाड़ी का रिरियाना कौन सुने?

पींपाड़ी = फूँक से बजने वाला बच्चों का बाजा जो पान व दो ठीकरियों से बनता है।

—जहाँ नगाड़ों का जोर से डंका बज रहा हो वहाँ पिपहरी की आवाज का कहाँ पता चले! सौ पिपहरियाँ भी एक छोटे से नगारे का मुकाबला नहीं कर सकतीं।

—बड़े-बुजुर्गों की बातचीत के बीच जब बच्चों की बात न सुनी जाय तब बच्चों की तरफदारी के लिए यह कहावत बहुत उपयुक्त है।

—किसी आयोजन के भीड़-भड़ाके में बड़े लोगों की बकवास के बीच गरीबों की अच्छी बातें भी भला कौन सुनता है?

नगारा रौ ऊंट। ७१७४

नगाड़े का ऊँट।

संदर्भ-कथा: खड़ी फसल पर पक्षी जब चारों दिशाओं से उड़-उड़कर दाना चुगने के लिए टूट पड़ते हैं, तब खेत की मालकिन या उसके छोटे बच्चे काँसी की थाली या खाली पीपा लकड़ी से पीट-पीटकर बजाते हैं। आवाज से चौंककर पक्षी इधर-उधर उड़कर खेत से कहीं दूर छिप जाते हैं। एक बार कहीं से भटकते-भटकते बिना मोहरी का एक ऊँट खेत में घुसा। सुंदर पलान सजा हुआ था। एक बच्ची उसके पीछे दौड़ी। पतली लकड़ी से थाली बजाने लगी,

झन-झन-झन। पर ऊँट ने जाने क्या सोचकर उधर कान ही नहीं दिया। फसल को रौंदता हुआ खेत में आगे बढ़ने लगा। बच्ची घबराकर और पीछे दौड़ी। जोर-जोर से थाली बजाने लगी। तब ऊँट ने डग-डग हँसते कहा, 'कहीं बावरी तो नहीं हो गई। मेरी पीठ पर बीसियों नगाड़े फूट चुके हैं, तब इस झनझनाटे की मैं क्या परवाह करूँ! पेट भरने के बाद ही खेत से निकलूँगा।'

—निर्लज्ज या ढीठ मनुष्यों के कानों में किसी की सीख का कोई असर नहीं हो तब!

—जिस व्यक्ति की चमड़ी इतनी मोटी हो गई हो, जो अपने स्वार्थ में किसी का दुख-दरद समझ न सके। सुन नहीं सके। देख नहीं सके। नगाड़े के ऊँट की नाईं।

नटणी बांस चढ़ी तद कैड़ी लाज? ७१७५

नटनी बाँस चढ़ी तब कैसी लाज?

—परिवार के पोषण की खातिर पापी पेट के लिए जब कैसा भी हीन धंधा अपना लिया फिर लाज कैसी? चाहे बाँस पर चढ़कर औरत सबके सामने अपने अंग का प्रदर्शन करे या अपना शरीर या लाज बेचकर बच्चों के पेट की जलती आग बुझाये।

—जिस व्यक्ति का पेशा ही लाज खोने का हो, उससे लाज-शर्म की बात करना ही अन्याय है।

पाठा: **नटणी बांस चढ़ी तद कैड़ौ घूंघटौ?**

नटता नै जगत परूसै। ७१७६

मना करने वाले को ही दुनिया मनुहार करके खिलाती है।

—राजस्थानी में एक ऐसी ही दूसरी कहावत है कि खाये हुए को खिलाना आसान है। कम खर्च और एहसान उतना ही जिन्हें पूरा खिलाने से होता है।

—जो व्यक्ति अघाया हुआ होता है, वही खाने के लिए मना करता है। भूखे व्यक्ति की मनुहार करना तो दूर, उसके कहने पर भी खाना मिल जाये तो गनीमत है। मानवीय दुनिया का यही ढर्रा कि जरूरतमंद को कोई कुछ नहीं देता और जिसके पास पहिले से बेहद सामग्री है, उसको ही देने के लिए होड़ मची रहती है।

नट बुध आ जावै पण जट-बुध नीं आवै। ७१७७

नट बुद्धि आ जाये, पर जट बुद्धि नहीं आती।

संदर्भ-कथा : एक राजा को नटों के करतब देखने का बड़ा शौक था। राज्य-भर के नट होली-दिवाली आते। आश्चर्यजनक करतब दिखाते। राजा जिस करतब को देखकर खुश होता, जी भरकर निछरावल करता। दोनों ही मुख्य-त्योहारों पर राज्य का खजाना आधा खाली हो जाता। रानी हैरान। कहने पर राजा और अधिक जिद चढ़ता। रानी ने दरबारियों से मशविरा किया। पर राजा के डर से कोई भी दरबारी चर्चा तक नहीं करना चाहता था। आखिर कोई तैयार नहीं हुआ तो एक चौधरी ने रानी से कहा—मैं पिछले वर्ष से ही आपकी चिंता समझ रहा हूँ। अंदाता की कोप-दीठ का जिम्मा आप लें तो मैं नटों को ऐसा चमत्कार बताऊँगा कि वे राज्य की ओर सपने में भी मुँह नहीं करेंगे। रानी ने राजाजी का जिम्मा तो लिया ही, साथ में यह भी कहा कि यदि वह ऐसा कर दे तो उसकी इच्छानुसार गाँव बख्शीश में मिलेगा। रानी को विश्वास नहीं हुआ तो उसने जिज्ञासावश जानना चाहा तो चौधरी ने हाथ जोड़कर अरदास की—इसके लिए माफ करें। राज-दरबार में ही मेरा चमत्कार बताऊँगा। नहीं तो सारी बात ही धूल में मिल जाएगी। रानी समझदार थी, हठ न करके अदेर मान गई।

दीवाली का मांगलिक त्योहार आया। राज्य के सारे नट इकट्ठे हुए। नटनियाँ भी पीछे नहीं रहीं। इस बार वे ऐसे करतब दिखाएँगी जो किसी ने आज तक नहीं देखे। राजा इतना खुश हुआ कि दरबारियों ने सोचा इस बार तो नटनियाँ सारा खजाना ही खाली कर देंगी। राज-दरबार जुड़ा। नटों ने अपने करतब दिखाने की सारी तैयारी कर ली। चार खेतों जितनी लंबी भरत तानी गई। आमने-सामने नटनियाँ उस भरत पर चलेंगी। बीच की टकराहट को पार करके बिना नीचे उतरे क्योंकर भरत पर आगे बढ़ती चली जाएँगी? लोगों का तो सोचने मात्र से सर भन्ना रहा था। नटनियाँ आग पर नाचेंगी। पाँच साफों पर अधर चलेंगी। हल को जीभ पर खड़ा करके गोल-गोल घूमेंगी। राजा ने खजांची से खजाने की स्थिति पूछी। उसने हाथ जोड़कर कहा कि इससे दूने नट भी आ जाएँ तो खजाना हिलेगा नहीं।

राज-दरबार खचाखच भरा था। राजा के आते ही दरबारी, प्रजा और नट-नटनियों ने खम्मा-घणी की। राजा के सिंहासन पर बैठते ही जाने कहाँ से चौधरी हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। कहने लगा—अंदाता, आप तो बरसों से नटों की कला देखते आ रहे हैं। इन्होंने जो माँगा, जो चाहा, उससे भी ज्यादा धन आपने दिया। मेरा बड़-भाग कि आज मैं भी इनकी विद्या देखूँगा। पर इसके पहिले हाथ जोड़कर अरदास है कि नट-विद्या तो अभ्यास से आ जाती है। देखने-सीखने से आ जाती है। लेकिन जट-विद्या तो कुदरत की देन है। वह

देखने-सीखने से नहीं आती। मेरे चमत्कार को ये नट सभी मिलकर भी करके दिखा दें तो मैं घर-बार समेत यह गाँव छोड़ दूँगा। यदि ये न कर पाये तो वे अभी से अपने करतब बंद कर देंगे और भविष्य में कभी इस राज की ओर मुँह नहीं करेंगे।

नटों के मुखिया ने कहा—वाह! चौधरी के गाँव छोड़ने से हमें क्या हाथ आएगा? यदि हमने वही काम कर दिया तो राज के खजाने में एक लाल छदाम भी पीछे नहीं रहेगी। राजा कुछ जवाब दे उसके पहिले ही रानी ने उतावली दरसाते कहा—चलो, हमें तुम्हारी बात मंजूर है। राजा उन तीनों के बीच खूब ही फँसा। थूक निगलते हुए उसने नटों की बात कबूल कर ली। और जाट से कहा—तुम्हें जो कुछ करतब दिखाना हो जल्दी दिखाओ।

चौधरी ने पहिले ही सारी व्यवस्था कर ली थी। उसका इशारा मिलते ही दो आदमी एक भारी घड़ा उठाकर लाये। उसका मुँह बहुत ही छोटा था। चौधरी ने नटियों के मुखिये को इशारा किया तो वह उसके पास आया। घड़े के मुँह की ओर झाँकते बोला—घड़े के इस छोटे से मुँह में मैंने इतना बड़ा मतीरा डाला है। यदि आप बिना फोड़े इस मतीरे को बाहर निकाल दें तो आपकी शर्त मंजूर। नहीं निकाल सके तो मेरी शर्त आपको माननी होगी।

घड़े का मुँह और मतीरे का भरकम आकार देखते ही मुखिये का माथा भन्ना गया। मुखिये ने तीन घड़ी की मोहलत माँगी। बच्चे के उनमान राजा की भी उत्सुकता बढ़ी। बड़ी मुश्किल से तीन घड़ियाँ बीतीं। आगे-आगे मुखिया और पीछे-पीछे एक तगड़ा नट कंधे पर घड़ा उठाये आया और उसे राजा के चरणों में धर दिया। मुखिये ने आह भरते कहा—अंदाता, आज से ही हमारा अंजल आपके खज़ाने से उठ गया। हम सबने खूब सोचा पर यह चमत्कार हमारी समझ में ही नहीं आया कि इतना बड़ा मतीरा इस छोटे मुँह से घड़े के भीतर समाया तो समाया ही क्योंकर? यह असंभव काम संभव हुआ कैसे? हम तो घड़े को बिना फोड़े मतीरे को बाहर नहीं निकाल सकते। मगर चौधरी ने तो कमाल ही किया। बड़ी मेहरबानी होगी यदि ये इसका मायना समझा सकें?

चौधरी ने मुस्कराते कहा—जरूर समझाऊँगा। यदि मुखिया मुझे यह समझा दे कि राई जितने बीज में इस बरगद का यह विशाल रूप कहाँ छिपा था? क्या यह सृष्टि का मायना भगवान से पूछकर हमें बता सकता है?

मुखिया फिर निरुत्तर हो गया। आखिर रानी के कहने पर चौधरी ने अपने असंभव चमत्कार का मायना बताया। सुनकर सभी को लगा कि यह तो कोई चमत्कार नहीं हुआ। एक

अबोध बच्चा भी यह चमत्कार कर सकता है। बेल के ताँते पर लगे नींबू जितने छोटे मतीरे को घड़े में डाल दिया जाय तो वह बढ़ते-बढ़ते इतना बड़ा हो सकता है, इस में तो कोई अनहोनी बात नहीं हुई। पर अब तक यह मामूली बात भी किसी की समझ में नहीं आई—यह जरूर अनहोनी बात है। मुखिया शर्त हार गया, इस में कोई संदेह नहीं। तब से उस राज्य की दिशा में किसी नट ने झाँका तक नहीं।

—कभी-कभार पहुँचे हुए विद्वान या कलावंत जो काम नहीं कर सकते उसे कोई अति सामान्य व्यक्ति करके दिखा देता है।

नटिया अर फंद कटिया। ७१७८

नटे और फंद कटे।

—हामी भरने से तो कोई भी काम गले पड़ सकता है। पर इनकार करने से तो उसी क्षण आफत टल जाती है। मना करने से बड़ा गुरुमंत्र कोई दूसरा नहीं।

—सौ असाध्य रोगों की एक दवा—इनकार।

नटियौ मुहतौ नैणसी, तांबौ दियण तलाक। ७१७९

मुहता नैणसी ने मना कर दिया सो कर दिया, ताँबे का एक तुस भी नहीं मिलेगा।

संदर्भ : जोधपुर के महाराजा ने मुहता नैणसी पर नाराज होकर एक लाख रुपयों का जुर्माना किया। जब तक जुर्माना वसूल न हो जाय, उन्हें साक्षी रूप में मोतबर प्रस्तुत करने होंगे। तब मुहता नैणसी ने निर्भय जवाब दिया—लाख रुपयों का जुर्माना ? मेरे पास लाख छोड़कर एक धेला भी नहीं है। यदि लाख लेने की ही इच्छा है तो लखारों के घर जाओ— लाख वहीं मिलेगी। और रही बात साख की—वह बड़-पीपल की डालियों से झूलती है, ले आओ।

—कोई व्यक्ति दबाव में आकर किसी भी शर्त को न माने तो वह दर्प के साथ यह उक्ति दागता है।

पूरा दोहा : **लाख लखारां नीपजै, बड़ पीपळ री साख।**
नटियौ मुहतौ नैणसी, तांबौ दियण तलाक॥

नटे जणानै नाक कटे।— भी.४८४ ७१८०

नटे जिसका नाक कटे।

—रोजमर्रा काम में आने वाली उक्ति है। जब दो बच्चों में बात तन जाती है तो वे चुनौती स्वीकार करते हुए कहते हैं—हो जाय निपटारा—जो नटे उसका नाक कटे।

पाठा : नटै जिणरौ नाक कटै।

नटे तीने हूं कटे ने हूं वटे।—भी.४८५ ७१८१

नटे जिसका क्या कटे और क्या बढ़े।

—किसी बात के लिए हामी भरकर जो व्यक्ति हर बार मना करता रहे, उस प्रकृति वाले मनुष्य की क्या इज्जत और क्या बेइज्जत। एक ही नाक कितनी बार कटेगी और चिपकेगी।

—गैर-जिम्मेदार व्यक्ति के लिए।

नटै जिणरौ प्रण घटै। ७१८२

नटे जिसका प्रण घटे।

—वादे से मुकरने वाले की कोई प्रतिष्ठा नहीं रहती।

—जबान की पाबंदी न रखने वाले का कोई भी एतबार नहीं करता।

—जबान की पाबंदी रहे तो सब-कुछ रह जाता है और उसकी पाबंदी खोने वाला सब-कुछ खो देता है।

नट्योड़ौ बांणियौ, बख में आवै जद जांणियौ। ७१८३

इनकार किया हुआ बनिया, फँसने पर ही सीधा होता है।

—मनुष्य मात्र का यही स्वभाव है कि गर्ज पड़ने पर या फँसने पर ही वह झुकता है, तब उस से जैसा चाहें, वैसा करवाया जा सकता है। अन्यथा अपने मन से वह किसी के काम नहीं आता।

—अपने भले-बुरे का ध्यान सबको रहता है।

नणद री नणद नातरै जाय, म्हारै हीये हरख नीं समाय। ७१८४

ननद की ननद पुनर्विवाह करे, मेरा हृदय खुशी से भरे।

—व्यर्थ का संबंध जोड़ने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

—मिथ्या मोह दरसाने वाले के लिए।

नणद रै हुवतां भोजाई नै कुण गिणै ! ७१८५

नणद के रहते भावज की कौन परवाह करे !

—यों तो भाई की बहू घर की वास्तविक अधिकारिणी होती है, पर माँ-बाप की लाड़ली होने के नाते बेटी ज्यादा अधिकार जताती है। अंततः वह ननद भी तो एक दिन किसी के घर बहू बनकर जाएगी, पर विवाह के पूर्व उसे यह ध्यान नहीं रहता।

—जो व्यक्ति अपने अधिकारों का बेजा हक जताये तब !

नणद रौ नणदोई, डुस्किया भर-भर रोई। ७१८६

ननद का ननदोई, सुबक-सुबक कर रोई।

—ननद की ननद का पति मरे और भावज शोक-विह्वल होने का अभिनय करे तो वह सर्वथा झूठी हमदर्दी प्रकट करना ही है।

—मिथ्या संवेदना व्यक्त करने वाले पर कटाक्ष।

नथ गमगी, म्हूं जाणसूं नणद नै ई दी। ७१८७

नथ खो गई, मैं समझूँगी कि ननद को ही दी।

—जो व्यक्ति अपनी क्षति के लिए व्यर्थ का औचित्य खोजने का निष्फल प्रयास करे, उसके लिए।

—खामखाह का एहसान जताने वाले पर कटाक्ष।

पाठा : नथ पड़ी बेरा में के नणद रै नांव। नथ गमी खंधेड़ा में के हूं जांणूं नणद नै ई पैराई। नथ गिरी कुएँ में कि ननद के नाम। नथ खोई गड्ढे में कि मैं समझूँगी, ननद को ही पहिनाई।

दे.क.सं.२७५३

नथ घड़ावतां वार लागै, नाक वाढ़तां कांई वार ? ७१८८

नथ घड़ाने में समय लगता है, नाक काटने में कैसी देर ?

—सत्कर्म करने में समय लगता है, कुकर्म करने में समय नहीं लगता।

—किसी का भला करने में धन और समय खर्च होता है, पर बुरा करने में कुछ भी खर्च नहीं होता।

—अच्छाई की बजाय बुराई तो स्वतः उत्पन्न होती है।

नथ री कोडाई नाक बढ़ायौ। ७१८९

नथ की उत्सुकता में नाक कटाया।

—गहनों के लालच में जब कोई दुष्चरित्र औरत अपनी इज्जत गँवा बैठे तब...।

—मामूली स्वार्थ की खातिर कोई व्यक्ति बड़ी प्रतिष्ठा दाँव पर लगाये, तब...।

पाठा : **नथ नै रोवती अर नाक बढ़ायौ।** नथ की आशा में नाक कटाया।

नदी कांठै रूंखड़ौ जद-कद होय विणास। ७१९०

नदी किनारे गाछ, जब-तब होय विनाश।

—नदी के किनारे खड़े वृक्ष का तेज प्रवाह की धार से उखड़ जाना अवश्यंभावी है।

—दुष्ट व्यक्तियों की संगति का नुकसान अपरिहार्य है।

—काल के प्रवाह में प्राणि-मात्र का नष्ट होना निश्चित है।

पाठा : **नदी रै ढावै रूंख, सदावंत जोखम।** नदी-किनारे वृक्ष को हर वक्त जोखिम।

नदी जाय नै तिरसौ वळै। • ७१९१

नदी जाकर भी प्यासा लौटे।

—जिस व्यक्ति का भाग्य विमुख हो तो वह अनुकूल परिस्थिति का भी लाभ नहीं उठा सकता।

—उस मूर्ख व्यक्ति पर कटाक्ष जो पर्याप्त साधनों के बीच भी असफल रह जाय।

नदी नाव संजोग। ७१९२

नदी नाव संयोग।

—जिस प्रकार नदी और नाव के शुभ संयोग से पार उतरना सहज हो जाता है, उसी प्रकार पारस्परिक सहयोग से मनुष्यों के कठिन कार्य भी सर्वथा आसान हो जाते हैं।

—मनुष्य-समाज में एक-दूसरे के सहयोग से ही सफलता मिलती है।

—प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि वक्त-जरूरत अपने साथी से वांछित सहयोग करे।

—तुलसी बाबा ने स्पष्ट कहा है कि—

तुलसी या संसार में भांति-भांति के लोग।
सबसे हिलमिल चालिये नदी नाव संयोग॥

नदी में गमाया कुण देख्या ? ७१९३

नदी में खोया, किसने देखा ?

—अदृष्ट क्षति का किसे भी पता नहीं चलता ।

—व्यर्थ खर्च करने से किसे भी लाभ नहीं होता, उसकी कुछ भी उपयोगिता नहीं है ।

—अपव्यय करने वाले के प्रति उपहास ।

नदी में पांणी जावै, कलाळ रै बाप रौ कांईं जावै ? ७१९४

नदी में पानी जाय, कलाल के बाप का क्या जाय ?

—कलाल शराब में पानी मिलाकर कमाई करता है । उसे पानी के प्रति मोह पैदा हो जाता है । नदी के पानी को बहते देखकर उसका मन दुख पाता है कि व्यर्थ ही पानी नष्ट हो रहा है, यदि वह सारा पानी शराब में मिलाकर बेचता तो उसे कितना नफा होता ! अपने निहित स्वार्थ के कारण उसे कभी यह खयाल नहीं आता कि नदी के बहते पानी से किसानों को कितना लाभ पहुँचता है ।

—ईर्ष्यालु व्यक्ति की दुष्प्रवृत्ति पर कटाक्ष ।

—जो व्यक्ति खामखाह की काल्पनिक हानि के प्रति चिंतित रहे ।

पाठा : नदी में पांणी जावै, कलाळ बिरथा दुख पावै ।

नदी रै गळबै बैठकी, तद क्यूं नीं हाथ पखाळै । ७१९५

नदी के पास निवास, तब क्यों न हाथ पखारे ।

—हे नासमझ मनुष्य जब नदी के किनारे तुम्हारा आवास है, तब अच्छी तरह हाथ-पाँव क्यों नहीं पखारते ? नहाने का पुण्य अर्जित क्यों नहीं करते ?

—जब किसी समर्थ व्यक्ति से पहिचान हो, तब उससे अवश्य लाभ उठाना चाहिए ।

—संत-महात्माओं के प्रवचन प्रवाह से जब तब आत्मा शुद्ध करने का मौका मिले, चूकना नहीं चाहिए ।

—उस कंजूस धनाढ्य को सीख कि जब भाग्य से माया संचित हुई है तो दान-पुण्य करने का सुअवसर गँवाना नहीं चाहिए ।

नदी सागै वैंग बहै । ७१९६

नदी के साथ रेत व कंकर भी बहते हैं ।

—रेत व कंकरों का अपना प्रवाह नहीं होता, पर नदी के प्रवाह की वजह से वे भी साथ-साथ बहते हैं।

—सुसंगति का प्रभाव तो पड़ता ही है।

—संत-महात्माओं के प्रवचन सुनकर श्रोताओं का कल्याण भी हो जाता है।

नदी सो बरसां केड़ै आवै, पण सागै मारग आवै। ७१९७

नदी सौ साल के उपरांत भी आती है तो उसी राह से आती है।

—महापुरुष कष्ट-कठिनाइयों की परवाह न करते हुए अपने सुनिश्चित आदर्श की राह निर्बाध बढ़ते रहते हैं।

—स्वस्थ परंपरा बरसों-बरस तक अविरल गति से चलती रहती है।

—युगयुगांतर बाद भी अवतार शाश्वत आदर्शों के सुपथ से नहीं हटते।

नन्नौ सौ औगण हरै। ७१९८

नन्ना सौ अवगुण टालता है।

—मात्र मना करने से अनेक झंझट दूर हो जाते हैं। मसलन लिहाज में आकर कोई वस्तु या रुपया उधार देने पर वापस प्राप्त करना हाथ की बात नहीं है। कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

—किसी काम या बात की हामी भरने वाले की बजाय इनकार करने वाला सुखी रहता है।

पाठा : नटिया अर फंद कटिया। नटे और फंद कटे।

नफा आगै टोटा री ठा नीं पड़ै। ७१९९

नफे के मारे घाटे का पता नहीं चलता।

—जिस व्यक्ति के व्यवसाय या धंधे में बेइंतहा लाभ हो, उसकी आँखें मामूली हानि से नहीं उघड़तीं।

—धन या सत्ता के फलस्वरूप मदांध व्यक्ति के लिए।

नफा भेळौ नफौ नै तोटा भेळौ तोटौ। ७२००

नफे के साथ नफा और टोटे के साथ टोटा।

—हर काम या धंधे में न तो इकतरफा नुकसान होता है और न इकतरफा लाभ होता है। दोनों की संभावना है। जो व्यक्ति लाभ-हानि की परवाह न करके अपने काम में डटा रहे, उसके लिए। जो होगा, देखा जाएगा। भाग्य में लाभ हो तो लाभ सही और घाटा हो तो घाटा सही।

—विघ्न-बाधाओं को नजर अंदाज करके जो व्यक्ति अपने मनोबल को बनाये रखे, उसके लिए।

नफौ तोटौ भाई। ७२०१

नफा टोटा भाई।

—किसी भी काम में नफा होता है या घाटा। सगे भाइयों जैसा ही इनका नाता है। केवल लाभ के प्रलोभन से न तो किसी काम की शुरुआत करनी चाहिए और न घाटे के भय से पीछे हटना चाहिए। किसी भी सूरत में आदमी को पुरुषार्थ से बचने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

नफौ-नुकसांण तौ धंधा तालकै। ७२०२

नफा-नुकसान, धंधे के नाम।

—किसी भी काम का नफा-नुकसान कोई अलग से तो होता नहीं, काम के साथ जुड़ा रहता है। लाभ हो तो धंधे के निमित्त और हानि हो तो धंधे के निमित्त। किसी भी स्थिति में काम में लगे रहना ही उचित है।

नमाज छुडावण नै गिया तौ रोजा गळै पड़्या। ७२०३

नमाज छुड़ाने गये तो रोजे गले पड़ गये।

—जब कोई व्यक्ति छोटी आफत से बचने की चेष्टा करे और वह बड़ी आफत में फँस जाय तब।

—अभागे व्यक्ति पर आफत-विपदाएँ आती ही रहती हैं।

पाठा : नमाज पढ़तां रोजा गळै पड़्या।

नमिया तिलोकीनाथ, राधा आगळ राजिया। ७२०४

नमे त्रिलोकीनाथ, राधा के आगे राजिया।

टिप्पणी : चारण जाति में कृपारामजी नीति के सोरठों में बड़े सिद्ध-हस्त थे। राजाराम या राजू नाम का एक विश्वस्त नौकर था। उसकी सेवा से खुश होकर उसे संबोधित करके उन्होंने अनेक दोहे-सोरठे बनाये, जो लोगों की जबान पर हैं। और कई सोरठे तो लोकोक्तियों की तरह प्रचलित हैं।

—हर परिवार में औरत का ही आधिपत्य रहता है। उसके सामने सामान्य व्यक्ति की बात तो दरकिनार, कृष्ण भगवान जैसे अवतार को भी राधा के सामने झुकना पड़ा।

—औरत के सामने कैसे भी पराक्रमी या योद्धा को पराजित होना पड़ता है।

पूरा सोरठा : **हितकर जोड़ै हाथ, कांमण सूं अनमी किसा ?**

नमै तिलोकीनाथ, राधा आगळ राजिया ॥

नमौ नारायण बापजी के बच्चा भोजन थारै ई घरां। ७२०५

नमोनारायण बाबाजी कि बच्चू भोजन तेरे ही घर।

—बड़े आदमियों से अभिवादन करने पर कुछ-न-कुछ बेगार गले पड़ जाती है।

—जो व्यक्ति चलती राह आफत आमंत्रित करले।

—जो व्यक्ति बात करते ही पीछे पड़ जाय, उसके लिए।

नरक री ओडी रा ई सुगन मनाईजै। ७२०६

नर्क की टोकरी के भी शकुन मनाये जाते हैं।

नरक = नर्क या विष्ठा, गू।

—सिर पर झाड़ू और टोकरी उठाये हरिजन महिला सामने मिल जाये तो उसके शकुन बड़े शुभ माने जाते हैं।

दे.क.सं. ३६७७

नरक रौ कीड़ौ, नरक में राजी। ७२०७

नर्क का कीड़ा, नर्क में राजी।

नरक = नर्क = विष्ठा, मैला।

—गंदगी का कीड़ा गंदगी में ही संतुष्ट रहता है।

—हर व्यक्ति अपने परिवेश और व्यक्तित्व से खुश रहता है।

—कोई दो व्यक्तियों की संतुष्टि का एक पैमाना नहीं होता।

नर चींती हुवै नहिं, हर चींती ततकाळ। ७२०८

नर-चीती होये नहीं, हर-चीती तत्काल।

—मनुष्य का सोचा-समझा कुछ भी पार नहीं पड़ता, पर ईश्वर का सोचा-समझा तत्क्षण पार पड़ता है।

—मनुष्य की तुलना में दैव-इच्छा ही सर्वोपरि है।

पाठांतर और पूरा दोहा :

नर-चींती रीती रही, हर चींती ततकाळ।

जांणौ चाहतौ सुरग में, भेज दियौ पाताळ॥

नर जांणै दिन जात है अर दिन जांणै नर जात। ७२०९

नर जाने दिन जात है और दिन जाने नर जात।

—मनुष्य सोचता है कि समय बीत रहा है, समय सोचता है कि मनुष्य बीत रहा है।

—वक्त नहीं गुजरता, आदमी गुजरता है।

—व्यर्थ गँवाया एक क्षण वापस किसी भी कीमत पर लौटाया नहीं जा सकता, इसलिए प्रत्येक क्षण बहुमूल्य है। उसे सत्कार्यों में बिताना ही श्रेयस्कर है।

नर नांनैरै, धी दादांणै। ७२१०

नर ननिहाल, बेटी ददिहाल।

—पैतृक अनुवांशिकता की बजाय बेटा ननिहाल और बेटी ददिहाल पक्ष की अनुवांशिकता ग्रहण करता है।

—बेटे की शारीरिक बनावट, क्षमता और उसका स्वभाव मातृ-कुल से और बेटी का हुलिया और स्वभाव पितृ-कुल से अधिक मिलता है।

पाठा : नर नांनांणै जाय। नर नांनांणै अर घोड़ौ दादांणै।

नर-नारी अेक मता, बैकूंठां में होय सता! ७२११

नर-नारी का एक मता, बैकुंठ में होय सता!

—जब पति-पत्नी की एक ही मति हो, एक ही विचार हो तो वे निःसंदेह बैकुंठ के अधिकारी होते हैं।

—पति अपनी पत्नी का मान-सम्मान रखने वाला हो और पत्नी अपने पति का मान-सम्मान रखने वाली हो तो उनका घर ही बैकुंठ के समान हो जाता है।

नरबदा इत्ती सांकड़ी कठै के स्याळ ई कूद जावै। ७२१२

नर्मदा इतनी सँकड़ी कहाँ जो गीदड़ ही फलाँग जाय।

—अक्षम व्यक्ति अपने बूते से परे डींग मारे, तब उसे लक्ष्य करके यह कहावत कही जाती है कि नर्मदा इतनी सँकड़ी नहीं कि सियार उस पर से कूद जाय।

—मरियल व्यक्ति जोश बघारे तब।

पाठा : नरबदा इतरी सांकड़ी कोनीं के स्याळिया ई डाक जावै।

दे.क.सं.१११४

नर भमरां भोमका भागे।—भी.४८३ ७२१३

समर्थ मानुस ही भूमि को चीरते हैं।

—पुरुषार्थी ही अथक परिश्रम करके हल चलाते हुए धरती को तोड़ते हैं। तरह-तरह की फसल उत्पन्न करते हैं। समुद्रों को पार करके विदेशों में व्यापार करते हैं। पहाड़ों की दुर्गम घाटियाँ लाँधकर विदेशियों से संबंध स्थापित करते हैं।

—उद्यम करने वाले के लिए कोई भी कार्य कठिन नहीं।

नरसीजी वाळौ गाडौ। ७२१४

नरसीजी वाली गाड़ी।

—नरसी मेहता की टूटी-फूटी गाड़ी का यह भय कभी मिटता ही नहीं था कि वह कब मार्ग में जवाब दे जाय। पर कृष्ण-भगवान उसके सहायक थे फिर गाड़ी क्यों नहीं पार लगती! अपनी बेटी नैनी बाई का अविस्मरणीय माहेरा भरा। जो दुनिया में आज भी प्रसिद्ध है और गीतों में गाया जाता है। जिसकी अनेक लोकोक्तियाँ प्रचलित हैं।

—निर्बल के बल केवल राम ही होते हैं जो सब कठिनाइयों से उसको बचाते हैं।

पाठा : नरसीजी वाळौ मायरौ। नरसी मूथा वाळी वेलड़ी।

नरां ऊपरलौ नर। ७२१५

नरों में श्रेष्ठ नर।

—महाबली के लिए।

—अत्यंत पुरुषार्थी के लिए।

नरां, नाहरां, डिगंबरां पाकां ई रस होय। ७२१६

नर, नाहर और दिगंबर परिपक्व होने पर ही समर्थ होते हैं।

—वय प्राप्त होने पर ही नर और नाहर सक्षम होते हैं और दिगंबर साधु ज्ञानी बनता है।

—पर्याप्त कौशल व प्रवीणता के लिए अनुभव अनिवार्य है।

नरां में नाई, पंखेरुवां में काग, ७२१७
पांणी मांयलौ काछबौ, तीनूं दगा बाज।

नरों में नाई, पंछियों में काग, पानी वाला कछुवा, तीनों दगाबाज।

—मनुष्य जाति में नाई सबसे चतुर होता है। पक्षियों में कौआ अत्यधिक चालाक होता है। पानी में रहने वाला कछुवा सीधा-सादा दिखने पर भी बड़ा तर्राट होता है। इन तीनों से बचते रहने में ही कल्याण है।

नरां सो तुरंगां। ७२१८

नर सो ही तुरंग।

—जो सवार की गति होगी,वही घोड़े की गति होगी।

—घुड़सवार में जो बीतेगी,वही घोड़े में भी बीतेगी।

—जो सेवक अपने स्वामी का सुख-दुख में पूरा साथ दे,उसके लिए।

—मित्र वही जो संकट की वेला सहयोग करे।

नरूका नै नरूकौ मारै के मारै किरतार। ७२१९

नरूका को नरूका ही मारे या मारे कर्तार।

नरूका = कछवाह राजपूतों की एक शाखा।

—नरूका को नरूका ही पहुँच सकता है या फिर ईश्वर ही।

—दो बराबर की हस्तियाँ जब आमने-सामने हो जाएँ।

पाठा : नरूकौ नीं चेला रौ नीं गरू कौ ।

नव काकड़ी अर तेरह लागू । ७२२०

नौ ककड़ी और तेरह लग्गू ।

—खाने-पीने के लिए सभी तैयार रहते हैं ।

—सुख में हर कोई भागीदार बनना चाहता है । और दुख में सभी पीछे खिसकते हैं ।

नव दिन हालै अढाई कोस । ७२२१

नौ दिन चले ढ़ाई कोस ।

—कछुए की चाल के समान सुस्त व्यक्ति के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है कि वह चला तो नौ दिन और फासला तय किया केवल ढाई कोस ।

—कामचोर व्यक्ति काम न करने का कोई-न-कोई बहाना खोज लेता है ।

नव नगद ते' रै उधार । ७२२२

नौ नकद, तेरह उधार ।

—तेरह रुपये उधार की बजाय नौ नकद कहीं ज्यादा अच्छे हैं ।

—व्यवसाय में लालच की बजाय विवेक से काम लेना श्रेयस्कर है ।

पाठा : नव रोकड़ा नै ते' रै उधार ।

नव नाहर नै ते' रै चीता । ७२२३

नौ नाहर और तेरह चीते ।

—घर के बाहर जिस व्यक्ति को लोमड़ी ही न जाने और घर में नाहर व चीता बनकर रहने वाले पर कटाक्ष ।

—अपनी हैसियत से परे झूठा आडंबर दिखाने वाले व्यक्ति के लिए ।

नव निध नै अस्ट सिद्ध । ७२२४

नौ निधि और अष्ट सिद्धि ।

—पूर्ण संपन्न व सुखी व्यक्ति के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है कि उसके पास किसी चीज की कोई कमी नहीं। सब प्रचुर-ही-प्रचुर मात्रा में है।

नव पेठा अर तेरह लगवाळ, गधी लेग्यौ कोटवाळ। ७२२५

नौ पेठे और तेरह लगवाल, गधी ले गया कोतवाल।

संदर्भ : एक राज्य की सीमा पर तेरह नाकेदार तैनात थे। एक व्यक्ति गधी पर नौ पेठे (कुम्हड़ा) लाया। डांण (चुंगी) के बहाने नाकेदारों ने नौ पेठे जब्त कर लिए। अंत में झगड़े का निपटारा करने कोतवाल आया तो वह गधी भी ले गया।

—जिस राज्य की शासन-व्यवस्था एकदम बिगड़ी हुई हो। अराजकता का बोलबाला।

नव बिसवा नांणांणौ, दो बिसवा दादांणौ। ७२२६

नौ बिसवा ननिहाल, दो बिसवा ददिहाल।

बिसवौ = विसवौ = अँगुली की गाँठ या जोड़ जहाँ से मुड़ सकती है। माप की प्रक्रिया का प्राचीन प्रयास।

—पुरुष में नौ बिसवा ननिहाल का अंश होता है और दो बिसवा ददिहाल का।

—पुरुष में लक्षण व सामर्थ्य, ननिहाल की अनुवांशिकता से प्राप्त होता है।

नव बुलाया तेरह आया, दै दाळ में पांणी। ७२२७

नौ बुलाये तेरह आये, दे दाल में पानी।

—नौ व्यक्तियों को आमंत्रित करने पर यदि तेरह मेहमान आ जाएँ तो उसी सामग्री से जस-तस काम चलाने को मजबूर होना पड़ता है।

—जैसी परिस्थिति उत्पन्न हो, उसीके अनुकूल काम करना पड़ता है।

पाठा : तीन बुलाया तेरह आया, दै दाळ में पांणी।

नव महीनां मां रा पेट में कीकर खट्यौ ? ७२२८

नौ महीने माँ के पेट में कैसे रहा ?

—अत्यधिक स्फूर्ति वाले चंचल व्यक्ति के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है कि वह माँ के पेट में नौ महीने रहा तो कैसे रहा ?

—अधीर व्यक्ति के लिए कटाक्ष में।

—मेरे अभिन्न मित्र कोमल कोठारी की माँ विजयकँवर (काकीसा, काई) मेरे लिए अकसर इस कहावत का प्रयोग करती थीं। वे ग्लास में दूध लेकर आतीं, तब तक मैं घर से एक फर्लांग दूर पावटा चौराहे तक चला जाता।

नवरां नी गवरी ने भांडा नी होळी।– भी.४८६ ७२२९

बेकार लोगों के लिए गवरी और भाँडों के लिए होली।

गवरी = वर्षा-ऋतु में भील एक स्थान से दूसरे स्थान तक 'गवरी' खेलते फिरते हैं, जिस में तरह-तरह की नकलें उतारी जाती हैं। भीलों की मान्यता के अनुसार पार्वती (गौरी, गवरी) इनकी सजातीय है। वर्षा में अपने मायके आती है, उसे प्रसन्न करने के लिए ही गवरी का खेल खेलते हैं। होली के बहुत पहिले ही लोग-बाग उसके फाग गाने शुरू कर देते हैं।

—निकम्मे व्यक्ति इतने लंबे समय तक गवरी खेलने और होली के गानों में अपना समय काटते हैं।

नवरी नखरा करे।– भी.४८७ •७२३०

बेकार स्त्री नखरे करती है।

—जिस स्त्री के पास करने को कोई काम नहीं होता, वह शृंगार करने में अपना समय बिताती है। इसके विपरीत काम करने वाली स्त्री को शृंगार या नखरे करने का समय नहीं मिलता।

—जिम्मेदार व्यक्ति को काम के मारे सजने-धजने का वक्त ही कहाँ मिलता है!

नवरी नातरां नंगे राखे।– भी.४८८ ७२३१

अकर्मण्य स्त्री पुनर्विवाह की तलाश में रहती है।

—ठाली मनुष्य के दिमाग में कुचक्र चलते रहते हैं।

—हर वक्त काम में तल्लीन रहने वाले व्यक्ति को दुष्कर्म की खातिर समय नहीं मिलता।

पाठा : नवरी नै नातौ सूझै।

नव लीजै नीं तेरह दीजै। ७२३२

नौ लेना न तेरह देना।

प्रसंग : विवाहादि मांगलिक अवसरों पर कुटुंबियों, सगे संबंधियों तथा इष्ट-मित्रों के यहाँ रुपया आदि देने की प्रथा है, जिसे नैत, नूंत, न्यूंत या नूत कहते हैं। ग्रहण करने पर वापस उससे अधिक देने की प्रथा है। क्यों तो नौ रुपये की न्यूंत स्वीकार करें और क्यों वापस तेरह की न्यूंत भरें।
—व्यर्थ की जिम्मेदारी से बचने वाले व्यक्ति के लिए।

पाठा : नव लीजै नै तेरह दीजै, ठाकर ऊभा फळसै खीजै।

नवळे नावे दाड़ा, पामणी पांच दाड़ा।– भी.४८९ ७२३३

नया नौ दिन, पाहुन पाँच दिन।

—नया दूल्हा ससुराल जाएगा तो नौ दिन उसका आदर-सत्कार होगा। मेहमान की पाँच दिन खातिरदारी होगी, बाद में लापरवाही बरती जाने लगेगी।

—अधिक समय किसी के यहाँ रहने पर मान घटता है। सत्कार में कमी आ जाती है। अतएव थोड़ा जितना ही मीठा।

नव सौ ऊंदर खाय, बिलड़ी हज करवा जाय। ७२३४

नौ सौ चूहे खाकर, बिल्ली हज करने को तत्पर।

—जीवन भर पाप या अपकर्म करने के पश्चात् कोई व्यक्ति शुद्धाचरण या सद्प्रवृत्ति का दिखावा करे तो उस में भी कुछ-न-कुछ गहरा निहित स्वार्थ हो सकता है। कोई भी उसकी नई घोषणा पर विश्वास नहीं करता।

—जिसका स्वभाव ही प्रकृतिजन्य बुरा व हिंसक है तो उस में परिवर्तन की संभावना नहीं रहती।

पाठा : नव सौ ऊंदरा मारनै, मिन्नी बाई तीरथ चाल्या।

नव सौ मूसा मार मिनड़ी गंगा न्हावण चाली।

नव सौ ऊंदर गटकाय, केदार रौ कांकण धारयौ।

नवा घोड़ा नेसांण।– भी.४९० ७२३५

नये घोड़े को सिखाने की जरूरत होती है।

—नये घोड़े को फेरने व साधने की वांछित सीख अनिवार्य है, अन्यथा उसकी सवारी करने पर वह नुकसानदेह साबित हो सकता है।

—नये घोड़े की तरह बच्चों को भी सीख-सिखावन की आवश्यकता रहती है।

नवा जतरे नक़ता, पचे नवी हगाई ने नवा नक़ता।– भी.२९१ ७२३६

नये जब तक उत्सव, फिर नई सगाई और नये अनुष्ठान।

—उपयुक्त उम्र पर विवाह हो तो आनंद-उछाह रहता है, फिर उम्र बीतने पर नई सगाई हो तो मृत्यु-भोज आदि नये अनुष्ठान होने लगते हैं।

—बेमेल विवाह के प्रति मार्मिक कटाक्ष।

नवी काया, नवी माया। ७२३७

नई काया, नई माया।

—चढ़ती जवानी और नये धन को सँभालकर रखना मुश्किल है।

—नया खून और नया धन उत्पात मचाता ही है। इन पर नियंत्रण रखना आसान नहीं।

नवी जोगण, काठ री मुदरा। ७२३८

नई जोगिन, काठ की बालियाँ।

—नये साधु-संन्यासी दिखावा अधिक करते हैं, सामाजिक मान्यता के लिए उन्हें कई प्रपंच करने पड़ते हैं।

—नया धर्म-परिवर्तन करने वाला अधिक उत्साह प्रकट करता है। मसलन नया मुल्ला अधिक अल्लाह-अल्लाह करता है।

नवी जोगण, पगां तांई जटा। ७२३९

नई जोगिन, पाँवों तक जटा।

दे.क.सं.२२१४

नवी नव दिन, जूंनी सौ दिन। ७२४०

नई नौ दिन, पुरानी सौ दिन।

—किसी भी नई वस्तु या नई बात के प्रति नौ दिन तक उत्साह रहता है। पुरानी पड़ने पर कुछ समय पश्चात् विस्मृत हो जाती है।

—नवीनता के प्रति कुछ समय तक आश्चर्य व जिज्ञासा रहती है, पर धीरे-धीरे उसके प्रति उदासीनता स्वतः प्रकट होने लगती है। पर पुरानी बातें टिकाऊ होती हैं।

नवी नादीदी रा नव फेरा। ७२४१

नई नवेली के नौ फेरे।

फेरा = भाँवरें।

—अपने विवाह के प्रति अतिरेक उत्साह वाली नई बाला सात भाँवरों की बजाय नौ भाँवरें फिरती है।

—नये उत्साह या नई उमंग के आवेश में विवेक नहीं रहता।

—नये काम के प्रति नया ही जोश रहता है।

नवी नायण सोना री नहेणी। ७२४२

नई नाइन सोने की नहेनी।

नहेणी = नहेनी = नाखून काटने का उपकरण।

दे.क.सं.७२३८

नवी नीपजै, सूआवड़ी दूझै। ७२४३

नई उपजाऊ, सुवाड़ी दूधाल।

सूआवड़ी = सुवाड़ी = ताजी ब्याई गाय या भैंस।

—खेती के लिए नई जमीन अधिक उपजाऊ होती है। नई ब्याई गाय-भैंस अधिक दूध देती है।

—किसी भी नई बात की अपनी ही उपादेयता होती है।

नवी नौ दिन, जूंनी जमारौ। ७२४४

नई नौ दिन, पुरानी आजीवन।

दे.क.सं.७२४०

नवी बात नव दिन, खांची-तांणी तेरह दिन, भूल-भाल अठारै दिन। ७२४५

नई बात नौ दिन, खींची-तानी तेरह दिन, भूल-भाल अठारह दिन।

पाठा : नवी बात नव दिन, खेंची-तांणी तेरह दिन।

दे.क.सं.७२४०

नवी वुहारी फूस घणौ काढ़ै। ७२४६

नई बहू फूस अधिक निकालती है।

—नई बहू शर्म के मारे या अपनी प्रतिष्ठा जमाने के लिए हर काम में तत्पर रहती है।

—नये वाद, नये मत या नये धर्म में दीक्षित व्यक्ति अतिरेक उत्साह दिखाता है। उदाहरण के बतौर नया मुसलमान अधिक अल्लाह-अल्लाह करता है।

मि.क.सं.७२३८

नवी लाडी रौ नव दिन लाड। ७२४७

नई बहू का नौ दिन दुलार।

—जिस प्रकार कोई भी नई वस्तु अधिक काम में नहीं ली जाती, अत्यधिक सावधानी बरती जाती है। किंतु पुरानी पड़ने पर उसकी कोई परवाह नहीं करता, उसी प्रकार नई बहू से घरवाले शुरुआत में कुछ भी काम नहीं करवाते। पर वह लिहाज-मुरौवत अधिक दिन तक संभव नहीं रहता। फिर तो बहू से कुछ दिन पश्चात् सबसे अधिक काम लिया जाता है।

नवी वींदणी मोड़ै ऊभी। ७२४८

नई बहू दरवाजे पर खड़ी।

—नई बहू अनजान परिवेश में उत्सुकता-वश नई बातें जानने के लिए दरवाजे पर खड़ी रहती है। या उसे अपने पीहर की याद आती है, इस आशा में कि शायद उसके मायके का कोई व्यक्ति मिल जाय। पर ससुराल वाले उसकी इस जिज्ञासा को मर्यादा के विरुद्‌ध समझते हैं। निर्लज्जता का सूचक मानते हैं।

नवै चंदरमा नै सै रांम-रांम करै। ७२४९

नये चाँद की सभी अभ्यर्थना करते हैं।

—द्‌वितीया के नये चंद्रमा को सभी हाथ जोड़कर नमस्कार करते हैं। नये अभ्युदय के प्रति सबका आदर-भाव रहता है।

—नूतन अभिवृद्‌धि के प्रति हर कोई सम्मान प्रदर्शित करना चाहता है।

नवै दिन नागा, आडै दिन वागा। ७२५०

नये दिन नंगे, सामान्य दिन रंग-बिरंगे।

—जो व्यक्ति उत्सव-त्योहार के शुभ दिन तो फटेहाल रहे और सामान्य दिन पर सज-धजकर ठाट जताये,उसकी अव्यावहारिकता के प्रति कटाक्ष।

—अशिष्ट व अकुशल व्यक्ति के असामान्य व्यवहार के प्रति उपहास।

नवौ जोगी बौपारै धूंई घालै।–व.६५ ७२५१

नया जोगी दोपहर को धूनी जगाये।

दे.क.सं.७२३८

पाठा : नवौ जोगी धोळै-दोपार धुंई जगावै।

नवौ बळद खूंटौ तोड़ै। ७२५२

नया बैल खूँटा तोड़ता है।

—उद्दंड व्यक्ति उत्पात करता है।

—नया खून लीक तोड़ना चाहता है। वह बंधन स्वीकार नहीं करता।

—जवानी की तासीर ही ऐसी होती है कि वह नियंत्रण नहीं मानती।

नवौ मुल्लौ आंचै बांग देवै। ७२५३

नया मुल्ला जोर से अजान देता है।

दे.क.सं.७२३८

पाठा : नवौ मुल्लौ अल्ला-अल्ला घणौ करै।

नवौ मोडौ पत्तर में पादै। ७२५४

नया साधु पात्र में पादता है।

दे.क.सं.७२३९

नवौ राजा, नवी परजा। ७२५५

नया राजा, नई प्रजा।

—नया राजा क्या न्याय और क्या शासन कर सकता है? तिसपर प्रजा भी नई हो तो वह सत्ता से कैसी अपेक्षा कर सकती है?

—दुतरफी अनभिज्ञता अधिक घातक होती है।

नसीब दो पग आगै रौ आगै। ७२५६

नसीब दो कदम आगे-ही-आगे।

—अभागे व्यक्ति के लिए दुर्भाग्य सदा आगे तैयार मिलता है।

—जब भाग्य ही विमुख हो तो ईश्वर भी सहायता नहीं कर सकता।

नसीब री खोटी, कांदौ अर रोटी। ७२५७

नसीब की खोटी, प्याज और रोटी

—अभागे को जो भी मिल जाय उसके भाग्य की बात।

—जिसका भाग्य ही विमुख है, वह कभी सुखी नहीं रह सकता। अन्य सुख तो दर किनार उसे सामान्य रोटी भी नहीं मिलती।

नस्ट देव री भ्रस्ट पूजा। ७२५८

नष्टदेव की भ्रष्ट पूजा।

—जो देवता विनाश करता है, उसकी पूजा भी भ्रष्ट तरीके से की जानी चाहिए।

—जो व्यक्ति जिस योग्य हो, उसीके अनुसार उसकी आव-भगत होनी चाहिए।

—बुरे नेताओं के प्रति दुर्व्यवहार ही संगत है।

नहिं नचीता नगर में, नहिं नगर में सीर। ७२५९
ज्यांरा मरग्या पातसा, रूळता फिरै वजीर।।

नहीं चैन नगर में, नहीं नगर में सीर।
जिनके मर गये बादशाह, भटकत फिरें वजीर।।

—सत्ताधारी के मरने पर या उनका पराभव होने के बाद उनके पिछलग्गू या उनके आश्रितों का बुरा हाल हो जाता है। उन्हें कोई हींग लगाकर भी नहीं पूछता।

—अवसरवादी लोग-बाग तो अवसर के अनुसार ही अपना भला-बुरा सोचते हैं।

दे.क.सं.५४४०

नां - ना

नांणा टाळ नाथ्यौ अर नांणै नाथूलाल । ७२६०

धन के बिना नाथिया और धनी हुए तो नाथूलाल ।

—मनुष्य के समाज में मनुष्य की या मनुष्य के गुणों की कोई कद्र नहीं है । कद्र है तो केवल धन या माया की । निर्धन व्यक्ति को पुकारने का नाम भी छोटा हो जाता है—नाथिया । और यदि संयोग से उसी व्यक्ति के पास धन जुड़ जाता है तो उसे सभी नाथूलाल कहकर पुकारते हैं ।

—मानवीय समाज में धन की ही सर्वोपरि महत्ता है ।

नांणा रा किसा रूंख ऊगै । ७२६१

धन के कोई पेड़ थोड़े ही उगते हैं !

—धन अथक परिश्रम व समझ-बूझ से पैदा होता है । पेड़ पर नहीं लगता, जो आसानी से तोड़ लें ।

—कोई किसी से रुपया उधार माँगे तब यह कहावत सुनाई जाती है कि भैया खुद कमाकर खाओ, धन का झाड़ नहीं उगता ।

पाठा : **नांणा किसा रूंखड़ा रै लागै ।**

नांणा रौ काळ नै पांवणां रौ सुगाळ । ७२६२

धन का अकाल और मेहमानों का सुकाल ।

—इधर तो धन की पूरी तंगी और उधर मेहमानों का ठाट। कैसे गुजर-बसर हो। कहाँ तो अभाव के मारे घरवालों का पेट भरना तक मुश्किल हो रहा है, तिस पर अतिथियों का ताँता रुकता ही नहीं।

—दुतरफी मार सहना मुश्किल होता है।

नांणौ अंटी नै विद्या कंठी। ७२६३

रोकड़ अंट में और विद्या कंठ में।

—रोकड़ वही काम का जो अपने पास हो, जब चाहें हाथ से निकाल लें। घर पर लाखों की माया पड़ी हो और वह वक्त पर काम न आये तो किस काम की। विद्या वही श्रेष्ठ जो आपके कंठ में बसी हो, तभी वक्त पर काम देती है। बड़े-बड़े ग्रंथों में बंद ज्ञान किस काम का। तभी पुरखों ने हस्तगत नकदी और हाजिर विद्या का महत्त्व बखाना है।

नांणौ जिकै ताव वड़ै, तिकै ताव नीकळै।–व. २३ ७२६४

धन जिस तरह आता है, उसी तरह चला जाता है।

—धन-माया स्थिर नहीं रहती। आती और चली जाती है। उस पर ठौर जताना उचित नहीं। जहाँ तक बन पड़े परहित में काम लेनी चाहिए। तभी माया की मर्यादा है।

—लक्ष्मी चंचला है। सामने के दरवाजे से आती है और पिछवाड़े से खिसक जाती है।

पाठा : नांणौ आवै ज्यूं ई जावै।

नांणौ नांणा नै तांणै। ७२६५

धन, धन को खींचता है।

—धन की तासीर ही ऐसी है कि जहाँ प्रचुरता होती है, स्वत: वहीं चला जाता है।

—जिसके पास धन का बाहुल्य है, वह दूसरों का धन सहज ही खींच लेता है।

नांणौ मिळै पिण टांणौ न मिळै।–व.७६ ७२६६

धन मिल जाता है पर अवसर नहीं मिलता।

—धन अर्जित करना आसान है पर मौका या अवसर खोजना आसान नहीं।

—उचित या शुभ अवसर का मूल्य धन से कहीं ज्यादा है।

पाठा : नांणौ आवै पण टांणौ नीं आवै।

नांणौ हाथ रौ मैल। ७२६७

धन हाथ का मैल।

—धन तो हाथ व मेहनत से कमाया जा सकता है, इसलिए वह हाथ का मैल है। पर मनुष्यता यां इनसानियत कैसे भी अथक परिश्रम से हथियायी नहीं जा सकती।

—फिजूलखर्ची अमूमन इस कहावत का सहारा लेता है कि धन तो हाथ का मैल है—उसे तबीयत से खर्च करना चाहिए।

—किसी का धन चोरी जाने पर भी इस कहावत के द्वारा लोग उसे आश्वस्त करते हैं कि हाथ का मैल था, चला गया तो चिंता किस बात की, फिर मजे में कमा लोगे।

नांनांणै जीमण अर मां पुरसण वाळी जीमौ बेटा रात अंधारी। ७२६८

ननिहाल में भोजन और माँ परोसने वाली, जीमो बेटा रात अँधारी।

—जहाँ अपने-ही-अपने पक्षधर हों तो मनमानी करने में कैसा डर, खूब खेलो-खाओ।

—सत्ता में जहाँ ठोस भागीदारी हो, तब लूट मचाने में क्यों कसर रखी जाय!

नांनी खसम करै, दोहीता डंड भरै। ७२६९

नानी खसम करे, नाती दंड भरें।

—अपराध कोई करे और दंड किसी और को मिले तब।

—जिस राज्य की न्याय-व्यवस्था पूर्णतया बिगड़ी हुई हो।

नांनी दोहीतां री भूखी कोनीं। ७२७०

नानी नातियों की भूखी नहीं।

—जिस नानी के लिए नाती-नातिनों की कोई कमी न हो, तब वह गुमान से कह सकती है कि वह उनकी भूखी नहीं है।

—कोई किसी के वक्त पर काम न आये, तब यह कहावत प्रयुक्त होती है कि वह किसी का मोहताज नहीं है। स्वयं आत्म निर्भर है।

नांनी बाई रै मायरै री ठाकुरजी नै लाज। ७२७१

नानी बाई के माहेरे की ठाकुरजी को लाज।

-नरसी मेहता जब अपनी बेटी नानी बाई के माहेरा की खातिर रवाना हुए तो उनके पास एक टूटी-फूटी गाड़ी के अलावा कुछ नहीं था। फिर भी वक्त पर श्रीकृष्ण भगवान ने साँवल सेठ का रूप धरकर ऐसा माहेरा भरा कि आज दिन तक दुनिया उसका गुणगान करती है।
-गरीब की लज्जा बचाने का कर्तव्य स्वयं ईश्वर को है यदि वह सच्चे मन से उसकी आराधना करे।

नांनी बिना क्यांरौ नांनैरौ ! ७२७२

नानी के बिना कैसा ननिहाल !

—जहाँ कोई लाड़-दुलार करने वाला न हो तो फिर कैसा रिश्ता !

—स्वार्थ के संबंधों में जब गहरा लगाव नहीं होता तब।

—जब कोई हार्दिक रूप से पूछ करने वाला ही न हो तब।

नांनी रांड कंवारी मरगी, दोहीती रा नव-नव फेरा। ७२७३

नानी राँड कुँआरी मर गई, नातिन के नौ-नौ फेरे।

फेरा = भाँवरें।

—जब किसी व्यक्ति के पुरखे अभाव में अन्न-अन्न करते मरे हों और संयोग से उसके पास बेइंतहा धन एकत्रित हो गया हो, फलस्वरूप वह अपने बड़प्पन की बड़ी-बड़ी डींगें मारे तब उसे कटाक्ष-रूप में यह कहावत सुनाई जाती है।

—जब कोई ओछा व्यक्ति बढ़-बढ़कर बातें बनाये तब उसे चुप करने के लिए यह कहावत काम में ली जाती है।

नांनी रै सांम्ही नांनैरा री बात। ७२७४

नानी के सामने ननिहाल की बात।

—कोई अबोध नाती या नातिन नानी को ननिहाल की बातें बताये, जो पहिले से ही सब-कुछ जानती है, फिर उस फजूल की जानकारी का अर्थ क्या? वह तो सर्वथा निरर्थक ही है।

—कोई नासमझ व्यक्ति विद्वान के सामने अपनी सीमित जानकारी बघारे तब!

पाठा: **नांनी रै आगै नांनैरा रा बखांण।**

नांनैरौ तौ अेक हुवै, पण मांमाळ घणा। ७२७५

ननिहाल तो एक पर मामाल बहुतेरे।

मांमाळ = मामाल = मामों का आवास।

—प्रमुख रिश्ता तो एक ही होता है पर छुटपुट रिश्ते कई होते हैं, जिन्हें निबाहना आसान काग नहीं।

—रिश्तेदारी की बढ़ोतरी के साथ संबंधों की प्रगाढ़ता कम होती रहती है।

नांनौ जित्तै नानांणौ, पाछै मामांणौ। ७२७६

नाना के रहते ननिहाल फिर मामाल।

दे.क.सं.७२७२

नांन्है कवै, घणौ खावणौ। ७२७७

छोटे कौर, अधिक खाना।

—जो व्यक्ति कौर तो छोटे-छोटे ले और खाये अधिक, उसके लिए।

—थोड़ी-थोड़ी रिश्वत लेकर भी जो व्यक्ति अधिक कमाये।

नांमी चोर मार्‌यौ जाय, नांमी साह कमा खाय! ७२७८

नामी चोर मारा जाय, नामी शाह कमाकर खाय!

—जब भी चोरी होती है, नामजद चोर ही पकड़ा जाता है। पर इसके विपरीत प्रसिद्ध साहूकार अपनी प्रतिष्ठा के कारण अधिक कमाई करता है।

—ख्याति चोर के लिए हानिकारक और व्यापारी के लिए लाभदायक।

नांमै चोर ओळखीजै। ७२७९

नाम से ही चोर पहिचाना जाता है।

—बाकी किसी भी इल्म में प्रसिद्धि फायदेमंद होती है, पर चोर के लिए अत्यधिक हानिकारक। प्रसिद्धि के कारण उसकी पहिचान अदेर हो जाती है। पिटने पर उसे सच्चाई उगलनी ही पड़ती है।

नांमौ अमर है। ७२८०

नाम अमर है।

—व्यक्ति नश्वर है, पर नाम अमर है। केवल उसी व्यक्ति का जो जीवित रहते बड़ा काम कर जाय। चाहे किसी भी सीगे में करे—भक्ति में, परमार्थ में, ज्ञान में, पराक्रम में, दान-शीलता में, कला एवं साहित्य में या विज्ञान में।

—सुकर्म करने वाले का नाम कभी मिटता नहीं।

नांव अमर, तौ ई नीं आवै सबर! ७२८१

नाम अमर, फिर भी न आये सबर!

सबर = सब्र।

—बड़े व्यक्तियों का नाम तो अमर हो ही जाता है, पर उनकी पूजा करने वालों को सब्र कहाँ! वे उनके नाम का प्रचार-प्रसार करने के लिए नित्य-नये प्रपंच करते रहते हैं।

—देवी-देवताओं के अमर होने में कोई कसर नहीं, पर पुजारी उनके नाम का लाभ उठाते हुए मंदिरों में उनकी आरती-पूजा करते ही रहते हैं। मनौती या प्रसाद के लोभ में।

नांव कांई के बैंगणपुरी, नांव रौ नांव अर तरकारी री तरकारी। ७२८२

नाम क्या कि बैंगनपुरी, नाम की ठौर नाम और तरकारी की ठौर तरकारी!

—किसी भी व्यक्ति की भद्द उड़ाने में देर नहीं लगती।

—किसी बात का कमोवेश दोहरा फायदा हो तब!

पाठा: नांव कांई के बैंगणपुरी, बाबाजी रा बाबाजी अर तरकारी री तरकारी।

नांव गंगाधर, न्हावै कोनीं आखी ऊमर। ७२८३

नाम गंगाधर, नहाये नहीं सारी उमर।

—नाम के विपरीत गुण।

नांव जिसा ई गुण। ७२८४

नाम जैसा ही गुण।

—जिस व्यक्ति में नाम के अनुरूप ही गुण हों।

—जो व्यक्ति अपने आचरण के द्वारा अपने नाम की मर्यादा रखले उसके लिए

नांव तौ करण अर मांगै भीख। ७२८५

नाम तो कर्ण और माँगे भीख।

—नाम के विपरीत गुण या आचरण।

नांव तौ किरोड़ीमल अर कनै कोडी ई नीं। ७२८६

नाम तो करोड़ीमल और पास कौड़ी भी नहीं।

—नाम के विपरीत लक्षण।

नांव तौ जड़ावली नै माथै बोर ई कोनीं। ७२८७

नाम तो जड़ावली और सिर पर बोर ही नहीं।

—नाम के विपरीत स्थिति।

नांव तौ धापली अर फिरै टुकड़ा मांगती। ७२८८

नाम तो धापली और भटके टुकड़े माँगती।

धापली = तृप्ता।

—नाम के विपरीत लक्षण या आचरण।

नावं तौ निंवाई अर दो सोड़ उठाई। ७२८९

नाम तो निंवाई और दो सोड़ उठाई।

निंवाई = ऊष्मा। सोड़ = रजाई।

—नाम के विपरीत आचरण।

नांव तौ निरमळदास, आखै डील परसेवा री बास। ७२९०

नाम तो निर्मलदास, पूरे शरीर में पसीने की बास।

—नाम के विपरीत गुण, लक्षण।

नांव तौ नेमीचंद अर नेम जंगळ जावण रौ ई नीं। ७२९१

नाम तो नेमीचंद और शौच जाने का भी नियम नहीं।

—नाम के विपरीत आचरण।

नांव तौ पदमणी नै पैरण सारू घाघरौ ई नीं। ७२९२

नाम तो पद्मिनी और पहिनने को घाघरा ही नहीं।

—नाम के विपरीत लक्षण या स्थिति।

पाठा : नांव तौ सिणगारी नै पैरण सारू घाघरौ ई कोनीं ।

नांव तौ पिरथीराज अर रैवण नै ठौड़ ई नीं । ७२९३

नाम तो पृथ्वीराज और रहने को ठौर ही नहीं ।

—नाम के विपरीत स्थिति ।

नांव तौ बंसीधर , आवै कोनीं पींपाड़ी बजावणी । ७२९४

नाम तो बंशीधर, आती नहीं तूती भी बजानी ।

—नाम के विपरीत गुण ।

नावं तौ विद्याधर अर आवै कोनीं कक्कौ ई । ७२९५

नाम तो विद्याधर और जानता नहीं 'कक्के' का घर ।

—नाम के विपरीत लक्षण ।

नांव तौ सदासुख अर है जलम-दुखियारौ । ७२९६

नाम तो सदासुख और है जन्म-दुखियारा ।

—नाम के विपरीत लक्षण या स्थिति ।

नांव तौ सरवण अर माईतां नैं धरेळै । ७२९७

नाम तो श्रवण और माँ-बाप को पीटे ।

—नाम के विपरीत आचरण ।

नांव तौ सीतारांम अर भगवांन सूं कांनाटाळौ । ७२९८

नाम तो सीताराम और भगवान से छूत ।

—नाम के विपरीत आचरण ।

नांव तौ सेरसिंघ अर ऊंदरा सूं डरै । ७२९९

नाम तो शेरसिंह और चूहे से डरे ।

—नाम के विपरीत आचरण या स्वभाव।

नांव तौ होसियारसिंघ अर कणूका कोनीं धूळ रा ई। ७३००

नाम तो होशियारसिंह और लच्छन नहीं धूल के भी।

—नाम के विपरीत लक्षण।

नांव पिरथीपाळ अर जमीं बिसवौ ई कोनीं। ७३०१

नाम पृथ्वीपाल और जमीन अंगुल भी नहीं।

—नाम के विपरीत स्थिति।

नांव फूलसिंग पण बास री ई कोठी। ७३०२

नाम फूलसिंह पर बदबू का कुठला।

—नाम के विपरीत गुण।

नांव बधावै दांम। ७३०३

नाम बढ़ाय दाम।

—किसी वस्तु या ब्रांड की प्रसिद्धि पर उसके दाम निर्भर करते हैं।

—नाम की प्रसिद्धि के साथ-साथ उस वस्तु का मूल्य बढ़ता रहता है।

नांव भाखरसिंग अर डील तखतूळी जैड़ौ। ७३०४

नाम पहाड़सिंह और शरीर पिंजर-सा।

—नाम के विपरीत लक्षण।

नांव मारणिये रौ खाऊ खंगार। ७३०५

नाम तो मारने वाले का और खाने वाले दूसरे ही।

—मेहनत करे कोई, फल खाये कोई।

—दूसरों के परिश्रम का लाभ उठाने वाले के लिए।

नावं मोटा, दरसण खोटा। ७३०६

नाम मोटा, दर्शन खोटा।

—किसी बड़े व्यक्ति का नाम सुनकर कोई उसके पास काम के लिए जाए और वह सीधे मुँह बात न करे,तब यह कहावत काम में ली जाती है।

—ख्याति के अनुरूप जिस व्यक्ति का आचरण न हो,उसके लिए।

नांव मोटौ नीं, कांम मोटौ। ७३०७

नाम बड़ा नहीं, काम बड़ा है।

—किसी व्यक्ति के आचरण की कसौटी उसका काम ही है,जाति,कुल या नाम नहीं।

—कोई भी व्यक्ति आचरण से ही बड़ा कहलाता है,पद से नहीं।

नांव म्हारौ नै गांव थारौ। ७३०८

नाम मेरा और गाँव तेरा।

—औरत के शरीर को गाँव का रूपक माना है,उसका भोग कोई भी करे,पर उससे उत्पन्न संतान का पिता तो उसका पति ही माना जाएगा।

—कोई व्यक्ति किसी के नाम से कमा खाये,उसके लिए।

मि.क.सं.३३९८

नांव राखै गीतड़ा के भींतड़ा। ७३०९

नाम रखे गीत या भीत।

भींतड़ा = भीत = इमारत = स्मारक।

दे.क.सं.३५९५

नांव रा भगत, लूटै जगत। ७३१०

नाम के भगत, लूटे जगत।

—नाम के विपरीत आचरण।

नांव लिछमीधर, कन्नै कोनीं छदांम ई। ७३११

नाम लक्ष्मीधर, पास नहीं छदाम भी।

—नाम के विपरीत परिस्थिति।

नांव लियां हिरण खोड़ा व्है । ७३१२

नाम लेने पर हरिण लँगड़ाते हैं ।

—जिस व्यक्ति के नाम का भयंकर आतंक हो, उसकी प्रशंसा में यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

—जिस प्रकार सिंह की दहाड़ सुनकर हिरण एक ही ठौर फलाँगने लगते हैं, दौड़ना भूल जाते हैं, इसी प्रकार जिस व्यक्ति के नाम का सिंह जैसा ही प्रभाव पड़ता हो ।

नांव लीधां पाप जावै , काळ पड़्यां जीव जावै । ७३१३

नाम लेने पर पाप धुलते हैं, काल पड़ने पर प्राण जाते हैं ।

—ईश्वर का नाम लेने पर पाप नष्ट होते हैं, मौत आने पर प्राण नष्ट होते हैं ।

—ईश्वर और मृत्यु दोनों का ही प्रभाव और अस्तित्व सुनिश्चित है ।

नांव लेवा नीं पांणी देवा । ७३१४

नाम लेने वाला न पानी देने वाला ।

—जिस व्यक्ति के पीछे न पानी देने वाला हो और न नाम लेने वाला हो ।

—जो आततायी अन्याय करता है, कुमार्ग पर चलता है और अपने अत्याचार पर गर्व करता है, उसका नाम लेने के लिए और तर्पण करने के लिए कोई नहीं बचता । ऐसे दुष्ट परिवार को लक्ष्य करके यह कहावत कही जाती है ।

—गर्व करने वाले का सर्वनाश होता है ।

पाठा : नांव लेवा अर पांणी देवा वाळा ई नीं रह्या ।

नांव सीतळदास , दुरवासा री झाळ । ७३१५

नाम शीतलदास, दुर्वासा की ज्वाला

—नाम के विपरीत लक्षण ।

नांव सूं नीं कांम सूं आदमी ओळखीजै । ७३१६

नाम से नहीं काम से आदमी पहिचाना जाता है ।

दे.क.सं.७३०७

नांव स्यांम सुंदर, मुंहडौ जांणै ऊंदर। ७३१७

नाम श्याम सुंदर, मुँह जैसे ऊँदर।

ऊंदर = चूहा।

—नाम के विपरीत सूरत या हुलिया।

नांव हजारीलाल, घाटौ इग्यारै सौ रौ। ७३१८

नाम हजारीमल, घाटा ग्यारह सौ का।

—नाम के विपरीत स्थिति।

नाई आटो खादो हियार में कूतरू कूटक्यू।–भी.४९१ ७३१९

नाई ने आटा चुराया, चौक में कुत्ते को पीटा।

—किसी के अपराध की सजा दूसरे को मिलने पर इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

—दुष्कर्म करे कोई और दंड पाये कोई।

नाईजी वाळा कातरिया। ७३२०

नाईजी वाले केश।

—नाई केश काटता है, वे सभी आँखों के सामने ही प्रकट हो जाते हैं, किसी से छिपे नहीं रहते।

—जिस प्रत्यक्ष सच्चाई में रंचमात्र भी संदेह न हो, उसके लिए...!

नाई-नाई कातरिया कित्ता के अबार मूंडागै आय पड़ै। ७३२१

नाई-नाई केश कितने कि अभी सामने आ गिरते हैं।

—जिस सच्चाई के प्रति तनिक भी आशंका न हो।

—प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं रहती।

पाठा : नाई-नाई केस किताक के अबार धकै आय पड़ै।

नाई नै टाटिये सूं कांई लेणौ-देणौ! ७३२२

नाई को गंजे से क्या सरोकार!

—जिस व्यक्ति से कोई काम न पड़े उससे संपर्क रखना व्यर्थ है।

—किसी-न-किसी स्वार्थ के वशीभूत ही मानवीय संबंध निर्भर करते हैं।

पाठा : टाटिया नै नाई सूं कांई लीजै-दीजै ।

नाई बात गमाई । ७३२३

नाई ने बात गँवाई ।

—नाई का हर घर में आना-जाना रहता है । उससे कुछ भी भेद छिपा नहीं रहता । न उसके पेट में गुप्त बात ही हजम होती है । नाई को किसी भेद का पता चल जाय तो समझो वह सार्वजनिक हो गई ।

—जिस व्यक्ति के पेट में बात नहीं पचे, उसे कोई भी गोपनीय बात बतानी नहीं चाहिए ।

नाई मूंडिया कितराक चितारै ? ७३२४

नाई मुँडे हुओं को कब तक याद रखे ?

—नाई जिनके बाल काटता है, जिनका मुंडन करता है, वे तो उसे याद रख सकते हैं, पर नाई उन्हें क्योंकर याद रख सकता है ! इसी प्रकार दुकानदार किस-किस ग्राहक को याद रखे ।

—जब कोई नेता अपने कार्यकर्ता को न पहिचाने तब यह कहावत काम में ली जाती है ।

नाई रा कतरयो । आंख्यां सांम्ही । ७३२५

नाई के काटे हुए आँखों के सामने ।

—जो सच्चाई तत्काल प्रकट हो जाय उसके लिए ।

—जिस वास्तविकता को उजागर होने में देर न लगे ।

नाई रा कतरयोड़ा तौ आंख्यां आगै आसी ई । ७३२६

नाई के काटे हुए बाल तो आँखों के सामने आएँगे ही ।

—कभी-न-कभी तो सच्चाई सामने आती ही है ।

—कोई भी गुप्त बात अधिक दिन तक छिपी नहीं रह सकती ।

नाई री कतरणी ज्यूं जीभ चालै । ७३२७

नाई की कैंची के समान जीभ चलती है ।

—जो व्यक्ति हर वक्त बकवास करता रहे, उसके लिए ।

—जो वाचाल खामखाह बक-बक करे, उस पर कटाक्ष ।

नाई री गवाड़ी केसां रौ कांई घाटौ ! ७३२८

नाई के घर केशों की क्या कमी !

—नाई के घर में तरह-तरह के केशों की प्रचुरता रहते हुए भी उनकी कोई उपादेयता नहीं होती । कोई फायदा नहीं ।

—जिन चीजों की बहुलता भी बेमानी होती हो, उनके लिए !

पाठा : नाई रै घरां केसां रौ कांई तोटौ ।

नाई री जीभ अर पाचणौ सरीसौ चालै । ७३२९

नाई की जीभ और उस्तरा बराबर चलता है ।

—बाल काटते समय या माथा मूँडते समय नाई बराबर चटपटी बातें करता रहता है, इसलिए ग्राहक का मन ऊबता नहीं ।

—कैंची और उस्तरे का काम ही ऐसा है, जिनके साथ जीभ चलाना भी लाजिमी हो जाता है ।

नाई री दुकांन आगै तौ केस ई मिळै । ७३३०

नाई की दुकान के सामने तो केश ही मिलते हैं ।

दे.क.सं.७३२८

नाई री परख नूंवां में । ७३३१

नाई की परख नाखूनों में ।

—नाई के कौशल की सही पहिचान नाखून काटते समय ही होती है । कच्चा नाखून कटने से पीड़ा होती है । यदि नाई का हाथ साफ है तो वह नाखून बड़े सलीके से काटता है ।

—हर धंधे की कुशलता अपने ढंग से पहिचानी जाती है ।

नाई रौ घर ओळखणौ तौ साव सैल है । ७३३२

नाई के घर की पहिचान तो बहुत सरल है ।

—जिस घर के सामने काले-सफेद बाल बिखरे हों, वही नाई का घर है । बच्चा और मूर्ख भी उसे अदेर पहिचान लेता है ।

—प्रसिद्ध व्यक्ति के घर का कोई पता-ठिकाना पूछने आये तब यह कहावत परिहास में कही जाती है ।

नाई रौ पाचणौ अठी फिरै नै उठी फिरै। ७३३३

नाई का उस्तरा इधर भी चलता है, उधर भी चलता है।

—जो व्यक्ति हवा के साथ किधर भी मुड़ जाय, उसके लिए।

—जिस व्यक्ति की जबान का कोई एतबार न हो।

—जो व्यक्ति किसी बात का सूत्र कहीं भी सुविधानुसार जोड़ दे।

नाई वाळी टाकर छै।—व.३९४ ७३३४

नाई वाली मसखरी है।

—कभी-कभार मसखरी, मजाक या ठिठौली का परिणाम बड़ा घातक होता है। इसलिए मसखरी करते समय अत्यधिक विवेक की आवश्यकता है अन्यथा एक नाई ने बनिये के साथ ठिठौली की तो उसकी हत्या से ही मजाक का भुगतान हुआ। इसकी संदर्भ-कथा अगली कहावत में है।

नाई वाळौ ठोलियौ। ७३३५

नाई वाला ठोला।

ठोलियौ = ठोला = मुट्ठी बंद करके मध्यमा अँगुली को इस स्थिति में रखना, जिससे उसके पीछे का जोड़ दूसरी अँगुलियों के कुछ आगे निकल आये या ऊपर उठ जाय। उस उठे हुए भाग से सिर पर चोट मारने की क्रिया। बचपन में अध्यापक ठोला मारने में बड़े सिद्धहस्त होते थे। आज भी इसका प्रचलन है।

संदर्भ-कथा: किसी गाँव की एक बड़ी बस्ती में एक नाई बड़ा मसखरा था। बाल-दाढ़ी मूँडते समय कई मजेदार चुटकले सुनाता। हँसी-ठिठौली करता। एक बार ऐसा संयोग हुआ कि पास के गाँव का एक बनिया उसके पास मुंडन के लिए आया। मूँछें तो बहादुरों को ही शोभा देती हैं, बनियों को नहीं। इसलिए उसने अपने विनम्र व्यवसाय व ब्याज-बट्टे के धंधे में हाथ डालते ही दाढ़ी के साथ मूँछें मुँडवाना भी शुरू कर दिया। कुछ दिन तक गाँव वाले उसे खिजाते रहे। पर वह मुस्करा कर चुप हो जाता। उसकी नाक लंबी और तीखी थी। अधेड़ उम्र तक भी उसने मूँछें मुँडवाने का वही ढर्रा रखा। नाई ने उसके माथे पर उस्तरा चलाते ही मन में एक उम्दा मसखरी की बात सोचली। दाढ़ी-मूँछ और माथे का अच्छी तरह मुंडन करने के पश्चात् उसने मुँडे हुए चिकने सिर पर कुछ देर तक अच्छी मालिश की, फिर सेठ की नाक पकड़कर उसने कहा, 'सेठजी, आपका सिर तो एकदम रामझारे-सा है। यह रही टोंटी और यह

रहा उसका चमकता हुआ पैंदा।' यह कहकर उसने बनिये के सिर पर जोर से ठोला मारने के बाद हँसी-मजाक में कहा, 'सुना आपने, कैसा रामझारे-सा टन्न करते बोला।' बनिये के सिर पर तो चोट लगी ही, पर उसकी पीड़ा सिर की बजाय दिल में अधिक हुई। उस्तरे की तेज धार देखकर उसने वह बेहूदी मजाक सहन कर ली। मुस्कराते कहा, 'वाह रे खवास। ठोला मारकर तूने मुझे निहाल कर दिया। आज सुबह से ही सिर-दर्द के मारे आफत हो गई थी। आधी पीड़ा तो तेरी मालिश से और आधी ठोले से मिट गई। तुझे इनाम दूँ जितना ही कम है।' यह कहकर उसने पाँच रुपये नाई को इनाम में दिये। इकन्नी की जगह पाँच रुपये! नाई की खुशी का पार नहीं। उसने सेठ का बहुत एहसान माना। गाँव के फलसे तक उसे छोड़ने गया। विदा होते समय बनिये ने उसे आश्वासन दिया कि जब कभी हजामत की जरूरत होगी, यहीं आएगा।

नाई लौटकर आया तो दाढ़ी-मूँछ वाला एक राहगीर हाथ में तलवार लिए बैठा था। अमुक गाँव का छुट-भैया राजपूत था। बड़ी-बड़ी मूँछें। कजरारी दाढ़ी। बनिये की तरह लंबी नुकीली नाक। नाई की हथेली में खुजली चलने लगी। बनिये तो कंजूस होते हैं और ठाकुर-राजपूतों का दिल बड़ा उदार होता है। इक्कीस रुपयों से कम तो क्या देंगे! भला ऐसी मजाक का कौन बुरा मानेगा। उस्तरे से रगड़-रगड़ कर उसने दो बार मुंडन किया। आम की गुठली अच्छी तरह रगड़ी। फिर काफी देर मालिश की। ठाकुर की तबीयत खुश हो गई। तब नाई ने अच्छा मौका देखकर उसकी नाक पकड़कर जोर से ठोला मारते हुए वही रामझारे वाली बात दोहराई। ठाकुर के गुस्से का पार नहीं रहा। गुस्सा आने पर उसे कुछ होश नहीं रहता था। नाई के तेज उस्तरे से ही उसकी नाक जड़-सहित काट डाली। फिर दोनों कानों का सफाया कर दिया। माथे पर जोर-जोर से जूते फटकारते हुए कहा, 'तेरा सिर तो तबले की तरह बजता है। गनीमत समझ कि गरदन नहीं उड़ाई। वरना तलवार का एक मामूली झटका ही काफी था।' नाई ने पाँव पकड़कर माफी माँगी तब कहीं ठाकुर ने जूती पहनी। और उसी क्षण नाई को बनिये की मार्मिक मुस्कान का रहस्य समझ में आया।

—बेहूदा मजाक कभी-कभार अप्रत्याशित संकट उत्पन्न कर सकता है।

—गणित की जोड़-बाकी के समान ही लोभ का परिणाम कष्टप्रद होना असंदिग्ध है।

नाक गळ्यां पूठै नथ कांई कांम री? ७३३६

नाक गलने के बाद नथ किस काम की?

—नाक की शोभा नथ से है। नथ (बाली) की शोभा नाक से है। यदि नाक ही न रहे तो सैकड़ों अमूल्य बालियाँ भी व्यर्थ हैं। नाक के अभाव में उनकी कोई सार्थकता नहीं।

—इज्जत गँवाकर गहने पहिनने से उनकी शोभा भी घटती है।

—अवसर बीतने पर या मौका गँवाने पर उपयोगी वस्तु भी निरर्थक हो जाती है। का बरखा जब कृषि सुखाने।

नाक तौ आंख्यां बिचाळै ई व्है। ७३३७

नाक तो आँखों के बीच ही होती है।

—आँखों के बीचोबीच स्थित होने से ही नाक की शोभा है।

—परिवार की इज्जत व मर्यादा बची रहे तभी नाक होने की सार्थकता है।

—हर वस्तु अपनी उचित ठौर पर ही शोभा देती है।

नाक भींच्यां मूंडौ खुलै। ७३३८

नाक भींचने पर मुँह खुलता है।

—शरीर में एक विशेष तनाव या घुटन से दाँत चिपक जाते हैं। जब तक नाक से श्वास लेने की राह खुली रहती है, तब तक दाँत चिपके रहते हैं। जोर लगाने पर भी मुँह नहीं खुलता। नाक बंद करने पर मुँह स्वतः खुल जाता है।

—दबाव डालने से ही काम बनता है। या राज खुलता है।

—बिना दबाव के नींबू का रस तक नहीं निकलता।

नाक माथै माखी ई नीं बैठण दे। ७३३९

नाक पर मक्खी ही नहीं बैठने दे।

—छैल-छबीले या अक्खड़बाज व्यक्ति के लिए जो किसी का तनिक भी कहना-सुनना बर्दाश्त न करे।

—जो व्यक्ति किसी का मामूली एहसान भी न लेना चाहे।

—जो व्यक्ति किसी की उपेक्षा तक बर्दाश्त न करे।

नाक में कणूकौ ई खारौ लागै। ७३४०

नाक में दाना भी असह्य लगे।

—जिस व्यक्ति को अपने निकटतम परिवार के अलावा अन्य किसी की खातिर मामूली खर्च भी बर्दाश्त न हो, उसके लिए।

—जो व्यक्ति मामूली अनादर भी सहन नहीं कर सके।

—जो व्यक्ति परिवार में रंचमात्र भी अनुशासनहीनता देखकर आपे से बाहर हो जाये।

नाक री नगटी, गळा में दसेरौ, औ कांई के निजर रौ टोटकौ। ७३४१

नाक की नकटी, गले में दसेरा, यह क्या कि नजर का टोटका।

—सूरत की शोभा और इज्जत का प्रतीक नाक तो सफाचट। तिस पर गले में दस सेर पत्थर का वजन लटका हुआ। पूछने पर जवाब मिला कि यह कोई मामूली पत्थर नहीं, नजर न लगने का टोटका है। नकटी को भी नजर लगने की आशंका! गहने के बदले गले में पत्थर लटकाने का भी कोई संकोच नहीं।

—जिस व्यक्ति की निर्लज्जता का पार न हो।

—निर्लज्ज व्यक्ति भी जीने का कुछ-न-कुछ औचित्य ढूँढ़ लेता है।

नाक वढ़ाय आपरौ खलकां सारू कुसुगन करणा। ७३४२

नाक कटाकर अपना, दूसरों के लिए अपशकुन करना।

—नकटे के अपशकुन बहुत बुरे माने जाते हैं। कई राहगीर तो अपशकुन के डर से वापस लौट पड़ते हैं। यात्रा मुल्तवी कर देते हैं। दुष्ट व्यक्तियों की अपनी-अपनी तासीर होती है, वे खुद का नाक काटकर दूसरों के अपशकुन करने से बड़े खुश होते हैं। नाक तो एक बार ही कटती है, पर अपशकुनों की तो कोई गिनती नहीं। कइयों को तो प्राणों से भी हाथ धोना पड़ता है। सुनकर उन्हें ऐसी खुशी होती है जैसे कटी हुई नाक और भी लंबी होकर चेहरे की शोभा बढ़ा रही है।

—दूसरों का अपशकुन करने की खातिर दुष्ट व्यक्ति अपने लिए कैसी भी जोखिम उठाने को तैयार रहते हैं।

पाठा : नाक वढ़ाय अपसूंण करै।

नाक विंधावण गी अर कांन छिदाय पाछी आई। ७३४३

नाक बिंधाने गई और कान छिदाकर लौटी।

—जो व्यक्ति अपने मूल लक्ष्य को भूलकर दूसरे काम में उलझ जाय।

—जिस व्यक्ति को अपना मत बदलने में तनिक भी देर न लगे।

नाक सूं नथड़ी भारी। ७३४४

नाक से नथ (बाली) भारी।

—जो व्यक्ति अपनी हैसियत से परे शान-शौकत का दिखावा करे।

—जो व्यक्ति ऋण का बोझ लादकर भी अपनी मर्यादा रखनी चाहे।

नाक सूं सेडौ ई नीं सिणकीजै नै ब्याव सारू मूंडौ धोवै। ७३४५

नाक से सेड़ा भी साफ नहीं होता और ब्याह की खातिर मुँह धोये।

—अपनी औकात भूलकर जो व्यक्ति बड़ी आकांक्षाएँ सँजोये।

—हर अदने-से-अदने व्यक्ति के मन में कुछ-न-कुछ महत्त्वाकांक्षा का अंकुर रहता है।

नाकारा वाळौ नेम, पाली वाळौ प्रेम। ७३४६

इनकार वाला नेम, पाली वाला प्रेम।

नेम = नियम।

संदर्भ: पाली के ठाकुर प्रेमसिंह से किसी कारणवश जोधपुर के महाराजा की ठन गई। महाराजा के सामने प्रेमसिंह की ताकत नगण्य थी। पर वह स्वाभिमानी अव्वल दर्जे का था। मुसीबतें उठाकर भी उसने महाराजा की कोई बात नहीं मानी। हमेशा इनकार करने का ही नियम निभाया। अतएव पाली वाले प्रेमसिंह की मिसाल दी जाती है कि वह आजीवन जोधपुर महाराजा के सामने नहीं झुका। धोखे से मारे जाने पर भी उसने हार स्वीकार नहीं की।

—जो व्यक्ति पाली के ठाकुर प्रेमसिंह की नाईं स्वाभिमानी हो।

नाकारौ सौ औगण हरै। ७३४७

इनकार सौ अवगुण हरता है।

दे.क.सं.७१९८

पाठा: अेक नाकारौ सौ औगण टाळै। नाकारौ सौ दुख टाळै।

ना किणी सूं दोसती अर ना किणी सूं बैर। ७३४८

न किसी से दोस्ती और न किसी से बैर।

—उस तटस्थ व्यक्ति के लिए जो न किसी से दोस्ती रखे और न किसी को बैरी बनाये। काम से काम रखना। अपनी राह आना और अपनी राह जाना।

—जो व्यक्ति अपने ही दायरे में पूर्णतया निमग्न हो।

नागण ही अर पांखां लागगी। ७३४९

नागिन थी और पाँखें उग आईं।

—फिर किसी को डसने में क्या कसर!

—जब कोई गुंडा या माफिया सत्ता का भागीदार बन जाय।

—कोई दुष्ट प्रवृत्ति का मनुष्य ऊँचा अधिकारी बन जाय तब।

नाग ने आग लूमतां वेळा नी करे।– भी.४९२ ७३५०

नाग और आग लगने में देर नहीं करते।

—किसी को साँप डसे तो उसे 'पवन लगना' कहते हैं। इसलिए नाग और आग के लिए 'लगना' क्रिया एकदम उपयुक्त है।

—जब नाग और आग तत्काल क्षति पहुँचाते हैं तो इनसे दूर रहना ही बेहतर है।

—दुष्टों से बचकर रहने में ही लाभ है।

पाठा : नाग अर आग लूमतां वार नीं लागै।

नागराज रै ब्याव में चंदण-गोईड़ा जांनी। ७३५१

नागराज के ब्याह में चंदन-गोहीड़े बराती।

चंदन-गोईड़ा = एक प्रकार का विषैला जंतु जिसका मुँह साँप के आकार का होता है। छोटा और कुछ सफेदी लिए हुए होता है।

—एक लक्षण वाले दुष्ट व्यक्तियों का अपना गिरोह रहता है और वे संगठित होकर साथ रहते हैं।

—बदमाशों का साथ बदमाश ही देते हैं।

नागां नै लूटीजण रौ कांई डर! ७३५२

नंगों को लुटने का क्या डर!

—अभावग्रस्त व्यक्ति को चोरी और लूट का तनिक भी डर नहीं रहता।

—किसी को लूटें तो बदमाश लूटें, उन्हें लुटने का क्या डर।

—नंगें लुट भी जाएँ तो वे तनिक भी परवाह नहीं करते। परवाह वे करें जिनका इज्जत हो।

पाठा : नागा रौ कांई लूटीजै ।

नागां रा किसा न्यारा गांव बसै । ७३५३

बदमाशों के कोई अलग गाँव नहीं होते ।

नागा = नंगा = बदमाश ।

—गाँव की बस्ती और शहर की आबादी के बीच ही बदमाश रहते हैं । उनका कोई अलग हुलिया और अलग गाँव नहीं होता । दिखने में मनुष्य जैसे ही दिखते हैं, पर लक्षण खराब होते हैं ।

दे.क.सं.५१

नागां रा गेला रांमजी रै परबारा हुवै । ७३५४

बदमाशों के गलियारे राम से अलग होते हैं ।

—बदमाशों का ईश्वर या धर्म से कोई सरोकार नहीं होता ।

—बदमाश न ईश्वर से डरते हैं और न धर्म से ।

नागां रै नव लीजै नीं तेरह दीजै । ७३५५

बदमाशों से न नौ लेना और न तेरह देना ।

—बदमाशों से अजाने कोई सहायता ले भी ली तो उससे बहुत ज्यादा भुगतान करना पड़ेगा ।

—दुष्ट व्यक्तियों से किसी भी प्रकार का व्यवहार रखना अत्यंत घातक है ।

—बदमाशों से तो बचकर रहना ही हितकारी है ।

नागां सूं काळ ई डरपै । ७३५६

नंगों से काल भी डरता है ।

—बदमाश मौत की परवाह नहीं करते तो मौत भी उनकी परवाह नहीं करती । उनसे दूर ही रहती है ।

—नंगों से तो स्वयं ईश्वर भी खौफ खाता है, फिर मौत की क्या बिसात, जहाँ तक बन पड़े, वह उनसे बचकर चलती है, उसे भी अपनी इज्जत का डर तो रहता ही है ।

नागां सूं तौ रांम ई डरै । ७३५७

नंगों से तो राम भी डरता है ।

—फकत मनुष्य ही क्या बदमाशों से तो ईश्वर भी डरता है, उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता।

—ईश्वर उन्हीं पर कोप करता है, जो उस में आस्था रखते हैं, उससे डरते हैं। लेकिन बदमाश तो ईश्वर के अस्तित्व को ही नहीं मानते। ईश्वर उलटा बदमाशों का लिहाज रखता है। उसे भी अपनी इज्जत प्यारी है।

पाठा : नागै मिनख सूं तौ भगवांन ई भिड़कै। नागड़ां सूं भगवांन ई डरै।

नागै मिनखां सूं तौ देवता ई डरपै।

नागा आया नै नागौ जावणौ। ७३५८

नंगा आये और नंगा ही जाना।

—मनुष्य द्वारा संचित की हुई संपदा का एक कण भी साथ नहीं चलता। फिर उसके लिए इतनी आपाधापी क्यों? मारामारी क्यों? इसलिए परमार्थ की खातिर ही अपना समय अपनी संपदा खर्च करनी चाहिए। यही विवेक सम्मत है।

—जब अंत में यही अंजाम अपरिहार्य है कि खाली मुट्ठी आये और खाली मुट्ठी ही जाना है तो माया का इतना मोह क्यों? गंभीरता-पूर्वक सोचने की बात है।

नागाई तेरमौ रतन! ७३५९

नंगई तेरहवाँ रत्न!

—बदमाश व्यक्ति इच्छानुसार अपनी जरूरतें पूरी कर लेता है और वह भी धौंस जताकर, इसलिए तेरहवें रत्न में नंगई को शुमार किया जाता है।

—वीरता, शौर्य, पराक्रम, ईमानदारी, भलाई इत्यादि की तरह नंगई भी वरेण्य है, अच्छे-अच्छे व्यक्ति इसका लोहा मानता है।

मि.क.सं.७१४६

पाठा : दुनिया में नागाई तेरहवौं रतन।

नागाई नै तौ सै कोई निंवै। ७३६०

नंगई को सब कोई नमन करते हैं।

—नंगे आदमी की कोई प्रतिष्ठा तो होती नहीं। लेकिन समाज में जिन व्यक्तियों की प्रतिष्ठा होती है, वे उसके बचाव की खातिर हमेशा आशंकित रहते हैं, इसलिए वे बदमाशों को दूर से ही नमस्कार करके चलते हैं।

—बदमाश जब चाहे भले व्यक्ति की इज्जत धूल में मिला दे, इसलिए सभी उससे डरते हैं। बदमाशों के लिए इज्जत-आबरू जैसा कोई लफड़ा होता ही नहीं।

दे.क.सं.७१४५

नागाई रै लाल तुररौ। ७३६१

नंगई के लाल तुर्रा।

दे.क.सं.७१४६,७३५९

नागा ऊपर नौपत बाजै, तीन धड़िंगा वत्ता गाजै। ७३६२

नंगे के ऊपर नौबत बाजे, तीन डंके अधिक गाजे।

—नंगे को न प्रतिष्ठा का डर और न इज्जत-आबरू का भय। चाहे जितनी बदनामी हो, उसका तो नाम फैलता ही है। इज्जत से डरे वो जिसकी समाज में इज्जत हो। नंगा तो इज्जत की कीमत पर ही मौज करता है।

दे.क.सं.७१५७

नागा नगर बसावियौ, धोबी रौ के कांम। ७३६३

नंगे साधुओं ने नगर बसाया, धोबी का क्या काम।

दे.क.सं.५७३३

नागा नाचै नै पाथर बाजै। ७३६४

नंगे नाचें और पत्थर बाजें।

—नंगे व्यक्ति उद्‌दंड होकर नाचें तब पत्थरों के अलावा कोई अन्य वाद्‌य तो बजने से रहा। आमने-सामने फेंके हुए पत्थर आपस में टकराकर आवाज करते हैं। उन पर फूलों की वर्षा तो होने से रही।

—असामाजिक तत्त्व हमेशा अवांछनीय होते हैं।

नागा पातसा सूं ई आगा। ७३६५

नंगे बादशाह से भी न्यारे।

—राजा या बादशाह का सामान्यतया हर व्यक्ति के जीवन से रोज-मर्रा का नाता नहीं रहता, इसलिए उनकी कोई खास दखल नहीं रहती। पर बदमाश से जब-तब साबका पड़ता रहता है। आम आदमी को बादशाह का उतना डर नहीं लगता, जितना बदमाश का लगता है।

नागा रौ लाय में कांईं बळै? ७३६६

नंगे का आग में क्या जले?

—अकस्मात् कहीं आग भी लग जाये तो वस्त्रहीन व्यक्ति का क्या जले। बाकी सबको तो कपड़े जलने की जोखिम रहती है। पर नंगे को वैसी कोई जोखम नहीं।

—सामाजिक दंगे-फसादों की आग में भी बदमाशों का कुछ नहीं बिगड़ता, वे तो उलटे लूट मचाते हैं। और दंगे भड़काने वाले भी तो वही हैं।

नागा सब सूं आगा। ७३६७

नंगे सब से निराले।

मि.क.सं.७३६५

नागी उघाड़ी भेळी सूती नै ढोलिया री बूझै। ७३६८

नंगी-उघाड़ी के साथ सोयी और पलंग की माँग करे।

—जो निर्धन व्यक्ति दूसरों के घर जाकर ऐश करने की आशा दरसाये।

—अभावग्रस्त व्यक्ति दूसरों के घर जाकर मौज मनाना चाहे, तब।

नागी उघाड़ी भेळी सूवै, कांईं ओढै नै कांईं बिछावै। ७३६९

नंगी-उघाड़ी के साथ सोये, क्या ओढ़े और क्या बिछाये।

—दो अभावग्रस्त व्यक्तियों का साथ हो जाए तो परस्पर कुछ भी सहयोग नहीं कर सकते।

—दो गरीब व्यक्ति चाहें तब भी एक-दूसरे की मदद नहीं कर सकते।

नागी कांईं तौ धोवै अर कांईं निचोवै? ७३७०

नंगी क्या तो धोये और क्या निचोये?

—निर्वस्त्र व्यक्ति चाहे तो पानी में डुबकी लगा सकता है, चाहे तो शरीर पर पानी उड़ेल सकता है। जब उसके पास कोई वस्त्र ही नहीं, तब वह क्या तो धोये और क्या निचोये ?

—अभावग्रस्त व्यक्ति लाख चाहे तब भी त्योहार या उत्सव पर कुछ भी खर्च नहीं कर सकता। मन मसोसकर रह जाता है। यों कहने को रुपया हाथ का मैल है, पर वह हाथ लगे तब न !

पाठा : नागी कांईं निचोवै, कांईं पैरै ? नागी रांड के धोवै, के निचोवै ?

नागी गवाड़ी नै भूखौ पांवणौ। ७३७१

फटेहाल गवाड़ी और पाहुन भूखा।

गवाड़ी = घर। निवास।

—उस व्यक्ति की विडंबना का तनिक अनुमान करिये कि संयोग से उसके घर अतिथि आये, पर वह उसको कुछ भी खिलाने में असमर्थ हो। नीची निगाह करने के अलावा कोई दूसरा चारा नहीं।

—अभावग्रस्त व्यक्ति जब अपना ही पेट नहीं भर सकता, तब वह मेहमान का क्या सत्कार कर सकता है !

नागी चौड़ै नाचण लागी, लजवंती डरनै भागी। ७३७२

छिनाल सरे आम नाचन लागी, लजवंती डरकर भागी।

—सर्वत्र डर है तो उन्हीं व्यक्तियों को जो अपने अलावा समाज की मर्यादा का भी पूरा ध्यान रखते हैं। अगला कदम फूँक-फूँककर आगे बढ़ाते हैं। निर्लज्ज व्यक्ति कहीं भी जाए, उसे कोई डर नहीं। उसके पास निर्लज्जता का अमोघ-अस्त्र है।

नागी देखनै टाप धावै।–व.२४६ ७३७३

नंगी देखकर मन ललचाये।

—स्त्री को नंगी देखकर ऋषि-मुनियों का मन भी विचलित हो जाता है।

—समाज में ऐसी स्थिति से साबका ही नहीं पड़ना चाहिए जिसे देखकर मन डगमगा जाए।

—स्त्री की इच्छा न हो तो कैसा भी योद्धा उसके साथ सहवास नहीं कर सकता।

—सूनी संपत्ति को सभी हड़पना चाहते हैं।

नागी देख्यां किणरौ मन नीं डुळै । ७३७४

नंगी देखकर किसका मन नहीं डोलता ।

दे.क.सं.७३७३

पाठा : नागी देख्यां मन डुळै । नागी देखनै मन करणौ ।

नागी बूची सै सूं ऊंची । ७३७५

नंगी-बूची सबसे ऊँची ।

दे.क.सं.७१६७

नागी भली के पराळ रौ बटकौ । ७३७६

नंगी भली या घास का आवरण ।

पराळ रौ बटकौ = चावलों की महीन भूसी से बना आवरण ।

—नितांत उघड़े बदन से घास का आवरण भी बेहतर है ।

—मन नंगा न हो तो तन का नंगापन खास माने नहीं रखता । मन का नंगापन तो स्वभाव का परिचायक है और तन का नंगापन अभाव का सूचक है ।

नागी रांड ईसका पीटी, खावै घाट बतावै कीटी । ७३७७

नंगी राँड डाह की पीटी, खाये घाट बतायें कीटी ।

घाट = मक्की, ज्वार या बाजरी को दलकर छाछ या पानी के साथ पकाकर बनाया हुआ व्यंजन । अमूमन गरीबों का भोजन है । कीटी = दूध को खूब ओटाकर बनाया हुआ मावा ।

—जो व्यक्ति अपनी गरीबी को छिपाने की व्यर्थ चेष्टा करे, तब ।

—हर व्यक्ति अपनी आर्थिक-स्थिति को बढ़ा-घटाकर बताने की कोशिश करता है, इसलिए कि निर्धन व्यक्ति की समाज में कोई कद्र नहीं होती ।

नागी रांड गाजै, लांण कुळवंती लाजै । ७३७८

छिनाल राँड गाजे, बेचारी कुलीन लाजे ।

—समाज की मर्यादा का पालन करने वाले व्यक्ति को कदम-कदम पर नियंत्रण रखना पड़ता है । लाज-शर्म रखनी पड़ती है । पर छिनाल औरत को कोई संकोच नहीं होता । अपने बेहयापन को अधिक उजागर करती है ।

नागी रांड रौ के फाटै। ७३७९

नंगी राँड का क्या फटे।

—निर्वस्त्र औरत के लिए कपड़े फटने की कोई गुंजाइश ही नहीं रहती। शरीर पर कपड़े हों तो फ़टें।

—गरीब व्यक्ति को क्या जोखिम।

—निर्लज्ज व्यक्ति की प्रतिष्ठा हो तो उसे ठेस भी लगे।

नागी रौ नांव सिणगारी। ७३८०

नंगी का नाम सिंगारी।

—नाम के विपरीत लक्षण।

नागी व्हैतां लाज नीं आवै तौ देखण वाळी नै क्यूं आवै? ७३८१

नंगी होते शर्म न आये तो देखने वाली को क्यों आये?

—दुष्कृत्य करने वालों को संकोच न हो तो दर्शक या सुनने वाले क्यों संकोच करें?

—किसी बुरे कर्म के लिए कर्ता को हिचकिचाहट न हो तो साक्षी को क्यों हो?

नागौ कांईं तौ धोवै अर कांईं निचोवै? ७३८२

नंगा क्या तो धोये और क्या निचोये?

दे.क.सं.७३७०

पाठा: नागौ कांईं तौ सांपड़ै अर कांईं निचोवै?

नागौ कैवै म्हां सूं डरयौ, लाजां मरतौ घर में बड़ियौ। ७३८३

नंगा कहे मुझसे डरा, शर्म के मारे घर में घुसा।

—बदमाश गर्जकर कहता है कि मुझसे डरकर भाग छूटा, पर वह तो शर्म के मारे घर में घुसा था।

—बदमाश या समाज-कंटक तो हमेशा से ही उच्छृंखल होते हैं, उन्हें अपनी इज्जत या प्रतिष्ठा का कोई डर नहीं होता। पर प्रतिष्ठित व्यक्ति को तो पलक-पलक में अपनी मान-मर्यादा का भय रहता है। उसकी रक्षा करना बहुत मुश्किल है।

दे.क.सं.७१६५

नागौ नाचै तौ कांईं फाटै ? ७३८४

नंगा नाचे तो फटे क्या ?

दे.क.सं.७३७९

पाठा : नागौ नाचै फाटै के ?

नागौ नाचै नव-नव ताळ । ७३८५

नंगा नाचे नौ-नौ हाथ ।

—निर्लज्ज व्यक्ति जी भरकर अपनी उद्‌दंडता का प्रदर्शन करता है ।

—बेशर्म व्यक्ति अपनी उद्‌दंडता पर भी गर्व-गुमान करता है ।

नागौ नाचै , बीच बजारां गाजै । ७३८६

नंगा नाचे, सरे बाजार गाजे ।

—बेशर्म व्यक्ति अपनी उद्‌दंडता का फूहड़ प्रदर्शन करते समय दहाड़-दहाड़कर अपशब्द काम में लेता है,जिन्हें सुनकर लोगों को शर्म आती है,पर नंगे व्यक्ति से शर्म-हया सौ-सौ कोस दूर रहती है ।

नागौ बडौ परमेसर सूं । ७३७७

नंगा बड़ा परमेश्वर से ।

—ईश्वर से भयभीत भले ही न हों,पर निर्लज्ज व्यक्ति से हमेशा डरकर रहना चाहिए,जिसे स्वयं की इज्जत का डर नहीं होता,उसे दूसरों की इज्जत खराब करने में तनिक भी देर नहीं लगती ।

—नंग-धड़ंग शिव,परमेश्वर यानी विष्णु से बड़े हैं । ईश्वर की सृष्टि का विध्वंस करने के कारण उनका अत्यधिक महत्त्व माना गया है ।

मि.क.सं.७३६५

नागौ भलौ के कड़ियां गमछौ । ७३८८

नंगा भला कि कमर पर गमछा ।

दे.क.सं.७३७६

नागौ मिनख तौ नागायां इज करसी । ७३८९

नंगा मनुष्य तो नंगई करेगा ही ।

—जो व्यक्ति जिस हुनर में पारंगत होता है, वह उसका प्रदर्शन करता ही है । निर्लज्ज व्यक्ति अपनी निर्लज्जता का प्रदर्शन न करे तो उसके जीवन का औचित्य ही क्या ? संसार में हर छोटे-बड़े व्यक्ति को जीने के लिए किसी-न-किसी मुगालते की आवश्यकता रहती है । और सभी व्यक्तियों का स्वभाव एक-सा नहीं होता । हर व्यक्ति अपने स्वभाव को उजागर करना चाहता है ।

ना घर तेरा, ना घर मेरा, चिड़िया रैन बसेरा । ७३९०

ना घर तेरा, ना घर मेरा, चिड़िया रैन बसेरा ।

—संतों की वाणी लोगों के कानों में निरंतर अमृत बरसाती हुई किस तरह लोकोक्ति का रूप धारण कर लेती है । यह संसार असार है । न राजा का राजमहल उसका है और न रंक की झोंपड़ी उसकी है । बस, रात भर के लिए बसेरा है, उससे अधिक नहीं । परिवार का मोह व्यर्थ है । माया का मोह निरर्थक है, सब-कुछ यहीं छोड़कर बसेरा त्याग देना होगा । यही शाश्वत सत्य है, इसे भूल जाने से सब झंझट उत्पन्न होते हैं ।

नाच-कूद नै मोरिया वाळा पग । ७३९१

नाच-कूदकर मोर वाले पाँव ।

—मोर खुशी में उन्मत्त होकर, छतरी तानकर मजे से नाचता है । नाचने के उपरांत जब वह अपने पतले-पतले पाँवों को देखता है तो आँसू बहने लगते हैं । आनंद में विभोर होकर कैसा मोहक नृत्य किया और उस सुंदर पक्षी के ऐसे कुरूप पाँव ! सूखे डंठल की तरह ।

—आजीवन अथक मेहनत से जिस संतान की खातिर जस-तस धन जोड़ा और वही बिगड़ जाय तब इस कहावत का प्रयोग होता है ।

—बना-बनाया काम बिगड़ जाय तब !

नाचण जांणै नीं अर आंगणौ बांकौ । ७३९२

नाच न जाने और आँगन टेढ़ा ।

—जब कोई व्यक्ति नाचने की अनभिज्ञता स्वीकार न करके आँगन के टेढ़ेपन की शिकायत करे।

—अकुशल कारीगर अपने औजारों में खामी बताये, तब।

—अपनी अयोग्यता को छिपाने के लिए जब कोई व्यक्ति अन्य बहाने बनाये, तब।

पाठा : नाच नंह जांणै, आंगणौ बांकौ। नाचूं कीकर के आंगणौ बांकौ ?

नाचण लागी जद घूंघटौ कैड़ौ ? ७३९३

नाचने लगी तब घूँघट कैसा ?

—जब सबके सामने नाचना ही स्वीकार कर लिया तो फिर अवगुंठन का औचित्य क्या ?

—जब शर्म-हया छोड़ दी तो नैतिकता का झूठा आवरण क्यों ?

—जब अग्नि को साक्षी करके विवाह संपन्न हो गया तब सदाचार का पाखंड क्यों ?

—किसी भी काम को, चाहे वह अच्छा हो या बुरा, जब उसे करना मंजूर कर लिया तो अधूरे मन की बजाय मुक्त मन से संपन्न करना चाहिए।

पाठा : नाचण लागी तद लाज किसी ? नाचण हाली तद घूंघट क्यांरौ ?

नाचवा ढूक्यां पूठै कैड़ी लाज !

नाच तौ नाच्यां ईं सीखीजै। ७३९४

नाच तो नाचने से ही आता है।

—निरंतर अभ्यास पर ही कुशलता निर्भर करती है।

—अभ्यास, निष्ठा और परिश्रम का वांछित सम्मिश्रण ही प्रतिभा का दूसरा पहलू है।

—लगातार सोचते रहने से ही कौशल हासिल नहीं होता, बल्कि किसी कार्य को अविरल करते रहने में ही उसकी सफलता निहित है।

नाचै-कूदै तोड़ै तांन, ज्यांरौ दुनिया राखै मांन। ७३९५

नाचे-कूदे तोड़े तान, उनका दुनिया रखे मान।

—सामाजिक मर्यादा का उपहास करने वाले, परंपरा की तान तोड़ने वाले बदमाशों का दुनिया मान रखती है। वे जब चाहें तब किसी को नुकसान पहुँचा दें। भले आदमी तो लाखों में कुछ गिनती के ही होते हैं, उनसे समाज का ढर्रा कायम नहीं रहता। समाज तो बदमाशों

की धींगामस्ती से ही चलता है। इसलिए हर कोई डर के मारे उनका आदर करता है। आधुनिक राजनीति में सर्वत्र ऐसे ही बदमाशों का वर्चस्व है और भारतीय समाज उन्हें माला पहिनाने की होड़ में मशगूल है।

नाचै-कूदै बांदरा, भरै पेट फकीर। ७३९६

नाचे-कूदे बंदर, पेट भरे फकीर।

—मदारी तो फकत डुग-डुगी बजाकर भीड़ इकट्ठी करता है। रस्सी से बँधा बंदर नाच दिखाता है। कूदता-फाँदता है। उसका नाच देखकर लोग तालियाँ बजाते हैं। मदारी कटोरी में पैसे इकट्ठे करके अन्यत्र चल देता है। जीने लायक खुराक वह बंदर को इसलिए खिलाता है कि उसी के बूते पर वह अपने घर-परिवार की परवरिश करता है। वरना भूखों मर जाय।

—संसार में आदिकाल से यही ढर्रा चलता रहा है और आगे भी चलता रहेगा कि मेहनत का पसीना कोई बहाएगा और उसकी मेहनत का फल कोई और हथियायेगा।

—मानव-समाज मेहनतकश जनता के शोषण पर ही टिका हुआ है।

—जनता कष्ट उठाती है और नेता मौज उड़ाते हैं।

नाजरजी वेल बधौ के म्हां तांई। ७३९७

नाजरजी वेल बधे कि बस मुझ तक ही।

नाजर = नपुंसक। हिंजड़ा।

—नाजर को किसी पंडित ने दक्षिणा के उपरांत आशीर्वाद दिया कि उसकी वंश-बेल बढ़े तब उसने कहा कि बस इस बेल का अंत उसके बाद ही हो जाएगा।

—अक्षम या असमर्थ व्यक्ति को न किसी का आशीर्वाद फलता है और न किसी की शुभकामना का फल मिलता है।

नाजौ काजळ-टीकी बिना कोनीं रैवै। ७३९८

नाजो काजल-बिंदी के बगैर नहीं रह सकती।

—कैसा भी शुभ-अशुभ मौका हो नाज़-नखरे वाली औरत शृंगार किये बिना नहीं रह सकती। और कुछ नहीं तो काजल-बिंदी तो लगाएगी ही।

—जिसका जैसा स्वभाव होता है वह जाने-अजाने उजागर होता ही है।

नाजौ नाज बिन रह जाय, काजळ टीकी बिना नीं रैवै। ७३९९

नाजो अनाज के बिना रह जाय, काजल-बिंदी बिना नहीं रह सकती।

—नाज-नखरे वाली कोमलांगिनी रोटी खाये बगैर रह सकती है पर शृंगार बिना नहीं रह सकती।

—आदमी कष्ट उठाकर भी अपने शौक,व्यसन और अपने स्वभाव को प्रकट करता ही है चाहे कैसा ही व्यवधान क्यों न आये।

नाटक देख रीझै सो नाचै नीं, नाचै सो रीझै नीं। ७४००

नाटक देखकर रीझे वह नाचता नहीं, जो नाचता है वह रीझता नहीं।

—दूसरे उदाहरण से यह उक्ति और अधिक स्पष्ट होगी। श्रीकृष्ण भगवान ने बाँसुरी ऐसी शानदार बजाई कि तीनों लोक मोहित हो गये,पर स्वयं बाँसुरी,होंठ और उनकी अँगुलियाँ मोहित नहीं हुईं। यदि वे मोहित हो जाते तो वैसी बाँसुरी बजती ही नहीं।

—कोई भी कलाकार निर्विकार रहने पर ही उत्कृष्ट कला को जन्म दे सकता है,यदि वह अपनी कला से मोहित हो गया तो कला का अंत ही समझिए। मर्मज्ञ को रीझना चाहिए कलाकार को नहीं।

नाटा बाबानी धूणी तक धाम।– भी.४९३ ७४०१

भगोड़े बाबा की पहुँच उसकी धूनी तक ही रहती है।

—भगोड़े साधु की करामात उसकी धूनी तक ही सीमित रहती है।

—किसी भी व्यक्ति को उसकी शक्ति के अनुसार ही सफलता मिलती है।

—अक्षम व्यक्ति अपनी सीमाओं का अतिक्रमण नहीं कर सकता।

नाड़ नातौ नीं छोडै। ७४०२

नाड़ी नाता नहीं छोड़ती।

—नाड़ियों में बहने वाला रक्त आत्मीयता से विमुख नहीं हो सकता।

—रक्त-संबंधों की घनिष्ठता असंदिग्ध होती है,आसानी से टूटती नहीं।

—माँ की ममता किसी भी प्रकार की बाधा नहीं मानती।

पाठा : नाड़ नातौ नीं तजै।

नाड़ा खाड़ा हे काळ ना गाड़ा ।–मी.४९४ ७४०३

नाले और पोखर अकाल में बड़े सहायक होते हैं ।

—समय पर अच्छी बारिश होने पर नाले व तालाबों का कोई खास महत्त्व नहीं रहता । पर अकाल के दुर्दिनों में वे बड़े लाभदायक सिद्ध होते हैं ।

—किसी भी वस्तु का महत्त्व उसके छोटे आकार या उसकी लघुता से नहीं आँका जाता, बल्कि समय पर उसकी उपयोगिता से परखा जाता है ।

नाडी कलाळ रै वाभौजी री कोनीं ? ७४०४

तालाब कलाल की बपौती नहीं है ?

—अब तो सुदूर गाँवों में भी अधिकांश घरों में नल लग गये हैं, तालाबों की वह उपयोगिता नहीं रही । कलाल अब तो शराब में पानी अपने नल का ही मिला सकते हैं, पर पहिले सार्वजनिक तालाब से ही पानी मिलाकर शराब को महँगे भाव बेचते थे जैसे उनकी बपौती ही हो ।

—जब कोई अकेला व्यक्ति सार्वजनिक संपत्ति से अपनी स्वार्थ-सिद्धि करे तब आम जनता अपना एतराज दर्ज कराती ही है ।

नाडी तिरसौ , मांढै निरणौ ! ७४०५

तालाब से प्यासा और विवाह मंडप में भूखा !

—जो व्यक्ति तालाब से प्यासा लौटकर आये और विवाह मंडप में भी भूखा रहे तो किसे दोष दिया जा सकता है । उसके भाग्य को या उसकी मूर्खता को ।

—अभागा या मूर्ख व्यक्ति उचित अवसर का लाभ उठाने से भी वंचित रह जाता है ।

दे.क.सं.५९३८

नाडी री आगोर कित्तीक व्है ? ७४०६

तालाब की आगोर कितनी होती है ?

आगोर = अंगोर = तालाब के पास की भूमि जहाँ वर्षाकाल में पानी एकत्रित होकर आड (नाली) से उस तालाब में पानी आता है ।

—मनुष्य की प्रमुखतम जरूरत के लिए अन्न और पानी अनिवार्य होते हैं। अन्न के लिए तो गाँव की सारी भूमि जोती जाती है। पर पानी के लिए एक तालाब से पूर्ति हो जाती है। आगोर और तालाब की सीमा तो कम होती है, पर उसकी उपादेयता असीम है। सारा गाँव पानी पीता है। सारे मवेशियों की प्यास बुझती है। नहाना, धोना, पकाना सब उसीसे।

—किसी वस्तु के आकार से उसके महत्त्व का आकलन नहीं होता, उसकी सार्वजनिक उपादेयता से होता है।

नाडै ज्यूं खडै।—व.४८ ७४०७

ज्यों तालाब त्यों गड्ढा।

—नदी, तालाब, नाला, झरना या गड्ढा कुछ भी हो, इनका आकार छोटा या बड़ा हो, किंतु मनुष्य की प्यास तो किंचित् पानी से ही बुझ जाती है। मौके पर जहाँ जिसका भी पानी मिल जाय, मनुष्य के लिए हितकारी है।

—मौके व जरूरत पर जो वस्तु उपलब्ध हो जाय, उसीका महत्त्व है स्थान विशेष का नहीं।

नाणौ नेह-तोड़ व्हिया करै। ७४०८

रुपया स्नेह-भंजक होता है।

—यह बुजुर्गों का अनुभव है कि परस्पर लेन-देन से मित्रता में दरार पड़ती है। रक्त-संबंध तक टूट जाते हैं। इसी आशय से आधुनिक दुकानदार भी ऐसी तख्ती लगवाते हैं—उधार प्रेम की कैंची है।

—सभी मानवीय रिश्तों से रुपया सबसे बड़ा है। इस में गुत्थी पड़ने पर बाकी सब रिश्तों में दरार पड़ जाती है।

नातरायत री तीजी पीढ़ी गढ़ चढ़ै। ७४०९

नातरायत की तीसरी पीढ़ी गढ़ चढ़ती है।

नातरायत = वह जाति जिस में स्त्री के पुनर्विवाह की प्रथा हो। वह स्त्री जिसने पुनर्विवाह किया हो।

—इस आशय की एक कहावत और भी है कि चाकर से ठाकुर और ठाकुर से चाकर होते आये हैं। एक उक्ति और भी कि तीजी पीढ़ी बावड़े के तीजी पीढ़ी जाय। यानी तीसरी पीढ़ी या तो उन्नति करती है या अधोगति को पहुँचती है।

—हेय व्यक्ति की औलाद हमेशा हेय नहीं रहती, वह उचित अवसर मिलने पर तरक्की करती है। एकाध पीढ़ी में नहीं तो तीसरी पीढ़ी में तो अवश्य ही।

—हीनता या तुच्छता का इतिहास वर्षों तक नहीं चलता, वह विस्मृत हो जाता है। नई पीढ़ियाँ नई परिस्थितियों के अनुकूल स्वतः ढल जाती हैं।

नातरा री भांबण राता पग करै। ७४१०

नाते की भाँबन पाँव रँगती है।

नाता = नातरा = पुनर्विवाह।

—कोई ऐब निकालने की आशंका से पुनर्विवाह की हुई औरत ज्यादा सज-धजकर रहती है कि कहीं और नई मुसीबत खड़ी न हो जाय।

—जब कोई व्यक्ति जरूरत से ज्यादा उम्दा कपड़े पहिने तब यह कहावत कटाक्ष रूप में कही जाती है।

नाता ई व्है ई, पण म्हांरै मरयां! ७४११

नाते भी होंगे, पर हमारे मरने पर!

नाता = पुनर्विवाह।

—जिन तथाकथित उच्च जातियों में पुनर्विवाह की प्रथा नहीं है, उन में अभावग्रस्त व्यक्तियों की ज्यादातर उपेक्षा ही की जाती है। काफी उम्र होने पर भी जब उनका विधिवत विवाह नहीं होता, तब मन की घुटन व्यक्त करते हुए वे इस कहावत का सहारा लेते हैं कि नाते भी होंगे, जरूर होंगे, पर हमारे मरने पर। परिवर्तनशील समाज में सुखद व्यवस्था भी होगी, लेकिन अधिकांश हतभागे उसका लाभ नहीं उठा सकते।

नातै आयोड़ी भांबण करै ज्यूं। ७४१२

नाते आई हुई भाँबन करे ज्यों।

नाता = पुनर्विवाह। भांबण = भाँबन।

दे.क.सं.२३२२

नातै तौ रांड ई जावै। ७४१३

नाता तो राँड ही करती है।

नातौ = नाता = पुनर्विवाह।

—पुनर्विवाह तो विधवा ही करती है।

—कुँवारी-कन्या के विवाह जैसा पुनर्विवाह का उत्सव-आयोजन नहीं होता। नाते की औरत के शकुन भी बहुत बुरे माने जाते हैं। वह रात को अँधेरे-अँधेरे ही रवाना होती है और अँधेरे-अँधेरे ही स्वीकार की जाती है। जिसकी रस्में भी विवाह से एकदम भिन्न होती हैं।

—जैसा-तैसा भी अच्छा-बुरा काम है, जिसे करना है, उसे ही करना चाहिए।

—ढुलमुल व्यक्ति दल बदल करता है, दृढ़ सिद्धांत वाला नहीं।

नातै री रांड, मूरै री सांढ! ७४१४

नाते की राँड, मूरे की साँढ़!

नाता = पुनर्विवाह। मूरे की साँढ़ = ऊँट या साँढ़ के नाक में नकेल डालने के पहिले मुँह पर डाले गये मोहरे की रस्सी से नियंत्रण में रखने की आदत डाली जाती है। पर वह नकेल की तरह विश्वस्त नहीं रहती। ऊँट या साँढ़ उसका नियंत्रण नहीं मानते।

—जो व्यक्ति किसी तरह का अनुशासन न माने, उसके लिए।

नाथ बिना रौ बळद। ७४१५

नाथ-विहीन बैल।

—नथुनों में नाथ डाले बिना बैल नियंत्रण में नहीं रहता।

—उच्छृंखल या आडू व्यक्ति के लिए जो किसी का कहना नहीं माने।

नाथ रै घरै ना कोनीं। ७४१६

नाथ के घर मनाही नहीं।

—अमूमन नाथ के घर में मठ स्थापित रहता है। वहाँ हर व्यक्ति को जाने का अधिकार है। यों नाथ भी किसी को आने से नहीं रोकते। नाथ के घर जमघट लगा ही रहता है।

—जो व्यक्ति सबके दुख-सुख में काम आये। जिसके दरवाजे अनजान व्यक्ति के लिए भी खुले हैं। द्वार पर आये को जो भूखा-प्यासा न जाने दे।

पाठा : नाथ री गवाड़ी ना कोनीं।

नाथां रा कांन सोनार को बींध्या नीं। ७४१७

नाथों के कान सोनार ने नहीं बींधे ।

—नाथों के अलावा हर व्यक्ति के कान सोनार ही छेदता है। बच्चियों के नाक भी। पर नाथ अपने हाथ से ही कान छेदता है। बड़ा चीरा लगाता है। यदि किसी की हिम्मत न पड़े तो गुरु छेदता है। यह काम सोनार की अपेक्षा कठिन है। साहस का भी है।

—जो स्वावलंबी व्यक्ति अपने बूते पर बड़ा हुआ हो वह चुनौती के रूप में इस कहावत का प्रयोग करता है कि वह किसी का मोहताज नहीं, उसे अपने बल का भरोसा है।

पाठा : जोगियां रा कांन किसा सोनार बींध्या।

नाथी बेटा जाया ! ७४१८

नत्थी ने बेटा जाया !

जाया = जन्म दिया। पैदा किया।

—यों विवाहित औरतें संतान पैदा करती हैं। उन्हें सामाजिक मान्यता है। उत्सव होता है। पर अविवाहित औरत संतान जने तो वह दुष्कर्म या अनैतिक समझा जाता है।

—कुलटा या छिनाल औरत पर कटाक्ष।

नादांन दोस्त दुस्मण री गरज सारै। ७४१९

नादान दोस्त दुश्मन की गर्ज सारे ।

गरज सारणा = गर्ज पूरी करना।

—यदि किसी का नादान मित्र हो तो उसे दुश्मन की दरकार नहीं। वही इतना नुकसान पहुँचा देगा, जो दुश्मन भी नहीं पहुँचा सकता।

—नादान दोस्त जाने कब गैर-जिम्मेदारी का काम कर जाये, जो सँभाले न सँभले।

नादांन दोस्त सूं दांनौ दुस्मण चोखौ। ७४२०

नादान दोस्त से दाना दुश्मन अच्छा ।

दांना = दाना = अक्लमंद, समझदार।

—अक्लमंद दुश्मन बेहूदी हरकत नहीं करता, पर नादान दोस्त का कोई भरोसा नहीं कि वह कब आफत खड़ी कर दे।

—नादान दोस्त से भगवान बचाये।

नादांन री दोस्ती जीव रौ जंजाळ। ७४२१

नादान की दोस्ती जी का जंजाल।

—नादान से दोस्ती निभाना आसान नहीं। जाने वह कब अपनी मूर्खता से कोई झमेला खड़ा कर दे, जिसे सुलझाना वाकई दुश्वार हो।

मि.क.सं.४४५१

पाठा : नादांन री दोस्ती, जीव नै जोखम।

नादीदी रा नव फेरा। ७४२२

नादीदी के नौ फेरे।

नादीदी = अति इच्छुक।

—यों विवाह में भाँवरे तो चार ही होती हैं, पर अति इच्छुक औरत खुशी के मारे नौ भाँवरें फिर लेती है।

—अति उत्साह में विवेक नहीं रहता।

नादीदी री बाटकी, पांणी पी-पी फाटगी। ७४२३

नादीदी को मिली कटोरी, पानी पी-पीकर आँतें फोड़ीं।

—अभावग्रस्त इच्छुक व्यक्ति को संयोग से कोई चीज मिल जाये तो वह प्रमादवश उसका उपयोग नुकसान की सीमा तक करने लगता है।

—अतिरेक उत्साह में कोई भी व्यक्ति लाभ-हानि का विचार नहीं करता।

पाठा : नादीदी रै हुई कटोरी, पांणी पी-पी हुई पदौरी।

नादीदी रै लोट्यौ व्हियौ, रात्यूं उठ-उठ पांणी पियौ।

नादीदी रै गीगौ जायौ, नाळा पैली नाक वढ़ायौ। ७४२४

उतावली ने पुत्र जाया, नाल से पहले नाक कटाया।

—अति उत्साही व्यक्ति अजाने अपनी ही हानि कर बैठता है।

—अति उत्साह में विवेक डगमगा जाता है।

नादीदी रौ मांटी आयौ, दोपारां दिवलौ जगायौ। ७४२५

नादीदी का खाविंद आया, दोपहर को दीया जलाया।

—अति-उत्साही व्यक्ति व्यवहार-कुशल नहीं होता। सामान्य विवेक खोकर वह अजीब हरकतें करने लगता है और लोग-बाग उसकी खिल्ली उड़ाते हैं, फिर भी वह अपनी भूल समझ नहीं पाता।

पाठा : नादीदी रौ मांटी आवै, मज्झ बेपारां दिवलौ झुपावै।

नादीदी रै छोरौ होयौ, दोपारां दीवट जोयौ।

नाना चोरा मांटी मरावी ने भेरा।– भी. ४९५ ७४२६

नन्हे बच्चे बड़ों के सिर फुड़वाकर पुन: घुलमिल जाते हैं।

—इसलिए समझदारी की बात यही है कि बच्चों का पक्ष लेकर बड़ों को झगड़े में नहीं पड़ना चाहिए।

—बच्चों के झमेलों से बड़ों को दूर ही रहना चाहिए।

नापै घणौ, फाड़ै थोड़ौ। ७४२७

मापे ज्यादा, फाड़े थोड़ा।

—दान-दक्षिणा में बातें तो बड़ी-बड़ी बघारे, पर करना-धरना कुछ नहीं। ऐसी प्रवृत्ति वाले मनुष्यों पर कटाक्ष।

—जो व्यक्ति लंबी-चौड़ी डींग मारे और करे कुछ नहीं।

पाठा : नापै सौ गज, फाड़ै नौ गज। नापै सौ गज, फाड़ै कोनीं अेक गज।

नामरद तौ खुदा बणायौ, मार-मार तौ कर। ७४२८

नामर्द तो खुदा ने बनाया, मार-मार तो कर।

—कमजोर तो खुदा ने बनाया पर अपनी ओर से हो-हल्ला तो मचा।

—अकर्मण्य व्यक्ति को प्रोत्साहन देने के लिए इस कहावत का महत्त्व है।

ना मूंडै सूं नीं, हाथ सूं देवणौ। ७४२९

मना मुँह से नहीं, हाथ से करना।

—मुँह से उत्तर देने की बजाय हाथ से उत्तर देना मानवोचित है।

—मुँह से मना करके किसी आदमी को खाली हाथ लौटाने की अपेक्षा हाथ से कुछ देकर माँगने वाले को संतुष्ट करना चाहिए।

नायण तौ आखा लेय घरै ई नीं पूगी अर छोरौ कोक सास्तर री बातां करै। ७४३०

नाइन तो नेग लेकर घर भी नहीं पहुँची और छोरा कोक-शास्त्र की बातें करे।

—अबोध बच्चे उच्छृंखलता की बातें करें तब परिहास में इस उक्ति का प्रयोग होता है।

—कोई छोटा बच्चा बड़ों से विवाद करे, तब !

नायण दूजां रा पग धोवै, आपरा नीं जोवै। ७४३१

नाइन दूसरों के पाँव धोये, अपने नहीं जोहे।

जोवै = जोहे = देखे।

—दूसरों के घर सफाई करने वाले को अपने घर की गंदगी का ध्यान ही नहीं रहता।

—लालच के वशीभूत कोई व्यक्ति दूसरों के यहाँ तो हेय काम करने के लिए भी तैयार हो जाय, पर अपने घर आनाकानी करे।

मि. क. सं. ६४७४

पाठा : नायण दूजां रा पग कोड सूं धोवै, आपरा धोवती लाज मरै।

नायां री जांन में सगळा ठाकर ई ठाकर। ७४३२

नाइयों की बरात में सभी ठाकुर-ही-ठाकुर।

—दूसरों के ब्याह में तो नाई काम करते हैं पर उनकी अपनी बरात में सभी एक दूजे से बढ़कर अपनी बड़ाई करें, काम की तरफ कोई ध्यान ही न दें, तब !

—दूसरों के यहाँ काम करने पर तो नाई को नेग का लोभ रहता है, पर अपनी बरात में तो कोई नेग चुकाने वाला होता नहीं, फिर कोई क्यों काम करना चाहे।

—जिस परिवार में वड़प्पन के मारे कोई भी व्यक्ति कुछ काम नहीं करे, तब।

पाठा : नायां री जांन में सै कोई ठाकर।

नायां रौ कांम निंवता जोग। ७४३३

नाइयों का काम न्योते के योग्य।

निंवतौ = न्योता, निमंत्रण।

—सचमुच नाई बड़े चतुर होते हैं। उनकी स्मृति बड़ी तेज होती है। गाँव में विवाह या अन्य किसी आयोजन के लिए ये मुख-जबानी घर-घर न्योता दे आते हैं। क्या मजाल कि कोई भूल पड़ जाय।

—हर जाति की अपनी-अपनी योग्यता होती है, उसीके अनुसार वे अपना काम सफलता-पूर्वक संपन्न करते हैं।

नार कूट नकटू थाई जाय ते हूं कटे।– भी.४९६ ७४३४

स्त्री मारने से नकटी हो जाती है, फिर क्या कटे।

—मार-पीट करने पर स्त्री बेशर्म हो जाती है, शिष्टाचार का खयाल उसके मन से धुल-पुँछ जाता है। तब न तो मारने वाले पति का कुछ लाभ होता है और न मार खाने वाली स्त्री ही सुधरती है।

—स्त्री को मार-पीटकर सुधारने की चेष्टा व्यर्थ है।

नार चोर ना कुण करे संग?– भी.४९७ ७४३५

स्त्री और चोर का साथ कौन करे?

—पुराने जमाने में यात्रा करते समय स्त्री साथ हो तो कठिनाइयों का सामना करना तो दूर, वह नई-नई कठिनाइयाँ पैदा कर देती थी। और चोर अपने दुष्कृत्यों द्वारा साथी को भी आफत में फँसा लेता था। इसलिए दोनों का साथ निषिद्ध माना जाता रहा है।

नारद रौ कांम लड़ावण रौ। ७४३६

नारद का काम लड़ाने का।

—जो चुगलखोर व्यक्ति दूसरों को लड़ाने-भिड़ाने में कुशल हो, उस पर कटाक्ष।

—जो व्यक्ति बात-ही-बात में घनिष्ठ मित्रों के बीच कटुता पैदा कर दे, उसके लिए!

नारद रौ ठिकांणौ कठै के देखौ जठै! ७४३७

नारद का ठिकाना कहाँ कि देखो जहाँ!

—नारद मुनि तीनों लोक में घूमते रहते थे। आज उनके वंशज सर्वत्र फैले हुए हैं। जहाँ नजर पड़े वहाँ नारद-ही-नारद हैं। अन्य ऋषि-मुनियों का वंश तो बढ़ा नहीं पर नारद का वंश बढ़ता ही जा रहा है।

—आज हर घर में छोटा-बड़ा नारद मौजूद है।

नारद-विद्या सूं कोई मोटौ नीं बाजै। ७४३८

नारद-विद्या से कोई बड़ा नहीं बनता।

—आत्मीयता के बीच विघ्न उत्पन्न करने वाली नारद विद्या से कोई भी ऊँचा पद प्राप्त नहीं कर सकता। कभी-न-कभी उसकी पोल खुलकर ही रहती है।

—दुश्मनी मिटाना मुश्किल है और बढ़ाना बहुत ही आसान। दुश्मनी मिटाने वाले का सभी आदर करते हैं और बढ़ाने वाली नारद विद्या यानी चुगलखोरी से सभी घृणा करते हैं।

नार न मूंडा मांये हात नी दड़वो।– भी.४९८ ७४३९

नाहर के मुँह में हाथ नहीं डालना चाहिए।

—अपने से अधिक शक्तिशाली से दुश्मनी नहीं करनी चाहिए, जिससे हानि की गुंजाइश हो।

—अपने से बड़ा यमराज के बराबर, उसके सामने झुककर चलना ही लाभ-दायक है।

नारायण अेक रा इक्कीस करै। ७४४०

नारायण एक के इक्कीस करे।

—किसी के दुख-दर्द में मदद करने पर आसीस का एक यह रूप भी है कि नारायण उसके घर में एक के इक्कीस करे, हर सीगे में— क्या संतान, क्या संपत्ति और क्या व्यवसाय।

नारी नर री खांण। ७४४१

नारी नर की खान।

—वह नारी ही है जिसने संसार के सभी महापुरुषों को जन्म दिया। कोई एक नहीं हजारों। तब उसकी निंदा करने वाला महामूर्ख के अलावा क्या हो सकता है!

—नारी तो रत्न ही पैदा करती है। और उन रत्नों को कंकर समाज बनाता है।

नारी रे नारी, पेट आगै हारी। ७४४२

नारी ओ नारी, पेट आगे हारी।

—औरत सभी कठिनाइयों का सामना कर लेती है, पर कुपुत्र के सामने उसे भी पस्त होना पड़ता है।

—माँ की ममता शेर से भिड़ने की क्षमता रखती है किंतु कपूत के मारे उसका सिर नीचा हो जाता है।

नारेळ नीं चाखियौ, उणरै काचरा ई मीठा। ७४४३

नारियल नहीं चखा, उसके लिए काचरे भी मीठे।

काचरा = ककड़ी का निहायत छोटा रूप।

—हर व्यक्ति के अनुभव की सीमा होती है। जिसने आम नहीं चखा, निंबोली के स्वाद की भी सराहना करता है।

—जिसने निराकार निर्गुण ब्रह्म से साक्षात्कार नहीं किया, उसे पत्थर की मूर्तियों में भी परमेश्वर के दर्शन का भ्रम होता है।

नारेळ रौ पांणी खाटौ के मीठौ, कुण दीठौ? ७४४४

नारियल का पानी खट्टा कि मीठा, किसने दीठा?

दीठा = देखा।

—जिस व्यक्ति को किसी तथ्य का अनुभव नहीं होता, वह उसकी सही जानकारी नहीं दे सकता।

—मनुष्य के अनुभव की सीमा ही, उसकी जानकारी की सीमा है।

नारेळ सूं सर जावै तौ सवामणी कुण चढ़ावै! ७४४५

नारियल से काम चल जाये तो सवामनी कौन चढ़ाये!

—छोटे खर्च से काम चल जाय तो अधिक खर्च करने से क्या लाभ!

—यदि नये देवता मामूली रिश्वत से ही संतुष्ट हो जाएँ तो ज्यादा रिश्वत क्यों दी जाय!

ना सूं हां भलौ। ७४४६

ना से हाँ भला।

—मना करने की बजाय हामी भरना बेहतर है।

—क्षय की अपेक्षा सृजन हमेशा श्रेयस्कर होता है।

नासेटू नै कूड़ वाल्हौ। ७४४७

नासेटू को झूठ प्यारा।

नासेटू = (संस्कृत) नष्टैषिन् = खोये हुए मवेशी की तलाश करने वाला। रूप भेद = नाएटू, नाहेटू।

—जिस व्यक्ति का पशु खो जाता है, उसे झूठ अच्छा लगता है। जिधर बताया जाता है, वह उधर ही विश्वास करके उसी क्षण पशु की तलाश में निकल पड़ता है।

—अधीर मनुष्य को झूठ से जितना दिलासा मिलता है, उतना सच से नहीं।

पाठा: नासेटू नै झूठ प्यारौ।

नाहर अर रजपूत नै रेकारौ ई गाळ। ७४४८

नाहर और राजपूत को तूकारे की गाली।

—किसी की झिड़की सुनना तो दूर नाहर और राजपूत को 'तू' का संबोधन भी गाली के समान कड़वा लगता है।

—स्वाभिमानी मनुष्य किसी की तिरछी निगाह भी बर्दाश्त नहीं कर सकता।

नाहर आंतरै तौ स्याळिया नाच नीं पांतरै। ७४४९

नाहर काफी दूर तो सियार करें नाच का दस्तूर।

—अध्यापक कक्षा से रहे दूर, तो बच्चे नाच-कूद करें भरपूर।

—निर्भय होने पर ही स्वतंत्रता का महोत्सव मनाया जा सकता है।

—भय से मुक्त व्यक्ति ही जीने का आनंद उठाता है।

नाहर कद मूंडा धोया? ७४५०

नाहर कब मुँह धोये?

—अहदी और आलसी व्यक्ति स्नान न करने पर इस उक्ति का सहारा लेते हैं।

—मनुष्य अपनी हर कमजोरी का औचित्य ढूँढ़ लेता है।

पाठा : मूंडौ तौ नाहर ई नीं धोवै। सिंघ कद मूंडा धोवै।

नाहर खाधी जाय नै अखाधी जाय।—व.३०० ७४५१

नाहर का खाया भी बेकार और का न खाया भी बेकार।

—नाहर अधूरा शिकार छोड़ दे तो उसे खाने की कोई हिम्मत नहीं कर सकता। नाहर की दहाड़ और बास दोनों से प्राणियों के प्राण सूखते हैं।

—दुष्ट व्यक्तियों के आतंक से भले आदमियों का खाना तक छूट जाता है।

नाहर छाळी अेक घाट पांणी पीवै। ७४५२

नाहर बकरी एक घाट पानी पीयें।

—बेइंतहा न्याय-संगत और प्रभावशाली शासन में ऐसा संभव है कि एक घाट पर पानी पीते समय न बकरी को सिंह का डर लगे और न सिंह अपने शिकार की परवाह करे।

—यदि कोई आदर्श शासक चाहे तो उसकी प्रजा और समस्त प्राणियों की खातिर ऐसा राम-राज्य स्थापित हो सकता है।

—यदि किसी राज्य में अमीर और दुष्टों का आतंक न हो तो प्रजा शांति से रह सकती है।

नाहर री डाढ़ां सूं कुण निकाळै ? ७४५३

नाहर की डाढ़ों से कौन निकाले ?

—जो व्यक्ति किसी भयंकर आफत में फँस जाय तो कोई बिरला ही उसे बचा सकता है,जैसे वह सिंह के जबड़े में फँस गया हो। दुष्ट व्यक्ति से छुटकारा कौन दिलाये ?

—अचीती विपदा में फँसने के बाद बचाव आसान नहीं।

नाहर री डाढ़ां हाथ कुण घातै ? ७४५४

नाहर की दाढ़ में हाथ कौन डाले ?

—आततायी का सामना करने के लिए पहल कौन करे ?

—किसी शक्तिशाली व्यक्ति से कोई वांछित वस्तु प्राप्त करना बेहद दुश्वार हो तब यह कहावत चुनौती के रूप में कही जाती है।

नाहर रै तौ नाहर ई जलमसी । ७४५५

नाहर के तो नाहर ही पैदा होंगे ।

—सही है कि नाहर के तो नाहर ही पैदा होंगे, गीदड़ नहीं । पर यदि कोई इस उक्ति के जरिये नस्लवाद और वंशगत श्रेष्ठता का दंभ भरना चाहे तो यह सरासर मुगालता ही है । हालाँकि अनुवांशिकता का थोड़ा-बहुत असर पड़ता ही है, पर अनुवांशिक रूप से कोई जाति किसी से श्रेष्ठ नहीं है, यह निर्विवाद सत्य है ! मानव-समाज में जन्म से कोई वीर नहीं होता, वातावरण और वांछित प्रशिक्षण से होता है ।

नाहर रै मूंडै हाथ घालै सो मूढ़ । ७४५६

नाहर के मुँह में हाथ डाले सो मूढ़ ।

मूढ़ = मूर्ख ।

—अपने से अधिक शक्तिशाली दुष्ट को छेड़ने की मूर्खता नहीं करनी चाहिए ।

—बड़ों से दुश्मनी करने का नतीजा बुरा ही होता है ।

नाहर रौ कांई छोटौ ! ७४५७

नाहर का क्या छोटा !

—शेरों के बच्चों की ताकत देखी जाती है, उम्र या आकार नहीं ।

—वीरता या पराक्रम उम्र या भरकम शरीर पर निर्भर नहीं करते, वह तो आत्मबल का प्रभाव है ।

नाहर रौ भै नीं, जित्तौ टपूकड़ै रौ भै । ७४५८

नाहर का भय नहीं जितना टपूकड़े का भय ।

संदर्भ-कथा : एक बुढ़िया का कच्चा घर बारिश में टपकता रहता था । रात भर नींद का नाम तक नहीं । तिस पर सर्दियों में तो प्राण ही ठिठुर जाते थे । उस गाँव में बाघ-चीतों का भी काफी आतंक था पर बुढ़िया को तो बाघ-चीतों की बजाय बारिश का अधिक डर लगता था । नाहर या चीता तो एक बार ही कष्ट पहुँचाता है, पर टपकते पानी की पीड़ा का तो कोई पार ही नहीं । संयोग से सर्दियों की बारिश के दौरान एक बब्बर शेर बुढ़िया को खाने की ताक में होंठों पर जीभ लपलपा ही रहा था कि उसे बुढ़िया के बोल सुनाई पड़े—हे ईश्वर, मुझे नाहर का कतई डर नहीं लगता, पर 'टपूकड़े' की वजह से मेरी नींद ही हराम हो गई, इसे अपने पास ही रख ।

शेर ने सोचा कि यह 'टपूकड़ा' तो उससे भी ज्यादा ताकतवर है। भिड़ते ही मार-डालेगा। उसे 'टपूकड़े' का ऐसा दुर्दम्य भय लगा कि पूँछ दबाकर वहाँ से भाग छूटा।

—लोग वास्तविक भय की बजाय काल्पनिक भय से अधिक डरते हैं।

नाहरां रा मूंडा कुण धोया ? ७४५९

नाहरों के मुँह किसने धोये ?

—अत्यधिक साहस का काम बिरले व्यक्ति ही कर पाते हैं।

—सही है कि शेर में मनुष्य से अधिक शारीरिक शक्ति होती है पर मनुष्य अपनी मानसिक व आध्यात्मिक शक्ति से शेर को मोहित कर सकता है, काबू कर सकता है। वह मनुष्य ही है जो सर्कस में शेर को पालतू कुत्ते की नाईं काम में लेता है, जैसा चाहे उसे बंदर की तरह नचाता है। फिर भी वह साहसिक कार्य जरूर है, इस में कोई संदेह नहीं।

नाहरां रै भलां स्याळ कद जलमै ? ७४६०

नाहरों के भला सियार कब पैदा हों ?

—किसी बहादुर पिता की बहादुर संतान के लिए प्रशंसात्मक उक्ति।

—चापलूस व्यक्ति बड़े आदमियों को खुश करने के लिए भी इस कहावत का छौंक लगाते हैं। और बड़े-बड़े श्रीमंत उस छौंक से बौरा जाते हैं।

नाहरी रै गळ वाळलौ, मरै सौ घालै हाथ। ७४६१

शेरनी के गले में हँसली, मरे सो डाले हाथ।

—बड़े लक्ष्य की पूर्ति अत्यधिक साहस व साधना का कार्य है।

—प्राणों की जोखिम उठाकर ही बड़ी सिद्धि हासिल हो सकती है।

—पतिव्रता या सती औरत की ओर टेढ़ी नजर से कोई नहीं देख सकता।

नाहरी रौ तौ अेक ई आछौ, गडूरड़ी रा सतरै ई कांई कांम रा ! ७४६२

शेरनी का तो एक ही अच्छा, गडूरड़ी के सत्रह भी किस काम के !

-वीर और निर्भय पुरुष तो हजार कायरों से बेहतर है।

-सौ गलीज मनुष्यों की बजाय साधक और मेधावी तो एक ही वांछनीय है।

-यों प्रकृति के हिसाब से शेर, सूकर और गीदड़ का समान ही महत्त्व है। मनुष्य ने अपने हिसाब से अलग-अलग मापदंड बना रखे हैं।

॥ इति राजस्थानी-हिंदी कहावत-कोश तीसरा धाम संपूर्ण ॥

भूल-सुधार :

द्यै जिके ने बेटा ई द्यै, नहीं जिकण नै बेटी रौ ई सांसौ।–व.२८ ७०८९

द्यौ री रांड खासड़ा री, सो दिन कौ निग दिन थारै पगे खासड़ा हुवै।–व.३०९ ७११०

उपरोक्त दोनों कहावतें क.सं.६८६५ अ/क.सं.६८६५ आ.के वर्णानुक्रम में पढ़ी जानी चाहिएँ।–संपादक